भावप्रकाश मध्यखण्ड तृतीय व चतुर्थ भाग व उत्तरखण्ड सटीक

जिसमें

शूल, उदावर्त, गुल्म, पिलही, बायु गोला, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, मेदरोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अंत्रवृद्धि, ब्रध्नरोग, गलगंड, गंडमाला, पीलपांव, विद्रधि, व्रण अधिकार, भग्न अधिकार, नसूर, भगन्दर, गरमी, शूकदोष, कोढ़रोग, शीतपित्त, विसर्प, स्नायुअधिकार, विस्फोटक और फिरंग इत्यादि अनेक रोगों के लक्षण और अत्युत्तम औषधें वर्णित हैं॥

जिसको

भाव मिश्रने ललित श्लोकों में रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने खर्च से आगरा पुर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौडवंशावतंस लखनऊ केनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक पण्डित कालीचरण जीसे प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया है॥

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी–दिसम्बर सन १८९४ ई०

हक़तसनीफ़ महफ़ूज है बहक़ नवलकिशोर प्रेस

इस मतबेमें जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखी हैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहोवै छापेखानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके फ़ेहरिस्त किताबोंकी मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं ॥

सुश्रुतसंहिता भाषा

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति,शिष्योंको जनेऊ और शिक्षादेनेकी विधि, शिष्यों के पढ़ानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायोंकी सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी विधिसे पढ़ाना यह उचित धर्महै तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतुचर्या अर्थात् जिस ऋतुमें जिस प्रकारसे उपाय करना चाहिये तिसका बर्णन,चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारोंके भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना,शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यकविद्यापढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना,क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगाने की विधि, रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोषधातु मलके क्षय और वृद्धिके जानने का वर्णन,बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन,घावके लेपन और बन्धकी विधि,घाव वाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन, पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्यायका वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन कृत्य और अकृत्य और व्याधिभेद का विषय,आठप्रकारके शस्त्र कर्मकरनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का बर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका बर्णन, दूतकोवैद्यके बुलानेके समय में और वैद्य कोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका बर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल,रोगी के स्वभाव के उलटा होजानेका फल,रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोगमार डालतेहैं उनका वर्णन, सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यको, रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ोंके लेपइत्यादि औषधों का वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषोंके जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्योंका वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईखवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, बातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढ़गर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि

भावप्रकाश सटीकके मध्यखण्डके तृतीयभागका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
अथ शूलाधिकारः	१
शूलका सन्निकृष्टनिदान	१
वातिकका विप्रकृष्ट निदान	
संप्राप्ति पू०ल०	१
शूलकादेश	२
पसली के शूलकाल०	२
वस्ति शूलकाल०	२
पैत्तिक	२
श्लैष्मिक	३
द्वन्द्वज	३
त्रिदोषज	४
आमज	४
शूलके दोषविशेष से	
देश विशेष	४
तन्त्रान्तरोक्त आमशूल	४
शूल के उपद्रव	५
असाध्यःवातिक	५
अरिष्ट	५
परिणामशूल	५
अन्नद्रव शूल विशेष	६
शूलकी चि०	६
परिणाम शूलकी चिकित्सा	८
अन्नद्रव की चि०	९
इति	१०
उदावर्तका अधिकार	१०
उसका विप्रकृष्ट निदान	१०
उसका सामान्य ल०	१०
वेगोंकेअभिघातसेहुयेउदाव-र्तोंकोअलगअलगविशेषल०	१०
अपान वायु के रोकने से हुये का लक्षण	१०

विषय	पृष्ठ
मल निरोधज का ल०	११
मूत्रनिग्रहज का ल०	११
जृम्भानिरोधज का ल०	११
अश्रुनिरोधज का ल०	११
छिक्कानिरोधज का लक्षण	११
वान्ति निरोधज	१२
शुक्रनिरोधज का ल०	१२
क्षुधा निरोधज का ल०	१२
तृषानिरोधज का ल०	१२
श्वासनिरोधज का ल०	१२
निद्राविघातज का ल०	१३
रूक्षादिकुपितवातजका ल०	१३
उसकानिदान संप्राप्ति पूर्वक लक्षण	१३
संप्राप्ति	१३
असाध्य का ल०	१३
आनाह का ल०	१३
आमका आनाह	१४
मलसंचयज	१४
उदावर्तों की चि०	१४
रूक्षादि कुपित वातके उदावर्त्त की चि०	१५
आनाह की चि०	१६
इति	१६
अथ गुल्माधिकारः	१७
उसका सन्निकृष्ट विप्रकृष्ट कारणपूर्वकसामान्यलक्षण	१७
कोष्ठमें भी स्थाननियम	१७
गुल्मका सामान्य ल०	१७
उसका पूर्वरूप	१७
वातिकका निदान	१८

विषय	पृष्ठ
उपकाल०	१८
पैत्तिक का नि०	१८
उसका ल०	१८
श्लैष्मिक और सन्निपातिक का हेतु	१९
उसका ल०	१९
त्रिदोषज	१९
आर्त्तवरूप रक्तज	१९
साध्यका ल०	२०
असाध्य का ल०	२१
उसकी चि०	२१
रक्तके गुल्मकी चि०	२४
इति	२४
प्लीहाधिकारः	२४
उसकी शरीरावयवविशेष स्वरूप	२४
उसका निदान संप्राप्ति पूर्वक ल०	२४
रक्तज ल०	२५
पैत्तिक का ल०	२५
वातिक का ल०	२५
असाध्य ल०	२५
शरीरावयव विशेषपिलही यकृत्का स्वरूप	२५
यकृत् रोग	२५
प्लीहाधिकार में चि०	२५
यकृत् रोगकी चि०	२६
इति	२६
हृद्रोगाधिकारः	२६
उसका विप्रकृष्ट नि०	२६
संप्राप्ति पूर्वक ल०	२७

विषय	पृष्ठ
वातिक का ल०	२७
पैत्तिक का ल०	२७
श्लैष्मिक का ल०	२७
सान्निपातिक का ल०	२७
कृमिज का ल०	२८
उसका विप्रकृष्ट निदान पूर्वक संप्राप्ति	२८
उसका ल०	२८
हृद्रोगके उपद्रव	२८
उसकी चि०	२८
इति	२९
मूत्रकृच्छ्राधिकार	२९
उसका विप्रकृष्ट नि०	२९
उसकासंप्राप्ति पू० ल०	२९
वातज का ल०	३०
पैत्तिक का ल०	३०
श्लैष्मिक का ल०	३०
सान्निपातिक का ल०	३०
पुरीषज का ल०	३०
अश्मरीज का ल०	३१
अश्मरीशर्करा का साम्य	३१
शर्कराके उपद्रव	३१
वातकृच्छ्र की चि०	३१
पित्तकृच्छ्र की चि०	३२
कफकृच्छ्र की चि०	३२
सन्निपातके कृच्छ्रकी चि०	३२
अभिघातकृच्छ्रकी चि०	३२
शुक्रविबन्धके कृच्छ्रकीचि०	३२
पुरीषजकृच्छ्रकी चि०	
इति	३४
मूत्राघातका अधिकार	३५

विषय	पृष्ठ
उनके भेद	३५
अष्ठीला	३६
वातवस्ति	३६
मूत्रातीत	३६
मूत्रजठर	३६
मूत्रोत्संग	३७
मूत्रक्षय	३७
मूत्रग्रन्थि	३७
मूत्रशुक्र	३७
उष्णवात	३८
मूत्रसाद	३८
विड्विघात	३८
वस्ति कुंडली	३८
उसका असाध्य ल०	३९
कुंडली भूतका ल०	३९
मूत्राघात की चि०	३९
इति	४२
अथ अश्मरीका अधिकार	४२
उनकी संप्राप्ति	४३
इनका पूर्व ल०	४३
सामान्य ल०	४३
वाताधिक	४४
उसकी चि०	४४
पैत्तिक चि०	४५
श्लैष्मिक चि०	४५
शुक्राश्मरी चि०	४६
उसकी संप्राप्ति	४६
उसका ल०	४७
शर्करा भेद	४७
उसके उपद्रव	४७
अश्मरी भेदके अरिष्ट	४७
अश्मरी चि०	४८
इति	५२
प्रमेहका अधिकार:	५२
उसका निदान	५२
पूर्वरूप	५३
इनका सामान्य ल०	५३

विषय	पृष्ठ
मूत्रवर्णादिभेदसे प्रमेहभेद	५३
असाध्य	५४
दशपिड़िका	५५
उनका ल०	५६
अथ चि०	५६
इति	६३
मेदका अधिकार	६३
उसका निदान	६४
लक्षण	६४
उसकी चि०	६४
कार्श्यका अधिकार	६८
उसका निदान	६८
उसका ल०	६९
अति कृशके रोग	
कारण	६९
कार्श्य की चि०	६९
इति	७१
उदरका निदान	७१
उसके हेतु	७१
उसकी संप्राप्ति	७२
सामान्य ल०	७२
वातोदर का ल०	७२
पैत्तिक	७२
श्लैष्मिक भेद	७३
सन्निपातोदर का ल०	७३
प्लीहोदर ल०	७४
बद्धगुद ल०	७४
क्षतोदर ल०	७४
दकोदर ल०	७५
साध्यअसाध्य भेद	७६
जातोदकोदर ल०	७६
उदरकी चि०	७६
इति	७९
अथ शोथाधिकार:	७९
उसकाविप्रकृष्टनिदान	७९
उसकासंप्राप्तिपूर्वकसामान्य	
लक्षण	७९

विषय	पृष्ठ
वातिकशोथका ल०	८०
पैत्तिक	८०
श्लैष्मिक	८०
द्वन्द्वज भेद	८१
सन्निपातिक ल०	८१
अभिघातज	८१
विषज	८१
उपद्रव	८२
असाध्य	८२
कष्टसाध्य	८२
तन्त्रान्तरोक्त विशेष भेद	८२
शोथ चि०	८३
सामान्य चि०	८३
इति	८५
अथ वृद्धि अधिकार:	८५
उसकानिदान	८५
और संख्या	८५
वातिक	८५
पैत्तिक	८५
श्लैष्मिक	८५
रक्तज	८५
मेदज	८५
मूत्रज	८६
अन्त्रवृद्धि	८६
उसकी अवस्था	८६
असाध्य	८६
ब्रध्न	८७
वृद्धिकी चि०	८७
ब्रध्नकी चि०	८९
इति	८९
अथ गलगंड गंडमाला का	
सामान्य ल०	८९
उसकी संप्राप्ति	८९
वातिक	८९
श्लैष्मिक	९०
मेदोज	९०
असाध्य	९०

विषय	पृष्ठ
गंडमाला का ल०	९०
अपचीका ल०	९१
उसका साध्यत्वादिकभेद	९१
ग्रन्थिका ल०	९१
वातिक का ल०	९१
पैत्तिकभेद	९२
श्लैष्मिक	९२
मेदोजका भेद	९२
शिराज भेद	९२
औरभी असाध्य	९२
अनन्तर अर्बुद	९३
उसकी संप्राप्ति पूर्वक	
सामान्य ल०	९३
निदानपूर्वक विशिष्ट ल०	९३
रक्तार्बुद	९३
मांसार्बुदकी संप्राप्ति	९४
निदान	९४
असाध्य भेद	९४
असाध्य भेदान्तर	९४
अर्बुदोंकोपाकाभाव कारण	९४
गलगंडकी चि०	९५
गंडमालाकी चि०	९६
ग्रन्थि औरअर्बुदकी चि०	९७
इति	९८
अथ श्लीपदाधिकार:	९८
उसका विप्रकृष्ट कारण	९८
उसका सामान्य ल०	९८
उनका क्रमसे ल०	९८
असाध्य भेद	९८
श्लीपदकी चि०	९९
इति	९९
अथ विद्रधिका अधिकार	९९
उसकासंप्राप्ति पूर्वक सामा-	
न्यलक्षण	९९
विशिष्ट ल०	१००
वातिक का ल०	१००
पैत्तिक का ल०	१००

विषय	पृष्ठ
श्लैष्मिक	१००
सान्निपातिक	१००
अभिघातविद्रधिकासंप्राप्ति पूर्वक ल०	१०१
रक्तज	१०१
भीतरकी विद्रधि	१०१
स्थानविशेषमेंल० विशेष	१०१
स्रावमार्ग	१०२
साध्यत्वादिक	१०२
बाह्यविद्रधियोंकासाध्यासाध्य	१०२
विद्रधि की चि०	१०३
इति	१०४
अथ व्रणाधिकारः	१०४
व्रणकीसंख्याविवरणपूर्वक सामान्य ल० विशिष्टरूप	१०४
अपक्कव्रण शोथका ल०	१०४
पच्यमान का ल०	१०४
पक्कका ल०	१०५
पाककालमेंसबदोषोंका सम्बन्ध	१०५
पाकमें मतान्तर	१०६
पाक ज्ञानार्थ ल०	१०६
पाकाज्ञान	१०६
पीप न निकालनेमें दोष	१०६
शोथके कच्चे पक्केके जानने और न जानने में वैद्यका गुणदोष	१०६
व्रण शोथ की चि०	१०६
क्रम चि०	१०६
शोथहरलेप	१०७
परिषेचन	१०८
विमलापन	१०८
शोथकी विमलापनविधि	१०८
रक्तमोक्षण	१०८
उपनाह	१०९
पाचन	१०९
पाचन द्रव्य	१०९
भेदन	११०
शस्त्रसाध्य भेदन	११०
शस्त्रनिषेधापवाद	११०
भेदन	११०
दारण	११०
पीडन	११०
शोधन	१११
रोपण	१११
सवर्णताकरसा	११२
व्रणवालेका भोजन	११२
आगन्तुव्रणकी चि०	११३
अग्निदग्धकी चि०	११५
इति	११५
भग्नाधिकार	११६
भग्नका भेद	११६
सन्धिभग्नकासामान्यल०	११६
उत्पिष्टका ल०	११६
कांडभग्नके प्रकार	११७
कर्कटकादिकांडभग्न ल०	११८
कष्टसाध्य	११८
असाध्य	११८
दूसरा असाध्य ल०	११८
अस्थिविशेषभग्न चि०	११९
भग्नकी चि०	११९
इति	१२२

भावप्रकाश सटीकके मध्यखण्डके चतुर्थभागका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
अथनाडीव्रणकाअधिकारः	१२२
नाड़ीव्रणकी संप्राप्ति पूर्वक निरुक्ति	१२२
विशिष्ट निरुक्ति	१२२
इसकी दोषानुबन्धसंख्या	१२३
वातकी नाड़ी	१२३
पित्तकी नाड़ी	१२३
कफकी नाड़ी	१२३
त्रिदोषजनाड़ी	१२३
शल्यनिमित्त नाड़ी	१२४
कष्टसाध्य और असाध्य	१२४
नाड़ीव्रणकी चि०	१२४
इति	१२७
भगंदरकापूर्वरूपसहितल०	१२७
उसके भेद पांच	१२७
भोजोक्त उसकी निरुक्ति	१२७
वातिकशतपोनकभगन्दर	१२८
पैत्तिक उष्ट्रग्रीवा	१२८
श्लैष्मिक परिस्रावी	१२८
सान्निपातिक शंबूकावर्त्त	१२८
शल्यज उन्मार्गि भगन्दर	१२९
कष्टसाध्य असाध्य भेद	१२९
भगन्दरकी चि०	१२९
इति	१३०
अथउपदंशाधिकारः	१३२
उसकी निरुक्ति	१३२
उसकी चिकित्सा	१३२
लिंगार्शका उपक्रम	१३६
इति	१३६
शूकदोषका अधिकार	१३६
उसका निदान	१३६
उनकेभेद अठारह	१३६
क्रमके अनुसार	१३६
सर्षपिका	१३७
अष्ठीलिका	१३७
ग्रन्थित	१३७
कुम्भिका	१३७
अलजी	१३७
मृदित	१३८
संमूढ पिड़िका	१३८
अवमन्थ	१३८
पुष्करिका	१३८
स्पर्शहानि	१३८
उत्तमा	१३८
शतपोनक	१३९
त्वक्पाक	१३९
शोणिताबुर्द	१३९
मांसाबुर्द	१३९
मांसपाक	१३९
विद्रधि	१३९
तिलकालक	१३९
असाध्य	१४०

विषय	पृष्ठ
शुक्रदोषकी चि०	१४०
कुष्ठाधिकारः	१४०
उसकी निरुक्ति	१४१
महाकुष्ठ	१४१
क्षुद्रकुष्ठ	१४२
उनके सातप्रकार	१४२
पूर्वरूप	१४२
महाकुष्ठोंके बीचमें कपाल	
का ल०	१४३
औदुम्बर	१४३
मंडल	१४३
सिध्म	१४४
काकण	१४४
पुंडरीक	१४४
ऋष्यजिह्व	१४४
क्षुद्रकुष्ठोंके बीचमें एककुष्ठ	
गजचर्म्म ल०	१४४
चर्म्मद ल०	१४५
विचर्चिका	१४५
विपादिका	१४५
पामा	१४५
कच्छू	१४६
दद्रु	१४६
विस्फोट	१४६
किटिभ	१४६
अलसक	१४६
शतारु	१४६
सप्तधातुगतकुष्ठोंकालक्षण	१४६
रसगतका लक्षण	१४६
रुधिरगतका भेद	१४७
मांसगतका भेद	१४७
मेदोगतका	१४७
अस्थिमज्जागत	१४७
शुक्रगत	१४७
कुष्ठोंमें उल्वण वातादि	
दोष ल०	१४८
साध्यत्वादिक	१४८
अरिष्ट	१४८
श्वित्रभेद	१४९
दोषभेदसे लक्षण भेद	१४९
उसके संसर्गजरोग	१५०
कुष्ठकी चि०	१५०
सिध्मकी चि०	१५६
चर्म्मदलकी चि०	१५७
पामाकी चि०	१५७
कच्छूकी चि०	१५७
दद्रूकी चि०	१५८
श्वित्रकी चि०	१५८
इति	१५९
अथ शीतपित्ताधिकारः	१५९
उसकी विप्रकृष्ट सन्निकृष्ट	
निदान पूर्वक संप्राप्ति	१५९
पूर्वरूप	१५९
शीतपित्तका ल०	१६०
उदर्द का ल०	१६०
कोठोत्कोठका ल०	१६०
इनकी चि०	१६०
इति	१६१
विसर्पाधिकार	१६१
उसकी विप्रकृष्टनिदानसंख्या	
निरुक्तिवो सात प्रकार	१६१
दोषदुष्योंके भेदसे	१६२
विसर्प सात	१६२
वातिकका ल०	१६२
पैत्तिक	१६२
श्लैष्मिक	१६२
सान्निपातिक	१६२
वातपैत्तिक	१६२
वातश्लैष्मिकग्रन्थिविसर्प	१६३
पित्तश्लैष्मिककर्दमबीसर्प	१६३
सान्निपातिक	१६४
क्षतज	१६४
उपद्रव	१६४
साध्यत्वादिक	१६४
विसर्प चि०	१६५
इति	१६६
अथस्नायु अधिकारः	१६६
उसका विप्रकृष्टसामान्यल०	१६६
स्नायु रोगकी चि०	१६६
अथ विस्फोटकाअधिकारः	१६७
विस्फोटककीनिदानपूर्वक	
संप्राप्ति	१६७
पूर्वरूप	१६७
वातिक	१६७
पैत्तिक	१६८
श्लैष्मिक	१६८
कफपैत्तिक	१६८
वात पैत्तिक	१६८
वातश्लैष्मिक	१६८
सान्निपातिक	१६८
रक्तज	१६९
विस्फोटक	१६९
उपद्रव	१६९
उपद्रवोंके लक्षणान्तर	१६९
साध्यत्वादिक	१६९
विस्फोटककी चि०	१६९
इति	१७०
अथ फिरंगका अधिकार	१७०
उसकी निरुक्ति	१७१
विप्रकृष्ट निदान	१७१
लक्षण	१७१
उपद्रव	१७१
साध्यत्वादिक	१७१
फिरंगकी चि०	१७१
इति	१७३
अथ मसूरिका निदान	१७३
उसकी सन्निकृष्ट विप्रकृष्ट	
निदान पूर्वक संप्राप्ति	१७३
पूर्वरूप	१७३
वातज	१७४
पित्तज	१७४
रक्तज	१७४
कफज	१७४
सन्निपातिक	१७४
रसादि सप्तधातु गत	१७४
रसकी	१७५
रक्तकी	१७५
मांसकी	१७५
मेदकी	१७५
अस्थि मज्जागत	१७५
शुक्रगत	१७५
चर्म्मज	१७६
रोमान्तिका	१७६
असाध्य	१७६
कष्टसाध्य	१७६
घोर असाध्य	१७७
अरिष्ट	१७७
मसूरिका कारण शोथ	
विशेष	१७७
मसूरिकाकी चि०	१७७
इति	१७९
उसका भेद शीतला का	
अधिकार	१७९
उसकी निरुक्ति	१७९
शीतलाके भेद	१८१
इनका साध्यत्वादिक	१८२
क्षुद्ररोगाधिकार	१८२
उसका निदान पूर्वक ल०	१८२
पलितकी चि०	१८२
इन्द्रलुप्तका निदान पूर्वक	
लक्षण	१८३
इन्द्रलुप्तकी चि०	१८३
दारुणका ल०	१८३
दारुण की चि०	१८३
अरूषिका ल०	१८४
उसकी चि०	१८४
इरिवेल्लिका ल०	१८४
उसकी चि०	१८४

विषय	पृष्ठ
पनसिका ल०	१८५
उसकी चि०	१८५
पाषाण गर्दभका लक्षण	१८५
उसकी चि०	१८५
मुखदूषिका ल०	१८५
उसकी चि०	१८५
मुखलेप	१८६
व्यंगका ल०	१८६
नीलिका ल०	१८६
उनकी चि०	१८६
वल्मीकका ल०	१८७
उसकी चि०	१८८
कक्षागन्धका ल०	१८८
उनकी चि०	१८८
अग्निरोहिणी का ल०	१८९
उसकी चि०	१८९
विदारिका ल०	१८९
उसकी चि०	१८९
चिप्य ल०	१८९
कुनखका ल०	१९०
उनकी चि०	१९०
परिवर्त्तिका ल०	१९०
उसकी चि०	१९०
अवपाटिका ल०	१९१
उसकी चि०	१९१
निरुद्धप्रकाशका लक्षण	१९१
उसकी चि०	१९१
सन्निरुद्ध गुदका लक्षण	१९२
उसकी चि०	१९२
वृषण कच्छूका ल०	१९२
उसकी चि०	१९२
अहिपूतनाका ल०	१९३
उसकी चि०	१९३
गुदभ्रंशका ल०	१९३
उसकी चि०	१९३
शूकरदंष्ट्रका ल०	१९४
उसकी चि०	१९४
अनुशायीका ल०	१९४
उसकी चि०	१९४
अलसका ल०	१९४
उसकी चि०	१९४
दारीका ल०	१९५
उसकी चि०	१९५
कदरका ल०	१९६
उसकी चि०	१९६
तिलका ल०	१९६
मशक ल०	१९६
जतुमणि ल०	१९६
जतुमणि भेद	१९६
इनकी चि०	१९७
न्यच्छका ल०	१९७
इसकी चि०	१९७
पद्मिनीकंटकका ल०	१९७
उसकी चि०	१९७
अजगल्लीका भेद	१९८
उसकी चि०	१९८
यवप्रख्याल	१९८
अन्त्रालजी ल०	१९८
उनकी चि०	१९८
विवृताभेद	१९८
इन्द्रवृद्धा ल०	१९९
गर्द्धभिका ल०	१९९
जालगर्दभ ल०	१९९
इनकी चि०	१९९
कच्छपिका ल०	१९९
उसकी चि०	२००
शर्कराबुर्दका ल०	२००
उसकी चि०	२००
सहेतु लक्षण विकार विशेष	२००
इति	२०१
शिरोरोगाधिकार:	२०१
उसकानिदानऔरसंख्या	२०१
उसके एकादशप्रकार	२०१
वातिकका लक्षण	२०१
पैत्तिकका ल०	२०१
श्लैष्मिकका ल०	२०१
सान्निपातिकका ल०	२०१
रक्तजका ल०	२०२
क्षयजका ल०	२०२
कृमिजका ल०	२०२
सूर्यावर्त्तका ल०	२०२
अनन्तवातका ल०	२०२
शंखकका ल०	२०३
अर्द्धावभेदकका ल०	२०३
शिरोरोगोंकी चि०	२०४
शिरोबस्तिविधि	२०४
इति	२०७
अथ नेत्ररोगाधिकार:	२०७
उसका प्रमाण	२०७
उसके अंग	२०७
नेत्रके अठहत्तर रोग	२०७
तन्त्रान्तरोक्त विशेष	२०८
उनका सामान्यसे विप्रकृष्ट सन्निकृष्ट निदान	२०८
संप्राप्ति	२०८
दृष्टिरोग	२०८
दृष्टि ल०	२०८
उसमें चार पटल	२०९
प्रथम पटल गतदोष स्वभाव	२०९
द्वितीय पटलगत	२०९
तृतीय पटलगत	२१०
चतुर्थ पटलगत दोष	२११
दृष्टिरोगोंके नाम और संख्या	२११
छ:लिंगनाश	२११
लिंगनाशका ल०	२११
वातका ल०	२११
पित्तका लक्षण	२१२
कफका ल०	२१२
सन्निपातका	२१२
रक्तका	२१२
परिम्लायि का ल०	२१२
हेतु विशेष में मंडल विशेष	२१३
पित्त विदग्ध दृष्टि का लक्षण	२१३
श्लेष्मविदग्ध दृष्टिलक्षण	२१४
धूम दर्शन ल०	२१४
ह्रस्व जात्य ल०	२१४
नकुलान्ध्य ल०	२१४
गंभीरक ल०	२१४
निमित्त का ल०	२१५
अनिमित्तलिंग नाशका लक्षण ॥	२१५
इति	२१५
अथ कृष्ण मंडल रोग	२१५
उनकेनामऔर संख्या	२१५
सव्रणशुक्रलिंगकालक्षण	२१५
इति	२१६
सन्धि के रोग ॥	२१६
छ: सन्धि	२१६
उनमें होने वालेरोग और उनके नामतथा संख्या	२१६
पूयालस का ल०	२१६
उपनाह लक्षण	२१६
स्रावों की संप्राप्ति	२१६
पैत्तिक स्राव	२१७
श्लैष्मिक स्राव	२१७
सान्निपातिक स्राव	२१७
पर्वणी का लक्षण	२१७
अलजी लक्षण	२१७
इति	२१८
अनन्तरशुक्लभागकेरोग ॥	२१८
उनकेनाम औरसंख्या ॥	२१८
प्रस्तार्यम का लक्षण	२१८
शुक्लार्म का लक्षण	२१८

विषय	पृष्ठ
रक्तार्म का लक्षण	२१८
अधिमांसार्म का ल०	२१८
स्नायवर्म्म का लक्षण	२१८
शुक्तिका ल०	२१९
अर्जुनका ल०	२१९
पिष्टकका ल०	२१९
शिराजालका ल०	२१९
शिरापिड़िकाका ल०	२१९
बलासग्रन्थितका ल०	२१९
इति	२१९
अथवर्त्मजरोग	२१९
उनकीनिरुक्ति	२१९
उनमें होनेवालेरोगों के	
नाम और संख्या	२२०
उत्संगपीड़िका ल०	२२०
कुंभिकाका ल०	२२०
पोथिका ल०	२२०
वर्त्मशर्करा ल०	२२०
अर्शोवर्त्मका ल०	२२१
शुष्कार्शका ल०	२२१
अंजननामिकाका ल०	२२१
बहलवर्त्मभेद	२२१
वर्त्मबन्धकभेद	२२१
क्लिष्टवर्त्मभेद	२२१
वर्त्मकर्दमभेद	२२२
श्याववर्त्मभेद	२२२
प्रक्लिन्नवर्त्म	२२२
अक्लिन्नवर्त्म	२२२
वातहतवर्त्म	२२२
वर्त्मार्बुद	२२२
निमेष	२२२
शोणितार्श ल०	२२३
लगण ल०	२२३
विषवर्त्म ल०	२२३
कुंचन ल०	२२३
इति	२२३
अथपक्ष्मरोग	२२३

विषय	पृष्ठ
पक्ष्ममें होनेवाले	२२३
रोगोंके नाम	२२३
पक्ष्मकोप ल०	२२३
तन्त्रान्तरोक्त पक्ष्मकोप	२२४
पक्ष्मशात ल०	२२४
समस्त नेत्रके रोग उनके नाम	
और संख्या	२२४
उनमें अभिष्यन्दचार	२२४
वातिक	२२४
पैत्तिक	२२५
श्लैष्मिक	२२५
रक्तज	२२५
अधिमन्थनाम अभिष्यंद	२२५
उनके ल०	२२५
हताधिमन्थ	२२६
वातपर्य्याय	२२६
शुष्काक्षिपाक	२२६
अन्यतोवात	२२७
अम्लाध्युषित	२२७
शिरोत्पात	२२७
शिराहर्ष	२२७
नेत्रकीसमता ल०	२२७
निरामता ल०	२२८
इति	२२८
नेत्ररोगोंकी चि०	२२८
सेककीविधि	२२९
आश्चोतनविधि	२३०
पिंडीविधि	२३०
बिडालकविधि	२३१
तर्पणविधि	२३१
पुटपाकविधि	२३२
अंजनविधि	२३३
चिकित्सा	२३३
इति	२३६
कर्णरोगाधिकार	२३६
कर्णरोगोंकेनामऔरसंख्या	२३६
कर्णशूलकीसंप्राप्तिपूर्वकल०	२३६

विषय	पृष्ठ
असाध्यता	२३९
कर्णनादका ल०	२३९
बाधिर्य्य	२३९
असाध्यबाधिर्य्य	२४०
क्ष्वेडभेद	२४०
कर्णस्राव	२४०
कर्णकंडु	२४०
कर्णगूथ	२४०
प्रतिनाह	२४०
कृमिकर्ण	२४१
कानमेंपतंगआदि	
जानेका लक्षण	२४१
दोप्रकारकीकर्णविद्रधि	२४१
कर्णपाक	२४१
पूतिकर्ण	२४१
कर्णगतशोथअर्श-	
अर्बुदका ल०	२४२
इनमें वातिक	२४२
पैत्तिक	२४२
कफज	२४२
सन्निपातज	२४२
कर्णपाली ल०	२४३
उसमेंपरिपोटकका	
निदान सहित ल०	२४३
उत्पात ल०	२४३
उन्मंथक ल०	२४३
दुःखवर्द्धन ल०	२४३
परिलेहिन ल०	२४३
कर्णरोग चि०	२४४
इति	२४६
नासारोगाधिकारः	२४६
उनकेनामऔरसंख्या	२४६
पीनसका ल०	२४६
अनुक्तसंग्रह	२४६
पूतिनस्य	२४७
नासापाक	२४७
पूयरक्त	२४७

विषय	पृष्ठ
क्षवथु	२४७
आगंतुजक्षवथु	२४७
भ्रंशथु	२४८
दीप्ति ल०	२४८
प्रतिनाह ल०	२४८
स्राव ल०	२४८
नासाशोष ल०	२४८
प्रतिश्याय ल०	२४८
उसकासद्योजनक निदान	
संप्राप्ति पूर्वक लक्षण	२४९
चयादिक्रमजनितनिदान	
पूर्वक संप्राप्ति	२४९
वातिकका ल०	२५०
पैत्तिकका ल०	२५०
श्लैष्मिकका ल०	२५०
सान्निपातिकका ल०	२५०
दुष्टप्रतिश्यायका ल०	२५०
रक्तजका ल०	२५१
उनमें कृमि	२५१
विकारांतर	२५१
चौंतीससंख्यापूरण	२५१
चिकित्साभेदसेपीनसका	
लक्षण	२५२
पक्वपीनसका ल०	२५२
नासारोगोंकी चि०	२५२
इति	२५४
अथमुखरोगाधिकारः	२५४
उसकास्वरूप	२५४
मुखरोगोंकीसंख्या	२५४
उनकेनिदान	२५४
ओष्ठरोगोंकी निदान पूर्वक	
संख्या	२५४
वातिकका ल०	२५५
पैत्तिकका ल०	२५५
श्लैष्मिकका ल०	२५५
सान्निपातिकका ल०	२५५
रक्तजका ल०	२५५

विषय	पृष्ठ
मांसजका ल०	२५५
मेदोजका ल०	२५५
अभिघातजका ल०	२५६
ओष्ठरोगोंकी चि०	२५६
प्रतिसारणबिधि	२५६
दन्तओष्ठरोग उनके नाम	
और संख्या	२५६
शीतादका ल०	२५७
दन्तपुप्पुटका ल०	२५७
दन्तवेष्ट ल०	२५७
सौषिर ल०	२५७
महासौषिर	२५७
परिदर ल०	२५८
उपकुश ल०	२५८
वैदर्भ ल०	२५८
खलिवर्द्धन ल०	२५८
अधिमांसक ल०	२५८
पंचदंतनाड़ी	२५८
दंतबिद्रधि	२५६
दंतवेष्टरोगोंकी चि०	२५६
दंतरोगांतर उनके नाम	
और संख्या	२६१
दालनका ल०	२६१
कृमिदंतका ल०	२६१
भंजनकका ल०	२६२
दंतहर्षका ल०	२६२
दंतशर्कराका ल०	२६२
कपालिका ल०	२६२
श्यावदंतकका ल०	२६२
करालका ल०	२६२
उनकी चि०	२६२
जिह्वारोग	२६४
उनकानिदानसंख्या	२६४
वातजका ल०	२६४
पित्तजका ल०	२६४
कफजका ल०	२६४
अलासका ल०	२६४
उपजिह्विका का ल०	२६४
उनकी चि०	२६५
अथतालूरोग	२६५
उनकेनामऔरसंख्या	२६५
गलशुंडीका ल०	२६५
तुंडिकेरीका ल०	२६५
अध्रूष ल०	२६६
कच्छप ल०	२६६
तालवर्बुद ल०	२६६
मांससंघात ल०	२६६
तालु पुप्पुट ल०	२६६
तालुशोष ल०	२६६
उनकी चि०	२६७
गलरोग	२६७
उनकेनामऔरसंख्या	२६७
पांचोंरोहिणीका सामान्य	
संप्राप्ति	२६७
वातजायाका ल०	२६८
पित्तजाका ल०	२६८
कफजाका ल०	२६८
सन्निपातजाका ल०	२२८
रक्तजाका ल०	२६८
रक्तकारणइनकीमारकताहोने	
सेअवधि	२६८
कंठशालूक ल०	२६६
अधिजिह्वक ल०	२६६
वलय ल०	२६६
वलासभेद	२६६
एकवृंद ल०	२६६
वृंद ल०	२७०
शतघ्नी ल०	२७०
गिलायु ल०	२७०
गलविद्रधि ल०	२७०
गलौघ ल०	३७०
स्वरघ्न ल०	२७१
मांसतान ल०	२७१
बिदारी ल०	३७१
मुखरोगोंकी चि०	२७१
सामान्यकंठरोगोंकी	
चिकित्सा	२७२
समस्त मुखरोग उसका	
निदान और सं०	२७२
वातिकका ल०	२७२
पैत्तिकका ल०	२७३
श्लेष्मिकका ल०	२७३
चिलिंगगति त्रिदोष	
कोनाड़ी॥	२७३
समस्तमुखरोगोंकी	
चिकित्सा॥	२७३
इति	२७४
अथविषाधिकार:	२७४
बिषदोप्रकारका	२७४
स्थावरबिषकेदश	
आश्रय	२७४
जंगमविषकेसोलह	
आश्रय	२७५
सामान्यस्थावरबिष	
केकार्य	२७५
मूलबिषकाकार्य्य	२७५
पत्रबिषका कार्य्य	२७५
फलविषका कार्य्य	२७५
पुष्पविषका कार्य्य	२७५
त्वचासारआदिकेकार्य्य	२७६
चीरबिषका कार्य्य	२७६
धातुबिषका कार्य्य	२७६
कंदबिषका कार्य्य	२७६
दशगुण	२७६
उनगुणोंसेबिषकार्य्य	२७६
बिषलिप्तशस्त्रसेहतका	
लक्षण	२७७
उनकेज्ञानार्थ ल०	२७७
जंगमबिषोंकेसामान्य	
कार्य्य	२७८
तीव्रगतरजंगमोंमेंसर्प	२७८
भोगिआदियोंके काटेका	
लक्षण	२७८
देशकाल बिशेषमेंकाटेकी	
असाध्यता	२७८
दर्वीकरका ल०	२७६
दूषीविषके कार्य्य	२८०
स्थानबिशेषोत्थित दूषी	
विषमें लक्षण बिशेष	२८०
दूषीबिषकाप्रकोपसमय	२८०
कुपितदूषीविषकापूर्वरूप	२८१
दूषीबिषभेदसेबिकारभेद	२८१
दूषीबिषकीनिरुक्ति	२८१
दूषीबिषकेसाध्यत्वादिक	२८१
गरभेद	२८१
गरकार्य्य	२८२
लूताआदिजन्तुविशेषोंकी	
उत्पत्तिनिरुक्तिऔरसंख्या	२८२
सामान्यउनकेदंश लक्षण	२८२
असाध्योंका ल०	२८३
आखुविषकाकार्य्य	२८३
प्राणहरमूषिकविषका	
कार्य्य	२८३
गिरिगिटकेकाटेका ल०	२८३
बिच्छूकेविषका ल०	२८३
असाध्यबिच्छूकेकाटेका	
लक्षण	२८४
कणभदष्टका ल०	२८४
उच्चिटिंगकेकाटेका ल०	२८४
विषवालेमेंढकके काटेका	
लक्षण	२८४
जलौकाविषकार्य्य	२८४
छिपकलीकेविषका०	२८५
खनखजूरेकाविषकार्य्य	२८५
मशकविषकार्य्य	२८५
असाध्यमशक ल०	२८५
मक्षिकादंशका ल०	२८५
व्याघ्रादिविषका ल०	२८५

विषय	पृष्ठ
विषोभिक्षतका ल०	२८६
स्थावरविषकी चि०	२८६
जंगमविषकी चि०	२८६
इति	२८७
स्त्रियोंकेप्रदरादिरोगोंका अधिकार	२८७
उसकाविप्रकृष्टनि०	२८७
उसकासामान्य ल०	२८८
श्लैष्मिकप्रदरका ल०	२८८
पैत्तिकका ल०	२८८
वातिकका ल०	२८८
सन्निपातिकका ल०	२८९
रक्तकेबहुतनिकलनेमें उपद्रव	२८९
असाध्यप्रदररोगवालीका लक्षण	२८९
चिकित्सानिवृत्त्यर्थशुद्ध आर्तवका ल०	२८९
प्रदरकी चि०	२८९
इति	२९०
सोमरोगाधिकारः	२९०
उसकीनिदानपूर्वकसंप्राप्ति	२९०
उसका ल०	२९०
उसकी चि०	२९१
मूत्रातीसारका ल० चि०	२९१
योनिरोगाधिकारः	२९१
उनकानिदान	२९१
योनिरोगके नाम	२९१
उनके ल०	२९२
विप्लुतासूची	२९३
त्रिदोषजा	२९३
असाध्यता	२९३
योनिकन्दकानिदान	२९३
लक्षण	२९३
वातजादि भेदसे लक्षण	२९४
योनिरोगकी चि०	२९४
उसमेंवन्ध्याकीचि०	२९४
उसकाल०	२९४
नष्टार्तवकीचि०	२९४
बन्ध्याचि०	२९४
गर्भप्रद औषध कथनावसरमें गर्भनरहनेकाऔषध	२९५
क्रमसे चि०	२९५
गर्भस्रावकानिदान	२९८
उनकापूर्वरूप	२९९
उनकी अवधि	२९९
गर्भस्रावकी चि०	२९९
गर्भपातकेउपद्रव	२९९
गर्भकेस्थानान्तर	२९९
गमनमेंउपद्रव	३००
उसकी चि०	३००
मासानुमासिक	३००
वातशुष्कगर्भकीचिकित्सा	३०२
प्रसवमास	३०२
प्रसवमासअतिक्रमकरकेरहे हुयेगर्भकी चिकित्सा	३०२
समयपरप्रसवबिलंबमें चिकित्सा	३०२
मूढ़गर्भकीनिदानसंप्राप्ति पूर्वक ल०	३०३
उसकीसंख्यानिरास	३०३
चारप्रकार	३०३
उसका ल०	३०४
आठप्रकार	३०४
आठप्रकारान्तर	३०४
असाध्यमूढ़गर्भिणी ल०	३०५
मृतगर्भकाक्रमसेकर्षणार्थ क्रम	३०५
गर्भकेमरणमेंकारण	३०५
असाध्यगर्भिणी ल०	३०५
योनिसंवरण ल०	३०६
मूढ़गर्भकी चि०	३०६
छेदनप्रकार	३०७
प्रसूताकोयोनिमें घृतादिकी चि०	३०७
प्रसूताकेउदरमेंअपराके उपद्रव	३०७
उसकी चि०	३०७
मक्कल्लकाल०	३०८
उसकीचि०	३०८
प्रसूताकेहित	३०८
सूतिकारोगकानिदान	३०९
व्याधिसामान्यस्वरूप	३०९
ज्वरादियोंका रोगविशेष करकेनिदानविशेष	३०९
सूतिकेरोगकी चि०	३०९
प्रसूताकेनियमसमयकी अवधि	३११
स्तनरोगकीसंप्राप्ति	३११
उनकाअतिदेशसे ल०	३११
स्तनरोगकी चि०	३११
इति	३१२
अथबालरोगाधिकारः	३१२
बालग्रहोंकेनाम	३१२
उनकीउत्पत्ति	३१२
सामान्यग्रहजुष्टोंका ल०	३१३
बालग्रहोंकाबालग्रहण	३१३
विशिष्टग्रहजुष्टोंका ल०	३१४
सामान्यग्रहजुष्टोंकी चि०	३१५
विशिष्टग्रहजुष्टोंकी चि०	३१५
स्कंदग्रहजुष्टोंकी चि०	३१५
स्कंदापस्मारलगेकी चि०	३१६
शकुनीग्रहजुष्टकी चि०	३१७
रेवतीग्रहजुष्टकी चि०	३१८
पूतनाग्रहजुष्टकी चि०	३१८
गंधपूतनाग्रहजुष्ट चि०	३१९
तिक्तद्रुम	३१९
शीतपूतनाग्रहजुष्टकीचि०	३२०
मुखमंडिकाग्रहजु० चि० जलाभिमंत्रणमंत्र	३२०
नैगमेयग्रहजु० चि०	३२१
बालरोगोंकेनि० ल०	३२१
तालुकंठक ल०	३२२
महापद्म ल०	३२२
कुकूणक ल०	३२२
तुंडीगुदपाक ल०	३२३
अहिपूतन ल०	३२३
अजगल्ली ल०	३२३
परिगर्भिक ल०	३२३
दंतोद्भेदकरोग	३२३
बालरोगोंकी चि०	३२४
बालककोकनीयसीमात्रा	३२४
प्रकारांतरसेऔषधोपायन	३२५
नअवचनबालकोंकेआभ्यं-तरज्ञानोपाय	३२५
ज्वरकी चि०	३२५
इति	३३०
अथोत्तरखंड	
वाजीकरणाधिकारः	३३०
उसका ल०	३३०
नपुंसक का लक्षण संख्या निदान	३३०
असाध्यक्लैब्य	३३१
नपुंसकको चि०	३३१
वाजीकरणविधि	३३२
स्त्रीभजनविधि	३३२
वाजीकरण	३३२
इति	३३८
रसायनाधिकारः	३३८
उसका ल०	३३८
उसकाफल	३३८
उसकेउदाहरण	३३८

इति

तृतीयो भागः ॥

अथशूलाधिकारः ॥

तत्र शूलस्यसन्निकृष्टं निदानमाह ॥

दोषैःपृथक्समस्तामद्वन्द्वैःशूलोऽष्टधाभवेत्। सर्व्वेष्वेतेषुशूलेषुप्रायेणपवनःप्रभुःकर्त्ता १॥

तृतीय भाग ॥

शूलका अधिकार ॥

शूल के समीपी कारण ॥

शूल आठ प्रकारके हैं जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज आमज वातकफज पित्तकफज और वातपित्तज इनसब शूलों में बहुधा वातही प्रधान होतीहै ॥ १ ॥

अथ वातिकस्यविप्रकृष्टंनिदान सम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

व्यायामयानादतिमैथुनाच्चप्रजागराच्छीतजलातिपानात्। कलायमुद्गाढकिकोरदूषादत्यर्थरूक्षाध्यशनाभिघातात् । कषायतिक्तातिविरूढजान्नविरुद्धवल्लूरकशुष्कशाकैः ॥ विट्छुक्रमूत्रानिलसन्निरोधाच्छोकोपवासादतिहास्यभाषात् । वायुःप्रवृद्धोजनयेद्धिशूलंहृत्पृष्ठपार्श्वत्रिकवस्तिदेशे ॥ जीर्णेप्रदोषेचघनागमेचशीतेचकोपंसमुपैतिगाढम् । मुहुर्मुहुश्चोपशमप्रकोपौविण्मूत्रसंस्तम्भनतोदभेदैः ॥ संस्वेदनाभ्यञ्जनमर्द्दनाद्यैःस्निग्धोष्णभोज्यैश्चशमंप्रयाति । व्यायामोमल्लयुद्धादिःयानंतुरगरथादिमैथुनंस्त्रीसेवाप्रजागरंरात्रौएषामतियोगात्शीतलजलप्रभूतपानात्कलायस्त्रिपुटः आढकीतुवरीकोरदूषःकोद्रवःअतिरूक्षद्रव्यसेवाअध्यशनंभुक्तस्योपरिभोजनम् अभिघातोलोष्टादिभिः कषायतिक्तरससेवाविरूढजान्नम्॥ विरूढमङ्कुरितमन्नम्। कलायचणकादितज्जमन्नभक्ष्यम्॥ वल्लूरकंशुष्कमांसम् । तस्यशूलस्यदेशमाहहृदादिषु ॥ २ ॥

बातज शूलके दूरवाले निदान और संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

व्यायाम घोड़े आदिकी सवारी अत्यन्त मैथुन रात्रि में जगना बहुत शीतल जल पीना मटर मूंग अरहड़ कोदों बहुत रूखी बस्तु भोजन के ऊपर भोजन चोट कपैली तथा तिक्तबस्तु अंकुरवाले मटर तथा चने आदि अन्न का भोजन बिरुद्ध भोजन सूखामांस सूखेशाक मल वीर्य्य मूत्र तथा बायुका रोकना शोक लंघन बहुत हँसना और बहुत जोरसे बोलना इनसब कारणों से बढ़ीहुई बायु हृदय पीठ पसली त्रिकतथा बस्ति में शूलको उत्पन्न करतीहै भोजनके परिपाकहोने पर सायंकालमें वर्षा ऋतुमें मेघोंके आनेमें तथा शीत कालमें यह रोग अधिक कोपको प्राप्तहोताहै बारम्बार पीड़ाका घटना बढ़ना मलमूत्रका रुकना सुई गड़नेकी सी पीड़ा और टूटनेकी सी पीड़ा यह लक्षण होतेहैं स्वेद उबटन मर्दन आदि और स्निग्ध तथा उष्ण बस्तुओं के सेवन से यह रोग शान्त होताहैं ॥ २ ॥

तत्रहृच्छूलस्यपृथगपिलक्षणंपठंति ॥

कफपित्तावरुद्धस्तुमारुतोरसवर्द्धितः । हृदयस्थःप्रकुरुतेमुच्छ्वासस्यावरोधकम् ॥ स हृच्छूलइतिख्यातोरसमारुतकोपजः ॥ ३ ॥

हृदयके शूलका अलग लक्षण ॥

रसकेद्वारा बढ़ीहुई कफ तथा पित्तसे रुकीहुई हृदयमें स्थित बायुश्वास के रोकने वाले शूलको उत्पन्न करती है इस रसयुक्त बायुके कोपसे उत्पन्न हुये शूलको हृदशूल कहते हैं ॥ ३ ॥

अथ पार्श्वशूलस्यापिलक्षणमाह ॥

कफंनिगृह्यपवनःसूचीभिरिवनिस्तुदन् । पार्श्वस्थःपार्श्वयोःशूलंकुर्य्यादाध्मानसंयुतम्॥तेनोच्छ्वसितिवक्त्रेणनरोऽन्नञ्चनकाङ्क्षति । निंद्राञ्चनाप्नुयादेवपार्श्वशूलःप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

पसलीके शूलका लक्षण ॥

पसलीमें स्थितबायु कफके साथ मिलकर सुई गड़नेकीसी पीड़ा समेत शूलको उत्पन्न करती है इसमें अफरा मुखसे श्वासलेना अन्नमें अनिच्छा और निद्राका नाश यह लक्षण होते हैं इसको पार्श्वशूल कहते हैं ॥ ४ ॥

वस्तिशूलस्यापिलक्षणमाह ॥

संरोधात्कुपितोवायुर्वस्तिंसंश्रित्यतिष्ठति वस्तेरध्वनिनाड़ीषुततःशूलोऽस्यजायते । विण्मूत्रवातसंरोधोवास्तिशूलःसउच्यते । प्रकृतमनुसरतिजीर्णेभुक्ते ॥ प्रदोषेरात्राबागमेरात्रिभवशीतेनवातप्रकोपात् । घनागमेवर्षासुमेघोदयेच ॥ ५ ॥

वस्तिशूलका लक्षण ॥

मलमूत्रादिके बेगोंके रोकनेसे कुपितबायु वस्ति (पेडू) में स्थितहोकर मलमूत्र तथा बायुकोरोकती हुई वस्तिके मार्गकी नाड़ियोंमें शूलको उत्पन्न करती है इसको वस्तिशूल कहतेहैं ॥ ५ ॥

तथैवपैत्तिकमाह ॥

क्षारातितीक्ष्णोष्णविदाहितैलनिष्पावपिण्याककुलत्थयूषैः । कट्वम्लसौवीरसुराविकारैःक्रोधानलायासरविप्रतापैः ॥ ग्राम्यातियोगादशनैर्विदग्धैःपित्तंप्रकुप्याथकरोति शूलम् । तृण्मोहदाहार्तिकरंहिनाभ्यांसंस्वेदमूर्च्छाभ्रमशोषयुक्तम् ॥ मध्यंदिनेकुप्यति

चार्द्धरात्रेनिदाघकालेजलादात्ययेच । शीतेचशीतैःसमुपैतिशान्तिंसुस्वादुशीतैरतिभोजनैश्च ॥ निष्पावोराजमाषः । सौवीरंसन्धानभेदः । सुराविकारैःपरिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नासुरामता ॥ तस्याःप्रकारैःरविप्रतापःआतपः । ग्राम्यातियोगोमैथुनाधिक्यम् ॥ विदाहीत्युक्तापिअशनैर्विदग्धैरितिबोधयति ॥ अविदाहिवस्तुनोऽपिपित्तवशाद्विदाहित्वंभवति । जलदात्ययेशरदिशीतैर्वातादिभिः ॥ ६ ॥

पित्तज शूलके लक्षण ॥

क्षार अत्यन्त तीक्ष्ण उष्ण बिदाही (जो बस्तु खट्टी डकारलावे तृषा समेत हृदयमें दाहकरे और देरमें पचे उसे बिदाही कहते हैं) कड़वी तथा खट्टी बस्तु तेल उर्द खली कुलथी कायूष (दालकारस) सौबीर (भूसी रहित कच्चे अथवा पक्के यवोंको जल में संधान करनेको सौवीर कहते हैं) सुपक्के अन्नके संधान को सुरा कहतेहैं) के बिकार क्रोध अग्नि परिश्रम धूप अधिक मैथुन और विदग्ध भोजन इन सब कारणों से पित्त कुपित होकर नाभि में शूलको उत्पन्न करताहै इसमें तृषा मोह दाह स्वेद मूर्च्छा भ्रम और सूखना यह लक्षण होतेहैं मध्याह्न अर्द्धरात्रि और ग्रीष्म तथा शरद्ऋतुमें यह रोग बढ़ताहै मधुर तथा शीतल भोजनों से शीतल हवा आदि से और शीतकालमें यह रोग शान्त होताहै ॥ ६ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

आनूपवारिजकिलाटपयोविकारैर्मांसेक्षुपिष्टकृशरातिलशष्कुलीभिः । अन्यैर्बलासजनकैरपिहेतुभिश्चश्लेष्माप्रकोपमुपगम्यकरोतिशूलम् ॥ हृल्लासकाससदनारुचिसंप्रसेकैरामाशयेस्तिमितकोष्ठशिरोगुरुत्वैः । मुक्तेसदैवहिरुजंकुरुतेऽतिमात्रम्सूर्य्योदयेऽथशिशिरेकुसुमागमेच आनूपंबहुलजलदेशजंभक्ष्यम् ॥ वारिजंशालूकादि । पक्कंदध्नासमंक्षीरंविज्ञेयादधिकूर्चिका । तक्रेणतत्कुर्चकंस्यात्तयोःपिण्डःकिलाटकः ॥ पयोविकारःपायसादिःपिष्टंमाषादिः । अन्यैःगुर्वादिभिःस्तिमितमार्द्रपटावगुण्ठितमिव ॥ यत्कोष्ठंशिरश्चतयोर्गुरुत्वैःसह । सूर्य्योदयइतित्रिधाविभक्तदिवसप्रथमभागस्योपलक्षणम् ॥ शिशिरेतत्रकफस्यातिसञ्चयात् । कुसुमागमेवसन्ते ॥ ७ ॥

कफज शूलका लक्षण ॥

बहुत जलवाले देशमें उत्पन्न हुई भोजन की बस्तु कमल की जड़ आदि किलाट (औटकर फटेहुए दूधके खोयेको किलाट कहते हैं) खीर आदि दूधके पदार्थ मांस ईख उर्द आदि की पिट्ठी खिचड़ी तिल पूरी और अन्य कफकारी कारणों से कुपित हुआ कफ आमाशय में शूलको उत्पन्न करता है इसमें मतली खांसी शरीरका टूटना अरुचि मुख से लार गिरना कोष्ठका गीले कपड़े से ढकाहुआ सा मालूम होना और कोष्ठ तथा शिरका भारीपन यह सब लक्षण होते हैं भोजन के उपरान्त दिनके प्रथमभाग और शिशिर तथा वसन्तऋतु में यह रोग बहुत बढ़ताहै ॥ ७ ॥

द्वन्द्वजमाह ॥

द्विदोषलक्षणैरेतैर्विद्याच्छूलंद्विदोषजम् ॥ ८ ॥

द्वन्द्वज शूलका लक्षण ॥

ऊपरके कहेहुए दोदोषों के लक्षणों से द्वन्द्वज शूल जानना चाहिये ॥ ८ ॥

त्रिदोषजमाह ॥

सर्वेषुदेशेषुचसर्वलिंगंविद्याद्भिषक्सर्वभवंहिशूलम् । सुकष्टमेनंविषवज्रकल्पंविवर्ज्जनीयंप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ सर्वेषुदेशेषुहृत्पृष्ठपार्श्वत्रिकवस्तिनाभ्यामाशयेषु । सर्वभवं त्रिदोषजम् ॥ ९ ॥ त्रिदोषज शूलका लक्षण ॥

हृदय पसली पीठ त्रिक वस्ति नाभि तथा आमाशय इन सब स्थानों में होनेवाला ऊपर कहे हुए दोनों लक्षणों से युक्त शूलको त्रिदोषज जानना चाहिये यह शूल अत्यन्त कष्टदायक विष तथा वज्रके तुल्य होताहै इसलिये इसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ९ ॥

अथामजमाह ॥

आटोपहृल्लासवमिगुरुत्वस्तैमित्यमानाहकफप्रसेकैः । कफस्यलिङ्गेनसमानलिंगमामोद्भवंशूलमुदाहरन्ति ॥ कफस्यकफशूलस्यआमोद्भवंआमादुद्भवोयस्यतं । अत्रामशूलेजातेपश्चाद्दोषसम्बन्धःअतएवास्यशूलस्याष्टमत्वमुक्तम् ॥ सचप्रथममामाशये भवतिपश्चात्सम्बन्धिभिर्दोषैर्वस्तिनाभिहृत्पार्श्वकुक्षिषुभवतियथादोषसम्बन्धः॥१०॥

आमज शूलका लक्षण ॥

आमज शूलमें उदरमें गड़ गड़ाहट मतली छर्दि शरीरमें भारीपन शरीरका गीले कपड़े से ढकाहुआ सामालूम पड़ना आनाह मुखसे लारबहना और कफ शूलके संपूर्ण लक्षण होतेहैं यह शूल पहले उत्पन्न होकर पीछे से दोषोंसे संबन्धको प्राप्त होताहै इसीलिये यह आठवां कहाताहै और यह शूल पहले आमाशय में उत्पन्न होकर पीछे संबन्धी दोषोंके अनुसार वस्ति आदि स्थानोंमें होताहै ॥१०॥

आमशूलस्यदोषविशेषेणदेशविशेषमाह ॥

वातात्मकंवस्तिगतंवदन्तिपित्तात्मकञ्चापिवदन्तिनाभ्याम् । हृत्पार्श्वकुक्षौकफसन्निविष्टंसर्वेषुदेशेषुचसन्निपातात् ॥ हृत्पार्श्वकुक्षौहृत्पार्श्वाभ्यांसहितेकुक्षौकफसन्निविष्टंकफेनाविष्टम् ॥ ११ ॥ आमशूल के दोष बिशेषों से देश बिशेष ॥

वात संबन्धी आमजशूल वस्तिमें पित्त संबन्धी नाभिमें और कफ संबन्धी हृदय तथा पसली सहित कुक्षिमें होताहै और सन्निपात संबन्धी आमजशूल सब स्थानोंमें होताहै ॥ ११ ॥

वस्तौहृत्कटिपार्श्वेषुसशूलःकफवातिकः । कुक्षौहृन्नाभिमध्येतुसशूलःकफपैत्तिकः ॥ दाहज्वरकरोघोरोविज्ञेयोवातपैत्तिकः ॥ १२ ॥

कफ वातजशूल वस्ति हृदय कटि तथा पसलियोंमें कफ पित्तजशूल कोख हृदय तथा नाभि में और वात पित्तजशूल कफ वात के स्थानोंमें होताहै यह दाह तथा ज्वर करनेवाला अत्यन्त भयानक है ॥ १२ ॥

तन्त्रान्तरोक्तमामशूलमाह ॥

अतिमात्रंयदाभुक्तंपावकेमृदुताङ्गते । स्थिरीकृतन्तुतत्कोष्ठेवायुरावृत्यतिष्ठति ॥ यदान्नंनगतंपाकंतच्छूलंकुरुतेभृशम् । मूर्च्छाध्मानंविदाहांश्चहृत्क्लेशंसविलम्बिकम् ॥

कम्पंवान्तिमतीसारंप्रमेहंजनयेदपि । अविपाकोद्भवंशूलमेतमाहुर्म्मनीषिणः ॥ अवि-
पाकोद्भवंआमोद्भवमित्यर्थः ॥ १३ ॥

तन्त्रान्तरमें कहेहुए आमजशूल के लक्षण ॥

बहुत भोजन करनेसे अग्निके मन्दहोजाने पर भोजन कियेहुए पदार्थको कोष्ठमें स्थिरकरके वायु रोकतीहै इसलिये जो भोजन नहीं पचताहै वह अत्यन्तशूल को उत्पन्न करताहै इसमें मूर्च्छा अफरा बिदाह मतली बिलम्बिका (अजीर्ण का भेद) कम्प छर्दि अतीसार तथा प्रमेह होताहै इस शूल को आमज कहतेहैं ॥ १३ ॥

अथ शूलस्योपद्रवानाह ॥

वेदनातितृषामूर्च्छाआनाहोगौरवारुची।काशःश्वासोवमिर्हिक्काशूलस्योपद्रवास्मृताः१४

शूल के उपद्रव ॥

पीड़ा बहुत तृषा मूर्च्छा आनाह भारीपन अरुचि खांसी श्वास छर्दि तथा हिचकी यह सब शूलके उपद्रव हैं ॥ १४ ॥

अथासाध्यत्वादिकमाह ॥

एकदोषानुगःसाध्यःकृच्छ्रसाध्योद्विदोषजः।सर्वदोषान्वितोघोरस्त्वसाध्योभूर्य्युपद्रवः१५॥

शूल के असाध्यादि लक्षण ॥

एक दोष से हुआ साध्य दो दोषोंसे हुआ कष्टसाध्य और त्रिदोषज तथा अनेक उपद्रवोंसे युक्त शूल असाध्य होताहै ॥ १५ ॥

अथारिष्टमाह ॥

वेदनातितृषामूर्च्छाआनाहोगौरवंज्वरः । भ्रमोऽरुचिःकृशत्वञ्चबलहानिस्तथैवच ॥
उपद्रवादशैवेतेयस्यशूलेषुनास्तिसः ॥ १६ ॥

शूल के अरिष्ट ॥

पीड़ा अधिक तृषा मूर्च्छा आनाह शरीरका भारीपन ज्वर भ्रम अरुचि कृशता और बलकी हानि यह दश उपद्रव जिस शूल वालेके होयँ वह नहीं जीताहै ॥ १६ ॥

अथ शूलस्यैवभेदंपरिणाममाह ॥

स्वैर्निदानैःप्रकुपितोवातःसन्निहितोयदा । कफपित्तेसमावृत्यशूलकारीभवेद्बली ॥
भुक्तेजीर्य्यतियच्छूलंतदेवपरिणामजम् । स्वैर्निदानैरित्यादिनानिदानपूर्विकासंप्राप्ति
रुक्ताभुक्तेजीर्य्यतीत्यादिनालक्षणमुक्तम् ॥ समावृत्यव्याप्य ॥ १७ ॥

शूलका भेद परिणाम शूल का लक्षण ॥

अपने कारणों से कुपित बलवान् वायु समीपस्थ होकर कफ तथा पित्त को ढककर शूलको उत्पन्न करती है यह भोजन के परिपाक के समय होताहै इसको परिणाम शूल कहते हैं ॥ १७॥

तस्यलक्षणमप्येतत्समासेनाभिधीयते ॥

आध्मानाटोपविण्मूत्रविबन्धारतिवेपनैः । स्निग्धोष्णोपशमप्रायंवातिकंतद्वदेद्भि
षक्॥तृष्णादाहारतिस्वेदकट्वम्ललवणास्यता।शूलंशीतशमप्रायंपैत्तिकंलक्षयेद्बुधः॥छ
र्दिहृल्लाससंमोहस्वल्परुग्दीर्घसन्ततिः। कटुतिक्तोपशान्तौचविज्ञेयञ्चकफात्म[illegible]॥सं
सृष्टलक्षणंबुद्ध्वाद्विदोषंपरिकल्पयेत्।त्रिदोषजमसाध्यंस्यात्क्षीणमांसबलानलम्॥१८॥

बातज आदि भेदोंसे परिणाम शूल के संक्षिप्त लक्षण ॥

बातज परिणाम शूलमें अफरा पेटमें गड़गड़ाहट मलमूत्र कारुकना ग्लानि तथा कम्प होताहै यह स्निग्धतथा ऊष्ण क्रिया से शान्त होताहै पित्तज परिणाम शूलमें तृषा दाह ग्लानि स्वेद और कड़वी खट्टी तथा नोनकासा मुख होताहै और यह शीतल क्रियाओं से शान्त होताहै कफज परिणाम शूल में छर्दि मतली मोह और थोड़ी तथा देरतक रहने वाली पीड़ा होतीहै यह कड़वी तथा तिक्त वस्तुओं से शान्त होताहै ऊपर कहेहुए दो दोषों के लक्षण मिलने से द्वन्द्वज और तीनों दोषों के लक्षणों के मिलने से त्रिदोषज परिणाम शूल जानना चाहिये क्षीणहुए मांसबल तथा अग्नि वाले मनुष्य का त्रिदोषज परिणाम शूल असाध्य होताहै ॥ १८ ॥

अथान्नद्रवनामानं शूलविशेषमाह ॥

जीर्णेजीर्य्यतिचाप्यन्नंयच्छूलमुपजायते । पथ्यापथ्यप्रयोगेणभोजनाभोजनेनवा ॥ नशमंयातिनियमात्सोऽन्नद्रवउदाहृतः । नेदंशूलमसाध्यंचिकित्साभिधानात् ॥ १९ ॥

अन्नद्रव नाम शूल का लक्षण ॥

जो शूल भोजन के परिपाक होजानेपर अथवा परिपाक के समय नियम से उत्पन्न होताहै और पथ्य अथवा अपथ्य आहार अथवा लंघन से शान्त न होय उसको अन्नद्रव कहते हैं यह शूल असाध्य नहीं है क्योंकि इसकी चिकित्सा कहीहै ॥ १९ ॥

अथ शूलस्यचिकित्सा ॥

वमनंलङ्घनंस्वेदःपाचनंफलवर्त्तयः । क्षारःचूर्णानिगुटिकाःशस्यन्तेशूलशान्तये ॥ विज्ञायवातशूलन्तुस्नेहस्वेदैरुपाचरेत् ।स्वल्पशूलाकुलस्यस्यात्स्वेदएवसुखावहः २० ॥

शूलकी चिकित्सा ॥

वमन लंघन स्वेद पाचन औषध फलवर्त्ति क्षारचूर्णतथा गोली शूलके शान्त करने के लियेश्रेष्ठ हैं बातशूल में स्नेह तथा स्वेद के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये और थोड़ेशूल में केवल स्वेदही सुखकारी होता है ॥ २० ॥

मृत्तिकांसजलांपाकाद्घनीभूतांपटेक्षिपेत् । कृत्वातत्पोटलींशूलीयथास्वेदंविधापयेत्मृत्तिकास्वेदः ॥ २१ ॥

घोलीहुई मिट्टीको अग्नि में पकाकर घनी होजाने पर कपड़े में रखकर उसकी पोटरी से स्वेद लेनाशूल वाले को हितकारी है इति मृत्तिका स्वेद ॥ २१ ॥

कर्पासास्थिकुलत्थकातिलयवैरेरण्डमूलातसी । वर्षाभूशणबीजकाञ्जिकयुतैरेकीकृतैर्वापृथक् ॥ स्वेदःस्यादथकूर्परोदरशिरःस्फिग्जानुपादाङ्गुलीगुल्फस्कंधकटीरुजोविजयतेनिःशेषवातार्त्तिहा । इतिकर्प्पासास्थ्यादिस्वेदः ॥ २२ ॥

बिनौले कुलथी तिल जौ अरंडकी जड़ अलसी गदापूर्णा सनके बीज तथा काँजी इन सबको मिलाकर अथवा अलग २ इनके द्वारा स्वेद देनेसे कुहनी उदर शिर नितंब घुटने पैरकी उँगली टखने [illegible] तथा कमर इनका शूल तथा बातका शूल नष्टहोता है ॥ इति कार्पासास्थ्यादि स्वेद २२ ॥

तिलैश्चगुटिकांकृत्वाभ्रामयेज्जठरोपरि । शूलंसुदुस्तरंतेनशांतिंगच्छातिसत्वरम् ॥

फलं। नाभिलेपाज्जयेच्छूलंमदनंकाञ्जिकान्वितम्। मदनं। विश्वमेरण्डजंमूलंक्वाथयित्वाजलंपिवेत्। हिङ्गुसौवर्च्चलोपेतंसद्यःशूलनिवारणम्॥ २३॥

तिलोंका गोलासा बनाकर उदर पर घुमाने से दुस्तर शूलका भी नाशहोता है मैनफल को कांजी के साथपीसकर नाभिपर लेप करने से शूलका नाश होता है सोंठ तथा रेंडी की जड़ के काढ़े में हींग और काला नोन डालकर पीनेसे शीघ्रही शूल निवृत्त होता है॥ २३॥

गुडशालियवक्षारःसर्प्पिःपानंविरेचनम्। जाङ्गलानिचमांसानिभेषजंपित्तशूलिनाम्॥ मणीरजतताम्राणांभाजनानिगुरूणिच। तोयेनपरिपूर्णानिशूलस्योपरिधारयेत्॥ विरेचनंपित्तहरंप्रशस्तंरसाश्चशस्ताशशलावकानां। सगुडांघृतसंयुक्तांभक्षयेद्वाहरीतकीम्॥ प्रलिह्याच्छूलशान्त्यर्थंधात्रीचूर्णंसमाक्षिकम्॥ २४॥

गुड शालिधान्य जौ दूध घृत पान विरेचन और जंगली जीवोंके मांस यह पित्तज शूलकी औषध हैं मणि चांदी अथवा तांबेके पात्र में जलभरकर शूलके स्थान पर रखने से पित्तज शूलका नाशहोता है पित्तघ्न विरेचन और खरगोश तथा लवापक्षीके मांस का रस पित्तज शूल में हित है गुड़तथा घीके साथ हड़को अथवा सहत के साथ आमले को चाटने से पित्तजशूल का नाश होता है॥ २४॥

शाल्यन्नंजाङ्गलंमांसमरिष्टंकटुकंरसम्। मधुनाजीर्णगोधूमकफशूलेप्रयोजयेत्॥ अरिष्टंभेषजंवारिक्वाथसिद्धंप्रयोजयेत्। लवणत्रयसंयुक्तंपञ्चकोलंसरामठम्॥ सुखोष्णाम्बुनापीतंकफशूलंप्रणाशयेत्॥ २५॥

शालि धान्य जंगलजीवोंका मांस अरिष्ट (एक प्रकारकी मदिरा) कडुवारस और सहतके साथ पुराने गेहूं यहसब कफज शूलमें देने चाहिये सेंधानोन कालानोन बिट्नोन पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ तथा हींग इनसबको कुछगरम जलकेसाथ पीनेसे कफजशूल नष्टहोताहै॥ २५॥

आमशूलेक्रियाकार्य्याकफशूलप्रणाशिनी। सेव्यमामहरंसर्व्वमग्नेर्मन्दस्यवर्द्धनम्॥ तीक्ष्णायाश्चूर्णसंयुक्तंत्रिफलाचूर्णमुत्तमम्। प्रयोज्यंमधुसर्पिर्भ्यांसर्व्वशूलनिवारणम्॥ तीक्ष्णायाश्चूर्णम्राजिकादिचूर्णम्दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिंगुसैन्धवैः। अम्लपिष्टैःसुखोष्णैश्चलिम्पेच्छूलयुतोदरम्॥ मूलंवैल्वंतथैरण्डचित्रकंविश्वभेषजम्। हिंगुसैन्धवसंयुक्तंसद्यःशूलनिवारणम्॥ वातरोगान्तर्गताध्मानचिकित्सायांलिखितोनाराचंनामरसोऽन्यच्चविरेचनशूलेहितम्॥ २६॥

आमज शूलमें कफज शूलके नाशकरनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये और आमनाशक तथा अग्निवर्द्धक औषध करनी चाहिये राईआदि तीक्ष्णवस्तुओंके चूर्णके साथ त्रिफलाके चूर्णको सहत तथा घीके साथ खानेसे सबप्रकारके शूल नष्ट होतेहैं देवदारु मकोह कूट सौंफ हींग तथा सेंधानोन इनसबको कॉंजीमें पीसकर कुछ गरम२उदरमें लेपकरनेसे पेटके शूलकानाश होताहै बेल तथा रेंडी की जड़ चीता सोंठ हींग तथा सेंधानोन इनसबके लेपसे शीघ्रही शूलका नाश होताहै बात व्याधिके अधिकार में आध्मानकी चिकित्सा में कहाहुआ नाराचरस तथा अन्य विरेचन शूलमें हित है॥ २६॥

कूष्माण्डंतनुकृत्वातुक्षिप्त्वाघर्म्मेविशोषयेत्। स्थाल्यांनिःक्षिप्यतत्सर्व्वंपिधानेनापि-

धायच ॥ चूल्यांनिवेश्यवह्निञ्चज्वालयेत्कुशलोजनः । यथातन्नभवेत्भस्मकिन्त्वङ्गारो दृढोभवेत् । तदानिर्वापयेच्छीतंसर्वथाचूर्णितन्तुतत् ॥ माषद्वयमितंतावत्शुण्ठीचूर्णेन मिश्रितम् । जलेनभक्षयेन्नित्यंमहाशूलाकुलोनरः । असाध्यमपियच्छूलंतदप्येतेनशा म्यति ॥ इतिकूष्माण्डक्षारः ॥ २७ ॥

कुँभड़ेके पतले २ टुकड़ेकरके धूपमें सुखावे फिर उन टुकड़ोंको पात्रमें भरके पात्रका मुख बन्द करदेवे और उस पात्रको अग्नि युक्त चूल्हेपर रखकर जबवह टुकड़े अंगारसेहोजांय और बिलकुल राख न होजांय तब उनको बुझायकर पीसले फिर इस खारको दोमासे लेके सोंठके साथ खाकर जल पिये नित्य इसके सेवनसे असाध्यभी संपूर्ण शूल नष्ट होते हैं ॥ इतिकूष्मांडक्षार ॥ २७ ॥

अथ परिणामशूलस्यचिकित्सा ॥

लङ्घनंप्रथमंकुर्य्यात्वमनंसविरेचनम् । पंक्तिशूलोपशान्त्यर्थंतत्रवान्तेविधिर्यथा ॥ पीत्वातुक्षीरमाकण्ठंमदनक्वाथसंयुतम् । कान्तारकस्यपौण्ड्रस्यकोशकारस्यवारसम् ॥ कषायोवाथनिम्बस्यकटुतुम्बीरसोऽथवा । यथाविधिवमेद्धीमान्पंक्तिशूलार्दितोजनः ॥ त्रिवृता[illegible]दन्त्यातैलेनैरण्डजेनवा । दत्तंविरेचनंसद्यःपंक्तिशूलनिवारणम् ॥ २८ ॥

परिणामशूलकी चिकित्सा ॥

परिणामशूलके नाशके लिये पहले लंघन बमन तथा विरेचन करना चाहिये मैनफल के काढ़े समेत दूध कान्तार पौंड्रक अथवा कोषकार नाम ईखका रस नींबका काढ़ा या कड़वी तोंबीका रस कण्ठतक पीकर बिधि पूर्वक बमन करना परिणामशूलमें हितकारीहै निसोथ अथवा दन्तीकेचूर्ण को रेंड़ीके तेलके साथ पिलाकर विरेचनकरानेसे शीघ्रही परिणामशूल निवृत्तहोताहै ॥ २८ ॥

विड़ङ्गतण्डुलव्योषत्रिवृद्दन्तीसचित्रकम् । सर्वाण्येतानिसंहृत्यसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ गुड़ेनमोदकान्कृत्वाखादेदुष्णेनवारिणा । जयेत्त्रिदोषजंशूलंपरिणामसमुद्भवम् ॥ विड़ङ्गादिमोदकः ॥ २९ ॥

बायबिंडगकीगिरी त्रिकटु निसोथ दन्ती तथा चीता इनसबकेचूर्णमें गुड़ मिलाकर मोदकबनावे उष्णजलकेसाथ मोदकखानेसे त्रिदोषज परिणामशूलनष्टहोताहै ॥ इतिबिंडगादिमोदक ॥ २९ ॥

नागरतिलगुड़कल्कंपयसासंपिष्ययःपुमान् । लिह्यादुग्रंपरिणातिशूलंनश्येत्तस्यत्रि रात्रेण ॥ पीतंशम्बूकजंभस्मजलेनोष्णेनतत्क्षणात् । पंक्तिजंनाशयत्येवशूलंविष्णुरिवा सुरान् ॥ लोहपथ्याकणाशुण्ठीचूर्णंसमधुसर्पिषा । विलिहन्विनिहन्त्येवशूलंहिपरिणाम जम् ॥ पथ्यादिलोहम् ॥ ३० ॥

सोंठ तिल तथा गुड़के कल्कको दूधकेसाथ पीसकरचाटनेसे तीनदिनमें परिणामशूल नष्ट होता है शंखकीभस्मको गरमजलके साथपीनेसे तत्क्षणही परिणामशूल नष्टहोताहै लोहा हड़ पीपल तथा सोंठ इनसबके चूर्णको सहत और घीके साथ चाटनेसे परिणामशूलनष्टहोताहै इतिपथ्यादिलोह ३० ॥

नारिकेरंसतोयञ्चलवणेनसुपूरितम् ।मृदाववेष्टितंशुष्कंपक्वंगोमयवह्निना॥पिप्पल्याभक्षितं हन्तिशूलंहिपरिणामजम्।वातिकंपैत्तिकञ्चापिश्लैष्मिकंसान्निपातिकम् ॥ नारिकेरक्षारः ३१ ॥

जल समेत नारियलके भीतर नोनभरके मट्टीसेलपेटै और सुखावे फिर कंडोंकीअग्निमें उसको पाककरके पीपलके साथ खानेसे सबप्रकारके परिणामशूलनष्टहोतेहैं ॥ इति नारिकेलक्षार ॥ ३१ ॥

अथान्नद्रवस्यचिकित्सा ॥

अन्नद्रवाख्येशूलेतुनतावत्स्वास्थ्यमश्नुते।यावन्नकटुकपित्ताम्लमन्नंनच्छर्दयेद्द्रवम् ॥ जातमात्रेजरत्पित्तेशूलमाशुविनाशयेत् । पित्तार्त्तंवमनंकृत्वाकफार्त्तञ्चविरेचनम् ॥ अन्नद्रवेचतत्कार्य्यंजरत्पित्तेयदीरितम्। जरत्पित्तेऽपितत्पथ्यंप्रोक्तमन्नद्रवेतुयत् ॥ आमपक्वाशयेशुद्धेगच्छेदन्नद्रवःशमम् । माषपर्णींसलवणांसुस्विन्नांतैलपाचिताम् ॥ तादृशासर्पिषाखादन्नद्रवनिपीड़ितः ॥ ३२ ॥

अन्नद्रवशूलकी चिकित्सा ॥

अन्नद्रवशूलमें जबतक कड़ुए तथा खट्टे पित्तयुक्त अन्नका बमन न करे तब तक स्वस्थता नहींहोती अम्ल पित्तके उत्पन्नहोने पर शीघ्रहीशूलका नाशकरे अन्नद्रवशूलमें पित्तनिकलनेतक बमन और कफ निकलने तक विरेचनकरावे अम्ल पित्तमें जोचिकित्सा कहीगई है वहअन्नद्रवमें और अन्नद्रवमें जो चिकित्सा कहीगई है वह अम्लपित्तमें करनीचाहिये आमाशय तथा पक्वाशयके शुद्धहोनेपर अन्नद्रव शूलशान्त होताहै तेलमें अथवा घीमें पाककीगई माषेंडरी (उर्दकीपीठीका भोजन) को नोनकेसाथ खाने से अन्नद्रव निवृत्तहोता है ॥ ३२ ॥

धात्रीफलभवंचूर्णमयश्चूर्णसमन्वितम् । यष्टीचूर्णेनवायुक्तंलिह्यात्क्षौद्रेणतद्द्रवे॥श्यामाकतण्डुलैःसिद्धंसिद्धंकोद्रवतण्डुलैः । प्रियंगुतण्डुलैःसिद्धंपायसंसहितंहितम् ॥ प्रियंगुकंगुविशेषः।गौड़िकंशौरणंकन्दंकूष्माण्डमपिभक्षयेत् । कलायभवशक्तून्वाशक्तून्वालाजसम्भवान् ॥ गौडिकंगुड़ेनसंस्कृतंपक्वान्नम् । कुलत्थशक्तूनथवादध्नादद्यात्दाधिकंतथा ॥ चणकानामथशक्तून्कोद्रवस्योदनंतथा।दाधिकंदध्नासंस्कृतंभक्तंमहेरिइतिलोके॥ गोधूममण्डकंतत्रसर्पिषागुड़संयुतम् । ससितंशीतदुग्धेनमृदितंकथितंहितम् ॥ ३३ ॥

अन्नद्रवमें आमलेकाचूर्ण लोहेकेचूर्णके साथ अथवा मुलहठीके चूर्णकेसाथ सहत मिलाकरचाटे सामा कोदों अथवा काकुनकीखीरखाय गुड़मिलाहुआ पक्वान्न ज़िमीकन्द पेठा मटरके सत्तू खील के सत्तू दहीमिले कुलथीकेसत्तू चनेकेसत्तू दहीडालकरबनाहुआभात अथवा कोदोंकाभात खानाचाहिये गुड़के साथ घी सहित गेहूं का मंड (एक प्रकारकी मैदा की रोटी) शक्कर तथा शीतल दूधके साथ मलकर खाय ॥ ३३ ॥

अन्नद्रवोदुश्चिकित्स्योदुर्विज्ञेयोमहागदः । तस्मात्तस्यप्रशमनेपरंयत्नंसमाचरेत् ॥ अन्नद्रवेजरत्पित्तेवह्निर्मन्दोभवेद्यतः । तस्माद्त्रान्नपानानिमात्राहीनानिकारयेत् ॥ कलाययवगोधूमाःश्यामाकाःकोरदूषकाः । राजमाषाश्चमाषाश्चकुलत्थाःकंगुशालयः ॥ दधिलुप्तरसंक्षीरंसर्पिर्गव्यंसमाहिषम् । वास्तूकंकारवेल्लीचकर्कोटकफलानिच ॥ वर्हिणोहरिणोमत्स्याःरोहिताद्याःकपिञ्जलाः । एतस्मिन्नामयेशस्तामतामुनिचिकित्सकैः ॥ दधिलुप्तरसदध्नालुप्तःरसःप्रकृतोरसोयस्यतत्क्षीरंदधियुक्तंक्षीरमित्यर्थः ॥ ३४ ॥

अन्नद्रवशूल अत्यन्तकष्ट साध्यरोगहै इसलिये उसके शान्तकरनेमें बड़ायत्न करनाचाहिये अन्न द्रव और अम्लपित्त में अग्निमन्द होजाती है इसलिये इनमें अन्न तथा पानकी मात्राहीन करानी चाहिये मटर जौ गेहूं सामा कोदों बड़ेउर्द उर्द कुलथी काकुन शालिधान्य दहीयुक्तनष्टहुए रसवाला दूध भैंस तथा गौका घी बथुआकरेलाखिकसाहिरनमोरतथाश्वेततीतरका मांस और रोहूआदिमछली यहसब अन्नद्रवशूलमें हितकारी हैं ॥ ३४ ॥

गुड़ामलकपथ्यानांचूर्णंप्रत्येकशःपलम् । त्रिपलंलोहकिट्टस्यतत्सर्वंमधुसर्पिषा ॥ समालोड्यासमश्नीयादक्षमात्रप्रमाणतः । आदिमध्यावसानेषुभोजनस्यनिहन्तितत् ॥ अन्नद्रवजरत्पित्तमम्लपित्तंसुदारुणम् । परिणामसमुत्थञ्चशूलंसंवत्सरोत्थितम् ॥ गुड़मंडूरम् ॥ ३५ ॥

गुड़ आमला तथा हड़काचूर्ण चारचार तोले और लोहेकी कीट १२ तोले इनसबकोसहत तथा घीके साथ मिलाकर १ तोले भोजनके आदि अन्त तथा मध्यमें खाने से अन्नद्रव अम्लपित्त रक्तपित्त और वर्षभरका पुरानाशूलनष्ट होताहै ॥ इति गुड़मंडूर ॥ ३५ ॥

आयासंमैथुनंमद्यंलवणंकटुकंरसम् । वेगरोधंशुचक्रोधद्विदलंशूलवांस्त्यजेत् ॥ इति शूलपरिणामशूलान्नद्रवजरत्पित्ताधिकारः ॥ ३६ ॥

परिश्रम मैथुन मद्य लवण कडुवीवस्तु वेगोंकारोकना शोक क्रोध और द्विदल अन्न यहसब शूलवाला त्यागकरदेवे ॥ इति शूल परिणामशूल और अन्नद्रवका अधिकार ॥ ३६ ॥

अथोदावर्त्ताधिकारः । तत्रउदावर्त्तस्यविप्रकृष्टनिदानमाह ॥

वातविण्मूत्रजृम्भाश्रुक्षवोद्गारवमीन्द्रियैः । क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणांधृत्योदावर्त्तसम्भवः ॥ इन्द्रियमत्रशुक्रम् । अत्रतृतीयासहार्थे । धृत्यावेगविघातेन ॥ ३७ ॥

उदावर्त्तका अधिकार । उदावर्त्तके दूरवालेकारण ॥

वायु मलमूत्र जंभाई अश्रु छींक डकार छर्दि वीर्य्य क्षुधा तृषा श्वास तथा निद्रा इनमें से किसी वेगके भी रोकनेसे उदावर्त्तरोग उत्पन्नहोताहै ॥ ३७ ॥

अथोदावर्त्तस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

यत्रोर्ध्वंजायतेवायोरावर्त्तःसचिकित्सकैः । उदावर्त्तइतिप्रोक्तोव्याधिस्तत्रोनिलःप्रभुः ॥ आवर्त्तोभ्रमः ॥ ३८ ॥ उदावर्तका सामान्य लक्षण ॥

जिसरोगमें बायुका आवर्त्त (चक्कर) ऊपरकीओर उत्पन्नहोय उसको वैद्यलोग उदावर्त्त कहते हैं सबउदावर्त्तोंमें वायु प्रधान है ॥ ३८ ॥

तत्तद्वेगाभिघातभिन्नानामुदावर्त्तानांक्रमेणविशिष्टानिलक्षणान्याह ॥

तत्रापानवातनिरोधजस्योदावर्त्तस्यलक्षणमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाणांसङ्गोध्मानंक्लमोरुजा । जाठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात् ॥ सङ्गःअप्रवृत्तिः । अपानमाध्मानम् । क्लमोअनायासश्रमःरुजाजठरेअन्येतोदशूलगुल्मादयः ॥ ३९ ॥

ऊपरकहेहुए उनउन वेगोंके रोकनेसे भिन्नभिन्न उदावर्त्तोंके क्रमसे विशेष लक्षण ॥
अपान बायुके रोकनेसेहुए उदावर्त्तके लक्षण ॥

अपानवायुके रोकनेसे बातमूत्र तथा मलकारुकना अफरा बिनापरिश्रमके श्रममालूमहोना और उदरमें पीड़ा तथा अन्यशूल गुल्मादिक बातज रोगउत्पन्नहोतेहैं ॥ ३९

पुरीषनिरोधजमाह ॥

आटोपशूलौपरिकर्तिकाचसङ्गःपुरीषस्यतथोर्द्ध्ववातः।पुरीषमास्यादथवानिरेतिपुरीषवेगेऽभिहतेनरस्य ॥ पुरीषवेगेधारितेसतिआटोपःसरुक्गुड़गुड़ाशब्दःशूलमितिपक्काशयपरिकर्तिकागुदेकर्त्तनवत्पीड़ाऊर्द्ध्ववातउद्गारः ॥ ४० ॥

मलके वेगके रोकने सेहुए उदावर्त्त का लक्षण ॥

मलके वेगके रोकने से हुए उदावर्त्त में उदरमें पीड़ा सहित गड़गड़ाहट पक्काशय में शूल गुदामें काटने की सी पीड़ा मलका रुकना और बहुत डकार होतीहै अथवा मुखसे मल भी निकलताहै॥४०॥

मूत्रनिग्रहजमाह ॥

वस्तिमेहनयोःशूलेमूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा । विनामोवंक्षणानाहःस्याल्लिङ्गंमूत्रनिग्रहे ॥ विनामःव्यथयावपुषोनमनम् । वंक्षणानाहः । वंक्षणयोराकर्षणवद्व्यथा ॥ ४१ ॥

मूत्रके वेगके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

मूत्र के वेग रोकने से बस्ति तथा लिंगमें पीड़ा मूत्रकृच्छ्र शिर में पीड़ा पीडासे शरीर का झुक जाना और वंक्षण में खैंचने कीसी पीड़ा होती है ॥ ४१ ॥

अथजृम्भानिरोधजमाह ॥

मन्यागलस्तम्भशिरोविकाराःजृम्भोपघातात्पवनात्मकाःस्युः । तथाक्षिनासावदनामयाश्चभवन्तितीव्राःसहकर्णरोगैः ॥ ४२ ॥

जंभाईके वेगरोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

जंभाई के रोकने से हुए गलेके पीछे की नस तथा गलेमें स्तंभ वातजन्य शिरके रोग और नेत्र नासिका मुख तथा कानोंके रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ४२ ॥

अथाश्रुनिरोधजमाह ॥

आनन्दजंवाप्यथशोकजंवानेत्रोदकंप्राप्तममुञ्चतोहि । शिरोगुरुत्वंनयनामयाश्चभवंतितीव्राःसहपीनसेन ॥ ४३ ॥

आंशुओंके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

आनन्द अथवा शोकसे हुए आंशुओं के रोकने से शिर में भारीपन नेत्रों के रोग और पीनस यह उत्पन्न होते हैं ॥ ४३ ॥

छिक्कानिरोधजमाह ॥

मन्यास्तम्भःशिरःशूलमर्दितार्द्धावभेदकौ । इन्द्रियाणाञ्चदौर्ब्बल्यंक्षवथोःस्यात्विधारणात् ॥ ४४ ॥

छींकके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

छींकके रोकने से मन्यास्तंभ शिरमें पीड़ा अर्दित आधाशीशी और इन्द्रियोंकी दुर्बलताहोतीहै ४४ ।

अथोद्गारनिरोधजमाह ॥

कण्ठास्यपूर्णत्वमतीवतोदःकूजश्चवायोरथवाप्रवृत्तिः।उद्गारवेगेऽभिहतेभवन्तिजंतोर्विकाराःपवनःप्रसूताः॥कण्ठास्यपूर्णत्वंकवलेनेव॥ तोदोहृद्यामाशयेच।कूजोऽव्यक्तशब्दः उदरेवायोरप्रवृत्तिः।उच्छ्वासादिनिरोधात्पवनप्रसूताःपवनाज्जाताविकाराःहिक्कादयः४५

डकार के रोकने से हुए उदावर्त के लक्षण ॥

डकार के वेग रोकने से कंठ तथा मुख में ग्रास साभरा रहना हृदय तथा आमाशय में सुईगड़ने कीसी पीड़ा उदरमें अव्यक्त शब्द श्वास आदि का रुकना और हिचकी आदि वात जन्य रोग होते हैं॥ ४५॥

वान्तिनिरोधजमाह ॥

कण्डूकोठारुचिव्यङ्गशोथपाण्ड्वामयज्वराः।कुष्ठहृल्लासवीसर्पश्छर्दिनिग्रहजागदाः४६

बमन के रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

बमन के वेग रोकने से खुजली चकत्ते अरुचि व्यंग (मुखका रोग विशेष) सूजन पांडु ज्वर कुष्ठ मतली तथा वीसर्प रोग यह सब उत्पन्न होते हैं॥ ४६॥

शुक्रनिरोधजमाह ॥

मूत्राशयेवैगुदमुष्कयोश्चशोथोरुजामूत्रविनिग्रहश्च। शुक्राश्मरीतत्स्रवणंभवेच्चतेतेविकाराविहितेतुशुक्रे॥ तत्स्रवणंशुक्रस्रावःतेतेविकाराःवातकुण्डलिकादयः॥ ४७॥

वीर्य्य के वेगके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

वीर्य्य के वेगको रोकने से मूत्राशय गुदा और अंडकोशों में सूजन तथा पीड़ा मूत्रका रुकना वीर्य्य की पथरी वीर्य्यका निरर्थक बहना और वात कुंडलिका आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं४७

अथ क्षुधावघातजमाह ॥

तन्द्राङ्गमर्दावरुचिःश्रमश्चक्षुधाविघातात्कृशताचदृष्टेः॥ ४८॥

क्षुधाके रोकने से हुए उदावर्त का लक्षण ॥

क्षुधाके रोकने से तंद्रा अरुचि शरीर में पीड़ा श्रम मालूम होना और दृष्टिकी दुर्बलता यह सब होते हैं॥ ४८॥

अथ तृषाविघातजमाह ॥

कण्ठस्यशोधःश्रवणावरोधस्तृष्णाविघातात्हृदयेव्यथाच ॥ ४९॥

तृषाके रोकने से हुए उदावर्त के लक्षण ॥

तृषाके रोकने से कंठतथा मुखका सूखना कानोंका रुकना और हृदय में पीड़ा होती है॥ ४९॥

अथ श्वासनिरोधजमाह ॥

श्रान्तस्यनिःश्वासविनिग्रहेणहृद्रोगमोहावथवापिगुल्मः॥ ५०॥

श्वास के रोकनेसे हुये उदावर्तका लक्षण॥

थकेहुयेके श्वासके रोकनेसे हृदयके रोग मोह अथवा गोला यहसब उत्पन्न होते हैं॥ ५०॥

अथ निद्राविघातजमाह ॥

जृम्भाङ्गमर्दार्त्तिशिरोऽतिजाड्यंनिद्राविघातादथवापितन्द्रा ॥ अतिजाड्यंगौरवम् । शिरोगात्राक्षिगौरवमिति ॥ तन्त्रान्तरे । पाठात् ॥ ५१ ॥

निद्राके रोकनेसे हुये उदावर्त का लक्षण ॥

निद्राके रोकनेसे जंभाई शरीरमें पीड़ा तन्द्रा और नेत्र तथा शिरमें अत्यन्त भारीपन होताहै५१॥

वेगावरोधजमुदावर्त्तमभिधायरूक्षादिकुपितवातजमाह ॥

तस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

वायुःकोष्ठानुगोरूक्षैःकषायकटुतिक्तकैः। भोजनैःकुपितःसद्यःउदावर्त्तंकरोतिच ॥५२॥

वेगोंकेरोकनेसे हुये उदावर्तको कहकर रूखीआदि वस्तुओंके खानेसे कुपित हुई बायुसे उत्पन्नहुये उदावर्तके निदान और संप्राप्ति पूर्वक लक्षण॥

रूखी कषैली कड़वी तथा तिक्त बस्तुओंके खानेसे कोष्ठ में स्थित बायु कुपित होकर उदावर्त को उत्पन्न करती हैं ॥ ५२ ॥

सम्प्राप्तिमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाश्रुकफमेदोवहानिवै । स्रोतांस्युदावर्त्तयतिपुरीषंचप्रवर्त्तयेत् ॥ ततोहृद्वस्तिशूलार्त्तोहृल्लासारतिपीड़ितः । वातमूत्रपुरीषाणिकृच्छ्रेणलभतेनरः ॥ श्वासकासप्रतिश्यायदाहमोहतृषाज्वरान् । वमिहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान् ॥ बहूनन्यांश्चलभतेविकारान्वातकोपजान् । उदावर्त्तयतिवायुरुद्धंभ्रमेणैववातादिवहानिस्रोतांसिनिरुसाद्धिनतुविड़ादीनअधोगमयति ॥ मनोविभ्रमःरज्जौसर्पज्ञानम् । श्रवणविभ्रमः अन्यथाश्रवणम् ॥ ५३ ॥

इसरोगमें बात मूत्रमल अश्रु कफ तथा मेदके लेचलनेवाले स्रोत रुकजाते हैं और मलनहीं निकलता इसलिये हृदय तथा वास्ति में शूल मतली ग्लानि बातमूत्र तथा मलका कष्टसे निकलना श्वास खांसी पीनसदाह मोहतृषा ज्वर छर्दि हिचकी शिरके रोगमन तथा कानों में भ्रम और अन्य अनेकप्रकारके वातजरोग उपन्नहोते हैं ॥ ५३ ॥

अथासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

तृष्णाछर्दिपरिक्लिष्टक्षीणंशूलैरुपद्रुतम् । शकृद्वमन्तंमतिमान्उदावर्त्तिनमुत्सृजेत् ॥ परिक्लिष्टंक्लेशसंयुक्तम् ॥ ५४ ॥

असाध्य उदावर्त्तके लक्षण ॥

तृषा छर्दितथा शूलसे व्याकुल क्षीण और मलके बमनकरनेवाले उदावर्त्त रोगीको त्यागकरदेवे५४॥

अथानाहस्यलक्षणमाह ॥

आमंशकृद्वानिचितंक्रमेणभूयोविवद्धंविगुणानिलेन । पावर्त्तमानंनयथास्वमेनंविकारमानाहमुदाहरंति ॥ आमंअपक्कमाहारसारम् । शकृत्पुरीषंवाक्रमेणातिचितंसञ्चितम् ॥ भूयोविगुणानिलेनदुष्टवायुनाविबद्धंव्यायामशोषितंवायथास्वंपूर्ववदप्रवर्त्तनम् । एवंविकारमानाहमाहुः ॥ ५५ ॥

आनाहका लक्षण ॥

आम अथवा मल क्रम से इकट्ठेहोकर दूषित बायुके द्वारा फिर अत्यन्त रुकजांय अथवा व्यायाम सेसूखजायँ और निकलें नहीं उसको आनाह कहते हैं ॥ ५५ ॥

तत्रामजमानाहमाह ॥

तस्मिन्भवत्यामसमुद्भवेतुतृष्णाप्रतिश्यायशिरोविदाहाः । आमाशयेशूलमथोगुरुत्वंहृत्स्तम्भःउद्गारविघातनञ्च ॥ विघातनम् अप्रवृत्तिः ॥ ५६ ॥

आमज आनाहके लक्षण ॥

आमज आनाहमें तृषा पीनस शिरमें दाह आमाशय में शूल शरीरमें भारीपन हृदयमें स्तंभ और डकारका न आना यह लक्षण होतेहैं ॥ ५६ ॥

शकृत्सञ्चयजमाह ॥

स्तम्भःकटीपृष्ठपुरीषमूत्रेशूलोऽथमूर्च्छाशकृतोवमिश्च । श्वासश्चपक्वाशयजेभवन्ति तथालसोक्तानिचलक्षणानि ॥ पक्वाशयजेशकृत्सञ्चयजेआनाहे । स्तम्भशब्दःकटीपृष्ठयोः ॥ स्तब्धतावाचीपुरीषमूत्रयोरप्रवृत्तिवाची । अलसोक्तानिलक्षणानि । आध्मानवातविघातादीनि ॥ ५७ ॥

मलके इकट्ठे होजानेसेहुयेआनाहके लक्षण ॥

मलके इकट्ठे होनेसे हुये आनाह में कटि तथा पीठमें स्तंभ मलमूत्रका रुकना शूल मूर्च्छा बिष्ठाकी बमन श्वास और अफरा तथा बायुका रुकना आदि अलसकमें कहेहुये लक्षण होतेहैं ५७॥

तत्रोदावर्त्तानांचिकित्सा ॥

अधोवातनिरोधोत्थेउदावर्त्तेहितंमतम् । स्नेहपानंतथास्वेदोवर्तिर्वस्तिर्हितोमतः ॥ विड्विघातसमुत्थेतुविड्भङ्गन्नंतथौषधम् । वर्त्यभ्यङ्गावगाहाश्चस्वेदोवास्तिर्हितोमतः॥ वर्तिःफलवर्त्तिः । मूत्रावरोधजनितेक्षीरवारिवचांपिवेत् ॥ दुःस्पर्शास्वरसंवापिकषायंककुभस्यच । दुःस्पर्शाकण्टकारीदुरालभाचतुल्यगुणत्वात् ॥ एर्वारुवीजंतोयेनपिवेद्वालवणीकृतम् । सितामिक्षुरसक्षीरंद्राक्षायष्टीमथापिवा ॥ सर्वथैवप्रयुञ्जीतमूत्रकृच्छ्राश्मरीविधिः ॥ ५८ ॥

उदावर्त्तोंकी चिकित्सा ॥

अपान बायुके रोकनेसे हुये उदावर्तमें स्नेह पान स्वेद फलवर्ति और वस्ति क्रिया हितकारी है मलके रोकने से हुये उदावर्त में मलभेदक औषध तथा अन्न फलवर्ति उबटना स्नान स्वेद औरवस्ति क्रिया हित है मूत्र रोकनेसे हुए उदावर्तमें बराबर दूध पानीमें बचको पीसके डालकर पिये और भटकटैयाका रस अथवा अर्जुनवृक्षका काढ़ापिये ककड़ीके बीजोंमें कुछ नोन मिलाकर पानीमें पीसकर पिये और शक्कर युक्त ईखका रस अथवा दाख तथा मुलहठीके द्वारा दूधका पाककरके पीने से इसका नाश होता है मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोग में कहीहुई चिकित्सा भी करनी चाहिये ॥५८॥

जृम्भाभिघातजेस्नेहस्वेदंवापिप्रयोजयेत् । अन्यानापिप्रयुञ्जीतसमीरणहरान्विधान्॥ नेत्रनीरावरोधोत्थमुञ्चद्वापिदृशोर्जलम् । स्वप्यात्सुखंचतस्याग्रेकथयच्चकथाःप्रियाः ॥

छिक्काविघातजतीक्ष्णघ्राणनस्यार्कदर्शनैः। प्रवर्त्तयेतक्षुतंसक्तंस्नेहस्वेदौचशीलयेत ॥ तीक्ष्णमरीचराजिकादि। उद्गारस्यावरोधेतुस्नैहिकंधूममाचरेत्। छर्द्दिनिग्रहसञ्जातेवमनं लङ्घनंहितम् ॥ विरेचनञ्चात्रमतंतैलेनाभ्यञ्जनंतथा। वस्तिशुद्धिकरैःसिद्धंचतुर्णांजलं पयः ॥ आवारिनाशात्क्कथितंपीतवन्तंप्रकामतः। रमयेयुःप्रियानार्य्यःशुक्रोदावर्त्तिनंनर म् ॥ तस्याभ्यङ्गोऽवगाहश्चमदिराचरणायुधाः। शालिःपयोनिरूहश्चाहितंमैथुनमेवच॥ क्षुद्विघातसमुद्भूतेस्निग्धमुष्णंतथालघु। रुच्यमल्पंहितंभक्ष्यंपुष्पंसेव्यंसुगन्धियत् ॥ तृषाविघातसम्भूतेशीतःसर्वोविधिर्हितः। कर्पूरशिशिरंस्वल्पपिबेत्तोयंशनैःशनैः ॥ श्रमे श्वासेघृतौशस्तौविश्रामःसरसौदनौ। निद्रावेगविघातोत्थेपिबेत्क्षीरंसितायुतम् ॥ संवा हनसुशय्याताहितःस्वप्नःप्रियाःकथाः ॥ ५९ ॥

जंभाई के रोकने से हुए उदावर्त्त में स्नेह स्वेद तथा अन्य बात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये आंशुओं के रोकने से हुए उदावर्त्त में अंजनादि के द्वारा आंशू निकलवावे सुख पूर्वक सुलावे और उसके आगे बहुतसी प्रिय कथाकहै छींकके रोकने से हुए उदावर्त्त में तीक्ष्ण मिर्च तथा राई आदिकी हुलास अथवा सूर्य्यके दर्शन से छींक लिवावे और स्नेह तथा स्वेदका सेवन करे डकार के रोकने से हुए उदावर्त्तमें चिकने धुंएंका पानकरे छर्द्दिके रोकनेसे हुए उदावर्त्त में वमन लंघन बिरेचन तथा तैल का मर्द्दन हितकारीहै वीर्यके वेग रोकने से हुए उदावर्त्तमें वास्तिकी शुद्ध करने वाली औषधियों के द्वारा चौगुने जल सहित दूधको पानीके जल जानेतक पाककरके पिये और इच्छाके अनुसार प्यारी स्त्रियोंके साथ गमनकरे तेल मर्द्दन स्नान मद्यपान मुर्गेका मांस शालिधान्य दूध और उत्तर वास्ति यह सब वीर्य्यके रोकने से होनेवाले उदावर्त्तमें हितकारीहैं क्षुधाके रोकने से हुए उदावर्त्त में स्निग्ध उष्ण हलका तथा रुचिकारी भोजन थोड़ा करना चाहिये और सुगन्धित पुष्प सूंघने चाहिये तृषाके रोकने से हुए उदावर्त्तमें सब प्रकार की शतिल चिकित्सा हितकारी है और कपूरसे बसाया हुआठंढा जल थोड़ा २ धीरे २ पीना चाहिये श्रमके श्वासके रोकने से हुए उदावर्त्त में बिश्राम करना चाहिये और मांसके रसके साथभात खाना चाहिये निद्राके वेगके रोकनेसे हुए उदावर्त्त में शक्कर युक्त दधका पीनासंवाहन(पैरदबाना)सुन्दरशय्या निद्रा औराप्रियवाक्योंका सुननायह सबहितकारीहैं ५९॥

वातादिवेगविघातजनितानामुदावर्त्तानांचिकित्सामभिधायरुक्षादि कुपितवातजनितस्योदावर्त्तस्यचिकित्सामाह ॥

हिङ्गुमाक्षिकसिन्धूत्थैःपिष्टैर्वर्तिविनिर्म्मिताम्। घृताभ्यक्तांगुदेन्यस्येदुदावर्तविना शिनीम् ॥ (फलवर्त्तिः) मदनंपिप्पलीकुष्टंवचागौराश्चसर्षपाः। गुड़क्षीरसमायुक्तंफल वर्त्तिरिहोदिता ॥ मदनफलादिफलवर्त्तिः ॥ ६० ॥

बातादि वेगोंके रोकनेसे हुए उदावर्त्तोंकी चिकित्सा को कहकर सूखी आदि बस्तुओंके सेवनसे कुपित हुई बायुके द्वारा उत्पन्न हुए उदावर्त्त की चिकित्सा ॥

हींग सहत तथा सेंधानोन इनको पीसकर बत्ती बनावे और उसबत्तीको घी में डुबोकर गुदामें रखने से उदावर्त्तका नाश होताहै मैनफल पीपल कूट बच सफेद सरसों गुड़ तथा दूध इनसबकी

बत्ती बनाकर गुदा में रखने से उदावर्त्तका नाश होताहै इसको फलवर्त्ति कहतेहैं इति मदन फलादि फल वर्त्ति ॥ ६० ॥

खण्डपलंत्रिवृताक्षःकृष्णाकर्षद्वयोश्चूर्णम् । प्राग्भोजनस्यमधुनाविड़ालपदकंनरोलिह्यात् ॥ एतद्गाढ़पुरीषेदेयंविज्ञैरुदावर्त्ते । मधुरंनरपतियोग्यंचूर्णनाराचकंनाम्ना ॥ इतिनाराचचूर्णम् ॥ ६१ ॥

शक्कर ४ तोले निशोथ १ तोले और पीपल२ तोले इनसब के तोलेभर चूर्णको भोजनसे पहिले सहत के साथ चाटनेसे रुकेहुए मलवाले उदावर्त्तका नाश होताहै यह नाराचनाम चूर्ण मधुरहै इसलिये राजाओंके योग्यहै इति नाराच चूर्ण ॥ ॥ ६१ ॥

सव्योषपिप्पलीमूलंत्रिवृद्दन्तीचचित्रकम् । तच्चूर्णंगुडसंमिश्रंभक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥ एतद्गुडाष्टकंनाम्नाबलवर्णाग्निबर्द्धनम् । उदावर्त्तप्लीहगुल्मशोथपाण्ड्वामयापहम् ॥ इतिगुड़ाष्टकम् ॥ ६२ ॥

त्रिकटु पीपलामूल निशोथ दन्ती तथा चीता इन सबके चूर्णको गुड़में मिलाकर प्रातःकाल खाने से उदावर्त्त प्लीहा गोला सूजन तथा पांडुरोग का नाश होताहै और बलवर्ण तथा अग्निकी वृद्धि होती है इति गुड़ाष्टक ॥ ६२ ॥

मूलकंशुष्कमार्द्रंवावर्षाभूःपञ्चमूलकम् । कृतमालफलंचाप्सुपक्त्वातेनघृतंपचेत् ॥ तत्पीतंशमयेत्क्षिप्रंउदावर्तमशेषतः । पञ्चमूलकमत्रबृहत्॥इतिशुष्कमूलकाद्यंघृतम् ६३॥

सूखी अथवा गीली मूली पुनर्नवा बड़ा पंचमूल और अमलतास इनके काढ़े के साथ घीको पकाकर पीने से सब प्रकार के उदावर्त्त नष्ट होतेहैं इति शुष्क मूलादि घृत ॥ ६३ ॥

अथानाहस्यचिकित्सा ॥

तुल्यकारणकार्य्यत्वादुदावर्तहरींक्रियाम् । आनाहेषुचकुर्व्वीतविशेषश्चाभिधीयते ॥ त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्योद्विचतुःपञ्चभागिकाः । गुडेनतुल्यागुटिकाहरत्यानाहमुल्वणम् ६४

आनाह की चिकित्सा ॥

उदावर्त और आनाह के कार्य्य कारण समान होने के कारण आनाह में उदावर्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये और विशेष आगे कहते हैं निशोथ २भा० पीपल ४भा० और हड़ ५भा० इनसबके चूर्णके समान गुड़ मिलाकर गोलीबनावे इसके खानेसे बहुत बढ़ेहुए आनाह का नाशहोताहै ॥६४॥

वर्तिस्त्रिकटुसैन्धवसर्षपगृहधूमकुष्टमदनफलैः । मधुनिगुड़ेवापक्वैर्विहितासांगुष्टसंमिताविज्ञैः ॥ वर्त्तिरियंदृष्टफलाशनैःप्रणिहितागुदेघृताभ्यक्ता । आनाहमुदरजार्तिंशमयतिजठरंयथागुल्मम् ॥ इतित्रिकटुकादिवर्त्तिः । इत्युदावर्त्तानाहनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ६५ ॥

त्रिकटु सेंधानोन सरसों घरकाधुआं कूट और मैनफल इन सबको सहत और गुड़ में पाक करके अंगूठे की बराबर बत्ती बनावे और इस बत्ती को घीमें डुबोकर धीरे २ गुदा में रखने से आनाह उदावर्त उदर तथा गोला इन सबका नाश होता है यह अनुभव कियागया है इति त्रिकटुकादि वर्ति इति उदावर्त्ता नाह निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ ६५ ॥

अथगुल्माधिकारः ॥

तत्र गुल्मस्यसान्निकृष्टविप्रकृष्टकारणपूर्व्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

दुष्टावातादयोऽत्यर्थंमिथ्याहारविहारतः । कुर्व्वन्तिपञ्चधागुल्मकोष्ठान्तर्ग्रन्थिरूपिणम् ॥ दुष्टःस्वकारणैःमिथ्याहाराध्यशनादिःमिथ्याविहारोबलवद्विग्रहादिःपञ्चधेतिवातपित्तकफसन्निपातरक्तजान्येवंपञ्चद्वन्द्वजास्तुप्रकृतिसमवेतत्वात्पृथक्नगण्यन्ते । अर्शोवत् । कोष्ठान्तःहृदयाद्वस्तिपर्य्यन्तंकोष्ठस्तन्मध्येकुत्रापिग्रन्थिरूपिणम्गुटिकाकारम् । तत्रपञ्चविधत्वंविवृणोति । सऽयस्तैर्जायतेदोषैःसमस्तैरपिचोच्छ्रितः । पुरुषाणांतथास्त्रीणांरक्तजंचोपजायते ॥ आर्त्तवरूपादपिरक्तात्गुल्मोभवतिइत्याह । आर्त्तवादपिगुल्मःस्यात्सतुस्त्रीणांप्रजायते ॥ अन्यस्त्वसृग्भवःपुंसांतथास्त्रीणांप्रजायते । कोष्ठेऽपिस्थाननियममाह ॥ तस्यपञ्चविधंस्थानंपार्श्वहृन्नाभिवस्तयः ॥ ६६ ॥

गुल्मका अधिकार गुल्मके दूरवाले और समीपी कारणों सहित सामान्य लक्षण ॥

अपने २ कारणोंके द्वारा अथवा नियम रहित आहार बिहार से दूषित हुए बातादिक दोष हृदय तथा बस्ति के बीच में किसी स्थानपर बटिया के समान पांचप्रकार का गोला उत्पन्न करते हैं और वह पांचों यह हैं जैसे बातज पित्तज कफज तथा सन्निपातज यह चार तो पुरुष तथा स्त्री दोनों के होते हैं और स्त्रियोंके ऋतु संबन्धी रुधिर से उत्पन्न हुआ एक प्रकारका गोला होता है और सामान्य रुधिर से हुआ गोला स्त्री पुरुष दोनोंके होता है यह पांचवां है दोनों पसली हृदय नाभि तथा बस्ति यह पांच गोले के स्थानहैं ॥ ६६ ॥

अथ गुल्मस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

हृद्वस्त्योरन्तरेग्रन्थिःसञ्चारीयदिवाचलः । वृत्तश्चयोपचयवान्सगुल्मइतिकीर्त्तितः ॥ नाभिशब्देनवस्तिर्वोध्यःसामीप्यादेवयथागङ्गायांघोषइति । वस्तेरपिगुल्माश्रयत्वेनोक्तत्वात्अन्येहृद्वस्त्योरेवपाठान्तरंपठन्ति ॥ अन्येतुवस्तौविद्रधिःस्यात्सगुल्मइति । तन्नवस्तेरपिगुल्मस्थानत्वात् ॥ तथाचचरके । पञ्चस्थानानिगुल्मस्यपार्श्वहृन्नाभिवस्तयः ॥ इतिसञ्चारीचलनशीलःअचलःस्थिरवृत्तोवर्तुलश्चयोपचयवानितिकदाचिच्चीयतेवृद्धिंगच्छतिकदाचिदपचीयतेहीनोभवतिएतल्लक्षणंसामान्योक्तमपिवातिकऽयवतिष्ठतइतिजैय्यटः । गयदासस्तुसामान्यमेवाह । सर्वगुल्मानांवातमूलत्वात् ॥ ६७ ॥

गोलेका सामान्य लक्षण ॥

हृदय और वस्ति के बीच में चल अथवा निश्चल गोल गांठके समान जो पदार्थ उत्पन्न होता है और कभी २ घटता बढ़ता रहताहै उसको गुल्म (गोला) कहते हैं ॥ ६७ ॥

तस्यपूर्वरूपमाह ॥

उद्गारबाहुल्यपुरीषबन्धस्तृप्त्यक्षमत्वान्त्रविकूजनञ्च । आटोपमाध्मानमपंक्तिशूलमासन्नगुल्मस्यवदन्तिचिह्नम् ॥ अरुचिकृच्छ्रविण्मूत्रेवातत्वंचान्त्रकूजनम् । आनाहंचोर्द्ध्ववातञ्चसर्व्वगुल्मेषुलक्षयेत् ॥ ६८ ॥

गुल्मका पूर्वरूप ॥

गुल्म होने के पहले बहुत डकार मलका रुकना प्यासका न सहसकना आंतों में शब्द उदर में गड़गड़ाहट अफरा भोजन का न पचना और शूल यह लक्षण होते हैं सबप्रकारके गुल्मो में अरुचि मलमूत्र तथा बायुका कष्ट से निकलना उदर में गड़गड़ाहट आनाह और बहुत डकार यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ६८ ॥ तस्यवातिकस्यनिदानमाह ॥

रूक्षान्नपानंविषमातिमात्रंविचेष्टनंवेगविनिग्रहश्च।शोकाभिघातोऽतिमलक्षयश्चनिरन्नताचानिलगुल्महेतुः ॥ विचेष्टनंविरुद्धाचेष्टावलवद्विग्रहादि ॥ शोकाभिघातः शोकेन मनोधिष्ठानस्यहृदयस्याभिघातः ॥ अतिमलक्षयःविरेकादिना।निरन्नताउपवासः ६९ ॥

वातज गुल्म के निदान ॥

रूखा अन्न पान विषम भोजन बहुत भोजन बलवानके साथ युद्धादिक विरुद्ध चेष्टा मलमूत्रादि वेगोंका रोकना शोकसे चित्तका दुखी होना विरेचनादि के द्वारा बहुत मलका क्षय और लंघन यह सब बातज गुल्मके कारण हैं ॥ ६९ ॥ तस्यलक्षणमाह ॥

स्थानसंस्थानरुजाविकल्पविड्वातसङ्गगलवक्त्रशोषम् । श्यावारुणत्वंशिशिरज्वरंचहृत्कुक्षिपार्श्वाङ्गशिरोरुजश्च ॥ करोतिजीर्णेऽत्यधिकंप्रकोपंभुक्तेमृदुत्वंसमुपैतियश्च । वातात्सगुल्मोनचतत्ररूक्षकषायतिक्तंकटुनोपसेवेत् ॥ श्यावारुणत्वंशरीरस्य । शिशिरज्वरम्शीतज्वरम् ॥ जीर्णेआहारेप्रकुप्यतिभुक्तेचशान्तिंगच्छतिसवातिकोगुल्मःरूक्ष आहारकषायंतिक्तकटुरसाःतत्रतस्मिन्वातगुल्मे ॥ नोपसेवेतनसुखयति ॥ ७० ॥

बातज गुल्म के लक्षण ॥

बातज गुल्म कभी बड़ा कभी छोटा कभी गोल कभी लंबा होता है और कभी नाभि में अथवा कभी बस्ति आदिकस्थानों में जाता है और कभी पीड़ा सहित तथा पीड़ा रहित होजाताहै इसरोग में मल तथा मूत्रका रुकना गले तथा मुखका सूखना शरीर में श्यामता अथवा रक्तता शीत ज्वर और हृदय कोख पसली अंग तथा शिर में पीड़ा होती है यह रोग भोजन के पचजाने पर बढ़ता है और भोजन करने पर शान्त होता है और इस में रूखी कषैली तिक्त तथा कड़वी वस्तु हितकारी नहीं होती ॥ ७० ॥

अथपैत्तिकस्यनिदानमाह ॥

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्रोधाऽतिमद्यार्कहुताशसेवा। आमोऽभिघातोरुधिरंचदुष्टंपैत्तस्यगुल्मस्यनिमित्तमुक्तम् ॥ विदाहिवंशकरीरादि । अतिशब्दोमद्यादिषुयोज्यम् । आमोऽत्रविदग्धाजीर्णम् ॥ अभिघातोलगुड़ादिना ॥ ७१ ॥

पित्तज गुल्मका निदान ॥

कड़वी खट्टी तीक्ष्ण उष्ण विदाही तथा रूखी बस्तु क्रोध बहुत मद्यपान धूप अग्नि सेवन विदग्धा जीर्ण लाठी आदिकी चोट और दूषित रुधिर यह पित्तज गुल्मके कारण हैं ॥ ७१ ॥

तस्यलक्षणमाह ॥

ज्वरःपिपासासदनाङ्गरागःशूलंमहज्जीर्यतिभोजनेच । स्वेदोविदाहोव्रणवच्चगुल्मः

स्पर्शासहःपैत्तिकगुल्मरूपम् ॥ अङ्गरागोदेहस्यलौहित्यम् । जीर्य्यतिभोजनेचविदाहोत्र एवच्चगुल्मःस्पर्शासहःपैत्तिकगुल्मरूपं ॥ ७२ ॥

पित्तजगुल्मके लक्षण ॥

पित्तज गुल्ममें ज्वर तृषा शरीरमें शिथिलता रक्तवर्ण स्वेद विदाह भोजनके पचनेके समय बहुत पीड़ा गोलेका घावके समान छूनेके योग्य न होना यह लक्षण होतेहैं ॥ ७२ ॥

अथश्लैष्मिकस्यसान्निपातिकस्यचहेतुमाह ॥

शीतंगुरुस्निग्धमचेष्टनञ्चसम्पूरणंप्रस्वपनंदिवाच । गुल्मस्यहेतुःकफसम्भवस्य सर्वस्तुदिष्टोनिचयात्मकस्य ॥ सम्पूरणंउदरपूरणम् । निचयात्मकस्यसान्निपातिकस्य ॥ सर्वोहेतुःवातपित्तकफानांहेतुः ॥ ७३ ॥

कफज और सन्निपातज गुल्मके निदान ॥

शीतल भारी तथा स्निग्ध बस्तु चेष्टा रहित होना खूब पेटभर खाना और दिनमें सोना यह कफज गुल्मके निदान हैं ऊपर कहेहुए सम्पूर्ण कारणों से सन्निपातज गुल्म होताहै ॥ ७३ ॥

अथश्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यशीतज्वरगात्रसादहृल्लासकासारुचिगौरवाणि । कफस्यलिङ्गानिचयानिता निभवन्तिगुल्मेकफकोपजाते ॥ कफस्यलिङ्गानिवेदनाल्पतावह्निमान्द्यादीनि ॥ ७४ ॥

कफज गुल्मके लक्षण ॥

गीले कपड़े से शरीरका ढकाहुआ सा मालूम होना शीतज्वर शरीरका टूटना तथा भारीपन मतली खांसी अरुचि और मन्दाग्नि तथा थोड़ी पीड़ा आदि कफके अनेक लक्षण होतेहैं ॥ ७४ ॥

व्यामिश्रलिंगानपरांस्तुगुल्मान्त्रीणांदिशेदौषधकल्पनार्थम् ॥ ७५ ॥

औषधियों की कल्पना के लिये दोदोषों के मिले हुए लक्षण वाले और भी तीनप्रकारके द्वन्द्वज गुल्म जानने चाहिये ॥ ७५ ॥ त्रिदोषजमाह ॥

महारुजंदाहपरीतमश्मवत्घनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणं । मनःशरीराग्निवलापहारिणंत्रिदोषजंगुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ धातुरूपरक्तजस्यापिविप्रकृष्टनिदानानिलक्षणानिचपैत्तिकस्यैववोद्धव्यानि । परमत्राभिघातादिहेतुर्विशेषः ॥ ७६ ॥

त्रिदोषज गुल्मके लक्षण ॥

सन्निपातज गुल्म पत्थर के समान कठिन तथा ऊंचा और अत्यन्त पीड़ा तथा दाह युक्तहोताहै और इसमें शीघ्रही विदाह मनकी व्याकुलता और शरीर तथा अग्निके बलका नाश होताहै यह भयंकर गुल्म असाध्य जानना चाहिये सामान्य धातुरूप रुधिरसे उत्पन्न हुए गुल्मके दूरवाले कारण और लक्षण पित्तज गुल्मके समानहोते है परन्तु चोट आदि कारण विशेष होते हैं ॥ ७६ ॥

आर्तवरूपरक्तजमाह ॥

नवप्रसूताहितभोजनायायाचामगर्भंविसृजेदृतौवा । वायुर्हितस्याःपरिगृह्यरक्तंकरोतिगुल्मंसरुजंसदाहम् ॥ पैत्तस्यलिंगेनसमानलिंगंविशेषणञ्चाप्यपरंनिवोधायःस्पन्दते

पिण्डितएवनाङ्गैश्चिरात्सशूलःसमगर्भलिंगः ॥ सरौधिरःस्त्रीभवएवगुल्मोमासेऽव्यतीते दशमेचिकित्स्यः । नवप्रसूताप्रकृताग्निबलवर्णमांसहीना ॥ अहितभोजनायाचामगर्भं विसृजेत्नवममासादर्वाक्प्रसूयतेसाप्यहितभोजनाऋतौवा आर्त्तवप्रवृत्तिकालेऽहितभोजनाअपथ्याचरणाद्वावायुःरक्तंपरिगृह्यगुटिकाकारंगर्भाशयेगुल्मंकरोति । भोजनपदं विहारस्याप्युपलक्षणम् ॥ यतश्चाहचरकः । ऋतावनाहारतयाभयेनविरूक्षणैर्वेगविनिग्रहैश्च ॥ संस्तम्भनोल्लेखनयोनिदोषैर्गुल्मःस्त्रियारक्तभवोऽभ्युपैति । चिरात्स्पन्दते चलतिनाङ्गैःनहस्तपादाद्यैः । समगर्भलिंगःअत्रसमशब्दःसर्वशब्दार्थःतेनसमानिसर्वाणिगर्भलिंगानिआर्त्तवप्रवृत्तिकालेआर्त्तवादर्शनंमुखपीतता स्तनमुखकृष्णतादोहदादीनियत्रसः । एतेचव्याधिप्रभावात् । यथायक्ष्मिणोरिरंसा। सरौधिरआर्त्तवरूपरक्तजःस्त्रीणांप्रजायतेइति । गर्भसमानलिङ्गत्वेविशेषज्ञानार्थमाह । मासेऽव्यतीतेदशमेचिकित्स्यः । नवदशमासयोःप्रसवकालत्वादित्येके । तन्नयःस्पन्दतेपिण्डितएवनाङ्गैरित्यादिनवसंशयस्यानिराकृतत्वात्गर्भःप्रत्यङ्गैःनिरन्तरंनिःशूलंस्पन्दतेगूल्मश्चैतद्विपरीतइति। किञ्च नवमेदशमेप्रसूयतइत्युत्सर्गोनतुनियमः । तदधिककालेऽपिप्रसवदर्शनादागमाच्च। यत आहचरकः।तंस्त्रीप्रसूतेसुचिरेणगर्भंपुष्टंयदावर्षगणैरपिस्यात्॥ तस्मान्मासेऽव्यतीतेदशमे चिकित्स्यइतिन संशयव्यवच्छेदार्थंकिन्तुतदासुखेनचिकित्सार्थंयतउक्तम् । रक्तगुल्मेपुराणत्वंसुखसाध्यस्यलक्षणम् ॥ पुराणताचास्यदशमासातिक्रमेणैवभवति । जैय्यटेनाप्युक्तम् । दशमासोपरिपिण्डितेगुल्मेस्नेहादिनोपस्कृतेदेहाद्येनगर्भाशयक्षतिमादधातिरक्तभेदनमिति ॥ ७७॥ ऋतु सम्बन्धी रुधिरसे उत्पन्न हुए गुल्मका वर्णन ॥

नवप्रसूता (प्रसवके अन्तमें जिसकी अग्नि बल वर्ण तथा मांस स्वाभाविक नरहैं) आम गर्भ प्रसवा (नवें महीने के पहले जिसका गर्भ गिरपड़े) और ऋतुमती स्त्री जो कुपथ्य भोजन करे तो वायु उसके रुधिरको लेकर गर्भाशयमें दाह तथा पीड़ा सहित गुल्म को उत्पन्न करती है इसमें पित्तज गुल्मके से लक्षण होते हैं और विशेषता आगे कहते हैं जैसे कि ऋतुसम्बन्धी रक्तज गुल्ममें गर्भके सम्पूर्ण लक्षण होते हैं अर्थात् ऋतु समय में ऋतुका न होना मुखका पीलापन स्तनों के अग्रभागमें कालापन तथा दोहद आदि सम्पूर्ण लक्षण होते हैं परन्तु जैसे गर्भ हाथपैर आदिक अंगोंको चलाताहै उसी प्रकार रक्तजगुल्म हाथ पैरों के चलाने से रहित होकर शूल सहित देरमें फड़कताहै यह रोग स्त्रियों के होताहै और दशवें महीने के उपरान्त इसकी चिकित्सा करनी चाहिये यहां पहले कहे हुए अहितआहार से अहितविहारका भी ग्रहण होताहै क्योंकि चरकने कहाहै कि ऋतुकाल में उपवास भय रूखीवस्तु वेगोंका रोकना स्तंभन उल्लेखन और योनिदोष इन सब कारणों से स्त्रियों के रक्तज गुल्म उत्पन्न होता है यहां दशवें महीने के व्यतीत होजाने पर इसकी चिकित्सा करनी चाहिये इसमें किसीका मतयहहै कि नवां औरदशवां महीना प्रसवका समयहै इसलिये इनके बीतने पर चिकित्सा करनी चाहिये परन्तु यह ठीक नहींहै क्योंकि हाथ पैरोंके फड़कनेसे रहित इत्यादि कहनेही से सन्देह दूरकर दियागया है और नवें तथा दशवें महीने में प्रसव होताहै यह स्वभाव है

नियमै नहींहै क्योंकि इससे अधिक समयमें भी प्रसवका होना देखा गयाहै और शास्त्र में भी लिखा है क्योंकि चरकने कहाहै कि स्त्री गर्भके पुष्ट होजाने पर वर्षोंके उपरान्त भी उसको उत्पन्न करतीहै इसलिये दशवें महीने के व्यतीत होजाने पर चिकित्सा करनी चाहिये यह सन्देहके दूरकरने को नहीं कहाहै किन्तु सुखपूर्वक चिकित्सा करनेको कहाहै क्योंकि कहागयाहै कि रक्त गुल्मका पुराना पन सुखसाध्य होनेका लक्षणहै और इसका पुरानापन दशवें महीनेके उपरान्त होताहै और जैय्यट ने भी कहाहै कि दश महीनेके उपरान्त गोलेके पिंडके समान होजाने पर स्नेह आदिसे युक्त शरीर वाली स्त्री को रुधिर निकलवाना गर्भाशय में कोई हानि नहीं पहुंचाताहै ॥ ७७ ॥

अथासाध्यलक्षणमाह ॥

महारुजादाहपरीतमश्मवद्घनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणम् । मनःशरीराग्निबलापहारिणंत्रिदोषजंगुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ दाहपरीतंदाहेनव्याप्तंसकलदेहम् । शीघ्रविदाहिशीघ्रविदग्धाजीर्णकरम ॥ दारुणम्मारकम् । मनोपहारिणाम्मनोवैकृत्यकारकम् ॥ शरीराग्निबलापहारिणामशरीरस्यकार्श्यकरम् ॥ ७८ ॥

असाध्य गुल्म के लक्षण ॥

जो गुल्म पत्थर के समान कठिन तथा ऊंचा और बेदना तथा दाहसे युक्त होय और शीघ्रही विदग्धाजीर्ण मनकी व्याकुलता शरीरकी कृशता अग्निकी बिषमता तथा बलका नाश उत्पन्नकरे उस त्रिदोषज प्राणनाशक गुल्मको असाध्य कहते हैं ॥ ७८ ॥

अपरमसाध्य लक्षणमाह ॥

सञ्चितःक्रमशोगुल्मोमहावास्तुपरिग्रहः । कृतःशूलःशिरानद्धोयदाकूर्म्मइवोन्नतः ॥ दौर्बल्यारुचिहल्लासकासच्छर्द्यरतिज्वरैः । तृष्णातन्द्राप्रतिश्यायैर्युज्यतेनसासिद्ध्यति ॥ महावास्तुपरिग्रहःव्यापकतयाबृहत्स्थलंगृह्णातियुज्यतेयुक्तोभवति । अपरञ्च ॥ गृहीत्वासज्वरश्वासंछर्द्यतीसारपीड़ितम् । हृन्नाभिहस्तपादेषुशोफःकर्षतिगुल्मिनम् ॥ कर्षतिमारणायकर्षति । अपरञ्चाश्वासैःशूलंपिपासान्नविद्वेषोग्रन्थिमूढ़ता ॥ जायतेदुर्ब्बलत्वञ्चगुल्मिनोमरणायवै । ग्रन्थिमूढ़ताग्रन्थिरूपस्यगुल्मस्याकस्माद्विलयनम् ॥ ७९ ॥

अन्य असाध्य लक्षण ॥

क्रमसे इकट्ठाहुआ बड़े स्थानका घेरनेवाला शूलयुक्त शिराओंसे बंधाहुआ कछुएके समान उन्नत और दुर्बलता अरुचि मतली खांसी छर्दि बेचैनी ज्वर तृषा तन्द्रा तथा पीनस से युक्त गुल्म असाध्य होता है जिस गुल्मवालेके ज्वर श्वास छर्दि अतीसार और हृदय नाभि हाथ तथा पैरोंमें सूजनहोय वह नहीं जीता श्वास शूल तृषा अन्नमें अनिच्छा ग्रन्थिरूप गुल्मका एकाएकी लुप्त होजाना और दुर्बलता यहसब लक्षण मरनेवाले गुल्मरोगीके होतेहैं ॥ ७९ ॥

तत्रगुल्मस्यचिकित्सा ॥

वातारितैलेनपयोयुतेनपथ्यासमेतेनविरेचनंहि । संस्वेदनंस्निग्धमतिप्रशस्तंप्रभञ्जनक्रोधकृतेचगुल्मे ॥ स्वर्ज्जिकाकुष्ठसहितःक्षारःकेतकसम्भवां । पीतस्तैलेनशमयेद्गु

ल्मंपवनसम्भवम् ॥ तित्तिरांश्चमयूरांश्चकुक्कुटान्क्रौञ्चवर्त्तकान् । सर्पिःशालीप्रसन्नांश्च वातगुल्मेप्रयोजयेत् ॥ पित्तगुल्मेत्रिवृच्चूर्णंपातव्यंत्रिफलाम्बुना । विरेकायसिताशुक्तं काम्पिल्यंवासमाक्षिकम् ॥ त्रिफलाम्बुनात्रिफलाक्काथेन । कम्पिल्लकंकपिलाइतिलोके । अभयांद्राक्षयाखादेत्पित्तगुल्मीगुड़ेनवा। योगैश्चवातगुल्मोक्तैश्लेष्मगुल्ममुपाचरेत्॥ अपरैश्चबलासघ्नैर्युक्तियुक्तैःशमंनयेत् ॥ ८० ॥

गुल्म (गोला) की चिकित्सा ॥

बातज गुल्ममें रेंडीका तेल तथा दूध सहित हडको पीकर विरेचन करना चाहिये और स्निग्ध स्वेदभी इसमें बहुत हितहै सज्जी कूट और केतकीकी जड़का खार इनसबको रेंडीके तेलके साथ पीनेसे बातज गुल्म नष्ट होताहै बातज गुल्म वालेको तीतर मोर मुर्गा क्रौंच तथा बत्तक इनसबके मांसका रस घी शालि धान्य और सर्वत यहसब भोजनके लिये देना चाहिये पित्तके गुल्ममें दस्तोंके लिये त्रिफलाके काढ़ेके साथ निसोथका चूर्ण अथवा सहत और शक्करके साथ कबीलेका चूर्ण ग्रहण करना चाहिये दाख अथवा गुड़के साथ हड़ खाने से पित्तके गुल्मका नाश होताहै बात के गुल्ममें जो योग कहेगये हैं और अन्य कफ नाशक युक्तिवाले योगोंके द्वारा कफज गुल्मकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ८० ॥

हिंगुग्रन्थिकधान्यजीरकवचाचव्याग्निपाठाशटीवृक्षाम्लंलवणत्रयंत्रिकटुकंक्षारद्वयंदाडिमम् । पथ्यापौष्करवेतसाम्लहवुषाजाज्यस्तदेभिःकृतंचूर्णंभावितमेतदार्द्रकरसैःस्याद्बीजपूरद्रवैः ॥ गुल्माध्मानगुदांकुरान्ग्रहणिकोदावर्त्तसंज्ञंगदंमप्रत्याध्मानगरोदराश्मरियुतांस्तूनीद्वयारोचकान् ॥ ऊरुस्तम्भमतिभ्रमञ्चमनसोवाधिर्य्यमष्ठीलिकांमप्रत्यष्ठीलिकया सहापहरतेप्राक्पीतमुष्णाम्बुना ॥ हृत्कुक्षिवङ्क्षणकटीजठरान्तरेषुवस्तिस्तनांशफलकेषुचपार्श्वयोश्च । शूलानिनाशयतिवातबलासजानिहिंग्वाद्यमाद्यमिदमाश्विनसंहितोक्तम् ॥ इतिहिंग्वाद्यंचूर्णम् ॥ ८१ ॥

हींग पीपलामूल धनियां जीरा बच चव्य चीता पाठा कचूर अमलवेत समुद्रनोन बिट्नोन सेंधानोन त्रिकटु जवाखार सज्जी अनार हड़ पुष्करमूल कैथा हाऊबेर और कालीजीरी इनसब औषधियोंको बराबर लेके महीन पीस अदरक और बिजौरा नींबूके रसमें सात २ पुटदेवे प्रातःकाल गरम जलके साथ इसके सेवनसे गुल्म आध्मान बवासीर ग्रहणी उदावर्त्त प्रत्याध्मान गरदोष उदर पथरी तूनी प्रतितूनी अरुचि ऊरुस्तम्भ मतिभ्रम बधिरता अष्ठीला प्रत्यष्ठीला और हृदय कोख बंक्षण कटि उदर वस्ति स्तन कन्धे तथा पसलियों में होनेवाले बात कफज शूल यहसब नष्टहोतेहैं ॥ इति हिंग्वादि चूर्ण ॥ ८१ ॥

धीमानुपचरेद्गुल्मंप्रत्येकञ्चत्रिदोषजम्।सन्निपातोत्थितेगुल्मेत्रिदोषघ्नोविधिर्हितः ८२

बुद्धिमान् वैद्य बातज आदि गुल्मोंमें जो चिकित्सा कहीगई है वही सम्पूर्ण चिकित्सा त्रिदोषज गुल्म में भीकरे ॥ ८२ ॥

शरपुङ्खलवणंपथ्याचूर्णंसमंद्वयम्।शाणप्रमाणमश्नीयाच्चूर्णंगुल्मगदापहम् ॥ स्वर्जिकाशाणमानास्यात्तावदेवगुडंभवेत् । उभयोर्वटिकांखादेत्गुल्मामयविनाशिनीम् ॥ प

लाशवज्रिशिखरीचिञ्चार्कतिलनालजाः। यवजःस्वर्जिकाचेतिक्षाराअष्टौप्रकीर्तिताः॥ एतेगुल्महराःक्षाराअजीर्णस्यचपाचकाः। क्षाराष्टकम्॥ ८३॥

सर्फोंकाके क्षारका नोन तथा हड़का चूर्ण इनदोनोंको बराबर लेकर ३ मासे रोजखाने से अथवा सज्जी ३ मासे और उतनाही गुड़ मिलाकर गोली बनाकर खानेसे गुल्मका नाशहोताहै ढाक थूहर लटजीरा इमली आक तथा तिलकीडंडी इनसबका क्षार जवाखार और सज्जी यहक्षाराष्टक कहलाताहै इसके द्वारा गुल्मका नाश और अजीर्ण का पाकहोताहै॥ इति क्षाराष्टक॥ ८३॥

सामुद्रंसैन्धवंकाचंयवक्षारःसुवर्चलम्। टङ्कणंस्वर्जिकाक्षारतुल्यंचूर्णंप्रकल्पयेत्॥ बज्रीक्षीरैरर्कक्षीरैरातपेभावयेत्त्र्यहम्॥ वेष्टयेदर्कपत्रेणरुध्वाभाण्डेपुनःपचेत्॥ ततक्षारंचूर्णयेत्पश्चात्त्र्यूषणंत्रिफलातथा॥यवानीजीरकोवह्निश्चूर्णमेषाञ्चकारयेत्॥ सर्वचूर्णसंक्षारंसर्वमेकत्रकारयेत्॥ तच्चूर्णटङ्कयुगलंसलिलेनप्रयोजयेत्॥ गुल्मेशूलेतथाजीर्णेशोथेसर्वोदरेषुच॥ मन्देवह्नौउदावर्तेप्लीह्निचापिपरंहितम्॥ वातेऽधिकेजलैःकोष्णैर्हितंपित्तेऽधिकेघृते॥ गोमूत्रेणकफाधिक्येकाञ्जिकेनत्रिदोषजे॥ वज्रक्षारइतिख्यातःप्रोक्तःपूर्वंस्वयम्भुवा॥ सेवितोहरतेजीर्णंतथाजीर्णभवान्गदान्॥ इतिबज्रक्षारः॥ ८४॥

सामुद्रनोन संधानोन कचनोन जवाखार कालानोन सुहागा सज्जी इनसबको बराबर लेकर थूहर तथा आकके दूधमें तीन २ दिन भावना देके धूपमें सुखावे फिर आकके पत्तोंमें उसको बांधके किसी पात्रमें रख पात्रके मुखको बन्दकरके फिर अग्निपर पकावे इसके उपरान्त इसक्षारको निकालके पीसकर त्रिकटु त्रिफला अजवाइन जीरा तथा चीता इनसबके चूर्णके बराबर उसक्षार को मिलाके ६ मासे चूर्ण जलके साथ नित्यखाय इसके द्वारा गुल्म शूल अजीर्ण सूजन सब प्रकारके उदर मन्दाग्नि उदावर्त्त तथा प्लीहाकानाश होताहै इसचूर्ण को अधिक बात वाले रोगमें कुछ गरम जलके साथ अधिक पित्तवाले रोग में घीके साथ अधिक कफ वाले रोगमें गोमूत्रके साथ और सन्निपातज रोग में कांजीके साथ सेवनकरे यह पूर्वकालमें ब्रह्माजीने कहाहै इसके सेवनसे अजीर्ण तथा अजीर्ण से उत्पन्न हुए रोग नष्टहोतेहैं॥ इतिबज्रक्षार॥ ८४॥

सुवर्चिकाटङ्कमितातत्समानार्द्रिकापिच॥ उभेभुञ्जीतयुगपद्गुल्मामयनिवृत्तये॥ सुवर्चिकासोराइतिलोके॥गुल्मंकुमारिकामांसंकर्षार्द्धङ्घृतान्वितम्॥शुक्तिचूर्णस्यगुटिकाटङ्कमात्रासुवेष्टयेत्॥ गुडेनशाणमानेनतांलिहेत्गुल्मरोगवान्। लिहेद्व्योषाभयासिन्धुसूक्ष्मचूर्णावधूलितम्॥ कुमारिकाघिउकुवारिइतिलोके॥ ८५॥

शोरा अदरक इनदोनोंको तीन २ मासे लेकर एकसाथ खानेसे घीग्वारके ६ मासे गूदेको गौकेघी के साथ खानेसे और सीपके चूर्णकी ३ मासे भरकी गोली तीनमासे गुडके साथ चाटनेसे अथवा त्रिकटु हड़ तथा सेंधेनोन में लपेटकर खानेसे गुल्म रोगका नाशहोताहै॥ ८५॥

वल्लूरमूलकंमत्स्यंशुष्कशाकानिवैदलम्॥ नखादेदालुकंगुल्मीमधुराणिफलानिच॥ वैदलानांनिषेधेऽपिमाषकुलत्थयोर्नात्रनिषेधइतिसुश्रुतटीका॥ ८६॥

सूखामांस मूली मछली रूखाशाक उर्द तथा कुलथी को छोडकर सबदाल आलू और मधुरफल इनसब को गुल्म रोगवाला त्यागकरदेवे॥ ८६॥

अथरक्तगुल्मचिकित्सा ॥

स्विन्नास्निग्धशरीरस्ययोज्यंस्नेहविरेचनम् । शताह्वाचिरबिल्वत्वक्दारुभार्गीकणोद्भवः ॥ कल्कःपीतोजयेद्गुल्मंतिलक्काथेनरक्तजम् । तिलक्काथेगुड़व्योषघृतभार्गीयुतोभवेत् ॥ योनिरक्तभवेगुल्मेनष्टपुष्पेषुयोषिताम् । पीतोधात्रीरसोयुक्तोमरिचैश्चास्रगुल्मनुत्॥ सुररोचनिकाचूर्णंशर्करामाक्षिकान्वितम् । विद्धीताशुगुल्मिन्यामलसञ्चक्रमेणच ॥ विशेषमपरञ्चाप्सुशृणुरक्तप्रभेदनम् । पलाशक्षारतोयेनसर्पिःसिद्धंपिबेच्चसा ॥ यस्मिन्नच रसक्षीरनोयसाध्यरसादिषु । सक्षारंत्र्यूषणंसर्पिःप्रपिबेदस्रगुल्मिनी ॥ फेनोद्गारस्यनिष्पत्तिर्मिष्ठदुग्धसमाकृतेः । सएवतस्यपाकस्यकालोनेतरलक्षणः ॥ इतिगुल्मनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ८७ ॥

रक्तगुल्मकी चिकित्सा ॥

रक्तगुल्ममें स्निग्ध स्वेद देकर स्निग्ध विरेचन देना चाहिये सौंफ करंजुआ तज देवदारु भारंगी तथा पीपल इनसबको पीसकर तिल के काढ़े के साथ पीनेसे तिलके काढ़ेमें गुड़ त्रिकटु घी तथा भारंगी डालकर पीनेसे रक्तज गुल्म और ऋतुकाल में रुधिरका बन्द होजाना यह दोनों नष्ट होतेहैं मिर्च युक्त आमलेका रस पीनेसे गुल्मका नाश होता है रक्तगुल्म में सुररोचनके चूर्णको सहत और घी के साथ खाय ढाकके क्षारके जलके साथ घीको पाककरके पीनेसे रक्तगुल्मका रुधिर बहजाता है जवाखार त्रिकटु और घीको एकसाथ पीने से रक्तगुल्म नष्ट होताहै ॥ इति गुल्म निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ ८७ ॥

अथ प्लीहाधिकारः । तत्रप्लीहःशरीरावयवविशेषस्यस्वरूपमाह ॥

शोणितान्जायतेप्लीहावामतोहृदयादधःरक्तवाहिशिराणांसमूलंस्यातोमहर्षिभिः ॥ ८८ ॥

प्लीहाका अधिकार । शरीरके अंगविशेष प्लीहाका स्वरूप ॥

बाईंओर हृदयके नीचे रुधिरसे प्लीहा (तिल्ली) उत्पन्न होती है इसको रुधिरकी लेचलनेवाली शिराओंका मूल महर्षि लोग कहते हैं ॥ ८८ ॥

अथ प्लीहरोगस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

विदाह्यभिष्यन्दिरतस्यजन्तोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च । प्लीहाभिवृद्धिंकुरुतःप्रवृद्धौ तंप्लीहसंज्ञंगदमामनन्ति ॥ वामेसपार्श्वेपरिवृद्धिमेतिविशेषतःसीदतिचातुरोऽत्र । मन्दज्वराग्निःकफपित्तलिंगैरुपद्रुतःक्षीणबलोऽपिपाण्डुः ॥ विदाहिकुलत्थमाषसर्षपशाकादि । अभिष्यन्दिमाहिषंदध्यादिकफपित्तलिंगैरुपद्रुतइत्यर्थः ॥ प्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्चेतिसम्प्राप्तेःअसृजःपित्तस्यचसमानधर्म्मत्वात् ॥ ८९ ॥

प्लीहा रोगका निदान और संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

बिदाही (कुलथी तथा सरसोंका शाकआदि) तथा अभिष्यन्दी (भैंसका दहीआदि)बस्तुकेसेवन करनेवाले मनुष्यके रुधिर तथा कफ अत्यन्त दूषित होकर प्लीहाको बढ़ातेहैं इसीको तिल्ली कहते हैं बाईं कोखिमें प्लीहा बढ़तीहै इसरोगमें शरीरका पीलापन तथा शिथिलता अल्पज्वर मन्दाग्नि बलकी क्षीणता और पित्तके उपद्रव उत्पन्न होतेहैं ॥ ८९ ॥

रक्तजमाह ।

क्लमोभ्रमोविदाहश्चवैवर्ण्यंगात्रगौरवम् ॥ मोहोरक्तोदरत्वञ्चज्ञेयंरक्तजलक्षणम्९०॥

रक्तजप्लीहा के लक्षण ॥

रक्तज प्लीहा में ग्लानि भ्रम विदाह विवर्णता शरीर का भारीपन मोह और उदरकी रक्तता यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ९०॥ पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

सज्वरःसपिपासश्चसदाहोमोहसंयुतः ॥ पीतगात्रोविशेषेणप्लीहापैत्तिकउच्यते॥९१॥

पित्तज प्लीहाके लक्षण ॥

पित्तज प्लीहामें ज्वर तृषा दाह मोह और शरीरका पीलापन यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ९१ ॥

अथश्लैष्मिकलक्षणमाह ॥

प्लीहामन्दव्यथास्थूलःकठिनोगौरवान्वितः ॥ अरोचकेनसंयुक्तःप्लीहाकफजउच्यते ९२॥

कफज प्लीहाके लक्षण ॥

कफज प्लीहा कुछ पीड़ा युक्त स्थूल कड़ी तथा भारी होतीहै और इसमें रोगीको अरुचि होतीहै ॥९२॥

अथवातिकमाह ॥

नित्यमानद्धकोष्ठःस्यान्नित्योदावर्त्तपीडितः। वेदनाभिःपरीतश्चप्लीहावातिकउच्यते९३॥

वातज प्लीहाके लक्षण ॥

वातिज प्लीहामें सदैव मलका रुकना उदावर्त्त और पीड़ा यह लक्षणहोतेहैं ॥ ९३ ॥

तमसाध्यमाह ॥

दोषत्रितयरूपाणिप्लीहासाध्येभवन्त्यपि ॥ ९४ ॥

असाध्य प्लीहाके लक्षण ॥

तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त प्लीहा असाध्य होतीहै ॥ ९४ ॥

अथशरीरावयवविशेषस्ययकृतप्लीहस्वरूपमाह ॥

अधोदक्षिणतश्चापिहृदयाद्यकृतःस्थितिः।तत्तुरञ्जकपित्तस्यस्थानंशोणितजम्मतम्९५

शरीर के अंग बिशेष यकृत् प्लीहा का स्वरूप ॥

दाहिने ओर हृदय के नीचे यकृत् स्थित है और वह रंजक पित्त का स्थान है तथा रुधिर से उत्पन्न होती है ॥ ९५ ॥ अथ यकृद्रोग माह ॥

प्लीहामयस्यहेत्वादिसमस्तंयकृदामये। किन्तुस्थितिस्तयोर्ज्ञेयावामदक्षिणपार्श्वयोः९६॥

यकृत् रोगका लक्षण ॥

प्लीहा तथा यकृत् इनदोनों के हेतु आदिक समान हैं परन्तु भेद यहीहै कि प्लीहा बाईं ओर और यकृत् दाहिनी ओर होती है ॥ ९६ ॥

अथ प्लीहाधिकारेचिकित्सा ॥

पातव्योयुक्तितःक्षारःक्षीरेणदधिशुक्तिजः। तथादुग्धेनपातव्याःपिप्पल्यःप्लीहशान्तये अर्कपत्रंसलवणंपुटदग्धंसुचूर्णितम् । निहन्तिमस्तुनापीतंप्लीहानमतिदारुणम् ॥ हिंगुः

त्रिकटुकंकुष्ठंयवक्षारंचसैन्धवम् । मातुलुङ्गरसेपितंप्लीहशूलहरंभवेत् ॥ पलाशक्षारतोये नपिप्पलीपरिभाविता । प्लीहगुल्मार्तिशमनीवह्निमान्द्यहरीमता ॥ रसेनजम्बीरफलस्य शङ्खनाभिरजःपीतमवश्यमेव । शाणप्रमाणंशमयेदशेषंप्लीहामयंकूर्म्मसमानमाशु ॥ शर पुङ्खमूलकल्कस्तक्रेणालोड़ितःपीतः।प्लीहानंयदिनहरतिशैलोपितद्राजलेप्लवते ॥ सुपक्कस हकारस्यरसःक्षौद्रसमन्वितः।पीतःप्रशमयत्येवप्लीहानंनेहसंशयः ॥ सुस्विन्नंशाल्मलीपुष्पं निशापर्य्युषितंनरः।राजिकाचूर्णसंयुक्तंखादेत्प्लीहोपशान्तये ॥ यवानिकाचित्रकयावशूक षड्ग्रन्थिदन्तीमगधोद्भवानाम्।चूर्णंहरेत्प्लीहगदंनिपीतमुष्णाम्बुनामस्तुरसासवैर्वा ९७॥

प्लीहाकी चिकित्सा ॥

प्लीहा रोगकी शान्ति के लिये समुद्रकी सीपीकी भस्म अथवा पीपल का चूर्ण दूधके साथ पीना चाहिये नोन समेत आकके पत्तोंको पुटपाकमें जलाकर चूर्ण करके दहीके तोड़के साथ पीनेसे भयंकर प्लीहाका भी नाशहोताहै हींग त्रिकटु कूट जवाखार तथा सेंधानोन इनसबके चूर्ण को बिजौरा नींबू के रसकेसाथ पीनेसे प्लीहाके शूलका नाशहोता है ढाकके क्षारके जलके द्वारा भावना दीहुई पीपलके सेवनसे प्लीहा गुल्म तथा मन्दाग्नि का नाश होताहै जम्भीरी नींबूके रसके साथ ३ मासेशंख नाभिका चूर्ण पीनेसे कछुए कीसी प्लीहा का नाशहोता है सरफोंके की जड़को पीसकर मट्ठेमें घोलकर पीने से जो प्लीहा का नाश न होय तो जानना चाहिये कि पत्थर भी जल में तैरताहै बहुत पकेहुए आमके रसमें सहत डालकर पीनेसे निस्सन्देह प्लीहाका नाश होताहै खूबउबाले हुए शाल्मली के फूल को रातभर रखके राई के चूर्णके साथ खाने से प्लीहाका नाश होताहै अजवाइन चीता जवाखार पीपलामूल दन्ती और पीपल इनके चूर्णको गरम जल दहीका तोड़ मांसका रस अथवा आसवके साथ अनुपान करने से प्लीहा नष्ट होती है ॥ ९७ ॥

अथ यकृद्रोगचिकित्सा ॥

प्लीहोद्दिष्टाःक्रियाःसर्व्वायकृद्रोगेसमाचरेत् । कार्य्यञ्चदक्षिणेबाहौतत्रशोणितमोक्षणम् ॥ क्षारंविडङ्गकृष्णाभ्यांपूतीकस्याम्बुनिःश्टतम् । पिबेत्प्रातर्यथावह्नियकृत्प्लीहप्रशान्तये ॥ पूतीकःकरञ्जः इतिप्लीहयकृदधिकारः ॥ ९८ ॥

यकृत् की चिकित्सा ॥

यकृत् रोगमें संपूर्ण चिकित्सा प्लीहाके समान करनी चाहिये और दाहिने हाथ की फस्त खुलवाना चाहिये जवाखार वायबिड़ंग पीपल और करंजुआ इनके काढ़ेको अग्निके अनुसार प्रातःकाल पीनेसे यकृत् और प्लीहाका नाश होताहै इति प्लीहयकृदधिकार समाप्त ॥ ९८ ॥

अथ हृद्रोगाधिकारः ॥

तत्रहृद्रोगस्यविप्रकृष्टनिदानमाह । अत्युष्णगुर्वम्लकषायतिक्तश्रमाभिघाताध्यशन प्रसंगैः । सञ्चिन्तनैर्वेगविधारणैश्चहृदामयःपञ्चविधःप्रदिष्टः ॥ प्रसंगःसततंसेवा । सञ्चिन्तनम् । अतिचिन्ता । राजभयादिकमितियावत् । हृदामयःसपञ्चविधः । वातिकः पैत्तिकःश्लैष्मिकःसन्निपातिकःकृमिजश्चेति ॥ ९९ ॥

हृदयके रोगोंका अधिकार । हृद् रोगके दूरवाले कारण ॥

अत्यन्त उष्ण भारी खट्टी कषैली तथा तिक्त वस्तु श्रम चोट अजीर्ण में भोजन और चिन्ता और वेगोंका रोकना इनसब कारणोंसे वातज पित्तज सन्निपातज और कृमिज यह पांचप्रकारका हृद्रोग उत्पन्न होता है ॥ ९९ ॥ तस्यसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

दूषयित्वारसंदोषाविगुणाहृदयङ्गता । हृदिबाधांप्रकुर्वन्तिहृद्रोगंतंप्रचक्षते ॥ विगुणाः दुष्टाःबाधांदोषभेदेननानाविधांव्यथाम् । भगवत्पीड़ामितिगयादासः ॥ १०० ॥

हृद् रोगका संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

दूषित दोष हृदयमें जाकर रसको दूषित करके हृदयमें अनेक प्रकारकी पीड़ाको उत्पन्न करते हैं इसको हृद्रोग कहते हैं ॥ १०० ॥

वातिकंहृद्रोगमाह ॥

आयम्यतेमारुतजेहृदयन्तुद्यतेतथा । निर्मथ्यतेदीर्य्यतेचस्फोट्यतेपाट्यतेऽपिवा ॥ मारुतजेहृद्रोगइतिशेषः । आयम्यतेव्यथयाविस्तार्य्यतेइव । तुद्यतेसूचीभिरिवविद्यते निर्मथ्यतेमन्थनेनेवदीर्य्यतेकरपत्रेणद्विधा क्रियतइवस्फोट्यतेअस्त्रेणैवपाट्यतेकुठारेणब हुधाक्रियतइव ॥ १०१ ॥ बातज हृद्रोगके लक्षण ॥

बातज हृद् रोग में हृदय में खैंचनेकी सी और सुई गड़ने की सी डंडे से मथने की सी फाड़ने की सी आँतोंसे तोड़ने कीसी और कुठार से टुकड़े२ करने कीसी पीड़ा होतीहै ॥ १०१ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

तृष्णोष्णदाहचोषाःस्युःपैत्तिकेहृदयेक्लमः ।धूमायनञ्चमूर्च्छाचस्वेदःशोषोमुखस्यच ॥ उष्णाशीतमात्रस्यैवशीतवाताभिलाषहेतुः किञ्चिदन्तरोष्णदाहःपार्श्वस्थेनवह्निनेवदुः खहेतुर्गात्रस्यसन्तापः । चोषःचूषणेनेवपीड़ा । हृदयेक्लमःहृदयाकुलत्वंग्लानिवादित्यर्थः । धमायनम्कण्ठाद्धूमनिर्गमःक्लेदःकिञ्चिद्दुर्गन्धःशाटितइव ॥ १०२ ॥

पित्तज हृद्रोगका लक्षण ॥

पित्तज हृद् रोगमें तृषा भीतर कुछ ऊष्मा दाह चूसने कीसी पीड़ा हृदय में व्याकुलता गले से धुआं निकलना मूर्च्छा स्वेद और मुखका सूखना यह सब लक्षण होते हैं ॥ १०२ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

गौरवंकफसंस्रावोऽरुचिस्तम्भोऽग्निमार्दवम् । माधुर्य्यमपिचास्यस्यबलासावततेहृदि ॥ बलासावततेहृदिकुपितकफव्याप्तेगौरवंहृदयस्य । स्तम्भोजड़ता मार्दवंजलप्लुतमिवमाधुर्यंमुखे ॥ १०३ ॥ कफज हृद्रोगके लक्षण ॥

कफज हृद्रोगमें दूषित कफ के व्याप्त होने के कारण हृदय का भारीपन कफ निकलना अरुचि जड़ता मन्दाग्नि और मुखका मीठापन यह लक्षण होतेहैं ॥ १०३ ॥

त्रिदोषजमाह ॥

विद्यात्त्रिदोषमप्येवंसर्वलिङ्गंहृदामयम् ॥ १०४ ॥

त्रिदोषज हृद्रोग के लक्षण ॥

सन्निपातज हृद्रोग में तीनों दोषों के मिलेहुए लक्षण होते हैं ॥ १०४ ॥

कृमिजमाह ॥

अत्रकृमयोजायन्तेऽस्मिन्नितिकृमिजइतिनिरुक्तिः । तस्यविप्रकृष्टनिदानपूर्विकां संप्राप्तिमाह ॥ त्रिदोषहेतुहृद्रोगेयोदुरात्मानिषेवते । तिलक्षीरगुडादींश्चग्रन्थिस्तस्योप जायते ॥ मर्मैकदेशेसंक्लेदंरसश्चाप्युपगच्छति । संक्लेदात्कृमयश्चास्यपतन्त्युपहतात्म नः ॥ मर्मैकदेशेहृदयैकदेशेसंक्लेदंशाटितत्वं रसउपगच्छति । संक्लेदात्रसस्यशाटितत्वा त्उपहतात्मनः । तिलाद्यहिताहारेण ॥ १०५ ॥

कृमिज हृद्रोग के दूरवाले कारण और संप्राप्ति ॥

जो दुर्बुद्धि मनुष्य त्रिदोषज हृद्रोग में तिल दूध तथा गुड आदि बस्तुओं का सेवन करता है उसके हृदय के किसी स्थान में गांठ सी पड़जाती है इसलिये भोजन का रस अन्य धातुओं में बदलने नहीं पाता और उसके बासी होजाने पर उसमें कीड़े पड़जाते हैं ॥ १०५ ॥

तस्यलक्षणमाह ॥

उत्क्लेदःष्ठीवनन्तोदःशूलंहृल्लासकस्तमः । अरुचिःश्यावनेत्रत्वंशोषश्चकृमिजेभवे त् ॥ उत्क्लेदःवमनमिवोपस्थितम् । शोषोयक्ष्मा ॥ १०६ ॥

कृमिज हृद्रोग के लक्षण ॥

कृमिज हृद्रोग में मतली बहुत थूकना सुई गड़ने कीसी पीड़ा शूल बमन होती हुई सी मालूम होना अन्धकार दीखना अरुचि नेत्रोंका धुमैलापन और यक्ष्मा यह लक्षण होते हैं ॥ १०६ ॥

हृद्रोगस्योपद्रवानाह ॥

क्लमस्तन्द्राभ्रमःशोषोज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः । कृमिजेतुकृमीणांयेश्लैष्मिकानांहितेम ताः ॥ क्लोम्नःपिपासास्थानस्यसादःशोषः । शोषोमुखस्य । तेषांहृद्रोगाणांक्रिमिजेतुहृद्रो गेश्लैष्मिकानांकृमीणाम् ॥ येउपद्रवाहल्लासास्यश्रवनान्तात्रिपाकादयःतेमताः १०७ ॥

हृद्रोग के उपद्रव ॥

क्लोम (पिपासा का स्थान) तथा मुखका सूखना भ्रम यह हृद्रोग के उपद्रव हैं कृमिज हृद्रोग में कफज कृमियों के जो मतली आदिक उपद्रव कहेगये हैं वह सब होते हैं ॥ १०७ ॥

अथ हृद्रोगस्य चिकित्सा ॥

घृतेनदुग्धेनगुडाम्भसावापिवन्तिचूर्णंककुभस्त्वचोये। हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तंहत्वा भवेयुश्चिरजीविनस्ते । हरीतकीवचारास्नापिप्पलीनागरोद्भवम् । शटीपुष्करमूलोत्थंचू र्णंहृद्रोगनाशनम् । पुटदग्धंहरिणशृङ्गंपिष्टंगव्येनसर्पिषापिवतः । हृत्पृष्ठशूलमचिरा दुपैतिशान्तिंसुकष्टमपि । तैलाज्यगुडविपक्वंचूर्णंगोधूमपार्थोत्थम् । पिबतिपयोभुक्सभ वतिगतसकलहृदामयःपुरुषः॥ पार्थःकोहइतिलोके ॥ गोधूमककुभचूर्णंपक्वमजाक्षीरग

व्यसर्पिभ्याम्। मधुशर्करासमेतंशमयतिहृद्रोगमुद्धतंपुंसाम् ॥ पार्थस्यकल्केनरसेनासिद्धं शस्तंघृतंसर्वहृदामयेषु। इतिअर्जुनघृतम्॥ १०८॥

हृद्रोग की चिकित्सा ॥

अर्जुन वृक्षकी छालका चूर्ण दूध घी अथवा गुड़के सर्वत के साथ पीने से हृद्रोग जीर्णज्वर और रक्त पित्तका नाश होकर आयुकी वृद्धि होती है हड़ बच रासना पीपल सोंठ कचूर और पुष्करमूल इन सबके चूर्णको खानेसे हृद्रोग का नाश होता है हिरन के सींग को पुटपाक में जलाकर पीसकर गौके घीके साथ पीने से बहुत कठिन भी हृदय तथा पीठकी पीड़ा शीघ्रही नष्ट होती है गेहूं और अर्जुन वृक्षकी छाल के चूर्णको तेल घी तथा गुड़ में पाक करके दूधके साथ पीने से संपूर्ण हृद्रोगोंका नाश होता है गेहूं और अर्जुन वृक्षकी छालके चूर्णको बकरी के दूध और गौ के घीके साथ पाक करके सहत और शक्करके साथ खानेसे बहुत बढ़ाहुआ भी हृद्रोग शान्त होताहै अर्जुन वृक्षके कल्क और रसके साथ पाककिया हुआ घी संपूर्ण हृद्रोगोंको नष्ट करताहै॥ इति अर्जुन घृत ॥१०८॥

घृतंबलानागबलार्जुनानांक्काथेनकल्केनचयष्टिकायाः। सिद्धंतुहन्याधृदयामयंहि सवातरक्तक्षतरक्तपित्तम्॥ इतिबलाद्यंघृतम् इतिहृद्रोगनिदानचिकित्साधिकारः १०९॥

बला नाग बला और अर्जुन के काढेके साथ मुलहठी के कल्क को डालकर पाककियाहुआ घी हृद्रोग बातरक्त क्षत और रक्त पित्तको नष्टकरता है इति बलादि घृत इति हृद्रोग चिकित्साधिकार समाप्त ॥ १०९ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्राधिकारः॥

तत्रमूत्रकृच्छ्रस्यबिप्रकृष्टंनिदानमाह। व्यायामतीक्ष्णौषधरूक्षमद्यप्रसङ्गनृत्यद्रुतपृष्ठयानात्॥ आनूपमत्स्याध्यशनादजीर्णात्स्युर्मूत्रकृच्छ्राणिनृणांतथाष्टौ। तीक्ष्णौषधम्राजिकासूरणादिकयुक्तम्॥ रूक्षेतिमद्यबिशेषणम्। प्रसंगःसन्ततंसेवा ॥ नृत्यंनर्त्तनम्। नित्येतिद्वितीयःपाठः ॥ द्रुतपृष्ठयानात्अश्वादिनागमनात्आनूपंप्रचुरजलदेशसम्भवमत्स्यःअष्टौवातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिकशल्यजपुरीषजशुक्रजाश्मरीजानि ११०॥

मूत्रकृच्छ्रका अधिकार मूत्रकृच्छ्र के दूरवाले कारण ॥

व्यायाम राई जिमीकंद आदि तीक्ष्ण औषध तथा रूखी मद्यका नित्य सेवन नृत्य घोड़े आदि की सवारी बहुत जल वाले देशकी मछली अजीर्ण में भोजन और अजीर्ण इन सबकारणों से आठ प्रकार का मूत्र कृच्छ्र उत्पन्न होता है बातज पित्तज कफज सन्निपातज शल्यज पुरीषज शुक्रज और अश्मरीज यह आठ प्रकार हैं॥ ११०॥

तस्यसंप्राप्तिपूर्वकं लक्षणमाह॥

पृथङ्मलास्वैःकुपितानिदानैःसर्वेऽथवाकोपमुपेत्यवस्तौ। मूत्रस्यमार्गंपरिपीड़यन्ति यदातदामूत्रयतीहकृच्छ्रात्॥ १११॥

मूत्रकृच्छ्रका संप्राप्ति पूर्वक लक्षण॥

अपने २ कारणों से बातादिक दोष अलग २ अथवा एकसाथ कुपित होकर बास्ति में जायँगे जब मूत्रद्वार को पीड़ित करते हैं तब बड़ेकष्ट से मूत्र उतरता है इसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं॥ १११॥

वातजमाह ॥

तीव्राचरुग्वंक्षणवस्तिमेढ्रेस्वल्पंमुहुर्मूत्रयतीहवातात्।तीव्रामारणात्मिकाःवंक्षणोरुमेढ्राणामभ्यन्तरालसन्धिः॥११२॥ बातजमूत्रकच्छ्रकेलक्षण ॥

बातजमूत्रकृच्छ्रमें बंक्षण (जंघा तथा लिंगके भीतरकी सन्धि) बस्ति तथा लिंगमें अत्यन्तपीड़ा होतीहै और बाम्बार थोड़ा २ मूत्रनिकलताहै ॥ ११२ ॥

पैत्तिकमाह ॥

पीतंसरक्तंसरुजंसदाहंकृच्छ्रंमुहुर्मूत्रयतीहपित्तात्।कृच्छ्रमितिक्रियाविशेषणं॥११३।

पित्तजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

पित्तज मूत्रकृच्छ्र में दाह तथा पीड़ा सहित पीला अथवा लाल वर्ण का मूत्र बहुत कष्टके साथ बारम्बारआताहै ॥ ११३ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

वस्तेःसलिंगस्यगुरुत्वशोथौमूत्रंसपिच्छंकफमूत्रकृच्छ्रे।सपिच्छम्पिच्छिलं॥११४॥

कफजमूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

कफजमूत्रकृच्छ्रमें बस्ति तथा लिंगभारी तथा सूजनयुक्तहोताहै औरमूत्रसचिक्कणहोताहै॥११४॥

सान्निपातिकमाह ॥

सर्वाणिरूपाणितुसन्निपाताद्भवंतितत्कृच्छ्रतमंहिकृच्छ्रम् ॥ ११५ ॥

सन्निपातजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

सन्निपातजमूत्रकृच्छ्रमें बातादितीनोंदोषोंके संपूर्णलक्षणहोतेहैं और यह अत्यन्तकष्टसाध्यहै॥११५॥

शल्यजमाह ॥

मूत्रवाहिषुशल्येनक्षतेष्वभिहतेषुच । मूत्रकृच्छ्रंतदाघाताज्जायतेभृशदारुणम् ॥ वातकृच्छ्रेणतुल्यानितस्यलिंगानिनिर्दिशेत् । मूत्रवाहिषुस्रोतःसुशल्येनकण्टकेनक्षतेषुसक्षतीकृतेषु । अथवा अभिहतेषुमुष्ट्यादिभिराभहतेषुतदाघातात्मूत्रमार्गाघातात्तत्कृच्छ्रंजायतेभृशदारुणंमारकम् ॥ तस्यशल्यजस्य ॥ ११६ ॥

शल्यजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

कांटे आदि शल्यके द्वारा मूत्रकेलेचलनेवालेस्रोतों के घायल और घूंसेआदिसे चुटहलहोनेपरअत्यन्त भयंकर मूत्रकृच्छ्र उत्पन्नहोताहै इसके लक्षण बातजमूत्रकृच्छ्रकेसेहोतेहैं ॥ ११६ ॥

पुरीषजमाह ॥

शकृतस्तुप्रतीघाताद्वायुर्विगुणतांगतः।आध्मानंवातशूलञ्चमूत्रगन्धंकरोतिच ११७॥

पुरीषजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

मलकेरोकनेसे बायुकुपितहोकर अफरा बातशूल और मूत्रकृच्छ्रको उत्पन्न करतीहै ॥ ११७ ॥

शुक्रजमाह ॥

शुक्रदोषैरुपहतेमूत्रमार्गेविधारिते । सशुक्रंमूत्रयेत्कृच्छ्राद्वस्तिमेहनशूलवान् । उपहतदूषिते ॥ ११८ ॥

शुक्रजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

दोषोंसे दूषितवीर्य्यकेमूत्र मार्गमें स्थितहोजाने पर कष्टसेवीर्य्य सहितमूत्रनिकलताहै और बस्ति तथा लिंगमें पीड़ा होतीहै ॥ ११८ ॥

अश्मरीजमाह ॥

अश्मरीहेतुकञ्चापिमूत्रकृच्छ्रमुदाहृतम् ॥ ११९ ॥

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

पहले पथरीहोकर जोमूत्रकृच्छ्रहोताहै उसकोअश्मरीजमूत्रकृच्छ्रकहतेहैं ॥ ११९ ॥

सुश्रुते। शर्कराजमपिमूत्रकृच्छ्रमुक्तमत्रतुतस्यनवमसङ्ख्यानियमार्थमश्मरीशर्करयोः साम्यमाह । अश्मरीशर्कराचैवतुल्यंसम्भवलक्षणे । विशेषणंशर्करायाःशृणुकीर्त्तयतोमम॥ सम्भवःकारणं। पच्यमानाश्मरीपित्ताच्छोष्यमानाचवायुना। विमुक्तकफसन्धानाक्षरंतीशर्करामता॥पित्तेनपच्यमानामूत्रशुक्रश्लेष्मसंहतिः ॥ प्रथमंपित्तेनइन्धनकर्म्मणापच्यमानापश्चाद्वातेनशोषिताकफेनाक्लिष्टाअश्मरीसैव । विमुक्तकफसन्धानात्त्यक्तकफाश्लेष्मासतीशर्करारूपामूत्रमार्गात्क्षरन्तीशर्करामताएतावताकिञ्चिदेवभेदः ॥ १२० ॥

सुश्रुतमें शर्करा जन्यमूत्रकृच्छ्रभी कहाहै और यहांतो उसकी नवीं संख्याके नियमकेलिये पथरी और शर्करा की समता कहते हैं पथरी और शर्करा इन दोनों के कारण और लक्षण एकप्रकारके हैं और विशेष यहहै कि मूत्र वीर्य्य और कफ इनकीगांठ पित्तसे पाककी गई बायु से सुखाई गई और कफसे मिलीहुई पथरी कहलातीहै और वही पथरी जब कफके बंधनसे छूटकर शर्करा रूपसे मूत्र मार्गके द्वारा निकलतीहै तब शर्करा कहलातीहै यही इनदोनोंमें भेदहै ॥ १२० ॥

शर्करायाउपद्रवानाह ॥

हृत्पीड़ावेपथुःशूलंकुक्षावग्निश्चदुर्बलः।तथाभवतिमूर्च्छाचमूत्रकृच्छ्रञ्चदारुणम्१२१॥

शर्कराके उपद्रव

हृदय तथा कोपमेंपीड़ा कंप मन्दाग्नि मूर्च्छा और भयंकर मूत्रकृच्छ्र यहशर्कराकेउपद्रवहैं॥१२१॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

अभ्यञ्जनस्नेहनिरूहवस्तिस्वेदोपनाहोत्तरवस्तिसेकान् । स्थिरादिभिर्वातहरैश्च सिद्धान्दद्याद्रसांश्चानिलमूत्रकृच्छ्रे ॥ अमृतानागरंधात्रीवाजिगन्धात्रिकण्टकैः । प्रपिवेद्वातरोगार्तःशूलवान्मूत्रकृच्छ्रवान् ॥ १२२ ॥

मूत्रकृच्छ्रकी चिकित्सा ॥

बातजमूत्रकृच्छ्रमें अभ्यंग स्नेह निरूह बस्ति स्वेद लेप उत्तरवस्ति परिषेकऔर शालिपर्णी आदि बातनाशक औषधियोंके काढ़ेदेनेचाहिये गिलोय सोंठ आमला असगन्ध तथा गोखुरू इनसबके काढ़े के पीनेसे पीड़ा सहित बातज मूत्रकृच्छ्र नष्टहोताहै ॥ १२२ ॥

पुनर्नवैरण्डशतावरीभिःपत्तूरदृश्चीवबलाश्मभिद्भिः । द्विपञ्चमूलेनकुलत्थकेनयवैश्चतोयेतुक्वथितेकषाये ॥ तैलंवराहर्क्षवसाघृतञ्चतैरेवकल्कैर्लवणैश्चसिद्धम् । तन्मा

त्रयात्रप्रतिहन्तिपीतंशूलान्वितंमारुतमूत्रकृच्छ्रम् ॥ इतिपुनर्नवादिमिश्रकः । इतिवात कृच्छ्रम् ॥ १२३ ॥

पुनर्नवा रेंड़ीकीजड़ सतावर लालचन्दन श्वेत पुनर्नवा बरियारा पाषाणभेद और सैंधानोन इन सबका कल्क दशमूल कुलथी तथा जौका काढ़ा तिलोंका तेल शूकर तथा रीछकी चर्बी और घी इनसबको विधिपूर्व्वक पाककरके मात्राके अनुसार पीने से शूल सहित वातज मूत्र कृच्छ्रका नाश होताहै इति पुनर्नवादि मिश्रक इति वात कृच्छ्र ॥ १२३ ॥

सेकावगाहाःशिशिराःप्रदेहाःग्रैष्मोविधिर्वस्तिपयोविकाराः । द्राक्षाविदारीक्षुरसैर्घृतैश्चकृच्छ्रेषुपित्तप्रभवेषुकार्याः ॥ कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवम् । पित्तकृच्छ्रहरंपञ्चमूलंवस्तिविशोधनम् । इतितृणपञ्चमूलम् ॥ १२४ ॥

पित्तज मूत्र कृच्छ्रमें शीतल सींचना शीतल जल में स्नान शीतल लेप ग्रीष्मऋतुकी विधि वस्तिक्रिया दही आदिक दूधके विकार दाख विदारीकन्द ईखकारस और घी यहसब हितकारी हैं कुश कास सरकंडा दर्भ और ईख इनसबकी जड़के काढ़ेको पीने से पित्तज मूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै और मूत्राशय शुद्ध होताहै ॥ इति तृणपंचमूल ॥ १२४ ॥

शतावरीकाशकुशश्चदंष्ट्राबिदारिशालीक्षुकसेरुकाणाम् । क्वाथंसुशीतंमधुशर्कराभ्यांयुक्तंपिवेत्पैत्तिकमूत्रकृच्छ्रे ॥ एर्वारुबीजंमधुकञ्चदार्व्वींपैत्तेपिवेत्तण्डुलधावनेन । दार्व्वींतुषैलामलकीरसेनसमाक्षिकंपित्तकृतेतुकृच्छ्रे ॥ हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् । क्वाथंपिवेन्माक्षिकसंप्रयुक्तंकृच्छ्रेसदाहेसरुजंविवन्धे ॥ १२५ ॥

सतावर कांस कुश गोखुरू बिलारीकन्द शालि धान्यकी जड़ ईखकीजड़ और कसेरू इनके काढ़े को शीतल करके सहत और घी डालकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै ककड़ीके बीज मुलहठी तथा दारुहल्दी इनका चूर्ण चावल के धोवनके साथ पीनेसे अथवा दारुहल्दीका चूर्ण तथा सहत डालकर आमलेका रस पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै हड़ गोखुरू अमलतास पाषाण-भेद और जवासा इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे दाह पीड़ा तथा बिबन्ध सहित मूत्रकृच्छ्रका नाश होता है ॥ १२५ ॥

शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्राविदारिकेक्ष्वामलकेषुसिद्धम् । सर्पिःपयोवासितयाविमिश्रंकृच्छ्रेषुपित्तप्रभवेषुयोज्यम् । इतिशतावरीघृतम् ॥ १२६ ॥

सतावर कांस कुश गोखुरू विलारीकन्द ईखकी जड़ तथा आमला इनके द्वारा पाककियेगये घी अथवा दूधमें शक्कर मिलाकर पीने से पित्तज मूत्र कृच्छ्र नष्ट होता है इति सतावर घृत और दुग्ध ॥ १२६॥

त्रिकण्टकैरण्डकुशादिभिश्चएर्वारुकेषुस्वरसेषुसिद्धम् । सर्पिर्गुडार्द्धांशयुतंप्रयोज्यंकृच्छ्राश्मरीमूत्रविघातदोषे ॥ अयंविशेषेणपुनर्विधेयःसर्वाश्मरीणांप्रवरःप्रयोगः ॥ इति त्रिकण्टकाद्यंघृतम्इतिपित्तकृच्छ्रम् ॥ १२७ ॥

गोखुरू रेंड़ीकीजड़ कुश कांस सरकंडा ईख दर्भ सतावर और ककड़ी इनकेरसों के द्वारा घी का पाककरके आधाअंश गुड़ मिलावे इसके सेवनसे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात और सबप्रकारकी पथरी नष्ट होती हैं इति त्रिकंटकादि घृत इति पित्तकृच्छ्र ॥ १२७ ॥

क्षारोष्णतीव्रौषधमन्नपानंस्वेदोयवान्नंवमनंनिरूहः। तक्रञ्चतिक्तौषणसिद्धतैलान्यभ्यङ्गपानंकफमूत्रकृच्छ्रे॥ मूत्रेणसूरयावापिकदलीस्वरसेनवा। कफकृच्छ्रविनाशायसूक्ष्मंपिष्ट्वागुटींपिवेत्॥ तक्रेणयुक्तंसितिवारकस्यबीजंपिवेन्मूत्रविघातहेतोः। पिवेत्तथातण्डुलधावनेनप्रवालचूर्णंकफमूत्रकृच्छ्रे॥ त्रिकटुत्रिफलामुस्तंगुग्गुलुञ्चसमाक्षिकम्। गोक्षुरक्काथसंयुक्तंगुटिकांभक्षयेद्बुधः॥ प्रमेहंमूत्रकृच्छ्रञ्चमूत्राघातंतथैवच। अश्मरीप्रदरञ्चैवनाशयेदविकल्पतः॥ इतिकफकृच्छ्रम्॥ १२८॥

कफज मूत्रकृच्छ्रमें क्षार तीक्ष्ण तथा उष्ण औषध अन्न तथा जल स्वेद जौके बनेहुये पदार्थ वमन निरूहवस्ति तक्र और तीखी औषधियोंसे पाककियेहुये तेलका मर्दन तथा पानकरना यहसब हितकारीहैं छोटी इलायचीके चूर्णकी गोली बनाकर गोमूत्र मदिरा अथवा केलेके रसके साथ पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै सिवारके बीजोंको मट्ठेके साथ पीनेसे अथवा मूंगेके चूर्णको चावलोंके जलके साथ पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है त्रिकटु त्रिफला मोथा गूगल तथा सहत इनसब कीगोली बनाकर गोखरूके काढ़ेके साथ पीनेसे प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात पथरी और प्रदरका नाश होताहै इति कफकृच्छ्र॥ १२८॥

सर्वत्रिदोषप्रभवेचवायोःस्थानानुपूर्व्याप्रसमीक्ष्यकार्य्यम्। त्रिभ्योऽधिकेप्राग्वमनंकफेस्यात्पित्तेविरेकःपवनेतुवस्तिः॥ बृहतीधावनीपाठायष्टीमधुकलिङ्गकाः। पाचनीयोबृहत्यादिःकृच्छ्रदोषत्रयापहः॥ गुडेनामिश्रितंक्षीरंकदूष्णंकामतःपिवेत्। मूत्रकृच्छ्रेषुसर्वेषुशर्करावातरोगनुत्॥ इतित्रिदोषकृच्छ्रकम्॥ १२९॥

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र में पहले वायुको शान्तकरके तीनोंदोषों में कहीहुई चिकित्साकरे जो तीनों दोषों में से कफ अधिकहोय तो पहले वमन जो पित्त अधिकहोय तो विरेचन और जो वायु अधिक होय तो वस्ति क्रिया करनी चाहिये दोनोंभटकटैया पाठा मुलहठी और इन्द्रजौ इनका काढ़ा आम का पचानेवाला और त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र का नाशक होताहै कुछ गरम दूधमें गुड़ मिलाकर इच्छाके अनुसार पीनेसे मूत्रकृच्छ्र शर्करा और वातरोगों का नाशहोताहै इति त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र॥ १२९॥

मूत्रकृच्छ्रेऽभिघातोत्थेवातकृच्छ्रक्रियामता। मद्यंपिवेद्वाससितंससर्पिःशृतंपयोवार्द्धसिताप्रयुक्तम्। धात्रीरसञ्चेक्षुरसंपिवेद्वाकृच्छ्रेसरक्तेमधुनाविमिश्रम्॥ अभिघातकृच्छ्रम् १३०

अभिघातज मूत्रकृच्छ्र में वातज मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा करनी चाहिये मद्य शक्कर सहित घी अथवा आधो आध शक्कर सहित दूध पीनेसे अभिघातज मूत्रकृच्छ्र नष्टहोताहै रक्त सहित मूत्रकृच्छ्रमें सहत मिलाकर आमले तथा ईख का रसपिये इति अभिघातज मूत्रकृच्छ्र॥ १३०॥

लेहःशुक्रविबन्धोत्थेशिलाजतुसमाक्षिकम्। एलाहिंगुयुतंक्षीरंसर्पिर्मिश्रंपिवेन्नरः॥ मूत्रदोषविशुद्ध्यर्थंशुक्रदोषहरञ्चतत्। वृष्येर्बृंहितधातोश्चविधेयाःप्रमदोत्तमाः॥ शुक्रविबन्धोत्थकृच्छ्रम्॥ १३१॥

वीर्य्य के रुकनेसे हुए मूत्रकृच्छ्र में सहतकेसाथ शिलाजीत चाटनी चाहिये इलायची हींग और घी मिलाकर दूध पीनेसे मूत्र और वीर्य्यका दोषनष्टहोताहै वृष्य (पुरुषार्थकरनेवाली) औषधियों के

सेवनसे धातुओंके बढ़नेपर उत्तमस्त्रियोंकेसाथ रमणकरनाचाहिये इति शुक्रविबन्धजमूत्रकृच्छ्र १३१॥

स्वेदचूर्णक्रियाभ्यंगवस्तयःस्युःपुरीषजे । क्वाथोगोक्षुरबीजस्ययवक्षारयुतःसदा ॥ मूत्रकृच्छ्रशकृज्जन्मपीतःशीघ्रंनियच्छति। शकृज्जन्मकृच्छ्रम्॥ १३२॥

पुरीषज मूत्रकृच्छ्र में स्वेद चूर्णक्रिया तैलादिमर्दन और वस्ति क्रिया करनी चाहिये गोखरूके काढ़े में जवाखार मिलाकर पीनेसे शीघ्रही पुरीषजमूत्रकृच्छ्रका नाशहोताहै इति पुरीषजमूत्रकृच्छ्र १३२॥

सप्तच्छदारग्वधकेवुकैलानिम्बःकरञ्जःकुटजोगुडूची। साध्याजलेतेनपचेद्यवागूंसिद्धं कषायंमधुसंयुतंवा॥ एर्वारुबीजकल्कश्चश्लक्ष्णपिष्टोऽक्षसंमितः। धान्याम्ललवणैःपेयोमूत्रकृच्छ्रविनाशनः॥ त्रिकण्टकारग्वधदर्भकाशदुरालभापर्वतभेदपथ्याः। निघ्नन्ति पीतामधुनाश्मरीन्तुसंप्राप्तमृत्योरपिमूत्रकृच्छ्रम्॥ निदग्धिकायाःस्वरसंकुडवंमधुसम्मितम्। मूत्रदोषहरंपीत्वानरःसम्पद्यतेसुखी॥ कषायोऽतिबलामूलसाधितोऽशेषकृच्छ्रजित्॥ पीतश्चत्रपुसीबीजंसतिलाज्यपयोन्वितम्। त्रिफलायाःसुपिष्टायाःकल्कंकोलसमन्वितम्॥वारिणालवणीकृत्यपिवेत्मूत्ररुजापहम्। यवोरुवूकतृणपञ्चमूलीपाषाणभेदैःसशतावरीभिः॥कृच्छ्रेषुगुग्गुल्वभयाविमिश्रैःकृतःकषायोगुड़संप्रयुक्तः। मूलानिकुशकाशेक्षुशराणाञ्चेक्षुबालिका॥ मूत्राघाताश्मरीकृच्छ्रेपञ्चमूलीतृणात्मिका। गुडमामलकंवृष्यंश्रमघ्नंतर्प्पणंप्रियम्॥ पित्तासृग्दाहशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रनिवारणम्। सितातुल्योयवक्षारःसर्वकृच्छ्रप्रसाधनः॥ द्राक्षासितोपलाकल्कंकृच्छ्रघ्नंमस्तुनायुतम्। विदारीसारिवाछागशृंगीवत्सादिनीनिशा॥ कृच्छ्रंपित्तानिलाद्धन्तिवल्लिजंपञ्चमूलकम्। एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनामेर्व्वारुबीजलवणोत्तमकुंकुमानाम्॥ चूर्णानितण्डुलजलेलुलितानिपीत्वा प्रत्यग्रमृत्युरपिजीवतिमूत्रकृच्छ्री॥ अयोरजःसूक्ष्मपिष्टंमधुनासहयोजितम्। मूत्रकृच्छ्रं निहन्त्याशुत्रिभिर्लेहैर्नसंशयः॥ १३३॥

छितवन अमलतास केतकी इलायची नींब करंज कुरैया तथा गिलोय इनसब औषधियों के काढ़े के द्वारा पाककीहुई यवागू अथवा इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे और ककड़ी के बीजों को महीन पीसकर कांजी तथा नोन के साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है गोखरू अमलतास कुश कांस जवासा पाषाणभेद तथा हड़ इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीने से असाध्य भी मूत्रकृच्छ्र और पथरी नष्टहोती है भटकटैया के १६ तोले रसमें सहत डालकर पीनेसे मूत्रके रोग नष्टहोतेहैं अतिबला की जड़का काढ़ा सबप्रकार के मूत्रकृच्छ्रोंको नाश करताहै तिल घी तथा दूधके साथ खीरे के बीजों को पीनेसे और महीन पिसेहुये त्रिफले के ३ मासे कल्क को कुछ नोन मिलाकर जलके साथ पीनेसे मूत्रके रोग नष्टहोतेहैं जौ अरंडकीजड़ तृणपंचमूल पाषाणभेद सतावर गूगल तथा हड़ इनके काढ़ेमें गुड़ मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र का नाशहोताहै कुश कांस सरकंडा रमसर तथा ईख इनपांचों की जड़के काढ़े को पीने से मूत्राघात पथरी तथा मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है गुड़ तथा आमले के चूर्णको खानेसे रक्तपित्त दाह शूल तथा मूत्रकृच्छ्र तथा श्रम का नाशहोताहै और तृप्ति तथा वीर्य्य की वृद्धि होती है जवाखार तथा शर्करा इनदोनोंको सम मिलाकर खानेसे मूत्रकृच्छ्र का

नाश होताहै दाख और मिश्रीको दही के तोड़ के साथ खाने से मूत्रकृच्छ्र नष्टहोता है बिलारीकन्द सारिवा मेढ़ासिंगी गिलोय तथा हल्दी इनके सेवन से वात पित्त जनित मूत्रकृच्छ्र का नाशहोताहै इलायची पाषाणभेद शिलाजीत पीपल ककड़ी के बीज सेंधानोन और केशर इनसबके चूर्णको चावलों के धोवन के साथ पीनेसे मरताहुआ भी मूत्रकृच्छ्र वाला अच्छा होताहै लोहेकी भस्मको सहत के साथ चाटनेसे तीनदिन में मूत्रकृच्छ्र का नाशहोताहै ॥ १३३ ॥

पुनर्नवामूलतुलांदशमूलंशतावरीम् । बलातुरङ्गगन्धाचतृणमूलंत्रिकण्टकम् ॥ विदारिकन्दनागाङ्कगुडूच्यतिबलास्तथा । पृथक्दशपलान्भागानपांद्रोणेविपाचयेत् ॥ तेनपादावशेषेणघृतस्यार्द्धाढ़कंपचेत् । मधुकंशृङ्गवेरञ्चद्राक्षांसैन्धवपिप्पलीम् ॥ द्विपलांशान्पृथग्दत्वायवान्याःकुड़वंतथा । त्रिंशद्गुड़पलान्यत्रतैलस्यैरण्डजस्यच ॥ एतदीश्वरपुत्राणांप्राग्भोजनमनिन्दितम् । राज्ञांराजसमानानांबहुस्त्रीपतयश्चये ॥ मूत्रकृच्छ्रेकटिस्त्रस्तेतथागाढ़पुरीषिणाम् । मेढ्रवंक्षणशूलेचयोनिशूलेचशस्यते ॥ यथोक्तानाञ्चगुल्मानांवातशोणितिनश्चयः । वल्यंरसायनंश्रीदंसुकुमारकुमारकम् ॥ पुनर्नवाशतेद्रोणेप्रदेयःसोऽपिचापरः । सुकुमारकपुनर्नवालेहः । (सामान्यविधिः) मूत्राघातादिविधानमप्यत्रकार्यम् ॥ इतिमूत्रकृच्छ्रनिदानचिकित्साधिकारः ॥ १३४ ॥

पुनर्नवा की जड़ ४०० तोले दशमूल सतावर बरियारा असगन्ध तृणपंचमूल गोखरू शालिपर्णी नागकेशर गिलोय तथा अतिबला यह सब चालीस २ तोले इन सबको १०२४ तोले जल में पाककरके चौथाई बाकी रहनेपर उस में १२८ तोले घी डालकर पाककरे फिर मुलहठी सोंठ दाख सेंधानोन तथा पीपल यह सब आठ २ तोले अजवाइन १६ तोले गुड़ ९० तोले और रेंड़ीका तेल ६० तोले इनसब औषधियों को मिलाकर पाककरे इस औषधको भोजन से पहले खाना चाहिये राजा तथा राजाकेही समान धनवाले और बहुत स्त्री वाले पुरुषोंको यह हितकारीहै मूत्रकृच्छ्र कमर का टलजाना मलकारुकना लिंग वंक्षण तथा योनिकीपीड़ा गुल्म तथा वातरक्त इनरोगोंका इस्सेनाश होताहै और यह बलकारी श्रीबर्द्धक तथा शरीरकी कोमल करनेवाली परम रसायनहै इति सुकुमार पुनर्नवावलेह॥मूत्रकृच्छ्रमें मूत्राघात की भी चिकित्सा करनी चाहिये इति मूत्रकृच्छ्र निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ १३४ ॥

मूत्रघाताद्यधिकारः ॥

जायन्तेकुपितैर्दोषैर्मूत्राघातास्त्रयोदश।प्रायोमूत्रविघाताद्यैर्वातकुण्डलिकादयः १३५ ॥

मूत्राघातका अधिकार ॥

मूत्र के रोकने आदि कारणों से प्रायः कुपित हुए दोषोंके द्वारा वात कुंडलिका आदि १३ मूत्राघात उत्पन्न होते हैं ॥ १३५ ॥

रौक्ष्याद्वेगविघाताद्वावायुर्वस्तौसवेदनः । मूत्रमाविश्यचरतिविगुणःकुण्डलीकृतः ॥ मूत्रमल्पाल्पमथवासरुजंसंप्रवर्त्तते ॥ वातकुण्डलिकांतीव्रांव्याधिंविद्यात्सुदारुणाम् ॥ रौक्ष्यात्कायस्यवेगविघातात्मूत्रादिवेगनिरोधात् आविश्यआवृत्यमूत्रमितिरौक्ष्यादिभिर्वेगविघातादिभिश्चाविगुणः दुष्टः कुण्डलीकृतःवातावर्त्तवस्ताविवभ्रमंतिष्ठति । कुण्डलीभूतोवायुःवस्तौमूत्राशयेचरतिप्रधावतिआनद्धत्वाद्भ्रमंस्तिष्ठति ॥ १३६ ॥

जिस रोग में शरीर की रुक्षता से अथवा मलमूत्रादि वेगोंके रोकने से वायु कुपित होकर मूत्र को ढककर पीड़ा सहित चक्र के समान मूत्राशय में घूमे और रोगी के पीड़ा सहित थोड़ा २ मूत्र उतरे इस कष्टकारी रोग को वातकुंडलिका कहते हैं॥ १३६॥

अष्ठीलामाह॥

आध्मापयन्वस्तिगुदंरुध्वावायुःश्चलोन्नताम्। कुर्यात्तीव्रार्तिमष्ठीलांमूत्रविण्मार्गरोधिनीम्॥ वातःवस्तिगुदंरुध्वाअर्थात्तदन्तर्गतंमूत्रंमलञ्चनिरुध्यवस्तिंगुदञ्चआध्मापयन्आध्मानंकुर्वन् अष्ठीलांअष्ठीलातुल्यां ग्रन्थिंकुर्य्यात् चलोन्नतांचलामुन्नताञ्च॥ १३७॥

अष्ठीला का लक्षण॥

जो वायु गुदा तथा मूत्राशयमें स्थित मलमूत्रको रोककर अफरे को उत्पन्न करे और मल तथा मूत्रकी रोकनेवाली चंचल ऊंची तथा तीक्ष्ण पीड़ा सहित अष्ठीला के समान गांठ उत्पन्न होय तो उसको अष्ठीला नाम मूत्राघात कहतेहैं॥ १३७॥

वातवस्तिमाह॥

वेगंविधारयेद्यस्तुमूत्रस्याकुशलोनरः॥ निरुणद्धिमुखंतस्य वस्तेर्वस्तिगतोऽनिलः। मूत्रसङ्गोभवेत्तेन। वस्तिकुक्षिनिपीड़ितः॥ वातवस्तिः सविज्ञेयोव्याधिःकृच्छ्रप्रसाधनः अकुशलो मूर्खः।तस्यपुरुषस्य वस्तेर्मुखंनिरुणद्धिवस्तिगतोवायुः तेनवायुनामूत्रासङ्गविघातोभवतिवस्तिकुक्षिनिपीड़ित इतिवस्तीकुक्षौनिपीड़ितःसंपीड़ितो वायुरितिसम्बन्धः मूत्रसङ्गःमूत्रावरोधः॥ १३८॥

वात वस्तिका लक्षण॥

जो मूर्ख मनुष्य मूत्रके वेगको रोकताहै उसके मूत्राशयमें स्थित वायु मूत्राशयके मुखको रोकदेती है इसलिये मूत्र रुकजाताहै और मूत्राशय तथा कोखमें पीड़ा होतीहै इसरोग को वात वस्ति मूत्राघात कहते हैं यह अत्यन्त कष्टसाध्य है॥ १३८॥

मूत्रातीतमाह॥

चिरंधारयतोमूत्रंत्वरयानप्रवर्त्तते। मेहमानस्यमन्दंवामूत्रातीतःसउच्यते॥ मेहमानस्यमूत्रमुत्सृजतः मन्दंवाअल्पंवा॥ १३९॥

मूत्रातीतका लक्षण॥

बहुत कालतक मूत्रके रोकने से मूत्रजल्दी नहीं निकलता और जोनिकलताहै तो थोड़ा२ निकलता है इसको मूत्रातीत कहते हैं॥ १३९॥

मूत्रजठरमाह॥

मूत्रस्यवेगेऽभिहते तदुदावर्तहेतुकः। अपानः कुपितोवायुरुदरंपूरयेद्भृशम्॥ नाभेरधस्तादाध्मानं जनयेत्तीव्रवेदनम्॥ तन्मूत्रजठरंविन्द्यादधोवस्तिनिरोधतदुदावर्त्तहेतुकइतिमूत्रवेगधारणगणितो दावर्त्तनिदानमाध्मानंकुर्य्यात्। अधोवस्तिनिरोधनम्। वस्तेरधोदेशे विबन्धकारकम्॥ १४०॥

मूत्रजठरका लक्षण ॥

मूत्रके वेगकेरोकनेसेहुए उदावर्त्तके कारण अपान वायु कुपितहोकर पेटकोअत्यन्तफुलाती है और नाभिके नीचे अत्यन्त पीड़ा सहित अफरा उत्पन्नकरतीहै और मूत्राशयके नीचे विबन्ध उत्पन्नहोता है इसरोगको मूत्रजठर कहतेहैं ॥ १४० ॥

मूत्रोत्सङ्गमाह ॥

वस्तौवाप्यथवामालेमणौवायस्यदेहिनः । मूत्रंप्रवृत्तंसज्येतसरक्तंवाप्रवाहतः ॥ श्रवेच्छनैरल्पमल्पंसरुजंवाप्यनीरुजम् । विगुणानिलजोव्याधिःसमूत्रोत्सङ्गसंज्ञितः ॥ नालेमेढ्रेमणौमेहनग्रन्थौसज्येतनिरुद्धंस्यात्सरक्तंप्रवाहतःकण्ठहृद्गलनसशब्दंमूत्रपुरीषवातानामधःप्रेरणम्प्रवाहणंतेनकुपितेनवायुनावस्त्यादिभेदात्सरक्तंमूत्रंस्रवेदित्यर्थः ॥१४१॥

मूत्रोत्संगका लक्षण ॥

जिसरोगमें कुपितवायुकेद्वारा मूत्राशय लिंग अथवा लिंगकीगांठमें मूत्ररुकजाय और वेगकरनेसेपीड़ा सहित अथवा पीड़ारहितबारम्बार थोड़ा २ रुधिरसहितमूत्रनिकले इसरोगकोमूत्रोत्संग कहतेहैं १४१॥

मूत्रक्षयमाह ॥

रूक्षस्यक्लान्तदेहस्यवस्तिस्थौपित्तमारुतौ । मूत्रक्षयंसरुग्दाहंजनयेत्तांतदाक्षयम् ॥ क्लान्तदेहस्यम्लानदेहस्यतदाक्षयंमूत्रक्षयसंज्ञम् ॥ १४२ ॥

मूत्रक्षयका लक्षण ॥

रूखे अथवा म्लान शरीरवाले मनुष्योंके बात और पित्त कुपित होकर मूत्राशयमें जाकरमूत्रक्षय दाह तथा पीड़ाको उत्पन्न करतेहैं इसरोगको मूत्रक्षय कहतेहैं ॥ १४२ ॥

मूत्रग्रन्थिमाह ॥

अन्तर्वस्तिसुखेवृत्तःस्थिरोऽल्पःसहसाभवेत् । अश्मरीतुल्यरुग्ग्रन्थिर्मूत्रग्रन्थिःस उच्यते ॥ अन्तर्वस्तिमुखेवस्त्याभ्यन्तरेअल्पःक्षुद्रामलकप्रमाणःनन्वस्याश्मर्यासहको भेदः । उच्यतेअश्मरीक्रमशःसञ्चयेत्तस्यादयन्तुसहसाभवेदितिभेदः ॥ अपरोभेदः अश्मर्य्यांपित्ताधिक्यंमन्यते अत्रतुरक्तमेव । यतउक्तंतन्त्रान्तरे । रक्तवातकफादुष्टंवस्तिद्वारेसुदारुणं ॥ ग्रन्थिंकुर्य्यात्सकृच्छ्रेणसृजेन्मूत्रंतदावृतम् ॥ १४३ ॥

मूत्रग्रंथिका लक्षण ॥

मूत्राशयके मुखके भीतर गोलस्थिर तथा छोटी पथरी के समान पीड़ाकारी जो गांठ एकाएकी उत्पन्न होती है उसको मूत्रग्रंथि कहतेहैं पथरी और मूत्रग्रंथि में भेद यहहै कि पथरी धीरे २ इकट्ठी होकर उत्पन्न होती है और मूत्रग्रंथि एकाएकी उत्पन्न होती है और दूसराभेद यह है कि पथरी में पित्तअधिक है और मूत्रग्रंथिमें रुधिर अधिक है तन्त्रान्तरमें कहा हुआ है कि वायु तथा कफके द्वारा दूषित रुधिर वस्तिके द्वारमें अत्यन्त भयंकर ग्रंथिको उत्पन्न करता है इसके द्वारा रुकाहुआ मूत्र बहुत कष्टसे निकलता है ॥१४३॥

मूत्रशुक्रमाह ॥

मूत्रितस्यस्त्रियंयातोवायुनाशुक्रमुद्धृतम् । स्थानाच्च्युतंमूत्रयतःप्राक्पश्चाद्वाप्रव

र्त्तते ॥ भस्मोदकप्रतीकाशंमूत्रशुक्रंतदुच्यते । मूत्रितस्यमूत्रवेगयुक्तस्यशुक्रं ॥ स्थानात् च्युतंपश्चाद्वायुनाउद्धतंऊर्ध्वंन्नीतंभस्मोदक प्रतीकाशंभस्मसहितजलसदृशंमूत्रशुक्रं तदुच्यते ॥ १४४ ॥

मूत्रशुक्र का लक्षण ॥

मूत्रका बेग होने पर स्त्री प्रसंग करनेवालेका बीर्य्य अपने स्थानसे गिरकर वायुके द्वारा ऊपरको चलाजाताहै फिर लघुशंका के पहले या पीछे भस्म से मिलेहुये जलके समान निकलताहै इसको मूत्रशुक्र कहते हैं ॥ १४४ ॥

उष्णवातमाह ॥

व्यायामाध्वातपैःपित्तंवस्तिंप्राप्यानिलावृतम् । वस्तिंमेढ्ंगुदञ्चैवप्रदहन्स्रावयेद् धः ॥ मूत्रंहारिद्रमथवासरक्तंरक्तमेववा । कृच्छ्रात्पुनःपुनर्ज्जन्तोउष्णवातंवदन्तितम् ॥ सरक्तंईषल्लोहितं ॥ १४५ ॥

उष्ण बातका लक्षण ॥

व्यायाम मार्ग तथा धूपके सेवनसे कुपित होने वाली बायुके द्वारा ढकाहुआ पित्त मूत्राशय में प्राप्तहोकर मूत्राशय लिंग तथा गुदामें दाहको उत्पन्न करताहै और वारम्वार कष्ट सहित कुछलाल हल्दी के समान वर्ण से युक्त अथवा रक्त वर्ण मूत्र निकलताहै इसको उष्ण बात कहते हैं ॥ १४५ ॥

मूत्रसादमाह ॥

पित्तंकफौद्वावपिवासंहन्येतेऽनिलेनचेत् । कृच्छ्रान्मूत्रंतथापीतंरक्तंश्वेतंघनंस्रवेत ॥ सदाहंरोचनाशंखचूर्णवर्णम्भवेच्चतत् । शुष्कंसमस्तवर्णंवामूत्रसादंवदन्तितम् ॥ संहन्येतेघनीक्रियतेशुष्कंअल्पसमस्तवर्णंउक्तसकलवर्णयुक्तं ॥ १४६ ॥

मूत्रसाद का लक्षण ॥

जो बायुके द्वारा पित्त वा कफ अथवा दोनों गाढ़े होजायँ और कठिनतासे पीतरक्त श्वेत तथा गाढ़ा मूत्र निकले दाहयुक्त गोरोचनके समान बर्णयुक्त शंखके चूरेकी समान सफेद अथवा थोरा और ऊपर कहेहुये संपूर्ण बर्णोंसे संयुक्त मूत्र निकले इसको मूत्रसाद कहते हैं॥ १४६॥

विड्विघातमाह ॥

रूक्षदुर्बलयोर्वातेनोदावर्त्तशकृद्यदा । मूत्रस्रोतोऽनुपद्येतविट्संसृष्टंतदानरः ॥ विड्गन्धंमूत्रयेत्कृच्छ्राद्विड्विघातंविनिर्दिशेत् । उदावर्त्तंऊर्ध्वंन्नीतंविड्गन्धंवावाशब्दोऽत्र योजनीयः ॥ १४७ ॥

विड्विघातका लक्षण ॥

जो रूखे तथा दुर्बल मनुष्योंका मलबायुके द्वारा ऊपरको जाकर मूत्रके मार्गमें प्राप्तहोय औरमल सहित अथवा मलकी दुर्गन्धि से युक्त मूत्रबहुत कष्टके साथ निकले तो उसको बिड्विघात रोग कहते हैं ॥ १४७ ॥

वस्तीकुण्डलीमाह ॥

द्रुताध्वलङ्घनायासैरभिघातात्प्रपीडनात् । स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तःस्थूलस्तिष्ठति गर्भवत् ॥ शूलस्पन्दनदाहार्तोबिन्दुबिन्दुस्रवत्यपि । पीडितस्तुसृजेद्धारांसंस्तम्भोद्वे ष्टनार्तिमान् ॥ वस्तिकुण्डलमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् । पवनप्रबलंप्रायोदुर्न्निवारम बुद्धिभिः ॥ तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलंमूत्रविवर्णता । श्लेष्मणागौरवंशोथःस्निग्धंमूत्रं घनंसितम् ॥ द्रुताध्वलङ्घनंशीघ्रंमार्गचलनंउद्वृत्तः । उत्थितःस्पन्दनंकिञ्चिच्चलनंघोरंमा

रकंशस्त्रंविषोपमंशस्त्रंषड्गादितद्वच्छीघ्रंमारकंविषमंत्रगरलस्तद्वद्विलम्व्यमारकंएतावता मारकमवश्यंशीघ्रंविलम्बेनवा ॥ १४८ ॥

बस्ति कुंडली का लक्षण ॥

बहुत जल्द २ मार्ग चलना परिश्रम चोट तथा पीड़ाके द्वारा मूत्राशय अपने स्थानसे ऊपर जाकर गर्भके समान स्थूल होकर स्थित होताहै और शूल फड़कना तथा दाह सहित बूंद २ करके मूत्र निकलता है और दबाने से मूत्रकी धार निकलतीहै और रोगी अंगड़ाई तथा स्तंभ रूपहोने से पीड़ित होताहै इसरोग को वस्ति कुंडली कहतेहैं यह शस्त्र और बिषके समान अत्यन्त भयंकर है इसरोग में प्रायः बायु प्रबल होतीहै इसकी चिकित्सा अल्प बुद्धिवाले नहीं करसके पित्तयुक्त वस्ति कुंडलरोग में दाह शूल तथा मूत्रका बदला हुआ रंग होताहै और कफ युक्त वस्ति कुंडल रोगमें शरीर भारी तथा सूजन युक्त होताहै और स्निग्ध श्वेत तथा गाढ़ा मूत्र निकलताहै ॥ १४८ ॥

तस्यैवासाध्यस्य लक्षणमाह ॥

श्लेष्मरुद्धविलोवस्तिःपित्तोदीर्णोनसिद्ध्यति । अविभ्रान्तविलःसाध्यानचयःकुण्डलीकृतः ॥ स्याद्वस्तौकुण्डलीभूतेतृणमोहःश्वासएवच । विलवस्तिमुखरन्ध्रंपित्तोदीर्णः पित्तेनोद्धृतःअविभ्रान्तविलःकफेनानावृतविलःपश्चात्कुण्डलीकृतःससाध्यः ॥ एतेनकुण्डलीभूतोऽसाध्यः (कुण्डलीभूतस्यलक्षणमाह) तृडित्यादि ॥ कुण्डलीभूतस्यायमर्थःकफेनविनावरोधात् । तत्रवातःकुण्डलाकारेणातिष्ठतीत्यर्थः ॥ १४६ ॥

वस्तिकुण्डली के असाध्य लक्षण ॥

वास्ति कुण्डली रोगमें जो वस्तिका मुख कफसे रुकजाय अथवा वास्ति में पित्त इकट्ठा होजाय तो उसको असाध्य जानना चाहिये और जो वस्तिका मुख कफ से रुकजाय और वस्तिमें बायु चक्र के समान स्थित नहोय तो साध्यहै जबवस्ति में बायु चक्रके समान स्थित होतीहै तब तृषा मोह और श्वास उत्पन्न होतेहैं ॥ १४६ ॥ अथ मूत्राघातस्य चिकित्सा ॥

स्नेहस्वेदोपपन्नस्यहितंस्नेहविरेचनम् । दद्यादुत्तरवस्तीश्चमूत्राघातेसवेदने ॥ नलकुशकाशेक्षुबलाक्काथःप्रातःसुशीतलंससितम् । पिबतोनश्यतिनियतंमूत्रग्रहइत्युवाचकविः ॥ गोजानाम्नोमूलंपलमेकंक्कथितशोषितंपीतम् । क्षिप्त्वामधुचसिताञ्चप्रणुदतिमूत्रस्यसंरोधम् ॥ गोधापद्यामूलंक्काथितंघृततैलगोरसोन्मिश्रम् । पीतंनिरुद्धमचिरात्भिनत्तिमूत्रस्यसङ्घातम् ॥ पिबेच्छिलाजतुक्काथेयुक्तंवीरतरादिजे । क्काथंसपत्रमूलस्य गोक्षुरस्यफलस्यच ॥ पिबेन्मधुसितायुक्तंमूत्रकृच्छ्ररुजापहम् । घनसारस्यचूर्णेनवस्त्रंस्याद्वाविकाम्बुना ॥ गुण्डयित्वाध्वजेक्षिप्त्वामूत्ररोधंजहातितम् ॥ १५० ॥

मूत्राघात की चिकित्सा ॥

पीड़ा सहित मूत्राघात में स्नेह और स्वेद देकर स्निग्ध विरेचन और उत्तर वस्ति देनी चाहिये नरकुल कुश कास ईख तथा बरियाराके काढ़े को शीतल करके शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे ४तोले श्वेत दूबकी जड़के काढ़ेमें सहत तथा शक्कर डालकर पीनेसे लजालूकी जड़के काढ़ेमें घी

तेल तथा मट्ठा डालकर पीने से वीरतरादि गण के काढ़ेमें शिलाजीत डालकर पीने से पत्रमूल तथा फल सहित गोखुरू के काढ़ेमें सहत तथा शक्कर डालकर पीनेसे और कपूरके चूर्णको भेड़ीके मूत्रमें घोलके वस्त्र में लपेट उसकी बत्ती बनावे उस बत्तीको लिंगमें रखने से मूत्राघातका नाश होताहै१५०॥

सदाभद्राश्मभिन्मूलंशतावर्य्याःसचित्रकम्। रोहिणीकोकिलाक्षौचवचाशैलत्रिकण्टकम् ॥ श्लक्ष्णपिष्टःसुरापीतोमूत्राघातप्रबाधनः ।पिवेद्वार्हिशिखामूलंतुण्डुलाम्भसा॥वस्तिमुत्तरवीजंवासर्वेषामेवदापयेत्। निदिग्धिकायाःस्वरसंपिवेद्वातात्परिश्रुतम् ॥ जलेकुङ्कुमकल्कंवासक्षौद्रमथितंनिशि। सतैलंपाटलाभस्मक्षारंबध्वापरिश्रुतम् ॥ त्रिकण्टकैरण्डशतावरीभिःसिद्धंपयोवातृणपञ्चमूले । गुड़प्रगाढ़ंसघृतंपयोवारोगेषुकृच्छ्रादिषुशस्तमेतत् ॥ १५१ ॥

गंभारी पाषाणभेद सतावर चीता कुटकी तालमखाना बच शिलाजीत तथा गोखुरू इनसबको महीन पीसकर सुराके साथ पीनेसे और मोरशिखाकी जड़ चावल के धोवनके साथ पीकर दूधका पथ्य करने से मूत्राघात नष्ट होताहै सब प्रकार के मूत्राघात में वस्ति और उत्तर वस्तिदेनी चाहिये भटकटैया के रसको वस्त्र में छानकर पीने से केशर को जल में भिगोकर सहत मिलायके एक रात्रि भर रक्खे उसको प्रातः काल पीनेसे और पाटलाकी भस्मके खारके जलमें तिलोंका तेल मिलाकर पीनेसे मूत्राघात नष्ट होताहै गोखुरू अरंडकी जड़ तथा सतावर इनसबके द्वारा अथवा तृण पंचमूलके द्वारा पाककिये हुए दूधके पीनेसे अथवा घृत युक्त दूधमें अधिक गुड़ डालकर पीनेसे मूत्र कृच्छ्रादिक रोग शान्त होतेहैं ॥ १५१ ॥

शितक्षारान्वितंमूलंवायसीतैलकूर्चयोः । कोषकाररसैःपीतंवस्तिकुण्डलजिद्भवेत् ॥ श्रृतशीतपयोऽन्नाशीचन्दनंतण्डुलाम्बुना । पीवेत्सशर्करंश्रेष्ठमुष्णावातेसशोणिते ॥ शिलोद्भिदैरण्डसमस्थिरादिपुनर्नवाभीरुरसेषुसिद्धम् । तैलंश्रृतंक्षीरमथानुपानंकालेषु कृच्छ्रादिषुसंप्रयोज्यम् ॥ इतिशिलोद्भिदादितैलम् ॥ १५२ ॥

जवाखार सहित किवांच तथा तैल कन्दकी जड़ कोशकार नाम ईखके रसके साथ पीनेसे वस्ति कुण्डल रोगका नाश होताहै चन्दनको चावलों के धोवनके साथ शक्कर डालकर पीके पके हुए ठंढे दूधके साथ अन्न खानेसे रुधिर सहित उष्ण बातरोगका नाश होताहै पाषाणभेद अरंडकी जड़ और शालिपर्णी इनके द्वारा पुनर्नवा और सतावरके रसके साथ पाक किये हुए तेलको दूधके साथ पीने से मूत्रकृच्छ्रादि रोग नष्ट होते हैं इतिशिलोद्भिदादि तैल ॥ १५२ ॥

धान्यागोक्षुरकंक्वाथंकल्कयुक्तंघृतंहितम् । मूत्राघातेमूत्रदोषे शुक्रदोषेचदारुणे ॥ इतिधान्यगोक्षुरकंघृतम् ॥ १५३ ॥

धनियां तथा गोखुरू इनके काढ़े और कल्क के द्वारा पाक किये हुए घीके पीने से मूत्राघात मूत्र दोष और वीर्य दोष इन सबका नाश होता है ॥ इतिधान्यगोक्षुरक घृत ॥ १५३ ॥

अम्बष्ठापाटलाचैव वर्षाभूद्वयमेवच । विदारीकन्दकाशश्च कुशमोरठगोक्षुराः ॥ पाषाणभेदोवाराही शालिमूलंशरस्तथा । भल्लातकंशिरीषस्य मूलमेषामथाहरेत् ॥ समभाग ।निसञ्त्रीणि क्वाथयित्वाविचक्षणः । पादशेषकषायेण घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ कल्कं

दत्वाथमातिमान् गिरिजंमधुकंतथा । नीलोत्पलञ्चकाकोलीं वीजंत्रपुसमेवच ॥ कूष्माण्डञ्चतथैर्वारु सम्भवञ्चसमंभवेत् । उष्णवातंनिहन्त्येतद् घृतंभद्रावहंस्मृतम् ॥ इति भद्रावहंघृतम् ॥ १५४ ॥

पाठा पाटला दोनों पुनर्नवा बिलारीकन्द कास कुश ईख की जड़ गोखुरू पाषाणभेद बाराही कन्द शालिधान्य की जड़ सरकंडा भिलावा तथा सिरस की जड़ इन सबके चतुर्थांश काढ़े के साथ ६४तोले घीको शिलाजीत मुलहठी नीलकमल काकोली और खीरा पेठा तथा ककड़ी के वीज इन सबका कल्क मिलाकर विधिपूर्व्वक पाककरे इसघी के सेवन से उष्णवातनाम मूत्राघात का नाश होताहै ॥ इतिभद्रावहघृत ॥ १५४ ॥

विदारीवृषकोयूथी मातुलुङ्गीचभूस्तृणम् । पाषाणभेदःकस्तूरी वसुकोवसिरोऽनलः ॥ पुनर्नवावचारास्ना बलाचातिवलातथा । कशेरुविशशृंगाटतामलक्यःस्थिरादयः ॥ शरेक्षुदर्भमूलञ्च कुशःकाशस्तथैवच । पलद्वयन्तुसंहृत्य जलद्रोणेविपाचयेत् ॥ पादशेषे रसेतस्मिन् घृतप्रस्थंविपाचयेत् । शतावर्य्यास्तथाधात्र्याः स्वरसोघृतसम्मितः ॥ षट्पलंशर्क्करायाश्च कार्षिकानपराणिच । यष्ट्याङ्कंपिप्पलीद्राक्षा काश्मर्य्यंसपरूषकम् ॥ एला दुरालभाकौन्ती कुंकुमंनागकेशरम् । जीवनीयानिचाष्टौच दत्वाचद्विगुणंपयः ॥ एततूसर्पिर्विपक्तव्यं शनैर्मृद्वग्निनाबुधैः । मूत्राघातेषुसर्व्वेषु विशेषात्पित्तजेषुच ॥ शर्क्कराश्मरिशूलेषु शोणितप्रभवेषुच । हृद्रोगेपित्तगुल्मेच वातासृक्पित्तजेषुच ॥ कासश्वासक्षतोरस्कं धनुःस्त्रीभारकर्षिते । तृष्णाछर्द्दिमनःकम्प शोणितच्छर्द्दनेतथा ॥रक्तयक्ष्मण्यपस्मारे तथोन्मादेशिरोग्रहे । योनिदोषेरजोदोषे शुक्रदोषेस्वरामये ॥ एततूस्मृतिकरंवृष्यं वाजीकरणमुत्तमम् । पुत्रदंबलवर्णाढ्यं विशेषाद्वातनाशनम् ॥ पानभोजननस्येषु नक्कचित्प्रतिहन्यते । विदारीघृतमित्युक्तं रसायनमनुत्तमम् । इति विदारीघृतम् ॥ १५५ ॥

बिलारीकन्द बांसा जूही नींबू भूतृण पाषाणभेद कस्तूरी आक गजपीपल चीता पुनर्नवा बचरासना बरियारा सहदेई कसेरू कमल की डंडी सिंघाड़ा भुइं आमला शालिपर्णी सर्कंडा ईख डाभ की जड़ कुश तथा कास इन सबको आठ २ तोले लेकर १०२४ तोले जल में पाक करके चौथाई बाकी रहने पर लेले फिर यह काढ़ा और घी सतावरका रस तथा आमले का रस चौंसठ २ तोले इन सबमें शक्कर २४ तोले मुलहठी पीपल दाख गंभारी फालसा इलायची जवासा रेणुका केशर नागकेशर ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली जीरा तथा ऋषभकतोले२ भर इनसब के कल्कको डालकर १२८ तोले दूध के साथ मन्दाग्नि में धीरे २ पाककरे इसघीके सेवनसे सब प्रकार के मूत्राघात विशेष करके पित्तज मूत्राघात शर्क्करा पथरी रक्तजरोग हृद्रोग पित्तगुल्म बातरक्त पित्तरोग खांसी श्वास उरःक्षत धनुषके खैंचनेसे भारउठाने से अथवा स्त्री प्रसंगसे हुई क्षीणतातृषा छर्दि हृदय का कंपना रुधिर की वमन रक्त पित्त यक्ष्मा मिर्गी उन्माद शिर के रोग योनि दोष रजदोष वीर्य्यदोष स्वर भंग वर्णका तथा वायुका नाश होता है और यह स्मृतिकारी वीर्य्यवर्द्धक वाजीकरण पुत्रदाता बलकारी तथा वर्णका उत्तम करने वाला है पान भोजन तथा नास लेनेमें इस घृतके सेवन से ऊपर कहे हुए गुण होते हैं और यह परम श्रेष्ठ रसायन है ॥ इति विदारीघृत ॥ १५५ ॥

पिष्ट्वाखुमलमुष्णेन चारनालेनपेष्यते। बद्धमूत्रंनिहन्त्याशु तथैवकरभीभवम् १५६॥

मूसे की मेंगिनी अथवा हथिनी के गोबर को कांजी में पीसकर सेवन करने से बद्ध मूत्रका नाशहोता है ॥ १५६ ॥

स्त्रीणामतिप्रसंगेन शोणितंयस्यरिच्यते। मैथुनोपरमश्चास्य बृंहणीयोविधिर्हितः १५७॥

बहुत मैथुन करनेसे जिसके रुधिर निकलनेलगा होय उसे मैथुनकात्याग वीर्य्यवर्द्धक वस्तुओं का सेवन और मुर्गेकीचर्बी तथा तेलकेद्वारा उत्तरवस्ति लेना हितहै ॥ १५७ ॥

ताम्रचूड़वसातैलं हितञ्चोत्तरवस्तिषु। स्वगुप्ताफलमृद्वीका कृष्णेक्षुरसितारजः॥ समांशमर्द्धभागानि क्षीरक्षौद्रघृतानिच। सर्व्वंसम्यग्विमथ्याक्ष मात्रंलीढ्वापयःपिबेत्॥ हन्तिशुक्रक्षयोत्थांश्च दोषान्बन्ध्यासुतप्रदम्। क्षौद्रार्द्धभागःकर्त्तव्यो भागःस्यात्क्षीर सर्पिषोः॥ शर्करायाश्चचूर्णञ्च द्राक्षाचूर्णंचतत्समम्। स्वयगुप्ताफलञ्चैव तथैवेक्षुरक स्यच॥ पिप्पलीनांतथाचूर्णंसमभागंप्रदापयेत्। तदैकध्यंसमानीयखजेनातिविमध्यच॥ तस्यपाणितलंचूर्णंलिहेत्क्षीरंततःपिबेत्। एतत्सर्पिःप्रयुञ्जानोयोनिदोषात्प्रमुच्यते॥ इतिक्षौद्रार्द्धभागंघृतम्॥ १५८॥

किवांच दाख पीपल ईखकी जड़ तथा शक्कर यहसब एक २ भाग और दूध सहत तथा घी आधे २ भाग इनसबको एकमें मिलाकर इसमेंसे १ तोलेभर औषध खाकर दूधपिये इससे वीर्य्यक्षयके दोष और बन्ध्यापनेका नाश होताहै सहत आधेभाग और दूध घी शक्कर दाख किवांचके बीज तालमखाना तथा पीपल एक एक भाग इनसबको एक साथ खूब मिलावे इस औषधको एक तोलखाके दूध पीने से अथवा इन औषधियों के द्वारा पाक कियेहुये घीके सेवनसे योनिके दोष नष्ट होते हैं इति क्षौद्रार्द्ध भागघृत ॥ १५८ ॥

कर्पूररजसायुक्तावस्त्रवर्तिःशनैःशनैः। मेढ्रमार्गान्तरेन्यस्तामूत्राघातंव्यपोहति॥ धान्यगोक्षुरकःक्काथःकल्कसिद्धंघृतंहितम्। मूत्राघातेमूत्रकृच्छ्रेशुक्रदोषेचदारुणे॥धान्यगोक्षुरकंघृतम्॥ १५९॥

कपूरके चूर्णको वस्त्रमें लगावे फिर उस बस्त्रकी बत्तीबनाकर धीरे२ लिंगमें प्रवेश करनेसे मूत्राघातका नाश होताहै धनियां तथा गोखुरू इनके काढ़े और कल्कके द्वारा पाक कियेहुये घीके सेवन से मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र और भयंकर वीर्य्य दोष नष्ट होतेहैं॥ इति धान्यगोक्षुरक घृत ॥ १५९॥

मूत्रकृच्छ्रेश्मरीरोगेभेषजंयत्प्रकीर्तितम्। मूत्राघातेषुकृच्छ्रेषुतत्कुर्याद्देशकालवित्॥ इतिमूत्राघाताधिकारः॥ १६०॥

मूत्रकृच्छ्र और पथरीमें जो औषध कहीगई हैं वह औषध देशकालका जाननेवाला बैद्य मूत्राघातोंमें भीदेवे ॥ इति मूत्राघाताधिकार ॥ १६० ॥

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजामता। प्रायःश्लेष्माश्रयाःसर्व्वाअश्मर्य्यःस्युर्यमोपमाः॥ श्लेष्माश्रयाःश्लेष्मसमवायिकारणाःशुक्रजाविनाशुक्रजायास्तुशुक्रस्यैव

समवायिकारणत्वात्अन्येतुशुक्राश्मर्य्यामपिकफकारणत्वमिच्छन्ति । प्रायःशब्दश्चात्र विशेषार्थःयमोपमाचिकित्सांविना ॥ १६१ ॥

पथरीका अधिकार ॥

बातज पित्तज कफज और शुक्रज इनचार प्रकारोंकी पथरियों में से पहली तीन पथरी कफके समवायि कारणसे और शुक्रज वीर्य्यके समवायि कारण से उत्पन्न होतीहै चिकित्साके बिना यह यमराजके समान प्राणनाशकहैं कोई कोई वीर्य्यकी पथरीमें भी कफकोही कारण बतातेहैं ॥१६१॥

संप्राप्तिमाह ॥

विशोषयेद्वस्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा । यदातदाश्मर्य्युपजायतेतुक्रमेण पित्तेष्विवरोचनागोः॥पवनोवास्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंकफंवाशोषमुपनयेत् ॥ यदातदा ऽश्मरीभवतिक्रमेणक्रमशोवर्द्धमाना । यथागोपित्तेषुरोचनेवेत्यन्वयःतस्याऽनेकदोषाश्र यत्वमाह । अनेकदोषाश्रयाःसर्व्वाः ॥ १६२ ॥

पथरीकी संप्राप्ति ॥

जबबायुवस्तिमें स्थित वीर्य्य सहित मूत्रको अथवा पित्तसहित कफको सुखातीहै तबगौके पित्तमें जैसे गोरोचन उत्पन्न होताहै उसीप्रकार पथरी उत्पन्न होतीहै सबप्रकारकी पथरी त्रिदोषज होती हैं१६२॥

अथासां पूर्व्वलक्षणमाह ॥

वस्त्याध्मानंतदासन्न देशेषुपरितोऽतिरुक् । मूत्रेवस्तसगन्धत्व मूत्रकृच्छ्रज्वराऽरुचिः ॥ वस्तःछगलकः ॥ १६३ ॥

पथरीका पूर्व्व रूप ॥

पथरी होनेसे पहले मूत्राशयमें अफरा मूत्राशयके सबओर अत्यन्त पीड़ा मूत्रमें बकरेके मूत्रकीसी दुर्गन्धि मूत्रकृच्छ्र ज्वर और अरुचि यहसब लक्षण होतेहैं ॥ १६३ ॥

सामान्यलक्षणमाह ॥

सामान्यलिंगरुग्नाभि सेवनीवस्तिमूर्द्धसु । विशीर्णधारंमूत्रस्यात्तयामार्गनिरोधनम् ॥ तद्व्यपायात्सुखंमेहे दच्छंगोमेदकोपमम् । तत्संक्षोभात्क्षतेसास्रं मायासाच्चातिरुग्भवेत् ॥ वास्तिमूर्द्धानाभेरधोदेशः विशीर्णधारंसविच्छेदधारं तयाश्मर्यामार्गः मूत्रवाहिस्रोतः तद्व्यपायात् कदाचित् वायुनाश्मर्यामूत्रमार्गा दन्यत्रगमनात् सुखं मेहेत्मूत्रयेत् गोमेदकोपमं गोमेदकोमणिः किञ्चिल्लोहितस्त द्वर्णंतत्संक्षोभात् तस्याश्मर्य्याः सञ्चारात् घर्षणेनमूत्रवहे स्रोतसि क्षते जाते सास्रं सरक्तंमेहेत् आयासात् प्रवाहनादिजनितात् ॥ १६४ ॥

पथरीका सामान्य लक्षण ॥

पथरीरोग में नाभि सींवन तथा नाभिके नीचे पीड़ा होती है पथरीके द्वारा मूत्रद्वार के रुकजाने पर धार टूट २ कर मूत्र निकलताहै बायुके द्वारा मूत्रद्वारसे पथरीके हटजानेपर बिना क्लेश निर्मल तथा कुछरक्त बर्ण मूत्र निकलताहै पथरीके रगड़नेसे मूत्रके लेचलनेवाले स्रोतोंके घायलहोजानेपर रुधिरसहित मूत्र निकलताहै और जोरकरनेसे बहुतपीड़ा होती है ॥ १६४ ॥

वातोल्वण माह ॥

तत्रवातात्भृशञ्चार्त्तो दन्तान्खादतिवेपते । मृद्नातिमेहनंनाभिं पीडयत्यनिशंक्णन् ॥ सानिलंमुञ्चतिशकृन्मुहुर्मेहतिविन्दुशः । श्यावारूक्षाश्मरीसास्यात् सञ्चिताकण्टकैरिव ॥ तस्याःपूर्व्वेषुरूपेषु स्नेहादिक्रमइष्यते । शुण्ठ्यग्निमन्थपाषाण शिग्रुवरुणगोक्षुरैः ॥ अश्मर्य्यारग्वधफलैः क्वाथंकृत्वाविचक्षणः । रामठक्षारलवण चूर्णंदत्त्वापिवेन्नरः ॥ अश्मरीमूत्रकृच्छ्रघ्नं दीपनंपाचनंपरम् । हन्यात्कोष्ठाश्रितंवातं कट्यूरुगुदमेढ्रजम् ॥ इति शुण्ठ्यादिवरुणादि कषायः ॥ १६५ ॥

अधिक बातवाली पथरीके लक्षण ॥

बातज पथरी में मनुष्य पीडित होकर दांतोंको रगड़ताहै कांपता है लिंग तथा नाभिको बहुत दबाताहै और मूतने के समय शक्ति सहित मल त्याग करता है और बारम्बार बूंद २ पेशाब करताहै यह पथरी धुमैले वर्णवाली रूखी और कांटोंसेयुक्त सी होती है बातज पथरी के पूर्व्व रूपमें स्नेह आदिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये सोंठ अरणी पाषाणभेद सहजन बरुणा गोखुरू गम्भारी तथा अमलतास इनके काढ़ेमें हींग जवाखार तथा सेंधानोन डालकर पीने से पथरी मूत्रकृच्छ्र और कोष्ठ कमर जंघा गुदा तथा लिंगमें स्थित बायु इनसब का नाशहोताहै यह दीपन और पाचनहै॥ इति शुंठयादि बरुणादि कषाय ॥ १६५ ॥

एलोपकुल्यामधुकाश्मभेदकौन्तीश्वदंष्ट्रावृषकोरुबूकैः। शृतंपिवेदश्मजतुप्रगाढ़मशर्करश्चाश्मरिमूत्रकृच्छ्रे ॥ इतिएलादिक्वाथः ॥ १६६ ॥

इलायची पीपल मुलहठी पाषाणभेद गगनधूल गोखुरू बांसा और रेंड़ी की जड़ इनके काढ़ेमें शिलाजीत डालकर पीनेसे शर्करा और पथरी सहित मूत्रकृच्छ्रका नाशहोताहै॥ इतिएलादि क्वाथ१६६॥

वरुणस्यत्वचंश्रेष्ठांशुण्ठीगोक्षुरसंयुताम् । यवक्षारंगुडंदत्त्वाक्वाथयित्वापिवेद्धितम् ॥ अश्मरीवातजांहन्तिचिरकालानुबन्धिनीम् । इतिबरुणादिकषायः ॥ १६७ ॥

बरुणा की छाल के काढ़ेमें सोंठ गोखुरू जवाखार और गुड़ डालकर पीनेसे बहुत पुरानी बातज पथरी का नाशहोताहै ॥ इति बरुणादि कषाय ॥ १६७ ॥

पाषाणभेदोवसुकोवशीरोश्मन्तकस्तथा । शतावरीश्चदंष्ट्राचबृहतीकण्टकारिका ॥ कपोतवर्णातगलकाञ्चनोशीरगुंद्रकाः । वृक्षादनीभल्लुकश्चवरुणंःशाकजंफलम् ॥ यवाःकुलत्थाःकोलानिकतकस्यफलानिच । ऊषकादिप्रतीवापमेषांक्वाथशृतंघृतम् ॥ भिनत्तिवातसम्भूताश्मरीक्षिप्रमेवतु । इतिपाषाणभेदाद्यंघृतम् ॥ १६८ ॥

पाषाणभेद आक गजपीपल अशमन्तक सतावारि गोखुरू दोनों भटकटैया कपोतवक्का काले फूल का पियावांसा कांचनवृक्ष खस कंकुनी गिलोय भल्लूक वृक्ष वरुणा शाकजफल जौ कुलथी बेर निर्मली और ऊषकादि गणका कल्क इनसबके काढ़े के द्वारा पाक कियाहुआ घी शीघ्रही बातज पथरी को नाश करताहै ॥ इति पाषाणभेदादि घृत ॥ १६८ ॥

क्षारान्यवागुःपेयांस्तुकषायांश्चपयांसिच।भोजनानिप्रकुर्वीतवर्गेऽस्मिन्वातनाशने१६९

क्षार यवागू पेया क्काथ दूध और भोजन के पदार्थ ऊपर कहीहुई औषधियोंके द्वारा सिद्धकरके बातज पथरी में देने चाहियें ॥ १६९ ॥

वीरवृक्षाऽग्निमन्थश्चकाशवृक्षादनीकुशाः । मोरटेन्दीवरीसूर्य्यभक्तागोक्षुरुटुण्टुकाः ॥ वसुकोवशिरोदर्भशैरेयावश्मभेदकः । गुन्द्रोनलःकुरुण्टश्चगणोवीरतरादिकः ॥ अश्मरीशर्कराकृच्छ्रमारुतार्तिहरोमतः । वृहद्वातेवीरतरस्तदभावेमतःशरः । इतिवाताश्मरी ॥ १७० ॥

गांडर अरणी कास बांदा कुश ईखकीजड शतावरि सूर्य्यभक्ता गोखुरू सोनापाठा आक गजपीपल दर्भ झिंटी पाषाणभेद ककुनी नरकुल और सुनहरी इनसब औषधियों को वीरतरादि गण कहते हैं इन० द्वारा वातज पथरी शर्करा और मूत्रकृच्छ्र का नाशहोताहै इति वाताश्मरी ॥ १७० ॥

पित्तेनदह्यतेवस्तिःपच्यमानइवोष्मणा।भल्लातकास्थिसंस्थानारक्तापीतासिताश्मरी १७१

पित्तज पथरी भिलावें के बीजके समान आकृतिवाली लाल पीली अथवा कालीहोती है और इसमें मूत्राशय में दाह तथा ऊष्मा के द्वारा जलनसी मालूम होतीहै ॥ १७१ ॥

कुशःकाशःशरोगुन्द्रउत्कटोमोरटाश्मभित् । दर्भोविदारीवाराहिशालिमूलंत्रिकण्टकः॥ भल्लूकःपाटलापाठापत्तूरोऽथकुरुण्टिकाः । पुनर्नवाशिरीषश्चक्काथतास्तेषुसाधितम्॥ घृतंशिलाह्वमधुकैर्वीजैरिन्द्रीवरस्यच । त्रपुसैर्वारुकादीनांवीजैश्चावापितशुभम् ॥ भिनत्तिपित्तसम्भूतामश्मरींक्षिप्रमेवच । वीजंवीजसारःसरोजवीजंवाइतिकुशाद्यंघृतं ॥ १७२ ॥

कुश कास सर्कंडा ककुनी तज ईखकीजड़ पाषाणभेद दर्भ बिलारीकन्द बाराहीकन्द शालिधान्यकीजड़ गोखुरू अरलू पाटला पाठा पत्तूर झिंटी पुनर्नवा तथासिरस इनके क्काथके साथ घी को शिलाजीत मुलहठी कमलगट्टे और ककड़ी तथा खीरेके बीज इनका कल्क डालकर बिधिपूर्व्वक पाक करै इसके सेवनसे पित्तज पथरी का शीघ्रही नाशहोताहै इति कुशादि घृत ॥ १७२ ॥

क्षारान्यवागूंपेयाश्चकषायाश्चपयांसिच।भोजनानिचकुर्व्वीतवर्गेऽस्मिन्पित्तनाशने १७३

ऊपर कही हुई औषधियों के द्वारा क्षार यवागू पेया क्काथ दूध और भोजन के पदार्थ बनाकर सेवन करने से पित्तज पथरी का नाश होताहै ॥ १७३ ॥

शिलाजतुशिलाह्वस्यात्पटेरोगुत्थगुन्द्रकौ । मधुकःकृतह्रस्वत्वाद्वीजैर्वीजकमुच्यते । कुर्य्यात्क्षीरादिकंक्काथतस्मिन्क्षेपमवापकैः ॥ वर्गत्वेनयथालाभंपरिभाषाप्रवर्त्तते । इतिपित्ताश्मरी ॥ १७४ ॥

क्काथ तथा दूध आदिके बनाने में शिलाह्व शब्द से शिलाजीत बटेर शब्दसे गुत्थ तथा सर्पत मधुक कहने से मुलहठी और वीज कहनेसे पीले शाल वृक्षका ग्रहण होताहै इस सामान्य परिभाषा के अनुसार कार्य्य करना चाहिये इति पित्ताश्मरी ॥ १७४ ॥

वस्तिर्निस्तुद्यतइवश्लेष्मणाशीतलोगुरुः । अश्मरीमहतीश्लक्ष्णामधुवर्णाथवासिता ॥ एताभवन्तिबालानांतेषामेवतुभूयसा । आश्रयोपचयाल्पत्वाद्ग्रहणाहरणेसुखाः ॥ गणोवरुणकादौतुगुग्गुल्वेलाहरेणुभिः । कुष्ठभद्राह्वमरिचचित्रकःससुराह्वयैः ॥ एतैःसिद्ध

मजासर्पिरूषकादिगणेनवा। भिनत्तिकफसम्भूतामश्मरींक्षिप्रमेवच ॥ सह्यादिस्तेनचात्रेष्टोगणःश्यामादिकोबुधैः। इतिवरुणघृतम् ॥ १७५ ॥

कफज पथरीमें मूत्राशय भारी शीतल तथा सुई गड़ने कीसी पीड़ा से युक्त होताहै और यह पथरी बड़ी चिकनी तथा श्वेत अथवा सहत के समान वर्णवाली होतीहै यह तीनों पथरी प्रायः बालकोंके होती हैं बाल्यावस्थामें मूत्राशय के बढ़ने वाले और छोटे होने के कारण पथरी सुख पूर्वक खैंची और ग्रहण की जासकीहैं बरुणादि गणके काढ़ेके साथ बकरीके घीमें गूगल इलायची गगनधूल कूट मोथा मिर्च चीता देवदारु और ऊषकादिगण इनसबको डाल पाककर सेवन करने से शीघ्रही कफज पथरीका नाश होताहै इति बरुणघृत ॥ १७५ ॥

वरुणार्त्तगलीशिग्रुस्तर्कारीनक्तमालकौ। मोरटारणिबिल्वाश्चविम्बीवसुकचित्रकाः ॥ शैरेयोवाशिरःक्षीरमजश्रृंगीशतावरी। दर्भौद्वृहतिकाव्याघ्रीमुनिभिःपरिकीर्तितः ॥ वरुणादिगणोह्येषकफमेदोनिवारणः। विनिहान्तिशिरःशूलंगुल्माभ्यन्तरविद्रधीन् ॥ इतिवरुणादिगणः ॥ १७६ ॥

बरुणा झिंटी सहजन जयन्ती करंजुआ ईखकी जड़ अरणी बेल कुंदरू आक चीता झिंटी गजपीपल सहजन मेढ़ासिंगी सतावरदर्भ और दोनों भटकटैया इनसबको बरुणादि गण कहते हैं इसके द्वारा कफ मेद शिरकीपीड़ा गुल्म और भीतरकी विद्रधिका नाश होताहै इति बरुणादिगण १७६ ॥

क्षारान्यवागूपेयांश्चकषायांश्चपयांसिच। भोजनानिचकुर्वीतवर्गेऽस्मिन्कफनाशने इतिकफाश्मरी ॥ १७७ ॥

ऊपर कहीहुई औषधियों के द्वारा क्षार यवागू पेया क्वाथ दूध और भोजन के पदार्थ बनाकर सेवन करने से कफकी पथरी का नाशहोताहै इति कफाश्मरी ॥ १७७ ॥

शुक्राश्मरीतुमहतांजायतेशुक्रधारणात्। अव्ययानामनेकार्थत्वात्शब्दोऽत्रावधारणार्थः तेनमहतामेवनतुबालानांवक्ष्यमाणसम्प्राप्तेरसम्भवात्नतुशुक्राभावोवाच्यः शुक्रधारणार्थःबालानां वक्ष्यमाणसम्प्राप्तेरसम्भवात् नतुशुक्राभावोवाच्यः शुक्रेधारणात्वेगामानस्य ॥ १७८ ॥

वीर्य्य की पथरी वीर्य के वेग के रोकने से बड़ोंही के होती है और बालकों नहीं होती ॥ १७८ ॥

शुक्राश्मर्य्याःसम्प्राप्तिमाह ॥

स्थानात्च्युतममुक्तंहिमुष्कयोरन्तरेऽनिलः। शोषयित्वोपसंहत्यशुक्रंतच्छुक्रमश्मरी ॥ अनिलःमैथुनवेगेनस्थानच्युतंशुक्रंमैथुनवेगनिवारणेनधृतंशुक्रंमुष्कयोःमेढ्रसहितयोःमेढ्रवृषणयोरन्तरइति। सुश्रुतवचनात्तेनमेढ्रवृषणमध्यगतवस्तिमुखेउपसंहतएकीकृत्यशोषयतितच्छुकाश्मरीतथाभूतंशुक्रमेवाश्मरी ॥ १७९ ॥

वीर्य्य की पथरी की संप्राप्ति ॥

जबकामके वेगके कारण अपने स्थानसे गिराहुआ वीर्य्य स्खलित न होकर वायुके द्वारा लिंग तथा अंडकोशोंके मध्यमें स्थितवस्तिके मुखमें रुककर सूखजाताहै तबवीर्य्यकी पथरी उत्पन्न होतीहै १७९ ॥

तस्याःलक्षणमाह ॥

वस्तिरुक्कृच्छ्रमूत्रत्वंमुष्कश्वयथुकारिणी । तस्यामुत्पन्नमात्रायांशुक्रमेतिविलीयते ॥ पीड़ितेत्ववकाशेऽस्मिन्नश्मर्य्येवचशर्करा । तस्यांशुक्राश्मर्याम् ॥ उत्पन्नमात्रायांयदासांकथमपिविलीयतेविलयंयातितदाशुक्रं एतिमूत्रमार्गात्प्रवर्ततेपीड़ितेत्ववकाशेऽस्मिन्शब्दोऽवधारणेतेनास्मिन्नेव अवकाशेस्थानमेढ्रवृषणयोरन्तरे पीड़ितेसतिसाविलीयतेअन्तर्लीनाभवति । अवस्थाभेदादश्मरीशर्करासिकताभवतीत्याह ॥ अश्मर्य्येवचशर्करा । चकारात्सिकताचभवतिशर्करासिकतयोश्चभेदोमहत्त्वाल्पत्वाभ्यांबोद्धव्यःकथमश्मरीशर्कराभवतीत्याह ॥ साभिन्नमूर्तिर्वातेनशर्करेत्यभिधीयते ॥ १८० ॥

वीर्य्य की पथरी के लक्षण ॥

वीर्य्य की पथरी में मूत्राशय में पीड़ाकष्ट सहित मूत्रका निकलना और अंडकोशोंमें सूजन यह सब लक्षण होते हैं इसके उत्पन्न होतेही वीर्य्य निकलताहै और लिंग तथा अंडकोशों के मध्य में दबानेसे पथरी भीतरकी ओर चलीजाती है शर्करा और सिकता यह दोनों रोग पथरीहीकी अवस्था के भेदसे होते हैं पथरी बायुके द्वारा भिन्न होकर शर्करा और सिकता कहलाती है इनदोनों में भेद यही है कि शर्कराकी अपेक्षा सिकता कुछ पतली होती है ॥ १८० ॥

साश्मरीशर्करायाःपातमवरोधञ्चसहेतुकमाह ॥

अणुशोवायुनाभिन्नासातस्मिन्ननुलोमगे ॥ निरेतिसहमूत्रेणप्रतिलोमेविबध्यते । मूत्रस्रोतःप्रवृत्तासोसक्तान्हन्यादुपद्रवान् ॥ अश्मरीतस्मिन्नाश्रयेसाशर्करासक्तालग्नासती ॥ १८१ ॥

पथरी सहित शर्कराके गिरने और रुकनेके कारण ॥

वायु के द्वारा भिन्नहुई शर्करा तथा सिकतारूप पथरी वायुको अपने मार्ग के अनुसार होनेपर मूत्रके साथ निकलजाती है और वायु के विरुद्ध होने पर रुकके मूत्रके स्रोतों में प्राप्तहोकर अनेक प्रकार के उपद्रवों को करती है ॥ १८१ ॥

उपद्रवानाह ॥

दौर्बल्यंसदनंकार्श्यंकुक्षिरोगमथारुचिम् । पाण्डुत्वमुष्णवातञ्च तृष्णाहृत्पीडनंवमिम् ॥ उष्णवातंमूत्राघातविशेषणम् ॥ १८२ ॥

उपद्रव ॥

दुर्बलता शरीर की शिथिलता कृशता कोख के रोग अरुचि पांडु उष्णवात नाम मूत्राघात तृषा हृद्रोग और छर्दि यह सब उपद्रव हैं ॥ १८२ ॥

अश्मरीशर्करासिकतानामरिष्टमाह ॥

प्रशूनाभिवृषणंबद्धमूत्रंरुजातुरम् । अश्मरीक्षपयत्याशुशर्करासिकतान्विता ॥ शर्करासिकतेतिनामद्वयमन्वर्थम् ॥ १८३ ॥

पथरी शर्करा और सिकता के अरिष्ट ॥

पथरी शर्करा और सिकता रोग में जो रोगी की नाभि तथा अंडकोश सूजजाँय मूत्ररुक जाय और पीड़ा होय तो वह मरजाता है ॥ १८३ ॥

अश्मर्य्याश्चिकित्सा ॥

शुक्राश्मर्यान्तुसामान्योविधिरश्मरिनाशनः। यवक्षारगुडोन्मिश्रंरसंपुष्पफलोद्भवम्॥ पिवेन्मूत्रविबन्धघ्नंशर्कराश्मरिनाशनम्। तिलापामार्गकदलीपलाशयवबिल्वजः॥ क्वाथःपेयोऽविमूत्रेणशर्कराश्मरिनाशनः। केवुकाङ्कोढकतशाकेन्दीवरजैःफलैः॥ पीतमुष्णाम्बुसगुडंशर्करांपातयत्यधः। पाषाणभिद्गोक्षुरकोरुबूकौद्वौकण्टकार्य्यौक्षुरकाङ्कमूलम्॥ दध्नापिवेत्क्षीरसुपिष्ठमेतत्स्याद्भेदनार्थंसिकताश्मरीणाम्। यःपिवेत्रजनींसम्यक्सगुडांतुषवारिणा॥ तस्याशुचिरगूढ़ापियात्यस्तंमेढ्रशर्करा। पिवतःकुटजंदध्नापथ्यंमन्नञ्च स्वादतः। निपतन्त्यचिरात्अस्यानियतंमेढ्रशर्करा॥ त्रपुसवीजंपयसापीतंवानारिकेलजंकुसुमम्। विण्मूत्रशर्करावाभवतिसुखीकतिपयैर्दिवसैः॥ श्वदंष्ट्रावरुणःशुण्ठीक्वाथंक्षौद्रयुतंपिवेत्। शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रहरंपरम्॥ कूष्माण्डकरसोहिंगुयवक्षारसमायुत्। वस्तीमेढ्रेसशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रहरंपरम्॥ पुनर्नवायोरजनीश्वदंष्ट्राफलाप्रबालश्च सदर्भपुष्पः। क्षीराम्रमद्येक्षुरसप्रपिष्टःपयोभवेदश्मरीशर्करासु॥ वरुणत्वक्शिलाभेद् शुण्ठिगोक्षुरकैःकृतः। कषायःक्षारसंयुक्तःशर्कराश्चभिनत्यपि॥ १८४॥

पथरी की चिकित्सा ॥

वीर्य की पथरी में सामान्य पथरी की चिकित्सा करनी चाहिये कैथे के रस में जवाखार और गुड़छोड़कर पीने से मूत्रका रुकना पथरी और शर्करा का नाश होता है तिल लटजीरा केला ढाक जौ और बेल इनसबके काढे में भेड़का मूत्र डालकर पीने से शर्करा और पथरी का नाश होता है केबुक पिस्ता निर्मली शाक और कमलगट्टे इनसबके चूर्ण में गुड़ मिलाकर गरम जल के साथ पीने से शर्करा मूत्रके साथ बहजाती है पाषाणभेद गोखुरू अरंडकी जड़ दोनों भटकटैया और तालमखाने की जड़ इनसब के चूर्ण को दूधके साथ पीसकर दही के साथ पीने से सिकता और पथरी का नाश होता है गुड़ सहित कांजी के साथ हल्दी के चूर्ण को पीने से बहुत पुरानी शर्करा का भी नाश होता है कुरैया के चूर्ण को दही के साथ पीकर पथ्य भोजन करने से शीघ्रही लिंगमें स्थित शर्करा गिरपड़ती है खीरेके बीज अथवा नारियल के फूल दूधके साथ पीनेसे थोड़े दिनों में मलमूत्र से हुई शर्कराका नाश होता है गोखुरू वरुणा तथा सोंठके काढे में सहत डालकर पीने से शर्करा तथा पथरी का शूल और मूत्रकृच्छ्र का नाशहोता है पेठेके रस में हींग और जवाखार डालकर पीने से मूत्राशय तथा लिंगकी पीड़ा और मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है पुनर्नवा लोह चूर्ण हल्दी गोखुरू प्रियंगु और दर्भपुष्प इनसबको दूध आमकारस मद्यतथा ईखकेरसकेसाथ पीसकर पीनेसे पथरी और शर्करा का नाशहोताहै बरुणाकीछाल पाषाणभेद सोंठ और गोखुरू इनकेकाढे में सहत और शक्कर डालकर पीनेसे शर्करा का नाशहोता है ॥ १८४ ॥

पञ्चमूल्यास्तृणाख्यायास्तथागोक्षुरकस्यतु। पृथग्दशपलान्भागान्जलद्रोणेविपा

चयेत् ॥ चतुर्भागावशिष्टेनघृतप्रस्थंविपाचयेत् । गुड़गोक्षुरबीजञ्चकल्कंतत्रप्रदापयेत् ॥ ततसिद्धंमूत्रदोषेषुशर्करास्वश्मरीषुच । स्नेहनेभोजनेचैवप्रयोज्यंसर्पिरुत्तमम् ॥ इतितृणपञ्चमूलाद्यंघृतम् ॥ १८५ ॥

तृण पंचमूल तथा गोखुरू इनको दश २ पललेकर १०२४ तोले जलमें पाककरके चौथाई बाकी रहजानेपर इस काढेको छानले फिर इस काढेके साथ ६४ तोले घीको गुड़ तथा गोखुरूका कल्क डालकर विधिपूर्व्वक पाककरे स्नेहन और भोजनमें इस घृतके सेवनसे मूत्र दोष शर्करा तथा पथरीका नाशहोताहै इति तृणपंचमूलादि घृत ॥ १८५ ॥

त्वक्पत्रफलमूलयस्वरुणस्यत्रिकण्टकात् । कषायेणपचेत्तैलंवस्तिनास्थापनेनच ॥ शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रात्प्रमुच्यते । इतिवरुणतैलम् ॥ १८६ ॥

वरुणाकी छाल पत्ते फल तथा जड़ और गोखुरू इन सबके काढेके साथ पाक किये हुये तेलके सेवनसे शर्करा पथरी शूल तथा मूत्रकृच्छ्रका नाशहोताहै इति वरुणतैल ॥ १८६ ॥

कुशाग्निमन्थशैरीयनलदर्भेक्षुगोक्षुराः । कपोतवङ्कावसुकवशिरेन्दीवरीशराः ॥ धातक्यरलुवन्दाकाःकर्णपूराश्मभेदकाः । एषांकल्ककषायाभ्यांसिद्धंतैलंप्रयोजयेत् ॥ पानाभ्यंजनयोगेनवस्तिनोत्तरवस्तिना । शर्कराश्मरिरोगेषुमूत्रकृच्छ्रेचदारुणे ॥ प्रदरेयोनिशूलेचशुक्रदोषेतथैवच । वन्ध्यागर्भप्रदंप्रोक्तंतैलमेतत्कुशादिकम् ॥ इतिकुशाद्यतैलम् । शुक्राश्मरी ॥ १८७ ॥

कुश अरणी भिंटी नरकुल दर्भ ईख गोखुरू कपोतवङ्का आक गजपीपल सतावरि सर्कंडा धवई अरलू वांदा सिरस और पाषाणभेद इनके कल्क और काढेके द्वारा तेलको पाककरके पान अभ्यंग वस्ति और उत्तरवस्ति में सेवन करने से शर्क्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र प्रदर योनिशूल तथा वीर्य्य के दोष नष्टहोतेहैं और बंध्याओं के पुत्र होते हैं इति कुशादितेल इति शुक्राश्मरी ॥ १८७ ॥

नागरवरुणगोक्षुरपाषाणभित्कपोतवङ्कजःक्काथः । गुड़यवशूकविमिश्रःपीतोहन्त्यश्मरीमुग्राम् ॥ त्रिकण्टकस्यबीजानांचूर्णंमाक्षिकसंयुतम् । अविक्षीरेणसप्ताहंपेयमश्मरिनाशनम् ॥ पिवेद्वरुणजंमूलंक्काथंतत्कल्कसंयुतम् । क्काथश्चशिग्रूमूलोत्थःकटुष्णोऽश्मरिनाशनः ॥ शृङ्गवेरयवक्षारपथ्याकालीयकान्वितः । दधिमण्डोभिनत्त्युग्रामश्मरिमाशुपानतः ॥ पाषाणभेदवरुणगोक्षुरुककपोतवङ्कजःक्काथः । गिरिजतुगुड़प्रगाढ़ःकर्कटिकात्रपुसबीजयुतः ॥ पेयोऽश्मरीमवश्यंदुर्भेदामपिभिनन्तियोगवरःशिखरिणमिवशतकोटिःशतमन्योर्हस्तनिर्मुक्तः । श्रीकरिणीफलवीजंपिष्टंमथितेनयःपुमानद्यात् ॥ शाकमसितमथवास्याद्धन्याद्रोगाश्मरीपीड़ाम् । श्वदंष्ट्रैरण्डवीजानिनागरंवरुणत्वचः ॥ एतत्क्काथवरंप्रातःपिवेदश्मरिनाशनम् । रक्तोद्भवेरुक्षमृणालतालकाशेक्षुबालीक्षकुशोदकानि ॥ पिवेत्सिताक्षाद्रयुतानिखादेद्धिदारिभिक्षुत्रपुसानिचैव ॥ १८८ ॥

सोंठ बरुणाकीछाल गुखुरू पाषाणभेद और कपोतवक्का इनसबकेकाढेमें गुडऔर जवाखारडालकरपीनेसे भयंकर पथरीकानाशहोताहै सहतयुक्त गुखुरूकेबीजोंके चूर्णको भेडीकेदूधकेसाथ सातदिन

पीनेसे पथरीकानाशहोताहै बरुणाकीजड़केकाढ़ेमें उसीकेकल्ककोमिलाकरपीनेसे अथवा सहजनेकी जड़के कुछ गरमकाढ़ेके पीनेसे शीघ्रही पथरीकानाशहोताहै सोंठ जवाखार हड़ औरदारुहल्दी इनके चूर्णसे युक्त दहीकामंड शीघ्रहीपथरीको नाशकरताहै पाषाणभेद बरुणा गखरू और कपोतवङ्का इन सबकेकाढ़ेमें शिलाजीत गुड़ और खीरेककड़ीकेबीजकाचूर्णमिलाकरपीनेसे असाध्य पथरीकाभी नाश होताहै श्रीकरणीकेफलोंकेबीज निर्जलमट्ठेकेसाथखानेसेपथरीकानाशहोताहै औरइसकेशाककेखानेसे भी पथरीकी पीड़ाका नाशहोताहै गुखुरू रेड़ीकेबीज सोंठ और बरुणाकीछाल इनसबके काढ़ेको प्रातः कालपीनेसे पथरीकानाशहोताहै रक्ततृण कमलकीडंडी तालमूली कास ईखकीजड़ इक्षुबाली कुश और सुगन्धबाला इनसबके काढ़ेको सहत तथा शक्कर डालकर पीनेसे और विदारीकन्द ईख तथा खीरेकेबीजखानेसे पथरीकानाशहोता है ॥ १८८ ॥

पलान्यष्टौतुकुर्वीतक्षाराणांवरुणत्वचम् । तदर्द्धंयावशूकन्तुततोऽप्यर्द्धंगुडात्स्मृतम्॥एकीकृत्यविमृद्यैतत्खादेत्कर्षप्रमाणतः।धर्माम्बुपानतोऽवश्यंकृच्छ्राश्मरीविनाशनम्॥ वरुणकभस्मपरिस्रुतसलिलंतच्चूर्णयावशूकयुतम्। क्वथनीयंतत्तावद्यावच्चूर्णत्वमायाति ॥ तद्गुडयुक्तंहन्यात्तदुदारामश्मरींघोराम्।प्लीहानंगुल्मवरंश्रोण्यांकुक्षौरुजांतीव्राम्॥आमचयंवस्तिगदान्कृच्छ्रंवातजांघोराम् । वह्निसदनंसुकष्टमश्ममयीमश्मरींचाशु ॥ इतिवरुणाद्यंचूर्णम् ॥ १८९ ॥

बरुणा की छालका क्षार ३२ तोले जवाखार १६ तोले गुड़ ८ तोले इन सबको एकमें मिलाकर गरम जलके साथ १ तोला रोजखाने से मूत्रकृच्छ्र और पथरी का नाश होताहै बरुणाकी छालके क्षारसे टपकाया हुआ जल बरुणाकी छालका चूर्ण और जवाखार इन सबको एकसाथ पाककरे जब पानी जलकर केवल चूर्ण मात्र बाकी रहै तब उसमें गुड़ मिलाकर खानेसे भयंकर पथरी प्लीहा गुल्म नितंब तथा कोखकी पीड़ा आमदोष वस्तिकेरोग वातज मूत्रकृच्छ्र मन्दाग्नि और पत्थरके समान कठोर पथरी इन सबका नाश होताहै इति बरुणादि चूर्ण ॥ १८९ ॥

नोजग्धंकृमिभिर्घनंसुतरुणंस्निग्धंशुचिस्थानजम्। घस्रेपुण्यनिरीक्षितेवरुणकंस्थित्वातुलांग्राहयेत् ॥ संगृह्याशुचतुर्गुणासुविपचेत्पादावशेषंजलम्। तत्तुल्येनगुडेनवैदृढतरेभाण्डेपचेत्तत्पुनः ॥ ज्ञात्वैवंघनतांगुडेपरिणतेप्रत्येकमेषांपलम् । शुण्ठ्येर्वारुकबीजगोक्षुरकणापाषाणभिच्छ्वातलाः ॥ कुष्माण्डत्रपुसाक्षबीजकुनटीवास्तूकसौभाञ्जनैः । द्राक्षैलागिरिजाभयाक्रिमिहतांचूर्णीकृतानांक्षिपेत् ॥ पथ्यासीप्रतिवासरंगुडममुंयुञ्ज्यात्प्रमाणंनरः । खादेत्तस्यसमस्तदोषजनिताश्मर्य्यःपतन्तिद्रुतम्॥इतिवरुणकगुडः१९०॥

शुभनक्षत्र युक्त पवित्र दिन में पवित्रस्थान से कीड़ोंसे नहीं खाईगई घनीस्निग्ध और तरुण बरुणा की छाल ४०० तोले लावे और उसको चौगुने जल में पाक करके चौथाई बाकी रहने पर छानले फिर उस काढ़ेमें उतनाही गुड़ मिलाकर किसी मजबूत मट्टीके बर्त्तनमें पाककरे जब पाग गाढ़ा होजाय तो सोंठ ककड़ीके बीज गोखुरू पीपल पाषाणभेद पटुआ पेठा खीरा तथा बहेड़ेके बीज धनिया बथुई सहजन दाख इलायची शिलाजीत हड़ और वायबिड़ंग इन सबका चार २ तोले चूर्ण

मिलाकर उतारले इस गुड़को मात्राके अनुसार रोज खानेसे और पथ्य भोजन करने से सब प्रकार की पथरी शीघ्रही गिरजाती हैं इति बरुणक गुड़ ॥ १९० ॥

कुलत्थसिन्धूत्थविड़ंगसारंसशर्करंशीतलयावशूकम् । बीजानिकुष्माण्डकगोक्षुराभ्यांघृतंपचेत्तद्वरुणस्यतोये ॥ दुःसाध्यसर्वाश्मरिमूत्रकृच्छ्रंमूत्राभिघातञ्चसमूत्रबन्धम् । समूलमेतानिनिहन्तिशीघ्रंप्ररूढवृक्षानिववज्रपातः ॥ इतिकुलत्थाद्यंघृतम् ॥ १९१ ॥

कुलथी सेंधानोन वायबिड़ंग शक्कर पटुआ जवाखार पेठेके बीज तथा गोखुरू इन सबके द्वारा वरुणाकी छालके काढ़ेमें पाककिये हुये घीके सेवनसे दुस्साध्यपथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात और मूत्रावरोध नष्टहोते हैं इति कुलत्थादि घृत ॥ १९१ ॥

शरादिपञ्चमूलोवाकषायेणपचेत्घृतम् । प्रस्थंगोक्षुरकल्केनसिद्धमद्यात्सशर्करम् ॥ अश्मरीमूत्रकृच्छ्रघ्नंशुक्रमार्गरूजापहम् । इतिशरादिपञ्चमूलाद्यंघृतम् ॥ १९२ ॥

तृणपंचमूलके काढ़ेके साथ घीमें गोखुरूका कल्क डालकर पाककरे फिर शक्करकेसाथ इस घीको खाने से प्रथरी मूत्रकृच्छ्र और वीर्य्य के मार्गकी पीड़ा नष्टहोतीहै इति शरादिपंचमूलादिघृत॥१९२॥

वरुणस्यतुलांक्षुण्णांजलद्रोणेविपाचयेत् । पादशेषंपरिस्राव्यघृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ वरुणंकदलींबिल्वंतृणजंपञ्चमूलकम् । अमृताचाश्मभेदञ्चवजिञ्चत्रपुसस्यच ॥ शतपर्व्वातिलक्षारंपालाशक्षारमेवच । यूथिकायाश्चमूलानिकार्षिकानिसमावपेत् ॥ अस्यमात्रांपिवेज्जन्तुर्देशकालव्यपेक्षया । जीर्णेचास्मिन्पिवेत्पूर्व्वंगुडंजीर्णञ्चमस्तुच ॥ अश्मरींशर्कराञ्चैवमूत्रकृच्छ्रञ्चनाशयेत् । इतिवरुणाद्यंघृतम् ॥ १९३ ॥

४०० तोले वरुणाकी छालके काढ़ेके साथ ६४ तोले घीको वरुणा केला बेल तृणपंचमूल गिलोय पाषाणभेद खीरेकेबीज बांसकीजड़ तिलोंकाक्षार ढाककाक्षार औरजूहीकीजड़ इनसबके तोले२ भरकल्कछोड़कर विधिपूर्व्वक पाककरे फिरदेशकालको बिचार मात्राकेअनुसार इसघीकेसेवनसेपथरी शर्करा और मूत्रकृच्छ्र कानाशहोताहै इसघीके परिपाक होनेपर पहले गुड़ मिलाकर दहीका तोड़ पिये इति वरुणादि घृत ॥ १९३ ॥

सैन्धवाद्यन्तुयत्तैलमृषिभिःपरिकीर्तितम् । तत्तैलंद्विगुणंक्षीरंपचेद्वीरतरादिना ॥क्वाथेनपूर्व्वकल्केनसाधितन्तुभिषग्वरैः । एतत्तैलवरंश्रेष्ठमश्मरीणांनिवारणम् ॥ मूत्राघातेमूत्रकृच्छ्रेपिच्चितेमथितेतथा । भग्नेश्रमाभिपन्नेचसर्व्वथैवप्रशस्यते ॥ इतिवीरतराद्यंतैलम् ॥ १९४ ॥

सैंधवादि तैलके कल्कके द्वारा वीरतरादि गणके क्वाथ और द्विगुणित दूधके साथ विधि पूर्व्वक पाक किये हुये तेलके सेवनसे पथरी मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र पिच्चित तथा मथितव्रण भग्न और श्रमका नाश होताहै इति वीरतरादि तैल ॥ १९४ ॥

वीरवृक्षाश्मभेदाग्निमन्थस्योनाकपाटलः । वृक्षादनीसहैरण्डभल्लूकोशीरपद्मकम् ॥ कुशकाशशरेक्षूणामास्फोताकोकिलाक्षयोः । शतावरीश्चद्रंष्ट्राचसोत्कटाह्वयवञ्जुलाः ॥ कपोतवङ्काश्रीपर्णीकाश्मरीमूलसंयुता । एतैःकषायैःकल्कैश्चतैलंधीरोविपाचयेत् ॥ वा

तपित्तविकारेषुवस्तिंदद्याद्विचक्षणः । शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रविनाशनम् ॥ इति वीरतराद्यंतैलम् ॥ १९५ ॥

अर्जुनकी छाल पाषाण भेद अरणी सोनापाठा पाटला गिलोय अरंडकी जड़ भल्लूक खस पद्माक कुश काश सर्पत ईख मोगरा तालमखाना सतावर गोखुरू दालचीनी बेत कपोत वक्का श्रीपर्णी और खंभारी इनसबके कल्क तथा काढ़ेके द्वारा पाककिये हुए तेलके द्वारा उत्तर वस्तिलेने से बात पित्तके बिकार शर्करा पथरी शूल और मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै इति बीरतरादि तेल ॥१९५॥

पुनर्नवामृताभीरुसक्षारलवणत्रयैः । शठीकुष्ठवचामुस्तरास्नाकट्फलपौष्करैः ॥ यवानीहवुषाहिंगुशताह्वासाजमोदकैः । विडङ्गातिविषायष्टीपञ्चकोलकसंयुतम् ॥ एतैरक्षसमैःकल्कैस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् । गोमूत्रंद्विगुणंदेयंकाञ्जिकंतद्वदेवतु ॥ पुनर्नवाद्यमित्येतत्तैलंपानेनवस्तिना । शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रप्रमोचनम् ॥ कट्यूरुवस्तिमेढ्रस्यकुक्षिवंक्षणसंयुतम् । कफवातामशूलघ्नमन्त्रवृद्धेश्चनाशनम् ॥ इतिपुनर्नवाद्यंतैलम् ॥ १९६ ॥

गदापूर्णा गिलोय सतावर जवाखार सेंधानोन कालानोन बिट्नोन कचूर कूट वच मोथा रासना कायफल पुष्करमूल अजवाइन हाऊबेर हींग सौंफ अजमोद वायबिड़ंग अतीस मुलहठी और पंचकोल इनसबके चार२ मासे कल्कके द्वारा १२८ तोले गोमूत्र और १२८तोले कांजीके साथ ६४तोले तेलको पाककरके इसके द्वारा उत्तर बस्ति लेने से और इसके पीनेसे शर्करा पथरी शूल मूत्रकृच्छ्र अन्त्रवृद्धि कफ बातज शूल आमशूल और कमर जंघा मूत्राशय लिंग कोख तथा बंक्षण का शूलयह सबनष्ट होतेहैं इति पुनर्नवादि तेल ॥ १९६ ॥

व्रध्नाधिकारनिर्दिष्टंसैन्धवाद्यमिहेष्यते । सर्वथैवोपयोज्यस्तुगणोवीरतरादिकः ॥ घृतैःशीतैःकषायैश्चक्षीरैश्चोत्तरवस्तिभिः । बलवन्तोनशाम्यन्तेप्रत्याख्यायसमुद्धरेत ॥ यदृच्छयामूत्रमार्गमायान्त्यस्त्वन्तराशृताः । श्रोतसापहरेच्छित्वावडिशेनाथचोद्धरेत् ॥ इतिअश्मरीरोगनिदानचिकित्साधिकारः ॥ १९७ ॥

वृध्नरोगके अधिकार में कहाहुआ सेंधवादि तैलभी पथरीमें हितहै पथरी रोगमें बीरतरादि गणसब प्रकारसे काममें लाना चाहिये पथरी बढ़जानेपर घी शीतल उपचार काढ़ा दूध और उत्तर वस्तिके द्वारा नहीं शान्त होतीहै उसके आराम होनेकी आशा छोड़कर अपने आप मूत्र द्वारमें आई हुई पथरी को काटकर निकाले अथवा वड़िश नाम औजार से खेंचले इति अश्मरी रोग निदान चिकित्साधिकार ॥ १९७ ॥

अथ प्रमेहनिदानचिकित्सा ॥

आस्यासुखंस्वप्नसुखंदधीनिग्राम्योदकानूपरसःपयांसि । नवान्नपानंगुडवैकृतंचप्रमेहहेतुःकफकृच्चसर्वम् ॥ मेदश्चमांसञ्चशरीरजञ्चक्लेदंकफोवस्तिगतंप्रदूष्य । करोतिमेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि ॥ क्षीणेषुदोषेष्ववकृष्यधातून्संदूष्यमेहान्कुरुतेऽनिलश्च ॥ साध्याःकफोत्थादशपित्तजाःषट्या प्यानसाध्यापवनाच्चतुष्काः । समक्रियत्वाद्विषमक्रियत्वान्महात्ययत्वाच्चयथाक्रमन्ते । कफश्चपित्तंपवनश्चदोषामेदोऽस्रशुक्रा

म्वुवसालसीकाः । मज्जारसौजःपिशितञ्चदूष्याः प्रमेहिणांविंशतिरेवमेहाः ॥ १९८॥

प्रमेहके निदान और चिकित्सा का अधिकार ॥

बहुत लेटना बहुत सोना दही ग्राम्य जल तथा बहुत जलवाले देशके जीवोंके मांसकारस दूध नवीन अन्न तथा जल गुड़के पदार्थ और कफकारी सम्पूर्ण वस्तु यह सब प्रमेहके कारण हैं दूषित कफ वस्तिमें प्राप्त मेद मांस और शरीर से उत्पन्न हुए क्लेद(जल)को दूषित करके कफज प्रमेहोंको उत्पन्न करताहै बहुत उष्ण वस्तुओंसे दूषित पित्त वस्तिमें प्राप्तहुए मेद आदिको दूषित करके पित्तज प्रमेहों को उत्पन्न करताहै दोषोंके क्षीण होजाने पर वायु धातुओं को खैंचके और दूषित करके वातज प्रमेहोंको उत्पन्न करती है कफसे हुए दश प्रमेह क्रियाके समहोनेके कारण साध्य हैं पित्तसेहुए छःप्रमेह क्रियाके विषम होनेके कारण याप्य और वातज चार प्रमेह वायु के महात्ययी (मज्जाआदि गंभीर धातुओंका दूषित करने वाला) होनेके कारण असाध्यहैं कफ पित्त और वायु यह तीनोंदोषहैं अर्थात् दूषित करने वालेहैं मेद रक्त वीर्य्य जल चरबी लसीक (धातुविशेष) मज्जारस ओज और मांस यह दूष्य अर्थात् दूषित होनेवालेहैं दोषोंसे दूष्योंके दूषित होनेपर वीसप्रकारके प्रमेह होतेहैं ॥ १९८॥

प्राग्रूपमाह ॥

दन्तादीनांमलाढ्यत्वं प्राग्रूपंपाणिपादयोः । दाहश्चिक्कणतादेहे तृट्स्वाद्वास्यञ्च जायते ॥ १९९ ॥

प्रमेहके पूर्व्वरूप ॥

प्रमेह होनेके पहले दांत आदिकोंका मैलापन हाथ पैरोंमें दाह शरीरमें चिकनापन तृषा और मुखमें मधुरता यह लक्षण होतेहैं ॥ १९९ ॥

सामान्यलक्षणमाह ॥

सामान्यंलक्षणंतेषां प्रभूताविलमूत्रताः । दोषदूष्याविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः॥ मूत्रवर्णादिभेदेन भेदोमेहेषुकल्प्यते ॥ २०० ॥

प्रमेहका सामान्य लक्षण ॥

सब प्रकार के प्रमेहों में गँदला मूत्र बहुत निकलताहै दोष तथा दूष्योंके तुल्य होनेपरभी उनके संयोगकी विशेषताके अनुसार मूत्रके वर्णादिकोंके भेदसे प्रमेहके भेदोंकी कल्पना कीजातीहै २००॥

अच्छंबहुतरंशीतंनिर्गन्धमुदकोपमम् । मेहत्युदकमेहेन किञ्चिच्चाविलपिच्छिलम्॥ इक्षोरसमिवात्यर्थं मधुरञ्चेक्षुमेहतः । सान्द्रीभवेत्पर्युषितं सान्द्रमेहेनमेहति ॥ सुरामेहिसुरातुल्य मुपर्यच्छमधोघनम् । संहृष्टरोमापिष्टेन पिष्टवद्बहलंसितम्॥ शुक्राभंशुक्रमिश्रंवा शुक्रमेहोप्रमेहति । मूर्त्ताणून्सिकतमेही सिकतारूपिणोमलान् ॥ शीतमेहीसुबहुशोमधुरंभृशशीतलम् । शनैःशनैःशनैर्मेही मन्दंमन्दंप्रमेहति ॥ लालातन्तुयुतंमूत्रं लालामेहेनपिच्छिलम् ॥ २०१ ॥

उदक प्रमेहमें निर्मल बहुत श्वेत शीतल दुर्गन्धि रहित कुछ गँदला चिक्कण जलके समान मूत्र निकलताहै इक्षु प्रमेह में ईषके रसके समान अत्यन्त मधुर मूत्रहोताहै सान्द्र प्रमेहमें मूत्र रखनेसे गाढ़ा होजाताहै सुरा प्रमेहमें मदिराके समान ऊपर निर्मल और नीचे गाढ़ा मूत्र होताहै पिष्ट प्रमेह में रोयें खड़े होकर पीठीके समान बहुत और शीतल मूत्र निकलताहै शुक्र प्रमेहमें वीर्य्य से मिला

हुआ अथवा वीर्य्यके समान मूत्र निकलताहै सिकता प्रमेहमें मूत्रके साथ वालूके से सूक्ष्मकण रूपी मल निकलताहै शीत प्रमेहमें मधुर अत्यन्त शीतल तथा बहुत मूत्र निकलताहै शनैः प्रमेहमें वारम्बार थोड़ा २ मूत्र निकलताहै और लाला प्रमेहमें लारकेसे तारोंसे युक्त तथा चिकना मूत्र निकलताहै यह दश कफज प्रमेहहैं ॥ २०१ ॥

गन्धवर्णरसस्पर्शौ क्षारेणक्षारतोयवत् । नीलमेहेननीलाभं कालमेहीमसीनिभम् ॥ हारिद्रमेहीकटुकं हरिद्रासन्निभंदहत् । मिश्रंमाञ्जिष्ठमेहेन मञ्जिष्ठाशालिकोपमम् ॥ मिश्रमुष्णंसलवणं रक्ताभंरक्तमेहिनः ॥ २०२ ॥

क्षार प्रमेहमें क्षारके जलके समान गन्ध वर्ण रस तथा स्पर्श से युक्त मूत्र निकलताहै नील प्रमेहमें नीलवर्ण मूत्र निकलताहै काल प्रमेहमें स्याहीके समान काला मूत्र निकलता है हरिद्रा प्रमेह में कटु दाह युक्त तथा हल्दीके समान वर्ण वाला मूत्र निकलता है मंजिष्ठा प्रमेहमें आमकी गन्ध से युक्त मजीठ के जलके समान मूत्र निकलताहै और रक्त प्रमेहमें आमकी गन्धिसे युक्त उष्ण नमकीन तथा रुधिर के समान मूत्र निकलता है यह छः पित्तज प्रमेह हैं ॥ २०२ ॥

वसामेहीवसामिश्रं वसाभंमूत्रयेन्मुहुः । मज्जाभंमज्जमिश्रंवा मज्जमेहीमुहुर्मुहुः ॥ कषायंमधुरंरूक्षं क्षौद्रमेहंवदेद्बुधः । हस्तीमत्तइवाजस्रं मूत्रवेगाविवर्जितम् ॥ सालसीकं विवद्धञ्च हस्तिमेहीप्रमेहति ॥ २०३ ॥

बसा प्रमेहमें चर्वीसे मिलाहुआ औरचर्वीके समान बर्णयुक्त बारंबार मूत्र निकलताहै मज्जा प्रमेह में मज्जासे मिलाहुआ अथवा मज्जाके समान बर्णयुक्त बारंबार मूत्र निकलता है मधु प्रमेह में कषैला मधुर तथा रूखा मूत्र निकलताहै हस्तिप्रमेह में मतवाले हाथी के समान मूत्रके बेगसे रहित अलसीक (धातु बिशेष) युक्त कब्ज सहित निरन्तर मूत्र निकलता है यह चार बातज प्रमेह हैं ॥ २०३ ॥

अविपाकोऽरुचिश्छर्दिर्निद्राकासःसपीनसः । उपद्रवाःप्रजायन्ते मेहानांकफजन्मनाम् ॥ वस्तिमेहनयोस्तोदो मुष्कावदरणंज्वरः । दाहतृष्णाम्लिकामूर्च्छा विड्भेदोपित्तजन्मनाम् ॥ वातजानामुदावर्त्त कम्पहृद्ग्रहलोलताः । शूलमुन्निद्रताशोषः श्वासःकासश्च जायते ॥ यथोक्तोपद्रवाविष्टमतिप्रस्रुतमेवच । पिड़िकापीड़ितंगाढ़ंप्रमेहोहान्तिमानवम् ॥ मूर्च्छाछर्दिज्वरश्वासकासवीसर्प्यगौरवैः । उपद्रवै रुपेतोयःप्रमेहीदुःप्रतिक्रियः॥ २०४ ॥

अन्नका न पचना अरुचि छर्दि निद्राकी अधिकता खांसी और पीनस यह कफजप्रमेहोंके उपद्रव हैं मूत्राशय तथा लिंगमें पीड़ा अंडकोशोंका फटना ज्वर दाह तृषा खट्टीडकार मूर्च्छा और मलभेद यह पित्तज प्रमेहोंके उपद्रव हैं उदावर्त्त कंप हृदयमें पीड़ा सबरसोंके खानेकी इच्छा शूल निद्राका नाश शोष श्वास और खांसी यहसब बातज प्रमेहोंके उपद्रव हैं ऊपर कहेहुये उपद्रवोंसे युक्त जिस प्रमेह वालेके बहुत धातु सहित मूत्र निकलता होय और पिड़िकाओंसे बहुत पीड़ा होय वह नहीं जीता मूर्च्छा छर्दि ज्वर श्वास खांसी बीसर्प और शरीरका भारीपन इन सब उपद्रवोंसे युक्त प्रमेह वाला असाध्य है ॥ २०४ ॥

रजःप्रवर्त्ततेयस्मान्मासिमासिविशोधयेत्।सर्वान्शरीरदोषांश्चनप्रमेहंत्यतःस्त्रियः२०५

स्त्रियोंके मास २ में रजके निकलजानेसे शरीरके संपूर्ण दोष निकलजाते हैं इसलिये स्त्रियोंके प्रमेह नहीं होता ॥ २०५ ॥

जातप्रमेहीमधुमेहिनोवा नसाध्यरोगःसहिबीजदोषात् । येचापिकेचित्कुलजाविकाराः भवन्तितांश्चापिवदन्त्यसाध्यान् ॥ २०६ ॥

जो प्रमेहरोगसे युक्त पिता पितामहादिकोंके बीर्य्यके दोषसे सन्तानके प्रमेहहोय तोवह असाध्य है कुलके दोषसे कुष्ठआदिक जो कोई रोग उत्पन्नहोते हैं वह सब असाध्य हैं ॥ २०६ ॥

सर्वएवप्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः । मधुमेहत्वमायान्ति तदासाध्याभवन्तिच ॥ मधुमेहोमधुनिभो जायतेसकिलद्विधा । क्रुद्धेधातुक्षयाद्वायौदोषावृतपथेऽथवा ॥ आवृतोदोषलिंगानिसोऽनिमित्तंप्रदर्शयन् । क्षीणःक्षीणात्क्षणात्पूर्णो भजतेकृच्छ्रसाध्यताम्॥ मधुरंयच्चसर्वेषुप्रायोमध्विवमेहति । सर्वेऽपिमधुमेहाख्यां माधुर्याच्चतनोरतः ॥ २०७ ॥

संपूर्ण प्रमेह समयपर चिकित्सा न करनेसे मधु प्रमेह होकर असाध्य होजाते हैं मधु प्रमेह में सहतके समान मूत्र निकलता है और यह दो प्रकारसे उत्पन्न होताहै एकतो धातुओंके क्षय होने से कुपित हुई बायुके द्वारा और दूसरे अन्य दोषोंसे बायुके मार्ग रुकने के द्वारा मधु प्रमेह होताहै बायु के रुकनेसे जो मधु प्रमेह होता है उसमें एकाएकी दोषोंके लक्षण उपस्थित होते हैं और क्षणभर में क्षीण तथा क्षणभरमें पूर्ण अवस्थाको प्राप्तहोकर कष्टसाध्य होजाता है शरीर के मधुर होनेके कारण सब प्रकार के प्रमेहों में प्रायः सहतके समान मधुर मूत्र निकलताहै इसलिये सबप्रमेहोंको मधु प्रमेह कहसके हैं ॥ २०७ ॥

शराविकाकच्छपिकाजालिनीविनतालजी । मसूरिकासर्षपिका पुत्रिणीसविदारिकाः॥ विद्रधिश्चेतिपिड़िकाः प्रमेहोपेक्षयादश । सन्धिमर्म्मसुजायन्ते मांसलेषुचधामसु ॥ अन्तोन्नताचतद्रूपा निम्नमध्याशराविका । गौरसर्षपसंस्थाना तत्प्रमाणातुसर्षपी ॥ सदाहाकूर्म्मसंस्थाना ज्ञेयाकच्छपिकाबुधैः । जालिनीतीव्रदाहातु मांसजालसमावृता ॥ अतिगाढरुजाक्लेदा पृष्ठेवाप्युदरेऽपिवा । महतीपिड़िकानीला साबुधैर्विनतास्मृता ॥ महत्यल्पचिताज्ञेया पिड़िकापिचपुत्रिणी । मसूरदलसंस्थाना विज्ञेयातुमसूरिका ॥ रक्तासितास्फोटचिता विज्ञेयात्वलजीबुधैः । विदारीकन्दवद्वृत्ता कठिनाचविदारिका ॥ विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ता ज्ञेयाविद्रधिकातुसा । येयन्मयाःस्मृतामेहास्तेषामेतास्तुतन्मयाः ॥ विनाप्रमेहमप्येता जायन्तेदुष्टमेदसः । तावच्चैतानलक्ष्यन्ते यावद्वास्तुपरिग्रहः ॥ २०८ ॥

प्रमेहकी चिकित्सा न करनेसे शराविका कच्छपिका जालिनी बिनता अलजी मसूरिका सर्षपिका पुत्रिणी विदारिका और विद्रधि यहदशप्रकारकी पिड़िका सन्धि मर्म और मांसयुक्त स्थानों में उत्पन्न होतीहैंबीचमें गहरी किनारेपरऊंचीसकोरेकेसमानडौलवालीपिड़िकाकोशराविकाकहतेहैंसरसोंकेसमान छोटी आकृति वाली पिड़िकाको सर्षपिका कहते हैं कछुएके समान आकृति वाली दाह युक्त पिड़िकाकोकच्छपिका कहते हैं बहुत दाहयुक्त और मांस के जाल से ढकीहुई पिड़िकाको जालिनी

कहते हैं बड़े आकार वाली नीलवर्ण अत्यन्त पीड़ायुक्त औरबहनेवाली पीठ अथवा पेटमें जो पि-डिका होती है उसको बिनता कहते हैं बड़े आकार वाली और सब ओर छोटी २ पिड़िकाओं के युक्त पिड़िकाको पुत्रिणी कहते हैं मसूर के समान आकृति वाली को मसूरिका कहते हैं जिसपर लाल अथवा श्वेत दाना पड़गयेहों उसको अलजी कहते हैं बिदारी कन्द के समान गोल और कठोर पिड़िकाको बिदारिका कहते हैं बिद्रधि रोगके लक्षणों से युक्त पिड़िकाको बिद्रधि कहते हैं जिस दोषसे प्रमेह उत्पन्न होता है उसकी पिड़िका भी उसी दोषसे उत्पन्न होती है प्रमेह के बिनाभी दूषित मेद वालेके यह पिड़िका होती हैं यह पिड़िका जबतक अच्छे प्रकार ऊंची नहीं होती हैं तबतक इनके लक्षण बिशेषता से नहीं मालूम होते हैं ॥ २०८ ॥

गुदेहृदिशिरस्यंसेपृष्ठेमर्म्मसुचोत्थिताः । सोपद्रवादुर्बलाग्नेःपिड़िकाःपरिवर्ज्जयेत् ॥ तृट्च्छ्वासमांससङ्कोचमेहहिक्कामदज्वराः । विसर्प्पमर्म्मसंरोधाःपिड़िकानामुपद्रवाः ॥ श्यामाककोद्रवोद्दालगोधूमाश्चणकास्तथा । आढ़क्यश्चकुलत्थाश्चपुराणामेहिनांहिताः॥ मेहीनांतिक्तशाकानिजाङ्गलाहरिणाण्डजाः।यवान्नविकृतिर्मुद्गाःशस्यन्तेशालिषष्ठिकाः ॥ सौवीरकंसुरातक्रंतैलंक्षीरंघृतंगुडम् । अम्लेक्षुरसपिष्टान्नानूपमांसानिवर्ज्जयेत् ॥ तत्रादितएवप्रमेहिनमुपस्निग्धमन्यतमेनप्रियङ्ग्वादिसिद्धेनतैलेनवामयेत्प्रगाढ़ंविरेचयेच्च । विरेचनादनन्तरंसुरसादिकषायेणस्थापयेत् ॥ २०९ ॥

गुदा हृदय मस्तक कन्धे पीठ और मर्म स्थानोंमें उत्पन्न हुई उपद्रव सहित मन्दाग्नि वालेकी पिड़िका असाध्य होतीहै तृषा श्वास मांसका सुकड़ना प्रमेह हिचकी मद ज्वर बीसर्प और मर्मोंका रुकना यह सब पिड़िकाओं के उपद्रवहैं पुरानासामा कोदों वनकोदों गेहूं चना अरहड़ कुलथी तिक्त शाक जंगलीजीव हिरन तथा अंडजजीवोंके मांस जौके बनेहुए पदार्थ मूंग शालिधान्य और साठी यह प्रमेह वालोंको हितकारी हैं सौवीर सुरा तक्र तेल दुग्ध घृत गुड़ खटाई ईखकारस पीठी और अधिक जलवाले देशके पशुओंका मांस यहसब प्रमेहवालोंको अहित हैं प्रमेह वालोंको पहले प्रियंगु आदिके द्वारा सिद्ध कियेहुये तेलसे स्निग्ध करके बमन और विरेचन करावे फिर सुरसादिक-षायसे आस्थापन देवे ॥ २०९ ॥

महौषधभद्रदारुमुस्तावापेनमधुसैन्धवयुक्तेन । दह्यमानंवान्यग्रोधादिकषायेणानिस्तैलेन ॥ वातोत्कटेषुमेहेषुस्नेहपानंविशेषतः ॥ २१० ॥

सोंठ देवदारु मोथा तथा सेंधानोन इनके कल्ककेद्वारा अथवान्यग्रोधादिगणके काढ़ेके द्वारा दाहयुक्त प्रमेहकानाश होताहै अधिक बातवाले प्रमेहोंमें बिशेष करके स्नेह पान कराना चाहिये ॥ २१० ॥

पारिजातजयानिम्बवह्निगायत्रिणांपृथक् । पाठायाःसागुरोःपीताद्वयस्यशारदस्य च ॥ जलेक्षुमद्यसिकताशनैर्लवणपिष्टकान् । सान्द्रमेहान्क्रमात्घ्नन्तिक्काथाश्चाष्टौसमाक्षिकाः ॥ २११ ॥

सहत युक्त पारिजातका काढ़ा उदक प्रमेह में जयन्तीकाकाढ़ा इक्षुप्रमेह में नींबका काढ़ा सुरा प्रमेहमें चीताकाकाढ़ा सिकताप्रमेहमें कत्थेकाकाढ़ा शनैःप्रमेहमें पाठा तथा अगरकाकाढ़ालवणप्रमेह में हल्दीतथा दारुहल्दी काकाढ़ा पिष्टप्रमेहमें और छितवनका काढ़ा सान्द्रप्रमेहमें देनाचाहिये २११ ॥

हरीतकीकट्फलमुस्तलोध्रापाठाविड़ङ्गार्जुनधन्वयासः । उभेहरिद्रेतगरंविड़ंगंकन्दं चशालार्ज्जुनदीपकाश्च ॥ दार्व्वीविडङ्गःखदिरोधवश्चसुराङ्ककुष्ठागुरुचन्दनानि । दार्व्यग्निमन्थौत्रिफलावचाचपाठाचमूर्वाचतथाश्वदंष्ट्रा ॥ वचाह्युशीराण्यभयागुडूचीवृषंशिवाचित्रकसप्तपर्णाः । पादैःकषायाःकफमेहविघ्नैर्दशोपदिष्टामधुमंप्रयुक्ताः ॥ २१२ ॥

हड़ कायफल मोथा तथा लोध १ पाठा बायबिड़ंग अर्जुन तथा धमासा २ हल्दी दारुहल्दी तगर तथा बायबिड़ंग ३ कदंब शाल अर्जुन तथा अजवाइन ४ दारुहल्दी बायबिड़ंग कत्था तथा धवई ५ देवदारु कूट अगर तथा चन्दन ६ दारुहल्दी अरणी त्रिफला तथा बच ७ पाठा मरोरफली तथागुखुरू ८बच खस हड़ तथा गिलोय ९ और बांसा हड़ चीता तथा छितवन इनदशोंकाढ़ों में से किसीको भी सहत डालकर पीनेसे कफज प्रमेह का नाश होताहै ॥ २१२ ॥

सुशीरलोध्रार्ज्जुनचन्दनानामुशीरमुस्तामलकाभयानाम् । पटोलनिम्बामलकामृतानांमुस्ताभयामुष्ककवृक्षकाणाम् ॥ लोध्राम्बकालीयकधातकीनांविश्वार्ज्जुनैलानिविशोत्पलनाम् । शिरीषधान्यार्ज्जुनकेशराणांप्रियंगुपद्मोत्पलकिंशुकानाम् ॥ अश्वत्थपाठासनवेतसानांकटङ्कटेर्य्युत्पलमुस्तकानाम् । पैत्तेषुमेहेषुदशोपदिष्टाःकषाययोगामधुसंप्रयुक्ताः ॥ २१३ ॥

खस लोध अर्जुनतथाचन्दन १खस मोथा आमला तथा हड़ २पर्व्वल नींब आमला तथा गिलोय ३ मोथा हड़ तथा घंटा पाटला ४ लोध आमकी छाल दारुहल्दी तथा धवई ५ सोंठ अर्जुन इलायची शिरस तथा उत्पल ६ शिरस धनियां अर्जुन तथा नागकेशर ७ प्रियंगु कमल उत्पल तथा कसूम ८ पीपलकी छाल पाठा पीतशाल तथा वेत ९ दारुहल्दी उत्पल तथा मोथा १० यह दशोंकाढ़े सहत डालकर पीनेसे पित्तज प्रमेहोंको नाश करतेहैं ॥ २१३ ॥

कफमेहहरक्काथसिद्धंसर्पिःकफेहितम् । पित्तमेहघ्ननिर्य्यूहसिद्धंपित्तहरंघृतम् ॥ २१४॥

कफ प्रमेह नाशक काढ़ोंके द्वारा पाक कियाहुआ घी कफ प्रमेहोंमें और पित्त प्रमेह नाशककाढ़ों के द्वारा पाक कियाहुआ घी पित्तज प्रमेहोंमें हितकारी है ॥ २१४ ॥

काम्पिल्लसप्तछदशालजानिवैभीतरोहीतककौटजानि । पटोलकालीयगदागुरूणिक्षौद्रेणलिह्यात्कफपित्तमेही ॥ २१५ ॥

कबीरा छितवन शाल बहेड़ा लाल करंज कुरैया पर्व्वल दारुहल्दी कूट और अगर इन सबके चूर्ण को सहत के साथ चाटने से कफज और पित्तज प्रमेह शांत होतेहैं ॥ २१५ ॥

दूर्व्वाकसेरूपूतिककुम्भीकल्लवशैवलम् । जलेनकथितंपीतंशुक्रमेहहरंपरम् ॥ त्रिफलारग्वधद्राक्षाकषायोमधुसंयुतः । पीतोनिहन्तिफेनाभंप्रमेहन्नियतंनृणाम् ॥ अश्वत्थाच्चतुरंगुल्यांन्यग्रोधादेःफलत्रयात् । सरक्तसारमञ्जिष्ठाः क्काथःपञ्चसमाक्षिकाः ॥ मधुनात्रिफलाचूर्णमथवाश्मजतूद्भवम् । लेहजम्बाभयोत्थंवा लिहेन्मेहनिवृत्तये ॥ कटङ्कटेरीमधुकत्रिफलाचित्रकैःसमः । सिद्धःकषायःपातव्यः प्रमेहानांविनाशनः ॥ २१६ ॥

दूब कसेरू करंजुआ पान मोथा तथा शिवार इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे शुक्र प्रमेह का

नाश होताहै त्रिफला अमलतास तथा दाख इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे फेन प्रमेह का नाश होताहै पीपल का काढ़ा संभालूकाकाढ़ा न्यग्रोधादि गण का काढ़ा त्रिफलाका काढ़ा अथवा लाल चन्दन तथा मजीठका काढ़ा यह पांचों सहत युक्त काढ़े क्रमसे नील प्रमेह हारिद्र प्रमेह फेनप्रमेह क्षारप्रमेह और मंजिष्ठाप्रमेह इनसबको नाश करतेहैं त्रिफलाका चूर्ण शिलाजीत काचूर्ण लोहका चूर्ण अथवा हडका चूर्ण सहतके साथ चाटने से प्रमेहोंका नाश होताहै दारुहल्दी मुलहठी त्रिफला और चीता इन सबके काढ़ेके पीनेसे प्रमेहोंका नाश होताहै ॥ २१६ ॥

फलत्रिकंदारुनिशांविशालांमुस्तांचनिःक्वाथ्यनिशांशकल्कम् । पिबेत्कषायंमधुसंप्रयुक्तंसर्व्वप्रमेहेषुसमुच्छ्रितेषु ॥ इतिफलत्रिकादिक्वाथः ॥ २१७ ॥

त्रिफला दारुहल्दी इन्द्रायन मोथा इनके काढ़ेमें हल्दीका चूर्ण तथा सहत छोड़कर पीनेसे सब प्रमेहोंका नाश होताहै इति त्रिफलादि क्वाथ ॥ २१७ ॥

गोभक्षितान्यवान्मूत्रभावितान्केवलानपि । चित्रकोदद्रिवर्नीखादेन्निम्बमुद्गरसेनवा भक्षयीताम्बुनामांसप्रमेहीयवपिष्टकम् ॥मेदोघ्नावद्धमूत्राश्चसमाःसर्व्वेषुधातुषु। यवास्तस्माद्विशिष्यन्तेप्रमेहेषुविशेषतः ॥ २१८ ॥

गौके खायेहुए जौओंको गोमूत्रमें सातदिन तक भावना देकर अथवा केवल जौओंको चितकबरी गौके मट्ठेके साथ नींबके काढ़ेके साथ या मूंगके यूषके साथ खानेसे प्रमेहका नाश होताहै प्रमेह वाला महीने भरतक जलके साथ जौकी पिट्ठीको खाय क्योंकि जौ मेदके नाश करने वाले मूत्रके रोकने वाले और धातुओंके समकरनेवाले होतेहैं इसलिये प्रमेहोंमें जौ विशेष करके हितकारी है ॥ २१८ ॥

त्रिकटुत्रिफलापाठामूलंशोभाञ्जनस्यच । विडङ्गतण्डुलाहिंगुतथाकटुकरोहिणी ॥ बृहतीकण्टकारीचहरिद्रेद्वेजमानिका । केवूकंशालपर्णीचतथातिविषचित्रकौ ॥ सौवर्च्चलंजीरकञ्चहवुषाधान्यमेवच । एषांकर्षप्रमाणञ्चश्लक्ष्णाचूर्णञ्चकारयेत् ॥ यवशक्तुपलंचनवतिद्वितयाधिकाम् । घृततैलमधूनाञ्चप्रत्येकंचपलानिषट् ॥ एभिःकर्षप्रमाणञ्चप्रत्यहंमोदकंसुधीः।भक्षयेन्नाशयेदुग्रान्प्रमेहानतिदारुणान्।।इतित्रिकटुकाद्योमोदकः२१९

त्रिकटु त्रिफला पाठा सहजनकी जड़ वायविड़ंग हींग कुटकी दोनों भटकटैया हल्दी दारुहल्दी अजवाइन केवुक शालिपर्णी अतीस चीता कालानोन जीरा हाऊबेर और धनियां इन सब के एक २ तोले चूर्ण जौके सत्तू ९२ पल घी तेल तथा सहत चौबीस २ तोले इन सबको एकमें मिलाकर तोले तोलेभरके लड्डूबनावे इनकेखानेसे बहुत भयंकरभी प्रमेहोंकानाशहोताहै इतित्रिकटुकादिमोदक२१९

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधासनम् । आम्रङ्कपित्थंजम्बूञ्चप्रियालङ्ककुभन्धवम् ॥ मधूकंमधुकंलोध्रंवरुणंपारिभद्रकम् । पटोलंमेषशृंगीचदन्तीचित्रकमाढकी ॥ करञ्जत्रिफलाशक्तुभल्लातकफलानिच । एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ न्यग्रोधाद्यमिदंचूर्णंमधुनासहयोजयेत् । फलत्रयरसंचानुपिबेन्मूत्रंविशुद्ध्यति ॥ एतेनविंशतिर्म्मेहामूत्रकृच्छ्राणियानिच । प्रशमंयान्तियोगेनपिडिकानचजायते ॥ इतिन्यग्रोधाद्यंचूर्णम् २२० ॥

बड़ गूलर पीपल सोना पाठा अमलतास पीतशाल आम कैथा जामन चिरौंजी अर्जुन धवई मौहुआ मुलहठी लोध बरुणा देवदारु पर्वल मेढ़ासिंगी दन्ती चीता अरहड करंजुआ त्रिफला इन्द्रजौ और भिलावां इनसब औषधियोंको समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करे इसचूर्णको सहतके साथचाटकर त्रिफलाके काढ़ेका अनुपान करनेसे मूत्र शुद्ध होताहै बीसों प्रमेह तथा मूत्रकृच्छ्रोंका नाश होता है और पिडिका नहीं उत्पन्न होती हैं इति न्यग्रोधादि चूर्ण ॥ २२० ॥

चूर्णानिलोहत्रिफलासितानांक्षौद्रेणलिह्याच्चपृथक्समंवा । मेहान्समस्तानपिनाशयंतिपीतःकदाचित्स्वरसोगुडूच्याः ॥ २२१ ॥

लोहा भस्म त्रिफला तथा सफेद दूबका चूरा इनसबको पृथक् पृथक् अथवा एकसाथ सहतके साथ चाटने से सब प्रमेहोंका नाश होता है गिलोयके रस में सहत डालकर पीने से प्रमेहोंका नाश होता है ॥ २२१ ॥

त्रिकटुत्रिफलातुल्यंगुग्गुलुञ्चसमांशिकम् । गोक्षुरक्काथसंयुक्तंगुटिकांकारयेद्बुधः ॥ दोषकालबलापेक्षीभक्षयेच्चानुलोमिकाम् । नचात्रपरिहारोऽस्तिकर्म्मकुर्य्याद्यथेप्सितम् ॥ प्रमेहान्वातरोगांश्चवातशोणितमेवच । मूत्राघातंमूत्रदोषंप्रदरञ्चाशुनाशयेत् ॥ इति त्रिकटुगुटिका २२२ ॥

त्रिकटुतथा त्रिफला इनके चूर्णके समान गूगल मिलाकर गोखुरूके काढ़ेमें भावना देकर गोली बनावे दोष काल तथा बलके अनुसार इस गोलीको खाने से प्रमेह बातरोग वातरक्त मूत्राघात मूत्रदोष और प्रदर इनसबका शीघ्रही नाश होताहै और बायु अपने मार्गके अनुसार होजाती है इसके सेवन में स्वेच्छाचारी आहार बिहार करना चाहिये किसी प्रकारका बिचार नहीं है इति त्रिकटु गुटिका २२२ ॥

दाड़िमस्यचबीजानिक्रिमिघ्नस्यचतण्डुलाः । रजनीचविकाजाजींनागरंत्रिफलाकणा॥त्रिकण्टकस्यचफलंयवानीधान्यकंतथा । वृक्षाम्लचविकालोध्रसिन्धूद्भवसमाहितैः ॥ कल्कैरक्षसमैरेभिर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् । भोज्येपानेप्रदातव्यंसर्व्वर्तुषुचमात्रया ॥ प्रमेहान्विंशतिंचैवमूत्रघातन्तथाश्मरीम् । कृच्छ्रंसुदारुणञ्चैवहन्यादेवनसंशयः ॥ विबन्धानाहशूलघ्नंकामलज्वरनाशनम् । दाड़िमाद्यंघृतञ्चैतदश्विभ्यांपरिकीर्त्तितम् ॥ इति दाड़िमाद्यंघृतम २२३ ॥

अनारके बीज बायबिड़ंग हल्दी चव्य कालीजीरी सोंठ त्रिफला पीपल गोखुरू अजवाइन धनियां चूका चव्य लोध और सेंधानोन इनसबके तोलेभर कल्कके द्वारा विधि पूर्वक चौंसठ तोले घीको पाककरे इस घीको सब ऋतुओंमें मात्राके अनुसार भोजन और पान करनेसे बीसोंप्रमेहमूत्राघात पथरी अत्यन्त कठिन मूत्रकृच्छ्र विबंध आनाह शूल कामला और ज्वर का नाश होताहै इति दाड़िमादि घृत ॥ २२३ ॥

श्वदंष्ट्रासकणामुस्तागुडूचीफल्गुपल्लवाः । दर्भाङ्कुरास्तुगण्डीरीरोहषस्यचपल्लवाः ॥ कालापुनर्नवाश्यामासारिवादेवदारुच । पिप्पलीशृंगवेरञ्चविड़ङ्गंमरिचानिच ॥ पाठाकम्पिल्लकंभार्गीद्वेहरिद्रेनिदिग्धिका । एरंडमूलंदंतीचचित्रकंकटुरोहिणीएतानिसमभा

गानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ यावन्त्येतानिचूर्णानितैस्तावत्स्यादयोरजः ॥ ततोविडालापदकंपिबेदुष्णेनवारिणा । अलाभेचापिमद्यानांप्रमेहान्हन्तिविंशतिम् ॥ श्वयथुञ्चतथार्शांसिपाण्डुरोगंहलीमकम् । उदराण्यथशूलानिप्लीहानंचापकर्षति ॥ एभिर्गोमूत्रपिष्टैस्तुगुटिकाःकारयेद्भिषक् । रोगेष्वेतेषुमुख्याःस्युर्बलमांसविवर्द्धनाः ॥ इतिगोक्षुरकादिचूर्णगुटिका ॥ २२४ ॥

गोखुरू पीपल मोथा गिलोय कठियागूलर के पत्ते दर्भके अंकुर मजीठ रोहिपके पत्ते नील गदापूरना काला निसोथ सारिवा देवदारु पीपल सोंठ वायविड़ंग मिर्च पाठा कबीला भारंगी हल्दीदारुहल्दी भटकटैया अरंडकीजड़ दन्ती चीता और कुटकी इनसब औषधियों को समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करे और सब चूर्ण की बराबर लोहेका चूर्ण मिलावे इस चूर्णको तोलेभर लेकर मद्य के साथ और मद्य न मिलेतो गरमजलकेसाथ पानकरे इसकेद्वारा बीसों प्रमेह सूजन बवासीर पांडुरोग हलीमक उदरशूल और प्लीहाकानाशहोताहै ऊपर कहीहुई सब औषधियोंको गोमूत्रमें पीसकर गोलीबनाकर सेवन करनेसे ऊपर कहेहुए सब रोग नष्ट होतेहैं और बल तथा मांसकी वृद्धि होतीहै इतिगोक्षुरादि चूर्ण गुटिका ॥ २२४ ॥

कण्टकार्य्यागुडूच्याश्चसंहरेचशतंशतम् । संकुट्यादूखलेविद्वांश्चतुर्द्रोणेऽम्भसःपचेत् ॥ तेनपादावशेषेणघृतप्रस्थंविपाचयेत् । त्रिकटुत्रिफलारास्नाविडङ्गान्यथचित्रकम् ॥ काश्मर्याणांचमूलानिपूतिकस्यत्वगेवच । कलिंगइतिसर्वाणिसूक्ष्मपिष्टानिकारयेत् अक्षमात्रांपिबेत्प्राज्ञःशालिभिःपयसाहितैः । प्रमेहंमधुमेहंचमूत्रकृच्छ्रम्भगन्दरम् ॥ आलस्यंचान्त्रवृद्धिंचकुष्ठरोगंविशेषतः । क्षयञ्चैवनिहन्त्येतन्नाम्नासिंहामृतंघृतम् ॥ इति सिंहामृतंघृतम् ॥ २२५ ॥

चारसौ तोले भटकटैया और गिलोयलेकर ४०९६ तोले जलमें पाककरे फिर चौथाई बाकीरह जानेपर छानले इसकाढ़ेके साथ ६४ तोले घीको त्रिकटु त्रिफला रासना बायबिड़ंग चीता खंभारी कीजड़ करंजकीछाल और इन्द्रजौ इनसबका कल्कडालकर बिधि पूर्वक पाककरे १ तोले इसघी को खाकर दूधभातका भोजनकरे इस्से प्रमेह मधुप्रमेह मूत्रकृच्छ्र भगन्दर आलस्यअन्न वृद्धि कुष्ठऔर क्षयरोगका नाशहोता है इति सिंहामृतघृत ॥ २२५ ॥

दशमूलंकरञ्चौद्वौ देवदारुहरीतकी । वर्षाभूर्वरुणोदन्ती चित्रकंसपुनर्नवम् ॥ सुधानीपकदंबाश्चविल्लंभल्लातकानिच । शटीपुष्करमूलंचपिप्पलीमूलमेवच ॥ पृथग्दशपलान्भागानेतांस्तोयोर्म्मणेपचेत् । यवकोलकुलत्थानांप्रस्थंप्रस्थंविपाचयेत् ॥ तेन पादावशेषेणघृतप्रस्थंपचेद्भिषक् । निचुलंत्रिफलाभार्गीरोहिषंगजपिप्पली ॥ शृङ्गवेरविड़ङ्गानिचव्यंकम्पिल्लकंतथा । गर्भेणानेनतत्सिद्धंपाययेत्तुयथाबलम् ॥ एतद्धान्वन्तरंनाम विख्यातंसर्प्पिरुत्तमम् ।कुष्ठप्रमेहगुल्मांश्चश्वयथुंवातशोणितम् ॥ प्लीहोदराणिचार्शांसि विद्रधिंपिड़िकाश्चयाः । अपस्मारंतथोन्मादंसर्प्पिरेतन्नियच्छति॥पृथक्तोयोर्म्मणेह्यत्रपचेद्रव्याच्छतंशतम् ॥ शतत्रयाधिकेतोयेऽप्युत्सर्गःक्रमतोभवेत्।इतिधान्वन्तरंघृतम् २२६॥

दशमूल दोनों करंज देवदारु हड़ सफेद गदापूर्णा वरुणा दन्ती चीता लाल गदापूर्णा सेंहुड़ा दोनों कदम्ब बेल भिलावां कचूर पुष्करमूल तथा पीपलामूल यह सब चालीस २ तोले जौ बेर तथा कुलथी चौंसठ २ तोले इन सब औषधियों में से तिहाई २ लेकर १०२४ तोले जलमें अलग २ पाककरे चौथाई बाकी रहजाने पर काढ़ेको छानले फिर इस सब काढ़ेके साथ ६४ तोले घीको समुद्र फल त्रिफला भारंगी रोहिष गजपीपल सोंठ वायविड़ंग चव्य तथा कबीला इन सबका कल्कडाल कर विधि पूर्वक पाककरे बलके अनुसार इस घीके पीनेसे कुष्ठ प्रमेह गुल्म सूजन वातरक्त प्लीहा उदर बवासीर विद्रधि पिड़िका मिर्गी और उन्मादका नाश होताहै इति धान्वन्तर घृत ॥ २२६ ॥

अर्जुनपटोलनिम्बैःसवचादीप्यकरसासमञ्जिष्ठैः। भल्लातकागुरुघनैःसगदानलचन्दनोशीरैः ॥ गोक्षुरकसोमवल्कैर्नवपटोलैर्हरिद्रयात्रिफला । अश्मन्तकार्जुनाभ्यांदीप्यकयुक्तेनचैवलोध्रेण ॥ मञ्जिष्ठातिविषाभ्यांकल्ककषायैःपचेत्तैलम् । कफवातोत्थेमेहे पित्तकृतेसाधयेत्सर्पिःइतिअर्जुनाद्यंघृततैलम् ॥ २२७ ॥

अर्जुन पर्वल नींब वच अजवाइन पाठा मजीठ भिलावां अगर मोथा कूट चीता चन्दन खस गोखुरू सफेद कत्था नवीन पर्वल हल्दी त्रिफला लोनिया अर्जुन अजमोद लोध मजीठ और अतीस इन सब औषधियोंके काढ़े और कल्कके द्वारा घी अथवा तेलको विधि पूर्वक पाककरे कफ और वातसे हुए प्रमेहमें तेल और पित्तसे हुए प्रमेहमें घीका सेवन करे इति अर्जुनादि घृत तैल ॥ २२७ ॥

सारवर्गकषायचतुर्थांशावशिष्टमवतार्यपरिस्राव्यपुनरपनीयसाधयेत् । सिध्यतिचामलकलोध्रपियंगुदन्तीकृष्णायसताम्रचूर्णान्यावपेत् ॥ तदेतददग्धंलेहीभूतमवतार्यानुगुप्तनिदध्यात्। ततोयथायोगमुपयुञ्जीतएषलेहःसर्वमेहानपहन्तिइतिसारलेहः २२८॥

सारवर्गके काढ़ेको चतुर्थांश बाकी रहजानेपर छानलेवे और फिर उसको पाककरे गाढ़ेहोजाने पर आमला लोध प्रियंगु दन्ती लोहभस्म और ताम्रभस्म इनसबके चूर्णकोउसमेंडाले फिरजबवह अवलेहसा होजाय तब उसको उतारले जलने न देवे और ढँककररक्खे इसको मात्राके अनुसार सेवन करनेसे सब प्रमेहोंका नाशहोताहै इति सारलेह ॥ २२८ ॥

गोकण्ठकंसदलमूलफलंगृहीत्वासंकुट्टितंपलशतंक्वथितंतुतोये। पादस्थितेनसलिलेन पलानिदत्वापञ्चाशतंतुविपचेदथशर्करायाः ॥ तस्मिन्घनत्वमुपगच्छतिचूर्णितानिदद्यात्पलद्वयमितानिशुभाजनानि । शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलाजातीयकोषककुभत्रपुसीफलानि ॥ वासापलाष्टकमिहप्रणिधायनित्यम् लेह्यंतुशुद्धममृतंपलसम्मितन्तु । हन्त्याशुमूत्रपरिदाहविबन्धशुक्र कृच्छ्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ इतिगोक्षुरकाद्यवलेहः ॥ २२९ ॥

फल मूल तथा पत्रसहित चारसौतोले गोखुरूको क्वाथकरके चौथाई बाकीरहजानेपर उतारकर छानलेवे फिर उसकाढ़ेमें दोसौतोले शक्कर छोड़कर पाककरे पाककेगाढ़ेहोजानेपर सोंठ पीपल मिर्च नागकेशर तेजपात दालचीनी इलायची जायफल अर्जुन तथा खीरेकेबीज आठआठतोले औरबांसा ३२तोले इनसबकेचूर्णकोमिलाकर उतारलेवे ४ तोले इसअवलेहकेखानेसे मूत्रजदाह मूत्रकारुकना वीर्य्यदोष मूत्रकृच्छ्र पथरी रुधिर प्रमेह और मधु प्रमेहकानाशहोताहै इतिगोक्षुरकाद्यवलेह २२९ ॥

असनञ्चपियालञ्चशालंखादिरकन्तथा। शालवर्गन्तथाग्राह्यंभवेच्चैतद्विचक्षणैः २३०॥
पीतशाल चिरौंजी शाल और कत्था इनसबको शालवर्ग कहतेहैं॥ २३०॥

मधुमेहत्वमापन्नंभिषग्भिःपरिवर्जितम्। योगेनानेनमतिमान्प्रमेहिनमुपाचरेत्॥ मासिशुक्रेशुचौवापिशैलाःसूर्य्यांशुतापिताः। जतुप्रकाशंस्वरसंशिलाभ्यःप्रस्रवन्तिहि॥ शिलाजत्विातिविख्यातंमहाव्याधिनिवारणम्। त्रप्वादीनांतुलोहानांषण्णामन्यतमञ्च यत्॥ ज्ञेयंस्वगन्धतश्चापिषड्योनिप्रथितंक्षितौ। लोहाद्द्रवतितद्यस्मात्शिलाजतुजतु प्रभम्॥ तस्यलोहस्यतद्वीर्य्यंरसंवापिविभर्त्तितम्। त्रपुसीसायसादीनिप्रधानान्युत्तरो त्तरम्॥ यथातथाप्रयोगेऽपिश्रेष्ठंश्रेष्ठगुणाःस्मृताः। तत्सर्वंतिक्तकटुकङ्कषायानुरसंसर म्॥ कटुपाक्युष्णवीर्य्यंचशोषणंछेदनन्तथा। तत्रयत्लघुकृष्णाभंस्निग्धंनिःशर्करंच यत्॥ गोमूत्रगन्धिनीलंवातत्प्रधानंचवक्ष्यते। तद्भावितंसारगणैर्हतदोषंदिनादितः॥ पिबेत्सारोदकेनैवश्लक्ष्णपिष्टंयथाबलम्। जाङ्गलेनरसेनाद्यात्तस्मिन्जीर्णेतुभोजनम्॥ उपयुज्यतुलामेकाममृतस्यास्यजन्मतः। विजित्यमधुमेहाख्यमातंकंरोगकारकम्॥ वपु र्वर्णबलोपेतःशतंजीवत्यनामयः। शतंशतंतुलायांतुसहस्रंदशतौलिकम्॥ भल्लातक विधानेनपरिहारविधिःस्मृतः। मेहंकुष्ठमपस्मारमुन्मादंश्लीपदंपरम्॥ शोषंशोफार्शसी गुल्मंपाण्डुतांविषमज्वरम्। व्यपोहत्यचिरात्कालाच्छिलाजतुनिषेवितम्॥ नसोऽस्ति रोगोयंवापिननिहन्याच्छिलाजतु। शर्कराचिरसंभूतांभिनत्तिचतथाश्मरीम्॥ भावना लोडनेचास्यकर्त्तव्येभेषजैर्हितैः। एवंसमाक्षिकंधातुंतापीजममृतोपमम्॥ मधुरङ्काञ्च नाभासमम्लंवारजतप्रभम्। व्यपोहतिजराकुष्ठमेहपाण्ड्वामयक्षयान्॥ तद्भावितान्कुल त्थांश्चकपोतांश्चविवर्जयेत्। इतिशिलाजतुमाक्षिकयोःप्रयोगः॥ २३१॥

मधुप्रमेहको प्राप्त और वैद्योंसे त्यागकियेहुए प्रमेहवाले रोगीकीचिकित्सा आगेकहेहुए योगसेकरे ज्येष्ठ और आषाढ़में सूर्य्यकी किरणोंसे तपेहुएपर्व्वतोंसे लाखके समान रसटपकताहै इसकोशिला- जीत कहतेहैं यह महा व्याधियोंका नाशकरनेवालाहै सीसासे आदि लेकर लोहपर्य्यन्तछः धातुओं का छः प्रकारका शिलाजीतहोताहै अपनीअपनी गंधिसे उनकी परीक्षा करनी चाहिये लोहे से जो लाखके समान शिलाजीत उत्पन्नहोताहै उसमें लोहेका बीर्य्य और रसभीहोताहै रांगा सीसा और लोहा इनसेजो शिलाजीत उत्पन्नहोताहै उसमें उत्तरोत्तर अधिकगुणहोतेहैं सबप्रकारकेशिलाजीतों में लोहेका शिलाजीत श्रेष्ठ गुणवालाहोताहै सबप्रकारका शिलाजीत तिक्त कटु कुछ कषैला दस्ता- वर पाकमें कटु बीर्य्यमें उष्ण सुखानेवाला और छेदन होताहै इनमेंसेजो शिलाजीत हलका नीला अथवा कृष्णवर्ण स्निग्ध मृत्तिकारहित और गोमूत्र के समान गन्धवाला होताहै सारवर्ग के काढ़े में भावना देकर दोषरहित शिलाजीतको पीसकर सारवर्ग के काढ़ेके साथ प्रातःकाल बलके अनुसार पानकरे।फिर उसके परिपाकहोजाने पर जंगली पशुओंके मांसके रसके साथ भोजनकरे इसप्रकार ४०० तोले शिलाजीतका सेवनकरनेसे अनेक रोगोंके उत्पन्न करनेवाले मधु प्रमेहका नाश होताहै शरीर बल तथा बर्णसे युक्त होताहै और नीरोग होकर सौ बर्षकीअवस्था होतीहै ४०० तोले शिला-

जीतके सेवनसे सौबर्षकी अवस्थाहोतीहै और इसीप्रकार दशबारसेवनकरनेसे १००० बर्षकीअवस्था होजातीहै शिलाजीतके प्रयोगमें भिलावे के प्रयोगकेसमान बिधि करनीचाहिये शिलाजीतकेसेवन से थोडेही कालमें प्रमेह कुष्ठ मिर्गी उन्माद श्लीपद शोष सूजन बवासीर गुल्म पांडु और बिषमज्वर का नाशहोताहै ऐसाकोईभी रोग नहीं है जिसको शिलाजीत ननाशकरसके बहुतकालकी उत्पन्नहुई पथरी और शर्कराकाभी इस्से नाशहोताहै शिलाजीतको हितकारी औषधियोंमें भावनादेकर घोटना चाहिये और इसीप्रकारसे स्वर्ण बर्ण मधुररसयुक्त सोनामक्खी अथवा अम्लरसयुक्त चांदीके समान बर्णवाली रूपामक्खीके सेवनसे ज्वर कुष्ठ प्रमेह पांडु और क्षयकानाशहोताहै इनसब प्रयोगोंमें कुलधी और कबूतरकामांस त्यागकरदेवे इतिशिलाजीत माक्षिकप्रयोग समाप्त ॥ २३१ ॥

प्रमेहपिड़िकानांप्राकार्य्यंरक्तावसेचनम् । पाटनञ्चविपक्कानांतासांपानेप्रशस्यते॥ क्काथोवनस्पतेर्व्वास्तमूत्रंतीक्ष्णञ्चशोधनम् । एलादिकेनकल्केनतैलंव्रणञ्चरोपणम् ॥ आरग्बधादिनाक्काथंकुर्य्यादुद्वर्त्तनानिच । शालसारादिनासेकान्भोज्यादींश्चगणकादिना ॥ २३२ ॥

प्रमेह पिड़िकाओंमें पहले रुधिर निकलवाना चाहिये और पिड़िकाओंके पकजानेपर उनकोचिरवाना चाहिये वरगद आदि बनस्पतियोंका काढा पीना चाहिये और बकरेकामूत्र आदितीक्ष्णसंशोधक औषधसेवन करनीचाहिये एलादि गणके कल्कके द्वारा पाक कियाहुआ तेल घावोंके भरने के लिये लगानाचाहिये आरग्बधादिगणके काढेसे उबटन शालसारादिगणके काढेसेसींचना और पिप्पल्यादि गणके काढेसे भोजनादिका प्रयोग करनाचाहिये ॥ २३२ ॥

प्रमेहीनोयदामूत्रमनाविलमपिच्छिलम्। विशदंतिक्तकटुकंतदारोग्यंप्रचक्षते ॥ इति प्रमेहपिड़िकानिदानचिकित्साधिकारः ॥ २३३ ॥

जब प्रमेहवालेकामूत्र निर्मल सचिक्कणतारहित और तिक्त कटुरसयुक्तहोय तो आरोग्य जानना चाहिये इति प्रमेह पिड़िका निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ २३३ ॥

अथ स्थौल्याधिकारः ॥

अव्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाहारसेविनः । मधुरोऽन्नरसप्रायस्नेहान्मेदोविवर्द्धते ॥ मेदसावृतमार्गत्वात्पुष्यन्त्यन्येनधातवः । मेदस्तुचीयतेतस्मादशक्तःसर्वकर्म्मसु ॥ क्षुद्रश्वासतृषामोहस्वप्नक्रथनसादनैः । युक्तःक्षुत्स्वेददौर्गन्ध्यैरल्पप्राणोऽल्पमैथुनः ॥ मेदस्तुसर्वभूतानामुदरेह्यस्थितम् । अतएवोदरेवृद्धिःप्रायामेदस्विनोभवेत् २३४ ॥

स्थूलताका अधिकार ॥

व्यायामरहित दिनमें सोनेवाले और कफकारी बस्तुओं के खानेवाले मनुष्यके भोजन कियेहुए अन्नकारस मधुरहोजाताहै इसलिये स्नेहकी अधिकतासे मेद बढताहै और मेदकेद्वारा स्रोतोंके ढक जानेसे अन्यधातु नहीं पुष्टहोती है तथा मेद इकट्ठाहोजाताहै इसहेतुसे मनुष्य सबकार्य्योंमें असमर्थ होजाताहै इसरोगमें क्षुद्र श्वास तृषा मोह निद्राकी अधिकता श्वासका रुकना शरीरकी शिथिलता क्षुधाकीअधिकता पसीनेमें दुर्गन्धि बलकानाश और मैथुन में सामर्थ्यका कमहोना यह सब लक्षण होतेहैं सब प्राणियों के उदरमेंही मेदरहताहै इसलियेप्रायःमेदवालेकापेटहीबढताहै ॥ २३४ ॥

मेदसाटत्तमार्गत्वाद्वायुःकोष्ठेविशेषतः। चरन्सन्धुक्षयत्यग्निमाहारंशोषयत्यपि॥ तस्मात्सशीघ्रंजरयत्यहारञ्चापिकाङ्क्षति। विकारांश्चाश्नुतेघोरान्कांश्चित्कालविप र्ययान्॥ एतावुपद्रवकरौविशेषादग्निमारुतौ। एतौहिदहतःस्थूलंवनदावोनलंयथा॥ मेदस्यतीवसंवृद्धेमहसैवानिलादयः। विकारान्दारुणान्कृत्वानाशयन्त्याशुजीवितम्॥ मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चतास्फिगूदरस्तनः। अयथोपचयांन्मेदोनरोऽतिस्थूलउच्यते॥ स्थूलेस्युर्दुस्तराःकुष्ठाःविसर्प्पाःसभगन्दराः। ज्वरातीसारमेहार्शःश्लीपदापचिकाम लाः॥ मेदसःस्वेददौर्गन्ध्याज्जायन्तेजन्तवोऽणवः॥ २३५॥

मेदके द्वारा स्रोतोंके रुक जाने से कोष्ठमें विशेष करके चलती हुई बायु जठराग्निको दीप्त करती है और भोजनको सुखाती है इसलिये थोड़ेही देरमें भोजन पचजाता है और फिर क्षुधा लगती है इसप्रकार क्षुधाके समयके बिपरीत होनेसे अनेक प्रकारके कष्टकारी रोग उत्पन्न होते हैं यह अग्नि और बायुही दोनों बिशेष करके उपद्रव करनेवाले हैं जैसे बायु और दावानल वनको जलाते हैं उसी प्रकार यह दोनोंभी स्थूल मनुष्यको नष्ट करती हैं मेदके बहुत बढ़जाने पर बातादिक दोष कुपित होकर अनेक प्रकारके भयंकर रोगों को उत्पन्न करके शीघ्रही जीवनका नाश करते हैं मेद तथा मांसके बहुत बढ़जाने से जिसके नितंब उदर और स्तन हिलने लगें और शरीर की वृद्धि प्रमाण से अधिक होय उसको अति स्थूल कहते हैं स्थूल मनुष्यके अत्यन्त कुष्ठकारी कुष्ठ बीसर्प भगन्दर ज्वर अतीसार प्रमेह बवासीर श्लीपद अपची तथा कामला यहसबरोग होतेहैं और पसीनेमें दुर्गन्धिके होनेसे बहुत छोटे २ कीड़े उत्पन्न होते हैं॥ २३५॥

अथ स्थौल्यचिकित्सा॥

पुराणःशालयोमुद्गाःकुलत्थोद्दालकोद्रवाः। लेखनावस्तयश्चैवसेव्यामेदस्विनासदा॥ धूम्रपानंतथाक्रोधोरक्तमोक्षणमेवच। जीर्णेचभोजनंकार्य्ययवगोधूमयोःसदा॥ उपवा सोऽसुखाशय्यासत्वौदार्यंतमोजयः। सन्तर्पणकृतैर्दोषैःस्थौल्याद्युक्त्याविमुच्यते॥ श्रम चिन्ताव्यवायाध्वक्षौद्रजागरणप्रियाः॥हन्त्यवश्यमतिस्थौल्यंयवःश्यामाकभोजनः २३६

स्थूलताकी चिकित्सा॥

मेद वालेको पुराने चावल मूंग कुलथी बनकोदों तथा कोदोंका सेवन कराना चाहिये और कृशता कारक बस्तु देनी चाहिये धूम्रपान क्रोध रुधिर निकलवाना और भोजनके परिपाक होजाने पर जौ तथा गेहूंके पदार्थोंका भोजन करना मेदवालेको हित है उपबास सुख न देनेवाली शय्या सतोगुण उदारता और तमोगुणका न होना इनसबसे संतर्पण के दोषोंसे हुई स्थूलताका नाश होता है श्रम चिंता मैथुन मार्गगमन सहत रात्रिमें जागना और जौ तथा सामाका भोजन इनसब के द्वारा अत्यन्त स्थूलताका नाश होताहै॥ २३६॥

सचव्यजीरकव्योषहिङ्गुसौवर्च्चलानलाः। मस्तुनाशक्तवःपीतामेदोघ्नावह्निदीपनाः॥ फलत्रयंत्रिकटुकंसतैलंलवणान्वितम्। षण्मासादुपयोगेनकफमेदोऽनिलापहम्॥ विड ङ्गनागरक्षारःकाललोहरजोमधु। यवामलकचूर्णन्तुयोगोऽतिस्थौल्यनाशनः॥ मूलंवा

त्रिफलाचूर्णमधुयुक्तंमधूदकम् । विल्वादिपञ्चमूलस्यप्रयोगःक्षौद्रसंयुतः ॥ अतिस्थौल्य हरप्रोक्तोमण्डलंसेवितोध्रुवम् । कर्कशदलमग्निसलिलंशतपुष्पाहिंगुसंयुक्तम् ॥ पुटके निहन्तिनियतंसर्वभवांमेदसांवृद्धिंक्षारंवातारिपत्रस्यहिंगुयुक्तंपिवेन्नरः मेदोवृद्धिविना शायभक्तंमण्डसमन्वितम् ॥ गवेधुकानांपिष्टानांयवानाञ्चाथशक्तवः । सक्षौद्रत्रिफला क्वाथःपीतामेदोहरामताः ॥ गुडूचीत्रिफलाक्वाथस्तथालोहरजोऽन्वितः । अश्मजंमहि षाक्षंवापित्तेनैवविधिनापचेत् ॥ अतिमुक्ताद्बीजमध्यंमधुलीढंहन्त्युदरवृद्धिम् ॥ २३७ ॥

चव्य जीरा त्रिकटु हींग कालानोन और चीता इनसबके चूर्णको सत्तुओं में मिलाकर दही के तोडके साथ पीनेसे मेदका नाशहोताहै और अग्निदीप्तहोती है त्रिफला तथा त्रिकटुको तेल तथा नोनके साथ छः महीने तक सेवन करनेसे कफ मेद और बायुका नाश होता है बायबिड़ंग सोंठ जवाखार कान्तिसार जौ तथा आमला इनसबको सहतके साथ खाने से अत्यन्त स्थूलताका नाश होता है मूली अथवा त्रिफलेका चूर्ण सहतके साथ सेवन करनेसे पानी में सहत मिलाकर पीनेसे या बिल्वादि पंचमूलका चूर्ण सहतके साथ खानेसे स्थूलताका नाश होता है कबीलेकी पत्ती चीता सुगन्धबाला सौंफ तथा हींग इनसबका पुटपाक करके सेवन करनेसे सबप्रकारके मेदकी वृद्धि नष्ट होती है अरंडके पत्तोंके क्षारमें हींग मिलाकर सेवन करके मांड़ सहित भात सेहुँआ के सत्तू अथवा जौके सत्तू खानेसे मेदकी वृद्धिका नाश होता है सहत युक्त त्रिफलेका काढ़ा पीनेसे अथवा गिलोय तथा त्रिफले के काढ़े में लोहका चूर्ण डालकर पीने से मेदका नाश होता है शिलाजीत अथवा गूगलको बिधिपूर्व्वक पाककरके सहतके साथ चाटने से अथवा कुंदके बीजोंको सहतके साथ चाटने से उदर वृद्धिका नाश होताहै ॥ २३७ ॥

मधुनाचित्रकमूलंतथैवहितभोजनोभुंक्ते । वद्धोरुवूकमूलंमधुदिग्धंस्थाप्यतेनिशास कलाम् ॥ तस्यसलिलस्यपानाज्जठरेवृद्धिंशमंयाति । प्रातर्म्मधुयुतंवारिसेवितंस्थौल्य नाशनम् ॥ उष्णमन्नस्यमण्डंवापिवन्कृशतनुर्भवेत् । वदरीपत्रकल्केनपेयाकाञ्जिकसा धिता ॥ स्थौल्यनुत्स्यादग्निमन्थरसक्वाथःशिलाजतु । शैलेयकुष्ठागुरुदेवदारुकौन्तीस मुस्तान्यथपञ्चपत्रैः ॥ श्रीवासपृक्काखरपुष्पदेवपुष्पंतथासर्वमिदंप्रपिष्य । धुत्तूरपत्रस्य रसेनगाढ़मुद्वर्त्तनंस्थौल्यहरंप्रदिष्टम् ॥ २३८ ॥

चीताको सहतकेसाथ चाटकर हितकारी बस्तु भोजन करनेसे अथवा अरंडकी जड़को रात्रिभर सहतमें भिजोकर उसकेरसके पीनेसे उदरवृद्धिकानाशहोताहै प्रातःकाल सहतडालकर जलपीने से अथवा गरमगरम मांड़ पीनेसे स्थूलताकानाशहोताहै बेरकी पत्तीके कल्क और कांजी के द्वारा पेया बनाकर पीनेसे अथवा अरणीके रस या काढ़ेके साथ शिलाजीतके सेवनसे स्थूलताका नाशहोताहै शिलाजीत कूट अगर देवदारु गगनधूल मोथा पंचपल्लव सरलवृक्ष पिण्डशाक ब्राह्मी और लौंग इन सबकोधतूरेके रसमें पीसकर खूबउबटनलगानेसे स्थूलताका नाशहोताहै ॥ २३८ ॥

अमृतात्रुटिवेल्लवत्सकंकलिपथ्यामलकानिगुग्गुलुः ॥ क्रमवृद्धिमिदंमधुप्लुतंपिडि कास्थौल्यभगन्दरान्जयेत् । इतिअमृतादिगुग्गुलुः ॥ २३९ ॥

गिलोय १ भाग छोटीइलायची २ भाग वायबिड़ंग ३ भाग कुरैया ४ भाग इन्द्रजौ ५ भाग हड़

६ भाग आमला ७ भाग और गूगल ८ भाग इनसबको सहत में मिलाकर सेवनकरने से पिड़िका स्थूलता और भगन्दर का नाश होता है इति अमृतादि गूगल ॥ २३९ ॥

व्योषाग्नित्रिफलामुस्तविड़ङ्गैर्गुग्गुलुंसमम् । खादन्सर्वाञ्जयेद्व्याधीन्मेदःश्लेष्मामवातजान् ॥ इतिदशाङ्गोगुग्गुलुः ॥ २४० ॥

त्रिकटु चीता त्रिफला मोथा बायविड़ंग और गूगल इनसबको समभाग लेकर खाने से मेद कफ और आमबातजनित सबरोगोंका नाश होताहै इति दशांग गुग्गुल ॥ २४०

त्र्यूषणाग्निघनवेल्लवचाभिभक्षयन्समघृतंमहिषाक्षम् । आशुहन्तिकफमारुतमेदोदोषजान्बलवतोऽपिविकारान् ॥ २४१ ॥

त्रिकटु चीता मोथा बायबिड़ंग और बच इनसबके साथ समभाग घृत सहित गूगल खानेसे कफ बात और मेदके दोषसेहुए बलवान् रोगभी शीघ्रही नष्ट होते हैं ॥ २४१ ॥

गुग्गुलुस्तालमूलीचत्रिफलाखदिरंवृषम् । त्रिवृतालम्बुषाशुण्ठीनिर्गुण्डीचित्रकस्तथा ॥ एषांदशपलान्भागांस्तोयेपञ्चाढ़केपचेत् । पादशेषंततःकृत्वाकषायमवतारयेत् ॥ पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहंसुचूर्णितम् । पुराणसर्पिषःप्रस्थंशर्कराष्टपलान्वितम् ॥ पचेत्ताम्रमयेपात्रेसुशीतेचावतारिते । प्रस्थार्द्धंमाक्षिकंदेयंशिलाजतुपलद्वयम् ॥ एलात्वचःपलार्द्धञ्चविड़ङ्गानिपलत्रयम् । मरीचाञ्जनकेशोद्रेद्विपलञ्चफलान्वितम् ॥ पलद्वयन्तुकासीसंसूक्ष्मचूर्णीकृतंबुधैः । चूर्णंदत्त्वासुमथितंस्निग्धेभाण्डेनिधापयेत् ॥ ततःसंशुद्धदेहस्तुभक्षयेदक्षमात्रकम् । अनुपानंपिवेत्क्षीरंजाङ्गलानांरसंतथा॥वातश्लेष्महरंश्रेष्ठंकुष्ठमेहोदरापहम् । कामलांपाण्डुरोगञ्चश्वयथुंसभगन्दरम् ॥ मूर्च्छामोहविषोन्मादगराणिविषमाणिच । स्थूलानांकर्षणंश्रेष्ठंमेदुरेपरमौषधम् ॥ कर्षयेच्चातिमात्रेणकुक्षिंपातालसन्निभम् । वल्यंरसायनंमेध्यंवाजीकरणमुत्तमम् ॥ श्रीकरंपुत्रजननंवलीपलितनाशनम् ॥ नाश्नीयात्कदलीकन्दंकाञ्जिकंकरमर्दकम् ॥ करीरंकारवेल्लञ्चककारादिंविवर्जयेत् । इति लोहरसायनम् ॥ २४२ ॥

गूगल मूसली त्रिफला कत्था बांसा निसोथ मुंडी सोंठ निर्गुंडी और चीता इनसबको चालीस चालीस तोले लेकर १२८० तोले जलमें पाककरे जब चौथाई बाकीरहै तब छानलेवे फिर इसकाढ़े में ४८ तोले रुक्म लोह ६४ तोले घी बत्तीस तोले शक्कर मिलाकर तांबे के पात्र में पाककरे फिर पाकको उतारकर शीतल होजानेपर बत्तीस तोले सहत ८ तोले शिलाजीत दो दो तोले इलायची तथा दालचीनी बारह तोले बायबिड़ंग और आठ आठ तोले मिर्च रसौत पीपल त्रिफला तथा हीरा कसीस का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर खूबघोटे इसके उपरान्त उसको चिकने पात्रमें रखदेवे फिर विरेचनादि के द्वारा शरीर को शुद्ध करके एक तोला इस औषधिको खाय और दूध तथा जंगली जीवोंके मांसके रसका अनुपान करे इसके द्वारा वात कफ कुष्ठ प्रमेह उदर कामला पांडुरोग सूजन भगन्दर मूर्च्छा मोह बिषउन्माद गरदोष झुर्री और बालोंका पकना इनसबका नाश होताहै यहऔषध मेदवालों के लिये अत्यन्त हितकारी है इसके सेवनसे कुक्षपाताल के समान नीची होजाती है यह

वलकारी रसायन मेधाकोहित बाजीकरण श्री वर्द्धक और पुत्रजनकहै इस औषध के सेवन करनेमें केलाकन्द कांजी करोंदा करील और करेला आदि ककारादि बस्तुओं को त्यागकरदेवे इति लोह रसायन ॥ २४२ ॥

शालसारादिनिर्यूहंचतुर्थांशावशेषितम्। परिस्रुतंततःशीतंमधुनामधुरीकृतम्॥ फाणितीभावमापन्नंगुडेशोधितमेवच। सूक्ष्मपिष्टानिचूर्णानिपिप्पल्यादेर्गणस्यच॥ एकध्यमावपेत्कुम्भेसंस्कृतेघृतभाविते। पिप्पलीचूर्णमधुभिःप्रलिप्तेचान्तरेशुचौ॥ श्लक्ष्णानितीक्ष्णलोहस्यतनुपत्राणिबुद्धिमान्। खदिराङ्गारतप्तानिबहुशःप्रक्षिपेद्बुधः॥ सुपिधानंततःकृत्वायवपल्वेनिधापयेत्। मासांस्त्रींश्चतुरोवापियावद्वालोहसंक्षयात्॥ ततोयातरसंजन्तुःप्रातःप्रातर्यथाबलम्। उपयुञ्ज्याद्यथायोग्यमाहारंचास्यकल्पयेत्॥ एषस्थूलसमाकर्षेन्नष्टस्याग्नेःप्रशोधनः। शोथघ्नःकुष्ठमेहघ्नोगुल्मपाण्ड्वामयापहः॥ प्लीहोदरहरःशीघ्रंविषमज्वरनाशनः। अभिष्पन्दापहरणोलोहारिष्टोमहागुणः॥ इतिलोहारिष्टः २४३॥

शाल सारादिगण के चौथाई बचेहुए काढ़ेको छानकर सहत मिलाकर मीठाकरे फिर राबके समान होजाने पर शुद्ध गुड़ और पिप्पल्यादि गणका चूर्ण मिलावे इसके उपरान्त पवित्र घीके पात्र में पीपल का चूर्ण और सहत लगाकर उसको रक्खे फिर तीक्ष्ण लोह के बारीक पत्रोंको कत्थे के अंगारों में कई बार तपाकर उस में डाले और उस पात्र के मुखको बन्द करके यवोंके ढेरमें उसपात्रको तीनचारमहीने तक अथवा लोहे के गलनेतक रक्खे इसपीछे रसके सिद्ध होजानेपर प्रातःकाल अग्निबलके अनुसार इसको पिये और यथायोग्य आहार करे इसके सेवनसे स्थूलता मन्दाग्नि सूजन कुष्ठ प्रमेह गुल्म पांडु प्लीहा उदर बिषमज्वर और अभिष्पन्दका शीघ्रही नाशहोताहै इति लोहारिष्ट ॥ २४३ ॥

व्योषचित्रकशिग्रूणित्रिफलांकटुरोहिणीम्। बृहत्यौद्वेहरिद्रेचपाठामतिविषांस्थिराम्॥ हिंगुकेबूकमूलानियवानीधान्यचित्रकम्। सौवर्चलमजाजीञ्चहवुषाञ्चेतिचूर्णयेत्॥ चूर्णतैलघृतक्षौद्रभागाःस्युर्मानतःसमाः। शक्तूनांषोडशगुणेभागसन्तर्पणंपिवेत्॥ प्रयोगात्त्वस्यशाम्यन्तिरोगाःसन्तर्पणोत्थिताः। प्रमेहामूढवाताश्चकुष्ठान्यर्शांसिकामलाः॥ प्लीहापाण्ड्वामयःशोथोमूत्रकृच्छ्रमरोचकः। हृद्रोगोराजयक्ष्माचकासश्वासौगलग्रहः॥ कृमयोग्रहणीदोषःश्वैत्यंस्थौल्यमतीवच। जराणांदीप्यतेवह्निःस्मृतिबुद्धिश्चवर्द्धते॥ व्योषाद्यःशक्तूप्रयोगः॥ २४४॥

त्रिकुट बायबिडंग सहँजन त्रिफला कुटकी दोनोंभटकटैया हल्दी दारुहल्दी पाठा अतीस शालिपर्णी हींग केबुक अजवाइन धनियां चीता कालानोन काला जीरा और हाऊबेर इनसबके चूर्णके सम भाग तेल घी और सहत और १६भागसत्तू इनसबको मिलाकर पिये इसके प्रयोगसे सन्तर्पण जनित रोग प्रमेह मूढ़वात कुष्ठ बवासीर कामला प्लीहा पांडु सूजन मूत्रकृच्छ्र अरुचि हृद्रोग राजयक्ष्मा खांसी श्वास गलग्रह कृमि ग्रहणी श्वेतकुष्ठ तथा अत्यन्त स्थूलता का नाशहोताहै अग्नि दीप्ति होतीहै और स्मृति तथा बुद्धि बढ़ती है इति व्योषादि शक्तुप्रयोग ॥ २४४ ॥

त्रिफलातिविषामूर्वात्रिवृच्चित्रकवासकः। निम्बारग्वधषड्ग्रन्थाशतपर्णनिशाद्वयैः॥

गुडूचीन्द्रासुरीकृष्णाकुष्ठसर्षपनागरैः । तैलमेभिःसमैःपक्कंसुरसादिरसप्लुतम् ॥ पानाभ्यं जनगण्डूषानस्यवस्तिषुयोजितम् । स्थूलतालस्यपाण्ड्वादीन्जयेत्कफकृतान्गदान् ॥ इतित्रिफलाद्यंतैलम् ॥ २४५ ॥

त्रिफला अतीस मरोरफली निसोथ चीता बांसा नींब अमलतास बच छितवन हल्दी गिलोय कुरैया राई पीपल कूट सरसों और सोंठ इनके द्वारा सुरसादिगण के रसकेसाथ विधिपूर्व्वक पाक किया हुआ तेल पान मर्द्दन कुल्ला नस्य और वस्ति क्रियामें प्रयोग करने से स्थूलता आलस्य और पांडु आदिक कफजरोग नष्टहोते हैं इति त्रिफलादितैल ॥ २४५ ॥

चन्दनंकुङ्कुमोशीरप्रियंगुत्रुटिरोचनाः । तुरुष्कागुरुकस्तूरीकर्पूराजातिपत्रिका ॥ जातीकङ्कोलपूगानांलवङ्गस्यफलानिच । नलिकानलदंकुष्ठंहरेणुतगरंप्लवम् ॥ नव्याघ्र नखंस्पृक्कावोलोदमनकंतथा । स्थौणेयकंचोरकञ्चशैलेयंशैलवालुकम् ॥ सरलंसप्तपर्णञ्चलाक्षातामलकीतथा । लामज्जकंपद्मकञ्चधातक्याःकुसुमानिच ॥ प्रपौण्डरीकंकर्चूरंसमांशैःशाणमात्रकैः । महासुगन्धिमित्येतत्तैलप्रस्थेनसाधयेत् ॥ प्रस्वेदमलदौर्गन्ध्य कण्डूकुष्ठहरंपरम् । अनेनाभ्यक्तगात्रस्तुवृद्धःसप्ततिकोऽपिवा ॥युवाभवतिशुक्राढ्यःस्त्री णामत्यन्तवल्लभः । सुभगोदर्शनीयश्चगच्छेच्चप्रमदाशतम् ॥ बन्ध्यापिलभतेगर्भंषण्ढो ऽपिपुरुषायते । अपुत्रापुत्रमाप्नोतिजीवेच्चशरदांशतम् । इतिमहासुगन्धितैलम् २४६ ।

चन्दन केशर खस प्रियंगु छोटी इलायची गोरोचन लोबान अगर कस्तूरी कपूर जावित्री जायफल कंकोल सुपारी लौंग पठारी जटामांसी कूट गगनधूल तगर नागरमोथा नखी व्याघ्रनखी पिंडिकाबोल दौना भटोरी चोरक शिलाजीत एलवालुक सरलकाष्ठ छितवन लाख भुईंआमला कासकी जड़ पद्माक धवई के फूल स्थलकमल और कचूर तीन २ मासे इनसब औषधियोंके द्वारा ६४ तोले तेलका पाककरके सेवन करनेसे स्वेद मल दुर्गन्धि खुजली तथा कुष्ठका नाशहोताहै इसको शरीर में लगाने से सत्तर बर्षका बुड्ढाभी जवान के समान सुन्दर दर्शनीय वीर्य्य युक्त स्त्रियों का अत्यन्त प्रिय और सौ स्त्रियों के साथ गमन करने वालाहोता है बन्ध्याभी गर्भको धारण करती है षंढभी पुरुषार्थी होजाताहै और पुत्ररहित के पुत्रहोताहै और उसकी सौ बर्षतक की आयुहोती है ॥ इति महासुगन्धि तैल ॥ २४६ ॥

अथ कार्श्याधिकारः । तत्रकार्श्यस्यनिदानमाह ॥

वातोरूक्षान्नपानानिलङ्घनंप्रमिताशनम् । क्रियातियोगःशोकश्चवेगनिद्राविनिग्रहः॥ नित्यंरोगोरतिर्नित्यंव्यायामोभोजनाल्पता । भीतिर्धनादिचिन्ताचकार्श्यकारणमीरितम् ॥ लंघनमुपवासःप्रमितमल्पंक्रियातियोगःवमनविरेकाद्यतिविधानंवेगनिद्राविनिग्रहः निद्रानिर्देशोविशोषाय ॥ २४७ ॥

कृशताका अधिकार कृशताका निदान ॥

बायु रूखा अन्न तथा जल लंघन स्वल्प भोजन अधिक बमनादिका प्रयोग शोक मलमूत्रादि वेग तथा निद्राका रोकना सदैव रोगीहोना नित्यमैथुन व्यायाम भोजन की स्वल्पता भय और धनादि की चिन्ता यहसब कृशता के कारण हैं ॥ २४७ ॥

कृशस्यलक्षण माह ॥

शुष्कस्फिगुदरग्रीवाधमनीजालसन्ततिः।त्वगस्थिशेषोऽतिकृशःस्थूलपर्वाननोमतः२४८

कृशका लक्षण ॥

जिसके नितंब उदर तथा ग्रीवा शुष्क होयँ सबशरीर में नसेंदिखाईपडें चर्मतथा हड्डी सूखजायँ और पोरुए तथा मुख स्थूलहोजाय वह अत्यन्त कृशहै ॥ २४८ ॥

अतिकृशस्यकेरोगाभवन्तितानाह । प्लीहकासक्षयःश्वासगुल्मार्शांस्युदराणिच ॥ भृशंकृशंप्रधावन्तिरोगाश्चग्रहणीमुखाः ॥ २४९ ॥

प्लीहा खांसी क्षयश्वास गुल्म बवासीर उदर और ग्रहणी आदिकरोग अत्यन्त कृशमनुष्यकेहोतेहैं२४९॥

कश्चिदन्यःकृशोऽतीवबलवान्दृश्यतेतदा।तत्रहेतुमाहआधानसमयेयस्यशुक्रभागोऽधिकोभवेत् । मेदोभागस्तुहीनःस्यात्सकृशोऽपिमहाबलः ॥ यस्याधानसमयेजनयितुःशुक्रस्याधिक्यंभवति । मेदसोऽल्पतातस्यकृशस्यापिबहुबलमित्यर्थः ॥ २५० ॥

कोई२कृश मनुष्यभी अत्यन्त बलवान्देखाजाताहै इसका कारण यहहैकि जो गर्भाधानके समय पिता के वीर्य्यका भाग अधिक और मेदका भाग स्वल्पहोता है तब वह सन्तान कृशहोनेपरभी अधिक बलवान् होतीहै ॥ २५० ॥

कस्यचित्स्थूलस्यापिताद्दग्बलंनदृश्यते । तत्रहेतुमाह।मेदसस्त्वधिकोयस्यशुक्रभागोऽल्पकोभवेत्॥ सस्निग्धोऽपिसुपुष्टोऽपिबलहीनोविलोक्यते। व्याख्यानंपूर्ववत्॥२५१॥

कोई२ स्थूलभी बलहीन देखेजातेहैं इसका कारण यहहै कि जो गर्भाधानके समय पिताके वीर्य्य की अल्पता और मेदकी अधिकता होती है तब वह सन्तान स्थूल होकर भी बलहीनहोती है२५१ ॥

अथ कार्श्यस्यचिकित्सा ॥

रूक्षान्नादिनिमित्तेतुकृशेयुञ्जीतभेषजम् । बृंहणंबलकृद्वृष्यंतथावाजीकरञ्चयत् ॥ पीताश्वगन्धापयसार्द्धमासंघृतेनतैलेनसुखाम्बुनावा । कृशस्यपुष्टिंवपुषोविधत्तेबालस्यशस्यस्ययथाम्बुवृष्टिः ॥ २५२ ॥

कृशता की चिकित्सा ॥

रूखे अन्न आदिके सेवनसे कृशहुए रोगी को धातुबर्द्धक बलकारी वीर्य्य बर्द्धक और वाजीकरण औषध सेवन करानी चाहिये दूध घी तेल अथवा उष्ण जलके साथ पन्द्रह दिनतक असगन्ध पीने से जैसे जलवृष्टि के द्वारा नवीन वृक्षादि बढ़ते हैं उसीप्रकार इससे कृश मनुष्य का शरीर पुष्ट होताहै ॥ २५२ ॥

अश्वगन्धस्यकल्केनक्वाथेतस्मिन्पयस्यपि । सिद्धंतैलंकृशाङ्गानामभ्यङ्गादङ्गपुष्टिदम् ॥ इतिअश्वगन्धातैलम् ॥ २५३ ॥

असगन्ध के कल्क के द्वारा असगन्ध के क्वाथ और दूध के साथपाककिये हुए तेलके मर्दन से कृश मनुष्यों का शरीर पुष्ट होता है इति अश्वगन्धा तैल ॥ २५३ ॥

पुष्टिकृद्बालरोगोक्तमश्वगन्धाघृतंभजेत्।वाजीकरोदितंतद्वदश्वगन्धाघृतादिकम् २५४

बालरोगों में कहाहुआ अश्वगन्धा घृत और वाजी करण अधिकार में कहाहुआ अश्वगन्धा घृत सेवन करने से शरीर पुष्टहोताहै ॥ २५४ ॥

असाध्यंकार्श्यमाह ॥

स्वभावादतिकार्श्योयःस्वभावादल्पपावकः। स्वभावाद्बलोयश्चतस्यनास्तिचिकित्सितम् ॥ कार्श्यचिकित्सा ॥ २५५ ॥

असाध्य कृशताका लक्षण ॥

जो मनुष्य स्वभावही से अत्यन्तकृश मन्दाग्नि और निर्बल होताहै उसकी चिकित्सा नहीं है इति कृशता चिकित्सा ॥ २५५ ॥

वासादलरसोलेपाच्छङ्खचूर्णेनसंयुतः। विल्वपत्ररसोवापिगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ अलम्बुषाभवंचूर्णंपीतंकाञ्जिकसंयुतम् । दौर्गन्ध्यंनाशयत्याशुदृष्टंमेदोभवंनृणाम् २५६

शंखके चूर्ण के साथ बांसेकारस अथवा बेलपत्री का रस लेपकरने से शरीर की दुर्गन्धि नष्टहोती है मुंडी के चूर्णको कांजीके साथ पीनेसे मेदसेहुई दुर्गन्धिका नाशहोताहै ॥ २५६ ॥

विल्वशिवासमभागालेपाद्भुजमूलगन्धमपहरति। परिणतपीडिकापिपूतिकरञ्जोत्थबीजंवा ॥ चिञ्चापत्रस्वरसंम्रक्षितकक्षादियोजितंजयति। ह्रस्वहरिद्रोद्वर्त्तनमाचिराच्चिरदेहदौर्गन्ध्यम् । शिरीषलामज्जकहेमलोध्रैस्त्वग्दोषसंस्वेदहरःप्रघर्षः। पत्राम्बुलोध्राभयचन्दनानिशरीरदौर्गन्ध्यहरःप्रदेहः ॥ हिलमोचिरसोयुक्तश्चूर्णैरुदधिफेनजैः। प्रलेपेनहरत्याशुदेहदौर्गन्ध्यमुत्कटम् ॥ हरीतकींतुसम्पिष्यगात्रमुद्वर्त्तयेन्नरः। पश्चात्स्नानंप्रकुर्वीतदेहस्वेदप्रशान्तये ॥ हरीतकीलोध्रमरिष्टपत्रंचूतत्वचोदाड़िमवल्कलञ्च। एषोऽङ्गरागःकथितोऽङ्गनानांजङ्घाकषायस्तुनराधिपानाम् ॥ गोमूत्रपिष्टंविनिहन्तिकुष्ठंवर्णोज्वलंगोपयसाचयुक्तम् । कक्षादिदौर्गन्ध्यहरंपयोभिःशस्तंवशीकृद्रजनीद्वयेन ॥ २५७ ॥

बेल की जड तथा हड़को समभाग पीसकर अथवा करंजुए के बीजको पीसकर लेपकरनेसे बगल गन्ध और पकीहुई फुंसियों का भी नाशहोताहै इमलीके पत्तों के रसको बगल में लगाने से दुर्गन्धि का नाशहोताहै जलीहुई हल्दीको पीसकर उबटन लगानेसे शीघ्रही देहकी दुर्गन्धि नाशहोताहै सिरस खस धतूरा तथा दूध इनसबके चूर्णको शरीर में मलने से अथवा तेजपात सुगन्धबाला अगर हड तथा श्वेत चन्दन इनके लेपसे शरीर की दुर्गन्धि का नाशहोताहै समुद्रफेनके चूर्णको हिलसा सागके रसके साथ लेपकरने से उत्कट दुर्गन्धि का नाशहोताहै हड़को पीसकर शरीर में लेपकर स्नानकरनेसे स्वेदका नाशहोता हड़ लोध नींबकीपत्ती आमकी छाल और अनार का बक्कल इनसब को पीसकर लेपकरनेसे स्त्रियों के वर्ण की उत्तमता और राजालोगों के घोड़े आदिपर चढ़ने से होने वाली जंघाओं की बिवर्णता नष्टहोतीहै गोमूत्रके साथ कूट अथवा हरितालको पीसकर लेपकरने से दुर्गन्धि का नाशहोताहै हरताल हल्दी और दारुहल्दी इनसबको गौके दूध में पीसकर लेपकरने से बगल आदिकी दुर्गन्धि नष्टहोतीहै ॥ २५७ ॥

वब्बूलस्यदलैःसम्यग्वारिणापरिपेषितैः। गात्रमुद्वर्त्तयेत्पश्चाद्धरीतक्यासुपिष्टया ॥

भूयउद्वर्त्तनंकृत्वापश्चात्स्नानंसमाचरेत् । प्रस्वेदान्मुच्यतेशीघ्रंततस्त्वेवंसमाचरेत् ॥ विल्वाम्रजम्बूफलपूरकाणांपत्रैः कपित्थस्यदलानुमिश्रैः । आनूपवत्कर्म्मविधानयोगैर्व्व चाविशोध्यावरगन्धहेतोः ॥ पथ्यानखीचन्दनकुष्ठसर्जैःपुनःपुनश्चागुरुशर्क्कराभ्याम् । धूपोजनानांहृदयापहारीविख्यातनामामलयानिलोऽयम् ॥ चण्डांशुगातिलैर्लोध्रशिरीषो शीरकेशरैः । उद्वर्त्तनंभवेत्ग्रीष्मस्वेदकर्म्मनिवारणम् ॥ सुरयासममभयाफलचूर्णमधुना विलिह्यप्रत्यूषम् । स्वेदान्हत्वालभतेपुरुषोऽप्यत्यन्तसौरभ्यम ॥ मल्लीकुसुमाभयकरि लेपोघर्मेविचर्च्चिकदाहे । विकासितपत्रहरिद्रेपर्क्कटिपत्रञ्चदूर्व्वयासहितम् ॥ सम्पिष्यगा त्रलेपाद्धर्म्मविचर्चीशमंयाति । हस्तपादस्रुतौयोज्यंगुग्गुलोपञ्चतिक्तकम् ॥ अशक्तो पञ्चतिक्तंवापक्कंखादेदतन्द्रितः । इतिमेदोरोगनिदानचिकित्साधिकारः॥ २५८ ॥

बबूलके पत्तों को जलमें पीसकर उबटन लगाने से अथवा हड़को पीसकर बारम्बार शरीरमें मलकर स्नान करनेसे शीघ्रही पसीने का नाशहोता है बेल आम जामुन नींबू और कैथा इनसब की पत्ती और बच इनसबको पीसकर विधिपूर्व्वक शरीर में मलकर स्नान करनेसे शरीरकी गन्धि उत्तम होती है हड़ नखी चन्दन कूट तथा राल इनके द्वारा अथवा अगर तथा शक्करके द्वारा धूप देने से मलयकी बायुके समान मनोहर सुगन्ध होजाती है सूर्य्यमुखी तिल लोध सिरस खस और नाग केशर इनसबको शरीर में मलनेसे गरमी की ऋतुमें स्वेद नहीं निकलताहै हड़का चूर्ण और मदिरा को समभाग लेकर सहत के साथ चाटने से स्वेद का नाशहोकर शरीरमें सुगन्धि होजाती है चमेली के फूलोंको पीसकर लेपकरने से स्वेद और खुजली का नाशहोता है विचकिल के पत्ते हल्दी पकरियाके पत्ते और दूब इनसबको पीसकर शरीर में लेपकरने से स्वेद और खुजली का नाशहोता है हाथ पैरोंसे पसीना निकलने में पंच तिक्तकगुग्गुल खाना चाहिये और जो इसको नखासके तो पंचतिक्त घृतपिये इति मेदोरोगाधिकार समाप्त ॥ २५८ ॥

अथोदरस्यनिदानमाह ॥

रोगाःसर्व्वेऽपिमन्देऽग्नौसुतरामुदराणिच । अजीर्णान्मलिनैश्चान्नैश्चीयतेमलसञ्च यात् ॥ अग्नौमन्देसर्व्वेरोगाःजायन्तेकिन्तुसुतराम्अतिशयेनउदराणिजायन्ते । अप रानपिहेतूनाहअजीर्णात् । मलिनैश्चान्नैःअत्यन्तदोषजनकैः । मलसञ्चयात् मलानां दोषाणांपुरीषस्यचातिवृद्धेः । अत्रोदरशब्देनोदरस्थोरोगउच्यते ।यत आह अर्थतोधर्म्म तस्ताभ्यांतत्समीपतयापिच । तत्साहचर्य्याच्छब्दानांवृत्तिरुक्ताचतुर्व्विधा ॥ २५९ ॥

उदरका अधिकार उदर रोगका निदान ॥

मन्दाग्नि से सब रोग होतेहैं परन्तु उदर विशेष करके होताहै और अजीर्ण अत्यन्त दोषकारी वस्तुओं का सेवन और दोष तथा मलके संचय से भी उदर रोग उत्पन्न होतेहैं यहां उदर कहने से उदरमें स्थित रोगोंका ग्रहण होताहै क्योंकि कहागयाहै कि अर्थ से धर्म से इनदोनों से और निकटतासे शब्दकी वृत्ति चार प्रकारकी होती है ॥ २५९ ॥

संप्राप्तिमाह ॥

रुध्वास्वेदाम्बुवाहीनिदोषाःस्रोतांसिसञ्चिताः । प्राणानपानान्संदुष्यजनयन्त्युदरन्नृणाम् ॥ २६० ॥

उदरकी संप्राप्ति ॥

इकट्ठे हुए दोष स्वेद तथा जलकेले चलुने वाले स्रोतों को रोककरके और प्राण तथा अपान वायु को दूषित करके उदर रोगोंको उत्पन्न करतेहैं ॥ २६०॥

सामान्यरूप माह ॥

आध्मानंगमनेऽशक्तिर्दौर्बल्यंदुर्बलाग्निता । शोथःसदनमङ्गानांसंगोवातपुरीषयोः ॥ दाहस्तन्द्राचसर्व्वेषुजठरेषुभवन्तिहि ॥ २६१ ॥

उदर रोगका सामान्य लक्षण ॥

सब उदर रोगोंमें आध्मान चलने फिरनेमें अशक्ति दुर्बलता मन्दाग्नि सूजन शरीरकी शिथिलता वायु तथा मलका रुकना दाह और तन्द्रा यह लक्षण होतेहैं ॥ २६१ ॥

अथोदरसन्निकृष्टनिदानपूर्व्विकांसंख्या माह ॥

प्रथग्दोषैःसमस्तैश्चप्लीहवद्धक्षतोदकैः।सम्भवन्त्युदराण्यष्टौतेषांलिंगंपृथक्शृणु२६२॥

उदर रोगकी समीप वाले कारणों समेत संख्या ॥

बातज पित्तज कफज सन्निपातज प्लीहज वद्धक्षत और उदक यह आठ प्रकारके उदर रोगहोतेहैं २६२॥

तत्रवातोदरस्यलक्षण माह ॥

तत्रवातोदरेशोथःपाणिपान्नाभिकुक्षिषुकुक्षिपार्श्वोदरकटीपृष्ठरुक्पर्व्वभेदनम् ॥ शुष्ककासोऽङ्गमर्दश्चगुरुतामलसंग्रहः । श्यावारुणत्वगादित्वमकस्माद्वृासवृद्धिमत् ॥ सतोदभेदमुदरंतनुकृष्णशिराततम् । आध्मातदृतिवच्छब्दमाहतंप्रकरोतिच ॥ वायुश्चात्रसरुक्शब्दोविचरेत्सर्व्वतोगतिः । पाणिपादित्यत्रव्यञ्जनान्तपाच्छब्दआर्षत्वात्कुक्षिपार्श्वोदरेत्यत्रकुक्षिशब्दउदरस्यवामदक्षिणभागद्वयवाचीसर्व्वतोगतिः सकलकोष्ठेसञ्चरन् ॥ २६३ ॥

बातोदर के लक्षण ॥

बातोदर में हाथ पैर नाभि तथा कोखमें सूजन होतीहै कोख पसली उदर कटि पीठ तथा पोरुओं में पीड़ा होतीहै सूखी खांसी शरीरमें पीड़ा भारीपन मलका रुकना त्वचा आदिका लाल अथवा भूरा रंगहोना और उदर कभी बढ़ाहुआ अथवा कभी घटाहुआ सामालूम होताहै उदरमें सूजी गड़ने की सी तथा छेदने कीसी पीड़ा होतीहै पतली काली नसें व्याप्त होजातीहैं अफरा होताहै और चोट मारने से मशक कासा शब्द होताहै और इस रोगमें पीड़ा तथा शब्द सहित बायु संपूर्ण कोष्ठ में घूमतीहै ॥ २६३ ॥

अथ पैत्तिक माह ॥

पित्तोदरेज्वरोमूर्छादाहस्तृट्कटुकास्यता । भ्रमोऽतीसारःपीतत्वंत्वगादावुदरंहरित ॥

पीतताम्रशिरानद्धंसस्वेदंसोष्मदह्यते । धूमायतेमृदुस्पर्शंक्षिप्रपाकंप्रदूयते ॥ शाकवर्णा हरित् । सोष्मअन्तस्तापयुक्तम् ॥ दह्यतेबहिर्दाहयुक्तम् । धूमायतधूममिवोद्वमति ॥ क्षिप्रपाकंक्षिप्रपाकाज्जलोदरंजायते । प्रदूयतेऽव्यथते ॥ २६४ ॥

पित्तज उदर रोगके लक्षण ॥

पित्तज उदर रोगमें ज्वर मूर्च्छा दाह तृषा मुखमें कटुता भ्रम अतीसार त्वचा आदिमें पीलापन उदरमें हरापन पीली तथा ताम्रवर्ण वाली नसों से उदर का तनाहोना स्वेद निकलना भीतर तथा बाहर दाह होना कण्ठसे धुआंसा निकलना उदरका कोमल होना शीघ्रही बढ़कर जलोदर होजाना और पीड़ा होना यह लक्षण होतेहैं ॥ २६४ ॥

अथकफोदरमाह ॥

श्लेष्मोदरेऽङ्गसदनंश्वयथुर्गौरवन्तथा । तन्द्रोत्क्लेशोऽरुचिःस्वापःकासःशौक्ल्यंत्वगादिषु ॥ उदरंस्तिमितंस्निग्धंशुक्लराजीततंमहत् । चिराभिवृद्धिंकठिनंशीतस्पर्शंगुरुस्थिरम् ॥ स्वापःस्पर्शाज्ञतागौरवमङ्गानाम् । तन्द्रानिद्रावाहुल्यम् ॥ उत्क्लेशोहृल्लासः ॥ शुक्लराजीततंशुक्लशिराव्याप्तम् ॥ २६५ ॥

कफज उदरके लक्षण ॥

कफजउदरमें शरीरकी शिथिलतासूजन भारीपन तन्द्रा मतली अरुचिस्पर्शका न जानना खांसी तथा त्वचा आदिमें श्वेतता होतीहै और उदर बड़ा गीलासामालूम होनेवाला चिकना श्वेतनसों सेतनाहुआ बहुत काल में बढ़नेवाला कठिन शीतल स्पर्श युक्त भारी तथा स्थिर होताहै ॥ २६५ ॥

अथसन्निपातोदरमाह ॥

स्त्रियोऽन्नपानंनखलोममूत्रविडार्त्तवैर्युक्तमसाधुवृत्ताः । यस्मैप्रयच्छन्त्यरयोगरांश्चदुष्टाम्बुदूषीविषसेवनाच्च ॥ तस्याशुरक्तंकुपिताश्चदोषाःकुप्युःसघोरंजठरन्त्रिलिङ्गम् । तच्छीतवातेभृशदुर्दिनेचविशेषतःकुप्यतिदह्यतेच ॥ सचातुरोमूर्च्छतिहिप्रसक्तंपाण्डुःकृशःशुष्यतितृष्णयाच । दूष्योदरंकीर्त्तितमेतदेवप्लीहोदरङ्कीर्त्तयतोनिबोध ॥ स्त्रियइत्यविवेकिसन्निहितजनोपलक्षणम्ताश्चस्वसौभाग्यमिच्छन्त्यः । विट्माज्जारादीनाम् ॥ आर्त्तवंरजः । अरयोवागरान्संयोगजानिविषाणि ॥ दुष्टमम्बुसविषमत्स्यतृणपर्णादियुक्तम् । दूषीविषंविषमेवाग्न्याद्युपघातेनस्वल्पप्रभावम् ॥ यतउक्तम्जीर्णविषघ्नौषधिभिर्हतंवादावाग्निवातातपशोषितञ्च । स्वभावतोवागुणविप्रयुक्तंविषंहिदूषीविषतामुपैति ॥ गुणविप्रयुक्तम् । गुणवियुक्तम् ॥ तदुदरंशीतादिषुकुप्यति । तत्रदूषीविषस्यप्रकोपात् ॥ मूर्च्छतिविषयोगात् । प्रसक्तंनिरन्तम् ॥ एतदेवसन्निपातोदरम् । तन्त्रान्तरेदूष्योदरंकीर्त्तितम् ॥ अथवापरस्परंदुषयन्तिदोषाएवदूष्याःतैःकृतमुदरंदूष्योदरम् ॥ २६६ ॥

सन्निपातोदरके लक्षण ॥

जिसको कोई दुष्ट स्त्री बशीकरणादिके लिये नख रोम मूत्र बिल्ली आदिकी विष्ठा या आर्त्तव

अन्नपान के समय खिलावें अथवा जिस पुरुष को शत्रु संयोगज विष खिलावे अथवा जो पुरुष दुष्ट जल (विष मछली तृण तथा पत्ते आदिसे दूषित जल) या दूषीविष (जीर्ण विषनाशक औषधियों से माराहुआ दावाग्नि वायु या धूपसे सूखाहुआ अथवा स्वभावही से हीनगुण वाला विष) खाता है उसके बातादिक दोष और रुधिर शीघ्रही कुपित होकर त्रिदोपज उदर रोगको उत्पन्न करते हैं यह रोग शीतल वायु और दुर्दिन में अत्यन्त कुपित और दाह युक्त होता है इसरोग में कृशता निरन्तर मूर्च्छा शरीर का पीलापन और तृषासे कण्ठ आदि का सूखना यह लक्षण होते हैं इसी रोग को तन्त्रान्तर में दुष्योदरभी कहते हैं ॥ २६६ ॥

अथप्लीहोदरमाह ॥

बर्द्धतेप्लीहाव्द्ध्यायद्दिग्यात्प्लीहोदरंहितत् । तद्वामेबर्द्धतेपार्श्वेनिमित्तंतत्रतस्ययत् ॥ प्रवृद्धेप्लीह्निलिङ्गानियान्युक्तानिभिषग्वरैः । प्लीहोदरेऽपिदृश्यन्तेतानिसर्वाणिदेहिनाम् ॥ प्लीहोदरस्यैवभेदोयकृद्दाल्युदरंतथा । तस्यपुनरपिविशेषकमित्याह ॥ सव्यान्यपार्श्वेय कृतिप्रवृद्धेज्ञेयंयकृद्दाल्योदरन्तदेव । यकृद्दालयतिदोषैर्भिनत्तीतियकृदाल्युदरम् ॥ तदेव उदरमेव ॥ २६७ ॥

प्लीहोदरके लक्षण ॥

प्लीहके बढ़ने से जो उदर बढ़ता है उसको प्लीहोदर कहते हैं और यह बाईं ओर को बढ़ता है प्लीहा रोगके जो कारण कहेगये हैं वही प्लीहोदर के भी हैं और बहुत बढ़ेहुए प्लीहाके लक्षण प्लीहोदर में होते हैं यकृद्दाल्युदरभी प्लीहोदरका भेद मात्र है दाहिनी ओर यकृत् के बढ़ने से जो उदर वृद्धि होती है उसको यकृद्दाल्युदर कहते हैं ॥ २६७ ॥

बद्धगुदमाह ॥

यस्यान्त्रमन्नैरुपलेपिभिर्वाबालाश्मभिर्वापिहितंयथावत् । सञ्चीयतेयस्यमलोनरस्यशनैःशनैःसङ्करवच्चनाड्याम् ॥ निरुध्यतेयस्यगुदेपुरीषन्निरेतिकृच्छ्रादपिचाल्यमल्पम् । हन्नाभिमध्येपरिवृद्धिमेतितस्योदरंबद्धगुदंवदन्ति ॥ उपलेपिभिःशाकशालुकादिभिः बालाश्मभिःबालुकाभिःकर्करैर्वायथावत्तस्ययत्सम्भवति । मलःपुरीषंसङ्करवत्सम्मार्जनीक्षिप्ततृणधूल्यादिवत् ॥ नाड्याम्अन्त्रनाड्यांहन्नाभिमध्येहन्नाभ्योर्मध्ये ॥ २६८ ॥

बद्धगुद उदरके लक्षण ॥

जिसकीआंत अन्न से शाकादिकों से अथवा बालूसे ढकजाती है उसका मल दूषित होकर बुहारी से फेंकेहुए तृण आदिकोंके समान धीरे २ आंतके भीतर संचित होता है और गुदाके द्वारमें रुका हुआ मल बहुत कष्ट से थोड़ा २ निकलता है और उसके हृदय तथा नाभिके बीचमें उदर बढ़ता है इस रोग को बद्धगुद कहते हैं ॥ २६८ ॥

क्षतोदरमाह ॥

शल्यन्तथान्नोपहितंयदन्त्रंभुक्तंभिनत्त्यागतमन्यथावा । तस्मात्स्रुतोऽन्त्रात्सलिलप्रकाशःस्रावःस्रवेद्वैगुदतस्तुभूयः ॥ नाभेरधश्चोदरमेतिवृद्धिंनिस्तुद्यतेदाल्यतिचाति

मात्रम्। एतत्परिस्राव्युदरंप्रादिष्टं दकोदरंकीर्तयतोनिबोध ॥ शल्यंकण्टककर्करादि। अन्नोपहितंभुक्तंयत्अन्नं भिनत्तितथाअन्यथाआगतंभोजनंविनाआगतंशरादितरथापि यदन्नंभिनत्तितदुपलक्षणम् । जृम्भणमत्यशनंवायदन्त्रम्भिनत्ति ॥ यतउक्तञ्चरके। शर्करातृणकाष्ठास्थिकण्टकैरन्नसंयुतैः ॥ भिद्येतान्त्रंयदाभुक्तंजृम्भयात्यशनेनचेत् । तस्माद्भिन्नादन्त्रात्॥ गुदतस्तुभूयःअन्त्रात्संस्रुत्यपुनर्गुदतःस्रवेदित्यर्थः। दाल्यातिविदार्यतएव ॥ पदसिद्धिरार्षत्वात्। एतत्क्षतोदरन्तन्त्रान्तरेपरिस्राव्युदरम्प्रादिष्टम्॥२६९॥

क्षतोदरके लक्षण ॥

कांटे तथा कंकडी आदिको भोजन आदि में खाजाने से अथवा अन्य किसी प्रकार से कांटे आदिक भीतर चलेजाने से जंभाई से या बहुत भोजन से जो आंत फटकर बहुत जल निकलकर गुदा के द्वारा बारंबार बहता है नाभिके नीचे उदर बढ़ता है और सूजीके गड़नेकी सी तथा कटनेकीसी पीड़ा होती है उसको क्षतोदर कहते हैं इसी को तन्त्रान्तरमें परिस्राव्युदर कहते हैं॥२६९॥

अथोदकोदर माह ॥

यःस्नेहपीतोऽप्यऽनुवासितोवावान्तोविरिक्तोऽप्यथवानिरूढः। पिबेज्जलंशीतलमाशुतस्यस्रोतांसिदूष्यन्तिहितद्वहानि ॥ स्नेहोपलिप्तेष्वथवापितेषूदकोदरम्पूर्ववदभ्युपैति। स्निग्धम्महत्तत्परिवृत्तनाभिसमन्ततःपूर्णमिवाम्बुनाच । यथादृतिःक्षुभ्यतिकम्पतेचशब्दायतेवाप्युदकोदरन्तत् ॥ स्नेहपीतःपीतइत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तःपश्चात्स्नेहपीतइतितत्पुनरार्षःतेनस्नेहम्पीतवानित्यर्थः । अनुवासितोवागृहीतानुवासितवस्तिः॥ वान्तःअत्रापिपूर्ववत्कर्त्तरिक्तः। तेनवान्तवानित्यर्थः॥ एवंविरिक्तःविरिक्तवान्। तथानिरूढःगृहीतनिरूढवस्तिःसचेदाशुशीतलजलम्पिबेत् ॥ तस्यतद्वहानिजलवहानि। स्रोतांसिदूष्यन्ति॥ जलवहेषुस्रोतःसुदुष्टेषुसत्सु । अन्नरसेउपस्नेहन्यायेनवहिर्निःसृतोदकोदरमायाति ॥ तथापिजलेवहिर्निःसृतेदकोदरमायातितदुदरम्परिवृत्तनाभिगम्भीरनाभिसमन्ततःजलमुपयातिसर्वतःयथादृतिःचर्म्ममयञ्जलाहरणपात्रम्क्षुभ्यति।अन्तर्जलदोलनेनसञ्चलति॥ कम्पतेवहिःशब्दायतेकम्पमानं। सतूशब्दङ्करोति॥ २७०॥

जलोदर का बर्णन ॥

जो मनुष्य स्नेह पान तथा अनुवासन बस्ति (पिचकारी)ग्रहण करके अथवा वमन विरेचन तथा निरूह बस्ति (पिचकारी) ग्रहण करके बहुत शीघ्र शीतल जल पीता है उसकी जल लेचलने वाली नाड़ी दूषित तथा चिकनी होजातीहैं और पहले के समान रसके लेचलने वाली नाड़ियों के बाहर अन्नका रस इकट्ठा होकर जलोदर को उत्पन्न करताहै इस रोगमें उदर स्निग्ध बड़ा नाभि में पीड़ा युक्ततथा गंभीर होता है नाभिके चारोंओर जलभराहुआ सामालूम होता है और जल से भरीहुई मसक के समान उदर में पानी हिलता ढुलता है बाहर कंपहोता है तथा गड़गड़ाहट होता है ॥ २७० ॥

साध्यासध्यमाह ॥

जन्मनैवोदरंसर्व्वम्प्रायःकृच्छ्रतमम्मतम्। बलिनस्तदजाताम्बुयत्नसाध्यंनवोत्थितम्॥ बलिनःअजाताम्बुनवोत्थितञ्चयत्नसाध्यमित्यन्वयः। पक्षाद्बद्धगुदंतूर्ध्वंसर्व्वंजातोदकन्तथा॥ प्रायोभवत्यभावायछिद्रान्त्रंचोदरंनृणाम्। शरादिनाच्छिद्रमन्त्रंयस्यतदुदरम्। अभावायभवति॥ २७१॥

उदर रोगके साध्यासाध्य लक्षण॥

सब प्रकार के उदर रोग प्रायः उत्पन्न होतेही असाध्य होते हैं केवल बलवान् पुरुष का नहीं उत्पन्न हुए जलवाला नवीन उदर रोग यत्न साध्य होता है बद्धगुद उदर पन्द्रह दिनमें और सब प्रकार के जातोदक तथा क्षतोदर इस्से कुछ अधिक समयमें रोगीको नष्ट करते हैं॥ २७१॥

जातोदकस्योदरस्य लक्षणमाहचरकः॥

पयःपूर्णादृतिरिवक्षोभेशब्दकरंमृदु। अप्रव्यक्तशिराशून्यंनीराक्तमुदरंमहत्॥ आलस्यमास्यवैरस्यंमूत्रंबहुशकृद्द्रुतम्। जातोदकस्यलिङ्गंस्यान्मन्दाग्निःपाण्डुतापिच २७२

उत्पन्न हुए जलवाले उदरके लक्षण॥

जल के उत्पन्न होनेपर उदर चलायमान होने से जल से भरीहुई मसक के समान शब्दायमान कोमल झलकती हुई नसोंसे रहित जल से भराहुआ और बड़ा होताहै रोगीको आलस्य मुखकी बिरसता मूत्रकी अधिकता मलका पतलापन मन्दाग्नि और शरीरका पीलापन यह लक्षणहोतेहैं २७२॥

शूनाक्षंकुटिलोपस्थमुपक्लिन्नन्तनुत्वचम्। बलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणञ्चवर्ज्जयेत्॥ कुटिलोपस्थम्। वक्रमेहनम्।उपक्लिन्नन्तनुत्वचम्उपरिआर्द्रातन्वीत्वग्यस्यतंउदरिणम्॥पार्श्वभङ्गान्नविद्वेषशोफातीसारपीडितम्। विरिक्तञ्चाप्युदरिणंपूर्य्यमाणंविवर्ज्जयेत्॥ विरिक्तमपिपूर्य्यमाणंपूर्य्यमाणोदरंउदरिणम्विबर्जयेत्॥ २७३॥

नेत्रोंमें सूजन लिंगका टेढ़ापन पतली तथा गीलीसी त्वचा और बल रुधिर मांस तथा अग्निकी क्षीणता इनलक्षणों से युक्त उदर वालेको त्यागकर देवे जिसकी पसली में पीड़ा अन्न में अनिच्छा सूजन तथा अतीसार होय औरबिरेचन देनेपर उदरपूर्ण बनारहै ऐसे उदरवालेको त्यागकरदेवे २७३॥

तत्रोदरस्य चिकित्सा॥

एरण्डतैलंदशमूलमिश्रंगोमूत्रयुक्तंत्रिफलारसोवा। निहन्तिवातोदरशोथशूलंक्काथःसमूत्रोदशमूलजश्च॥ २७४॥

उदर रोगकी चिकित्सा॥

रेंडीके तेलमें दशमूल का चूर्ण डालकर पीने से त्रिफले के रसमें गोमूत्र डालकर पीने से अथवा दशमूलके काढ़ेमें दशमूल डालकर पीने से बातोदर सूजन तथा शूलका नाश होताहै॥ २७४॥

कुष्ठंदन्तीयवक्षारौव्योषंत्रिलवणंवचा। अजाजीदीप्यकंहिंगुस्वर्ज्जिकाचव्यचित्रकम्॥ शुण्ठीचोष्णाम्भसापीतावातोदररुजापहा। कुष्ठादिचूर्णम्॥ २७५॥

कूट जमालगोटेकी जड़ जवाखार त्रिकटु तीनोनोन बच कालाजीरा अजवाइन हींग सज्जी

चव्य चीता और सोंठ इनसबके चूर्णको गरमजलके साथ पीनेसे वातोदरका नाशहोताहै इति कुष्ठादिचूर्ण ॥ २७५ ॥

लशुनस्यतुलामेकांजलद्रोणेविपाचयेत्। त्रिकटुत्रिफलादन्तीहिंगुसैन्धवचित्रकम्॥ देवदारुवचाकुष्ठंमधुशिग्रुपुनर्नवा। सौवर्चलंविडङ्गानिदीप्यकोगजपिप्पली॥ एतेषांपलिकान्भागान्त्रिवृतःषट्पलानिच। पिष्ट्वाकषायेणानेनतैलंमृद्वग्निनापचेत्॥ तत्पिवेत्प्रातरुत्थाययथाग्निबलमात्रया। निहन्तिसकलान्रोगानुदराणिविशेषतः॥ मूत्रकृच्छ्रमुदावर्त्तमन्त्रवृद्धिंगुदकृमीन्। पार्श्वकुक्षिभवंशूलमामशूलमरोचकम्॥ यकृदष्ठीलिकानाहान्प्लीहानंचांगवेदनाम्। मासमात्रेणनश्यन्तिअशीतिर्वातजागदाः॥ इतिलशुनतैलम्॥ २७६॥

चारसौ ४०० तोले लहसन को १६ सेरजलमें पाककरे फिर त्रिकटु त्रिफला जमालगोटे की जड़ हींग सेंधानोन चीता देवदारु वच कूट महुआ सहजन गदापूर्णा कालानोन बायविडंग अजवाइन तथा गजपीपल यह सब चार २ तोले और निसोथ २४ तोले इन सबके कल्क तथा लहसन के काढ़े के साथ मन्दाग्नि में तेलको पाक करे प्रातःकाल उठकर अग्निबल के अनुसार इसके पीने से संपूर्ण रोगोंका नाशहोता है और विशेष करके उदर मूत्रकृच्छ्र उदावर्त आंतका बढ़ना गुदा के कृमि पसली की पीड़ा कुक्षि शूल आमशूल अरुचि यकृत् अष्ठीला आनाह प्लीहातथा शरीर की पीड़ा का नाश होता है और इसके सेवनसे महीने भर में सब बातज रोग दूर होजाते हैं इति लशुन तैल॥ २७६॥

पित्तोदरेतुबलिनंपूर्व्वमेवविरेचयेत्। पयसाचत्रिवृत्कल्कैरुवूकस्यशृतेनच॥ पिप्पल्यादिगणेनाज्यंपाचितंपाययेद्भिषक्॥ २७७॥

पित्तोदर में बलवान् रोगीको पहले निसोथ के चूर्ण को दूधके साथ अथवा रेंड़ीकी जड़के काढ़ेके साथ पान कराकर विरेचन देना चाहिये और पिप्पल्यादि गणके द्वारा पाक कियाहुआ घी पिलाना चाहिये॥ २७७॥

नरंपथ्यभुजंनित्यंकफोदरनिवृत्तये। नागरात्रिफलाकल्कैर्दध्यम्बुपरिपेषितैः॥ पाचितंतैलमाज्यंवापिवेत्सर्वोदरेषुचनागरादितैलंघृतञ्च॥ २७८॥

कफोदरके दूर करने के लिये नित्यही पथ्य भोजन देना चाहिये सोंठ तथा त्रिफले को दही के तोड़ में पीसकर उसके साथ पाक कियेहुये घी अथवा तेल के पीनेसे सबप्रकारके उदररोग नष्टहोते हैं इति नागरादि तैल वा घृत॥ २७८॥

शालिषष्ठिकगोधूमयवनीवार भोजननिरूहोरेचनंश्रेष्ठंसर्वेषुजठरेषुच॥ आनूपमोदकंमांसशाकंपिष्टकृतंतिलाः। व्यायामाध्वदिवास्वप्नैस्नेहपानानिवर्ज्जयेत्॥ तथोष्णलवणोष्णानिविदाहीनिगुरूणिच। नाद्यान्नान्नानिजठरेतोयपानञ्चवर्जयेत्॥ उदराणांमलाढ्यत्वाद्बहुशःशोधनंहितम्। क्षीरमेरण्डजंतैलंपिवेन्मूत्रेणवासकृत॥ २७९॥

शालिधान्य सांठी गेहूं जौ तथा तिन्नी का भोजन विरेचन और निरूह वस्ति यह सब उदररोगों में हितकारी हैं अनूपदेशके जीवोंकामांस जलके जीवोंकामांसशाक पिट्ठीकी वस्तु व्यायाम मार्गगमन

दिनमें सोना तथा स्नेह पीना यहसब उदररोगों में त्याग कर देना चाहिये तीक्ष्णवस्तु लवण उष्ण वस्तु विदाही तथा भारी वस्तुओं का भोजन जल और सवारी यह सब उदररोग में त्यागकरना चाहिये उदररोग में बहुतमल इकट्ठे होजाने के कारण बारंबार विरेचन देना चाहिये इसलिये दूध के साथ अथवा गोमूत्र के साथ रेंड़ी का तेल बारंबार पीना चाहिये ॥ २७९ ॥

वातोदरीपिबेत्तक्रंपिप्पलीलवणान्वितम् ।शर्करामरिचोपेतंस्वादुपित्तोदरीपिबेत् ॥ यवानीहवुषाजाजीव्योषयुक्तंकफोदरी । सन्निपातोदरीयुक्तंत्रिकटुक्षारसैन्धवैः ॥ २८० ॥

बातोदर में पीपलके चूर्ण तथा सेंधोनोन से युक्त पितोदरमें मिर्चके चूर्ण तथा शर्करा युक्त कफोदर में अजवाइन हाऊबेर कालाजीरा तथा त्रिकुटे के चूर्णसे युक्त और सान्निपातोदरमें त्रिकटु जवाखार तथा सेंधोनोनसे युक्त मट्ठेका पानकरना चाहिये ॥ २८० ॥

यवानीहपुषाधान्यंत्रिफलाचोपकुञ्चिकाकारवीपिप्पलीमूलंअजगन्धाशटीवचा । शताह्वाजीरकंव्योषंस्वर्णक्षीरीचचित्रकम् ॥ द्वौक्षारौपौष्करंमूलंकुष्ठंलवणपञ्चकम् । विड़ङ्गञ्चसमांशानिदन्त्याभागत्रयंभवेत् ॥ त्रिवृद्विशालाद्विगुणाशातलास्याच्चतुर्गुणा । एष नारायणोनाम्नाचूर्णोरोगगणापहः ॥ एनंप्राप्यनिवर्त्तन्तेरोगाविष्णुमिवासुराः । तक्रेणोदरिभिःपेयोगुल्मभिःबदराम्बुना ॥ आनद्धवातेसुरयावातरोगेप्रसन्नया । दधिमण्डेनविड्भेदेदाड़िमाम्बुभिरर्शसि । परिकर्त्तिषुवृक्षाम्लैरुष्णाम्बुभिरजीर्णके ॥ भगन्दरेयापांडुरोगेकासेश्वासेमलग्रहे । हृद्रोगेग्रहणीरोगेकुब्जेमन्देनलेज्वरे ॥ दंष्ट्राविषेमूलविषेसगरेकृत्रिमेविषे । यथार्हंस्निग्धकोष्ठेनपेयमेतद्विरेचनम् ॥ उपकुञ्चिकाकारवीचबृहज्जीरकः मंगरैलाइतिलोके । विशालाइन्द्रवारुणी ॥ शातलासेहुण्डइतिप्रसिद्धः । परिकर्तिः गुदेपरिकर्त्तनवत्पीड़ा इति नारायण चूर्णम् ॥ २८१ ॥

अजवाइन हाऊबेर धनियां त्रिफला कालाजीरा कलौंजी पीपलामूल बवई कचूरबच सौंफ जीरा त्रिकटु मकोय चीता जवाखारसज्जी पुष्करमूल कूट पांचोंनोन तथा बायबिड़ंग यहसब बराबर जमालगोटेकी जड़ तीन भाग निसोथ २ भाग इन्द्रायण २ भाग और सेहुँड़ ४ भाग इनसबके चूर्णको नारायण चूर्ण कहतेहैं यह चूर्ण सबरोग समूहों का नाशक है यह चूर्ण उदर रोगमें मट्ठेके साथ गुल्ममें बेर के काढ़े के साथ आनद्धबात में सुरा के साथ बात रोगमें प्रसन्ना नाममदिरा के साथ मल भेदमें दहीके तोड़के साथ बवासिर में अनारके काढ़ेके साथ परिकर्त्तिका (गुदामें कटने कीसी पीड़ा) में चूकके साथ तथा अजीर्ण में गरम जल के साथ पानकरना चाहिये और भगन्दर पांडु खांसी श्वास गलग्रह हृद्रोग ग्रहणी कुब्जता मन्दाग्नि ज्वर काटने से उत्पन्न हुए विष मूलविष गरदोष तथा कृत्रिम बिष इन सबमें यथायोग्य अनुपान के साथ पानकरने से श्रेष्ठ बिरेचन होताहै इति नारायण चूर्ण २८१

स्नुक्क्षीरदन्तीत्रिफला विड़ंगसिंहीत्रिवृच्चित्रककर्षम् । घृतंविपक्वंकुड़वप्रमाणं तोयेनतस्याक्षमथार्द्धकर्षम् ॥ पीत्वोष्णमम्भोऽनुपिवेद्विरेकेपेयांरसंवाप्रपिवेद्विधिज्ञः । नाराचमेतज्जठरामयानां युक्त्योपयुक्तंप्रवदन्तिसन्तः ॥ इतिनाराच घृतम् २८२ ॥

थूहड़का दूध जमालगोटे की जड़ त्रिफला बायबिडङ्ग भटकटैया निसोथ तथा चीता ये सब एक २ तोले लेकर इनके साथ पावभर घी का पाककरै फिर जलके साथ एक तोले अथवा६ माशे इस घीको

खाकर उष्ण जलका अनुपान करै इसके उपरान्त बिरेचन होजानेपर पेया अथवा मांसका रस पिये इस घृतके सेवन से उदर रोगोंका नाश होताहै इति नाराच घृत ॥ २८२ ॥

वज्रायाःकर्षमात्रायाकल्कंदध्यादिवेष्टितम्। निगिलेद्वारिणानित्यमुदरव्याधिशान्तये ॥ वज्राण्डीतिवनसूरणेतिलोके २८३ ॥

बनसूरनके कल्क को दही आदिमें लपेटकर जल के साथ निगलने से उदर रोग नष्ट होतेहैं २८३

पुनर्नवादारुनिशासतिक्तापटोलपथ्यापिचुमन्दमुस्ता । सनागराच्छिन्नरुहेतिसर्वैः कृतःकषायाविधिनाविधिज्ञैः ॥ गोमूत्रयुक्गुग्गुलुनाचयुक्तःपीतःप्रभातेनियतंनराणाम्। सर्व्वांगशोथोदरपाण्डुशूल श्वासान्वितंपाण्डुगदंनिहन्तिपुनर्नवादिः क्राथः ॥ इत्युदररोगनिदानचिकित्साधिकारः २८४ ॥

गदापूरना दारुहल्दी कुटकी परवर हड़ नीम मोथा सोंठ तथा गिलोय इन सबका विधि पूर्वक क्राथकर गोमूत्र औरगूगल छोड़कर प्रातःकाल पीनेसे सर्वाङ्गकी सूजन उदर खांसी शूल श्वास और पाण्डुरोग का नाश होताहै इति पुनर्नवादि क्राथ। इति उदर रोगाधिकार समाप्त ॥ २८४ ॥

अथ शोथाधिकार। तत्रशोथस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

शुद्धामयाभक्तकृशाबलानांक्षराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा । दध्याममृच्छाकविरोधिपिष्ट गरोपसृष्टान्ननिषेवणाच्च ॥ अर्शांस्यचेष्टावपुषोह्यशुद्धिर्मर्म्माभिघातोविषमाप्रसूतिः। मिथ्योपचारः प्रतिकर्म्मणाञ्चनिजस्यहेतुः श्वयथोः प्रदिष्टः ॥ शुद्धिर्वमनविरेकादिः। आमयाः पाण्डुरोगादयः। अभक्तम् अभोजनम् । आमः अपक्वोभुक्तस्यरसः। पिष्टगरोपसृष्टान्नम् पिष्टोयोगरः संयोगजंविषंतेनसंसृष्टमन्नम् वपुषोह्यशुद्धिः शोधनार्हस्यवपुषोऽशोधनम् । मर्म्मोपघातः दोषकृतएवज्ञेयः। वाह्यहेतुकृतस्तु मर्म्मोपघात आगन्तुजशोथहेतुरेव । विषमाप्रसूतिः आमगर्भपतनादिका। प्रतिकर्म्मणांवमनादि पञ्चकर्म्मणाम्। मिथ्योपचारः असम्यक्करणम्श्वयथोः शोथस्यनिजस्य आत्मीयस्य सन्निकृष्टस्य हेतुर्धाताद्यात्मकस्योक्तः २८५ ॥

सूजन का अधिकार। सूजनके दूरवाले कारण।

बमन बिरेचनादिकेद्वारा शोधन पाण्डु आदिक रोग अथवा भोजन न करनेसे कृश और दुर्बलमनुष्यों को क्षार अम्ल तीक्ष्ण उष्ण तथा भारीबस्तुओंके सेवनसे शोथरोग होताहै अधिक दधि मृत्तिका शाक बिरोधी भोजन भोजनका अपक्वरस संयोगज बिषसे मिलेहुये अन्नका सेवन बवासीर व्यायाम न करना शोधन के योग्य होनेपर भी विरेचनादि शोधन न करना दोषों के द्वारा मर्म्मों का अभिघात (बाहरी हेतुओंसे मर्मोंका आघात आगन्तुजशोथ रोगका कारण है) कच्चे गर्भका गिरना और बमन आदि पंचकर्म्मों का अच्छी रीति से न करना ये सब शोथरोग के कारण कहेगये हैं ॥ २८५ ॥

अथ शोथस्य संप्राप्ति पूर्वकंसामान्यं लक्षणमाह ॥

रक्तपित्तकफान्वायुर्दुष्टादुष्टान्बहिः शिराः । नीत्वारुद्धगतिस्तैर्हि कुर्य्यात्त्वक्मांससंश्रयं ॥ उत्सेधंसंहतेशोथं तमाहुर्निचयादतः। सगौरवंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमुष्मा

थशिरातनुत्वम् ॥ सलोमहर्षञ्चविवर्णताचसामान्यलिंगश्वयथोः प्रदिष्टम् ॥ उत्सेधं उन्नतत्वम्। किंविशिष्टमुत्सेधमस्तः पूर्व्वोक्तातूनिचयात्। रक्तपित्तकफवातानां समुदाया त्। संहतम् घनम् तमुत्सेधंशोथमाहुरित्यन्वयः। तस्यशोथस्य किंस्यादित्याकांक्षाया माह। अनवस्थितत्वंस्यात्। अनियतास्थितिः स्यादित्यर्थः। चिकित्साव्यतिरेकेणापि निवृत्तेः। तच्चानवस्थितत्वंसगौरवं स्याद्गौरवमप्यवस्थितं। स्यात्। अथच सोत्सेधः स्यात्। उन्नतत्वमप्यनवस्थितं स्यादित्यर्थः २८६ ॥

शोथ रोगका सम्प्राप्ति पूर्वक सामान्य लक्षण ॥

दूषित बायु दूषित रक्तपित्त तथा कफ को बाहर की शिराओं में लाकर और इन्हींके द्वारा रुककर त्वचा तथा मांसका आश्रयकरतीहुई घनी उँचाईको उत्पन्न करतीहैं इसीको शोथकहतेहैं इसीशोथको रक्तपित्त कफ तथा बायु के द्वारा उत्पन्न हुआ कहतेहैं इस रोगमें शोथका स्थान भारी अनवस्थित (चिकित्सा के बिनाभी निवृत्तहोनेवाला) उन्नत उष्ण लोम हर्ष युक्त विवर्ण और पतली नसों से युक्त होताहै ॥ २८६ ॥

वातिकं शोथमाह ॥

चरस्तनुत्वक्पुरुषोऽरुणोऽसितःससुप्तिहर्षार्तियुतोनिमित्ततः। प्रशाम्यतिप्रोन्नमति प्रपीड़ितोदिवाबलीस्यात्श्वयथुःसमीरणात्॥ चरःसञ्चारी। प्रसुप्तिःस्पर्शाज्ञता॥ हर्षोऽ त्रफिनिफिनीरोमाञ्चोवा। आर्त्तिःपीड़ा॥ एतद्युतःदिवाबलीविकृतिविषमसमवायारब्ध त्वात्। अतएवोक्तंचरकेणस्नेहोष्णवमनाद्यैर्यःप्रशाम्येत्सवातिकः॥ यश्चाप्यरुणवर्णः स्याच्छोथोनक्तंप्रशाम्यति ॥ २८७ ॥

बातज शोथका बर्णन ॥

बातज शोथ में त्वचा कठोर रक्त अथवा कृष्ण वर्ण युक्त स्पर्श ज्ञानसे रहित और भिनभिनाहट तथा रोमाञ्च युक्त होती है येशोथ सञ्चारी विनाकारण के भी शान्तहोने वाला दबानेसे गढ़ा पड़ने वाला दिनमेंबढ़नेवाला और रातमें घटने वाला होता है ॥ २८७॥

अथपैत्तिकमाह ॥

मृदुःसगन्धोऽसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृषामदान्वितः। यस्तूष्यतेस्पर्शसहोऽ क्षिरागवान्सपित्रशोथोभृशदाहपाकवान्॥ उष्यतेसन्तप्यते। भृशदाहपाकवान्भृशंदा होयःपाकस्तद्युक्तः॥ २८८ ॥

पित्तज शोथके लक्षण ॥

पित्तज शोथ कोमल दुर्गन्धित उष्ण पीड़ा युक्त दाह तथा पाक युक्त और कृष्ण पीत अथवा रक्त बर्ण होता है इसमें रोगी भ्रमज्वर स्वेदतृषा मदतथा रक्त बर्णवाले नेत्रोंसे युक्त होता है ॥ २८८॥

श्लैष्मिकमाह ॥

गुरुःस्थिरःपाण्डुररोचकान्वितःप्रसेकनिद्रावमिवह्निमान्द्यकृत्। सकृच्छ्रजन्मप्रशमो निपीड़ितोनचोन्नमेद्रात्रिबलीकफात्मकः॥ २८९ ॥

कफज शोथ के लक्षण ॥

कफज शोथ भारी स्थिर पाण्डु वर्ण दबाने से नहीं दबने वाला और रात्रि में बढ़नेवाला होता है इस रोगमें थुकथुकी निद्राकी अधिकता छर्दि मन्दाग्नि तथा अरुचि होती है और इसकी उत्पत्ति तथा शान्ति कष्ट से होती है ॥ २८९ ॥

द्वन्द्वजमाह ॥

निदानाकृतिसंसर्गात्ज्ञेयःशोथोद्विदोषजः ॥ २९० ॥

द्वन्द्वज शोथ के लक्षण ॥

दोदोषों के निदान तथा लक्षणों के मिलने से द्वन्द्वज शोथ जानना चाहिये ॥ २९० ॥

सान्निपातिकमाह ॥

सर्वाकृतिःसन्निपाताच्छोथोऽव्यामिश्रलक्षणः । ऽव्यामिश्रलक्षणइत्युक्तेसर्वाकृतिरितिउक्त्वातजादिशोथसकललक्षणनियमार्थम् ॥ २९१ ॥

सन्निपातज शोथके लक्षण ॥

तीनों दोषोंके सम्पूर्ण लक्षणों के मिलने से त्रिदोषज शोथ जानना चाहिये ॥ २९१ ॥

अथाभिघातजमाह ॥

अभिघातेनशस्त्रादिच्छेदभेदक्षतादिभिः । हिमानिलोदधनिलैर्भल्लातकपिकच्छुजैः ॥ रसैःशूकैश्चसंस्पर्शाच्छ्वयथुःस्याद्विसर्पवान् । भृशोष्मलोहिताभासःप्रायशःपित्तलक्षणः ॥ च्छेदःखड्गादिनाभेदःपाषाणादिना । क्षतंशरादिनानातीव्रणादि ॥ आदिशब्देनलगुड़प्रहारादिग्रह्यते । भल्लातजैरसैःकपिकच्छुजैःशूकैःविसर्पवान् ॥ प्रसरणशीलःपित्तलक्षणःपैत्तिकशोथलक्षणः ॥ २९२ ॥

अभिघातज शोथके लक्षण ॥

खड्गादि के द्वारा छेदन से पाषाणादि के द्वारा भेदसे बाणआदिके द्वारा घाव से लाठी आदि के लगने से ठंढी तथा समुद्रकी वायु के सेवन से और भिलावें के रस अथवा केवांचके लगजाने से जो शोथ होता है उसे अभिघातज कहते हैं ये शोथ फैलनेवाला अत्यन्त उष्ण रक्त वर्ण और प्रायःपित्त के लक्षणों से युक्त होता है ॥ २९२ ॥

अथविषजमाह ॥

विषजःसविषप्राणीपरिसर्पणमूत्रणात् । दंष्ट्रादन्तनखाघातादविषप्राणिनामपि ॥ विण्मूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्तुसङ्करात् । विषवृक्षानिलस्पर्शाद्गरयोगावचूर्णनात् ॥ मृदुश्चलोऽवलम्बीचशीघ्रोबहुरुजाकरः । परिसर्पणात्शरीरोपरिसञ्चरणात् ॥ दंष्ट्राद्विगुणीकृतादन्तावलिः । चोहइति ॥ दन्ताःअग्रेभवाः । अविषप्राणिनांदंष्ट्रादिविषंशोथव्यथादिकरंभवतीतिविशेषः । विण्मूत्रेत्यादि ॥ विड़ाद्युपहतंमालिनञ्चयद्वस्तु । तथासङ्करःसम्मार्ज्जनीभिःक्षिप्तोधूल्यादिःतेषांसम्पर्कात् ॥ गरयोगावचूर्णनात् । गरःसंयोगजविषंतस्ययोगोयस्यतेनवस्तुनाऽवधुलनात् ॥ अवलम्बीअलम्बमानः । अयमप्यागन्तुजस्तथापिसामान्यागन्तुजशोथचिकित्सातोऽस्यविशिष्टचिकित्साभिधानात्पृथक्पठितः २९३॥

विष युक्त प्राणीके शरीरपर चलने से और मूतनेसे अथवा विषरहितभी प्राणीके दांतनख अथवा दाढ़ों के द्वारा काटने से मलमूत्र तथा वीर्य्य लगभये तथा मलिन कपड़े के धारण करनेसे बढ़नी के द्वारा फेंकीहुई धूलिके लगने से विषवृक्ष की बायुके स्पर्श से और किसी बस्तु में लगेहुए संयोगज विषके लगजानेसे विषज शोथ उत्पन्न होताहै यह शोथ कोमल फैलने वाला लम्बा अत्यन्त पीड़ा युक्त और शीघ्रही उत्पन्न होनेवाला होता है ॥ २९३ ॥

यत्रस्थितादोषायत्रशोथंकुर्वन्तितदाह ॥

दोषाःश्वयथुमूर्ध्वंहिकुर्वन्त्यामाशयेस्थिता । पित्ताशयस्थामध्येतुवर्च्चःस्थानगतास्त्वधः ॥ कृत्स्नंदेहमनुप्राप्यकुर्य्युःसर्वसरस्तथा । ऊर्ध्वंउरःप्रभृत्यूर्ध्वम् ॥ मध्येउरःपक्वाशयमध्ये । अधःपक्वाशयादधः ॥ २९४ ॥

जिन २ स्थानों में स्थित बातादिक दोष जहां जहां सूजन उत्पन्न करते हैं उनका बर्णन ॥

दोष आमाशय में स्थित होकर शरीर के ऊर्ध्वभाग में पित्ताशय में स्थित होकर मध्यभाग में मलाशय में स्थित होकर नीचे के भागमें और सम्पूर्ण शरीर को व्याप्त करके सम्पूर्ण शरीर में शोथ उत्पन्न करते हैं ॥ २९४ ॥

उपद्रवानाह ॥

छर्दिश्वासोऽरुचिस्तृष्णाज्वरोऽतीसारएवच।सम्पाकआमदौर्बल्यंशोथएतेउपद्रवः२९५

शोथके उपद्रव ॥

छर्दि श्वास अरुचि तृषा ज्वर अतीसार और दुर्बलता येसात शोथ के उपद्रव हैं ॥ २९५ ॥

अथशोथासाध्यत्वमाह ॥

श्वासःपिपासाछर्दिश्चदौर्बल्यंज्वरएवच। यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनन्तंविवर्जयेत् २९६

असाध्य शोथ के लक्षण ॥

जिस शोथ रोगीके श्वास तृषा छर्दि दुर्बलता ज्वर और अन्नमें अरुचि हो उसको असाध्य जानना चाहिये ॥ २९६ ॥

अथ कष्टसाध्यादिकानाह ॥

योमध्यदेशेश्वयथुःकष्टःसर्वाङ्गगश्चयः । अर्द्धाङ्गोरिष्टभूतःस्याद्यश्चोर्ध्वपरिसर्पति ॥ मध्यदेशेउरःपक्वाशयमध्ये । सर्वांगगःसकलशरीरव्यापी ॥ सर्वाङ्गजइतिवापाठःसान्निपातिकः । अर्द्धाङ्गेअर्द्धनारीश्वराकारः । यश्चोर्ध्वंपरिसर्पतीतिपुरुषविषयः । तथाच । ऊर्ध्वगीमानरपद्भ्यमधोगामितथास्त्रियम् ॥ उभयंवस्तिसञ्जातःशोथोहन्तिनसंशयः । ऊर्ध्वगामीमुखगामीतथाचतन्त्रान्तरे। पादःप्रवृत्तःश्वयथुर्नृणांयःप्राप्नुयान्मुखमितिसनसिध्यतीतिशेषः ॥ अधोगामीपदगामी । तथाचतन्त्रान्तरे । स्त्रीणांवक्त्रात्पदंयातिवस्तिजःश्चनसिध्यतीति । उभयंनरनारीञ्च । अपरञ्च । अनन्योपद्रवकृतःशोथःपादसमुत्थितः । पुरुषंहन्तिनारीन्तुमुखजोवस्तिजोद्वयम् ॥ अयमर्थःपादसमुत्थितःपादाभ्यामुत्थितोमुखगामीतियावत् । शोथःपुरुषंहन्ति । सकिंविशिष्टःअन्योपद्रवकृतःशोथादन्येव्याधयोऽतीसारग्रहण्यर्शप्रभृतयस्तेषामुपद्रवैःकृतःतदुपद्रवत्वेनजातइत्यर्थः ।

नअन्योपद्रवकृतःअनन्योपद्रवकृतः। अर्थात्स्वहेतुभिरेवजातः। द्वयम्। पुरुषञ्चनारीञ्चहन्तिसोऽप्यनन्योपद्रवकृतएव ॥ २९७ ॥

शोथके कष्ट साध्यादि लक्षण ॥

हृदय तथा पक्वाशय के बीचमें अथवा सर्वाङ्ग में हुवा शोथ अत्यन्त कष्ट साध्य होता है जो शोथ अर्द्धाङ्ग में अर्द्धनारी श्वराकार से उत्पन्न होता है अथवा जो शोथ पुरुष के मुखमें होताहै वो असाध्यहै पुरुषोंका पैरोंसे ऊपर जानेवाला स्त्रियोंका मुखसे नीचे जानेवाला और स्त्री पुरुष दोनों का वस्ति में उत्पन्न भया शोथ असाध्यहै औरभी कहागया है कि जो शोथ अन्य किसी रोगके उपद्रवरूपसे न होकर अपने कारणोंसे उत्पन्न भयाहो और पुरुषके पैरों से उत्पन्नहोकर मुखमें प्राप्तभया हो तथा स्त्रियोंके मुखसे उत्पन्नहोकर पैरोंमें प्राप्तभयाहो वोअसाध्यहै और वस्ति में हुआ शोथ स्त्री पुरुष दोनों का असाध्यहै ॥ २९७ ॥

अथ शोथचिकित्सा ॥

शुण्ठीपुनर्नवैरण्डपञ्चमूलशृतंजलम्। वातिकेश्वयथौशस्तंपानाहारपरिग्रहे ॥ पटोलत्रिफलारिष्टदार्व्वीक्काथःसगुग्गुलुः। तद्वत्पित्तकृतंशोथंहन्तिश्लेष्मोद्भवंतथा ॥ मिश्रमिश्रक्रमंकुर्य्यात्सर्वजेसर्वमेवहि। विल्वपत्ररसंपूतंशोषणंत्रिभवेपिवेत् ॥ शोथेत्वागन्तुजेकुर्यात्सेकलेपादिशीतलम्। भल्लातक्यांहरेत्शोथंसातिलाकृष्णमृत्तिका ॥ महिषीक्षीरसंपिष्टैर्नवनीतसमन्वितैः। तिलैर्लिप्तःशमंयातिशोथोभल्लातकोत्थितः ॥ यष्टीदुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः। शोथमारुष्करंहन्तिचूर्णैःशालदलस्यच॥विषजशोथचिकित्सातुविषचिकित्सायांद्रष्टव्या॥२९८॥ शोथकी चिकित्सा ॥

सोंठ गदापूरना एरंडकी जड़ और पंचमूल इनके काढ़ेके पीनेसे अथवा इसके द्वारा पेयादि बनाकर सेवन करने से बातज शोथ नष्टहोताहै परवल त्रिफला नीम दारुहल्दी इनके काढ़ेमें गूगल डालकर पीनेसे पित्तज और कफज शोथ नष्टहोताहै द्वन्द्वज शोथमें मिलीहुई और सन्निपातज शोथ में तीनोंदोषों की मिलीभई चिकित्सा करनी चाहिये बेलपत्रके रसको छानकर त्रिकटु का चूर्ण मिलाकर पीनेसे सन्निपातज शोथ नष्टहोताहै आगन्तुज शोथमें शीतल परिषेक (सींचना) और लेप होना चाहिये तिल तथा कालीमिट्टी को भैंस के दूधमें पीसकर मक्खन मिलाकर लेप करनेसे भिलावें से भया शोथ नष्टहोताहै तिलोंको पीसकर लेप करने से भैंसके दूधमें पिसेभये तिल तथा मुलेठी के साथ मक्खन मिलाकर लेपकरने से अथवा सालके पत्तोंके चूर्ण के लेप करने से भिलावेंसेहुआ शोथ नष्टहोताहै बिषज शोथ की चिकित्सा बिषकी चिकित्सामें देखनी चाहिये २९८॥

अथ सामान्यचिकित्सा ॥

माहिष्यानवनीतंवालेपाद्दुग्धतिलान्वितम्। अत्रदुग्धञ्चमहिष्याएवयतआह२९९

शोथकी सामान्य चिकित्सा ॥

भैंस के दूधके साथ तिलपीसकर मक्खन मिलाकरलेप करनेसे शोथका नाशहोताहै ॥ २९९ ॥

पथ्यानिशाभार्ग्यमृताग्निदार्व्वीपुनर्नवादारुमहौषधानाम्। क्काथःप्रसह्योदरपाणिपादमुखाश्रितंहन्त्यचिरेणशोथम् ॥ इतिपथ्यादिक्काथः ॥ ३०० ॥

हड़ हल्दी भारंगी गिलोय चीता दारुहल्दी गदापूरना देवदारु और साठ इनके काढ़े के पीनेसे हाथपैर पेट तथा मुखकी सूजन नष्टहोती है इति पथ्यादिकाथ॥ ३००॥

फलत्रिकोद्भवंक्काथंगोमूत्रेणैवसाधितम्। वातश्लेष्मोद्भवंशोथंहन्याद्वृषणसम्भवम्॥ वृश्चीवदेवद्रुमनागरैर्वादन्तीत्रिवृत्त्र्यूषणचित्रकैर्वा। दुग्धंसुसिद्धंविधिनानिपीतं गीतंपरंशोथहरंभिषग्भिः॥ वृश्चीवश्वेतवर्षाभूः। सेकस्तथार्कवर्षाभूनिम्बक्काथेनशोथहृत्॥ गोमूत्रेणापिकुर्वीतसुखोष्णेनावसेचनम्। पुनर्नवादारुशुण्ठीशिग्रुःसिद्धार्थकस्तथा॥ अम्लपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपःसर्वशोथहृत्। गुडार्द्रकंवागुडनागरंवागुडाभयांवागुडपिप्पलींवा॥ कर्षाभिवृद्ध्यात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमासम्। शोथप्रतिश्यायगलास्यरोगान्सश्वासकासारुचिपीनसादीन्॥ जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारान्हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान्। विश्वंगुडेनतुल्यांवृश्चीवरसानुपानमभ्यस्तम्॥ विनिहन्ति सर्वशोथंघनवृन्दंचण्डवायुरिव॥ ३०१॥

गोमूत्रमें त्रिफलाका काढ़ा करके पीनेसेकफ बातजन्य अंडकोशोंकी सूजन नष्टहोती है सफेद गदापूरना देवदारु तथा सोंठके द्वारा अथवा जमालगोटेकी जड़ निसोथ त्रिकटु तथा चीते के द्वारा बिधिपूर्वक पाक कियेभये दूध के पीनेसे शोथ का नाशहोताहै गदापूरना तथा नीमके क्काथके द्वारा अथवा कुछ गरम गोमूत्र के द्वारा सींचने से शोथ नष्टहोता है गदापूरना देवदारु सोंठ सहजन तथा सरसों इनसबको कांजी में पीसकर कुछ गरम गरम लेप करनेसे सबप्रकारकी सूजन नष्टहोती है गुड़ तथा अदरख गुड़ तथा सोंठ गुड़ तथा हड़ अथवा गुड़ तथा पीपल एक तोले से लेकर बारह तोले तक बढ़जानेपर १५ दिन अथवा एक महीने तक खाय इसके द्वारा सूजन प्रतिश्याय (जुकाम) गले के रोग मुखके रोग श्वास खांसी अरुचि पीनस जीर्ण ज्वर बवासीर ग्रहणी तथा अन्योऽन्य कफ बात जनित रोगोंका भी नाश होता है सोंठ तथा गुड़ को समभाग खाकर गदापूरनाके रसका अनुपान करनेसे सब प्रकारकी सूजन नष्टहोती है॥ ३०१॥

कणानागरजंचूर्णंसगुडंशोथनाशनम्। आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम्॥ गुडात्पलत्रयंग्राह्यंशृंगवेरपलत्रयम्। शृंगवेरसमाक्कृष्णालोहकिट्टतिलयोःपलम्॥ चूर्णमेतत्समुद्दिष्टंसर्वश्वयथुनाशनम्। इतिगुडादिचूर्णम्॥ ३०२॥

पीपल तथा सोंठ के चूर्ण को गुड़ के साथ खानेसे सूजन आमाजीर्ण तथा शूल का नाश होताहै और वस्ति शुद्ध होती है गुड़ सोंठ तथा पीपल बारह बारह तोले और मंडूर रस तथा तिल चार चार तोले इन सब को चूर्ण करके मात्रानुसार खाने से सब प्रकार की सूजन नष्ट होती है इति गुडादि चूर्ण॥ ३०२॥

मानकक्काथकल्काभ्यांघृतप्रस्थंविपाचयेत्। एकजंद्वन्द्वजंशोथंत्रिदोषञ्चव्यपोहति॥ इतिमानकघृतम्॥ ३०३॥

मानके चूके क्काथ तथा कल्क के द्वारा ६४ तोले घीका पाक करै इस घीके सेवन से एक दोषज द्वन्द्वज औरसन्निपातज सूजन नष्ट होती है इति मानक घृत॥ ३०३॥

शुष्कमूलकवर्षाभूःदारुरास्नामहौषधैः । पक्कमभ्यञ्जनंतैलंसशूलंश्वयथुंहरेत् ॥
इतिशुष्कमूलकतैलम् इतिशोथनिदानाचिकित्साधिकारः ॥ ३०४ ॥

सूखी मूली, गदहपूरना, देवदारु, रास्ना और सोंठ इन सब के द्वारा पाक किये भये तेलके मलने से शूल सहित सूजन का नाश होता है इति शुष्क मूलक तैल इति शोथ निदान चिकित्सा समाप्त ॥ ३०४ ॥

अथवृद्धाधिकारस्तत्रवृद्धेर्निदानंसंख्यांचाह ॥

दोषास्रमेदोमूत्रान्त्रैःसंवृद्धिःसप्तधागदः । मूत्रान्त्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तुकेवलः ॥
वृद्धिंकरोतिकोषस्थोफलकोषाभिवाहिनी।रुध्वारुद्धगतिर्वायुर्धमनीःमुष्कगामिनी३०५

वृद्धि रोग का अधिकार। वृद्धि रोग के निदान और संख्या ॥

बात पित्त कफ रुधिर मेद मूत्र और आंत इन के द्वारा सात प्रकार का वृद्धि रोग होता है मूत्रज और अन्त्रज वृद्धि यद्यपि बात जनित हैं तथापि हेतु के भेद होने से अलग कही गई हैं बायु अंडकोशों में जाकर उनकी नाड़ियोंको रोककर स्वयं रुकके वृद्धि रोगको उत्पन्न करताहै३०५॥

तत्रवातिकमाह ॥

वातपूर्णदृतिस्पर्शोरूक्षोवातादहेतुरुक् । अहेतुरुक्अत्रेषदर्थेनञ् । तेनस्वल्पादपि विप्रकृष्टात्कारणात्रुक्पीड़ायत्रसः ॥ ३०६ ॥

बातज वृद्धिके लक्षण ॥

रूखापन स्पर्श करनेसे वायुके द्वारा भरी हुई कुप्पीके समान मालूम होना और थोड़ेसे कारण में पीड़ा का होना बातज वृद्धि के लक्षण हैं ॥ ३०६ ॥

अथपैत्तिकमाह ॥

पक्वोदुम्बरसङ्काशःपित्ताद्दाहोष्मपाकवान् । दाहःअभ्यन्तरःउष्मावहिस्तप्तता ॥३०७॥

पित्तज वृद्धिके लक्षण ॥

पित्तज वृद्धिपके भये गूलर के समान होती है भीतर दाह तथा बाहर उष्णता से युक्त होती है और पक जाती है ३०७ ॥

अथश्लैष्मिकमाह ॥

कफाच्छीतोगुरुःस्निग्धःकण्डूमान्कठिनोऽल्परुक् ॥ ३०८ ॥

कफज वृद्धिके लक्षण ॥

कफज वृद्धि शीतल भारी स्निग्ध खुजलीसे युक्त कठिन और थोड़ी पीड़ावाली होती है॥३०८॥

अथरक्तजमाह ॥

कृष्णस्फोटावृतःपित्तवृद्धिलिंगश्चरक्तजः।कृष्णस्फोटावृतइतिपैत्तिकोद्भवः॥३०८॥

रक्तज वृद्धिके लक्षण ॥

रक्तज वृद्धि काली फुन्सियों से युक्त और पित्तके लक्षण वाली होती है ॥ ३०९ ॥

मेदजमाह ॥

कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमःनीलवर्त्तुलः ॥ ३१० ॥

मेदकी वृद्धिके लक्षण ॥

मेदकी वृद्धि कफ के लक्षणों से युक्त कोमल और ताल के फल के समान नील तथा गोल होती है ॥ ३१० ॥

मूत्रजमाह ॥

मूत्रधारणशीलस्यमूत्रजःसतुगच्छतः । अम्भोभिःपूर्णदृतिवत्क्षोभंयातिसरुङ्मृदुः मूत्रकृच्छ्रमधःकुर्यात्सञ्चलन्फलकोषयोः । सञ्चलन्फलकोषयोरधः । मूत्रकृच्छ्रंमूत्रेणव्यथांकुर्यादित्यर्थः ॥ ३११ ॥

मूत्रज वृद्धिके लक्षण ॥

मूत्र के वेग रोकने से मूत्रज वृद्धि होती है यह चलने के समय जल से भरी भई कुप्पी के समान क्षोभ को प्राप्त होनेवाली पीड़ा सहित और कोमल होतीहै इसमें अंड कोशों के नीचे मूत्रके द्वारा पीड़ा होतीहै ॥ ३११ ॥

अथान्त्रवृद्धिमाह ॥

बातकोपिभिराहारैःशीततोयावगाहनैः । धारणेरणभाराध्वविषमांगप्रवर्त्तनैः ॥ क्षोभणैःक्षोभितोऽन्यैश्चक्षुद्रान्त्रावयवंयदा । पवनोविगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत् ॥ कुर्याद्वंक्षणसन्धिस्थोग्रन्थ्याभंश्वयथुंतदा । धारणम्उपस्थितस्यवेगस्यईरणंअनुपस्थितस्यवेगस्यप्रेरणम् ॥ विषमांगप्रवर्त्तनम्वक्रत्वेनांगमोटनम् । अन्यानिक्षोभणानि बलवद्विग्रहकठोरधनुषाकर्षणादीनितैःक्षोभितः सन्दूष्यसञ्चायितः पवनःयदायदाक्षुद्रान्त्रावयवम्विगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत् । तदावंक्षणसन्धिस्थःसन्वंक्षणसन्धौग्रन्थिरूपंश्वयथुंकुर्यादित्यर्थः ॥ उपेक्षितायाःअन्त्रवृद्धेरवस्थामाह । उपेक्ष्यमाणस्यमरुद्विवृद्धिमाध्मानरुक्स्तम्भमतीवकुर्यात् ॥ प्रपीड़ितोऽन्तःस्वनवान्प्रयातिप्रध्मापयन्नेतिपुनश्चमुष्कम् । तत्राध्मानमुदरेरुग्वृद्धयोर्मुष्कयोःस्तम्भोगात्रेतद्युक्तांकुर्यादित्यर्थः ॥ भोजोऽप्याह।अन्त्रंविगुणमादायवातोनयतिवंक्षणम् ॥ वंक्षणात्तद्रुजायुक्तंफलकोषंप्रपद्यत इति॥समुष्कवृद्धिअन्तःउदरेप्रध्मापयत्।आगमन्मार्गंनिरुद्धंकुर्वन्एतिआयाति३१२॥

अन्त्रज वृद्धिके लक्षण ॥

बातके कुपित करनेवाली बस्तुओंके भोजनसे शीतलजलके मझाने से मूत्रादि वेगोंके धारण से नहीं उपस्थित भये मूत्रादि बेगों के प्रेरणसे बड़ा बोझले चलनेसे बहुत चलनेसे टेढ़ेबेढ़े अंगोंके चलाने से बलवानके साथयुद्धसे और कठोर धनुषके खींचने आदि वायु वर्द्धक क्रियाओं से कुपित वायु क्षुद्र आंतको संकुचितकरके जब अपने स्थानसे नीचेको लेजाती है तब वंक्षणकी संधियोंमें ग्रन्थिके समान सूजन उत्पन्नहोती है इसकी उपेक्षा करने से बढ़ीहुई वायु पीड़ा सहित अंडकोशों की वृद्धि उदर में आध्मान और शरीर में स्तम्भको उत्पन्नकरती है अन्त्रवृद्धि दबाने से शब्दपूर्वक ऊपरको जाती है और फिरआगमन केमार्गकोरोकी भई अंडकोशों में प्राप्त होतीहै और भोजनेभी कहा है कि कुपित वायु आंतको विपरीतता से लेकर वंक्षण में लाती है फिर वंक्षण से पीड़ा सहित अंडकोशों में प्राप्तहोती है ॥ ३१३ ॥

अथासाध्यमाह ॥

सकीदृक्स्यादित्याकाङ्क्षायामाह । यस्यान्त्रावयवाश्लेषोमुष्कयोर्वातसञ्चयात् ॥

अन्त्रवृद्धिरसाध्योऽयंवातवृद्धिसमाकृतिः। वातवृद्धिसमाकृतिरितियोऽन्त्रवृद्धिरोगःसोऽसाध्योवातवृद्धिसमाकृतिः ॥ ३१३ ॥

असाध्य लक्षण ॥

जिसके दोनों अंडकोशोंमें वायुके इकट्ठा होनेसे आंतों के अवयव अलग अलग होजाते हैं और जिसकी अन्त्रवृद्धि वातज वृद्धि के लक्षणों से युक्त होती है वो आसाध्यहै ॥ ३१३ ॥

सामीप्यादत्रैवब्रध्नमाह ॥

अत्यभिष्यन्दिगुर्व्वन्नशुष्कपूत्यामिषाशनात् । करोतिग्रन्थिवच्छोथंदोषोवङ्क्षणसंधिषु ॥ ज्वरशूलाङ्गसादाढ्यंतंब्रध्नेतिविनिर्द्दिशेत् ॥ ३१४ ॥

प्रसंगसे यहींपरब्रध्न (बद) का वर्णन ॥

अत्यन्त अभिष्यन्दी भारी अन्न और शुष्क तथा दुर्गन्धित मांसके खाने से वातादि दोष वंक्षणकी सन्धियोंमें ग्रन्थिके समान सूजन उत्पन्न करते हैं इसको ब्रध्न (बद) रोग कहते हैं इसमें ज्वर शूल और शरीर की शिथिलता होती है ॥ ३१४ ॥

तत्रवृद्धेश्चिकित्सा ॥

वृद्धावत्यशनम्मार्गमुपवासंगुरूणिच।वेगाघातंपृष्ठयानंव्यायामंमैथुनंत्यजेत्॥३१५॥

वृद्धिकी चिकित्सा ॥

वृद्धिरोगमें अत्यन्त भोजन मार्ग गमन उपवास भारी वस्तु वेगोंका रोकना घोड़े आदि की सवारी व्यायाम और स्त्री प्रसंग इन सबका त्यागकरदे ॥ ३१५ ॥

वातवृद्धौपिबेत्स्निग्धंयथाप्राप्तविरेचनम् । सक्षीरञ्चपिबेत्तैलंमासमेरण्डसम्भवम्॥ गुग्गुल्वेरण्डजन्तैलंगोमूत्रेणपिबेन्नरःवातवृद्धिञ्जयत्याशुचिरकालानुबन्धनीम् ३१६॥

वातज वृद्धिमेंयथा प्राप्त स्निग्ध विरेचन कापानकरै अथवा महीने भरतक दूधकेसाथ रेंड़ीकातेल पियै गूगुल तथा रेंड़ीके तेलको गोमूत्रके साथ पीनेसे बहुत पुरानीवातजवृद्धिभी नष्टहोतीहै॥३१६॥

पित्तग्रन्थिक्रमेणैनांपित्तवृद्धिमुपाचरेत् । जलौकाभिर्हरेद्रक्तंवृद्धौपित्तसमुद्भवे ॥ चन्दनंमधुकंपद्ममुशीरन्नीलमुत्पलम् । क्षीरपिष्टंप्रलेपेनदाहशोथरुजापहम् ॥ ३१७ ॥

पित्तज ग्रन्थिकी चिकित्सा के क्रमसे पित्तज वृद्धिकी चिकित्सा करै पित्तज वृद्धिमें जोंकोंके द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये चन्दन मुलेठी पद्माख खस तथा नील कमल इन सबको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तज दाह सूजन तथा पीड़ाका नाश होताहैं ॥ ३१७ ॥

त्रिकटुत्रिफलाक्काथसक्षारलवणम्पिबेत् । विरेचनमिदंश्रेष्ठंकफवृद्धिविनाशनम् ॥ लेपनाःकटुतीक्ष्णोष्णास्वेदनंसूक्ष्ममेवचपरिषेकोपनाहौचसर्व्वमुष्कमिहेष्यते ॥ ३१८॥

त्रिकटु तथा त्रिफलाके काढ़ेमें जवाखार औ सेंधा निमक मिलाकर पीनेसे कफज वृद्धि नष्ट होतीहै कटु तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंके लेपसे और रूखे स्वेदनसे कफज वृद्धि नष्टहोतीहै कफज वृद्धि में परिषेक (सींचना) और उपनाह (स्वेदन) सब उष्णही हितहैं ॥ ३१८ ॥

मुहुर्म्मुहुर्जलौकाभिःशोणितंरक्तजेहरेत् । पिबेद्विरेचनंवापिशर्क्कराक्षौद्रसंयुतम् ॥ शीतमालेपनंशस्तंसर्व्वम्पित्तहरन्तथा । पित्तवृद्धिक्रमकुर्य्यादामेपक्वेचरक्तजे ॥ ३१९॥

रक्तज वृद्धि में जोंकोंके द्वारा बारम्बार रुधिर निकलवाना चाहिये शक्कर तथा सहत मिलाकर विरेचक वस्तुओंका पीना और शीतल लेप रक्तज वृद्धि में हितहै कच्ची तथा पकीभई रक्तज वृद्धिमें पित्तज वृद्धिका सम्पूर्ण क्रम करना चाहिये ॥ ३१९ ॥

स्विन्नम्मेदःसमुत्थन्तुलेपयेत्सुरसादिना । शिरोविरेचनद्रव्यैःसुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः३२०॥

मेदसे भई वृद्धिमें स्वेदन देकर सुरसादि गणके द्वारा लेप करना चाहिये मिर्च आदि शिरो विरेचक वस्तुओंको गोमूत्र में पीसकर कुछ गरम लेप करनेसे मेदजवृद्धिनष्ट होती है ॥ ३२० ॥

संस्वेद्यमूत्रप्रभवंवस्त्रपट्टेनवेष्टयेत् । सीवन्यापार्श्वतोऽधस्ताद्विध्येद्व्रीहिमुखेनवै३२१॥

मूत्रज वृद्धिमें पहले स्वेदन करके वस्त्रसे बांधनाचाहिये फिर सीवनके पास नीचेकी ओर व्रीहि मुखनाम शास्त्रके द्वारा छेदै (पानी निकलवावै) ॥ ३२१ ॥

मुष्केकोशमगच्छन्त्यामन्त्रवृद्धौविचक्षणः । वातवृद्धिक्रमङ्कुर्यात्स्वेदन्तत्राग्निना हितम् ॥ व्रीहिमुखेनशस्त्रविशेषेण । अगच्छन्त्याम्अस्रवन्त्याम् ॥ ३२२ ॥

अंडकोशोंमें नहीं प्राप्तहोने वाली अंत्र वृद्धि में वातज वृद्धिकीसी चिकित्सा करै और इस में अग्नि द्वारा स्वेद न हितहै ॥ ३२२ ॥

तैलमेरण्डजम्पीत्वावलासिद्धंयथोचितम्आध्मानशूलापचितामन्त्रवृद्धिञ्जयेन्नरः३२३

बरियारा के द्वारा विधि पूर्वक दुग्धका पाक करके रेंड़ीका तेल मिला पीने से आध्मान और शूल सहित अन्त्र वृद्धिका नाश होता है ॥ ३२३ ॥

रास्नायष्ट्यमृतैरण्डवलारग्वधगोक्षुरैः । पटोलेनवृषेणापिविधिनाविहितंश्टतम् ॥ रुवुतैलेनसंयुक्तंअन्त्रवृद्धिंव्यपोहति । इतिरास्नादिक्काथः ॥ ३२४ ॥

रास्ना मुलेठी गिलोय रेंड़ी की जड़ बरियारा गोखुरू अमलतास परवल बांसा इनसब के क्काथ में रेंड़ी का तेल छोड़कर पीनेसे अन्त्र वृद्धि नष्ट होती है इति रास्नादि क्काथ ॥ ३२४ ॥

गन्धर्वहस्ततैलेनक्षीरेणविहितंश्टतम् । विशालामूलजंचूर्णं वृद्धिंहन्तिनसंशयः ॥ विशालाइन्द्रवारुणी वचासर्षपकल्केनप्रलेपः शोथनाशनः । शिग्रुत्वक्सर्षपैर्लेपःशोथ श्लेष्मानिलापहः ३२५ ॥

दूधके साथ रेंड़ीके तेल का पाक करके इन्द्रायनके जड़का चूर्ण मिलाय पीनेसे निस्सन्देह वृद्धि का नाश होता है बच तथा सरसों को एकसाथ पीसकर लेपकरने से शोथ का नाश होता है सहँजन की छाल औ सरसोंको एकसाथ पीसकर लेप करने से शोथ कफ औ बायु का नाश होता है ३२५॥

शुद्धसूतंतथागन्धंमृतान्येतानियोजयेत् । लोहंरंगंतथाताम्रं कांस्यञ्चाथविशोधि तम् ॥ तालकंतुत्थकञ्चापि तथाशंखवराटकम् । त्रिकटुत्रिफलाचव्यं विड़ंगंवृद्धदारक म् ॥ कर्चूरंमागधीमूलं पाठासहहवुषांवचाम् । एलावीजंदेवकाष्ठं तथालवणपञ्चकम् ॥ एतानिसमभागानि चूर्णयेदथकारयेत् । कषायेणहरीतक्या वटिकांटंकसंमिताम् ॥ एकां तांबटिकांयस्तु निगिलेद्वारिणासह । अण्डवृद्धिरसाध्यापितथ्यंनश्यातिसत्वरम् । इति वृद्धिवाधिकावटिका ३२६ ॥

शुद्धपारा औ शुद्धगंधक की कजली में लोह भस्म वंगभस्म ताम्रभस्म कांसेकी भस्म हरतालकी

भस्म तूतिया की भस्म शंखकी भस्म कौड़ीकी भस्म त्रिकटु त्रिफला चव्य वायविड़ंग विधारा कचूर पीपरामूल पाठा हाऊबेर वच इलायची के दाने देवदारु और पांचों नोन मिलाकर हड़ के काढ़ेसे एक २ टंक की गोली बांधे और एक गोलीको जलके साथ निगलै इस्से असाध्य भी अंड वृद्धि नष्ट होती है इति वृद्धिवाधिका वटी॥ ३२६ ॥

अथ ब्रध्नस्यचिकित्सा ॥

भृष्टश्चैरण्डतैलेनसम्यक्कल्कोऽभयाभवः । कृष्णासैन्धवसंयुक्तोब्रध्नरोगहरःपरः ॥ अजाजीहवुषाकुष्ठंगोमेदवदरान्वितम् । काञ्जिकेनतुसंपिष्टंतल्लेपोब्रध्नजित्परः ॥ गोमेद् पत्रकम् । तथानिघण्टौधन्वन्तरिः ॥ पत्रंदलाङ्कयंरासंगोमेदंवसनाङ्कयमिति । इतिवृद्धि ब्रध्नरोगनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ३२७ ॥

ब्रध्न की चिकित्सा ॥

हड़ के कल्क को रेंड़ी के तेल में भूनकर पीपल और सेंधेनोन के साथ खाने से ब्रध्न रोगका नाश होता है कालाजीरा हाऊबेर कूट तेजपात और बेर इन सब को कांजी में पीसकर लेप करने से ब्रध्न रोग का नाश होताहै इति वृद्धि ब्रध्न रोग निदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ३२७ ॥

अथगलगण्डगण्डमालापच्यर्वुदाधिकारः।अथगलगण्डगण्डमालयोःसामान्यलिङ्गमा

निवद्धःश्वयथुर्यस्वमुष्कवल्लम्बतेगले । महान्वायदिवाह्रस्वोगलगण्डंतमादिशेत्॥ निवद्धःदृढ़ःअचलोवामुष्कवत्अण्डवत्गलेइतिहनुमन्ययोरुपलक्षणम्। तथाचभोजः॥ महान्तंशोथमल्पंवाहनुमन्यागलाश्रयम्।मुष्कवल्लम्बमानन्तुगलगण्डंविनिर्दिशेत्३२८

गलगंडगंडमाला अपची और अर्वुदका अधिकार गलगंड और गंडमाला के सामान्य लक्षण ॥

गले में जो बड़ा अथवा छोटा अंडकोश के समान कठिन लम्बमान शोथ उत्पन्न होता है उसे गलगंड कहतेहैं यहां गलशब्दसेजवड़ा और गलेकी पीछीकी नसकाभी ग्रहण होताहै क्योंकि भोज ने कहाहै कि जवड़ा गले पीछेकी नस और गला इनमें छोटा अथवा बड़ा अंडकोश के समान जो लंब-मान शोथ होताहै उसे गलगंड कहते हैं ॥३२८ ॥

सम्प्राप्तिमाह ॥

वातःकफश्चापिगलेप्रदुष्टौमध्येतुसंसृत्यतथैवमेदः । कुर्व्वन्तिगण्डंक्रमशःस्वलिङ्गैः समाचितन्तंगलगण्डमाहुः ॥ स्वलिङ्गैःवातकफमेदोलक्षणैः ॥ ३२९ ॥

गलगंड की संप्राप्ति ॥

वातकफ अथवा मेद दूषित होकर गले और गलेकी पीछेकी नसमें आश्रय करके क्रमसे अपने २ लक्षणों से युक्त अंडकोश के समान शोथको उत्पन्न करते हैं इसे गलगंड कहतेहैं ॥ ३२६ ॥

अथवातिकमाह ॥

तोदान्वितःकृष्णशिरावनद्धःश्यावारुणोवापवनात्मकस्तु। पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्ध्यपा कोयदृच्छयापाकमियात्कदाचित्॥ चिरवृद्ध्यपाकःचिरेणवृद्धिःअपाकश्चयस्यसः ३३०

वातज गलगंड के लक्षण ॥

वातज गलगंडपीड़ायुक्त कालीनसोंसेव्याप्तकपिश अथवारक्तवर्णसे युक्त तथा कठोरहोताहै बहुत देरमें बढ़ताहै पकतानहीं है और कभी कारणके बिनाहीप कभी जाताहै और रोगी के मुखमें विरसता तालूसूखना तथा गलेका सूखना ये लक्षणहैं ॥ ३३० ॥

अथश्लैष्मिकमाह ॥

स्थिरःसवर्णोगुरुरुग्रकण्डूःशीतोमहांश्चापिकफात्मकस्तु। स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजन्तोर्गलेनशब्दंकुरुतेचनित्यम् ॥ चिराच्चवृद्धिंभजतेचिराद्वाप्रपच्यतेमन्दरुजःकदाचित्। माधुर्य्यमास्यस्यचतस्यजन्तोर्भवेत्तथातालुगलप्रलेपः ॥ कदाचित्प्रपच्यतेवापाकोऽपिचिराद्भवंतिप्रलेपश्लेष्मणा ॥ ३३१ ॥

कफज गलगंडके लक्षण ॥

कफज गलगंड स्थिर शरीर के समान वर्ण युक्त भारी खुजली युक्त शीतल तथा बड़ा होताहै देरमें बढ़ताहै और कभी २ थोड़ी पीड़ा सहित देरमें पकताहै और रोगीका मुख मधुर तथा स्निग्ध रहता है और तालु तथा मुख कफसे लिपाहुआ सा रहताहै और गलेसे शब्द निकलताहै ॥ ३३१॥

मेदोजमाह ॥

स्निग्धोमृदुःपाण्डुरनिष्टगन्धामेदोऽन्वितःकण्डुयुतोरुजश्च। प्रलम्बतेऽलाबुवदल्पमूलोदाहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः ॥ स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजन्तोर्गलेनशब्दंकुरुतेचनित्यम् ॥ ३३२ ॥

मेदसेभये गलगंड के लक्षण ॥

मेद से भया गलगण्ड स्निग्ध कोमल पांडु वर्ण दुर्गन्धि युक्त खुजली तथा पीड़ायुक्त तोंबी के समान छोटी जड़वाला और देहके अनुसार क्षयतथा वृद्धिवाला होताहै रोगीका मुख स्निग्धरहताहै और सदैव गलेसे शब्द होताहै ॥ ३३२ ॥

अथासाध्यमाह ॥

कृच्छ्रात्श्वसन्तंमृदुसर्वगात्रंसम्वत्सरातीतमरोचकार्त्तम्। क्षीणञ्चवैद्योगलगण्डयुक्तम्भिन्नस्वरंनैवनरंचिकित्सेत् ॥ ३३३ ॥

असाध्य गलगंड के लक्षण ॥

जिस गलगंड वाले का श्वास कठिनतासे निकले अरुचि स्वरभंग तथा क्षीणता होय और गलगंड एक बर्षसे पुराना होय और सम्पूर्ण शरीर कोमल होय ये सब लक्षण असाध्यहैं ॥ ३३३ ॥

तत्रगलगण्डमालायांलक्षणमाह ॥

कर्कन्धुकोलामलकप्रमाणैःकक्षासमन्यागलवंक्षणेषु। मेदःकफाभ्यांचिरमन्दपाकैःस्याद्गण्डमालाबहुभिश्चगण्डैः ॥ कर्कन्धुःक्षुद्रवदरः। कोलंवृहद्बदरम् ॥ चिरमन्दपाकैःचिरेणमन्दोऽल्पःपाकोयेषान्तैः ॥ ३३४ ॥

गंडमाला के लक्षण ॥

बगलमें कंधेमें गले की पीछेकी नसोंमें गलेमें अथवा गलेकी संधियोंमें छोटे बेर बड़ेबेर अथवा आं-

वलेके समान बहुत से गंड उत्पन्न होतेहैं और देरमें पकते हैं इस रोग को गंडमाला कहते हैं यह कफ और मेद से उत्पन्न होताहै ॥ ३३४ ॥

अथगण्डमालायाएवावस्थाविशेषमपचीमाह ॥

तेग्रन्थयःकेचिदवाप्तपाकाःस्रवन्तिनश्यन्तिभवन्तिचान्ये । कालानुबन्धंचिरमादधातिसैवापचीतिप्रवदन्तिकेचित् ॥ तेग्रन्थयःगण्डमालायाएवगण्डाःकेचिदवाप्तपाकाःसंतःस्रवन्तिकेचिन्नश्यन्तिसंरोहन्तिअन्येभवंतिचकालानुबन्धंचिरमादधातिसागलगण्डमालाचिरंतिष्ठतिसैवापचीतिकेचिद्वदन्ति ॥ ३३५ ॥

गंडमालाके अवस्था बिशेष अपचीका लक्षण ॥

गंडमाला की कोई २ ग्रन्थि पककर बहने लगतीहैं कुछ लुप्तहोजातीहैं औ कुछ नई उत्पन्न होतीहैं इनमें से जो गंडमाला बहुत कालतक रहतीहै उसे अपची कहतेहैं ॥ ३३५ ॥

अपच्याःसाध्यत्वादिकमाह ॥

साध्यास्मृतापीनसपार्श्वशूलकासज्वरछर्दियुतात्वसाध्या ॥ ३३६ ॥

अपचीका साध्यादि लक्षण ॥

उपद्रव रहित अपची साध्य और पीनस पसुरी की पीड़ा खांसी ज्वर तथा छर्दि सहित अपची असाध्य होती है ॥ ३३६ ॥

अथग्रन्थेर्लक्षणमाह ॥

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाःसन्दूष्यमेदश्चतथाशिराश्च । वृत्तोन्नतंविग्रथितन्तुशोथंकुर्वन्त्यतोग्रन्थिरितिप्रदिष्टः ॥ विग्रन्थितंग्रन्थिरूपंअतएवग्रन्थिः । सपञ्चधावातिकःपैत्तिकःश्लेष्मिकोमेदजःशिराजश्चेति ॥ ३३७ ॥

ग्रन्थिके लक्षण ॥

दूषित वातादिक दोषमांस रुधिर मेद तथा शिराओं को दूषित करके गोल तथा उन्नत ग्रन्थि के समान शोथको उत्पन्न करते हैं इस रोगका नाम ग्रन्थि है यह रोग पांच प्रकारकाहै जैसे बातज पित्तज कफज मेदोज और शिराज ॥ ३३७ ॥

तेषुवातिकस्यलक्षणमाह ॥

आयम्यतेवृश्चतितुद्यतेचप्रभ्रंश्यतेमन्थतिभिद्यतेचकृष्णोमृदुर्बस्तिरिवाततश्चभिन्नःस्रवेच्चानिलजोऽस्रमच्छम् । आयम्यतआकृष्यदीर्घंक्रियतइववृश्चातिआश्रयंछिनत्तीव ॥ प्रभ्रंश्यतेस्खलतीवभिद्यतेविदार्य्यतइव । आततःविस्तारितइव ॥ मृदुःनत्वत्यन्तकठिनः । अस्रम्रुधिरम् ॥ अच्छम्प्रकृतम् । स्रवेदित्यर्थः ॥ ३३८ ॥

वातज ग्रन्थिके लक्षण ॥

बातज ग्रन्थिमें खींचने कीसी छेदने कीसी सूजीगड़ोने कीसी गिरने कीसी मथनेकी सी तथा फारनेकीसी पीड़ा होतीहै यह ग्रन्थि कृष्ण वर्ण कोमल तथा वस्ति के समान बढ़नेवाली होतीहै और इससे स्वाभाविक रुधिर निकलताहै ॥ ३३८ ॥

पैत्तिकमाह ॥

दन्दह्यतेधूप्यतिचूष्यतेचपापच्यतेवाज्वलतीवचापि । रक्तःसपीतोऽप्यथवापिपित्ताद्भिन्नःस्रवेद्दुष्टमतीवचास्रम्॥ दन्दह्यतेभृशंदाहंकरोतिसकलशरीरे। धूप्यतिअन्तस्तापंकरोतिचूष्यतेशृंगेनेवपापच्यतेभृशंपाकंकरोति ॥ प्रज्वलतीवअग्निरिवज्वालायुक्तइव भवतिग्रन्थिः। अस्रम्रुधिरम्॥ अतीवदुष्टंकृष्णतादियुक्तंमज्जायुक्तञ्च ॥ ३३९ ॥

पित्तज ग्रन्थिके लक्षण ॥

पित्तज ग्रन्थि रक्त अथवा पीतवर्ण युक्त सम्पूर्ण शरीर में अत्यन्त दाह करने वाली भीतरताप युक्त सींगीसे चूसनेके समान पीड़ा वाली अग्निकीसी ज्वाला से युक्त और बहुत पकनेवाली होती है इसमें से अत्यन्त दूषित (कृष्णवर्णादियुक्त मज्जायुक्त) रुधिर बहता है ॥ ३३९ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

शीतोऽविवर्णोऽल्परुजोऽतिकण्डूःपाषाणवत्संहननोपपन्नः । चिराभिवृद्धिश्चकफप्रकोपाद्भिन्नःस्रवेच्छुक्लघनञ्चपूयम्॥ अविवर्णःप्रकृतिवर्णःपाषाणवत्संहननोपपन्नःसंहततायुक्तः॥ ३४० ॥

कफज ग्रन्थिके लक्षण ॥

कफजग्रन्थि शीतल स्वाभाविक वर्णयुक्त पाषाणके समान कठिन थोड़ीपीड़ा तथा अत्यन्त खुजली युक्त होतीहै यह देरमें पकती है और इससे श्वेत और गाढ़ा पीब निकलताहै ॥ ३४० ॥

अथ मेदोजमाह ॥

शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिःस्निग्धोमहान्कण्डुयुतोऽरुजश्च । मेदःकृतोगच्छतिचात्रभिन्नेपिण्याकसर्पिःप्रतिमन्तुमेदः ॥ तिलसदृशंवामेदःगच्छतिस्रवतिइत्यर्थः ॥ ३४१ ॥

मेदोज ग्रन्थिके लक्षण ॥

मेदोज ग्रन्थि स्निग्ध बड़ी खुजली तथा पीड़ा युक्त और शरीर के अनुसार वृद्धितथा क्षयवाली होती है इस्से तिलके समान अथवा घीके समान मेद बहता है ॥ ३४१ ॥

अथ शिराजमाह ॥

व्यायामजातैरबलस्यतैस्तैराक्षिप्यवायुश्चशिराप्रतानम् । सङ्कोच्यसम्पीड्यविशोष्यचापिग्रन्थिकरोत्युन्नतमाशुवृत्तम् ॥ ग्रन्थिःशिराजःसतुकृच्छ्रसाध्योभवेद्यदिस्यात्सरुजश्चलश्च । अरुक्सएवाप्यचलोमहांश्चमर्म्मोत्थितश्चापिविवर्ज्जनीयः ॥ तैस्तैर्बलवद्विग्रहादिभिः। आक्षिप्यचालयित्वा। सम्पीड्यसंहतीकृत्य। अरुजत्वादियुक्ता। अन्येऽपिग्रन्थयोऽसाध्याः ॥ तथाचभोजः। पञ्चैतानरुजोग्रन्थीन्मर्म्मजानचलांस्त्यजेत् ॥ कपोलगलमन्यासुदुश्चिकित्स्याहिसन्धिषु ॥ ३४२ ॥

शिराज ग्रन्थि के लक्षण ॥

बलवान् के साथ युद्धसे अथवा अत्यन्त व्यायामसे दुर्बल मनुष्यों की कुपित भई बायु शिराओं को खींचके संकुचित शुष्क औ इकट्ठी करके शीघ्रही उन्नत और गोलग्रन्थिको उत्पन्न करतीहै इस

शिराज ग्रन्थि कहते हैं यह ग्रन्थि जो पीड़ा रहित स्थिर बड़ी और मर्म्म स्थानमें उत्पन्नहुईहो तो असाध्य है पीड़ा रहित आदि लक्षणों से युक्त अन्य ग्रन्थि भी असाध्य होती है ऐसाही भोजने कहा है कि स्थिर और पीड़ा रहित पांचों प्रकार की ग्रन्थिमर्म्म कपोल गला गले की पीछेकी नस और सन्धि स्थान इनमें उत्पन्न भई होतो असाध्य हैं॥ ३४२॥

अथार्व्वुदमाहतस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

गात्रप्रदेशेक्वचिदेवदोषाःसमुच्छ्रितामांसमसृक्प्रदूष्य। वृत्तंस्थिरंमन्दरुजंमहान्तम नल्पमूलंचिरवृद्ध्यपाकम्॥ कुर्वन्तिसांसोच्छ्रयमत्यगाधंतदर्वुदंशास्त्रविदोवदन्ति। महान्तःग्रन्थ्यपेक्षयाचिरेणवृद्धिःपाकश्चयस्यततूचिरवृद्ध्यपाकम्॥अपाकमितिग्रन्थेःसकाशादस्यमेदोज्ञापकम्। अत्यगाधंदूगनुप्रविष्टम्॥ ३४३॥

अर्वुदरोग की सम्प्राप्ति और सामान्य लक्षण॥

कुपित दोष रुधिर और मांसको दूषित करके शरीरके किसी स्थानमें ग्रन्थि की अपेक्षा बड़े गोल स्थिर थोड़ी पीड़ा से युक्त बड़ी जड़वाले और बहुत गहरे मांसके शोथ को उत्पन्न करते हैं इसको शास्त्रज्ञ लोग अर्वुद कहते हैं यह देर में पकता है और बढ़ता नहीं॥ ३४३॥

निदानपूर्वकाणि विशिष्टानिलक्षणान्याह॥

वातेनपित्तेनकफेनचापिरक्तेनमांसेनचमेदसाच तज्जायतेतस्यचलक्षणानिग्रन्थेसमानानिसदाभवन्ति। ग्रन्थेसमानानिवातिकपैत्तिकश्लैष्मिकमेदोजानामर्वुदानांलक्षणानितुल्यानिभवन्ति॥ ३४४॥

अर्वुद के निदानपूर्वक विशेष लक्षण॥

वात पित्त कफ रुधिर मांस और मेद इन छःकारणों से छःप्रकार का अर्वुद रेग उत्पन्न होता है इनमें से वातज पित्तज कफज और मेदोज अर्वुदों के लक्षण बात पित्त कफ और मेदसे उत्पन्न भई ग्रन्थियों के समान होते हैं॥ ३४४॥

अथ रक्तार्वुदमाह॥

दोषःप्रदुष्टोरुधिरंशिराश्चसङ्कोच्यसम्पीड्यततस्त्वपाकम्। सस्रावमुन्नह्यतिमांसपिण्डंमांसांकुरैरावृतमाशुवृद्धिम्॥ स्रवत्यजस्रंरुधिरंप्रदुष्टमसाध्यमेतद्रुधिरात्मकन्तु। रक्तक्षयोपद्रवपीड़ितत्वात्पाण्डुर्भवेदर्वुदपीड़ितस्तु॥ दोषोऽत्रपित्तम्रुधिरंशिराश्च सङ्कोच्यसम्पीड्यसंहतीकृत्यमांसस्रृजोःसर्वेष्वर्वुदेषुदूष्यत्वम्॥ रक्तजेतुविशेषतोरक्तदुष्टिः। एवंमांसार्वुदविशेषतोमांसदुष्टिर्बोद्धव्या॥ ततःमांसपिण्डमुन्नह्यातिउद्गतंकरोति। अपाकमीषत्पाकंयथास्यादेवमितिक्रियाविशेषणम्॥ ईषत्पाकश्चैकदेशपाकेनरक्तक्षयोपद्रवाःसुश्रुतोक्ताःतैःपीड़ितत्वात्। अर्वुदपीड़ितःरक्तार्वुदपीड़ितः॥ ३४५॥

रक्तार्वुद के लक्षण॥

दूषित पित्त दोष रुधिर और शिराओंको संकुचित और इकट्ठी करके कुछ पकने वाले बहनेवाले मांस के अंकुरोंसे घिरेहुये बहुत शीघ्र बढ़ने वाले और निरन्तर दूषित रुधिरके बहनेसे युक्त मांस पिंड

को उत्पन्न करता है इसे रक्तार्बुद कहते हैं ये असाध्य हैं इसरोग में रुधिर के क्षय होने से रोगीका शरीर पांडु वर्ण होजाता है ॥ ३४५॥

मांसार्बुदस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितेऽङ्गेमांसप्रदुष्टंसमुपैतिशोथम् । अवेदनंस्निग्धमनन्यवर्णम पाकमश्मोपममप्रचाल्यम् ॥ मांसप्रदुष्टंवातेन । अवेदनमवेदनारहितमीषद्वेदनंवा ॥ अपाकंपाकरहितमीषत्पाकंवा ॥ ३४६ ॥

मांसार्बुद की सम्प्राप्ति ॥

घूंसे आदि के लगने से किसी अंगके पीड़ित होनेपर बायुके द्वारा दूषित मांस में पीड़ा रहित अथवा स्वल्प पीड़ावाला स्निग्ध स्वाभाविक वर्ण युक्त नहीं पकने वाला अथवा कुछ पकने वाला स्थिर और पाषाणके समान शोथ उत्पन्न होता है इसे मांसार्बुद कहते हैं ॥ ३४६ ॥

निदानमाह ॥

प्रदुष्टमांसस्यनरस्यगाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य । मांसाशनाभ्यासेनयःप्रदुष्टमांस स्तस्यैतद्भवतीत्यर्थः ॥ ३४७ ॥

मांसार्बुद के निदान ॥

बहुत मांस खानेवाले मनुष्यों का मांस दूषित होकर गाढ़ मांसार्बुद होता है ॥ ३४७ ॥

अथासाध्यमाह ॥

मांसार्बुदन्त्वेतदसाध्यमाहुःसाध्येष्वपीमानिविवर्ज्जयेच्च ॥ सम्प्रस्रुतंमर्म्मसुयच्चजातं स्रोतःसुवायच्चभवेदचाल्यम् ॥ साध्येष्वपिवातजादिष्वपिइमानिवक्ष्यमाणानिविवर्ज्जयेच्च सम्प्रस्रुतादीनि ॥ ३४८ ॥

असाध्य लक्षण ॥

येमांसार्बुद असाध्य हैं और साध्य बातज आदि अर्बुदोंमें भी जो अर्बुद बहने वाला मर्म्म स्थानों में अथवा स्रोतों में उत्पन्न हुवा और स्थिर होता है वो असाध्य है ॥ ३४८ ॥

अथपरमसाध्यमाह ॥

यज्जायतेऽन्यत्खलुपूर्वजातेज्ञेयंतदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः । यद्द्वन्द्वजातंयुगपत्क्रमाद्वाद्विर बुदन्तच्चभवेदसाध्यम् ॥ ३४९ ॥

अन्य असाध्य लक्षण ॥

एक अर्बुद पर जो दूसरा अर्बुद उत्पन्न होता है उसे अध्यर्बुद कहते हैं और इकट्ठे अथवा क्रम से जो लगेहुये दोअर्बुद उत्पन्न होत हैं उनको द्व्यर्बुद कहते हैं ये दोनों असाध्य हैं ॥ ३४९ ॥

अथार्बुदानांपाकाभावेहेतुमाह ॥

नपाकमायान्तिकफाधिकत्वान्मेदोबहुत्वाच्चविशेषतस्तु । दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्च तेषांसर्वार्बुदान्येवनिसर्गतस्तु ॥ ग्रन्थनाद्ग्रन्थिरूपत्वात् । नन्वपच्यांकफमेदसोराधि क्येऽपिपाकोदृश्यते ॥ तथाअत्रकथंनपाकइत्याह । निसर्गात्स्वभावात् ॥ ३५० ॥

अर्बुदोंके नपकने का कारण ॥

कफ तथा मेदकी अधिकता से दोषकी स्थिरता से ग्रन्थि की कठिनता से और स्वभाव से ही सबप्रकार के अर्बुद नहीं पकते हैं ॥ ३५० ॥

तत्रगलगण्डस्यचिकित्सा ॥

सर्षपान्शिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवान् । मूलकस्यचबीजानितक्रेनाम्लेनपेषयेत् ॥ गलगण्डोगण्डमालाग्रन्थयश्चैवदारुणाः । प्रलेपादेवनश्यन्तिबिलयंयान्तिसत्वरम्॥रक्षोघ्नतैलयुक्तेनजलकुम्भीकभस्मना । लेपनंगलगण्डस्यचिरोत्थस्यापिशस्यते ॥ रक्षोघ्नःसर्षपःश्वेतापराजितामूलंप्रातःपिष्टापिवेन्नरः । सर्पिषानियताहारोगलगण्डप्रशान्तये ॥ तिक्तालावूफलेपक्वेसप्ताहमुषितंजलम् । सद्यःस्याद्गलगण्डघ्नंपानात्पथ्यान्नसेविनाम् ॥ ३५१ ॥

गलगंड की चिकित्सा ॥

सरसों सहजनके बीज सनके बीज अलसी जौ औरमूली के बीज इनसब को खट्टे मट्ठे में पीसकर लेपकरने से गलगंड गंडमाला और दारुण ग्रन्थि का भी नाश होता है सरसों के तेल के साथ जल कुंभी की भस्म के लेपसे बहुत पुराने गलगंड का भी नाश होता है श्वेत विष्णु क्रान्ता की जड़ को पीसकर घीके साथ प्रातःकाल पीकर उचित आहार करनेसे गलगंडका नाश होताहै पक्कीकड़ुई तोंबीमें सातादिन तक रक्खे भये जल के पीने से पथ्य अन्न खाने वालोंका गलगंड शीघ्र नाशको प्राप्त होताहै ॥ ३५१ ॥

तैलंपिवेद्वामृतवल्लिनिम्बाहिंस्राभयावृक्षकपिप्पलीभिः । सिद्धंबलाभ्यांसहदेवदारुणाहितायनित्यंगलगण्डरोगी ॥ वृक्षकोऽत्रतुणिः । उक्तञ्चनिघण्टौधन्वन्तरिणा ॥ तुणिस्तूणीकपीतश्चनन्दिवृक्षश्चवृक्षकइति । बलाभ्यांबलातिबलाभ्याम् ॥ अमृतादितैलम् ॥ ३५२ ॥

गिलोय नींब हिंस्रा हड़ तुन पीपल बरियारा ककही औरदेवदारु इनके द्वारा तेलको बिधि पूर्वक पाककरके पीनेसे गलगंड का नाश होताहै इति अमृतादि तेल ॥ ३५२ ॥

यवमुद्गपटोलादिकटुरूक्षान्नभोजनम् । वमनंरक्तमोक्षश्चगलगण्डेप्रयोजयेत् ॥ दापयेत्प्रक्षणान्यत्रगण्डगोपालिकोद्भवः । प्रलेपस्त्वनभूतोऽयंबहुधाबहुभिर्जनैः ॥ प्रच्छान्नानिपक्षनाइतिलोके । गण्डगोपालिका ॥ गण्डगुयारीतिचप्रसिद्धा । आम्रवाटिकायांशुलभःकीटविशेषोभवति॥लवणंजलकुम्भास्तुकणाचूर्णेनसंयुतम् । प्रभातेनित्यमश्नीयाद्गलगण्डप्रशान्तये ॥ ३५३ ॥

जौ मूंग पटोलादि कटु तथा रूखी बस्तुओं का भोजन बमन रुधिर निकलवाना ये सब गलगंड में हितहैं और पछने भी दिलाने चाहिये गंडगोपालिका (इसे गंडगोपारी कहते हैं और यह आमकी वाटिकामें मिलीहै) केलेपसे गलगंड का नाशहोताहै यह बहुधा बहुतोंने अनुभव कियाहै सेंधानोनऔर जलकुंभीको पीपल के चूर्णके साथ रोज़ प्रातः काल खाने से गलगंड नष्ट होताहै ॥ ३५३ ॥

अथगण्डमालायाश्चिकित्सा ॥

काञ्चनारत्वचःक्काथःशुण्ठीचूर्णेनसंयुतः। मोक्षिकाढ्यः सकृत्पीतःक्काथोवरुणमूलजः॥ गण्डमालांहरत्याशुचिरकालानुबन्धिनी । पलमर्द्धपलञ्चापिपिष्टंतण्डुलवारिणा॥ काञ्चनारत्वचःपीत्वागण्डमालांव्यपोहति ॥ ३५४ ॥

गंडमाला की चिकित्सा ॥

कचनार की छाल के काढे में सोंठका चूर्ण डालकर अथवा बरुणाके काढे में शहद डालकरपीने से गंडमाला का शीघ्रही नाश होताहै दो तोले अथवा चार तोले कचनार की छालको चावलों के धोवन के साथ पीसकर पीने से गंडमालाका नाश होताहै ॥ ३५४ ॥

काञ्चनारस्यगृह्णीयात्त्वचंपञ्चपलोन्मिताम् । नागरस्यकणायाश्चमरिचस्यपलंपलम् ॥ पथ्याविभीतधात्रीणांपलमर्द्धंपृथक्पृथक् । वरुणस्याक्षमेकञ्चपत्रकैलात्वचांपुनः ॥ टङ्कंटंकंसमादायसर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । यावच्चूर्णमिदंसर्वंतावानेवात्रगुग्गुलुः ॥ संकुट्यसर्वमेकत्रपिण्डंकृत्वाविधारयेत् । गुटिकाःशाणिकाःकृत्वाप्रभातेभक्षयेन्नरः ॥ गलगण्डजयत्युग्रमपचीमर्वुदानिच । ग्रन्थीन्व्रणानिगुल्मांश्चकुष्ठानिचभगन्दरम् ॥ प्रदेयश्चानुपानार्थंक्काथोमुण्डितिकाभवः । क्काथःखदिरसारस्यक्काथःकोष्णो भयाभवः ॥ इति काञ्चनारगुग्गुलुः ॥ ३५५ ॥

कचनार की छाल २० तोले सोंठ पीपल तथा मिर्च चार २ तोले हड़ बहेड़ा तथा आंवला दोदो तोले बरुणा १ तोले तेजपात इलायची दालचीनी एक एक टंक इनसबको एक साथ चूर्ण करै फिर सब चूर्ण के बराबर गूगल मिलाकर कूटै और चार२ माशे की गोलीबनावै प्रातःकाल एक गोली रोज़खाय इनसे गलगंड अपची अर्बुद ग्रन्थि व्रण गुल्म कुष्ठ और भगन्दरका नाशहोताहै इसगोलीके साथ मुंडीके काढ़ेका कत्थे के काढ़ेका अथवा हड़ के काढ़े का गरम २ अनुपान करना चाहिये इति कांचनार गुग्गुलु ॥ ३५५ ॥

चक्रमर्दकमूलस्य पलंकल्केविपाचयेत् । केशरागरसेतैलं कटुकंमृदुनाग्निना ॥ पादांशिकंविनिःक्षिप्य सिन्दूरमवतारयेत् । एतत्तैलनिहन्त्याशु गण्डमालांसुदारुणाम् ॥ केशरागोभृंगराजः इतिचक्रमर्दतैलम् ॥ ३५६

पुवाडकी जड़का कल्क४तोलेऔरभंगरे का रस इनके साथ कड़ुवे तेलको मन्दाग्निमें पाककरे फिर चौथाई सिन्दूर छोड़कर उतारले इस तेल से शीघ्रही गंडमाला का नाश होता है इति चक्रमर्द तेल ॥ ३५६ ॥

गुञ्जामूलफलैस्तैलं विपक्वंद्विगुणाम्भसा । हरेदभ्यंगनस्याभ्यां गण्डमालांसुदारुणाम् ॥ इतिगुञ्जातैलम् ॥ ३५७ ॥

घुंघची की जड़ और फलोंके साथ दूना जल मिलाके पाककिये हुए तेलके शरीरमें मलने से और नस्य लेनेसे भयंकर गंडमालाका भी नाश होताहै इति गुञ्जा तेल ॥ ३५७ ॥

अथ ग्रन्थ्यार्व्वुदयोश्चिकित्सा । अथापच्याश्चिकित्सा ॥

चन्दनंसाभयालाक्षा वचाकटुकरोहिणी । एतत्तैलंशृतंपीत्वा समूलामपचींहरेत् ॥ चन्दनादितैलम् ॥ ३५८ ॥

अपची की चिकित्सा ॥

चन्दन हड़ लाख बच औ कुटकी इनके साथ पाक किये भये तेलके पीनेसे अपचीरोग का जड़ सहित नाश होताहै इतिचन्दनादि तैल ॥ ३५८ ॥

व्योषंविडंगंमधुकं सैन्धवंदेवदारुच । तैलमेभिःशृतंनस्यात् सकृच्छ्रामपचींहरेत् ॥ व्योषादितैलम् ॥ ३५९ ॥

त्रिकटु बायबिड़ंग मुलेठी सेंधानोन औदेवदारु इनके साथ पाककियेभये तेलकी नस्य लेनेसे कष्ट· साध्य अपचीका भी नाश होताहै इति व्योषादि तैल ॥ ३५९ ॥

अथ ग्रन्थिचिकित्सा ॥

स्वर्ज्जिकामूलकक्षारःशंखचूर्णसमन्वितः । एतेनविहितोलेपोहन्तिग्रन्थिन्तथार्व्वुदम् ॥ ग्रंथिर्नयोनश्यतिभेषजेन निष्काश्यतंशस्त्रचिकित्सितेन । जात्यादिपक्केनघृतेनवैद्यो व्रणे नचान्येनचसञ्चिकित्सेत् ॥ ग्रंथिमुद्धृत्यतत्रापि व्रणोक्तंक्रममाचरेत् । शिराग्रंथिविहा ·यान्यैः शेषेशम्भुम्प्रयुज्यते ॥ अन्येआचार्य्या इतिकथयन्ति ॥ ३६० ॥

ग्रन्थिकी चिकित्सा ॥

सज्जी मूलीकाखार औरशंखका चूर्ण इनसबको मिलाकर लेपकरने से ग्रन्थि औरअर्बुदरोगका नाश होताहै जो ग्रन्थि औषधि के द्वारा नष्ट न हो उसको शस्त्रके द्वारा निकलवाकर जात्यादि घृत और अन्यव्रण नाशक औषधियों से चिकित्सा करै ग्रन्थि को निकलवाकर उसमें व्रणोक्त चिकित्सा करै और अन्य आचार्य्योंका यह मतहै कि शिरा ग्रन्थिको छोड़कर और ग्रान्थियोंमें शस्त्रका प्रयोगकरै॥३६०॥

ग्रन्थ्यार्व्वुदानांनयतोविशेषः प्रदेशहेत्वाकृतिदोषदूष्यैः ॥ अतश्चिकित्सेद्भिषगर्वुदानि विधानविद्ग्रंथिचिकित्सितेन ॥ हरिद्रालोध्रपत्रांग गृहधूममनःशिलाः । मधुप्रगाढ़ो लेपोऽयं मेदोऽर्व्वुदहरःपरः ॥ मूलकस्यकृतःक्षारो हरिद्रायास्तथैवच । शंखचूर्णेनसंयुक्तो लेपःसिद्धोऽर्व्वुदापहः ॥ वटदुग्धकुष्ठरोमकलिप्तम्बद्धंवटस्यपत्रेण । अध्यस्थिसप्तरात्रान्महदप्युपशान्तिमर्व्वुदंगच्छेत् ॥ शिग्रुमूलकयोर्बीजंरक्षोघ्नंसुरसायवम् । तक्रेणाश्वरिपुंपिष्ट्वा लिम्पेदर्व्वुदशान्तये ॥ रक्षोघ्नंसर्षपम् । सुरसातुलसीयवंइन्द्रयवम् । अश्वरिपुमहिषी । इतिगलगण्ड । गण्डमालाग्रन्थ्यार्व्वुदनिदानचिकित्साधिकारः ३६१ ॥

ग्रन्थि औ अर्बुद इनदोनों में स्थान आकृति हेतु दोष और दूष्य इनमेंसे किसी का भी भेद नहीं है इसलिये वैद्य ग्रन्थि के चिकित्सा के समान अर्बुद की चिकित्साकरै हल्दी लोध लालचन्दन घर का धुवां और मैनसिल इनसबके चूर्णको सहत में घोटकर लेप करने से मेदके अर्बुद का नाशहोता है मूलीकाखार हल्दीकाखार और शंखकाचूर्ण इनसबको मिलाकर लेप करनेसे अर्बुद का नाशहोता है बरगद का दूध कूट और सांभरनोन इनसबका लेपकरके बरगदका पत्ता बांधनेसे सात रातके भी·

तर हड्डीपर उत्पन्न भयाभी अर्बुद नष्टहोताहै सहजन के बीज मूलीके बीज सरसों तुलसी इन्द्रजौ इनसबको भैंसके मट्ठेमें पीसकर लेप करनेसे अर्बुद नष्टहोताहै इतिगलगंड गंड माला ग्रन्थि अर्बुद निदान चिकित्सा धिकार समाप्त॥ ३६१ ॥

अथ श्लीपदाधिकारस्तत्रश्लीपदस्यविप्रकृष्टकारणमाह ॥

पुराणोदकभूयिष्ठाः सर्वर्त्तुषुचशीतलाः । येदेशास्तेषुजायन्तेश्लीपदानिविशेषतः ॥ विशेषतइतिवचनेनान्यत्रापि श्लीपदम्भवतीतिबोध्यते ॥ ३६२ ॥

इलीपद (फीलपांव) का अधिकार इलीपदके दूरवाले कारण ॥

जिनदेशों में पुरानाजल बहुत भरारहे और जो देश सबऋतुओं में शीतल रहैं उनमें बिशेषकरके इलीपद रोगहोतेहैं ॥ ३६२ ॥

अथ श्लीपदस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

यःसज्वरोवंक्षणजोभृशार्त्तिः शोथोनृणांपादगतःक्रमेण । तत्श्लीपदंस्यात्करकर्णनेत्र शिश्नोष्ठनासास्वपिकेचिदाहुः ॥ तात्त्रिविधम् । वातिकम्पैत्तिकंश्लैष्मिकञ्चेति ३६३ ॥

इलीपद के सामान्य लक्षण ॥

पहले ज्वरहोकर अत्यन्त पीड़ा सहित बंक्षण से उत्पन्न होकर क्रमसे पैरोंतक जाने वाले शोथ को इलीपद कहतेहैं कोई कोई कहते हैं कि हाथ कान नेत्र लिंग ओष्ठ और नासिकामें भी इलीपद होताहै इलीपद तीन प्रकारकाहै जैसे बातज पित्तज और कफज ॥ ३६३ ॥

तत्रतेषांक्रमेणलक्षणान्याह ॥

वातजंकृष्णरूक्षंहि स्फुटितन्तीव्रवेदनम् । अनिमित्तरुजञ्चास्य बहुशोज्वरएवच॥ पित्तजम्पीतसङ्काशं दाहज्वरयुतंभृशम् । श्लैष्मिकन्तुभवेत्स्निग्धं तथापाण्डुरमास्थिरम् ॥ त्रीण्यप्येतानिजानीयात् श्लीपदानिकफात्क्षयात् । गुरुत्वञ्चमहत्वञ्च यस्मान्नास्तिविनाकफात् ॥ ३६४ ॥

बातजादि इलीपदोंके लक्षण ॥

बातज इलीपद कृष्ण बर्ण रूखा कटाहुआ तथा अत्यन्त पीड़ा युक्त होताहै और इसमें अत्यन्त ज्वर तथा बिना कारणके पीड़ा उत्पन्न होती है पित्तज इलीपद पीतबर्ण और अत्यन्त दाह तथा ज्वर युक्त होता है कफज इलीपद श्वेत अथवा पांडु बर्ण भारी और स्थिर होताहै ये तीनों इलीपद कफ की अधिकता से होतेहैं क्योंकि भारीपन और बड़ापन बिनाकफके नहीं होसक्ता है ॥ ३६४ ॥

अथासाध्यमाह ॥

बल्मीकमिवसञ्जातं कण्टकैरुपचीयते । अब्दात्मकम्महत्तत्तु वर्ज्जनीयंविशेषतः ॥ यत्श्लैष्मिकाहारविहारजातैर्जातन्तथाभूरिकफस्यपुंसः । सास्रावमत्युन्नतसर्व्वलिंगं सकण्डुकञ्चापिविवर्ज्जनीयम् ॥ ३६५ ॥

असाध्य इलीपद के लक्षण ॥

जो इलीपद बांबी के समान उत्पन्न भया कांटेकीसी ग्रन्थियों से व्याप्त सालभरका पुराना और बड़ाहो वो असाध्यहै बहुत कफवाले पुरुषके कफकारी आहार बिहारके द्वारा उत्पन्नहुआ बहने वाला

बहुत ऊंचा खुजली युक्त और सम्पूर्ण वातजादि लक्षणों से युक्त श्लीपद असाध्य होताहै ॥३६५॥

श्लीपदस्यचिकित्सा ॥

लङ्घनालेपनस्वेदरेचनैरक्तमोक्षणैः । प्रायःश्लेष्महरैरुष्णैः श्लीपदंसमुपाचरेत् ॥ सिद्धार्थशोभाञ्जनदेवदारु विश्वौषधैर्मूत्रयुतैःप्रलिम्पेत् । पुनर्नवानागरसर्षपाणां कल्के नवाकाञ्जिकमिश्रितेन ॥ श्लीपदमितिशेषः । धत्तूरैरंडनिर्गुंडि वर्षाभूशिग्रुसर्षपैः । प्रलेपःश्लीपदंहन्ति चिरोत्थमपिदारुणम् ॥ असाध्यमपियात्यस्तं श्लीपदञ्चिरकालजम् । मूलेनसहदेवायास्तालमिश्रेणलेपनात् ॥ तालस्यफलरसोग्राह्यः ॥ सप्ततांम्बूलपत्राणां कल्कंतप्तेनवारिणा ॥ संसृष्टंलवणोपेतं सेवितंश्लीपदंहरेत् ॥ शाखोटकल्ककक्वाथं गोमूत्रेणयुतम्पिवेत् । श्लीपदानांविनाशाय मेदोदोषनिवृत्तये ॥ रजनींगुडसंयुक्तांगोमूत्रेणपिवेन्नरः । वर्षाभूत्रिफलाचूर्णंपिप्पलीसहयोजितम् ॥ सक्षौद्रंश्लीपदंलिह्यात्तुचिरोत्थंश्लीपदञ्जयेत् । गन्धर्व्वतैलसिद्धंहरीतकीङ्गोऽम्बुनापिवेन्नित्यम् ॥ श्लीपदबन्धमुक्तभवोत्यसौसप्तरात्रेण (इतिगन्धर्व्वतैलम्) एरण्डतैलङ्गोऽम्बुगोमूत्रम् ॥ इतिश्लीपदनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ३६६ ॥

श्लीपद की चिकित्सा ॥

लंघन लेप स्वेद बिरेचन रक्त मोक्षण और कफ नाशक उष्ण औषधियों के द्वारा श्लीपद की चिकित्सा करे सरसों सहँजन देवदारु तथा सोंठ इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अथवा गदहपूरना सोंठ तथा सरसोंको कांजी में पीसकर लेप करने से श्लीपदका नाशहोताहै धतूरा रेंडीकीजड़ निर्गुंडी गदहपूरना सहँजन तथा सरसों इन सबको पीसकरलेप करनेसेबहुत पुराना भयंकर श्लीपद भी नष्टहोताहै सहदेयी की जड़ को तालके फलके रसमें पीसकर लेप करनेसे बहुत पुराना असाध्य श्लीपद भी नष्ट होता है सेंधो नोन सहित सात पानों के कल्कको गरम जलके साथ सेवन करने से श्लीपद नष्ट होताहे सांखूकी छाल के काढ़े में गोमूत्र डालकर पीने से श्लीपद औ मेद के दोषोंका नाश होता है गुड़ सहित हल्दी को गोमूत्रके साथ पीने से अथवा गदह पूरना त्रिफला औ पपिल के चूर्ण को शहत के साथ चाटने से बहुत पुराना भी श्लीपद नष्ट होता है रेंड़ी के तेल में पाक कीहुई हड़ को गोमूत्र के साथ पीने से सात दिन में श्लीपद का नाश होता है इति श्लीपद निदान चिकित्सा धिकार समाप्त ॥ ३६६ ॥

तत्र विद्रधेःसम्प्राप्तिपूर्व्वकंसामान्यं लक्षणमाह ॥

त्वग्रक्तमांसमेदांसिप्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः । दोषाःशोथंशनैर्घोरञ्जनयन्त्युच्छ्रिताभृशम् ॥ महामूलंरुजावन्तमलंवाप्यथवायतम् । सविद्रधिरितिख्यातोविज्ञेयःषड्विधश्चसः ॥ अस्थिसमाश्रितोदोषइतिवक्ष्यमाणशोथाद्विद्रधेर्भेदार्थम् । यतोव्रणशोथेदोषाणामस्थिसमाश्रयनियमोनास्ति ॥ व्रणशोथंदारुणम्। आयतन्दीर्घंषड्विदत्वांविवृणोति ॥ यथादोषैःसमस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा । षण्णांतेषांतुल्यमेवलक्षणंसम्प्रचक्षते ३६७ ॥

बिद्रधिका अधिकार।

बिद्रधिका सम्प्राप्ति पूर्वक सामान्य लक्षण ॥

हड्डियों में स्थित दोष त्वचा रुधिर मांस औ मेदको दूषित करके क्रमसे भयंकर उन्नत बड़ी जड़ वाले पीड़ा युक्त और गोल अथवा लंबेशोथको जो उत्पन्नकरतेहैं उसेविद्रधि कहतेहैं विद्रधि छे प्रकार कीहैं बातज पित्तज कफज और सन्निपातज क्षतज औ रक्तज ॥ ३६७ ॥

अथ विशिष्टानिलक्षणानि। तत्रवातिकस्यलक्षणमाह ॥

कृष्णोऽरुणोवाविषमोभृशमत्यर्थवेदनाः। चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिर्वातसम्भवः॥ विषमोभृशम्। क्षणमल्पःक्षणंमहान्॥ चिरोत्थानप्रपाकःचिराद्विलम्बादुद्गतौप्रपाकौ यस्यसः ॥ ३६८ ॥

बातज विद्रधिके लक्षण ॥

बातज बिद्रधि कृष्ण अथवा रक्त वर्णयुक्त कभी छोटी कभी बड़ी अत्यन्त पीड़ा युक्त और बहुत काल में उत्पन्न होने वाली और पकने वाली होती है ॥ ३६८ ॥

अथ पैत्तिक माह ॥

पक्वोदुम्बरसङ्काशः श्यावोवाज्वरदाहवान्। क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिःपित्तसम्भवः ॥ ३६९ ॥

पित्तज बिद्रधि के लक्षण ॥

पित्तज विद्रधि कपिश वर्ण अत्यन्त ज्वर तथा दाह युक्त शीघ्रही बढ़ने वाली तथा पकनेवाली और पके गूलर के समान होती है ॥ ३६९ ॥

अथ श्लैष्मिक माह ॥

शरावसदृशःपाण्डुःशीतःस्निग्धोऽल्पवेदनः। चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःकफसम्भवः ॥ तनुपीतासिताश्चैषासास्रावाःक्रमशोमताः ॥ ३७० ॥

कफज विद्रधिके लक्षण ॥

कफज विद्रधि सकोरे के समान आकृतिवाली पांडु वर्ण शीतल स्निग्ध थोड़ी पीड़ा सहित और देरमें बढ़ने वाली तथा पकने वाली होती है बातज विद्रधिसे पतला पित्तज से पीला और कफज से श्वेत स्राव होता है ॥ ३७० ॥

अथ सन्निपातिक माह ॥

नानावर्णरुजास्रावोघाटलोविषमोमहान्। विषमंपच्यतेवापिविद्रधिःसान्निपातिकः॥ नानाअनेकविधाःवर्णाःकृष्णरक्तपाण्डुरूपाः। रुजातोद दाहकण्ड्वादिरूपाः ॥ स्रावाः तनुपीतसिताःयस्यसः। घाटलःघाटाकोटिःसास्यास्तीतिघाटलः ॥ अत्युच्छ्रिताग्रइत्यर्थः। विषमःनिम्नोन्नतः। विषमंपच्यतेवापिचिराचिरगम्भीरोत्तानोऽद्धर्वानूर्ध्वभेदेनविषमंयथास्यात्तथापच्यते ॥ ३७१ ॥

सन्निपातज बिद्रधिके लक्षण ॥

सन्निपातज विद्रधि नाना प्रकार के कृष्णादि वर्णों से युक्त दाहादि अनेक प्रकार की पीड़ा वाली पीतादि अनेक स्रावों से युक्त अत्यन्त उन्नत अग्रभाग वाली बड़ी और ऊंची नीची होती है और यह बहुत देर में अथवा बहुत शीघ्र उंचाई से अथवा निचाई से पकती है ॥ ३७१ ॥

अथाभिघातस्यविद्रधेःसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह।

तैस्तैर्भावैरभिहतेक्षतेवापथ्यकारिणाम्।क्षतोष्मावायुविसृतःसरक्तंपित्तमीरयेत्॥ ज्वरस्तृषाचदाहश्चजायतेतस्यदेहिनः। आगन्तुर्विद्रधिर्ह्येषपित्तविद्रधिलक्षणः ॥ तैस्तैर्भावैःकाष्ठलोष्ठपाषाणादिभिः। अभिहतेयथारक्तस्रावोभविष्यति ॥ तथाक्षतेकृतेक्षतोष्मा। अत्रक्षतशब्देनहतमात्रउच्यते। नाभिहतक्षतयोरुभयोरप्यूष्मावायुनाविसृतः॥ अभिहतेअभिघातात् क्षतेरक्तक्षयात्कुपितेनवायुनाप्रसृतःईरयेत्कोपयेत्॥ ३७२॥

अभिघातज विद्रधिका सम्प्राप्ति पूर्वक लक्षण॥

काष्ठ पाषाणादि के द्वारा लगीभई चोट में अथवा घाव में कुपथ्य करने वाले पुरुषों की बायु के द्वारा चलायमान घाव की ऊष्मा रुधिर सहित पित्तको दूषित करके विद्रधि को उत्पन्न करती है इसमें पित्तके लक्षण होते हैं औरोगी ज्वर तृषा तथा दाह से युक्त होता है इसे आगन्तुज बिद्रधि कहते हैं॥ ३७१॥

अथरक्तजमाह॥

कृष्णस्फोटावृतः श्यावस्तीव्रदाहरुजाज्वरः। पित्तविद्रधिलिंगस्तु रक्तविद्रधिरुच्यते॥ ३७३॥

रक्तज विद्रधि के लक्षण॥

रक्तज विद्रधि काली फुन्सियोंसे युक्त कपिशवर्णवाली तीक्ष्ण दाह पीड़ा तथा ज्वर से युक्त औ पित्तज विद्रधि के लक्षणों वाली होती है॥ ३७३॥

अधिष्ठानविशेषेणलिङ्गविशेषंबोधयितुमभ्यन्तरान्विद्रधीनाह॥

आभ्यन्तरानतस्तूर्ध्वंविद्रधीन्परिचक्षते।गुर्वसात्म्याविरुद्धान्नशुष्कशाकाम्लभोजनैः॥ अतिव्यवायामवेगाघातात्युष्णविदाहिभिः। पृथक्सम्भूयवादोषाःकुपितागुल्मरूपिणम्॥ वल्मीकवत्समुन्नद्धमन्तःकुर्वन्तिविद्रधिम्। गुदेवस्तिमुखेनाभ्यांकुक्षौवंक्षणयोस्तथा ॥ कक्षयोःप्लीह्नियकृतिहृदिवाक्लोम्निचाप्यथ। एषांलिङ्गानिजानीयाद्बाह्यविद्रधिलक्षणैः॥ सम्भूयवामिलित्वावा।समुन्नद्धम्समन्तादुन्नतम्॥ ३७४॥

स्थानों की विशेषता से विशेष लक्षणों को जनाने के लिये भीतर की बिद्रधियों का वर्णन॥

भारी असात्म्य विरुद्ध अन्न शुष्क शाक खटाई अत्यन्त मैथुन आमदोष मूत्रादि वेगों का रोकना और अत्यन्त विदाही तथा उष्ण बस्तु इनकारणों से बातादिक दोष अलग २ अथवा इकट्ठे कुपित होकर उन्नत गुल्म रूपी तथा बांबीके समान आभ्यन्तर विद्रधि को उत्पन्न करते हैं येविद्रधि गुदा वस्ति के अग्रभाग नाभि कुक्षि बंक्षण बगल प्लीहा यकृत् हृदय अथवा क्लोम में उत्पन्न होती हैंइनके लक्षण बाह्य बिद्रधियों के समान होते हैं॥ ३७४॥

स्थानविशेषेणरूप विशेष माह॥

गुदेवातनिरोधस्तुवस्तौकृच्छ्राल्पमूत्रता। नाभ्यांहिक्काजृम्भनेचकुक्षौमारुतकोपनम्॥ कटिपृष्ठग्रहस्तीव्रोवंक्षणोत्थेतुविद्रधौ।कक्षयोःपार्श्वसङ्कोचःप्लीह्न्युच्छ्वासावरोधनम्॥ सर्वाङ्गप्रग्रहस्तीव्रोहृदिकासश्चजायते। श्वासोयकृतिहिक्काचक्लोम्निपेपीयतेपयः॥

स्थानों की बिशेषतासे बिद्रधियों के बिशेष लक्षण॥

गुदामें विद्रधिहोनेसे बायुका रुकना वस्तिमें होनेसे मूत्रकी अल्पता तथा कठिनतासे निकलना

नाभिमें होनेसे हिचकी तथा जम्हाई कोखमें होने से बायुका कोप बंक्षण में होनेसे कमर तथा पाठ का जकड़ना बगलमें होनेसे पसलियोंका सिकुडना प्लीहामें होनेसे श्वासका रुकना हृदयमें होने से सम्पूर्ण शरीरमें पीड़ा तथा खांसी यकृत्में होनेसे श्वास तथा हिचकी और क्लोममें होनेसे अत्यन्त तृषा होतीहै ॥ ३७५ ॥

स्रावमार्ग माह ॥

नाभेरुपरिजाःपक्वायान्त्यूर्ध्वमितरेत्वधः । कक्षादिजाताःयान्तिस्रवन्तिऊर्द्ध्वमुखातइतरेवस्त्यादिजाःअधःगुदात् ॥ नाभिजस्तूभाभ्यांमार्गाभ्याम् । तथाचहारीतऊर्ध्वंप्रभिन्नेषुमुखान्नराणांप्रवर्त्ततेऽसृक्सहितोहिपूयः ॥ अधःप्रभिन्नेषुतुपायुमार्गाद्द्वाभ्यांप्रवृत्तिस्त्विहनाभिजेषु ॥ ३७६ ॥

बहने के मार्ग ॥

नाभिके ऊपर उत्पन्नहोने वाली बिद्रधिपककर मुखसे बहतीहै नाभिके नीचे वस्ति आदि स्थानों में उत्पन्न भई बिद्रधि गुदासे बहतीहैं और नाभिमें उत्पन्नभई बिद्रधि मुखतथा गुदा दोनोंसे बहती है और ऐसाही हारीतने भी कहाहै कि मनुष्यों के ऊपर के ओर बिद्रधि होनेसे मुखकेद्वारा पीपसहित रुधिरबहताहै नीचेके ओर बिद्रधि होनेसे गुदा के द्वारा पीपसहित रुधिर बहताहै और नाभिमें बिद्रधि होनेसे दोनों ओरसे पीपसहित रुधिर बहताहै ॥ ३७६ ॥

अथ साध्यत्वादिक माह ॥

अधःस्रुतेषुजीवेत्तुस्रुतेषूर्ध्वंनजीवति । हन्नाभिवस्तिवर्ज्जेषुतेषुभिन्नेषुवाह्यतः॥जीवेत्कदाचित्पुरुषोनेतरेषुकदाचन । हन्नाभिवस्तिवर्ज्जेषुप्लीहक्लोमादिजाःतेषुतथाभिन्नेषुनजीवेत् ॥हृदादीनांमर्म्मत्वात् । अतएवभोजः। असाध्योमर्म्मजोज्ञेयःपक्वोऽपक्वश्चविद्रधिः॥ सन्निपातोत्थितोप्येवपक्वएवाहिवस्तिजः । त्वग्जोनाभेरधोजश्चसाध्योयश्चसमीपजः ॥ अपक्वश्चैवपक्वश्चसाध्योनोपरिनाभितः । आध्मानंबद्धनिरुपन्दंछर्द्दिंहिक्कातृषान्वितम् ॥ रुजाश्वाससमायुक्तंबिद्रधिर्नाशयेन्नरम् ॥ ३७७ ॥

बिद्रधि के साध्यादि लक्षण ॥

बिद्रधियों के नीचे बहनेपर मनुष्यजीताहै और ऊपर से बहनेपर नहींजीताहै हृदय नाभि और वस्ति को छोड़कर प्लीहादि स्थानोंपर भी बिद्रधियोंके बाहर से भिन्न होनेपर चाहे पुरुष जीजाय परन्तु हृदय आदिमें भई बिद्रधिके भिन्न होनेपर मनुष्य कदापि नहीं जीताहै इसीसे भोजने कहाहै कि मर्म्म में हुई बिद्रधि पकीहो या न पकीहो असाध्य होतीहै सन्निपातज बिद्रधि भी असाध्य होती है वस्तिमें उत्पन्न बिद्रधि पकीभई असाध्य होतीहै नाभि के नीचे उत्पन्न भयी त्वचा में उत्पन्न भई और मर्म्म स्थान के समीप में भी उत्पन्न भयी बिद्रधि साध्यहै नाभिके ऊपर उत्पन्न हुयी बिद्रधि पकीभयी या न पकीभयी सभी असाध्यहैं आध्मान मूत्रका रुकना छर्द्दि हिचकी तृषा पीड़ा तथा श्वास इन लक्षणों से युक्त बिद्रधिवाला असाध्य है ॥ ३७७ ॥

अथ वाह्यविद्रधीनांसाध्यासाध्यत्वमाह ॥

साध्याविद्रधयःपञ्चविवर्ज्यःसान्निपातिकः । आमपक्वविदग्धत्वंतेषांज्ञेयश्चशोथवत् । शोथवत्वक्ष्यमाणव्रणशोथवत् ॥ ३७८ ॥

बाहर वाली विद्रधियों के साध्यादि लक्षण ॥

बातज पित्तज कफज रक्तज और आगन्तुज विद्रधि साध्य होती हैं सन्निपातज विद्रधि असाध्य होतीहै विद्रधियोंका कच्चा होना पकाहोना औ बिदग्ध होना आगे कहे जानेवाले व्रणशोथ के समान जानना चाहिये ॥ ३७८ ॥

तत्र विद्रधेश्चिकित्सा ॥

जलौकापातनंशस्तंसर्वस्मिन्नेवविद्रधौ । रेकोमृदुर्लङ्घनञ्चस्वेदःपित्तोत्तरंविना ॥ अपक्वेविद्रधीयुञ्ज्याद्व्रणशोथवदौषधम् । वातघ्नमूलकल्कैस्तुवसातैलघृतान्वितैः ॥ सुखोष्णैर्बहुलैर्लेपःप्रयोज्योवातविद्रधौ । यवगोधूममुद्गैश्चपिष्टैराज्येनलेपयेत् ॥ विलीयतेक्षणेनैवह्यविपक्वस्तुविद्रधिः । पैत्तिकंविद्रधिंवैद्यःप्रदिह्यात्सर्पिषायुतैः ॥ पयस्योशीरमधुकचन्दनैर्दुग्धपेषितैः । पयस्याऽनेकार्थत्वादत्रक्षीरकाकोलीगुणाधिक्यात्तस्याअलाभेऽश्वगन्धग्राह्या ॥ ३७९ ॥

विद्रधि की चिकित्सा ॥

सब प्रकार की विद्रधि में जोंक लगवाना मृदुविरेचन तथा लंघनहित है और पित्तज विद्रधि को छोडकर अन्य विद्रधियों में स्वेदन हित है बे पकी भई विद्रधिमें व्रण शोथके समान औषधि करनी चाहिये बातज बिद्रधि में दशमूल के कल्क को चर्बीतेल तथा घीमें मिलाकर कुछ गरम २ बहुत सा लेप करना चाहिये जो गेहूं तथा मूँगको पीसकर घीके साथ लेप करनेसे शीघ्रही वेपकी विद्रधि विलाय जाती है क्षीर काकोली (इसके अभाव में असगंध लेनी चाहिये) खस मुलेठी तथा लाल चंदन इनको दूध में पीसकर धीके साथ लेप करनेसे पित्तज विद्रधि शान्त होती है ॥ ३७९ ॥

पञ्चवल्कलकल्केनघृतामिश्रेणलेपयेत् । पिबेद्वात्रिफलाक्काथंत्रिवृत्कल्काक्षसंयुतम्॥ इष्टिकासिकतालोहकिट्टगोशकृतासह । मूत्रैःसुखोष्णैर्लेपेनस्वेदयेत्श्लेष्मविद्रधिम् ॥ दशमूलीकषायेणसस्नेहेनरसेनवा । शोथव्रणंवाकोष्णेनसनूनंपरिषेचयेत् ॥ पित्तविद्रधिवत्सर्वाक्रियानिरवशेषतः । विद्रधीकुशलःकुर्य्याद्रक्तागन्तुनिमित्तयोः ॥ रक्तचन्दनमञ्जिष्ठानिशामधुकगैरिकैः । क्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागन्तुनिमित्तके ॥ पीताह्येतोनिहन्त्याशुविद्रधिंकोष्ठसम्भवम् । कृष्णाजाजीविशालाचधामार्गवफलंतथा ॥ धामार्गवफलं कोशातकीफलम् श्वेतवर्षाभुवोमूलंमूलंवावरुणस्यच ॥ जलेनक्वथितंपीतमन्तर्विद्रधिहृत्परम् ॥ ३८० ॥

पंचवल्कल के कल्क को घीमें मिलाकर लेपकरै अथवा त्रिफला के काढ़े में तोलेभर निशोथ मिलाकर पिये ईंट बालू मंडूर तथा गोबर इन सबको गोमूत्र में पीसकर कुछ गरम २ लेप लगाके कफज विद्रधि में स्वेद न करना चाहिये दशमूल के काढ़ेमें अथवा मांस के रसमें घी मिलाकर पीड़ा युक्त शोथ व्रणको कुछ गरम करके सींचै रक्तज विद्रधि और आगन्तुज विद्रधि में पित्तज विद्रधिके समान चिकित्सा करनी चाहिये लाल चंदन मजीठ हल्दी मुलेठी औ गेरू इनसबको दूध के साथ लेप करनेसे रक्तज औ आगन्तुज विद्रधि कानाश होता है पीपल कालाजीरा इन्द्रायन औ तोरई इनसब के काढ़ेको पीनेसे अन्त विंद्रधि का नाश होता है श्वेत गदह पूरना अथवा बरुणाकी जड़ के काढ़ेको पीनेसे अन्त विंद्रधि का नाश होता है ॥ ३८० ॥

गायत्रीत्रिफलानिम्बकटुकामधुकंसमम् । त्रिवृत्पटोलमूलाभ्यांचत्वारोंऽशाःपृथक् पृथक् ॥ मसूरान्निस्तुषानूदद्यादेषक्काथोव्रणानूजयेत् । विद्रधीगुल्मवीसर्पदाहमोहज्वरापहः ॥ तृण्मूर्च्छाछर्दिहृद्रोगपित्तासृक्पृष्ठकामला । शिग्रुमूलंजलेधौतंपिष्टंवस्त्रेणगालयेत् ॥ तद्रसंमधुनापीत्वाहन्त्यन्तर्विद्रधिन्नरः । शोभाञ्जनकनिर्य्यूहोहिंगुसैन्धवसंयुतः॥ हन्त्यन्तर्विद्रधिंशीघ्रंप्रातःप्रातर्विशेषतः । इतिविद्रधिनिदानचिकित्साधिकारः ॥३८१॥

कत्था त्रिफला नीम कुटकी तथा मुलेठी ये सब समभाग निशोथ तथा परवल की जड़ चार २ भाग और भूसी रहित मसूरकी दालसब के बराबर इनसब औषधियोंका काढ़ा पीनेसे घाव बिद्रधि गुल्म वीसर्प्प दाह मोह ज्वर तृषा मूर्च्छा छर्दि हृदय के रोग रक्तपित्त और कामला इनसब का नाश होताहै सहजन की जड़को पानीमें धोयकर पीस के कपड़े में छानले फिर इस रसमें शहत डालकर पीने से अन्त बिंद्रधि नष्ट होतीहै सहजन के काढ़ेमें सेंधानोन तथा हींग छोड़कर प्रातः काल पीनेसे अन्तर्विद्रधि का नाश होताहै इति विद्रधि निदान चिकित्सा ऽधिकार समाप्त ॥ ३८१ ॥

अथ व्रणाधिकारस्तत्रव्रणशोथस्यसंख्याविवरण पूर्वकंसामान्यंरूपमाह ॥

पृथक्समस्तदोषोत्थारक्तजागन्तुजौतथा । व्रणशोथाःषडेतेस्युःसंयुक्ताःशोथलक्षणैः शोथलक्षणैःपूर्वोक्तैः ॥ ३८२ ॥

व्रणका अधिकार व्रण शोथकी संख्याओ सामान्य लक्षण ॥

व्रण शोथ छैप्रकारका है. जैसे बातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज और आगन्तुज इनके लक्षण पहले कहेभये शोथके समान होतेहैं ॥ ३८२ ॥

विशिष्टंरूपमाह ॥

विषमंपच्यतेवातात्पित्तोत्थश्चाचिराच्चिरम् । कफजःपित्तवच्छोथोरक्तागन्तुसमुद्भवौ ॥ ३८३ ॥

व्रण शोथके बिशेष लक्षण ॥

बातज व्रण शोथ बिषमतासे पित्तज व्रण शोथ शीघ्रही तथा कफज व्रणशोथ देरमें पकताहै रक्तज तथा आगन्तुज व्रणशोथ पित्तज शोथ के समान शीघ्रही पकताहै ॥ ३८३ ॥

अपक्कस्यव्रणशोथस्य लक्षणमाह ॥

मन्दोष्मताऽल्पशोथत्वंकाठिन्यंत्वक्सवर्णता । मन्दवेदनताचाऽपिशोथस्यामस्य लक्षणम् ॥ ३८४ ॥

बेपके भये व्रणशोथ के लक्षण ॥

थोड़ी ऊष्मा थोड़ा शोथ कठिनता और त्वचा का स्वाभाविक बर्ण होना यह बेपके भये व्रण शोथ के लक्षण हैं ॥ ३८४ ॥

तस्यपच्यमानस्यलक्षणमाह ॥

दह्यतेदहनेनैव क्षारेणेवप्रपच्यते । पिपीलिकागणेनैव दश्यतेछिद्यतेतथा ॥ भिद्यते चैवशस्त्रेण दण्डेनैवचताड्यते । पीड्यतेपाणिनैवान्तः सूचीभिरिवतुद्यते ॥ ऊषचोषौ विवर्णःस्या दंगुल्येवावपीड्यते । आसनेशयनेस्थानेशान्तिंवृश्चिकविद्धवत् ॥ नगच्छे

दाततःशोथो भवेदाध्मातवास्तिवत् । ज्वरस्तृष्णाऽरुचिश्चैततपच्यमानस्यलक्षणम् ॥ छिद्यतेद्विधाक्रियतइव । भिद्यतेविदार्य्यतइव । ऊषोदाहः । चोषःपांश्वेस्थाग्निनेवस न्ताप्यताभ्यांयुक्तः।आततःत्वक्सङ्कोचरहितः । बस्तिर्मूत्राशयश्चर्म्मपुटोवा ॥ ३८५ ॥

पकेहुए व्रणशोथ के लक्षण ॥

व्रणशोथ जब पकने लगताहै तब जलने के समान क्षार से पकने के समान चींटियों के काटनेके समान छेदने के समान शस्त्र से काटने के समान लाठीसे मारने के समान हाथसे दबाने के समान तथा भीतर सूजियों से भोकने के समान पीड़ा होतीहै दाह चोष (पासरखी भई अग्निके द्वारा मानो जलन) बिवर्णता अंगुली से दबाने के समान पीडा मांस का न सिकुडना और वस्तिके समान फूलना ये लक्षण होतेहैं रोगी बिच्छी से काटे हुए के समान बैठने में लेटने में अथवा खड़े होने में किसी प्रकार भी चैन नहीं पाताहै और ज्वर तृषा तथा अरुचिसे पीड़ित होताहै ॥ ३८५ ॥

पक्कस्यलक्षणमाह ॥

वेदनोपशमःशोथो लोहितोऽल्पोनचोन्नतः । प्रादुर्भावोवलानाञ्च तोदःकण्डूर्मुहुर्मुहुः ॥ उपद्रवाणांप्रशमो निम्नतास्फुटनन्त्वचाम् । वस्ताविवाम्बुसञ्चारः स्याच्छोथेऽगुलिपीड़िते ॥ पूयश्चपीड़येदेक मन्तमन्तेचपीड़िते । बुभुक्षाव्रणशोथस्य भवेतूपक्कस्य लक्षणम् ॥ वेदनोपशमःदाहादिदुःखोपशमः । अल्पोलोहितइत्यन्वयः । नचोन्नतःपच्यमानापेक्षया । उपद्रवाणांज्वरादीनाम् । निम्नतास्वरूपतोंऽगुलिपीड़नाद्वाअवनतत्वम् । स्फुटनमंकिञ्चिद्विदारणम् । वस्ताविवेत्यादिशोथेंगुलिपीड़ितेसति । अंगुलिपीड़िताद्देशादन्येदेशेअम्बुसञ्चरःकिञ्चित्वस्तीचर्म्मपुटके । एवंअन्येएकदेशेपीड़ितेएकमन्तमपरमन्तमापूर्य्यपीड़यति ॥ ३८६ ॥

पकेहुये व्रणशोथ के लक्षण ॥

व्रणशोथ के पकजानेपर दाहादि पीड़ा की शान्ति सूजन का थोड़ा होना रक्तवर्ण होना तथा कम उन्नतहोना सिकुडोंका पड़ना सूजी भुकने कैसी पीड़ा होनी बारम्बार खुजलीहोना ज्वरादि उपद्रवों की शान्ति गहरापन त्वचाका फटना शोथको अंगुलीके द्वारा दबानेसे जलसे भरीभई कुप्पी में जल के समान पीपका घूमना और एक स्थान में दबानेसे दूसरे स्थानमें पीपका चलाजाना ये लक्षण होतेहैं और रोगी को भूख लगतीहै ॥ ३८६ ॥

एकदोषारब्धेऽपिशोथेपाककालेसर्वदोषसम्बन्धमाह ॥ ऋतेऽनिलादुग्रविनानपित्तं पाकःकफञ्चापिविनानपूयः । तस्माद्धिसर्वेपरिपाककाले पचन्तिशोफास्त्रिभिरेवदोषैः ॥ प्रचन्तिपाकंप्राप्नुवन्ति । एवशब्दोत्राप्यर्थः अव्ययानामनेकार्थत्वात् । पाकेमतान्तरमाह।कालान्तरेनाभ्युदितन्तुपित्तंकृत्वावशेवातकफौप्रसह्य । पचत्यतःशोणितमेषपाको मंतःपरेषांविदुषांद्वितीयः ॥ बशेकृत्वाहीनीकृत्यशोणितंकर्म्मपूर्व्वत्रकफात्पूयोऽत्रशोणितात्पूयइतिभेदः ॥ ३८७ ॥

एकदोष सेभये भी व्रणशोथ के पकजानेपर तीनोदोषोंका सम्बन्धहोताहै जैसे कि बायुके बिना पीड़ा नहींहोती पित्तके बिना पाकनहीं होता और कफके बिना पीप नहीं निकलता इसलिये पकने के समय सबप्रकार के व्रणशोथोंमें तीनों दोषोंका सम्बन्धहोताहै अन्य बिद्वानोंका यहमतहै कि कालान्तरमें बढ़ाहुआ पित्त हठपूर्वक बायु तथा कफको हीनकरके रुधिरको पकाताहै पहले मतमें कफ से पीपहोताहै और दूसरे में रुधिर से पीपहोताहै यहीभेदहै ॥ ३८७ ॥

गम्भीरपाकेशोथेपाकज्ञानार्थमथलक्षणान्तरमाहसुश्रुतः । कफजेषुचशोथेषुगम्भीरं पाकमेत्यसृक् । पक्कलिंगंततःस्पष्टंयतःस्याच्छोथशीतता ॥ त्वक्सावर्ण्यरुजोऽल्पत्वं घनस्पर्शत्वमश्मवत् । कफजेषुचशोथेषुगम्भीरमसृक्पाकमेति॥तत्रकथंपाकज्ञानमित्याह । तत्रततःकारणात्पक्कलिंगंस्पष्टम् । यतःपच्यमानावस्थान्तर्गतरागदाहव्यथाघनान्तरेशोथशीतादयोभवन्ति । घनस्पर्शत्वंस्पर्शव्यथत्वम् ॥ ३८८ ॥

सुश्रुतका कहाभया गम्भीर पाकका लक्षण ॥

कफज शोथ में रुधिरका भीतर की ओर पाकहोता है इसलिये उसका लक्षण स्पष्ट नहींहोता (अर्थात् मालूम नहींहोता) और उसमें शोथकी शीतलता त्वचाका स्वाभाविक होना पीड़ा की अल्पता पाषाणकी समान कठोरता और स्पर्श करने से पीड़ा होना ये लक्षण होतेहैं ॥ ३८८ ॥

अनिर्हृतस्यपूयस्यदोषमाह ॥

कक्षंसमासाद्ययथैववह्निर्वातेरितःसन्दहतिप्रसह्य । तथैवपूयोह्यविनिःसृतस्तु मांसं शिरास्नायुमपीहखादेत् । कक्षंतृणवनम् ॥ ३८९ ॥

पीपके न निकलनेके दोष ॥

बायुसे प्रेरणा की भई अग्नि तृणोंमें लगकर जैसे शीघ्रही भस्म करती है उसीप्रकार नहीं निकला हुआ पीपमांस शिरा तथा स्नायुको भी नष्ट करताहै ॥ ३८९ ॥

शोथस्यामपक्कलक्षणज्ञानाज्ञानेभिषजांगुणदोषावाह ॥

आमंविदह्यमानञ्च सम्यक्पक्कन्तुयोभिषक् । जानीयात्सभवेद्वैद्यःशेषास्तस्करवृत्तयः ॥ विदह्यमानंविपच्य मानम् । तस्करवृत्तयःयेषां तस्कराणामिवद्रव्यलाभमात्रप्रयोजनंभवति । नतुधर्म्मयशोमैत्रीलाभः ॥ यश्छिनत्त्याममज्ञानाद्यश्चपक्कमुपेक्षते । श्वपचाविवविज्ञेयौ तावनिश्चित्यकारिणौ ॥ ३९० ॥

पके हुये और बेपके हुये शोथ के लक्षणों के ज्ञाता और अज्ञाता बैद्यों के गुणदोष ॥

जो वैद्य कच्चे पकेहुये और पकेहुये व्रणशोथके लक्षणोंको जानताहै वहीबैद्यहै और जो नहींजानता वह तस्कर रूप (लोभी) है जो बैद्य अज्ञानसेकच्चे व्रणशोथको चीर डालताहै और पके व्रणशोथको नहीं चीरताहै ये दोनों बे समझ बैद्य चांडालके समान जानने चाहिये ॥ ३९० ॥

अथ व्रणशोथचिकित्सा ॥

आदौशोथहरोलेपस्ततस्तुपरिषेचनम्॥विम्लापनमसृङ्मोक्षस्ततःस्यादुपनाहनम्॥ पाचनंभेदनंपश्चात् पीडनंशोधनंतथा॥रोपणंवर्णकरणं व्रणस्यैतेक्रमाःस्मृताः॥क्रमःचिकित्सा । सुश्रुतेव्रणस्यषष्टिरूपकालिखिताःसंतितेसर्वेअत्रविस्तरभयान्नलिखिताः ३९१ ॥

व्रणशोथकी चिकित्सा ॥

व्रणशोथ में पहिले शोथघ्न लेप फिर परिषेक तरारा बिम्लापन (अंगूठे को हथेली में रगड़कर जब गरम होजाय तब उस्से सेंकना) रुधिर निकलवाना उपनाह (पुलटिस) पकानेवाली औषधों का प्रयोग भेदन (चिरवाना) पीड़न शोधन रोपण (भरना) और वर्ण करण यह चिकित्सा क्रमसे करनी चाहिये सुश्रुत में साठ प्रकार के व्रण लिखेभये हैं बिस्तार के भयसे यहां नहीं कहेगये ॥ ३९१ ॥ तत्रादौशोथहरं लेपमाह ॥

यथाप्रज्वलितेवेश्मन्यम्भसापरिषेचनम् । क्षिप्रंप्रशमयत्यग्निमेवमालेपनंरुजः ॥ वीजपूरजटाहिंस्रा देवदारुमहौषधम् । रास्नाग्निमन्थालेपोऽयंवातशोथविनाशनः ॥ कल्कःकाञ्जिकसम्पिष्टः स्निग्धोमधुकचन्दनैः ॥ ३९२ ॥

शोथघ्न लेप ॥

जैसे जलते हुये घरमें जल सींचने से शीघ्रही अग्नि शान्त होती है उसी प्रकार व्रणमें लेप लगानेसे पीड़ा शान्त होती है बिजौरा की जड़ छड़ देवदारु सोंठ रास्ना और अरणी इन सबका लेप लगाने से बातज शोथ नष्ट होता है मुलेठी और लाल चंदनको कांजी में पीसकर घी मिलाकर लेपकरने से बातज व्रणशोथ नष्ट होताहै ॥ ३९२ ॥

दूर्वाचनलमूलञ्च पद्मकाष्ठञ्चकेशरम् । उशीरंवालकंपद्मं लेपोऽयंपित्तशोथहा ॥ न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थ प्लक्षवेतसवल्कलैः । ससर्प्पिकैःप्रदेहःस्याच्छोथेपित्तसमुद्भवे ॥ आगन्तुजेरक्तजेचलेपएषोऽभिपूजितः ॥ ३९३ ॥

दूब नरकुल की जड़ पद्माख नागकेसर खस सुगन्धबाला और कमल इन सबका लेप करने से अथवा बरगद गूलर पीपल पकरिया और वेंत इनकी छालको पीसकर घीकेसाथ लेप करनेसे पित्तज शोथ नष्ट होता है आगन्तुज और रक्तज व्रण शोथ में भी यही लेप हित है ॥ ३९३ ॥

अजगन्धाजशृङ्गीच मञ्जिष्ठासरलस्तथा । एकैषिकाश्वगन्धाच लेपोऽयंश्लेष्मशोथहा ॥ (अजशृंगीमेढ़ाशिङ्गी । एकैषिकाश्यामपनिरशोथ) कृष्णापुराणपिण्याकं शिग्रुत्वक्सिकताशिवा । मूत्रपिष्टःसुखोष्णोऽयं प्रलेपःश्लेष्मशोथहा ॥ ३९४ ॥

अजगंधा मेढ़ासींगी मजीठ सरला सतावर और असगंध इनसबका लेप करनेसे अथवा पीपल पुरानी खली सहजन की छाल बालू और हड़ इन सबको गोमूत्रमें पीसकर कुछ गरम २ लेप करने से कफज शोथ नष्ट होता है ॥ ३९४ ॥

नरात्रौलेपनंदद्याद्दत्तञ्चपतितंतथा । नचपर्य्युषितंशुष्य मानंतन्नैवधारयेत् ॥ दत्तमेवपुनर्दद्यात् । पतितंदीयमानं सद्यदङ्गात्पतितंपर्य्युषितम् । लेपनद्रव्यंकल्कीकृतंयत्पर्य्युषितम् ॥ तमसापिहितोऽत्युष्मा रोमकूपमुखोत्थितः । विनालेपमनिर्य्याति रात्रौनालेपयेदतः ॥ रात्रावपिलेपयस्तु विधातव्योविचक्षणैः । अपाकिशोथगम्भीरे रक्तपित्तसमुद्भवे ॥ ३९५ ॥

रात को लेपन लगावै लगायेभये लेपको फिर नलगावै लगाकर गिरेभये लेपको फिर न लगावै बासीलेप न लगावै लेपके सूखजानेपर छुड़ाडाले रात्रिके समय अंधकारकेद्वारा आच्छादित होनेके

कारण लेप न करने से व्रणकी अधिक ऊष्मारोम कूपोंके द्वारा बाहर निकलती है इसलिये रात्रिमें लेप न करना चाहिये परन्तु बेपके भये गम्भीर और रक्त पित्तज शोथ में रात्रिको भी लेप लगाना चाहिये ॥ ३९५

अथ परिषेचनमाह ॥

यथाम्बुभिःसिच्यमानं शान्तिमग्निर्हिगच्छति । दोषाग्निरेवंसहसा परिषेकेणशाम्यति । तद्यथा ॥ वातघ्नौषधनिष्काथैस्तैलैर्मांसरसैर्घृतैः । उष्णैःसंसेचयेच्छोथं वातिकं कांजिकेनच ॥ पित्तरक्ताभिघातोत्थं शोथसिञ्चेत्सुशीतलैः ॥ ३९६ ॥

परिषेचनका वर्णन ॥

जैसे जलके सींचनेसे अग्निशान्त होतीहै उसी प्रकार तरारेसे दोषरूपी अग्निशान्त होतीहै वातघ्न औषधियों का काढ़ा तेल मांसरस घी और कांजी इनमेंसे किसीको गरम करके बातज शोथमें तरारा देना चाहियें ॥ ३९६ ॥

क्षीराज्यमधुखण्डेक्षुरसैःपित्तहरैःश्रृतैः ॥ ३९७ ॥

दूध घीशहत ऊंखकारस और पित्तघ्न औषधियों का काढ़ा इनमें से किसी के द्वारा पित्तज रक्तज और आगन्तुज शोथमें शीतल तरारेदेने चाहिये ॥ ३९७ ॥

कफघ्नौषधनिष्काथैः शीतैस्तुपरिषेचयेत् । तैलक्षाराम्बुमूत्रैश्च शोथंश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ ३९८

कफघ्न औषधियों का काढ़ा तेल क्षार का पानी और गोमूत्र इनमें से किसी के द्वारा कफज व्रण शोथमें शीतल तरारेदेवै ॥ ३९८

अथ विमलापनमाह ॥

जातस्यकठिनस्यास्य कार्य्यविम्लापनंशनैः ॥ ३९९ ॥

बिम्लापन का वर्णन ॥

व्रण शोथके कठिन होनेपर धीरे२ विम्लापन करना चाहिये ॥ ३९९ ॥

अस्यशोथस्यविम्लापनस्य विधिमाह सुश्रुतः ॥

अभ्यज्यस्वेदयित्वातु वेणुनाड्याशनैःशनैः । विमर्दयेद्भिषङ्मन्दन्तलेनांगुष्ठकेन वा ॥ वेणुनाड्यावंशनलिकया स्वेदयित्वाउष्णस्वेदंकृत्वा ॥ ४०० ॥

बिम्लापन की बिधि ॥

व्रणस्थानमें घी लगाकर बांसकी नलीसे उष्ण स्वेदन करके अंगूठेसे अथवा हथेलीसे धीरे धीरे मर्दन करै ॥ ४०० ॥

अथ रक्तमोक्षणमाह ॥

वेदनोपशमार्थाय तथापाकशमायच । अचिरोत्पतितेशोथे शोणितस्रावणंचरेत् ॥ (चरेतकुर्य्यात्) एकतस्तुक्रियाःसर्वाःरक्तमोक्षणमेकतः । रक्तंहिवेदनामूलं तच्चेन्नास्ति नचास्तिरुक् ॥ विवर्णःकठिनःश्यावः व्रणवच्चाल्पवेदनः । विषाणैश्चविशेषेण जलौकाभिःपदैरपि ॥ शोणितस्रावणञ्चरेदित्यनेनान्वयः ॥ ४०१ ॥

रुधिर निकलवानेकी विधि ॥

थोडेदिनसे भये शोथ में पीडाकी शान्ति के लिये और न पकनेके लिये रुधिर निकलवावै सम्पूर्ण चिकित्साओं से रुधिर निकलवानाही श्रेष्ठ है क्योंकि रुधिरही पीड़ाका कारण है इस से पीड़ाभी

रुधिरके निकलनेपर न होगी बिवर्ण कठिन कापिशवर्ण तथा थोड़ी पीड़ायुक्त जो ब्रणहो उसमें सींगी जोंक अथवा पदोंसे रुधिर निकलवावै ॥ ४०१ ॥

अथोपनाहः ॥

स्वेदस्तस्यबिधिर्भैषजसाधनप्रकरणेकथितएवास्ति ॥ रुजावतांदारुणानांकठिनानांतथैवच । शोथानांस्वेदनंकार्य्यं येचाप्येवंबिधाब्रणाः ॥ शोथानांसामान्यानाम् । ब्रणाःब्रणशोथाः । तेषामपिस्वेदनंकार्य्यम् ॥ शोथयोरुपनाहञ्चदद्यादामविदग्धयोः । प्रशाम्यत्यबिदग्धस्तुविदग्धःपक्कतांब्रजेत् ॥ आमबिदग्धौअपक्कपाकोन्मुखौ ॥ ४०२ ॥

उपनाह (स्वेद) की बिधि तो औषध साधनप्रकरण में कहीगईहै जो शोथ अत्यन्त पीड़ायुक्त तथा कठिनहों उनमें स्वेद न करनाचाहिये और इसी प्रकारके ब्रणोंमेंभी स्वेदन करना चाहिये बे पकेहुये और पकने को उन्मुख इनदोनों प्रकारके ब्रणोंमें उपनाह का प्रयोग करनाचाहिये क्योंकि इससे कच्चा ब्रण गल जाताहै और पाकोन्मुखब्रण शीघ्रही पकजाताहै ॥ ४०२ ॥

यथादशमूलीबलारास्नावाजिगन्धाप्रसारिणी ।मूलंबातरिपोःसिन्धुर्बारिपूर्णेघटेक्षिपेत् ॥ शोभाञ्जनःकणाचापिसैन्धवं विश्वभेषजम् ॥ शणकार्पासयोर्बीजमतसीचकुलत्थिका॥तिलायवाश्चसिद्धार्थःकुठेरोमूलकंमिसिः॥यथाप्राप्तैरमीभिस्तुद्रब्यैरम्लेनसंयुतैः। कल्कीकृतैःसुखोष्णैश्च स्वेदयेद्विधिवच्छनैः ॥ अनेनप्रशमंयाति बातशोथोनसंशयः ॥ कुठेरःकृष्णबर्व्वरी इतिदशमूल्यादिरुपनाहः ॥ ४०३ ॥

दशमूल बरियारा रास्ना असगंध प्रसारिणी अरंडकी जड़ और सेंधानोन इनसबको जलसे भरेभये घड़ेमें छोड़कर स्वेदन करना चाहिये सहजन पीपल सेंधानोन सोंठ सनके बीज बिनौले अलसी कुलथी तिल जौ सरसों कृष्ण तुलसी मूली औ सौंफ इनसब औषधोंको जो प्राप्त होसकें लेकर कांजी में पीसके औ कुछ गरम करके धीरे २ स्वेदन करे इससे वातजशोथ शान्त होताहै इतिदशमूल्यादि उपनाह ॥ ४०३ ॥

पुनर्नवादारुशुण्ठीशिग्रुःसिद्धार्थएवच।अम्लपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपःसर्व्वशोथहा॥ इतिपुनर्नवादिः ॥ ४०४ ॥

गदहपूरना देवदारु सोंठ सहजन तथा सरसों इनसबको कांजी में पीसकर गरम करके लेपलगानेसे सबप्रकार के शोथोंका नाशहोताहै इति पुनर्नवादि लेप ॥ ४०४ ॥

अथ पाचनमाह ॥

नप्रशाम्यतियःशोथःप्रलेपादिविधानतः । द्रव्याणिपाचनीयानिदद्यात्तत्रोपनाहने४०५॥

पाचनका वर्णन ॥

जो शोथलेप आदिके द्वारा न शान्तहो उसमें ब्रणके पकाने वाली औषधियोंका उपनाहकरै४०५॥

अथ पाचनद्रव्याण्याह ॥

शणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः । अतसीशक्तवोकिन्वमुष्णद्रव्यञ्चपाचनम् ॥

शणफलादीनामतस्यन्तानांशक्तवःकर्त्तव्याः । किन्वम्सुराबीजम् ॥ यवगोधूमधान्यादि प्रकारःअन्यच्चोष्णं द्रव्यंव्रणस्यपाचनंभवति ॥ ४०६ ॥

पकानेवाली औषध ॥

सन मूली तथा सहजन के फल तिल सरसों अलसी सतू किराव (गेहूं जौ आदि जो कि शराब बनानेके लिये तयारकियेजातेहैं और अन्य उष्ण द्रव्य व्रणको पकाने वाली होतीहैं ॥ ४०६ ॥

अथ भेदन माह ॥

अन्तःपूयेष्ववक्रेषुतथाचोत्संगवत्स्वपि । गतिमत्सुचरोगेषुभेदनंसम्प्रयुज्यते ॥ उत्संगवत्सुकोटरवत्सु । गातिमत्सुनाड़ीव्रणेषुभेदनम् ॥ शस्त्रमौषधङ्कर्म्मच ॥ ४०७ ॥

भेदनका वर्णन ॥

जिनके भीतर पीपभरा हो जिनमें मू न भयाहो जिनमें चकत्ते पड़गयेहों और नाड़ीव्रण(नासूर) इनका शस्त्रके द्वारा अथवा औषध के द्वारा भेदन करना चाहिये ॥ ४०७ ॥

तत्रशस्त्रसाध्यम्भेदन माह ॥

रोगेव्यधेनसाध्येतुयथादेशंप्रमाणतःशस्त्रंनिधायदोषांस्तुस्रावयेत्कथितंयथा४०८॥

शस्त्र साध्य भेदन ॥

शस्त्र साध्य व्रण में शस्त्र के लगानेके स्थान का निरूपण करके प्रमाणके अनुसार भेदनकरै और कहेभये नियमके अनुसार पीप आदिको निकालै ॥ ४०८ ॥

कविःशस्त्रनिःक्षेपापवाद माह ॥

वालवृद्धासहक्षीणभीरूणांयोषितामपि।व्रणेषुमर्म्मजातेषुभेदनन्द्रव्यलेपनम्४०९॥

शस्त्र भेदनका निषेध ॥

बालवृद्ध सुकुमार क्षीण डरपोंक तथा स्त्री इन सबके व्रणों में और मर्म्म में भये व्रणों में औषधियों के लेपसे भेदन करना चाहिये शस्त्र द्वारा भेदन न करना चाहिये ॥ ४०९ ॥

तत्रभेदन माह ॥

चिरविल्वोऽग्निकोदन्तीचित्रकाहयमारकःकपोतकाकगृध्राणांमललेपेनभेदनम्॥दारणमाह । क्षारद्रव्यन्तथाक्षारोदारणःपरिकीर्त्तितः ॥ क्षारद्रव्यमपामार्ग्गादिक्षारस्त्वर्ज्जिकायवक्षारादिः ॥ हस्तिदन्तोजलेपिष्टोविन्दुमात्रप्रलेपितः । अत्यर्थकठिनेशोथेकथितो भेदनःपरः ॥ ४१० ॥

भेदन औषधि ॥

करंजुवा भिलावां जमाल गोटेकी जड़ चीता कनेर कबूतर की विष्ठा कउवेकी विष्ठा तथा गीध की विष्ठा इनमें से किसीका लेप करने से भेदन होता है क्षारवस्तु (लटजीरा आदि) क्षार (जवाखार आदि) इनके लगानेसे भी भेदन होता है हाथीदांत को पानीमें घिसकर एक विन्दुमात्र लेप करने से अत्यन्त कठिन शोथका भी भेदहोताहै ॥ ४१० ॥

अथ पीड़नमाह ॥

द्रव्याणांपिच्छिलानान्तुत्वङ्मूलानिप्रपीड़नम् । यवगोधूममाषाणांचूर्णानिचसमा

सतः ॥ शुष्यमाणमुपेक्षेतप्रलेपम्पीड़नम्प्रति।नचापिमुखमालिम्पेत्तथादोषःप्रसिच्यते ॥ पीड़नम्प्रतिपीड़नंद्रव्यलेपंप्रतिपीड़नद्रव्यलेपंशुष्यन्तमपिधारयेदित्यर्थः। तथाव्रणस्य मुखलेपंविनाप्रस्रवति ॥ ४११ ॥

पीड़न का वर्णन ॥

चेपदार औषधियों की छाल तथा जड़ और जौ गेहूं तथा उरदका आटा इनके द्वारा पीड़न (दवाइयां जिनके लगाने से पीप आपही निकल जाय) करनी चाहिये पीड़न औषधियों का लेप सूखने पर भी न छुड़ाना चाहिये और व्रणके मुखपर लेप न लगाना चाहिये क्यों कि मुखपर लेप लगाने से पीप आदि नहीं निकलता है ॥ ४११ ॥

अथ शोधनमाह ॥

व्रणस्यतुविशुद्धस्यक्वाथःशुद्धिकरःपरः। पटोल निम्बपत्रोत्थःसर्व्वत्रैवप्रयुज्यते ॥ वातिकेदशमूलानांक्षीरिणांपैत्तिकेव्रणे। आरग्वधादेःकफजेकषायःशोधनेहितः ॥ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटवेतसजंश्रृतम्। व्रणशोथोपदंशानांनाशनंक्षालनात्स्मृतम् ॥ तिलसैन्धवयष्ट्याह्वनिम्बपत्रनिशायुगैः। त्रिवृद्घृतयुतैःपिष्टैःप्रलेपोव्रणशोधनः ॥ एकंवासारिवामूलंसर्व्वव्रणविशोधनम्। निम्बपत्रतिलादन्तीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम् ॥ दुष्टव्रणप्रशमनोलेपःशोधनकेशरी। शोधनश्रेष्ठः। लेपान्निम्बदलैःकल्कोव्रणशोधनरोपणः ॥ भक्षणात्छर्द्दिमन्दाग्निपित्तश्लेष्मकृमीन्हरेत्। व्रणान्विशोधयेद्वर्त्यासूक्ष्मान्हिसन्धिमर्म्मजान् ॥ अभयात्रिवृतादन्तीलाङ्गलीमधुसैन्धवैः। निम्बपत्रघृतक्षौद्रदार्व्वीमधुकसंयुतैः ॥ वर्त्तिस्तिलानांकल्कोवाशोधयेद्रोपयेद्व्रणम् ॥ ४१२ ॥

शोधन का वर्णन ॥

परवल तथा नीमके पत्तोंकाकाढ़ा पीड़न किंयेभये व्रणका अत्यन्त शुद्धकरनेवालाहै इसका प्रयोग सबजगह करनाचाहिये बातजव्रणमें दशमूलका पित्तजव्रण में दूधवाले वृक्षोंका और कफजव्रणमें आरग्वधाऽदि गणका काढ़ा शोधनके लिये हितहै पीपल गूलर पकरिया बरगद तथा बेंत इनके काढ़ेके द्वारा धोनेसे व्रणशोथ औ उपदंश का नाश होताहै तिल सेंधानोन मुलेठी नीमके पत्ते हल्दी दारुहल्दी तथा निशोथ इनसबको पीसकर घीके साथ लेप करने से व्रण शुद्ध होता है अथवा केवल अनन्त मूलही सम्पूर्ण व्रणोंकी शुद्ध करने वाली है नीम की पत्ती तिल जमाल गोटेकी जड़ निशोथ तथा सेंधानोन इनसबको शहत के साथ लेप करने से दुष्ट व्रण शुद्ध होते हैं नीम की पत्तियों को पीसकर लेपकरने से व्रण शुद्ध होता है और भरजाता है नीम की पत्तियों को पीसकर खाने से छर्दि मन्दाग्नि पित्त कफ तथा कृमिका नाशहोता है नीमकी पत्तीकी बत्ती बनाकर रखने से सन्धि तथा मर्म्म में भये सूक्ष्म व्रणोंका नाश होताहै हड़ निशोथ जमाल गोटे की जड़ करियारी मुलेठी सेंधानोन नीमकी पत्ती घी शहत दारुहल्दी तथा महुवा इनकी पत्ती अथवा तिलोंका कल्क व्रण कोशुद्ध करताहै और भरताहै ॥ ४१२ ॥

अथ रोपणमाह ॥

अपेतपूतिमांसानांसंस्थानामवरोहताम्। कल्कस्तुरोपणोदेयस्तिलजोमधुसंयुतः ॥ अश्वगन्धारुहालोध्रंकट्फलम्मधुयष्टिका। समंगाधातकीपुष्पंपरमंव्रणरोपणम् ॥ रुहा

रोहिणी । मधुयुक्तासरापुंसांसर्व्वव्रणरोहिणीकथिता ॥ सुषवीपत्रधत्तूरबलामोटाकुठेरका ॥ पृथगेतैःप्रलेपेनगम्भीरव्रणरोपणः । सुषवीपत्रमगरैलापत्राबलामोटाश्म्मातृतदेवनामपुस्तकेधृतम्।कुठेरकाकृष्णवव्वरी॥ककुभोदुम्बराश्वत्थजम्बूकफललोध्रजैःत्वक्चूर्णैर्धूलिताःक्षिप्रंसंरोहन्तिव्रणाध्रुवम् ॥ प्रियंगुधातकीपुष्पंयष्टिमधुजतूनिच । सूक्ष्मचूर्णीकृतानिस्युरोपणोऽन्यवधूलनात् ॥ यवचूर्णसमधुकंसतैलंसहसर्पिषा । दद्यादालेपनकोष्णंदाहशूलोपशान्तये ॥ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोहन्याद्व्रणक्रुमीन् । लसुनस्याथवालेपोहिंगुनिम्बकृतोऽथवा ॥ अरिष्टोनिम्बः । निम्बपत्रवचाहिंगुसर्पिर्लवणसर्षपैः । धूपनंस्याद्व्रणेरूक्षःकृमिकण्डूरुजापहः॥ येक्लेदपाकस्रुतिगन्धवन्तोव्रणाश्चिरोत्थाःसतताश्चशोथाः॥प्रयान्तितेगुग्गुलुमिश्रितेन पीतेनशान्तिन्त्रिफलाशृतेन॥पटोलनिम्बासनसारधात्रीपथ्याक्षनिर्य्यूहमहर्मुखेषु । पिवेद्युतंगुग्गुलुनाविसर्पविस्फोटदुष्टव्रणशान्तिमिच्छन् ॥ ४१३ ॥

रोपण का वर्णन ।

दूषित मांस से रहित इसीसे नहीं बढ़ते भये और भरते भये व्रणों में शहत युक्त तिलोंका कल्क रोपण (भरना घावका) के लिये देनाचाहिये असगंध दूब लोध कायफल मुलेठी मजीठ औ धवई के फूल ये सब घावके अत्यन्त भरनेवाले हैं शहत युक्त निशोथ को लेप करने से सब प्रकारके व्रण पूर जातेहैं करेलीकी पत्ती पत्तूर बलामोटा औ कालीबवई इनका अलग२ लेप करने से गम्भीर व्रण भी भरजाताहै अर्जुन गूलर पीपल जामुन औ लोध इनकी छालके धूरे से निस्सन्देह व्रण बहुत शीघ्र भरजातेहैं गोंदनी धवईके फूल मुलेठी औ लाख इनके चूर्ण के धूरेसे घाव भरजाते हैं जौ का आटा औ मुलेठी इनको तेल औ घीमें मिलाकर कुछ गरमकर लेपकरनेसे व्रणका दाह औ शूल नष्ट होताहै करंजुवा नीम और निर्गुंडी को पीसकर लेपकरनेसे अथवा लसुनके लेपसे या हींग और नीम के लेपसे व्रण के कृमियों का नाश होताहै नीम की पत्ती बच हींग घी नोन औ सरसों इनकी धूपसे व्रण के कृमि खुजली औ पीड़ा का नाश होताहै बहुत दिनके पुराने पचपचाये भये पके भये तथा दुर्गन्धित पीप जिनसे बहताहो ऐसे व्रण और निरन्तर रहने वाले शोथ त्रिफला के काढ़ेमें गूगल डालकर पीने से नष्ट होतेहैं परवल नीम बिजयसार दाड़िमी (अनार) आंवला हड़ औ बहेड़ा इनके काढ़ेमें गूगल डालकर प्रातः काल पीने से बीसर्प बिस्फोट औ दुष्ट व्रणों का नाश होताहै ॥४१३॥

अथ सवर्णताकरणम् ॥

मनःशिलासमञ्जिष्ठासलाक्षारजनीद्वयम् । प्रलेपःसघृतःक्षौद्रस्त्वचःसावर्ण्यकृत्स्मृतः ॥ ४१४ ॥

सवर्णता करण॥

मैनासिल मजीठ लाख हल्दी औ दारुहल्दी इनसब को घी औ शहतमें मिलाकर लेपकरनेसे त्वचा का वर्ण स्वाभाविक होजाताहै ॥ ४१४ ॥

अथ व्रणिनोभोजनम् ॥

जीर्णशाल्योदनंस्निग्धमल्पमुष्णंद्रवान्तरम् । भुञ्जानोजांगलैर्म्मांसैःशीघ्रंव्रणमपोहति ॥ तण्डुलीयकजीवन्तीवास्तूकसुनिषण्णकैः । बालमूलकवार्त्ताकुपटोलैःकारवेल्लकैः॥

सदाडिमैःसामलकैर्घृतभृष्टैःससैन्धवैः।अन्यैरेवगुणैर्वापिमुद्गादीनांरसेनवा॥ एभिःसहजीर्णशाल्योदनम्भुञ्जानःशीघ्रंव्रणमपोहनिइत्यन्वयः। अम्लदधिचशाकञ्चमांसमानूपमौदकम्॥क्षीरंगुरूणिचान्नानिव्रणेचपरिवर्ज्जयेत्।व्रणेश्वयथुरायासात्सचरागश्चजागरात्॥ तौचरुक्चदिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् ॥ ४१५ ॥

व्रण वालों के लिये भोजन

जंगली जीवों के मांसके रस के साथ स्निग्ध अल्प उष्ण तथा द्रव वस्तु सहित पुराने चावलों का भात खाने से शीघ्रही व्रण वाला आरोग्य होताहै चौराई जीवन्ती बथुवा बिषखपरिया कच्ची मूली बैंगन परवल करेला इन सब को अनार आंवला और सेंधनोन के साथ घी में भूनकर इनके साथ मूंग आदिके रस के साथ अथवा अन्य गुण कारी बस्तुओं के साथ पुराने चावलों का भात खाने से व्रण का नाश होताहै खटाई दही शाक आनूप मांस जल के जीवों का मांस दूध औ भारी अन्न ये सब व्रण में त्याग देने चाहिये व्रण में श्रम करने से शोथ होता है रात्रि को जागने से सूजन तथा रक्तता होतीहै दिन में सोने से सूजन रक्तता तथा पीड़ा होती है और मैथुन करनेसे सूजन रक्तता पीड़ा तथा मृत्यु भी होती है ॥ ४१५ ॥

अथागन्तुव्रणचिकित्सा ॥

क्रुद्धेसद्योव्रणेकुर्य्यादूर्ध्वंचाधश्चशोधनम्। क्रियाशीताप्रयोक्तव्यारक्तपित्तोष्मनाशिनी ॥ लङ्घनञ्चबलंज्ञात्वाभोजनञ्चास्रमोक्षणम्। घृष्टेविदलितेचैवसुतरामिष्यतेविधिः॥ छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेवास्रगतिःस्रवेत्। रक्तक्षयात्तत्ररुजःकरोतिपवनोभृशम्॥स्नेहपानम्परीषेकंलेपन्तत्रोपनाहनम्। कुर्व्वन्तिस्नेहवस्तिञ्चरुजाघ्नञ्चौषधंपृथक्॥ खड्गादिछिन्नगात्रस्यतत्कालेपूरितोव्रणः। गांगेरुकीमूलरसैःसद्यःस्याद्गतवेदनः ॥ गांगेरुकीनागबलागुलसकरीतिलोके। कषायामधुराःशीताःक्रियाःसर्व्वाःप्रयोजयेत्।सद्योव्रणानांसप्ताहात्पश्चात्पूर्व्वोक्तिमाचरेत् ॥ आमाशयस्थेरुधिरेविदध्याद्वमनन्नरः। तस्मिन्पक्वाशयस्थेतुप्रकुर्वीतविरेचनम् ॥ क्वाथोवंशत्वगेरण्डश्वदंष्ट्राश्मभिदाकृतः। हिंगुसैन्धवसंयुक्तः कोष्ठस्थंस्रावयेदसृक् ॥ यवकोलकुलत्थानांनिःस्नेहेनरसेनच । भुञ्जीतान्नंयवागूंवापिबेत्सैन्धवसंयुत्तम्॥ ४१६ ॥

आगन्तुज व्रणकी चिकित्सा ॥

तात्कालिक व्रणके कुपित होनेपर बमन बिरेचनके द्वारा शोधन और शीतल रक्त पित्त नाशक तथा ऊष्मा नाशक क्रिया करनी चाहिये तात्कालिक व्रणके घृष्ट (रगड़खायाभया) और विदलित होने पर बलका बिचार करके लंघन हितकारी भोजन और रक्त मोक्षण करना चाहिये छिन्न भिन्न बिधे भये तथा क्षत में रुधिर बहताहै इस लिये रुधिरके नाशसे वायु अत्यन्त पीड़ाको उत्पन्न करती है ऐसी अवस्थामें स्नेह पान परिषेक लेप उपनाह स्नेह वस्ति और पीड़ा नाशक अन्य औषध अलग अलग करै खड्गादि के द्वारा किसी अंग के कट जानेपर उसी समय गुल शकरी की जड़ के रस को भरने से पीड़ाका नाश होताहै तात्कालिक व्रणमें मधुर क्वाथ और सम्पूर्ण शीतल क्रिया करनी चाहिये तात्कालिक व्रणों के सात दिनके पुराने होजाने पर पहले कहे भये व्रण की सी

चिकित्सा करै रुधिर के आमाशय में स्थित होने पर बमन औ पक्काशय में स्थित होनेपर विरेचन हितहै बांस की छाल रेंड़ी की जड़ गोखुरू और पाषाण भेद इनके काढ़े में हींग औ सेंधानोन छोड़ कर पीनेसे कोष्ठमें स्थित रुधिर बहजाताहै जौ बेर औ कुल्थीके स्नेह रहित रसके साथ भात खाय अथवा सेंधानोन डालकर यवागूको पिये ॥ ४१६ ॥

जातीनिम्बपटोलपत्रकटुकादार्व्वीनिशासारिवा। मञ्जिष्ठाभयसिक्थतुत्थमधुकैर्नक्ताह्वबीजैःसमैः॥ सर्पिःसिद्धमनेनसूक्ष्मवदनामर्म्माश्रिताःस्राविणी। गम्भीराःसरुजोव्रणाः सगतिकाःशुध्यन्तिरोहन्तिच। वृद्धवैद्योपदेशेनपारम्पर्य्योपदेशतः।जातीघृतेतुसंसिद्धेक्षेप्तव्यंसिक्थकम्बुधैः इतिजात्यादिघृतम्॥ ४१७॥

चंवेली नीम परवलके पत्ते कुटकी दारुहल्दी हल्दी गुर्लसिर मजीठ खस मोम तूतिया मुलेठी और करंजुवे के वीज इन औषधों के द्वारा पाककिये भये घीके सेवनसे छोटे मुखवाले मर्म्म में उत्पन्नभये बहतेभये गम्भीर पीड़ा युक्त और चलायमान व्रण शुद्धहोतेहैं और नष्टहोते हैं वृद्धवैद्यों के उपदेश से और परम्परा के अनुसार घी के पकजानेपर मोम छोड़नाचाहिये इति जात्यादिघृत ४१७॥

जातीनिम्बपटोलानांनक्तमालस्यपल्लवाः। सिक्थकंमधुकंकुष्ठंद्वेनिशेकटुरोहिणी॥ मञ्जिष्ठापद्मकम्पथ्यालोध्रत्वङ्नीलमुत्पलम्। सारिवातुत्थकञ्चापिनक्तमालफलन्तथा॥ एतानिसमभागानिकल्कीकृत्यप्रयत्नतः। तिलतैलम्पचेत्सम्यग्वैद्यःपाकविचक्षणः॥ विषव्रणेसमुत्पन्नेस्फोटकेकक्षरोगिणि। दद्रुवीसर्प्परोगेषुकीटदष्टेषुसर्व्वथा॥ सद्यःशस्त्रप्रहारेणदग्धविद्धेषुचैवहि। नखदन्तक्षतेदेहेदुष्टमांसापकर्षणे॥ म्रक्षणेनहितंतैलमिदंशोधनरोपणम्।तैलञ्जात्यादिनाम्नैतत्प्रसिद्धम्भिषगादृतम्॥इतिजात्यादितैलम् ४१८

चंवेली नीम परवल तथा करंजुवेके पत्ते मोम मुलेठी कूट हल्दी दारुहल्दी कुटकी मजीठ कमल हड़ लोध दालचीनी नीलकमल गुर्लसिर तूतिया और करंजुवे का फल इनसबको समभागलेकर इनके द्वारा बिधि पूर्व्वक तिलके तेलको पकावै फिर बिषव्रणमें स्फोटक में नेत्ररोगमें दादमें बीसर्प में कीडोंके काटने में शस्त्र के घावमें जलेहुये में बिद्धमें (सूजी काटने आदिसे) नख वा दांत से भये घावमें औ दूषित मांसके निकालने में इसतैलका सेवन करना चाहिये इससे घाव शुद्धहोता है औ पूरजाता है इति जात्यादितैल ॥ ४१८ ॥

चित्रकरसोनरामठशरपुङ्खालाङ्गलीकासिन्दूरैः। सविषैस्तथासकुष्ठैःकटुतैलंसाधुसम्पक्कम्॥ विपरीतमल्लसञ्ज्ञन्तैलंदुष्टव्रणान्तथानाड़ीम्। वहुभेषजैरसाध्यामपथ्यभोक्तुश्चनिस्तुदति इतिविपरीतमल्लतैलम्॥ ४१९॥

चीता लहसुन हींग सरफोंका जलपीपल सिन्दूर बिष औ कूट इनके द्वारा कडुवे तेलको पकाकर सेवन करने से अपथ्य भोजन करने वाले का अनेक औषधोंसे असाध्यभी दुष्ट व्रण औ नासूर नष्ट होता है इति विपरीत मल्लतैल ॥ ४१९ ॥

अमृतापटोलमूलत्रिफलात्रिकटुकक्रिमिघानाम्। समभागानांचूर्णंसर्व्वसमोगुग्गुलोभागः॥ प्रतिवासरमेकैकांगुटिकाञ्चादेदिहपरिमाणाम्। जेतुंव्रणवातासृग्गुल्मोदरशोथवातरोगांश्च इतिअमृतादिगुग्गुलुः॥ ४२०॥

गिलोय परवल की जड़ त्रिफला त्रिकटु औ बायविडंग इनसबके चूर्ण को समभाग लेकर सबकी बराबर गूगुल मिलाकर गोली बांधै फिर मात्रा के अनुसार एक गोली रोज खाय इससे व्रण बातरक्त गुल्म उदर सूजन औ बात रोगोंका नाश होता है इति अमृतादि गुग्गुलु ॥ ४२० ॥

अथाग्निदग्धस्य चिकित्सा ॥

प्लुष्टस्याग्निषुतपनङ्कार्य्यमुष्णंतथौषधम् । सम्यक्स्विन्नेशरीरेतुस्विन्नंभवतिशोभनम् ॥ प्रकृत्यासलिलंशीतंस्कन्दयत्यतिशोणितम् । तस्मात्सुखयतिह्युष्णंनतुशीतङ्कदाचन ॥ स्कन्दयतिशोषयतिशीतामुष्णाऽचदुर्दग्धेक्रियांकुर्य्यात्ततःपुनः । घृतलेपप्रदेहांश्चशीतानेवास्यकारयेत् ॥ सम्यग्दग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः । सामृतैःसर्पिषायुक्तैरालेपङ्कारयेद्भिषक् ॥ ग्राम्यानूपोदकैर्मांसैःपिष्टैरेनम्प्रलेपयेत् । अतिदग्धेविशीर्णानिमांसान्युद्धृत्यशीतलम् ॥ क्रियांकुर्य्यात्ततःपश्चाच्छालितण्डुलकण्डनैः । तिन्दुक्याश्चकषायैर्वाघृतमिश्रैःप्रलेपयेत् ॥ सर्व्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम् ४२१ ॥

अग्नि से जलेभये की चिकित्सा ॥

जले भये को आग में सेंकै औ उष्ण औषध करै शरीर के बहुत सन्तप्त होजाने पर स्वेद देना ही हित है शीतल जल स्वभाव सेही रुधिर को सुखाता है इसलिये उष्ण चिकित्साही सुखकारी होती है और शीतल कभी भी सुखकारी नहीं होती दुर्दग्ध में शीतल तथा उष्णक्रियाकरिके घृत लेप और शीतल लेपकरे सम्यग्दग्ध में बंशलोचन पकरिया चन्दन गेरू औ गिलोय इनको घीमें मिलाकर लेपकरे और जंगली पशुओं का मांस अनूपदेशका मांस और जल के जीवों का मांस पीसकर लेपकरे अतिदग्धमें गलेहुए मांसको निकालकर शीतल क्रियाकरै और फिर चावलोंकीकिनकियोंको तेंदूके काढ़ेमें अथवा घीमें मिलाकर लेपकरे इससे सबप्रकारके अग्निदग्ध भरजातेहैं ४२१॥

सिक्थककर्द्दमजीरकमधुपथ्यासर्व्वमिश्रितंलेपात् । गर्व्यंघृतमपहरतिविपाकजानितंव्रणंसद्यः ॥ इतिसिक्थकादिघृतम् ॥ ४२२ ॥

मोम काई जीरा मुलेठी औ हड़ इनसबको मिलाकर इनके द्वारा पाककिये भये घृतके लेप से जलेका घाव शीघ्रही नष्ट होताहै इति सिक्थकादिघृत ॥ ४२२ ॥

सिद्धंकषायकल्काभ्यांपटोल्याःकटुतैलकम् । दग्धव्रणरुजास्रावदाहविस्फोटनाशनम् ॥ इतिपटोलादितैलम् ॥ ४२३ ॥

परवल के काढ़े तथा कल्क के द्वारा पाककिये भये कडुवे तेल के सेवनसे जलेका घाव पीड़ादाह और विस्फोट का नाश होताहै इति पटोलादि तैल ॥ ४२३ ॥

वातास्रमस्रुतंदुष्टंसशोथंग्रथितंव्रणम् । कुर्यात्सदाहंकण्ड्वाढ्यंव्रणग्रन्थिस्तुसस्मृतः ॥ काम्पिल्लकाम्बिडङ्गानित्वचन्दार्व्व्यास्तथैवच । पिष्ट्वातैलम्पचेत्तत्तुव्रणग्रन्थिहरम्परम् ॥ इतिव्रणागन्तुव्रणाग्निदग्धनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ४२४ ॥

दूषित वातरक्त नहीं बहनेवाले शोथ युक्त गांठ के समान व्रणको उत्पन्न करतेहैं इसे व्रण ग्रंथि कहतेहैं इसमें दाह और खुजली होतीहै कवीला बायबिड़ंग दालचीनी और दारुहल्दी इनसबको पीसिकर

फिर इनके द्वारा पाककिये भये तेल से व्रण ग्रंथिका नाश होताहै इति व्रण आगन्तुक व्रण अग्निदग्ध निदान चिकित्सा धिकार समाप्त ॥ ४२४ ॥

अथभग्नाधिकारस्तत्रभग्नस्यभेदमाह ॥

भग्नंसमासात्तुविविधंहुताशकाण्डेचसन्धावपितत्रसन्धौ। उत्पिष्टविश्लिष्टविवर्त्तितानितिर्य्यग्गतंक्षिप्तमधश्चभग्नम् ॥ अत्रभावेऽर्थेक्तप्रत्ययस्तेनभग्नंभङ्गःसचात्रविश्लेषोऽभिप्रेतः। तेनभग्नमात्रास्थिविश्लेषलक्षणम्। समासात्संक्षेपात्। हुताश हे अग्निवेश? यतश्चरके अग्निवेशस्यहुताशेतिनामान्तरमुक्तम्। काण्डेसन्धिपर्य्यन्तेएकखण्डे। अस्थिसन्धौद्वयोरस्थ्नोःसंस्थानसन्धानेतत्रसन्धौ। उत्पिष्टादिभेदैःषट्प्रकारकंभग्नम्भवति ॥ स्वल्पवक्तव्यत्वेनसन्धिभग्नस्यादौविवरणम्। उत्पिष्टेत्यादि अधःअधोभग्नम् ॥ ४२५ ॥

भग्नका अधिकार भग्नके भेद ॥

हे अग्निवेश संक्षेप से भग्न दो प्रकार केहैं एक अस्थिभग्न दूसरा सन्धिभग्न उनमें से सन्धिभग्न छः प्रकार काहै जैसे उत्पिष्ट बिश्लिष्ट बिवर्त्तित तिर्य्यग्गत क्षिप्त और अधः क्षिप्त ॥ ४२५ ॥

सन्धिभग्नस्यसामान्यलिङ्गमाह ॥

प्रसारणाकुञ्चनवर्त्तनोग्रारुक्स्पर्शविद्वेषणमेतदुक्तम्। सामान्यतःसन्धिगतस्यलिङ्गमुत्पिष्टसन्धेःश्वयथुःसमन्तात् ॥ विशेषतोरात्रिभवारुजाचविश्लिष्टकेतौचरुजाचनित्यम्। वर्त्तनम्परिवर्त्तनम्। उत्पिष्टस्यलिङ्गमाह। उत्पिष्टसन्धेःउत्पिष्टःद्वाभ्यांमस्थिभ्यांपिष्टःसन्धिर्यस्यतस्यसमन्तात्उभयभागयोःशोथोभवति। विश्लिष्टमाह। विश्लिष्टइत्यादि तौउभयतःशोथौरात्रिरुजाचनित्यम्। सदारुजाधिकाभवतीतिउत्पिष्टभेदः ॥ ४२६ ॥

सन्धि भग्नके सामान्य लक्षण ॥

सन्धि गत भग्नमें स्पर्श नहीं सहा जाताहै और फैलाने सिकोरने तथा घुमाने में अत्यन्त पीड़ा होती है दो हड्डियों के रगड़ ने से जो सन्धि भग्न होता है उसे उत्पिष्ट कहते हैं इसके चारों ओर शोथ होताहै और रात्रि में अधिक पीड़ा होती है बिश्लिष्ट नाम सन्धि भग्न में शोथ और रात्रि में अधिक पीड़ा होती है और इस में सदैव अधिक पीड़ाहुआ करतीहै यही उत्पिष्टसे भेदहै ॥ ४२६ ॥

विवर्त्तिततिर्य्यग्गताक्षिप्ताधोगता न्याह ॥

विवर्त्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्रास्तिर्य्यग्गतेतीव्ररुजोभवन्ति। क्षिप्तेऽतिशूलंविषमंरुजश्चाक्षिप्तेत्वधोरुग्विघटश्चसन्धेः॥विवर्त्तितेसन्धावमुक्तेअस्थिद्वयेपरिवर्त्तितेपार्श्वरुजः। सन्धिस्थितास्थिखण्डद्वयपार्श्वयोरुजः ॥ तिर्य्यग्गतेएकस्मिन्नस्थिनसन्धिस्थानन्त्यक्त्वा तिर्य्यग्गते। क्षिप्तेसक्थ्योरुसन्ध्योः एकस्मिन्नस्थिनपरस्मादस्थ्नउपरिगतेसक्थ्नोःअतिशूलम् ॥ तत्रविषमंकदाचिदधिकंकदाचिन्न्यूनम्। अधःक्षिप्तेसन्धिगतेएकस्मिन्नस्थिन। अधोगतेरुक्सन्धिविघट्टनञ्च ॥ ४२७ ॥

विवर्तित तिर्य्यग्गत आक्षिप्त अधोगत सन्धि भग्नोंके लक्षण ॥

सन्धिक बिना टूटे दोनों हड्डियों के फिर जाने को विवर्तित सन्धिभग्न कहते हैं इस में सन्धि की हड्डियों के दोनों ओर पीड़ा होतीहै एक हड्डी के सन्धि स्थान को छोड़कर तिरछे होजाने को तिर्य्य ग्गत सन्धि भग्न कहते हैं इसमें अत्यन्त पीड़ा होतीहै जंघाओं की सन्धि में एक हड्डी पर दूसरी हड्डी के चढ़ जाने को क्षिप्त सन्धि भग्न कहते हैं इस में अत्यन्त शूल और बिषम (कभी ज्यादह कभी कम) पीड़ा होतीहै सन्धि की हड्डियों में से एक हड्डी के नीचे चले जाने को अधः-क्षिप्त सन्धि भग्न कहते हैं इसमें पीड़ा होतीहै और सन्धि टूट जाती है ॥ ४२७ ॥

काण्ड भग्नमाह ॥

भग्नन्तुकाण्डेबहुधाप्रयातिविशेषतोनामभिरेवतुल्यम् । भग्नंकाण्डेकाण्डविषये बहुधाबहुभिःप्रकारैःप्रयातिअत्रबहुविधत्वम्द्वादशविधत्वंबोद्धव्यम् । बहुविधस्यकाण्ड भग्नस्यपृथग्लक्षणंनोक्तम् किन्तुनामभिरेषतुल्यम् । कर्कटकादिनामानुरूपमेवलक्षणं बोद्धव्यम् ॥ ४२८ ॥ काण्ड भग्न का वर्णन ॥

काण्डभग्न बारह प्रकारका होताहै इन के लक्षण नाम के अनुसार जानने चाहिये ॥ ४२८ ॥

तान्प्रकारानाह ॥

काण्डेत्वतःकर्कटकाश्वकर्णौविचूर्णितंपिच्चितमस्थिखल्लितम्।काण्डेषुभग्नंह्यतिपातितञ्चमज्जागतंविस्फुटितञ्चवक्रम् ॥ छिन्नन्द्विधाद्वादशधापिकाण्डे सामान्यमग्रेकिल तस्यलिङ्गम् ॥ अतःसन्धिभग्नानन्तरंकाण्डेकाण्डभग्नंतदाह । कर्कटकः । अस्थिविश्लेषपूर्वकोमध्येप्रोन्नतः ॥पार्श्वयोःस्वनतःकर्कटतुल्यरूपत्वात्कर्कटः । अश्वकर्णःअश्वकर्णवद्विपुलास्थिनिर्गमादश्वकर्णः । विचूर्णितम्चूर्णितमस्थितच्चशब्दस्पर्शाभ्यांबोद्धव्यम् ॥ पिच्चितम् । नियन्त्रितंबहुशोथम् ॥ खल्लितंविश्लिष्टमस्थिनिस्रवम् । काण्डेषुभग्नम् । काण्डभग्नम्यद्यपिकर्कटकादिसर्वमेवकाण्डभग्नम ॥ तथापिइयंकाण्डभग्नसंज्ञा विशिष्टा । अत्रभग्नंभङ्गस्त्रुटिस्तेनसर्वथात्रुटितम् ॥ पृथग्भूतंत्वाचास्थितंयत्काण्डभग्नम्अतिपातितंअशेषेणछित्त्वापातितमास्थिमज्जागतम्अस्थ्यवयवयोऽस्थिमध्ये प्रविश्यमज्जानंगतम ॥ विस्फुटितम्स्तोकंविदीर्णम् । वक्रमस्थानत्यक्त्काकुब्जीभूतम् ॥ छिन्नं द्विधाएकंविदीर्णसंलग्नम् अपरंविदीर्णंद्विधाभूतंद्वादशधाचकाण्डेति कर्कटकादिकाण्डे काण्डेचभग्नंद्वादशधेत्यन्वयः । तच्चोक्तमेव ॥ ४२९ ॥

प्रकारोंकावर्णन ॥

कर्कटक अश्वकर्ण विचूर्णित पिच्चित अस्थिखल्लित काण्डभग्न अतिपातित मज्जागत विस्फुटित वक्र छिन्नइनमेंसे छिन्न दोप्रकारकाहै एक बिदीर्ण होकरभी लगाभया और दूसराबिदीर्ण होकर टूटा भया बीचमें ऊंचे और किनारों में खाली हड्डियोंके टूटनेको कर्कट कहते हैं घोड़ेके कान के समान बहुत बाहर निकले भये हड्डियों के टूटनेको अश्वकर्ण कहतेहैं हड्डियोंके चूर्ण होजाने को बिचूर्णित कहतेहैं यह स्पर्श और शब्दके द्वारा ज्ञात होता है किसी यन्त्रसे हड्डी के दबजाने पर शोथ युक्त काण्डभग्न को पिच्चित कहतेहैं हड्डियोंके टूटजानेपर बहते हुये काण्डभग्नको खल्लित कहते हैं हड्डियों

के टूटजाने को कांडभग्न कहते हैं यद्यपि कर्कटादि सम्पूर्ण भग्न काण्ड भग्न कहलातेहैं तथापि इस की यह बिशेष संज्ञाहै इसमेंसर्वथा हड्डीटूटजाती है सर्वथा टूटकर हड्डी के गिरने को अति पातित काण्ड भग्नकहतेहैं हड्डीका टुकड़ा टूटकर दूसरी हड्डीकी मज्जामें घुसजाय उसे मज्जागत काण्ड भग्नकहतेहैं कुछफटेभये हड्डीके टूटने को बिस्फुटित काण्ड भग्नकहतेहैं स्थानको छोड़कर हड्डी के टेढ़ होजाने को वक्रकांड भग्नकहतेहैं इनका सामान्य लक्षण आगेकहेंगे ॥ ४२६ ॥

कर्कटादिकाण्डभग्नस्यलक्षण माह ॥

स्रस्ताङ्गताशोथरुजातिवृद्धिस्तथाऽयथावृद्धिरतीवनित्यम् । सम्पीड्यमानंभवतीह शब्दःस्पर्शासहस्पन्दनतोदशूलाः ॥ सर्वास्ववस्थासुनशर्म्मलाभोभग्नस्यकाण्डेखलु चिह्नमेतत् । स्पर्शासहमितिकाण्डभग्नस्यविशेषणम् ॥ स्पन्दनंनाड़ीनांस्फुरणम् । शूलेनेवचऽयथा ॥ रुजासामान्यपीड़ासर्वास्ववस्थासुशयनादिषु ॥ ४३० ॥

कर्कटादि भग्नका लक्षण ॥

कांडभग्नमें शरीरकी शिथिलता शोथ अत्यन्तपीड़ा दिनपरदिन पीड़ाकाबढ़ना दबानेसे शब्दहोना स्पर्शकी असहनता नाड़ियोंका फड़कना सूजीगड़नेकीसी पीड़ा शूलगड़नेकीसीपीड़ा और किसीप्रकार से भी चैन न पड़ना ये लक्षण होतेहैं ॥ ४३० ॥

कष्टसाध्यमाह ॥

अल्पाशिनोऽनात्मवतोजन्तोर्वातात्मकस्यच । उपद्रवैर्वाजुष्टस्यभग्नःकृच्छ्रेणसिध्यति अनात्मवतःरोगप्रतीकारेयत्नरहितस्यवातात्मकस्यवातकफस्यं चवातप्रकृतेःउपद्रवैःज्वराध्मानमोहमूत्रपुरीषसङ्गादिभिः ॥ ४३१ ॥

भग्नकेकष्ट साध्य का लक्षण ॥

थोड़े खानेवाले बातप्रकृतिवाले रोगके प्रतीकार करने में यत्नरहित और ज्वर आध्मान मोह तथा मूत्रादिका न उतरना इत्यादि उपद्रवों से युक्त मनुष्य का भग्नकष्टसे साध्य होताहै ॥ ४३१ ॥

असाध्य माह ॥

भिन्नंकपालंकट्यान्तुसन्धिमुक्तंतथाच्युतम् । जघनंप्रतिपिष्टञ्चवर्ज्जयेत्तुचिकित्सकः ॥ कपालंजानुनितम्बासङ्गगण्डतालुशङ्खवङ्क्षणशिरोऽस्थीनिकपालानि । तथाच्युतम् अधःक्षिप्तम् ॥ प्रतिपिष्टम्उत्पिष्टम् । पुनरसाध्यमाह । असंश्लिष्टकपालञ्चललाटेचूर्णितञ्चयत् ॥ भग्नंस्तनेगुदेपृष्ठेशङ्खेमूर्द्धनिवर्ज्जयेत् । असंश्लिष्टकपालमितिभग्नविशेषणम् ॥ स्तनेस्तनयोरन्तरे । मूर्द्धनिचूड़ास्थाने । अपरमसाध्यमाह। सम्यक्संहितमप्यस्थिदुर्न्यासाद्दुष्टबन्धनात् । संक्षोभाद्वापियद्गच्छेद्विक्रियान्तच्चवर्ज्जयेत् ॥ सम्यक्संहितमपिसम्यक्योजितमपि । अस्थिदुर्न्यासातदुःस्थापनात् ॥ सुन्यस्तमपिदुष्टबन्धनात् । सुबद्धमपिसंक्षोभात् ॥ अभिघातादिनासञ्चलनात् । विक्रियांगच्छेत्विकृतंभवतितद्वर्जयेत् ॥ ४३२ ॥

भग्नके असाध्यका लक्षण ॥

कपालके(घुटने नितम्ब कंधे कपोल ललाटकीहड्डी तालु बंक्षण तथाशिरकीहड्डी)टूटजानेपरकमरकी सन्धिके टूटनेपर और जघनमें अधःक्षिप्त तथा उत्पिष्ट नाम कांड भग्नहोनेपर रोगी को असाध्य जानना चाहिये औरभी कहागयाहै कि कपालकी हड्डाटूटकर न मिलनेपर ललाटमें चूर्णित नाम भग्नहोनेपर और दोनों स्तनोंके बीचमें गुदामें पीठमें कपालकी हड्डियोंमें तथा मस्तकमें भग्नहोने पर रोगीको असाध्य जानना चाहिये जो टूटीभई हड्डी अच्छीप्रकारसे जोड़ी गई भी अच्छी रीति से न रखनेसे अच्छे प्रकार न बांधनेसे अथवा चोट आदि लगनेके कारण चलायमान होनेसे बिकारको प्राप्तहोतीहै वह असाध्यहै ॥ ४३२ ॥

अस्थिविशेषेणभग्नविशेषमाह ॥

तरुणास्थीनिनम्यन्तेभिद्यन्तेनकलानितु । कपालानिविभज्यन्तेस्फुटन्तिरुचकानिच ॥ तरुणास्थीनिघ्राणकर्णाक्षिगुदेषुकोमलास्थीनिनम्यन्तेवक्रीभवन्तितेनात्रवक्रतालक्षणंभग्नंनलक्तानि । नलादीनिनाड़ीवत्सरन्ध्राएयस्थिपर्वाणिभिद्यन्तेऽस्थ्यन्तरानुप्रवेशाद्विदार्य्यन्ते ॥ कपालानिजानुनितम्बांसगण्डतालुशङ्खवंक्षणशिरोऽस्थीनिविभज्यन्ते । स्फुटन्तित्रुटयन्तिरुचकादन्ताःस्फुटन्ति । अस्थीनिचतरुणनलककपालरुचकवलयभेदात्पञ्चविधानि ॥ तत्ररुचकानिचेतिचकाराद्वलयान्यपित्रुटन्तीतिबोद्धव्यम्।पाएयोःपार्श्वयुगेपृष्ठेवक्षोजठरपायुषु॥पादयोरपिचास्थीनिवलयानिविभाविरे४३३ ॥

अस्थियोंकी विशेषतासे भग्नोंकी बिशेषता ॥

नासिका कान नेत्र तथा गुदाकी तरुण नामक कोमल हड्डियां टेढ़ी होजाती हैं यही उनकाभग्न होनाहै नाड़ियों के समान छिद्र वाली हड्डियां अन्य अस्थियों के घुसने से बिदीर्ण होजातीहैं घुटने नितम्ब कन्धे कपोल ताल कपालास्थि बंक्षण तथा शिरकीकपाल नामकहड्डीभिन्नहोतीहैं और रुचक नामक दांतकीहड्डी तथा हाथ पसली पीठ छाती उदर गुदा पैरोंकी वलय नामकहड्डी टूटतीहैं ४३३ ॥

आदौभग्नंविदित्वातुसेचयेच्छीतलाम्बुना । पङ्केनालेपनङ्कार्यंबन्धनञ्चकुशान्वितम् ॥ अवनामितमुन्नह्येदुन्नतञ्चावपीडयेत् । अञ्चेदधःक्षिप्तमधोगतञ्चोपरिवर्त्तयेत् ॥ मधुकोदुम्बराश्वत्थकदम्बानिचुलत्वचः । वंशसर्ज्जार्ज्जुनानाञ्चकुशार्थमुपसंहरेत् ॥ पटस्योपरिबध्नीयान्नगाढंशिथिलन्नच। सप्तसप्तदिनाच्छीतेघर्म्मेमुञ्चेत्त्र्यहात्त्र्यहात् ॥ मासान्तेपञ्चपञ्चाहात्भग्नेदोषेवसेचनम् ॥ ४३४ ॥

भग्नकी चिकित्सा ॥

पहले भग्नको जानकर शीतल जलसेसींचे फिर काईसे लेपकरके कुशाके साथ बांधे दबीहुई को उभारे उभरीभई को दबावे और अधः क्षिप्त तथा अधोगत को खींचले महुवा गूलर पीपल कदम्ब बेंत बांस विजयसार तथाअर्जुन इनवृक्षोंकीछाल बन्धनकेलियेल्यावै और कपड़ेसेऊपरलपेटके नबहुत जोर से न धीरेसे बांधै शीतकाल में सात दिनके उपरान्त और गरमीमें तीन दिनके उपरान्त बन्धन खोलै यदि भग्न महीने भरका पूरान होजाय तो उसको पांच२ दिन के बाद सींचै ॥ ४३५ ॥

आलेपनार्थमञ्जिष्ठामधुकञ्जाम्बुपेषितम् । शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टञ्चलेप नम् ॥ सद्योऽभिघातजनिताःआगन्तुश्वयथवःप्रशाम्यन्ति । पिष्टकलवणलेपादम्ली काफलरसाभ्यांवा । आम्रातकजटाम्लीकाफलम्पत्राणिशिग्रुजम् ॥ मूलम्पीनन्नेवंवद्धं मानस्यापिचकेवकात् । सर्व्वंसंक्षुद्यतक्रेणकाञ्जिकेनतथैवच ॥ पाचयित्वाचरेत्श्रेष्ठंतेन पीड़ाप्रणश्यति । शोथश्चास्थिचशीघ्रेणसन्धानंयातिवैध्रुवम् ॥ न्यग्रोधादिकषायन्तुसु शीतम्परिषेचने । पञ्चमूलीकषायंसक्षीरन्दद्यात्सवेदने ॥ सुखोष्णमवचार्य्यंवाचुक्रतै लंविजानता॥ अभिदाहिभिरन्नैश्चापिष्टकैःसमुपाचरेत्॥ग्लानिर्हिनहितातस्यसन्धिविश्ले षकारिका। मांसंमांसरसःक्षीरंसर्पिर्यूषःसतीनजः॥बृंहणञ्चान्नपानञ्चदेयंभग्नायजानता गृष्टिक्षीरंससर्पिष्कंमधुरौषधसाधितम् ॥ शीतलंलाक्षयायुक्तंप्रातर्भग्नःपिबेन्नरः । सघृ तेनास्थिसंहारलाक्षागोधूममर्जुनम् ॥ सन्धिमुक्तेऽस्थिसम्भग्नेपिबेत्क्षीरेणवापुनः । र सोनमधुलाक्षाज्यसिताकल्कंसमश्नता ॥ छिन्नंभिन्नच्युतास्थीनांसन्धानमचिराद्भवेत् । चूर्णम्पुरेणसंयोज्यघृतेनार्जुनलाक्षयोः ॥ भग्नःसन्धानमायातिलीढंक्षीरघृताशिना । मू लंश्रृगालविन्नायाःपीत्वामांसरसेनतु ॥ चूर्णीकृत्यत्रिसप्ताहादस्थिभग्नमपोहति। आभा चूर्णंमधुयुतमस्थिभग्नस्त्र्याहम्पिबेत् ॥ पीतेचास्थिभवेत्सम्यग्वज्रसारनिभंदृढम् । अम्लीकाफलकल्कःसौवीरस्तैलमिश्रितैःस्वेदात् ॥ भग्नाभिहतरुजाघ्नैरथचौषधचाति साधितेश्वयथौ ॥ ४३५ ॥

मंजीठ तथा मुलेठी को पानी में पीसकर सौबार धोये भये घीमें मिलाके लेप करने से अथवा पीसे भये चावलों को सौबार धोयेभये घीमें मिलाकर लेप करने से चोट लगने से भये आगन्तुज शोथ शीघ्रही नष्ट होतेहैं चावल की पीठी सेंधानोन तथा इमलीके फल का रस इनके लेप करने से अथवा अमरेकीजड़ इमलीकेफल तथापत्ते और सहजन गदापूरनामानकेचू तथाकेतकीकीजड़ इनसब को कूचकर मट्ठे अथवा कांजी के साथ पाक करके लेप करनेसे पीड़ा तथा शोथका नाश होताहै और हड्डी जुड़ जातीहै पीड़ा सहित भग्न रोगमें न्यग्रोधादि गणके शीतल काढ़ेसे दूध सहित पंचमूल के काढ़ेसे अथवा कुछ गरम चक्र तेलसे सींचै अबिदाही अन्न तथा पीठी के पदार्थ भग्न वालेको देवै इसे सन्धिभग्नज ग्लानि नष्टहोतीहै मांस मांसरस घी दूध मटरकायूष और धातुवर्द्धक अन्नपानभग्नवाले को देने चाहिये एक बार व्याई भई गऊके दूधको मधुर औषधियों के द्वारा पाक करके शीतल हो जानेपर घी तथा लाख मिलाके भग्न रोगवाला प्रातःकाल पियै हरसिंघार लाख गेहूं तथा अर्जुन की छाल इनसब को घीके साथ अथवा दूध के साथ पान करने से सन्धिभग्न औ अस्थिभग्न का नाश होताहै लहसुन शहत लाख घी तथा शक्कर इन सब को मिलाकर खाने से छिन्न भिन्न तथा च्युत हड्डियां शीघ्रही जुड़जाती हैं अर्जुन की छाल तथा लाखके चूर्णको घी तथा गुग्गुलुके साथ चाटके दूध और घीके आहार करने वाले का भग्न रोगनष्ट होताहै पृष्ठिपर्णी की जड़के चूर्णको मांस के रस के साथ पीने से तीन सप्ताह में अस्थिभग्न अच्छाहोताहै बबूलकेचूर्णको शहतकेसाथ खानेसे तीनही दिन में हड्डी बज्रके समान दृढ़ होजातीहै इमली के फलको पीसकर तेल तथा सौबीर में मिला के

स्वेदन करने से भग्न अच्छा होताहै अथवा शोथाधिकार में कहीभई औषधों के द्वारा स्वेद देने से भग्न अच्छा होताहै ॥ ४३५ ॥

आभाफलत्रिकव्योषैःसर्वैरेतैःसमांशिकैः ॥ तुल्यंगुग्गुलुनायोज्यंभग्नसन्धिप्रसाधनम्। इतिआभागुग्गुलुः ॥ ४३६ ॥

बबूल त्रिफला तथा त्रिकटु ये सब समभाग इनके बराबर गूगल मिला के सेवन करने से भग्न अस्थि जुड़जाती हैं इति आभागुग्गुलु ॥ ४३६ ॥

लाक्षास्थिसंहृत्ककुभोऽश्वगन्धाचूर्णीकृतोनागबलापुरश्च । सम्भग्नमुक्तास्थिरुजन्निहन्यादङ्गानिकुर्यात्कुलिशोपमानि ॥ इतिलाक्षाद्योगुग्गुलुः ॥ ४३७ ॥

लाख हरसिंगार अर्जुन असगंध गुलशकुरी और गूगल इनसबको मिलाकर सेवन करने से टूटीभई हड्डी जुड़कर बज्रके समान दृढ़ होजातीहैं इतिलाक्षादि गुग्गुलु ॥ ४३७ ॥

रात्रौरात्रौतिलान्कृष्णान्वासयेदस्थिरेजले । दिवादिवाशोषयित्वागवांक्षीरेणभावयेत् ॥ तृतीयंसप्तरात्रन्तुभावयेन्मधुकाम्बुना । ततःक्षीरंपुनःपीतान्शुष्कान्सूक्ष्मान्विचूर्णयेत् ॥ काकोल्यादिंश्वदंष्ट्राभ्याम्मंजिष्ठांसारिवान्तथा। कुष्ठंसर्ज्जरसम्मांसींसुरदारुसचन्दनम् ॥ शतपुष्पाञ्चसञ्चूर्ण्यतिलचूर्णेनयोजयेत् । पीड़नार्थेतुकर्त्तव्यंसर्वगन्धैःसृतम्पयः ॥ चतुर्गुणेनपयसातत्तैलम्पाचयेत्पुनः । यष्टीमंशुमतीपत्रंजीवन्तीतुरगन्तथा ॥ रोध्रंप्रपौण्डरीकञ्चतथाकालानुसार्य्यकम्। शैलेयंक्षीरशुक्लाञ्चअनन्तांसमधूलिकाम् ॥ पिष्ट्वाश्रृंगाटकञ्चैवप्रागुक्तान्यौषधानिच । एभिस्तद्विपचेत्तैलंशास्त्रविन्मृदुनाग्निना ॥ एतत्तैलंसदापथ्यंभग्नानांसर्व्वकर्म्मसु। आक्षेपकेपक्षघातेतालुशोषेतथार्दिते॥ मन्यास्तम्भेशिरोरोगेकर्णशूलेशिरोग्रहे । वाधिर्य्येतिमिरेचैवयेचस्त्रीषुक्षयङ्गताः ॥ पथ्यंपानेतथाभ्यंगेनस्येवस्तिषुभोजने । ग्रीवास्कन्धोरसांवृद्धिरेतेनैवप्रजायते ॥ मुखञ्चपद्मप्रतिमंसुसुगन्धिसमीरणम् । राजार्हमेतत्कर्त्तव्यंराज्ञामेवाचिकित्सकैः ॥ तिलचूर्णसमन्तत्रमिलितंचूर्णमिष्यते । इतिगन्धतैलम् ॥ ४३८ ॥

कालेतिलोंको वस्त्रमें बांधकर रात्रिके समय बहतेभये जलमें रक्खै और दिनमें सुखायले इस प्रकार सातदिनके अनन्तर गऊके दूधमें सातदिनतक भावनादे फिरसातदिनतक महुवेके काढ़े में भावनादे फिर गऊकेदूधमें भावनादेके सुखाके कूटले इसके उपरान्त काकोल्यादिगण गोखरू मजीठ गुलेसर कूट राल जटामांसी देवदारु चन्दन तथा सौंफ इनसबके चूर्णके समान तिलोंका चूर्ण मिलाकर सम्पूर्ण सुगन्धित औषधोंके द्वारा पाककिये भयेदूधमें भिगोयके तेलनिकालै फिरतेलसे चतुर्गुण दूध मिलाकर मुलेठी शालिपर्णी तेजपात जीवन्ती तगर लोध पुण्डरिया पीतचन्दन शिलाजीत सफेद भूकुम्हड़ा गुलेसर मरोड़फली सिंघाड़ा और पीछे कही भई औषध इनके द्वारा उस तेल को मन्दाग्नि में पकावै इस तेल के द्वारा भग्न आक्षेपक पक्षाघात तालु शोष अर्दित मन्यास्तम्भ शिरोरोग कर्णशूल हनुग्रह वधिरता तिमिर नपुंसकता इन सब का नाश होता है यह पान अभ्यंग नस्य वस्ति कर्म तथा भोजन में हित है इसके सेवन से ग्रीवा कंधे तथा छाती की वृद्धि

होतीहै मुख कमलके समान होजाताहै मुखसे सुगन्धि आने लगतीहै ये राजवैद्यों करके राजा लोगों के निमित्त बनाने के योग्य है इति गन्ध तैल ॥ ४३८ ॥

प्रथमेवयसित्वेवंमासात्सन्धिः स्थिरोभवेत् । मध्यमेद्विगुणात्कालादन्तिमेत्रिगुणात्तथा ॥ नैतिपाकंयथाभग्नंतथायत्नेनरक्षयेत् । पक्वंहिस्यात्शिरास्नायुंतद्विकृच्छ्रेणसिध्यति ॥ पतनादभिघाताद्वास्तनभग्नंयदक्षतम् । शीतानुसेकान्प्रदेहांश्चभिषक्तस्यावचारयेत् ॥ सव्रणस्यतुभग्नस्यव्रणंसर्पिम्मधूत्तरैः । प्रतिसार्य्यकषायैश्चशेषंभग्नवदाचरेत्॥वातव्याधिविनिर्द्दिष्टान्स्नेहांस्तत्रापियोजयेत्।लवणङ्कटुकक्षारमम्लमायासमैथुनम् ॥ व्यायामञ्चनसेवेतभग्नोरूक्षान्नमेवच । भग्नसन्धिमनाविद्धमहीनांगमनुल्वणम्॥ सुखचेष्टाप्रचारञ्चसम्यक्सन्धितमादिशेत् । इतिभग्ननिदानचिकित्साधिकारः४३९॥

बाला अवस्थामें भया भग्न एकमहीने में युवावस्थामें भया भग्न दो महीनेमें वृद्धावस्था में भया भग्न तीन महीने में जुड़ताहै ऐसा यत्न करै कि भग्न पकने न पावै क्योंकि शिरा और स्नायु के पक जाने पर भग्न कष्टसाध्य होजाता है गिरने से अथवा चोट लगने से जो क्षत रहित भग्न होता है उस में शीतल परिषेक औ लेप करना चाहिये व्रणसहित भग्न में घी तथा शहत युक्त काथों के द्वारा व्रण को शुद्ध करके भग्न की चिकित्सा करै वातव्याधि में कहे भये स्नेहोंका भी भग्न में प्रयोग करना चाहिये भग्न वाला लवण कटु क्षार अम्ल तथा रूखी वस्तु परिश्रम मैथुन और व्यायामका त्याग करदे वेधरहित न घटी भई न बढ़ी भई और सुखपूर्वक चेष्टा वाली भग्नसन्धिको अच्छे प्रकारसे जुड़ीभई जाननाचाहिये इतिभग्ननिदानचिकित्साऽधिकार समाप्त॥ ४३९ ॥

चतुर्थो भागः ॥

अथ नाड़ीव्रणाधिकारः ॥

तत्रनाड़ीव्रणस्यसंप्राप्तिपूर्व्विकांनिरुक्तिमाह ॥

यःशोथमाममितिपक्वमुपेक्षतेऽज्ञोयोवाव्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः। अभ्यन्तरंप्रविशति प्रविदार्य्यतस्यस्थानानिपूर्व्वविहितानिततःसपूयः ॥ तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यतेतु नाड़ीवयद्वहतितेनमताचनाड़ी । उपेक्षतेतस्यशोथस्यमुखंनकारयतियोवाअयमामइति मत्वापक्वंव्रणंचोपेक्षते । शोधनैर्नशोधयतिप्रचुरपूयमितिशोथस्यव्रणस्यापिविशेषणम् । असाधुवृत्तःअहिताहारविहारः । सपूयःततस्तदनन्तरम् । तस्यपूर्व्वविहितानिस्थानानि सुश्रुतोक्तानि त्वङ्मांसशिरास्नायुसन्ध्यस्थिकोष्ठमर्म्माणिप्रविदार्य्यसच्छिद्राणिकृत्वा अभ्यन्तरंप्रविशति । तस्यपूयस्यातिमात्रगमनादभ्यन्तरेदूरप्रवेशात्गतिरिष्यतेसर्वदास्रावइष्यते । इतिसंप्राप्तिः । (अथनिरुक्तिः) अयंव्रणोनाड़ीवत्सरन्ध्रनलादिनाड़ीवयद्धेतोर्वहतितेननाड़ीमता ॥ ४४० ॥

चतुर्थभाग ॥

नाड़ी बृणका अधिकर ॥

नाड़ीव्रणकी सम्प्राप्तिपूर्वक निरुक्ति ॥

जो अज्ञान मनुष्य पके भये शोथ को कच्चा जानकर नहीं चिरवाताहै अथवा जो पके भये बहुत पीप वालेव्रण को शुद्धनहीं करताहै और अहित आहार बिहार करताहै उसकावहपीप त्वचा मांस शिरा स्नायुसन्धि अस्थि कोष्ठ तथा मर्म्म स्थानको छिद्रयुक्त करता भया भीतर प्रवेश करता है और उसके भीतर बहुत दूर तक चले जाने से सदा पीप बहा करता है छिद्र सहित नल आदि की नाड़ी के समान यह बहा करताहै इसलिये इस को नाड़ी व्रण कहते हैं ॥ ४४० ॥

अस्यादोषानुबन्धनसंख्यामाह ॥

दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्चसंमूर्छितैरपिचशल्यनिमित्ततोऽन्याः ॥ ४४१ ॥

नाड़ीव्रण की संख्या ॥

नाड़ीव्रण पांच प्रकार का होता है जैसे बातज पित्तज कफज सन्निपातज और शल्यज ॥ ४४१ ॥

तत्र वातजांनाड़ीमाह ॥

तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखीसशूलाफेनानुविद्धमधिकंस्रवतिक्षपासु ॥ ४४२ ॥

बातज नाड़ीव्रण के लक्षण ।

बातज नाड़ीव्रण कर्कश छोटे मुखवाला तथा पीड़ायुक्त होता है इससे रात्रिके समय फेन सहित बहुत पीप बहता है ॥ ४४२ ॥

अथ पित्तजमाह ॥

पित्तातुतृड्ज्वरकरीपरिदाहयुक्तापीतंस्रवत्यधिकमुष्णमहःसुचापि ॥ ४४३ ॥

पित्तज नाड़ीव्रणका लक्षण ॥

पित्तज नाड़ीव्रण में तृषा ज्वर तथा दाह होता है और दिन में पीला तथा उष्ण पीप बहुत निकलता है ॥ ४४३ ॥

अथ कफजमाह ॥

ज्ञेयाकफाद्बहुघनांसितपिच्छिलास्त्रंस्तब्धासकण्डुकरुजारजनीप्रवृद्धा। सितपिच्छिलास्त्रं अस्त्रंरक्तंतच्चोपलक्षणंपूयादिश्चबोद्धव्यः॥सकण्डुकरुजाकण्डूप्रधानवेदनायुक्ता ४४४॥

कफज नाड़ीव्रणके लक्षण ॥

कफज नाडी व्रणसे बहुत गाढ़ा श्वेत तथा पिच्छिल पीप आदि बहताहै यहकठोर खुजली आदि पीड़ा युक्त और रात्रि में बढ़ने वालाहोता है ॥ ४४४ ॥

अथ त्रिदोषजमाह ॥

दाहज्वरश्वसनमूर्च्छनवक्त्रशोषायस्यांभवन्त्यभिहितानिचलक्षणानि । तामादिशेत्प वनपित्तकफप्रकोपाद्घोराङ्गतित्वसुहरामिवकालरात्रिम् ॥ कालरात्रिंयमरात्रिमिव । अ सहरांमारिकाम् ॥ ४४५ ॥

सन्निपातज नाड़ीव्रण के लक्षण ॥

सान्निपातज नाड़ी व्रण में दाह ज्वर श्वास मूर्च्छा मुख का सूखना और पहले कहे भये बातादि तीनों दोषों के लक्षण होते हैं यह कालरात्रि के समान भयंकर और प्राण नाशक होताहै ॥ ४४५ ॥

अथ शल्यनिमित्तामाह ॥

नष्टंकथञ्चिदनुमार्गमुदीरितेषुस्थानेषुशल्यमचिरेणगतिङ्करोति।साफेनिलंमथितमुष्णमसृग्विमिश्रंस्रावंकरोतिसहसासरुजञ्चनित्यम् ॥ उदीरितेषुस्थानेषुत्वग्मांसादिषु कथञ्चिन्नष्टमदृश्यमानशल्यम् ॥ किंविशिष्टम्अनुमार्गम्अतएवादृश्यमानम्। सागतिः अचिरेणशीघ्रंस्रावंकरोति। साशल्यनिमित्तानाड़ी। मथितंमथितमिवस्रावंकरोतिस्रावश्चप्रसारणाकुञ्चनादौशल्यसञ्चलनेनभवति ॥ ४४६ ॥

शल्यजनाडीव्रणके लक्षण ॥

बिपथगामी शल्य त्वचा मांस आदि में जाताभया अदृश्य रूप से स्थित होकर शीघ्रही नाड़ी-व्रणको उत्पन्नकरताहै इसे शल्यज नाड़ीव्रण कहतेहैं इससे सदैव फेना युक्त मथा हुवासा उष्ण रुधिर युक्त तथा पीड़ा सहित स्रावफैलाने तथा सिकोड़ने आदिमें शल्यके चलायमान होनेसेहोतेहैं ४४६

अथा साध्यांकष्टसाध्याञ्चाह ॥

नाड़ीत्रिदोषप्रभवानसिद्ध्येदन्याश्चतस्रःखलुयत्नसाध्याः ॥ ४४७ ॥

नाड़ीव्रण असाध्य तथा यत्नसाध्य लक्षण ॥

सन्निपात नाडीव्रण असाध्य होताहै और अन्य नाड़ीव्रण यत्नसाध्य होते हैं ॥ ४४७ ॥

अथ नाड़ीव्रणस्यचिकित्सा ॥

तत्रानिलोत्थामुपनाह्यपूर्वमशेषतःपूयगतिंविदार्य्य। फलैरपामार्गभवैःसुपिष्टैःससैन्धवैःसंपरिपूर्यबन्धेत्॥प्रक्षालनेवापिसदाव्रणस्ययोज्यंमहद्यत्खलुपञ्चमूलम्॥४४८॥

नाड़ीव्रण की चिकित्सा ॥

वातज नाड़ीव्रणमें पहले उपनाह करके फिर सम्पूर्ण नाड़ीको बिदीर्णकरै इसके उपरान्तलट-जीरे के फलोंको पीसकर और सेंधोनोन मिलायके व्रणमें भरदे और बांधदे और बड़े पंचमूल के काढ़े से सदैव व्रणको धोवे ॥ ४४८ ॥

हिंस्रांहरिद्रांकटुकांवचाञ्चगोजिह्विकाञ्चापिसविल्वमूलम्। संहृत्यतैलंविपचेद्व्रणस्यसंशोधनंपूरणरोपणञ्च ॥ इतिहिंस्राद्यंतैलम् ॥ ४४९ ॥

हिंस्रा हल्दी कुटकी बच गोभी औ बेलकीजड़ इनके द्वारापाककियाभयातेल व्रणको शुद्धकरताहै और भरकर पूर्ण करताहै इतिहिंस्रादितैल ॥ ४४९ ॥

पित्तात्मिकांप्रागुपनाह्यधीमानुत्कारिकाभिःसपयोघृताभिः। निपात्यशस्त्रंतिलनागदन्तीमञ्जिष्ठकल्कैःपरिपूरयेच्च ॥ प्रक्षालनेचापिहरिद्रसोमनिम्बाःप्रयोज्याःकुशलेननित्यम्। श्यामात्रिभण्डीत्रिफलासुसिद्धंहरिद्रयातिल्वकवृक्षकेण ॥ घृतंसदुग्धंव्रणतर्पणेनहन्याद्गतिंकोष्ठगतापियास्यात् इतिश्यामाघृतम् ॥ ४५० ॥

पित्तजनाडीव्रणमें पहले दूध तथा घी सहित लेईकी पुलटिस लगाकर उसे चीरै फिर तिल नागदन्ती तथा मजीठ के कल्कसे व्रणको भरके बांधदे और हल्दी मोम तथा नीमके काढ़ेसे घावको नित्य धोवै कालानिसोथ सफेद निसोथ त्रिफला हल्दी लोध तथा कुरय्या इनके द्वारा दुग्ध सहित गऊ के घीको पाककरके सेवन करनेसे कोष्ठमें भयाभी नाड़ीव्रण नष्टहोताहै इतिश्यामाघृत ४५० ॥

नाड़ींकफोत्थामुपनाह्यपूर्वंकुलत्थसिद्धार्थकशक्तुबिल्वैः । मृदूकृतामेकगतिंविदित्वा निपातयेच्छस्त्रमशेषकारि ॥ दद्याद्व्रणेनिम्बतिलाग्निदन्तीसुराष्ट्रजाःसैन्धवसंप्रयुक्ताः । प्रक्षालनेचापिकरञ्जनिम्बजात्यर्कपीलुस्वरसाःप्रयोज्याः ॥ ४५१ ॥

कफज नाडी व्रण में पहले कुल्थी सरसों सत्तू तथा बेलके द्वारा पुलटिस लगाकर व्रणको कोमल करै फिर शस्त्र के द्वारा नाड़ीको चीरकर नीम तिल चीता दन्ती सोरठी मिट्टी तथा सेंधानोन इन सबको व्रणमें भरकेबांधे और करंजुवा नीम चमेली आक तथा पीलूकेरससे घावकोधोयाकरै ४५१ ॥

स्वर्ज्जिकासिन्धुदन्त्यग्निजूथिकाजलनीलिका । खरमञ्जरिबीजेषुतैलंगोमूत्रसाधितम् ॥ दुष्टव्रणप्रशमनंकफनाड़ीव्रणापहम् । स्वर्जिकाद्यंतैलम् ॥ ४५२ ॥

सज्जी सेंधानोन दन्ती चीता जूही सिवार तथा लटजीरेके बीज इनके द्वारा गोमूत्र के साथ पाक कियाभया तेल दुष्टव्रण औ कफज नाडी व्रणको नष्ट करताहै इति स्वर्जिकादितैल ॥४५२ ॥

सैन्धवार्कमरिचज्वलनाख्यैर्म्मार्कवेणरजनीद्वयसिद्धम् । तैलमेतदचिरेणनिहन्याद्दूरगामपिकफानिलनाड़ीम् ॥ इतिसैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ४५३ ॥

सेंधानोन आक मिर्च चीता भंगरा हल्दी तथा दारुहल्दी इनके द्वारा पाक कियाभया तेल कफज तथा बातज दूरगामी नाडी व्रणको शीघ्रही नष्ट करताहै इति सैंधवादि तैल ॥ ४५३ ॥

नाड़ींतुशल्यप्रभवंविदार्य्यनिष्कास्यशल्यंप्रविशोध्यमार्गम् । बन्धेतुव्रणंक्षौद्रघृतप्रगाढ़ंनिम्बास्तिलान्सोध्यवरोपयेच्च ॥ ४५४ ॥

शल्यज नाडीव्रणको चिरवाकर शल्य निकलवावै फिर घावको शुद्धकरके नीम तथा तिलोंको पीसके अधिक घी तथा सहत मिलाकर घावमें भरके बांधे ॥ ४५४ ॥

कुम्भीकखर्ज्जूरकपित्थबिल्ववनस्पतीनाञ्चशलाटुवर्गे । कृत्वाकषायंविपचेत्तुतैलमावाप्यमुस्तंसरलंप्रियंगुम् ॥ सौगन्धिकंमोचरसाहिपुष्पंलोध्राणिदत्त्वाखलुधातकीञ्च । एतेनशल्यप्रभवाहिनाड़ीरोहेद्व्रणेवासुखमाशुचैव इतिकुम्भिकाद्यंतैलम् ॥ ४५५ ॥

जल कुम्भी खजूर कैथा बेल औरबर्गद आदिके कोमलफल इनके काढ़ेके साथ मोथा सरल काष्ठ प्रियंगु रसौत मोचरस नागकेसर लोध और धवईके फूल इनके द्वारा पाक किया भया तेल शल्यजनाड़ी व्रणको नष्ट करताहै इति कुम्भिकादि तैल ॥ ४५५ ॥

स्नुह्यर्कदुग्धदार्व्वीणांवर्त्तिंकृत्वाप्रपूरयेत् । एषसर्वशरीरस्थांनाड़ींहन्यात्प्रयोगराट् ॥ आरग्वधनिशाकालाचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता । सूत्रवर्त्तिर्व्रणेयोज्याशोधिनीगतिनाशिनी ॥ वर्त्तीकृतंमाक्षिकसंप्रयुक्तंनाड़ीघ्नमुक्तंलवणोत्तमंवा । दुष्टव्रणेयद्विहितंतुतैलंतत्सेव्यमानंगतिमाशुहन्ति ॥ जात्यर्कसंपाककरञ्जदन्तीसिन्धूत्थसौवर्चलयावशूकैः । वर्तिःकृताः

हन्त्यचिरेणनाड़ींस्नुक्क्षीरपिष्टातुसचित्रकेण ॥ विभीतकाम्रास्थिवटप्रबालहरेणुकाशङ्खिनिबीजमिश्रा । वाराहविट्सूक्ष्ममसीप्रदेयानाड़ीषुतैलेनविमिश्रयित्वा ॥ मेषरोममषीतुम्ब्याकटुतैलंविपाचितम् । नाड़ीव्रणंचिरोद्भूतंजयेत्तुतूलसङ्गमात् ॥ ४५६ ॥

थूहर तथा आकका दूध औ दारुहल्दी इन के द्वारा बनाई भई बत्ती रखने से सम्पूर्ण शरीर में भये नाड़ी व्रणको भी दूर करती है अमलतास हल्दी तथा नील इनके चूर्ण को घी शहत तथा गोमूत्र में मिलाकर बनाई भई बत्ती के रखने से व्रण शुद्ध होता है और पीप बहना बंद होजाताहै सेंधेनोन को शहत में मिलाकर बनाई भई बत्ती नाड़ी व्रणको नष्ट करतीहै दुष्ट व्रण में कहे भये तेलोंके सेवन से पीव बहना बन्द होताहै चमेली आक अमलतास करंजुवा जमालगोटे की जड़ सेंधानोन सोंचलनोन जवाखार तथा चीता इनसबको पीसकर थूहरके दूधमें बत्ती बनावे इस्से नाड़ीव्रणका शीघ्रही नाशहोताहै बहेड़ा आमकी बिजली बरगदकी दाढ़ी रेणुका तथा शङ्खाहूली के बीज-इनको सूकर की महीन पीसी भई बीटमें मिलाकर तेलमें मिलावे इसके प्रयोग से नाड़ीव्रणका नाश होताहै मेढ़के रोमोंका काजल तथा लौकीकेद्वारा पाककियेभये कड़ू तेलको रुईकेसाथ लगाने से बहुत पुराना नाड़ी व्रण भी नष्ट होताहै ॥ ४५६ ॥

कर्चूरकस्यस्वरसेकटुतैलंविपाचयेत् । सिन्दूरकल्कितंनाड़ीदुष्टव्रणविसर्प्पनुत् ॥ कर्चूरकरसेतैलंपुरसिन्दूरकल्कितम् । पामादुष्टव्रणंनाड़ीहन्यात्सर्व्वव्रणान्तकृत् । इति कर्चूरतैलम् ॥ ४५७ ॥

कचूरके रसके साथ सिन्दूर छोड़कर पाककियाभया कड़ूतेल नाड़ीव्रण दुष्टव्रण तथा विसर्पको नष्ट करताहै गूगुल तथा सिन्दूरके द्वारा कचूरके रसके साथ पाक कियाभया तेल खुजली दुष्टव्रण तथा नाड़ी व्रणादि सम्पूर्ण व्रणोंको नष्ट करताहै इति कचूर तैल ॥ ४५७ ॥

भल्लातकार्कमरिचैर्लवणोत्तमेनसिद्धंविडङ्गरजनीद्वयचित्रकैश्च । स्यान्मार्कवस्यचरसेननिहंतितैलंनाड़ींकफानिलकृतामपचींव्रणांश्च । भल्लातकाद्यंतैलम् ॥ ४५८ ॥

भिलावां आक मिर्च सेंधानोन वायविड़ंग हल्दी दारुहल्दी चीता इनके द्वारा भंगरेके रसके साथ पाक कियाभया तेल नाड़ीव्रण कफ तथा वात जनित अपची और अन्य व्रणोंको नष्ट करता है इति भल्लातकादि तैल ॥ ४५८ ॥

स्वर्जिकासैन्धवंदन्तीनीलीमूलंफलंतथा । मूत्रेचतुर्गुणेसिद्धंतैलंनाड़ीव्रणापहम् ॥ स्वर्जिकाद्यंतैलम् ॥ ४५९ ॥

सज्जी सेंधानोन जमालगोटेकीजड़ नीलकीजड़ तथा फल इनके द्वारा चौगुने गोमूत्रके साथ पाक कियाभया तेल नाड़ी व्रणको दूर करता है इति स्वर्जिकादि तैल ॥ ४५९ ॥

सर्व्वोव्रणक्रमःकार्य्यःशोधनारोपणादिकः ॥ ४६० ॥

नाड़ी व्रणमें व्रणाऽधिकारमें कहाभया शोधन रोपणका सब क्रम करना चाहिये ॥ ४६० ॥

गुग्गुलुत्रिफलाव्योषैःसमांशैराज्ययोजितैः । अक्षप्रमाणांगुटिकांखादेदेकामतन्द्रितः ॥ नाड़ीदुष्टव्रणंशूलमुदावर्त्तंभगन्दरम् । गुल्मञ्चगुदजान्हन्यात्पक्षिराड्पन्नगानिव ॥ सप्ताङ्गगुग्गुलुः ॥ ४६१ ॥

गूगुल त्रिफला तथा त्रिकटु इन सब औषधोंको समभाग लेकर घीके साथ तोले २ भरकी गोली बांधै इस गोलीके खानेसे नाड़ी व्रण दुष्टव्रण शूल उदावर्त्त भगन्दर गुल्म तथा बवासीर का नाश होताहै इति सप्तांग गुग्गुलु ॥ ४६१ ॥

याद्विव्रणीयेविहितास्तुवर्त्यस्ताःसर्वनाड़ीषुभिषग्विदध्यात् ४६२ ॥

द्विव्रणीय अध्यायमें जो बत्ती कहीगई है वो सम्पूर्ण नाड़ीव्रणोंमें भी प्रयोग करनी चाहिये ४६२॥

कृशदुर्बलभीरूणांनाड़ींमर्म्माश्रितामपि । क्षारसूत्रेणतांछिन्द्यान्नशस्त्रेणकदाचन ॥ एषण्यागतिमन्विष्यक्षारसूत्रानुसारिणीम् । सूचीनिदध्यादत्यन्तेप्रोन्नाम्याशुविनिर्हरेत् ॥ सूत्रस्यान्तंसमानीयगाढंबन्धनमाचरेत् । ततःक्षारबलंवीक्ष्यसूत्रमन्यत्प्रवेशयेत् ॥ क्षाराक्तंमतिमान्वैद्योयावन्नच्छिद्यतेगतिः । भगन्दरेष्वेवविधिःकार्य्योवैद्येनजानता अर्बुदादिषुचोत्क्षिप्यमूलेसूत्रंनिधापयेत् ॥ सूचीभिर्यववक्त्राभिराचितंवासमन्ततः । मूले सूत्रेणवध्नीयाच्छिन्नेचोपचरेद्व्रणम्॥इतिनाड़ीव्रणरोगनिदानचिकित्साधिकारः४६३॥

कृश दुर्बलतथाभयशील मनुष्योंका नाड़ीव्रण औरमर्ममेंभयानाड़ीव्रणक्षारसूत्रसेछेदन करना चाहिये इनमेंशस्त्रकाप्रयोगकदापिन करै एषणी सलाईकेद्वारा व्रणकीगतिकोजानकर क्षारसूत्रमें पीरोईभई सुईकोव्रणके एक ओरसे प्रविष्टकरके दूसरी ओरसेकुछउठाकर शीघ्रनिकालले फिरउसी क्षारसूत्र से गाढबन्धन करै इसके उपरान्त क्षारके बलको देखकर फिर दूसरीबार क्षार सूत्रको प्रविष्टकरै जबतक छेदन न होजाय तबतक इसी प्रकार करता रहै ज्ञाता वैद्य भगन्दररोग में भी इसी प्रकार करै अर्बुदादिकों में भी खींचकर उनके मूल में क्षार सूत्र बांधे अथवा जौके समान मुखवाली सूजियों के द्वारा सबओरसे व्याप्त करै मूलमें क्षार सूत्र बांधकर छेदन होजाने पर व्रणकी चिकित्साकरै इतिनाड़ी व्रणनिदान चिकित्सा ऽधिकारसमाप्त ॥ ४६३ ॥

अथ भगन्दरस्यपूर्वरूपसहितंस्वरूपमाह ॥

कटीकपालनिस्तोददाहकण्डूरुजादयः । भवन्तिपूर्वरूपाणिभविष्यतिभगन्दरे ॥ गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिड़िकार्त्तिकृत्।भिन्नाभगन्दरोज्ञेयासचपञ्चविधोभवेत्॥ आर्त्तिकृत्पीड़ाकृत् । पञ्चविधः वातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिकशल्यजभेदैः ॥ ४६४ ॥

भगन्दरका अधिकार भगन्दरका पूर्व रूपसहित लक्षण

भगंदर होनेकेपहले कमरमें तथा कपालमें सूजीगड़नेकीसी पीड़ा दाह खुजली तथा पीड़ा आदि होतेहैं गुदाके एक ओरदो अंगुलकी जगहमें पीड़ायुक्त फटीभई पीड़िका होती है उसे भगन्दर कहतेहैं भगन्दर पांचप्रकार काहै जैसे बातज पित्तज कफज सन्निपातज तथा शल्यज ॥ ४६४ ॥

अथ भगन्दरशब्दस्यनिरुक्तिमाहभोजः ॥

भगन्दरःसमन्ताच्चगुदंवस्तिंतथैवच । भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्मादेषभगन्दरः ॥ भजन्त्यनेनेतिभगोमेहनम् । भजन्त्यस्मिन्निति भगंयोनिः ॥ अत्रभगशब्देनद्वयमपिकथ्यते । भगवत्योनिवत् ॥ ४६५ ॥

भगन्दर शब्दकी निरुक्ति ॥

(भगलिंग) औरयोनि गुदा तथावस्तिके सबओर योनिके समान विदीर्ण करताहै इस्से इसको भगन्दर कहतेहैं ॥ ४६५ ॥

अथ वातिकंशतपोनकसंज्ञंभगन्दरमाह ॥

कषायरूक्षैरतिकोपितोऽनिलस्त्वपानदेशेऽपिडिकांकरोतियाम् । उपेक्षणाद्वातमुपैति दारुणंरुजाचभिन्नारुणफेनवाहिनीम् ॥ तत्रागमोमूत्रपुरीषरेतसांव्रणैरनेकैःशतपोनकं वदेत् । दारुणम् अतिदारुणरुक् ॥ व्रणैरनेकैःसूक्ष्ममुखैः । शतपोनकंशतपोनकश्चा लनीततुल्यम् ॥ ४६६ ॥

बातजशतपोनक नामभगन्दरके लक्षण ॥

कषाय तथा रूखी वस्तुओंके सेवनसे अत्यन्त कुपित वायु गुदामें पिड़िकाको उत्पन्न करती है यह पिड़िका उपेक्षाकरनेसे अत्यन्त पीड़ासहित पकजाती है औरइस्के फटजाने पर रक्तवर्ण फेनसहित स्रावहोताहै औरइस्से मूत्र मल तथा वीर्य्य निकलताहै इस्में शतपोनक चलनी के समान छिद्रहोते हैं इसलिये इसे शतपोनक कहते हैं ॥ ४६६ ॥

अथ पैत्तिकमुष्ट्रग्रीवसंज्ञमाह ॥

प्रकोपणैःपित्तमतिप्रकोपितंकरोतिरक्तांपिड़िकांगुदेगताम् । तदाशुपाकांहिमपूतिवा हिनींभगन्दरंचोष्ट्रशिरोधरंवदेत् ॥ आशुपाकांहिमपूतिवाहिनींशीघ्रपाकामुष्णदुर्गन्धवा हिनींच । तदाभगन्दरमुष्ट्रशिरोधरंवदेत् ॥ उष्ट्रग्रीवसंज्ञाचपिड़िकागलेनवक्रतयोष्ट्रग्री वकत्वेन ॥ ४६७ ॥

पित्तजउष्ट्रग्रीवनामक भगन्दरके लक्षण ॥

पित्तकारी वस्तुओंके द्वारा अत्यन्त कुपित पित्त गुदामें रक्तवर्ण पिड़िकाको उत्पन्न कर्त्ता है यह पिड़िका शीघ्र पकनेवाली होती है और उस्से दुर्गन्धयुक्त उष्ण पीपबहताहै पिड़िकाके वक्रहोने के कारणसे इसेउष्ट्र ग्रीवकहतेहैं ॥ ४६७ ॥

अथ श्लैष्मिकंपरिस्राविसंज्ञमाह ॥

कण्डूयनोघनस्रावीकठिनोमंदवेदनः । श्वेतावभासःकफजःपरिस्रावीभगन्दरः ॥ क ठिनःपिड़िकावस्थायाम् । परिस्रावीनिरन्तरस्रावशीलः ॥ ४६८ ॥

कफजपरिस्राविनाम भगन्दरके लक्षण ॥

कफजभगन्दर की पिड़िका कठिन थोड़ीपीड़ावाली खुजलीयुक्त तथा श्वेतवर्ण होतीहै इस्से घ- नापीपबहताहै यहनिरन्तर बहती है इस्सेइसे परिस्रावि कहते हैं ॥ ४६८ ॥

अथसान्निपातिकशम्बूकावर्त्तसंज्ञमाह ॥

बहुवर्णरुजास्रावापिड़िकागोस्तनोपमा । शम्बुकावर्त्तगतिकःशम्बूकावर्त्तकोमतः ॥ बहुवर्णरुजास्रावाबहुशब्दोवर्णादिभिःप्रत्येकंसम्बध्यतेगतिस्रावमार्गः ॥ ४६९ ॥

सन्निपातजशम्बूकावर्त्तनामक भगन्दरके लक्षण ॥

सन्निपातज भगन्दर में गऊके थनके समान आकृतिवाली और अनेक प्रकारके वर्ण पीड़ा तथा

स्राववाली होती है इसके पीपबहनेका मार्ग घोंघेके समान होता है इसलिये इसे शम्बूका वर्त कहते हैं ॥ ४६९ ॥

अथ शल्यजमुन्मार्गिसंज्ञमाह ॥

क्षताद्गतिःपायुगताविवर्द्धतेह्युपेक्षणात्स्युःकृमयोविदार्य्यते । प्रकुर्व्वतेमार्गमनेकधामुखैर्व्रणैस्तमुन्मार्गभगन्दरंवदेत् ॥ क्षतात्कण्टकादिना । नखेनकण्डूयनादिनावाऽभिघातात् ॥ गतिःस्रावःउन्मार्गिभगंदरम् ॥ एतस्यातिर्य्यक्कृतमार्गैःपुरीषादिनिर्गमादुन्मार्गिसंज्ञाः ॥ ४७० ॥

शल्यज उन्मार्गीनाम भगन्दरके लक्षण ॥

गुदामें कांटेआदि से अथवा नखके द्वारा घावहोकर जो स्राव होता है वह उपेक्षा करने से बढ़जाता है और उसमें कीड़े पड़जाते हैं वे कीड़े मांसको विदीर्णकरके अनेक मुखवाले व्रणको उत्पन्नकरतेहैं इसमें तिर्छे मार्गोंसे मलआदि निकलताहै इससे इसको उन्मार्गी भगन्दरकहतेहैं ४७०॥

कष्टसाध्यमसाध्यञ्चाह ॥

घोराःसाधयितुंदुःखांसर्वएवभगन्दरः । तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थःक्षतजश्चविशेषतः ॥ वातमूत्रपुरीषाणिशुक्रञ्चकृमयस्तथा । भगन्दरात्स्रवन्तस्तुनाशयंतितमातुरम् ४७१ ॥

कष्टसाध्य औरअसाध्यभगन्दरके लक्षण ॥

सबप्रकार के भगन्दर भयंकर औ कष्टसाध्य होते हैं इनमेंसे सन्निपातज तथा क्षतज भगन्दर विशेष करके असाध्य होते हैं और जिस भगन्दर से बायु मूत्र मल वीर्य्य तथा कीड़े निकलते हैं वो असाध्य हैं ॥ ४७१ ॥

भगन्दरस्यचिकित्सा ॥

अथास्यपिड़िकामेवतथायत्नादुपाचरेत् । शुध्यसृस्रुतिसेकाद्यैर्यथापाकंनगच्छति ॥ वटपत्रेष्टकशुण्ठीसगुडूचीपुनर्न्नवाः । सुपिष्टःपिड़िकावस्थेलेपःशस्तोभगन्दरे ॥ पिड़िकानामपक्वानामपतर्पणपूर्वकम् । कर्म्मकुर्य्याद्विरेकान्तंभिन्नानांवक्ष्यतेक्रिया ॥ एषणीपाटनक्षारवह्निदाहादिकंक्रमम् । विधायव्रणवत्कार्य्यंयथादोषंयथाक्रमम् ॥ पयःपिष्टैस्तिलारिष्टमधुकैश्चसुशीतलैः । भगन्दरेप्रशस्तोऽयंसरक्तेवेदनावति ॥ सुमनावटपत्राणिगुडूचीविश्वभेषजम् । ससैन्धवःतक्रपिष्टोलेपोहन्तिभगन्दरम् ॥ त्रिवृत्तिलाःनागदन्तीमञ्जिष्ठासुहसर्पिषा । उत्सादनंभवेदेतत्सैन्धवक्षौद्रसंयुताम् ॥ खदिराम्बुरतोभूत्वाकषायंत्रैफलंपिबेत् । महिषाक्षविड़ङ्गानांभगन्दरविनाशनम् ॥ शम्बूकमांसंभुञ्जीतप्रकारैर्व्यञ्जनादिभिः । अजीर्णवर्जीमासेनमुच्यतेतुभगन्दरात् । न्यग्रोधादिर्गणोयस्तुहितःशोधनरोपणः ॥ तैलंघृतंवातपक्वंभगन्दरविनाशनम् । तिलाज्योतिष्मतीकुष्ठंलाङ्गलीगिरिकर्णिका ॥ शताङ्कात्रिवृतादन्त्यःशोधनाश्चभगन्दरे । तिलाभयालोध्रमरिष्टपत्रंनिशेवलालोध्रमगारधूमम् ॥ भगन्दरेचाप्युपदंशयोश्चदुष्टव्रणेरोपणशोधनाय ॥ ४७२ ॥

भगन्दरकी चिकित्सा ॥

भगन्दरकी पिड़िका मेंही शुधि रक्तमोक्षण तथा परिषेकके द्वारा ऐसी चिकित्सा करै जिससे वह पकने न पावै भगन्दरमें बेलके पत्ते ईंट सोंठ गिलोय तथा गदहपूरना इनको पीसकर पिड़िका-

वस्थामेंही लेप करै पिड़िकाओंके न पकनेपर पहले अपने अपतर्पण फिर विरेचन पर्य्यन्त सब क्रियाकरै पिड़िकाओंके पककरफटजानेपर सलाईके द्वारा अनुसन्धान छेदन क्षार और अग्निके द्वारा दाहादिक क्रिया करके दोषके अनुसार क्रम पूर्वक व्रणके समान चिकित्सा करै तिल नीम तथा मुलेठीको दूधमें पीसकर रुधिर सहित पीड़ा वाले भगन्दरमें शीतल लेपकरै चमेली बरगदके पत्ते गिलोय सोंठ तथा सेंधानोन इनसबको मट्ठेमें पीसकर लेपकरनेसे भगन्दर का नाशहोताहै निसोथ तिल नागाहुली तथा मजीठ इनसबको घी सहत तथा सेंधानोन मिलाकर उबटनकरै कत्थेका क्वाथ त्रिफलाका क्वाथ अथवा गूगुल तथा बायबिड़ंगका क्वाथ पीनेसे भगन्दर नष्टहोताहै घेंघेकामांस शाककी रीतिसेमहीने भरतक खायऔरअजीर्ण नहोनेपावै तो भगन्दर नष्टहोताहै न्यग्रोधादिगण व्रणका शुद्धकर नेवालातथा भरनेवाला होताहै इसलिये न्यग्रोधादिगणके द्वारा पाककियेभये तेल अथवा घी के सेवन से भगन्दर नष्टहोता है तिल मालकांगनी कूट जलपिप्पली विष्णुक्रान्ता सौंफ निसोथ जमालगोटे की जड़ येसब भगन्दरके शुद्ध करनेवालेहैं तिल हड़ लोध नीमकीपत्ती हल्दी दारुहल्दी बरियारा लोध और गृहधूम ये सबदुष्टव्रण भगन्दर तथा उपदंशके भरनेवाले तथा शुद्ध करनेवाले हैं ॥ ४७२ ॥

स्नुह्यर्कदुग्धदार्व्वीभिर्व्वर्त्तिंकृत्वाविचक्षणः। भगन्दरगतिंज्ञात्वापूरयेत्ताःप्रयत्नतः॥ एषासर्वशरीरस्थांनाड़ींहन्यान्नसंशयः । त्रिफलारससंयुक्तंविड़ालास्थिप्रलेपनम् ॥ भगंदरंनिहन्त्याशुदुष्टव्रणहरंपरम् । त्रिवृत्तेजोवदन्तीकल्कोनाड़ीव्रणापहः ॥ ज्योतिष्मतीलांगलकीश्यामादन्तीत्रिवृत्तिलाकुष्ठंशताह्वागोलोमीवर्गःशोधनइष्यते॥मधुनैलयुते विडंगसारत्रिफलामागधिकाकणाश्चलीढाः । कृमिकुष्ठभगन्दरप्रमेहान्क्षयनाड़ीव्रणरोपणाभवंति ॥ ४७३ ॥

थूहड तथा आकके दूधमें दारुहल्दीके चूर्णकी वत्ती बनाकर भरने से भगन्दर और संपूर्ण शरीर में भयेभी नाड़ीव्रणका नाश होता है त्रिफलाके काढेमें बिल्लीकी हड्डीका चूर्ण मिलाकर लेप करने से दुष्टव्रण तथा भगन्दरका नाश होताहै निसोथ मालकांगनी औ जमालगोटेकी जड़ इनका कल्क नाडीव्रणको नष्ट करता है मालकांगनी जल पिप्पली श्यामा जमालगोटेकी जड़ निसोथ तिल कूट सौंफ तथा सफेद दूब येसब औषध व्रणकी शुद्ध करनेवालीहैं बायबिड़ंग सार त्रिफला पीपल जीरा इनको सहत औ तेलमें मिलाकर चाटनेसे कृमि कुष्ठ भगन्दर प्रमेह क्षय और नाड़ीव्रणका नाश होता है ॥ ४७३ ॥

चित्रकार्कौत्रिवृत्पाठेमलपूहयमारकौ । सुधांवचांलांगलकींहरितालंसुवर्चिकाम् ॥ ज्योतिष्मतीञ्चसंहृत्यतैलंधीमान्विपाचयेत् । एतद्विष्यन्दनंनामतैलंदद्याद्भगन्दरे ॥ शोधनंरोपणंचैवसवर्णकरणंतथा । इति विष्यंदनतैलम् ॥ ४७४ ॥

चीता आक निसोथ पाठा कठियागूला कनेर थूहड़ बच जलपीपल हरताल शोरा औ मालकंगनी इनके द्वारा पाक किया भया तेल भगन्दरको शुद्ध करता है भरताहै और त्वचाके वर्णको समान करताहै इति विष्यन्दन तैल ॥ ४७४ ॥

निशार्कक्षीरसिंधूत्थपुराश्चहयमारकैः । सिद्धमभ्यञ्जनंतैलंभगंदरहरंपरम् इतिनिशाद्यंतैलम् ॥ ४७५ ॥

हल्दी आकका दूध सेंधानोन गूगल कनेर और कुरय्या इनसबके द्वारा पाककिये भये तेल के लगानेसे भगन्दरका नाश होताहै इति निशाद्यतैल ॥ ४७५ ॥

करवीरनिशादंतीलांगलीलवणाग्निभिः। मातुलुंगकवत्साह्वैःपचेत्तैलंभगंदरे ॥ इतिकरवीरादितैलम् ॥ ४७६ ॥

कनेर हल्दी जमालगोटकीजड़ जलपीपल चीता बिजौरा नींबू औ कुरय्या इनकेद्वारा पाक किया भया तेल भगन्दरको नष्टकरताहै इति करबीरादितैल ॥ ४७६

त्रिफलापुरकृष्णानांत्रिपञ्चैकांशयोजिता। गुटिकाशोथगुल्मार्शोभगन्दरवतांहिता ॥ नवकार्षिकोगुग्गुलुः ॥ ४७७ ॥

त्रिफला तीनअंश गूगल पांचअंश औ पीपल एकअंश इनसबके द्वारा बनीभईगोली शोथ गुल्म बवासीर तथा भगन्दरका नाश करतीहै इति नवकार्षिक गुग्गुलु ॥ ४७७ ॥

नाड्यन्तरेव्रणान्कुर्य्याद्भिषक्भिःशतपोनके। ततस्तेष्ववरूढेषुशेषानाडीरुपाचरेत् व्याधौतत्रबहुच्छिद्रेभिषजातुविजानता। अर्द्धलाङ्गलकःछेदःकार्य्योलाङ्गलकोऽपिवा ॥ सर्व्वतोभद्रकोवापिकार्य्योगोतीर्थपोऽपिवा। द्वाभ्यांसमाभ्यांपार्श्वाभ्यांछेदोलाङ्गलकोमतः ॥ ह्रस्वमेकतरंयत्तुसोऽर्द्धलाङ्गलकःस्मृतः। सेवनींवर्ज्जयित्वातुचतुर्द्धादारितेगुदे ॥ सर्वतोभद्रकंछेदमाहुश्छेदविदोजनाः। पार्श्वादागतशस्त्रेणछेदोगोतीर्थकोमतः ॥ सर्वानास्रावमार्गांस्तुदहेद्वैद्यस्तथाग्निना ॥ ४७८ ॥

शतपोनक भगन्दरमें नाड़ीके बीचमें व्रण करै फिर व्रणोंके पूर्ण होजानेपर शेष नाड़ी व्रणोंकी चिकित्साकरे अनेक छिद्रवाले इसरोगमें अर्द्धलांगलक लांगलक सर्वतोभद्र अथवा गोतीर्थिक छेद करै दोनोंओर समभागवाले छेदको लांगल कहतेहैं एक ओर छोटे छेदको अर्द्धलांगल कहते हैं सीवनको छोड़कर गुदाके चारोंओर कियेगये छेदको सर्वतोभद्र कहतेहैं शस्त्र लगाकर एकओर कियेगये छेदको गोतीर्थक कहतेहैं शतपोनकमें पीप बहनेके सम्पूर्ण मार्गोको अग्निके द्वारा जलायदे ४७८ ॥

अथोष्ट्रग्रीवमेषिण्याछित्वाक्षारंनिपातयेत्।पूतिमार्गव्यपोहार्थमग्निरत्रतुपूजितः ४७९ ॥

उष्ट्रग्रीव भगन्दर में सलाईके द्वारा छेदनकरके क्षारडालै औरदुर्गंधित मार्गके निवारणके लिये अग्निके द्वारा दाहभी हित है ॥ ४७९ ॥

उत्कृत्यास्रावमार्गन्तुपरिस्रविनिबुद्धिमान्। क्षारेणास्रावितगतिंदहेद्धुतवहेनवा ॥ गतिमन्विष्यशस्त्रेणछिन्द्यात्खर्जूरपत्रिकम्। चन्द्रार्द्धंचन्द्रवर्गञ्चसूचीमुखमवाङ्मुखम् ॥ छित्वाग्निनादहेत्सम्यगेवंक्षारेणवापुनः। येषान्तुशस्त्रपतनाद्वेदनात्रातिजायते ॥ तत्राशुतैलेनोष्णेनपरिषेकःप्रशस्यते ॥ ४८० ॥

परिस्रावीनाम भगन्दरमें बहने के मार्गको काटकर क्षारके द्वारा अथवा अग्निके द्वारा दाहकरै बहने के मार्गको जानकर शस्त्रके द्वारा खर्जूरपत्रिक चन्द्रार्ध चन्द्रवर्ग सूचीमुख अथवा अवाङ्मुख छेद करके अग्नि अथवा क्षारके द्वारा दाहकरै जिनके शस्त्र लगनेसे बहुत पीड़ा होती है उनके उष्ण तेलसे परिषेक करना चाहिये ॥ ४८० ॥

आगन्तुजभिषग्नाड़ींशस्त्रेणोत्कृत्ययत्नतः । जंबोष्ठेनाग्निवर्णेनतप्तयावाशलाकया ॥ दहेद्यथोक्तंमतिमान्तंव्रणंसुसमाहितः । व्यायामंमैथुनंयुद्धंपृष्ठयानंगुरूणिच ॥ संवत्सरं परिहरेदुपरूढव्रणोनरः । इतिभगन्दरनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ४८१ ॥

शल्यज भगन्दरमें वैद्य यत्न पूर्व्वक शस्त्र द्वाराघावको काटकर अग्निवर्णजम्बोष्ठ से अथवा तप्त शलाकासे उसव्रणको दग्धकरै भगन्दर वाला घावके भरजानेपर सालभर तक व्यायाम मैथुन युद्ध घोड़े आदिकी सवारी और भारी वस्तुओंको त्यागै इतिभगन्दर निदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ४८१ ॥

अथ उपदंशाधिकारः ॥

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादृत्युपसेवनाद्वा । योनिप्रदोषाच्चभवन्तिशिश्ने पञ्चोपदंशाविविधोपचारैः ॥ सतोदभेदस्फुरणैःसकृष्णैःस्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशम् । पीतैर्बहुक्लेदयुतैःसदाहैःपित्तेनरक्तैःपिसितावभासैः ॥ सकण्डुरैःशोथयुतैर्महद्भिःशुक्लैःघनैः स्रावयुतैःकफेन । नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम् ॥ प्रशीर्णमांस कृमिभिःप्रजग्धंमुष्कावशेषंपरिवर्ज्जनीयम् । सञ्जातमात्रेणकरोतिमूढःक्रियांनरोयोविष येप्रसक्तः ॥ कालेनशोथकृमिदाहपाकैःप्रशीर्णशिश्नोम्रियतेसतेन ॥ ४८२ ॥

उपदंशका अधिकार ॥

लिंगमेंहाथ नख अथवा दांतके लगनेसे लिंगके न धोनेसे बहुत रति करने और दूषित योनि में गमन करनेसे पांचप्रकारका उपदंशरोग अनेक प्रकार के अपचारोंके द्वारा उत्पन्न होताहै सूईगड़नेकी सी पीड़ा फटनेकीसी पीड़ा तथा फड़कना इनलक्षणोंसे युक्त काली फुन्सी बातज उपदंशमें होती हैं बहुतक्लेद (रुतूवत) तथा दाहयुक्त पीली फुन्सी पित्तज उपदंशमें होती हैं मांसके समान रक्तबर्ण अथवा कृष्णवर्ण फुन्सी रक्तज उपदंश में होतीहैं इसमें रुधिर बहताहै और पित्तज उपदंशके लक्षण होते हैं खुजली वाली शोथयुक्त बड़ी शुक्लबर्ण गाढ़स्रावबाली फुन्सी होतीहैं अनेक प्रकारके स्राव तथा पीड़ा वाली फुन्सियां सन्निपातज उपदंशमें होतीहैं येअसाध्यहैं जिस उपदंशमें मांसगलगयाहो तथा मांस को कीड़ेखागयेहों औरकेवल अंडकोशबाकीरहगयेहों वहअसाध्यहै जोमूर्खपुरुष उपदंश के उत्पन्नहोते ही विषयमें आसक्त होकर चिकित्सानहीं करताहै कालपाकर उस पुरुषका शोथ कृमि तथा दाह से युक्त लिंग पककर गलजाताहै और रोगी मरजाताहै ॥ ४८२ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

उपदंशेषुसाध्येषुस्निग्धस्विन्नस्यदेहिनः । मेढ्रमध्येशिरांविध्येत्पातयेद्वाजलौकसः । हरेदुभयतश्चापिदोषानत्यर्थमूर्च्छितान् ॥ सद्योनिर्हृतदोषस्यरुक्शोथावुपशाम्यतः । यदिवादुर्बलोजन्तुर्नवाप्राप्तंविरेचनम् ॥ निरूहेणहरेत्तस्यदोषानत्यर्थमूर्च्छितान् । पाको रक्ष्यःप्रयत्नेनशिश्नक्षयकरोहिसः ॥ ४८३ ॥

उपदंशकी चिकित्सा ॥

साध्य उपदंश रोगमें स्नेह और स्वेदका प्रयोग करके लिंगकी शिराको छेदै अथवा जोंकलगवावै बहुत बढ़ेभये दोषोंको बमन और बिरेचन के द्वारा निकालै दोषोंके निकलजानेपर शीघ्रही पीड़ा

और शोथकी शान्तिहोतीहै जो दुर्बलताके कारण बिरेचन न होसकै तोनिरूह वस्तिके द्वाराबहुतबढ़े भयेदोषोंको निकालै और उपदंशके न पकने का बिशेष यत्नकरै क्योंकि पकनेसे लिंगका नाशहोताहै ४८३

प्रपौण्डरीकयष्ट्याह्वसरलागुरुदारुभिः। सरास्नाकुष्ठपृथ्वीकैर्वातिकेलेपसेचने ॥ निचुलैरण्डवीजानियवगोधूमशक्तवः। एतैश्चवातजैःस्निग्धैःसुखोष्णैःसंप्रलेपयेत् ॥ गैरिकांजनमञ्जिष्ठामधुकोसीरपद्मकैः। सचन्दनोत्पलैःस्निग्धैःपैत्तिकंसंप्रलेपयेत्। पद्मोत्पलमृणालैश्चससर्जार्जुनवेतसैः। सर्पिःस्निग्धैःसमधुकैःपैत्तिकंसंप्रलेपयेत् ॥ सेचयेच्चघृतक्षीरशर्करेक्षुमधूदकैः। अथ वापिसुशीतेनकषायेणवटादिना ॥ ४८४ ॥

पुंडरिया मुलेठी सरलकाष्ठ अगर देवदारु रास्ना कूट तथा इलायची इनके द्वारालेप और परिषेक बातज उपदंश में करना चाहिये वेत के बीज रेंड़ीके बीज जौ गेहूं और सत्तू इनको घीमें मिलाकर कुछ गरम लेप बातज उपदंशमें करै गेरू रसौत मंजीठ मुलेठी खस पद्माख चन्दन तथा उत्पल इन सबको घीमें मिलाकर पित्तज उपदंश में लेपकरै पद्माख उत्पल कमलकी डंडी शाल अर्जुन बेत और मुलेठी इनको घीमें मिलाकर पित्तज उपदंश मे लेप करै घी दूध शर्बत ऊखका रस और सहत का शर्बत अथवा वटादिगण के शीतल काढ़े के द्वारा पित्तज उपदंशमें तरारादेवै ॥ ४८४ ॥

शालाजकर्णाश्वकर्णवचात्वग्भिःकफोत्थितम्।सुरापिष्टाभिरुष्णाभिःसतैलाभिःप्रलेपयेत्॥अजकर्णःशालभेदःअश्वकर्णोगजहडः। आरग्वधादिक्काथेनपरिषेकश्चदापयेत्॥ निम्बार्जुनाश्वत्थकदम्बशालंजम्बूवटोदुम्बरवेतसैश्च। प्रक्षालनालेपकृतानिकुर्य्याच्चूर्णं सपित्तास्रभवोपदंशे ॥ त्वचोदारुहरिद्रायाःशङ्खनाभिरसाञ्जनम्। लाक्षागोमयनिर्यासस्तैलंक्षौद्रंघृतंपयः ॥ एभिस्तुपिष्टैस्तुल्यांशैरुपदंशंप्रलेपयेत्। व्रणाश्चतेनशाम्यन्तिश्वयथुर्दाहएवच ॥ ४८५ ॥

शाल अजकर्ण (शालभेद) गजहड़ बच औ दालचीनी इनको सुरामें पीसकर तेलमिलाय के कफज उपदंश में गरमलेपकरै आरग्वधादि गणके काढ़े के द्वारा कफज उपदंश में तरारादेवै नीम अर्जुन पीपल कदंब शाल जामुन बर्गद गूलर औ बेत इनके द्वारा पित्त सहित रक्तज उपदंश में लेप और तरारा देनाचाहिये दारुहल्दी की छाल शंखकी नाभि रसौत लाख गोबर कारस तेल घी शहत औ दूध इनके द्वारा उपदंश में लेपकरने से व्रण शोथ औदाहका नाश होताहै ॥ ४८५ ॥

उपदंशद्वयेशेषेप्रत्याख्यायाचरेत्क्रियाम्। एतेषामेवयायोग्यावीक्ष्यदोषबलाबलम्॥ शस्त्रेणोल्लेखयेत्क्वापिपाकमागतमाशुवै। तमपोह्यतिलैःसर्प्पिःक्षौद्रयुक्तैःप्रलेपयेत् ॥ वटप्ररोहार्जुनजम्बुपथ्यालोध्रंहरिद्राचहिताप्रलेपे। तथोपदंशेष्ववरोहणार्थञ्चूर्णञ्च कार्य्यंविमलाञ्जनेन॥ त्रिफलायाःकषायेणभृङ्गराजरसेनवा। व्रणप्रक्षालनंकार्य्यमुपदंशप्रशान्तये ॥ जयाजपाश्वमारार्कशम्पाकानान्दलैःक्रमात्। कृतंप्रक्षालनंक्वाथंमेढ्रपाकेप्रयोजयेत् ॥ शम्पाकनिम्बत्रिफलाकिरातक्वाथंपिवेद्वाखदिरासनाभ्याम्। सगुग्गुलुंवात्रिफलायुतंवासर्वोपदंशापहरःप्रयोगः ॥ नीलोत्पलानिकुमुदंपद्मसौगन्धकानिच। उपदंशेषुचूर्णानिप्रदेहोऽयंप्रशस्यते ॥ बन्धूकदलचूर्णेनदाडिमत्वग्रजोऽथवा। गुण्डनंत्रृषणेश

स्तंलेपःपूगफलेनवा ॥ सौराष्ट्रीगैरिकंतुत्थंपुष्पकासीससैन्धवम् । लोध्रंरसाञ्जनञ्चापि हरितालंमनःशिला ॥ हरेणुकैलेपितथासमंसंहृत्यचूर्णयेत् । तच्चूर्णंक्षौद्रसंयुक्तमुपदंशेषु पूजितम् ॥ पुटदग्धंकृतंभस्महरीतालंमनःशिला॥उपदंशविसर्पाणामेतद्धानिकरपरम् । दहेत्कटाहेत्रिफलांतामसींमधुसैन्धवम् । उपदंशेप्रलेपोऽयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥ तिरीटाञ्जनवत्राक्षकोविदारेभकेशरैः । लेपनंपुरुषव्याधौजलपिष्टैःप्रशस्यते ॥ रसाञ्जनंशिरीषेणपथ्ययावासमन्वितम् । सक्षौद्रंलेपनंयोज्यंसर्वाङ्गगद्दापहम् ४८६ ॥

बाकीदो उपदंशों में प्रत्याख्यान करके (असाध्य कहकरके) बलाबलको देखके यथायोग्य चिकित्सा करै उपदंशके पक जानेपर शस्त्रके द्वारा पीप निकालकर तिल घी तथा शहत का लेपलगावे नर्गद कीजटा अर्जुन जामुन हड़ लोध तथा हल्दी इनकालेप उपदंशमें हितहै उपदंशके घावकेभरनेके लिये बिम्लांजनका चूर्ण लगावे त्रिफला के काढ़ेसे अथवा भंगरे के रससे धोनेसे उपदंशनष्टहोताहै अरणी चमेली कनैर आक और अमलतास इनके पत्तोंके काढ़ेके द्वारा धोनेसे लिंगका पकना अच्छा होजाताहै अमलतास नीमत्रिफला तथा चिरायताइनके काढ़ेके पीनेसे अथवा शालतथा कत्थेकेकाढ़ेमें गूगल और त्रिफलाका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सबप्रकार के उपदंश नष्टहोतेहैं नीलोत्पल कोकाबेली कमल सफेद कमल इनके चूर्णका लेप उपदंश में श्रेठहै दुपहरिया के पत्तों केचूर्णसे अनारकी छालके चूर्णसे उपदंश में गुंडन (बुरकाना)श्रेष्ठहै और सुपारी कालेप उपदंश में हितहै सोरठी मिट्टी गेरू तूतिया पीला कसीस सेंधानोन लोध रसौत हरताल मैनसिलरेणुका तथा इलायची इनसबका चूर्ण शहतमें मिलाकर सेवनकरनेसे उपदंश नष्टहोताहै हरताल और मैनसिलको पुटपाक में भस्मकरके सेवनकरने से उपदंश और बीसर्पका नाशहोताहै त्रिफला को कराहमें जलाकर शहत औ सेंधानोन मिलाकर लेपकरने से शीघ्रही उपदंश के घावभरजाते हैं लोध रसौत आंवला बहेड़ा कचनार और नागकेसर इनको पानी में पीसकर उपदंश में लेपकरनी चाहिये रसौतको सिरसा अथवा हड़के साथ शहत में मिलाकर लेपकरने से सब अंगके रोग नष्टहोतेहैं ॥ ४८६ ॥

भार्ङ्गीसंभवशिखरिजमूलंभद्रश्रियःसुसम्पिष्टम् । मनसःशिलाचमधुनाशमयत्युपदंशमचिरेण॥शतधौतंप्रयत्नेनलिङ्गोत्थमवचूर्णयेत्॥रोगंकासीसचूर्णेनपुरुषःसुखमाप्नुयात्॥ करवीरस्यमूलेनपरिपिष्टेनवारिणा॥ असाध्यापिव्रजत्यस्तंलिंगोत्थारुक्प्रलेपानात् ४८७

भारंगीकी जड़ लटजीरेकी जड़ चन्दन तथा मैनसिल इनसबको पीसकर शहत में मिलाय के लेप करने से शीघ्रही उपदंश नष्टहोताहै सौबार धोयेभये कसीसके चूर्णको बुरकाने से उपदंश अच्छा होताहै कनैरकी जड़ को पानीमें पीसकर लेपकरनेसे असाध्यलिंग कीपीडाभी नष्टहोती है ॥ ४८७॥

वारानिम्बार्जुनाश्वत्थखदिरासनवासकैः । चूर्णितैर्गुग्गुलुसमैर्वटकानक्षसम्मितान् ॥ कर्त्तव्यानाशयन्त्याशुसर्वान्लिंगसमुत्थितान् । उपदंशानसृग्दोषान्तथादुष्टव्रणानपि वरादि गुग्गुलुः ॥ ४८८ ॥

त्रिफला नीम अर्जुन पीपल कत्था बिजयसार और बांसा इनसब के चूर्ण का समभाग गूगलमिलाकर गोले २ भरकी गोली बांधै इसकेखाने से लिंगमें भये सम्पूर्णरोग उपदंश रक्तदोष औदुष्टव्रणों का नाशहोता है इति बरादि गुग्गुलु ॥ ४८८ ॥

करञ्जनिम्बासनशालजम्बूबटादिभिःकल्ककषायसिद्धम्। सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं सदाहपाकस्रुतिरागयुक्तम्। इतिकरञ्जाद्यंघृतम्॥ ४८९॥

करंजुआ नीम अर्जुन शाल जामुन तथा बर्गद आदि के काढ़े औ कल्कके द्वारा पाक कियाभया घी सेवन करनेसे दाह पाक तथा स्राव युक्त उपदंशको नाशकरताहै इतिकरञ्जादिघृत ४८९॥

भूनिम्बनिम्बत्रिफलापटोलकरञ्जधात्रीखदिरासनानाम्। सतोयकल्कैर्घृतमाशुपक्वं वोपदंशापहरंप्रदिष्टम्॥ इतिभूनिम्बाद्यंघृतम्॥ ४९०॥

चिरायता नीम त्रिफला परवल करंजुवाआमलाकत्था औ बिजयसार इनके कल्कके द्वारा जलके साथपाक किया भया घी सब प्रकार के उपदंश को नष्ट करताहै इति भूनिम्बाद्य घृत॥ ४९०॥

घृतानियानिवक्ष्यामिकुष्ठनाड़ीव्रणेव्रणे। उपदंशेप्रयोज्यानिसेकाभ्यञ्जनभोजनैः४९१॥

कुष्ठ नाड़ीव्रण और व्रण रोगमें जो सम्पूर्ण घृत कहेगयेहैं वो सब उपदंश में भी परिषेक अभ्यंग और भोजन के द्वारा हितहैं॥ ४९१॥

आगारधूमोरजनीसुराकिट्टंचतैस्त्रिभिः। यथोत्तरैःपचेत्तैलंकण्डूशोथरुजापहम्॥ शोधनंरोपणञ्चैवउपदंशहरंपरम्॥आगारधूमाद्यंतैलम्॥ ४९२॥

गृहधूम एकभाग हल्दी दोभाग और सुराकिट्ट तीनभाग इनके द्वारा पाककियाभयातेल खुजली शोथ पीड़ा तथा उपदंशको नष्ट करताहै और घावको शुद्ध करके भरताहै इति आगारधूमाद्य तेल॥४९२॥

गोजीविड़ंगयष्टीभिःसर्वगन्धैश्चसंयुतम्। एतत्सर्वोपदंशेषुतैलंरोपणमिष्यते॥ इतिगोजीतैलम्॥ ४९३॥

गोजी वायबिड़ंग मुलेठी और सम्पूर्ण सुगन्धित बस्तु इनके द्वारा पाककिया भया तेल सम्पूर्ण उपदंशके घावोंको भरताहै इति गोजी तैल॥ ४९३॥

जम्बूबेतसपत्राणिधात्रीपत्रंतथैवच। नक्तमालस्यपत्राणितद्वत्पद्मोत्पलानिच॥ एलाचातिविषाम्रास्थिमधुकञ्चप्रियंगवः। लाक्षाकालीयकंलोध्रंचन्दनंत्रिवृताह्वया॥ एतान्येकीकृतान्येववस्तमूत्रेणपेषयेत्। अक्षमात्रैरिमैर्द्रव्यैस्तैलप्रस्थविपाचयेत्॥ सर्वव्रणहरंतैलमेतत्सिद्धंविपाचितम्। उपदंशहरंश्रेष्ठमुनिभिःपरिकीर्तितम्॥ जंम्बाद्यंतैलम्॥ ४९४॥

जामुन बेंत आंवला तथा करंजुवा इनके पत्ते कमल उत्पल इलायची अतीस आमकी बिजली मुलेठी प्रियंगु लाख पीत चन्दन लोध चन्दन तथा निसोत इनसब औषधों को तोले२भरलेकर बकरे के मूत्रमें पीसै फिर इनके द्वारा६४ तेलको पाककरै यहतेल सम्पूर्ण व्रण और उपदंश को नष्ट करता है इति जम्बाद्य तेल॥ ४९४॥

यस्यालिंगस्यमांसन्तुशीर्य्यतेमुष्कशेषतः। तिक्तकोशातकीलम्बाबीजंनागरसाधितम्॥ तैलंहन्त्यविशेषेणव्रणंदुष्टमनेकधा। इतिकोशातकीतैलम्॥ ४९५॥

कड़ूतोरई लौकीके बीज तथा सोंठ के द्वारा पाककिया भया तेल अनेक प्रकार दुष्ट भये व्रणको भी नष्ट करताहै इति कोशातकी तैल॥ ४९५॥

सेवेन्नित्यंयवान्नञ्चपानीयंकौपमेवच। अर्शसांछिन्नदग्धानांक्रियाञ्चात्रप्रयोजयेत् ॥ इतिउपदंशनिदानाचिकित्साधिकारः ॥ ४९६ ॥

उपदंश वाला जौंके बनेभये पदार्थ खाय और कुवेंका जल पिये उपदंश में काटेभये तथा जलाये भये बवासीर कीसी चिकित्सा करे इति उपदंश निदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ४९६ ॥

अथ लिंगार्शोपक्रमः ॥

अंकुरैरिवसञ्जातैरुपर्य्युपरिसंस्थितैः। क्रमेणजायतेवर्त्तिस्ताम्रचूड़शिखोपमा ॥ कोशस्याभ्यन्तरेसन्धौपर्व्वसन्धिगतापिवा। लिङ्गवर्तिरितिस्यातालिङ्गार्शइतिचापरे॥ सवेदनापिच्छिलाचदुश्चिकित्स्यात्रिदोषजा। क्षारेणप्रदहेच्छित्वालिङ्गवर्त्तिमशेषतः॥ व्रणवच्चाचरेत्सम्यक्समंचूर्णमुपद्रवान् । स्वर्जिकातुत्थशैलेयमञ्जनंसरसाञ्जनम् ॥ मनःशिलालेचसमंचूर्णंमांसांकुरापहम्। हरातिघृतकुमारीपत्रमावेष्टनेनग्रथनविधिविशेषांश्चर्म्मकीलांस्तृतीये ॥ अहनिगुरुतराण्यंगलब्धंप्रतिष्ठान्विधिरिवविपरीतःपौरुषस्यप्रकारान्। शुभेतुचारटीमूलंवृषमूत्रेणपेषयेत् । चर्म्मकीलान्निहन्त्याशुप्रलेपात्साधनोद्भवाम्। इतिलिंगार्शसांउपक्रमः ॥ ४९७ ॥

लिंगार्शका उपक्रम ॥

अंडकोशों के भीतर सन्धिमें अथवा बंक्षणकी सन्धिमें एक एकके ऊपर स्थित कुक्कुटकी शिखा के समान आकृतिवाले उत्पन्नभये मांसके अंकुरोंको लिंगवर्ति अथवा लिङ्गार्श कहतेहैं यहपीड़ा सहित पिच्छिल सन्निपातसे उत्पन्नभये अत्यन्त दुःसाध्य होतेहैं लिंगार्शको बिलकुल काटकर क्षारके द्वारा जलावै फिर ब्रणकेतुल्य सब चिकित्साकरै सज्जी तूतिया सिलाजीत सुरमा रसौत मैनशिल और हरताल इनसबका चूर्ण लिंगार्शको नष्टकरताहै घीकुवारके पत्तोंके लपेटनेसे तीसरेदिन बहुतभारी भी चर्म्मकील नष्टहोते हैं जैसे बिपरीत भाग्यहोनेसे पुरुषार्थ नष्टहोतेहैं पद्माककी जड़को शुभदिन बैल के मूतमें पीसकर लेप करनेसे लिंगमें भये चर्म्मकीलोंका नाशहोताहै इति लिंगार्शोपक्रम ४९७ ॥

अथ शूकदोषाधिकारः। तत्र शूकदोषस्यनिदानमाह ॥

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिंयोऽभिवाञ्छतिमूढधीः। व्याधयस्तस्यजायन्तेदशचाष्टौचशूकजाः ॥ अक्रमात्अनुचितवृद्धिक्रमात् । अनुचिताचवृद्धिंभूरिविकारजनकस्ययोगेन शूकजाः। शूकोजलशूकः। सविषोजलजन्तुविशेषःसतुजलमलोद्भवः । अलपडुण्डुभ इत्यादिकः। तथाशूकप्रधानोलिंगवृद्धिकरोवात्स्यायनाद्युक्तोयोगःशूकउच्यते। यथा॥ भल्लातकास्थिजलशूकमथाब्जपत्रमन्तर्विदाह्यमतिमान्सहसैन्धवेन । एतद्विरूढबृहतीफलतोयपिष्टमालेपितंमहिषविड्विमलीकृतेऽङ्गे ॥ स्थूलंमहद्भरतुरङ्गमलिङ्गतुल्यंशेफः करोत्यभिमतंनहिसंशयोऽत्रेत्यादि। यत्तुजलशूकरहितमश्वगन्धादितैलंतदुचितमेवलिंगवर्द्धनम् ॥ यथाअश्वगन्धावरीकुष्ठंमांसीसिंहीफलान्वितम्। चतुर्गुणेनदुग्धेनतिलतैलंविपाचयेत्॥तत्तैलंमेढ्रवक्षोजकर्णपालिविवर्द्धनम्। शूकदोषादशचाष्टौचभवन्ति ४९८

शूकदोषका अधिकार शूकदोषका निदान॥

जो मूर्ख क्रम के बिना अत्यन्त बिकार कारीजल शूकादि सामग्री के द्वारा लिंगकी बृद्धि चाहताहै उसके अठारह प्रकारका शूक दोष नामरोग उत्पन्न होताहै शूक दुमुहे निर्विष सर्पको कहतेहैं और शूक है प्रधान जिसमें ऐसे लिंगके बढ़ाने बाले वात्स्यायनादि के कहेभये योगको भी शूक कहतेहैं जैसे भिलावें के बीज जलशूक और कमलके पत्ते इनसबको बन्द करके जलावै फिर सैंधानोन मिलाय के पकेभये भटकटैयाके फलके रसमें पीसै फिर भैंसेके गोबरसे लिंगको धोकर इसको लेपकरे इसकेद्वारा निस्सन्देह घोड़ेके लिंगके तुल्य स्थूल औ बड़ालिंग होजाताहै और जोकि जलशूक रहित अश्वगंधादि तैल आदिक लिंगके बढ़ाने की औषधि कहीगई हैं वे उचितही हैं जैसे असगंध सतावर कूट जटामांसी और भटकटैया के फल इनके द्वारा चौगुने दूधके साथ पाककिया भया तिलोंका तेल लिंग छाती ओज और कर्ण पालीको बढ़ाताहै॥ ४९८॥

तेष्वादौसर्षपिकामाह॥

गौरसर्षपसंस्थानाशूकदुर्भगहेतुका। पिड़िकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेयासर्षपिकातुसा॥ शूकदुर्भगहेतुकाशूकदुष्टयोनिनिमित्ताच॥ ४९९॥

उनमें से सर्षपिका का लक्षण॥

शूकके द्वारा अथवा दूषित योनिमें गमन के द्वारा श्वेत सरसोंके समान कफ बात से जो पिड़िका होती है उसे सर्षपिका कहतेहैं॥ ४९९॥

अथाष्ठीलिकामाह॥

कठिनाविषमैर्भुग्नैर्वायुनाष्ठीलिकाभवेत्। अष्ठीलालौहकारस्यभाण्डविशेषःनिहार इतिलोके॥ ततःकठिनेत्यष्ठीलिकाविषमैर्भुग्नैरितिवक्ष्यमाणशूकविशेषणम्। विषमैर्ह्रस्वदीर्घैः। भुग्नैःवक्रैः॥ ५००॥

अष्ठीलिका का लक्षण॥

निहाईकेसमान कठिन छोटी बड़ी तथा टेढ़ो पिड़िकाको अष्ठीलिका कहतेहैं यह वायुसे होती है ५००॥

ग्रन्थितमाह॥

शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्ग्रथितंनामतत्कफात्। यल्लिंगंसदाशूकैःपूरितंतद्ग्रथितत्वात्तद्ग्रन्थितम्॥ ५०१॥

ग्रथित का लक्षण॥

लिंगमें शूकोंसे पूरित जो शूक दोष होताहै उसे ग्रथित कहतेहैं यह कफज होताहै॥ ५०१॥

कुम्भिका माह॥

कुम्भिकारक्तपित्तात्स्याज्जाम्बवास्थिनिभासिता॥कुम्भिकाकुम्भीफलतुल्यत्वात् ५०२॥

कुंभिका का लक्षण॥

लिंगमें रक्तपित्त से जामुन की गुठली के समान जो श्वेत पिड़िका उसे कुंभिका कहते हैं॥५०२॥

अलजी माह॥

अलजीस्यात्तथायादृक्प्रमेहपिड़िकातथा। साचरक्ताऽसितास्फोटाचिताचकथिताबुधैः। एषारक्तपित्तनिमित्ताज्ञेया॥ ५०३॥

अलजी का लक्षण ॥

अलजी नामक प्रमेह पिड़िका के समान लिंगमें रक्तपित्त से जो पिड़िका होती है उसे अलजी कहते हैं इसमें लाल तथा काली फुन्सियां होती हैं ॥ ५०३ ॥

मृदित माह ॥

मृदितंपीड़ितंयत्तुसंरब्धंवातकोपतः । शूकदोषेजातेपीड़ितंसद्यत्संरब्धम्सशोथंभवतितल्लिंगंमृदितमुच्यते ॥ ५०४ ॥

मृदित का लक्षण ॥

शूक दोष होनेपर दबने से लिंगमें जो शोथ उत्पन्न होताहै उसे मृदित कहते हैं यह बायुके कोप से होता है ॥ ५०४ ॥

संमूढ़पिड़िका माह ॥

पाणिभ्यांभृशसंपृष्टेसंमूढ़पिड़िकाभवेत् । शूकदोषेजातेपाणिभ्यांभृशसंमूढ़ेपिंशितेलिंगे ॥ अत्रापिवातकोपतइत्यनुवर्त्तते ॥ ५०५ ॥

सम्मूढ़ पिड़िका का लक्षण ॥

शूकदोषके उत्पन्न होनेपर हाथों से बहुत रगड़नेके कारण जो लिंग पिच्चित होजाताहै इसे सम्मूढ़ पिड़िका कहते हैं यह बायुके कोप से होती है ॥ ५०५ ॥

अथाव मन्थमाह ॥

दीर्घावक्र्यश्चपिड़िकादीर्य्यंतेमध्यतस्तुयाः । सोऽवमन्थःकफासृग्भ्यांवेदनारोमहर्षकृत् । दीर्घादीर्घांकुराः ॥ ५०६ ॥

अधिमंथ का लक्षण ॥

लिंगमें दीर्घ अंकुर वाली बीचमें फटीभई पीड़ा तथा रोमहर्ष युक्त जो पिड़िका होतीहै उसे अधिमन्थ कहते हैं यह कफ और रुधिरसे होती है ॥ ५०६ ॥

पुष्करिकामाह ॥

पिड़िकापिड़िकाव्याप्तापित्तशोणितसम्भवा।पद्मकर्णिकसंस्थानाज्ञेयापुष्करिकेतिसा ॥ पिड़िकाव्याप्तापार्श्वतःक्षुद्रपिड़िकाव्याप्ता । अतएवपद्मकर्णिकसंस्थाना ॥ ५०७ ॥

पुष्करिका का लक्षण ॥

लिंगमें किनारे पर छोटी २ पिड़िकाओं से युक्त इसीसे कमलकी कलीके समान आकृतिवाली जो पिड़िका होतीहै उसे पुष्करिका कहतेहैं यह पित्त और रुधिर से होती है ॥ ५०७॥

स्पर्शहानिमाह ॥

स्पर्शहानिंतुजनयेच्छोणितंशूकदूषितम् । अत्रस्पर्शासहत्वमेवलक्षणम् ॥ ५०८ ॥

स्पर्शहानि का लक्षण ॥

शूकके द्वारा रुधिर दोषयुक्त होकर लिङ्गमें जो स्पर्श नसहाजाय उसे स्पर्श हानि कहतेहैं ॥५०८॥

उत्तमामाह ॥

मुद्गमाषोपमारक्तारक्तपित्तोद्भवाचया । एषोत्तमाख्यपिड़िकाशूकाजीर्णसमुद्भवा ॥५०९॥

उत्तमाका लक्षण ॥

बहुत शूक तेल लगानेसे उत्पन्नभई रक्तवर्णवाली मूंग अथवा उर्द के समान आकृतिवाली पिड़िका को उत्तमा कहतेहैं यह रक्तपित्तसे होतीहै ॥ ५०९ ॥

शतपोनक माह ॥

छिद्रैरणुमुखैर्लिंगंचिरयस्यसमन्ततः । वातशोणितजोव्याधिःविज्ञेयःशतपोनकः ॥ शतपोनकश्चालनीतत्तुल्यत्वाच्छतपोनकः ॥ ५१० ॥

शतपोनक का लक्षण ॥

छोटे छिद्रोंके द्वारा चलनी के समान लिङ्गके व्याप्त होनेको शतपोनक कहते हैं यह बात रक्त से होतीहै ॥ ५१० ॥

त्वक्पाकमाह ॥

वातपित्तकृतोज्ञेयस्त्वक्पाकोज्वरदाहकृत् ॥ ५११ ॥

त्वक्पाक का लक्षण ॥

बात पित्तके द्वारा त्वक्पाक नाम शूक दोष होताहै इसमें ज्वर और दाह होताहै ॥ ५११ ॥

शोणितार्वुद माह ॥

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिड़िकाभिर्निपीड़ितम् । लिंगंवास्तुरुजश्चोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्वुदम् । वास्तुरुजःस्फोटपिड़िकाधिष्ठानवेदनाः ॥ ५१२ ॥

शोणितार्बुद कालक्षण ॥

लिङ्गमें कृष्णवर्ण फोड़े और लाल पिड़िका ये जो होतीहैं उन्हे शोणितार्बुद कहते हैं इसमें बहुत पीड़ा होतीहै ॥ ५१२ ॥

अथ मांसार्वुदमाह ॥

मांसदुष्टंविजानीयादर्वुदंमांससम्भवम् ॥ ५१३ ॥

मांसार्बुद का लक्षण ॥

लिंगमें मांस दूषित होकर उत्पन्न भये अर्बुदको मांसार्बुद कहते हैं ॥ ५१३ ॥

मांसपाकमाह ॥

शीर्य्यन्तेयस्यमांसानियस्यसर्वाश्चवेदनाः । विद्यात्तंमांसपाकन्तुसर्वदोषकृतंभिषक् ॥ शीर्य्यन्तेगलन्तिसर्वाश्चवेदनाःवातपित्तकफजाः ॥ ५१४ ॥

मांसपाकका लक्षण ॥

जो लिंगका मांस गलजाय और बात पित्त तथा कफकी सम्पूर्ण पीड़ायेंहों तो उसे मांसपाक कहतेहैं यह तीनों दोषोंसे होता है ॥ ५१४ ॥

अथ विद्रधिमाह ॥

विद्रधिःसन्निपातेनयथोक्तमभिनिर्दिशेत । उक्तसन्निपातिकंविद्रधितुल्यंकथयेत् ॥ ५१५ ॥

विद्रधिका लक्षण ॥

कहीहुई सन्निपातज बिद्राधिके समान लिंगमें भयेरोगको बिद्रधि कहते हैं ॥ ५१५ ॥

तिलकालकानाह ॥

कृष्णानिचित्राण्यथवाशुक्लानिसविषाणितु । पतन्तिपातयंत्याशुमेढ्रंनिरवशेषतः ॥

कालानिभूत्वामांसानिशीर्य्यंतेयस्यदेहिनः । सन्निपातसमुत्थांश्चतान्विद्यात्तिलकालकान् ॥ चित्राणिनानावर्णानि । शुक्कानिशुक्कवर्णानि । मञ्चाःक्रोशंतीतिवत् । सविषाणिसविषशूकाख्यजन्तुविशेषकृतत्वात् । शीर्य्यन्तेगलन्ति । कृष्णतिलतुल्यत्वात्तिलकालकाः ॥ ५१६ ॥

तिलकालकका लक्षण ॥

सविशशूकतैलके प्रयोग से उत्पन्न भयीं काली सफेद अथवा विचित्र वर्णवाली काले तिलों के समान फुन्सियां पककर सम्पूर्ण लिंगको पकादेतीहैं और मांस कालाहोकर गलजाताहै इससन्निपात से भयेरोगको तिलकालक कहते हैं ॥ ५१६ ॥

अथासाध्यमाह ॥

सत्रमांसार्वुदंयच्चमांसपाकश्चयःस्मृतः।विद्रधिश्चनासिध्यन्तियेचस्युस्तिलकालकाः ५१७

असाध्य लक्षण ॥

शूकदोषों मेंसे मांसार्बुद मांसपाक बिद्रधि और तिलकालक असाध्यहैं ॥ ५१७॥

शूकदोषस्य चिकित्सा ॥

शूकदोषेषुसर्वेषुबिषघ्नींकारयेत्क्रियाम् । जलौकाभिर्हरेद्रक्तंरेचनंलघुभोजयेत् ॥ गुग्गुलुंपाययेच्चापित्रिफलाक्काथसंयुतम् । क्षीरेणलेपसेकांश्चशीतेनैवहिकारयेत् ५१८ ॥

शूकदोषकी चिकित्सा ॥

सम्पूर्ण शूकदोषोंमें विषघ्न चिकित्सा करै जोंकोंके द्वारा रुधिर निकलवावै विरेचन करवावै और हलका भोजन देय त्रिफलाके काढ़ेमें गूगुल डालकर पियावै और शीतल दूधके द्वारा लेप तथा परिषेक करै ॥ ५१८ ॥

दार्वीसुरसयष्ट्याह्वैर्गृहधूमनिशायुतैः । सम्पक्वंतैलमभ्यङ्गान्मेढ्ररोगंहिनाशयेत् ॥ इतिदार्वीतैलम् ॥ ५१९ ॥

दारुहल्दी तुलसी मुलेठी गृहधूम और हल्दी इनके द्वारा पाक कियाभया तेल लगानेसे लिंग के रोगोंको नष्ट करताहै इति दार्वी तैल ॥ ५१९ ॥

रसांजनंसाङ्कयमेकमेवप्रलेपमात्रेणनयेत्प्रशान्तिम्।सपूतिपूयव्रणशोथकण्डूशूलान्वितंसर्वमनंगरोगम् ॥ साङ्कयमित्यनंगरोगस्यविशेषणम्अनंगरोगस्यनामापिदूरीकरोतीत्यर्थः । इतिशूकदोषनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ५२० ॥

केवल रसौतही लेपकरनेसे दुर्गन्धित पीप व्रण शोथ खुजली तथा शूलयुक्त सबप्रकारके लिंगके रोगोंको नष्टकरताहै इति शूकदोष निदान चिकित्सा ऽधिकार समाप्त ॥ ५२० ॥

अथ कुष्ठाधिकारः ॥

विरोधीन्यन्नपानानिद्रवस्निग्धगुरूणिच। भजतामागताञ्छर्दिंवेगांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् ॥ व्यायाममग्नितापञ्चाप्यतिमुक्त्वानिषेविणाम् । शीतोष्णलङ्घनाहारान्क्रमंत्यक्त्वानिषेविणाम् ॥ घर्म्मश्रमभयार्तानांद्रुतंशीताम्बुसेविनाम् । अजीर्णाध्याशिनांचापिपञ्चकर्म्मापचारिणाम् ॥ नवान्नदधिमत्स्यादिलवणाम्लनिषेविणाम् । माषमूलक

पिष्टान्नतिलक्षीरगुड़ाशिनाम् ॥ व्यवायंचाप्यजीर्णेऽन्नेदिवानिद्रांनिषेविणाम् ॥ विप्रान्गुरून्धर्षयतांपापंकर्म्मचकुर्वताम् । वातादयस्त्रयोदोषास्त्वग्रक्तंमांसमम्बुच ॥ दूषयन्तिसकुष्ठानांसप्तकोद्रव्यसंग्रहः । अतःकुष्ठानिजायन्तेसप्तधैकादशैवच ॥ विरोधीन्यन्नपानानिक्षीरमत्स्यादीनिदधिदुग्धादीनि । व्यायाममित्यादि । अतिभुक्त्वाव्यायामम् । अग्निसन्तापम् । अग्निरूपलक्षणंसूर्य्यादिसन्तापञ्चनिषेविणामिति ॥ कृदन्तस्ययोगेषष्ठीप्राप्ताद्वितीयातुमुनिवचनात् । एवमग्रेऽपिशीतोष्णंलङ्घनाहारानित्यादिष्वपिद्वितीया ॥ अत्रक्रमंविधिंघर्मेत्यादि । घर्म्मार्त्तत्वेसतिद्रुतमविश्रम्यपानेस्नानेशीताम्बुसेविनाम् । अजीर्णाध्याशिनांभुक्तेऽजीर्णेभुक्तानाम् । पञ्चकर्म्मापचारिणांपञ्चकर्म्माणिवमनविरेकनस्यनिरूहानुवासनानितेषुकृतेषुअपचारिणाम् । नवान्नदधिमत्स्यादिआहारादिसेविनाम् । व्यवायमित्यादि । अन्नेअजीर्णेविदग्धादिरूपेसति । व्यवायंमैथुनंनिषेविणाम् । दिवानिद्रानिषेविणामितिभिन्नोहेतुः । धर्षयताम् । दोषदूष्यसंग्रहार्थमाह । वातादयइत्यादिशब्देनत्रिष्वपिप्रतीतेषु । त्रयइतिपदंसर्वेषुकुष्ठेषुत्रयाणामपिवातादीनांदुष्टत्वबोधनार्थम् । त्वक्रसअम्बुलसीका । अथसंख्यामाह । अतःकुष्ठानामित्यादि । अतःपूर्वोक्तदोषदूष्यसमुदायात् । सप्तधैकादशधेतिसंख्याविच्छेदपाठेनसप्तानांमहाकुष्ठत्वमेकादशानांक्षुद्रकुष्ठत्वंबोधयति ॥ ५२१ ॥

कुष्ठका अधिकार ॥

बिरुद्ध अन्नपान और बहुत पतली स्निग्ध तथा भारी बस्तुओंके सेवन करने वालोंके उठे भये बमन के बेगों को तथा अन्य बेगों को रोकने वालोंके बहुत भोजन करके व्यायाम आंच तथा धूप आदिको सेवनकरने वालों के शति उष्ण लंघन तथा आहार को बिधिपूर्बक सेवन न करनेवालों के धूपश्रम तथा भयसे व्याकुल होकर शीघ्रही स्नान पानके द्वारा शीतलजलको सेवन करनेवालों के अजीर्णमें भोजन करनेवालों के बमन बिरेचन नस्य निरूह वस्ति तथा अनुवासन बस्तिके अंतमें कुपथ्य करने वालों के नवीन अन्न दही मछली लवण खटाई उरद मूली पीठी तिल दूध तथा गुड़ आदिको बहुत खाने वालों के अजीर्ण में मैथुनकरनेवालों के दिन में सोनेवालों के ब्राह्मण तथा गुरुओंका अनादर करनेवालों के और पापकरने वालों के वातादिक तीनोंदोष एकसाथही कुपित होकर रक्त मांसत्वचा तथालसीका कोदूषित करके कुष्ठको उत्पन्न करतेहैं बातपित्त कफ त्वचा रुधिर मांस और लसीका इनसे कुष्ठ अठारह प्रकार के होतेहैं उनमें से सात महाकुष्ठ और ग्यारह क्षुद्र कुष्ठहोतेहैं ॥५२१ ॥

तत्र महाकुष्ठान्याह ॥

पूर्वंत्रिकंतथासिध्मततःकाकणकंतथा । पुण्डरीकर्क्षजिह्वाकेमहाकुष्ठानिसप्तच ॥ पूर्वत्रिकंकपालौदुम्बरमण्डलाख्यम् । सिध्मशब्दोऽकारान्तोनपुंसकः ॥ ननुकथंसिध्मस्यमहाकुष्ठेषुगणनासुश्रुतेनक्षुद्रकुष्ठेषुउक्तत्वात् । धातुप्रविष्टंसिध्मंतुस्यान्महाकुष्ठमेवच ॥ एवंविधस्यसिध्मस्यचरकेणमहाकुष्ठेषुदर्शितत्वात् । एषांमहाकुष्ठत्वञ्चशीघ्रमुत्तरोत्तरधात्ववगाहनात् । उल्बणदोषजन्यत्वात्चिकित्साबाहुल्याच्च ॥ ५२२ ॥

महा कुष्ठोंका वर्णन ॥

कापाल उदुम्बर मंडल सिध्म काकणक पुंडरीक और ऋक्षजिह्व ये सात महाकुष्ठ हैं अबयह सन्देह होताहै किसुश्रुतमें सिध्मक्षुद्रकुष्ठोंमें कहागयाहै इसकीगणना महाकुष्ठोंमें क्योंकिथी इसका उत्तर यहहै कि धातुवोंमें प्रविष्ट भया सिध्म महाकुष्ठ कहलाताहै इसप्रकार चरकने सिध्मको महा कुष्ठोंमें कहा है और इनका महा कुष्ठत्व शीघ्रही उत्तरोत्तर धातुवों में प्रविष्ट होनेसे बहुत बढ़े भये दोषोंके द्वारा उत्पन्न होने से और चिकित्साकी बहुतायतसे होताहै ॥ ५२२ ॥

अथ क्षुद्र कुष्ठान्याह ॥

एककुष्ठंस्मृतंपूर्वंगजचर्म्मततःस्मृतम्। ततश्चर्मदलंप्रोक्तंततश्चापिविचर्चिका ॥ विपादिकाभिधासैवपामाकच्छूस्ततपरम्। दद्रुबिस्फोटकिटिभालसकानिचवेष्टितम् ॥ क्षुद्रकुष्ठानिचैतानिकथितानिभिषग्वरैः ॥ ननुदद्रोःकथंक्षुद्रकुष्ठेषुगणना। सुश्रुतेनमहा कुष्ठेषूक्तत्वात् ॥ उच्यतेऽसितावगाढ़मूलादद्रुःसुश्रुतेनमहाकुष्ठेषूक्ता। असितेतरा नवगाढ़मूलादद्रुःक्षुद्रकुष्ठमेव ॥ एवंविधायदद्रुश्चरकेणक्षुद्रकुष्ठमेव। एवंविधायदद्रुःक्षुद्र कुष्ठेषुदर्शितत्वात् ॥ ५२३ ॥

क्षुद्रकुष्ठोंका वर्णन ॥

एककुष्ठ गजचर्म्म चर्म्मदल विचर्च्चिका विपादिका पामा कच्छूदद्रु बिस्फोट किटिम और अलसक ये क्षुद्रकुष्ठ हैं अबयह सन्देह होता है कि दद्रुको क्षुद्र कुष्ठों में क्योंकहा क्योंकि इसको सुश्रुत में महाकुष्ठों में कहाहै इसका उत्तर यह है कि सुश्रुत ने काली और गहरी जड़वाली दद्रुको महा कुष्ठों में कहा है और श्वेत तथा उथली दद्रुतो क्षुद्रही कुष्ठ है इसीलिये चरकने दद्रुको क्षुद्र कुष्ठ कहा है ॥ ५२३ ॥

कुष्ठानांत्रिदोषजत्वेनैकत्वापिदोषस्योल्वणतयासप्तधात्वमाह ॥कुष्ठानिसप्तधादोषैःपृथ गद्वन्द्वैःसमागमैः। सर्वेषुचत्रिदोषेषुव्यपदेशोऽधिकस्ततः॥सर्वेष्वपित्रिदोषेषुव्यपदेशःक पालादिसंज्ञास्तेषामष्टादशरूपंयदधिकत्वंततःकुष्ठानिसप्तधाकैःदोषैःकथंभूतैःपृथगद्वन्द्वैः समागतैःसङ्गतैःसंमिलितैरितियावत्। अस्यायमर्थः। किमपिकुष्ठंवातोल्वणंकिमपिपित्तो ल्वणंकिमपिकफोल्वणंकिमपिवात श्लेष्मोल्वणं। किमपिवातपित्तोल्वणं किमपित्रि दोषोल्वणमिति ॥ ५२४ ॥

यद्यपि सम्पूर्ण कुष्ठ सन्निपातज होनेके कारण एकही प्रकारके हैं तथापि दोषोंकी उल्वणतासे सात प्रकारके हैं जैसे वातोल्वण पित्तोल्वण कफोल्वण बातकफोल्वण पित्तकफोल्वण बातपित्तोल्वण और त्रिदोषो ल्वण ॥ ५२४ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

अतिश्लक्ष्णःखरस्पर्शःस्वेदास्वेदविवर्णता।दाहःकण्डूस्त्वचिस्वापस्तोदःकोठोन्नतिः श्रमः ॥ व्रणानामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः। रूढ़ानामतिरूक्षत्वंनिमित्तेऽल्पेऽपि कोपनम् ॥ रोमहर्षोऽसृजःकार्ष्ण्यंकुष्ठलक्षणमग्रजम्। अतिश्लक्ष्णंअतिमृदुः। अथवा घर्म्मादिप्रसङ्गेऽपिस्वेदाभावः। त्वचिःस्वापस्पर्शाज्ञता। शीघ्रोत्पत्तिःव्रणानाम् ५२५ ॥

कुष्टका पूर्व्वरूप ॥

कुष्ठहोनेके पहले त्वचा कोमल खरखरी तथा बिबर्ण होती है स्वेद निकलता है अथवा धूपआदिके लगनेसे भी स्वेद नहीं निकलताहै स्पर्शका ज्ञान नहींहोता दाह खुजली सूजी गड़नेकीसी पीड़ा चकत्ते तथा ग्लानि होतीहैं ब्रणोंकी शीघ्र उत्पत्ति वहुतकाल स्थिति तथा उनमें अत्यन्त पीड़ा होती है व्रणोंके अंकुर अत्यन्त रूखे तथा थोड़े कारण मेंही बढ़नेवाले होते हैं रोमांच होता है और रुधिर काला होजाता है ॥ ५२५ ॥

येनोल्वणेन यत्कुष्ठमुत्पाद्यतेतदाह ॥

बातेनकुष्ठंकापालंपित्तेनौदुम्वरंकफात् । मण्डलाख्यंविचर्चीचऋक्षाख्यंवातपित्ततः ॥ चर्मैककुष्ठकिटिभंसिध्मालसविपादिका । बातश्लेष्मोद्भवाःपित्तकफाद्दद्रुशतारुषी ॥ सपुण्डरीकाविस्फोटपामाचर्म्मदलंतथा । सर्वैरेवोल्वणैर्दोषैराहुःकाकणकंबुधाः ॥ बिचर्चीचकफादित्यन्वयः। पुण्डरीकंसविस्फोटंपामाचर्मदलंतथा॥पित्तकफादित्यन्वयः५२६॥

जिसदोषकी अधिकतासे जो कुष्ठ उत्पन्नहोताहै उसका बर्णन ॥

वातकी अधिकतासे कापाल पित्तसे उदुम्बर कफसे मंडल तथा बिचर्च्चिका वातापित्तसे ऋक्षजिह्व बातकफसे चर्म्म एककुष्ठ किटिम सिध्म अलसक तथा बिपादिका पित्तकफसे दद्रु शतारुषी पुण्डरीक बिस्फोट पामा तथा चर्म्मदल और तीनों दोषोंकी अधिकतासे काकण कुष्ठ उत्पन्नहोताहै ५२६ ॥

अथ महाकुष्ठानांमध्येकपालस्य लक्षणमाह ॥

कृष्णारुणंकपालाभंयद्रूक्षंपरुषंतनु । कपालंतोदबहुलंतत्कुष्ठंबिषमंस्मृतम् ॥ किञ्चित्कृष्णाःकिञ्चिदरुणाःयेकपालाःस्फुटितमृत्पात्रखण्डाःखपराइतियावत्तद्वर्णंपरुषं खरस्पर्शम् । तनुतनुत्वक्कपालम्कपालसंज्ञंविषमंदुश्चिकित्स्यम् ॥ ५२७ ॥

कापाल का लक्षण ॥

कुछकाले तथा कुछलाल ठिकरों के समान वर्णवाला रूखा खरखरा पतलीखालवाला और सूजीगड़ने कीसी वहुत पीड़ावाला कुष्ठ कापाल कहलाताहै यह अत्यन्त दुस्साध्यहै ॥ ५२७ ॥

औदुम्बरमाह ॥

उदुम्बरफलाभासंकुष्ठमौदुम्बरंवदेत् । रुग्दाहरागकण्डूभिःपरीतंरोमपिञ्जरम् ॥ औदुम्बरफलाकारम् ॥ ५२८ ॥

उदुम्बरका लक्षण ॥

पीड़ा दाह रक्तता तथा खुजली युक्त पीले रोमवाले और गूलरके फलके समान वर्णवाले कुष्ठ को उदुम्बर कहतेहैं ॥ ५२८ ॥ मण्डल माह ॥

श्वेतरक्तंस्थिरंस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमण्डलम् । कृच्छ्रमन्योन्यसंसक्तंकुष्ठंमण्डलमुच्यते ॥ श्वेतरक्तंकिञ्चच्छ्वेतंकिञ्चिद्रक्तम् । स्थिरंचिकित्सांविना । अविनाशिस्त्यानंआर्द्रंस्निग्धंसस्वेदम् । उत्सन्नमण्डलम्उद्गतमण्डलम् । कृच्छ्रंकष्टसाध्यम् । अन्योन्यसंसक्तंपरस्परमिलितम् ॥ ५२९ ॥

मंडलका लक्षण ॥

कुछ श्वेत तथा रक्तवर्ण वाले चिकित्साके बिनानहीं जानेवाले गीले स्वेद युक्त उठेमंडल वाले औरपरस्पर मिलेहुये कुष्ठको मंडल कहतेहैं यह कष्ट साध्यहै॥ ५२६ ॥

अथ सिध्ममाह ॥

श्वेताताम्रञ्चतनुयत्रजोघृष्टंविमुञ्चति । प्रायेणोरसितत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥ श्वेतताम्रंश्वेतंताम्रम् । तनुतनुत्वक्।प्रायेणोरसिप्रायशब्दादन्यत्रापिबोद्धव्यम्॥ ५३०॥

सिध्मका लक्षण ॥

लौकी के फूलके समान आकृतिवाले श्वेत तथा रक्त वर्णवाले पतलीखाल वाले औ प्रायःछाती में होने वाले कुष्ठको सिध्म कहतेहैं इसके रगड़नेसे धूलिझड़तीहै ॥ ५३० ॥

काकणमाह ॥

यत्काकणन्तिकावर्णमपाकंतीव्रवेदनम् । त्रिदोषलिङ्गंतत्कुष्ठंकाकणंनैवसिध्यति ॥ काकणंत्रिगुञ्जा । गुञ्जावर्णत्वेनमध्येकृष्णमन्तेरक्तम् । अथवामध्येरक्तंमध्यान्तेकृष्णम् । अपाकंस्वभावात् । त्रिदोषलिंगम् । सर्वेषांकुष्ठानांत्रिदोषजत्वेऽपिउल्वणदोषत्रयलिङ्गम् ॥ ५३१ ॥

काकणका लक्षण ॥

घुंघुचीके समान बीचमें लाल तथा पार्श्वमें कृष्णवर्ण अथवा बीचमें काले तथापार्श्व में रक्तवर्ण वाले अत्यन्त पीड़ा युक्त नहीं पकने वाले और तीनों दोषोंके लक्षण वाले कुष्ठ को काकण कहतेहैं यह असाध्य है ॥ ५३१ ॥

पुण्डरीकमाह ॥

ततश्वेतंरक्तपर्य्यन्तंपुण्डरीकदलोपमम् । सरागञ्चैवसोत्सेधंपुण्डरीकंकफोल्वणम्॥ पुण्डरीकदलोपमंपुण्डरीकंश्वेतकमलंतत्पत्रोपमम् । सरागञ्चैव । अतएवश्वेतंरक्तपर्य्यन्तंअन्तेरक्तम्।सरागमितिअन्तेलोहित्याधिक्यबोधनार्थम्।।सोत्सेधम्उद्गतम्५३२॥

पुण्डरीककालक्षण ॥

लालकमल के पत्तोंके समान श्वेत तथा किनारोंपर रक्तबर्णवाले और फूलेभये कुष्ठको पुण्डरीक कहतेहैं यह कफकी अधिकतासे होताहै ॥ ५३२ ॥

ऋक्षजिह्वक माह ॥

कर्कशंरक्तपर्य्यन्तमन्तःश्यावंसवेदनम् । यदृक्षजिह्वासंस्थानमृक्षजिह्वंतदुच्यते ॥ रक्तपर्य्यन्तंअन्तेरक्तंअन्तःश्यावंमध्येधूम्रवर्णम् । ऋक्षजिह्वासंस्थानम् । ऋक्षोभल्लूकस्तस्यजिह्वाकृतिः ॥ ५३३ ॥

ऋक्षजिह्वका लक्षण ॥

कठोर किनारोंपर रक्तबर्ण मध्यमें धूम्रबर्ण पीड़ा युक्त और रीछकी जिह्वा के समान आकृति वाले कुष्ठको ऋक्षजिह्व कहतेहैं ॥ ५३३ ॥

अथ क्षुद्रकुष्ठानांमध्येएककुष्ठगजचर्म्मणोर्लक्षण माह ॥

अस्वेदनंमहावास्तु यन्मत्स्यशकलोपमम् । तदेककुष्ठंचर्म्माख्यंबहलंगजचर्म्मवत् ॥ महावास्तुमहास्थानम् । मत्स्यशकलोपमम्अत्रशकलशब्देनलक्षणयात्वगु

गच्यते। तेनचक्राकारमभ्रकपत्रसदृशंभवति ॥ एककुष्ठमितिक्षुद्रकुष्ठेषुमुख्यत्वात्। चर्म्माख्यंगजचर्म्माख्यंवहलंस्थूलंगजचर्म्मवत्रूक्षंकृष्णंच ॥ ५३४ ॥

क्षुद्र कुष्ठोंमेंसे एककुष्ठ और गजचर्म्म का लक्षण ॥

स्वेद रहित बड़ेचकत्ते वाले और मछलीके छिलकेके समान कुष्ठको एककुष्ठ कहते हैं क्षुद्रकुष्ठों में मुख्यहोने से एककुष्ठ कहलाता है स्थूल और हाथीके चर्म्म के समान रूखे तथा कृष्ण वर्ण वाले कुष्ठको गजचर्म्म कहतेहैं ॥ ५३४ ॥

अथ चर्म्मदल माह ॥

रक्तंसशूलंकण्डूमत्सस्फोटंदलयत्यपि। तच्चर्म्मदलमाख्यातंस्पर्शस्यासहनञ्चयत् ॥ दलयत्यपिविदारयत्यपिचर्मेतिशेषः ॥ ५३५ ॥

चर्म्मदलका लक्षण ॥

रक्तवर्ण खुजली तथा पीड़ा युक्त फुन्सी सहित और फटीत्वचा वाले कुष्ठको चर्म्मदल कहते हैं इसमें स्पर्श नहीं सहाजाता ॥ ५३५ ॥

विचर्चिकामाह ॥

सकण्डूःपिड़काश्यावाबहुस्रावा। विचर्चिकापिड़काक्षुद्रापिड़का। ननुक्षुद्रकुष्ठानांकथमेकादशत्वंविपादिकायाद्वादशत्वसम्भवात्। उच्यते। विचर्चिकेवपादयोर्भवतिविपादिकातेनसंख्यातिरेकः। अतएवभोजः दाल्यतेत्वक्वरारूक्षपाण्योर्ज्ञेयाविचर्च्चिका। पादे विपादिकाज्ञेयास्थानभेदादविचर्चिका ॥ दाल्यतेविदार्य्यते। केचिद्विचर्चिकातोविपादिकांभिन्नामाहुःविपादिकामाहवैपादिकंपाणिपादस्फुटनंतीव्रवेदनम्। पाणिपादस्फुटनंपाण्योःपादयोश्चस्फुटनंविदारणंयेनतत् ॥ ५३६ ॥

बिचर्च्चिका का लक्षण ॥

धुमैले वर्णवाली खुजलीसहित बहुत बहनेवाली छोटीपिड़िकाओंको विचर्चिका कहतेहैं अबयह सन्देहहोताहै कि क्षुद्र कुष्ठ ग्यारह प्रकारकेहैं तोविपादिका बारहवींहोगी यहंकैसे इसका उत्तर यहहै कि विचर्चिका के समान पैरोंमें होतीहै इसलिये संख्याका भेदनहीं है इसीसे भोजने कहा है हाथों में कर्कश औ रूखी त्वचाके फटने को विचर्चिका कहतेहैं और वही विचर्चिका पैरों में हो तोस्थान भेदसे विपादिका कहलातीहै कोई२ विचर्चिकासे विपादिका को भिन्न कहतेहैं जैसे बहुतपीड़ा युक्त हाथ पैरोंके फटने को विपादिका कहतेहैं ॥ ५३६ ॥

पामा माह ॥

सूक्ष्मावाह्याःस्रावबन्त्यंप्रदाहापामेत्युक्ताःपिड़काःकण्डुमत्यः। पिड़काःपीड़यन्तीति पिड़काइत्तिक्षिपकादित्वात्निपात्यते ॥ ५३७ ॥

पामाका लक्षण ॥

छोटी बहनेवाली दाह तथा खुजली युक्त बहुतसी पिड़िकाओंको पामा कहतेहैं ॥ ५३७ ॥

कच्छुमाह ॥

सैवस्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योःकच्छुरुग्रास्फिजोश्च । सैवपामास्फोटैःमहद्भिःस्फिजौप्रोथौ ॥ ५३८ ॥ कच्छूका लक्षण ॥

हाथों और नितम्बोंमें पामाके समान अत्यन्तपीड़ा युक्त बड़ेस्फोटकों को कच्छू कहतेहैं ॥ ५३८ ॥

दद्रुमाह ॥

सकण्डूरागपिड़कंदद्रुमण्डलमुद्गतम्।दद्रुमण्डलरूपेणोत्पत्तितोद्गतंउच्छूनम्५३९ ॥

दद्रुका लक्षण ॥

रक्त वर्ण खुजली युक्त पिड़िका सहित तथा उभरेभये चकत्तों को दद्रु कहतेहैं ॥ ५३९ ॥

विस्फोटमाह ॥

स्फोटाःश्यावारुणामांसाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः ॥ ५४० ॥

विस्फोटका लक्षण ॥

पतली त्वचा वाले और धुमैले तथा रक्त वर्ण स्फोटकों को विस्फोट कहतेहैं ॥ ५४० ॥

किटिभमाह ॥

श्यामंकिणखरस्पर्शंपरुषंकिटिभंस्मृतम् । किणखरस्पर्शंकिणःशुष्कव्रणस्थानंतद्वत्कर्कशस्पर्शम्। परुषंरूक्षम् ॥ ५४१ ॥

किटिभकालक्षण ॥

सूखेभये व्रणके स्थानके समान खुरखुरे रूखे और श्यामवर्ण कुष्ठको किटिभ कहते हैं ॥ ५४१ ॥

अलसकमाह ॥

कण्डूमद्भिःसरागैश्चगण्डैलरसकश्चितम्। गण्डैःमहापिड़काभिःचितंवेष्टितम्॥५४२॥

अलसकका लक्षण ॥

खुजलीयुक्त रक्तवर्ण बड़ेस्फोटकों से व्याप्त कुष्ठको अलसक कहते हैं ॥ ५४२ ॥

शतारुस्तदाह ॥

रक्तश्यावंसदाहार्तिशतारुःस्यात्बहुव्रणम् ॥ ५४३ ॥

शतारुका लक्षण ॥

रक्त अथवा धुमैलेवर्णवाले दाहतथा पीड़ा सहित और बहुतव्रणवाले कुष्ठको शतारुकहतेहैं॥५४३॥

अथ सप्तधातुगतानांकुष्ठानांलक्षणान्याह। तत्ररसगतस्यलक्षण माह ॥

त्वक्स्थेवैवर्ण्यमङ्गेषुकुष्ठेरौक्ष्यञ्चजायते । त्वक्स्वापोरोमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्त्तनम् ॥ त्वक्शब्देनात्ररसउच्यते। धातुप्रस्तावात्त्वक्स्थाश्चत्वक्स्वापःस्पर्शाज्ञत्वम् ॥ त्वक्स्वापइत्यादिकंकेचिद्रक्तगतस्यलिङ्गंमन्यन्ते ॥ ५४४ ॥

सप्तधातु गत कुष्ठों के लक्षण रसगत कुष्ठके लक्षण ॥

कुष्ठके रसगतहोने पर विवर्णता रूक्षता रोमांच बहुत पसीना निकलना और स्पर्श का न मालूम होना ये लक्षण होते हैं ॥ ५४४ ॥

रुधिरगतमाह ॥

कण्डूर्विपूयकश्चैवकुष्ठेशोणितसम्भवे । विपूयकःविशेषेणपूयः ॥ ५४५ ॥

रुधिरगत कुष्ठका लक्षण ॥

कुष्ठके रक्त में स्थितहोने पर खुजली होतीहै और बहुत पीप निकलताहै ॥ ५४५ ॥

अथ मांसगतमाह ॥

बाहुल्यंवक्त्रशोषश्चकार्कश्यंपिड़कोद्गमः । तोदःस्फोटःस्थिरत्वञ्चकुष्ठेमांससमाश्रिते ॥ बाहुल्यंकुष्ठस्यपुष्टिः ॥ पिड़कोद्गमःक्षुद्रपिड़कोद्गमःस्फोटःवृहत्पिड़का । स्थिरत्वम् असञ्चारित्वम् ॥ ५४६ ॥ मांसगत कुष्ठका लक्षण ॥

कुष्ठके मांसगत होनेपर कुष्ठकी अधिकतामुखका सूखना कर्कशता छोटी फुन्सियोंका निकलना सूजीगड़ने कीसी पीड़ा बड़ीपिडिका और स्थिरता ये लक्षण होतेहैं ॥ ५४६ ॥

मेदोगतमाह ॥

कौण्यंगतिक्षयोङ्गानांसम्भेदःक्षतसर्पणम् । क्षतपसारोलिंगानिपूर्वमुक्तानियानि च ॥ मेदस्थानगतेलिंगंप्रागुक्तानितथैवच । कौण्यंहस्तनाशःअंगानांसम्भेदःअंगभंगःक्षतसर्पणंक्षतप्रसरणंपूर्वोक्तानिरक्तमांसगतलिंगानि ॥ ५४७ ॥

मेदोगत कुष्ठके लक्षण ॥

कुष्ठके मेदोगत होनेपर हाथोंका गलना चल न सकना अंगभंग घावोंका फैलना और पहले कहे हुये रक्त तथा मांसगत कुष्ठके लक्षण होतेहैं ॥ ५४७ ॥

अस्थिमज्जागतमाह ॥

नासाभंगोऽक्षिरागश्चक्षतेषुक्रमिसम्भवः । स्वरोपघातःपीड़ाच भवेत्कुष्ठेऽस्थिमज्जगे ॥ ५४८ ॥ अस्थिमज्जागत कुष्ठके लक्षण ॥

कुष्ठके अस्थि औरमज्जामें प्राप्त होनेपर नाकका बैठना नेत्रोंका लाल होना स्वरभंग पीड़ा और घावोंमें कीड़े पड़ना ये लक्षण होतेहैं ॥ ५४८ ॥

शुक्रगतमाह ॥

दम्पत्योःकुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः । यदपत्यंतयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितम् ननुशुद्धशोणितशुक्रयोरेवंदम्पत्योर्गर्भसम्भवः । दुष्टशोणितशुक्रयोःकथंअपत्योत्पत्तिः॥ यतआहसुश्रुतःकामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजःगर्भः । सञ्जायतेनार्य्याःसजातोबालउच्यते ॥ अथान्यच्च । वातादिदुष्टरेतसोऽपत्योत्पादनेनसमर्थाइतिउच्यते ॥ गर्भोऽत्रशुद्धोबोद्धव्यः । अशुद्धगर्भोऽपिदुष्टशोणितशुक्रयोरपिभवति ॥ गतकर्णान्धबधिरादीनांसम्भवात् । शोणितमार्त्तवम् ॥ कुष्ठितंकुष्ठंसञ्जातमस्येतितारकादित्वादितच । शुक्रार्त्तवगतंकुष्ठमपत्येनव्यजतेइतितात्पर्य्यम् ॥ ५४९ ॥

शुक्रगत कुष्ठके लक्षण ॥

कुष्ठकी अधिकतासे स्त्री तथा पुरुष के रज तथा बीर्य्य के दूषित होनेपर जो सन्तति होतीहै वो कुष्ठी

होतीहै अब यह सन्देह होताहै कि शुद्ध रजतथा बीर्यवालेही स्त्री पुरुषोंके गर्भ होताहै तो दूषितरजतथा वीर्य्य से सन्तति कैसे होगी क्योंकि सुश्रुत ने कहाहै कि कामके द्वारा शुद्ध रज तथा बीर्यवाले स्त्री पुरुषोंके संयोग होनेपर गर्भहोता है यह उत्पन्न होकर बाल कहलाताहै और बातादि के द्वारा दूषित वीर्य्यवाले सन्ततिको नहीं उत्पन्न करसकेहैं इसका उत्तर यहहै कि यहां गर्भ कहनेसे शुद्ध गर्भका ग्रहण होताहै क्योंकि दूषित रज तथा वीर्यसे अशुद्धगर्भ होताहै उससे इन्द्रिय रहित अन्ध तथा वधिरादि उत्पन्न होतेहैं यहांयह तात्पर्य है कि वीर्य्य तथा रजमें प्राप्त कुष्ठ सन्तति से जानाजाताहै ॥ ५४९ ॥

कुष्ठेषुउत्वणवातादिदोषलिंगमाह ॥

खरंश्यावांरुणंरूक्षंवातकुष्ठंसवेदनम् । पित्तात्प्रकुपितंदाहरागस्रावान्वितंमतम् ॥ कफात्क्लेदंघनंस्निग्धंसकण्डूशैत्यगौरवम् । द्विलिंगंद्वन्द्वजंकुष्ठंत्रिलिंगसान्निपातिकम् ॥ खरंकर्कशम् । श्यावारुणंश्याववाअरुणंवा ॥ प्रकुपितंपूतिक्लेदबहुलम् । क्लेदम्आर्द्रता युक्तम् । घनंपुष्टम् ॥ ५५० ॥

कुष्ठोंमें बातादि दोषोंकी अधिकताके लक्षण ॥

अधिकबातवाला कुष्ठखुरखुरा धुमेला अथवा लाल रूखा और पीड़ासहित होताहै अधिकपित्त वालाकुष्ठ लालदाह तथास्राव युक्त होताहै अधिकवाला कुष्ठ गीला पुष्ट स्निग्ध खुजली युक्तशीतल औरभारीहोताहै द्वन्द्वजकुष्ठ दोदोषोंकेलक्षणवाला औरसन्निपातजकुष्ठ तीनोंदोषोंके लक्षण वाला होता है ॥ ५५० ॥

साध्यत्वादिकमाह ॥

साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थंवातश्लेष्माधिकञ्चयत् । मेदोगंद्वन्द्वजंयाप्यंवर्ज्यंमज्जास्थिसंश्रितम् ॥ कृमिकृद्दाहमन्दाग्निसंयुक्तंयत्त्रिदोषजम् । वातश्लेष्माधिकञ्चयत्एतेनसिध्मैककुष्ठगजचर्म्मविपादिकाकिटिभालसकानिसाध्या निमज्जागतंशुक्रगतमप्यसाध्यम् ॥ कृमिर्वाह्योऽपिवर्ज्यइत्यन्वयः ॥ ५५१ ॥

कुष्ठके साध्यादि लक्षण ॥

त्वचा रुधिर तथामांस में स्थित और बातकफाधिक सिध्म एककुष्ठ गजचर्म्म बिपादिका किटिभ अलसक कुष्ठसाध्यहै मेदोगतऔर द्वन्द्वज कुष्ठ याप्यहैं मज्जागत बर्य्यिगत और कृमिदाहतथा मन्दाग्नियुक्त त्रिदोषज कुष्ठअसाध्य है ॥ ५५१ ॥

अथारिष्टमाह ॥

प्रभिन्नंप्रस्रुतांगञ्चरक्तनेत्रंहतस्वरम् । पञ्चकर्म्मगुणातीतंकुष्ठंहन्तीहकुष्ठिनम् ॥ प्रभिन्नंविदीर्णम् । हतस्वरंघर्घरस्वरम् । पञ्चकर्म्मगुणातीतम्असञ्जातवमनादिपञ्चकर्म्मगुणम् ॥ ५५२ ॥

कुष्ठ के अरिष्ट ॥

जोकुष्ठ में अंगकटगयेहों बहतेहों नेत्रलाल होगयेहों स्वर भंगहोगया हो और वमन आदि पंच कर्म्मकरने से कोई गुणनहोतो कुष्ठीमरताहै ॥ ५५२ ॥

अथत्वग्दुष्टिसाम्यात् कुष्ठभेदत्वाच्चात्रैवश्वित्रमाह ॥

कुष्ठैकंसम्भवंश्वित्रंकिलासंचारुणंभवेत् । निर्दिष्टमपरिस्रावित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ॥

कुष्ठेकसम्भवंकुष्ठेनसहसम्भवोनिदानंयस्यतत्। अथश्वित्रस्यभेदमाह किलासञ्चारुणं भवेत्श्वित्रमेवरक्तमांसाश्रयात्किलासमरुणञ्चभवेदित्यर्थः ॥ ननुकुष्ठस्यश्वित्रस्यकोभेदइत्यतआहनिर्दिष्टमपरिस्रावीतिश्वित्रमपरिस्राविभवातिकुष्ठन्तुस्रावि अथच । त्रिधातूद्भवसंश्रयमितिश्वित्रं ॥ त्रयोधातवोवातपित्तकफास्तेभ्यःपृथग्भूतेभ्यउद्भवोयस्यतत्। अथत्रयोधातवोरक्तमांसमेदांसिसंश्रयोऽधिष्ठानंयस्यतत् ॥ कुष्ठन्तुसन्निपातिकंसर्वधातुगतंभवतीतिभेदः ॥ ५५३ ॥

त्वचाके दूषितहोने की समतासे और एकप्रकारके कुष्ठहोनेसे यहींपरश्वित्र का लक्षणकहते हैं ॥

श्वित्र में कुष्ठ के समान सम्पूर्ण निदान हैं श्वित्रही रुधिर और मांसके आश्रयसे रक्तवर्णहोकर किलास कहलाता है अन्य कुष्ठ बहतेहैं श्वित्रबहता नहीं श्वित्र बातादि तीनोंधातुओं से अलग २ उत्पन्न होताहै और रुधिर मांस तथामेद इनतीन धातुओंमें होता है अन्यकुष्ठ सन्निपातज होते हैं और सर्वधातुगत होतेहैं यही श्वित्र और कुष्ठ में भेद है ॥ ५५३ ॥

दोषभेदेनलक्षणभेदान्याह ॥

वाताद्रूक्षारुणंपित्तात्ताम्रंकमलपत्रवत् । सदाहंरोमविध्वंसिकफात्श्वेतघनंगुरु ॥ सकण्डूकंक्रमाद्रक्तमांसमेदःसुचादिशेत् । वर्णेनैवेष्ठगुभयंकुष्ठंतच्चोत्तरोत्तरम् ॥ अरुणमीषल्लोहितम् । कमलपत्रवदित्यनेनमध्येश्वेतमन्तेलोहितंबोधयति ॥ घनंपुष्टम्। क्रमाद्रक्तमांसमेदःसुचादिशेत् ॥ (तथाचचरकः) अरुणंरक्तगेवान्तेताम्रंपित्तेपलङ्गते। श्वेतंश्लेष्मणिमेदस्थेश्वित्रंकुष्ठंपरापरमिति ॥ उभयंद्विविधमपिश्वित्रंवर्णेनइद्रगेव । अरुणंताम्रंश्वेतञ्चदोषभेदात् ॥ द्विविधंदोषजंव्रणजंच । (तथाचभोजः) श्वित्रंतुद्विविधंविद्यादोषजंव्रणजंतथेति ॥ ५५४ ॥

दोष भेदसे श्वित्र के अलग २ लक्षण ॥

वातजश्वित्र रूखा और कुछ रक्तवर्णहोता है पित्तज श्वित्र ताम्रवर्ण कमल पत्रके समान बीच में श्वेततथा अन्तमें लालदाहयुक्त और रोम नाशक होताहै कफज श्वित्र श्वेत पुष्ट भारी और खुजली युक्त होताहै ऊपरकहेभये वर्णोंके द्वाराक्रमसे रक्तमांस औरमेदमें स्थित श्वित्रजाननाचाहिये और ऐसाही चरकने कहाहै कि बातज रक्तवर्ण श्वित्र रक्तगत पित्तज ताम्रबर्ण श्वित्रमांसगत और कफज श्वेतबर्ण श्वित्र मेदोगत होताहै दोनोंप्रकारका श्वित्र बर्णसे इसीप्रकारका होताहै और बर्णभेद दोषों केभेदसे होताहै श्वित्र दोप्रकारकाहै दोषज और व्रणज ऐसाही भोजने कहाहै कि श्वित्रको दोषज और व्रणजभेद से दोप्रकारका जाननाचाहिये ॥ ५५४ ॥

श्वित्रंसाध्यमसाध्यञ्चाह ॥

अशुक्लरोमाबहलंसृग्युक्तमथोनवम् । अनग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमतोऽन्यथा ॥ अबहलंतनु । अन्यच्च ॥ गुह्यपाणितलोष्ठेषुजातमप्यचिरन्तनम् । वर्ज्जनीयंविशेषेणकिलासंसिद्धिमिच्छता ॥ गुह्यंमेहनम्भगञ्चतलमत्रपदतलंजातंसुश्रुतेनान्तेजातमितिसामान्यतोनिर्दिष्टत्वात् । अप्यचिरन्तनम्नवमपि ॥ ५५५ ॥

शिवत्रके साध्य और असाध्य लक्षण ॥

कृष्णरोम जिसमें बहुतहों परस्पर मिलानहो अग्निके द्वारा जलनेसे न उत्पन्न भयाहो और नवीनहो ऐसा शिवत्रसाध्य है अन्यथा असाध्य है और भी कहा है कि लिंग योनि हाथ पैरोंके तलुवे और ओष्ठ में हुआ नवीनभी किलास असाध्य है ॥ ५५५ ॥

कुष्ठस्यसंसर्गजत्वप्रसङ्गेनान्यानपिसंसर्गजान्रोगानाह ॥

प्रसंगाद्गात्रसंस्पर्शान्निःश्वासात्सहभोजनात् (प्रसङ्गोमैथुनम्) एकशय्यासनाच्चापिवस्त्रमाल्यानुलेपनात् । कण्डूकुष्ठोपदंशश्चभूतोन्मदव्रणज्वरः ॥ औपसर्गिकरोगाश्चसंक्रमन्तिनरान्नरम्। म्रियतेयदिकुष्ठेनपुनर्जातस्यतद्भवेत् । अतोनिन्दितरोगोऽयंकुष्ठंकष्टंप्रकीर्तितम् ॥ एतावताकुष्ठिनांकुष्ठंसर्वथाप्रतीकरणीयंनतुउपेक्षणीयम् । (इतिकुष्ठनिदानाधिकारः) ॥ ५५६ ॥

कुष्ठ संसर्गजरोग है इस्से अन्य संसर्गज रोगोंकाभी वर्णन ॥

मैथुन छूना सांसलेना साथभोजन करना एकशय्यामें सोना एक आसनपर बैठना और एकही वस्त्र माला तथा अनुलेपनका धारण करना इनसे खुजली कुष्ठ उपदंश भूतोन्माद व्रण ज्वर तथा उपसर्गजरोग एकमनुष्यसे दूसरे मनुष्यको होते हैं जो कुष्ठसे मृत्युहो तो दूसरे जन्म में भी कुष्ठ होता है इसलिये यह निंद्यरोग अत्यन्त कष्टदायी है इसीसे कुष्ठकायत्न पूर्वक प्रतीकार करना चाहिये और अपेक्षा नहीं करना चाहिये इति कुष्ठनिदानाऽधिकार समाप्त ॥ ५५६ ॥

कुष्ठस्यचिकित्सा ॥

वातोत्तरेषुसर्पिर्वमनंश्लेष्मोत्तरेषुकुष्ठेषु।पित्तोत्तरेषुलेपःसेकोरक्तस्यमोचनंश्रेष्ठम्५५७॥

कुष्ठकी चिकित्सा ॥

अधिकबातवाले कुष्ठमें घृतप्रयोग अधिक कफवाले कुष्ठमें वमन अधिक पित्तवाले कुष्ठमें लेप परिषेक तथा रुधिर निकलवाना श्रेष्ठ है ॥ ५५७ ॥

पथ्याकरञ्जसिद्धार्थनिशावल्गुजसैन्धवैः । विडङ्गसहितैःपिष्टैर्लेपोमूत्रेणकुष्ठनुत् ॥ अवल्गुजःबकुचीतिलोके (इतिपथ्यादिलेपः) ॥ ५५८ ॥

हड़ करंजुआ सरसों हल्दी बकुची सेंधानोन और बायबिड़ंग इनको गोमूत्रमें पीसकर लेपकरने से कुष्ठका नाश होताहै इतिपथ्यादिलेप ॥ ५५८ ॥

सोमराजीभवंचूर्णंशृङ्गवेरसमन्वितम् । उद्वर्त्तनमिदंहन्तिकुष्ठमुग्रंकृतास्यदम् ॥ सोमराजीबकुचीतिलोके (इतिसोमराज्युद्वर्त्तनम्) ॥ ५५९ ॥

बकुची औरसोंठके चूर्णका उबटन बढ़ेभये कुष्ठकोभी नष्टकरताहै इतिसोमराजी उद्वर्तन॥५५९ ॥

रसायनंप्रवक्ष्यामिब्रह्मणायदुदाहृतम् । मार्कण्डेयप्रभृतिभिर्यत्प्रयुक्तंमहर्षिभिः ॥ पुष्पकालेतुपुष्पाणिफलकालेफलानिच । संगृह्यपिचुमर्दस्यत्वङ्मूलानिदलानिच ॥ द्विरंशानिसमाहृत्यभागिकानिप्रकल्पयेत् । त्रिफलात्र्यूषणंब्राह्मीश्वदंष्ट्रारुष्कराग्नयः ॥ विडङ्गसारवाराहीलोहचूर्णंमृताःसमाः। निशाद्वयोवल्गुजकंव्याधिघातःसशर्करः॥कुष्ठमिन्द्र

यवापाठाच्चूर्णमेषांतुसंयुतम् । खदिरासननिम्बानांघनक्काथेनभावयेत् ॥ सप्तधापञ्च निम्बंतुमार्कवस्यरसेनच । स्निग्धःशुद्धतनुर्धीमान्योजयेत्ततशुभेदिने ॥ मधुनातिक्त हविषाखदिरासनवारिणा । लह्यमुष्णाम्भसावापिकोलवृद्ध्यापलंभवेत् ॥ जीर्णेतस्मिन् समश्नीयात्स्निग्धंलघुहितञ्चयत् । विचर्चिकोदुम्बरपुण्डरीककपालदद्रूकिटिभालसा दिकम् ॥ शतारुविस्फोटविसर्प्पमालाःकफप्रकोपंत्रिविधंकिलासम् । भगन्दरश्लीपद वातरक्तजडान्धनाडीव्रणशीर्षरोगान् ॥ सर्वान्प्रमेहान्प्रदरांश्चसर्वान्दंष्ट्राविषंमूलवि षंनिहन्ति । स्थूलोदरःसिंहकृशोदरःस्यात्सुश्लिष्टसन्धिर्मधुनोपयोगात् ॥ सदोपयोगा दपियेदशान्तिसर्प्पादयोयान्तिविनाशमाशु । जीवेच्चिरंव्याधिजराविमुक्तःशुभेतरश्चन्द्र समानकान्तिः ॥ अस्यायमर्थः । निम्बस्यपुष्पफलत्वक्पत्रमूलानिसर्वाणिसमुदितानि द्विगुणानिचूर्णितानिभृंगराजस्वरसेनसप्तवारान्भावयेत् ॥ त्रिफलादीनिपाठान्तानिसमु दितान्येकभागानिचूर्णितानिखदिरासननिम्बक्काथेनभावयेत् । ततःसर्वमेकीकृत्यमध्वा दिनाऽवलिह्यात् ॥ इतिपञ्चनिम्बकावलेहः ॥ ५६० ॥

ब्रह्मा की कही भई और मार्कण्डेयआदि महर्षियों से व्यवहार कीगई रसायन को कहते हैं नींब के पुष्पों के समय पुष्प तथा फलों के समय फल और छाल जड़ तथा पत्तियों को लाकर चूर्ण करै इसके दो भागों को भँगरे के रस में सात बार भावना दे फिर त्रिफला त्रिकटु ब्राह्मी गोखुरू भिलावां चीता बिडंगसार बाराहीकन्द लोह चूर्ण गिलोय हल्दी दारुहल्दी बकुची अमलतास शर्करा कूट इन्द्रयव और पाठा इनसबके एक भाग चूर्ण को कत्थे बिजयसार और नींब के काढ़े में भावनादे फिरदोनोंको मिलाकर स्निग्ध तथा बमन आदिके द्वारा शुद्धशरीरवाला मनुष्य शहत तिक्त घृत कत्थे तथा बिजयसार के काढ़े अथवा उष्ण जलके साथ इसको चाटै इसको आठ माशेसे चार तोलेतक प्रति दिन बढ़ाता जाय औषध के पचजानेपर स्निग्ध लघु तथा पथ्य भोजन करै इसकेद्वारा बिचर्चिका उदुंबर पुंडरीक कापाल दद्रु किटभ अलसक शतारु बिस्फोट बीसर्प्प गंड-माला कफकाकोप तीन प्रकारका किलास भगन्दर फीलपांव बातरक्त जड़ता अंध नाड़ी ब्रण शिर के रोग सम्पूर्ण प्रमेह सबप्रदर दांतके काटेका बिष तथामूलविषइन सबका नाशहोताहै शहतके साथ इसकोचाटनेसे बहुत बढ़े भये मेदो रोगका नाश होताहै इसके सदैव सेवनसे यदि सर्प्पादिकाटैं तोवे शीघ्र नष्ट होजाते हैं और रोग तथा वृद्धावस्था से छूटकर चन्द्रमा के समान कान्तिवाला होकर बहुत कालतक जीता है इति पंच निंबका वलेह ॥ ५६० ॥

शशिलेखापञ्चपलंतावद्गिरिजस्यगुग्गुलोस्तुदश । ताप्यस्यपलंत्रितयंद्वेलोहस्याव र्णाकायोश्चपले ॥ त्रिफलाकरञ्जपल्लवखादिरगुडूचीत्रिवृद्दन्त्यः । मुस्ताविडंगरजनी कुटजत्वङ्निम्बवह्निसम्पाका ॥ एतैरचितांवटिकांमधुसंमिश्रांगिलेत्प्रातः ।गोमूत्रेणचकु ष्ठंनुदत्यसृग्वातमचिरेण ॥ श्वित्राणिपाण्डुरोगंविषमानुदरप्रमेहगुल्मांश्च । नाशयति बलीपलितंयोगःस्वायम्भुवोनाम्ना ॥ शशिलेखासोमराजी । गिरिजस्यशिलाजतुनः । ताप्यस्यसुवर्णमाक्षिकस्य । स्वावर्णीकामुण्डीइतिलोके।इतिस्वायम्भुवोगुग्गुलुः॥५६१॥

बकुची ५ पल शिलाजीत ५ पल गूगुल १० पल सोनामाखी ३ पल लोह तथा मुंडी दो दो पल और त्रिफला करंजुवा तेजपात कत्था गिलोय निशोथ दंती मोथा बायबिड़ंग हल्दी कुरैया दालचीनी नींब चीता तथा अमलतास इन सबकी शहतमें गोली बनावै और प्रातःकाल गोमूत्रके साथ इनकोनिगलनेसे कुष्ठ रक्तबात सफेदकोढ़ पांडु उदरप्रमेह गुल्म झुर्रीबालोंका सफेद होना इन सबकानाशहोताहै इतिस्वायम्भुव गुग्गुलुः ॥ ५६१ ॥

चित्रकंत्रिफलाव्योषमजाजीकारवीवचा।सैन्धवातिविषाकुष्ठञ्चव्यैलाचयवासकम्॥ विडंगान्यजमोदाचमुस्ताचामरदारुच । यावन्त्येतानिसर्वाणितावन्मानन्तुगुग्गुलोः॥ सकुट्यसर्पिषासार्द्धंगुटिकांकारयेद्भिषक्। प्रातर्भोजनकालेचखादेदग्निबलंतथा॥ हन्त्यष्टादशकुष्ठानिकृमिदुष्टव्रणानिच । ग्रहण्यर्शोविकारांश्चमुखामयगलग्रहान्॥ गृध्रसीमथभग्नञ्चगुल्मंचापिनियच्छति ॥ व्याधीन्कोष्ठगतांश्चापिजयेद्विष्णुरिवासुरान्॥ एकाविंशतिकोगुग्गुलुः ॥ ५६२ ॥

चीता त्रिफला त्रिकुटु जीरा कलौंजी बच सेंधानोन अतीसकूट चव्य इलायची जवासा बायविड़ंग अजवाइन मोथा तथा देवदारु इन सबको चूर्ण करके सबकी बराबर गूगुल मिलावै फिर घी के साथ गोली बनावै अग्निबलके अनुसार प्रातःकाल औरभोजनके समय गोली खाय इस्से अठारह प्रकारके कुष्ठ कृमि दुष्टव्रण ग्रहणी बवासीर मुखरोग गलग्रह गृध्रसी भग्न गुल्म और कोष्ठगत रोग इन सबका नाश होताहै इतिएक विंशतिकगुग्गुलुः ॥ ५६२ ॥

वातरक्ताधिकारोक्तःपुरःकैशोरकाभिधः । कुष्ठानांवातरक्तानांनाशनंपरमौषधम् ॥ कैशोरगुग्गुलुः ॥ ५६३ ॥

बातरक्ताऽधिकार में कहाभया कैशोर गुग्गुलु कुष्ठ और बातरक्तोंका अत्यन्त नाशकहै ॥ ५६३ ॥

भल्लातकप्रस्थयुगं छित्वाद्रोणजलेक्षिपेत् । प्रस्थद्वयंगुडूच्याश्च क्षुण्णंतत्राम्भसिक्षिपेत् ॥ चतुर्थांशावशेषंतु कषायमवतारयेत् । वस्त्रपूतेकषायेण वक्ष्यमाणंविनिक्षिपेत् ॥ सरावमात्रकंसर्पिर्दुग्धस्याढकंतथा । सितांप्रस्थमितांदद्यात्प्रस्थार्द्धंमाक्षिकंक्षिपेत् ॥ सर्व्वाण्येकत्रभाण्डेतु पचेन्मृद्वग्निनाशनैः । सर्व्वद्रवेघनीभूते पावकादवतारयेत् ॥ तत्र क्षेप्याणिचूर्णानि ब्रूमोविल्वविषामृताः । वाकुचीचाथदद्रुघ्नः पिचुमर्दोहरीतकी ॥ अक्षोधात्रीचमञ्जिष्ठा मरिचंनागरङ्कणा । यवानीसैन्धवंमुस्तं त्वगेलानागकेशरम् ॥ पर्प्पटं पत्रकंवाला मुशीरंचन्दनंतथा । गोक्षूरस्यचबीजानि कर्चूरोरक्तचन्दनम् ॥ पृथक्पलार्द्धमानानां चूर्णमेषामिहक्षिपेत् । पलमात्रमिदंप्रातः समश्नीयाज्जलेनहि ॥ नाशयेदेवलेहोऽयं पथ्यान्यन्नानिखादतः । कुष्ठानिवातरक्तानि सर्व्वाण्यर्शांसिसेवितः ॥ व्यायाममातपंवह्निं मम्लंमांसंदधिस्त्रियम् । तैलाभ्यङ्गंतथाध्वानं नरोभल्लातकीत्यजेत् ॥ इति अमृतभल्लातकोऽवलेहः ॥ ५६४ ॥

१२८तोलाभिलावां तथा १२८ तोले गिलोय इनकोकूटके सोलहसेर पानीमें काढ़ाकरै चौथियाई रहनेपर काढ़ेको उतारकर कपड़ेसे छानले फिर इस काढ़ेमें आधसेर घी चार सेर दूध सेरभर शक्कर

तथा आधसेर शहत मिलायके मन्दाग्नि में पाक करै फिर गाढ़ा होजानेपर अग्निसे उतार के बेल बिष गिलोय बकुची पुआड़ नींब हड़ बहेड़ा आंवला मंजीठ मिर्च सोंठ पीपल अजवाइन सेंधानोन मोथा दालचीनी इलायची नागकेसर पित्तपापड़ा तेजपात नेत्रबाला खस चन्दन गोखुरू कचूर और लाल चन्दन इन सबका चूर्ण दो दो तोले मिलावै फिर प्रातःकाल इस औषधको पानी के साथ चार तोले खानेसे कुष्ठ बातरक्त और सब प्रकारकी बवासीरोंका नाश होताहै इसको खाने वाला व्यायाम धूप अग्नि खटाई मांस दही मैथुन तैलाभ्यंग तथा मार्ग गमनको त्यागदे और पथ्य भोजनकरै इति अमृत भल्लातकावलेह ॥ ५६४ ॥

निम्बगोपारुणाकट्वी त्रायन्तीत्रिफलाघनम् । पर्पटावल्गुजानन्ता वचाखदिरचन्दनम् ॥ पाठाशुण्ठिशटीभार्गी वासाभूनिम्बवत्सकम् । श्यामेन्द्रवारुणीमूर्वा विडङ्गेन्द्रयवानलम् ॥ हस्तिकर्णामृताद्रेकापटोलरजनीद्वयम् । कणारग्वधसप्ताङ्गत्रिवृद्वेत्रोच्चटाफलम् ॥ मंजिष्ठालांगलीरास्ना नक्तमालपुनर्नवाः । दन्तीवीजकसारञ्च भृंगराजंकुरण्टकम् ॥ अंकोटकञ्चशाखोटं द्विपलांशंपृथक्पृथक् । गृह्णीयात्तानिसर्व्वाणि जलद्रोणे पचेच्छनैः ॥ अष्टमांशावशेषन्तु कषायमवतारयेत् । विधायवाससापूतं स्थापयेद्भाजने दृढे ॥ भल्लातकसहस्राणि छित्वातुत्र्यर्म्मणाम्भसि । पचेदष्टावशेषंतत्कषायमवतारयेत् ॥ तच्चवस्त्रेणसंशोध्य द्वौकषायौविमिश्रयेत् । गुडंशतपलंदत्वा लेहवत्तत्पचेच्छनैः ॥ भल्लातकसहस्रस्य मज्जानंतत्रनिक्षिपेत् । त्रिकटुत्रिफलामुस्तं विड़ंगंचित्रकंतथा ॥ सैन्धवंचन्दनंकुष्ठं दीप्यकंचपलंपृथक् । सौगन्ध्यार्थंक्षिपेत्तत्र चातुर्ज्जातंपलंपलम् ॥ महाभल्लातकोह्येष महादेवेनभाषितः । प्राणिनांहितकामेन जयेच्छीघ्रंप्रयोजितः ॥ श्वित्रमौदुम्बरंदद्रू मृक्षजिह्वन्तुकाकणम् । पुण्डरीकंसचर्म्माख्यं विस्फोटंरक्तमण्डलम् ॥ कण्डूकपालकंकुष्ठं पामानञ्चविपादिकाम् । वातरक्तंषड़र्शांसि पाण्डुरोगव्रणान्कृमीन् ॥ रक्तपित्तमुदावर्त्तं कासंश्वासंभगन्दरम् । सदाभ्यासेनपलित मामवातंसुदुस्तरम् ॥ निर्य्यन्त्रणस्तुकाथितो विहाराहारमैथुने । कुरुतेपरमांकान्तिंप्रदीप्तंजठरानलम् ॥ अनुपानंप्रयोक्तव्यं छिन्नातोयंपयोऽथवा । भोजनेतुसदात्याज्य मुष्णमम्लंविशेषतः ॥ गोपाश्वेतसावइतिलोके । अरुणा अतिविषाअवल्गुजः सोमराजीवकुची । अनन्ता दुरालभा । चन्दनं श्वेतम् । भार्ग्याअलाभेकण्टकारीमूलंगृह्णीयात् । श्यामा कृष्णसांइ । हस्तिकर्ण हथिकन्द । सप्ताङ्गाछतिम् । द्रेकावकाइन । कृष्णवेतजलवेतसउच्चटाफलं श्वेतगुंजाफलम् । कुरण्टकंकटसरैआ अंकोढ़ढेला इतिलोके। शाखोटंसहोर इतिलोके। दीप्यकंयवादुनी । महाभल्लातकः ॥ ५६५ ॥

नीम गोपा अतीस कुटकी त्रायमाण त्रिफला मोथा पित्तपापड़ा बकुची जवासा बच कत्थाचन्दन पाठा सोंठ कचूर भारंगी (नमिलने से भटकटैया कीजड़) बांसा चिरायता कुरैया काला निसोथ इन्द्रायन मरोड़फली बायबिड़ंग इन्द्रजो चीता मानपत्ता गिलोय बकायन परवल हल्दी दारुहल्दी पीपल अमलतास छितवन निसोथ जलबेत सफेद घुंघुची मजीठ करिहारी रास्ना करंजुवा गदह

पूरना दंती जमालगोटा भंगरा खुरंट ढेरा तथा सहोर इनको दो दो तोले लेकर सोलहसेर पानी में धीरे २ पकावे जब आठवांहिस्सा बाकीरहे तब उतारके कपड़ेसे छानके पुष्टबर्तन में रक्खे फिर हजार १००० भिलावोंको काटकर ४८ सेर पानीमें पकावे अष्टमांश बाकी रहनेपर उतारके छान ले और दोनों काढ़ोंको मिलाके ४०० तोले गुड़ डालकर धीरे अवलेहके तुल्य पाक करके हजार भिलावेंकी मीगी और त्रिकटु त्रिफला मोथा वायविड़ंग चीता सेंधानोन श्वेतचन्दन कूट तथा अजवाइन एक २ पल और सुगन्धिके लिये दालचीनी इलायची तेजपात तथा नागकेसर एकएकपल मिलावै यह महाभल्लातक अवलेह प्राणियोंके हितके लिये महादेवजीने कहाहै इसके सेवनसे श्वित्र उदुंवर दद्रु ऋक्षजिह्व काकण पुंडरीक गजचर्म्म बिस्फोट रक्तमंडल खुजली कापाल पामा बिपादिका बातरक्त छःप्रकारकीबवासीर पांडु व्रण कृमि रक्तपित्त उदावर्त खांसी श्वास भगन्दर बालोंका पकना तथा आमबात इनका नाश होता है और कांति तथा जठराग्नि बढ़तीहै इसके सेवनमें बिहार आहार तथा मैथुनका कोई निषेध नहीं है इसके साथ गुर्चके काढ़ेका अथवा दूधका अनुपान करै और इसके सेवनमें उष्णबस्तु और खटाई कभी न खाय इति महाभल्लातक ॥ ५६५॥

मञ्जिष्ठात्रिफलातिक्तावचादारुनिशामृताः । निम्बश्चैषकृतःक्वाथःसर्वकुष्ठंविनाशयेत् ॥ वातरक्तंतथाकण्डुंपामानंरक्तमण्डलम् । दद्रुंविसर्पंविस्फोटंपानाभ्यासेननाशयेत् ॥ लघुमञ्जिष्ठादिक्वाथः ॥ ५६६ ॥

मजीठ त्रिफला कुटकी बच दारुहल्दी हड़ और नींब इनके काढ़ेके सेवनसे सबप्रकारके कुष्ठ खुजली वात रक्त पामा रक्तमंडल दाद बीसर्प और बिस्फोट का नाश होता है इति लघु मञ्जिष्ठादि क्वाथ ॥ ५६६ ॥

मञ्जिष्ठावाकुचीचक्रमर्दश्चपिचुमर्दकः । हरीतकीहरिद्राचधात्रीवासाशतावरी ॥ बलानागबलायष्टीमधुकक्षुरकोऽपिच । पटोलस्यलताशीरंगुडूचीरक्तचन्दनम् ॥ मञ्जिष्ठादिरयंक्वाथःकुष्ठानांनाशनःपरः । वातरक्तस्यसंहर्त्ताकण्डूमण्डलनाशनः ॥ मध्यमञ्जिष्ठादिक्वाथः ॥ ५६७ ॥

मजीठ बकुची पुआड़ नींब हड़ हल्दी आंवला बांसा शतावरि बरियारा गुलशकरी मुलेठी गोखुरू परवलकी वेल खस गुर्च लालचन्दन इनके काढ़ेके पीनेसे कुष्ठ वात रक्त खुजली और चकत्तोंका नाश होताहै इति मध्यमञ्जिष्ठादि क्वाथ ॥ ५६७ ॥

मञ्जिष्ठाकुटजामृताघनवचाशुण्ठीहरिद्राद्वयम् । क्षुद्रारिष्टपटोलतिक्तकटुकाभार्गीविड़ंगाग्निकम् ॥ मूर्वादारुकलिंगभृंगमगधात्रायन्तिपाठावरी । गायत्रीत्रिफलाकिरातकमहानिम्बासनारग्वधाः ॥ श्यामावल्गुजचन्दनंवरुणकंदन्तीकशाखोटकम् । वासापर्प्पटसारिवाप्रतिविषानन्ताविशालाजलम् ॥ मञ्जिष्ठाप्रथमंकषायमितियःसंसेवतेतस्यतु । त्वग्दोषाःसुचिरेणयान्तिविलयंकुष्ठानिचाष्टादश ॥ नाशंगच्छतिवातरक्तमखिलानश्यन्तिरक्तामयाःवीसर्पस्त्वचिशून्यतानयनजारोगाःप्रशाम्यन्तिच।अरिष्टः ।निम्बः। कालिंगइन्द्रयवाः। भृंगभेगरीया। वरीशतावरी। गायत्रीखदिरः। आसनंविजय

सारः। श्यामाप्रियंगु। चन्दनमत्ररक्तंग्राह्यम्। सारिवासांद्र। अनन्तादुरालभा। विशालाइन्दारुणी। जलंनेत्रवाला। इतिवृहन्मञ्जिष्ठादिःक्वाथः॥ ५६८॥

मजीठ कुरैया गुर्च मोथा बच सोंठ हल्दी दारुहल्दी भटकटैया नींब परवल चिरायता कुटकी भारंगी बायबिड़ंग चीता मरोड़फली देवदारु इन्द्रजौ भंगरा पीपर त्रायमाणा पाठा शतावरी कत्था त्रिफला चिरायता वकायन बिजयसार अमलतास गोंदनीं बकुची लाल चन्दन बरुणा जमालगोटे की जड़ सहोरा बांसा पित्तपापड़ा ईसरमूल अतीस जवासा इन्दौरन और सुगन्धबाला इनके काढ़े के सेवनसे त्वचा के दोष अठारह कुष्ठ सब प्रकारका बातरक्त रुधिरके रोग बीसर्प त्वचाकीशून्यता और नेत्र रोगनष्ट होतेहैं इति वृहन्मञ्जिष्ठादि क्वाथ॥ ५६८॥

मरिचंत्रिवृतामुस्तं हरीतालंमनःशिला। देवदारुहरिद्रेद्वेमांसीकुष्ठंसचन्दनम्॥ विशालाकरवीरञ्च क्षीरमर्कसमुद्भवम्। गोमयस्यरसंकुर्य्यात् प्रत्येकंकर्षसंमितम्॥ विषस्यार्द्धपलंदेयं तैलंप्रस्थमितंकटु। पचेच्चतुर्गुणेनीरेगोमूत्रेद्विगुणेतथा॥ मरिचाद्यमिदंतैल मभ्यंगात्कुष्ठनाशनम्। एतस्याभ्यंगतःश्वित्रं विवर्णंतत्क्षणाद्भवेत्॥ तैलमेतज्जयेत्कण्डूं पामांसिध्मविचर्चिकाम्। पुण्डरीकंतथादद्रूं शून्यतांनित्यसेविनाम्॥ इतिलघुमरिचादि तैलम्॥ ५६९॥

मिर्च निसोथ नागरमोथा हरताल मैनसिल देवदारु दारुहल्दी हल्दी जटामांसी कूट चन्दनलाल इन्दौरन कनेर मन्दारका दूध गोवर का रस ये सब तोला २ भर और सींगिया दो तोले इनके द्वारा चतुर्गुण जल औ द्विगुण गोमूत्र के साथ ६४ तोले कटु तेलको पाककरै इस तेलके लगाने से कुष्ठ सफेद कोढ़ बिवर्णता खुजली पामा सिध्म बिचर्चिका पुंडरीक दाद और त्वचाकी शून्यता इनका नाश होताहै इति लघुमरिचादि तैल॥ ५६९॥

मरिचंत्रिवृतादन्ती क्षीरमार्कंशकृद्रसः। देवदारुहरिद्रेद्वे मांसीकुष्ठंसचंदनम्॥ विशालाकरवीरञ्च हरीतालंमनःशिला। चित्रकंलांगलीमुस्तं विड़ंगञ्चक्रमर्द्दकः॥ शिरीषःकुटजोनिम्बःसप्तपर्णोमृतास्नुही श्यामाकोनक्तमालश्चखदिराबाकुचीवचा॥ ज्योतिष्मतीचपलिकाविषंद्विपलिकंभवेत्। आढ़कंकटुतैलस्यगोमूत्रञ्चचतुर्गुणम्। मृत्पात्रेलोहपात्रेचशनैर्मृद्वग्निनापचेत्। मरिचाद्यमिदंतैलंमहन्मुनिभिरीरितम्। भिषगेतेनतैलेनप्रक्षयेत्कौष्ठिकान्व्रणान्। पामाविचर्चिकादद्रूकण्डूविस्फोटकानिच॥ वलयःपलितंछायानीलंव्यङ्गंतथैवच। अभ्यङ्गेनप्रणश्यन्तिसौकुमार्य्यंचजायते॥ प्रथमेवयसिस्त्रीणांयासांनस्यम्प्रदीयते। तासामपिजरांप्राप्यनस्यातांस्खलितौस्तनौ॥ वलीवर्द्दस्तुरंगोवागजोवायुप्रपीड़ितः। त्रिभिरभ्यंजनैरस्यभवेन्मारुतविक्रमः॥ ज्योतिष्मतीडडमीजीनीमालकंगुनीतिलोके। इतिमहामरिचाद्यतैलम्॥ ५७०॥

मिर्च निसोथ जमालगोटेकी जड़ आकका दूध गोबर का रस देवदारु हल्दी दारुहल्दी जटामांसी कूट चन्दन इन्दौरन कनेर हरताल मैनसिल चीता करियारी नागरमोथा बायबिड़ंग पुआंड़ सिरसा कुरैया नींव छितवन गुर्च थूहड़ साँवा करंजुवा कत्था बकुची बच मालकांगनी ये सब चार २ तोले

और सींगिया ८ तोले इनके द्वारा चौगुने गोमूत्र के साथ ३७६ तोले कडू तेल को मृत्तिकाके पात्र में अथवा लोहे के पात्रमें धीरे२ मन्दाग्नि में पाककरे इसके लगानेसे कुष्ठ के व्रण पामा बिचर्चिका दाद खुजली बिस्फोट भुर्रीबालोंका पकना झाईं तथा मुहासे इनका नाशहोताहै और सुकुमारता होती है जो स्त्री युवावस्थामें इस तैलका नस्य लेती हैं उनके स्तन वृद्धावस्थामें भी पतित नहीं होते बैल घोड़ा अथवा हाथी यदि वायुसे पीड़ित होतो इसके तीनबार लगानेसे वायुके तुल्य वेगवान् हो-जाता है इति महामरिचादि तैल ॥ ५७० ॥

तालताप्यशिलासूतटङ्कणाःसिन्धुसंयुता । गन्धकोद्विगुणःसूतात्शङ्खचूर्णञ्चततस्सम् ॥ जम्बीराद्भिर्दिनंघृष्ट्वात्रिंशदंशंविषंक्षिपेत् । अस्यमाषद्वयंखादेन्माहिषीघृतसंयुतम् ॥ मध्वाज्यैर्वाकुचीबीजकर्षंलिह्यात्ततःपरम् । तालकेश्वरनामायंसर्वकुष्ठहरोरसः ॥ तालकेश्वरोरसः ॥ ५७१ ॥

हरताल सोनामक्खी मैनसिल पारा सोहागा तथा सेंधानोन येसब एक एकभाग और गंधक तथा शंखका चूर्ण दो दो भाग इन सब को जंभीरी नींबू के रसमें एक दिन खरल करके सबका तीसवां हिस्सा सींगिया मिलावै फिर भैंस के घीके साथ दो मासे इस रसको खाकर शहत औ घीके साथ एकतोले बकुचीके बीजचाटै इससे सबप्रकारके कुष्ठोंका नाश होताहै इति तालकेश्वररस ॥ ५७१ ॥

रसोबलिस्ताम्रमयःपुरोऽग्निशिलाजतुस्याद्विषतिन्दुकश्च।वराचतुल्यंगगनञ्चसर्वैः करञ्जबीजांश्चतुष्टयञ्च ॥ संमर्द्यसर्वंमधुनाघृतेनघृतस्यपात्रेनिहितंप्रयत्नात् । कर्षं भजत्प्रत्यहमस्यपथ्यंशाल्योदनंदुग्धमधुत्रयञ्च ॥ विशीर्णकर्णांगुलिनासिकोऽपिभवेदनेनस्मरतुल्यमूर्तिः । दारापरित्यागइहप्रदिष्टोजलौदनंतत्रनिबद्धमूले ॥ ताम्रमयःमारितंपुरोगुग्गुलुः । अग्निश्चित्रकम् ॥ बिषतिन्दुकःकुचिला । वरात्रिफला ॥ रसादित्रिफलांतं सर्वतुल्यम् । गगनमभ्रकम्॥करञ्जबीजंचपृथक्चतुर्गुणंरसात् । तत्रकुष्ठेबद्धमूलेसतिजलौदनमेवपथ्यम् ॥ इतिगलितकुष्ठारिरसः ॥ ५७२ ॥

पारा गन्धक तांबेकी भस्म लोहेकी भस्म गूगुल चीता शिलाजीत कुचिला त्रिफला ये सब एक एक भाग और अभ्रक तथा करंजुवा चार चार भाग इन सबकोघी और शहतमें मिलाके घीके पात्रमें रक्खै इसको एक तोले रोज खाय और भात दूध तथा शहतका पथ्यकरै इससे गले कान नासिका तथा अँगुली वालाभी कामदेवके समान सुन्दर होजाताहै इसमें मैथुनका त्याग करना चाहिये और कुष्ठके बहुत पुराने होजानेपर भात और पानीकाही पथ्य करै इति गलित कुष्ठारि रस ॥ ५७२ ॥

अथ सिध्मस्यचिकित्सा ॥

कुष्ठंमूलकबीजंप्रियङ्गवःसर्षपास्तथारजनी।एतत्केशरषट्कंनिहन्तिचिरकालजंसिध्मम्॥ इति केशरषट्कम् ॥ ५७३ ॥

सिध्म की चिकित्सा ॥

कूट मूली के बीज गोंदनी सरसों हल्दी इनके सेवन से बहुत पुराने सिध्मका भी नाश होताहै इति केसर षट्कम् ॥ ५७३ ॥

शिखरीरसेनपिष्टंमूलकवीजंप्रलेपतःसिध्म । क्षारेणवाकदल्यारजनीमिश्रेणनाशयति ॥ दार्वीमूलकवीजानितालकंसुरदारुच।ताम्बूलपत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् ॥ शङ्खचूर्णंतुशाणंस्यात्सर्वाण्येकत्रवारिणा ॥ प्रलेपयेत्प्रलेपोऽयंसिध्मनाशनमुत्तमम् । सिध्मस्यचिकित्सा ॥ ५७४ ॥

मूली के बीजोंको लटजीरे के रसमें पीसकर लेप करनेसे अथवा केलेके खारको हल्दीमें मिलाकर लेप करने से सिध्मका नाश होताहै दारुहल्दी मूली के बीज हरताल देवदारु औपान ये सब एक एक तोले शंखका चूर्ण ४ माशे इन सबको पानी में मिलाकर लेप करने से सिध्मका नाश होता है इति सिध्मकी चिकित्सा ॥ ५७४ ॥

अथ चर्म्मदलस्यचिकित्सा ॥

सलिलेचाम्रपेशीतुकिञ्चित्सैन्धवसंयुता । ताम्रपात्रेविनिर्घृष्टालेपाच्चर्म्मदलापहा॥ आम्रपेशीआमचूरासलिलेनतुशुष्काणिघृष्ट्वाधात्रीफलानिच । कराभ्यांसुखमाप्नोतिनरश्चर्म्मदलान्वितः ॥ ५७५ ॥

चर्मदल की चिकित्सा ॥

कुछ सेंधा नोन मिलाकर अमचुरको तांबेके पात्रमें पानीके साथ घिसकेलेप करनेसे चर्मदलका नाश होता है सूखे आवलों को पानीके साथ हाथों से घिसनेसे चर्मदलवाला सुखपाताहै ॥ ५७५ ॥

पामायाश्चिकित्सा ॥

जीरकस्यपलंपिष्टंसिन्दूरार्द्धपलंतथा । कटुतैलंपचेदाभ्यांसर्वपामाहरंपरम् ॥ जीरकाद्यंतैलम् ॥ ५७६ ॥

पामाकी चिकित्सा ॥

जीरा ४ तोले और सिंदूर २ तोले इनके द्वारा पाक कियाभया कटुतैल सब प्रकारकी पामा को नष्ट करता है इति जीरकादि तैल ५७६ ॥

मञ्जिष्ठात्रिफलालाक्षालाङ्गलीरात्रिगन्धकैः । चूर्णितैस्तैलमादित्यपाकंपामाहरंपरम्॥ आदित्यपाकतैलम् ॥ ५७७ ॥

मजीठ त्रिफला लाख करिहारी हल्दी गन्धक इनके द्वारा धूपमें पाक किया भया तेल पामाको नष्टकरताहै इतिआदित्यपाकतैल ॥ ५७७ ॥

सैन्धवञ्चचक्रमर्दश्चसर्षपाःपिप्पलीतथा।आरनालेनसंपिष्टाःपामाकण्डूहराःपराः५७८॥

सेंधानोन चकवड़ सरसों पीपल इनको कांजी में पीसकर लेप करने से पामा और खुजली का नाश होताहै ॥ ५७८ ॥

कच्छू चिकित्सा ॥

अर्कपत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्कसंयुतम् । नाशयेत्सार्षपंतैलंपामाकच्छूविचर्चिकाः ॥ अर्कतैलम् ॥ ५७९ ॥

कच्छूकी चिकित्सा ॥

हल्दी के कल्कके द्वारा आकके पत्तेके साथ पाक किया भया कड़ू तेल कच्छू और विचर्चिकाका नाश करतीहै इतिअर्क तैल ॥ ५७९ ॥

मनःशिलाःलङ्कासीसंगन्धाश्मसिन्धुजन्मच । स्वर्णक्षीरीशिलाभेदीशुण्ठीकुष्ठञ्च मागधी ॥ लाङ्गलीकरवीरञ्चदद्रुघ्नकृमिहानलः । दन्तीनिम्बदलञ्चैभिःपृथक्कर्षमितैर्भिषक् ॥ कल्कीकृत्यपचेत्तैलंकटुप्रस्थद्वयोन्मितम् । अर्कसेहुण्डदुग्धेनपृथक्पलमितेन च ॥ गोमूत्रस्याढ़केनापिशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । अभ्यङ्गेनहरेदेतत्कच्छूंदुःसाध्यतामपि ॥ पामानञ्चतथाकण्डूःत्वग्व्याधिरुधिरामयान् ॥ कच्छूराक्षसनामेदंतैलंहारितभाषितम् । इतिकच्छूराक्षसनामतैलम् ॥ ५८० ॥

मैनसिल हरताल कसीस गन्धक आंवलासार सेंधानोन मकोय पाषाण भेद सोंठ कूट पीपल करिहारी कनेर चकवड़ बायबिड़ंग चीता जमालगोटेकी जड़ और नींबकी पत्ती इन सबको एक २ तोले लेकर इनके कल्कके द्वारा १२८ तोले कडुवे तेलको चार२तोले आक तथा मदारके दूध और २५६ तोले गोमूत्रके साथ धीरे२पाक करै इस तेलके लगानेसे दुःसाध्य कच्छू पामा खुजली चर्मरोग औ रक्तदोषोंका नाशहोताहै इतिकच्छूराक्षस तैलहारीतोक्त ॥ ५८० ॥

कृतमालस्यपत्राणिनक्तमालदलानिच । द्रोणपुष्पीपलाशानिसर्षपाराजिकानिशा ॥ कुटजोमधुकंमुस्तंनागरंरक्तचन्दनम् । धात्रीयवानिकादारुकल्कएषप्रकल्पितः ॥ उद्वर्त्तनादयंकल्कःकटुतैलसमन्वितः । कण्डूंपामांहरन्त्येवशीतपित्तादिकान्गदान् ॥ ५८१ ॥

अमलतासके पत्ते करंजुवेके पत्ते गूमेकी पत्ती सरसों राई हल्दी कुरैया मुलेठी मोथा सोंठ लालचन्दन आंवला अजवाइन औ देवदारु इन सबके कल्कको कडुवे तेलमें मिलाकर उबटन लगानेसे खुजली पामा और शीत पित्तादि रोगोंका नाश होताहै ॥ ५८१ ॥

दद्रूचिकित्सा ॥

कुष्ठंकृमिघ्नोदद्रूघ्नोनिशासैन्धवसर्षपाः । अम्लपिष्टःप्रलेपोऽयंदद्रुकुष्ठनिषूदनः ॥ दूर्वामघासैन्धवचक्रमर्दकुठेरकाःकाञ्जिकतक्रपिष्टाः । त्रिभिःप्रलेपैरपिबद्धमूलंदद्रूञ्चकुष्ठञ्चबिनाशयन्ति।कुठेरकःववचीइतिलोके ॥ गण्डिलकास्यंतृणमपिसिद्धार्थकश्चस्नुहीपत्रम् । त्रयमपिसमभागंस्यादेषांद्विगुणस्तुदद्रुघ्नः ॥ अष्टगुणेगोतक्रेतानिप्रकृतानिसन्दध्यात्।दिवसत्रितयादूर्ध्वंसम्यङ्निःष्पेषयेत्तानि । वन्योपलेनघृष्ट्वाचदद्रूमालेपयेत्तेन ॥ सप्ताहाल्लेपोऽयंदद्रूमचिराद्विनाशयति । इतिदद्रूचिकित्सा ॥ ५८२ ॥

दद्रुकी चिकित्सा ॥

कूट वायविड़ंग चकवड़ हल्दी सेंधानोन सरसों इनको कांजीमें पीसकर लेप करने से दाद औ कुष्ठका नाश होताहै दूब पीपल सेंधानोन चकवड और बावची इनको कांजी और मट्ठेमें पीसकर तीनवार लेपकरनेसे जड़ पकड़ी भई दाद और कुष्ठका नाश होताहै गांड़र सरसों औ थूहड़के पत्ते ये समभाग इनका दूना चकवड़ इनको अठगुने गऊके मट्ठेमें भिगोवै तीनदिनके बाद पीसै विन वे कण्डेसे खुजलायकर दादमेंलेपकरै इसलेपसे सातदिनमें दादकानाशहोताहै इतिदद्रुचिकित्सा ५८२॥

अथ श्वित्रस्यचिकित्सा ॥

विभीतकत्वङ्मलयूजटानांक्वाथेनपीतंगुड़संयुतेन । अवल्गुजंबीजमपाकरोतिश्वित्रा

णिकृच्छ्राण्यपिपुण्डरीकम् ॥ मलयूःकाकोदुम्बरिका । अवल्गुजंसोमराजी । कुडवमव ल्गुजबीजंहरितालचतुर्थभागसाम्मिश्रम्।मनःशिलांतोलकार्द्धंगुञ्जाफलमग्निमूलञ्च॥ मूत्रेणगवांपिष्टंसवर्णताकारकंश्वित्रे । श्वेतंकुष्ठंव्रजत्यस्तंपक्षार्द्धेनाधिकेनवा ॥ गिरिकं र्ण्यास्तुकृष्णायामूलेनपरिलेपितम् ॥ गिरिकर्णीनीलाअपराजिता॥क्काथःसवाकुचीचूर्णो धात्रीखदिरसारयोः ॥ शङ्खेन्दुकुन्दधवलंश्वित्रंसंसेवितोहरेत्।मथितेनपिवेच्चूर्णंकाकोदु म्बर्य्यवल्गुजम् । तैलाक्तोघर्म्मसेवीस्यात्तक्राशीश्वित्रहृद्भवेत् ॥ मथितंनिर्जलंविलोडि तंदधि । तक्रञ्चतुर्थांशजलयुतंवस्त्रपूतंदधि ॥ चतुःपलंसोमराज्याःखदिरस्यपलंतथा । पटोलमूलंत्रिफलात्रायमाणादुरालभा ॥ कल्कार्थंकटुकञ्चापिकार्षिकानूसूक्ष्मपेषितान् । पलद्वयंकौशिकस्यशुद्धस्यात्रप्रदापयेत् ॥ सिद्धंसर्पिरिदंश्वित्रंहन्यादम्भइवानलम् । अ ष्टादशानांकुष्ठानांपरमञ्चैतदौषधम्॥सोमराजीघृतंनामनिर्म्मितंब्रह्मणापुरा । लोकानामु पकारायश्वित्रकुष्ठादिरोगिणाम्॥सोमराजीघृतम्इतिकुष्ठनिदानचिकित्साधिकारः५८३

शिवत्रकी चिकित्सा ॥

वहेड़ेकी छाल और कठिया गूलरकी जड़ इनके काढ़ेमें गुड़डालकर वकुचीके चूर्णकोपियै इससे पुण्डरीक और कष्टसाध्य श्वित्रका नाश होताहै बकुची आधसेर हरताल आधपाव और मैनसिल घुंघुची तथा चीता छै २ माशे इनको गोमूत्र में पीस कर लेपकरने से श्वित्रका नाशहोताहै नी- ली बिष्णुक्रांता की जड़के लेप करने से श्वेतकुष्ठ १५ अथवा कुछअधिक दिन में नष्ट होताहै आँवले और खैरसारके काढ़ेमें बकुचीका चूर्ण मिलाकर पीने से शंख इन्दु और कुन्दके समान श्वेतभी श्वेत कुष्ठ नष्टहोता है कठियागूलर और बकुची के चूर्ण को जलरहित मथे भयेदही के साथपिये और तेल लगायके धूपमें बैठे तथाचतुर्थांश जलसहित कपड़े में छानेभये दहीको खाय तो श्वित्रका नाश होताहै सोलह तोले वकुची चारतोले खैरसार और तोले तोले भर परवल की जड़ त्रिफला त्रायमाणा जवासा तथा कुटकी और आठतोले गूगुल शुद्ध इनके द्वारा पाक कियाभया घी श्वित्रऔ अठारह प्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरता है इतिसोमराजी घृत इतिकुष्ठनिदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ५८३ ॥

अथ शीतपित्ताधिकारः । तत्रशीतपित्तस्य विप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकां संप्राप्तिमाह ॥

शीतमारुतसम्पर्कात्प्रवृद्धौकफमारुतौ । पित्तेनसहसम्भूयवहिरन्तर्विसर्पतः ॥ पि पासाऽरुचिहल्लासदेहसादाङ्गगौरवम् । रक्तलोचनतातेषांपूर्व्वरूपस्यलक्षणम् ॥ शीत मारुतसम्पर्कात्पित्तेनस्वहेतुदुष्टे नसम्भूयसङ्गम्यवहि स्त्वचिअन्तःरुधिरादौविसर्प्प तःप्रसरतः ॥ ५८४ ॥

शीत पित्तका अधिकार शीतपित्त के दूरवाले और निकटवाले कारणसहित संप्राप्ति ॥

शीतल वायुके लगनेसे वढ़ेभये कफ और बायु अपने कारणोंसे दूषित पित्तके साथ मिलकरत्वचा

में और रुधिर आदिकों में फैलते हैं शीतपित्त होनेके पहले तृषा अरुचि मतली देह में पीड़ा देहका भारीपन और नेत्रोंकालाल होना येलक्षण होते हैं॥ ५८४॥

शीतपित्तस्य लक्षणमाह॥

वरटीदष्टसंस्थानःशोथःसञ्जायतेवहिः। सकण्डूतोदबहुलश्छर्दिज्वरविदाहवान्॥ वाताधिकतमंविद्याच्छीतपित्तमिमंभिषक्॥ ५८५॥

शीत पित्तका लक्षण॥

जिसरोग में खुजली तथा पीड़ासहित बरैयाके काटे के समान त्वचा में शोथहोता है उसे शीत पित्त कहतेहैं इसमें रोगीज्वर छर्दि और दाहसे पीड़ितहोताहै और इसमें बायु अधिकहोताहै॥५८५॥

उदर्दस्य लक्षणमाह॥

सोत्संगैश्चसरागैश्चकण्डूमद्भिश्चमण्डलैः।शैशिरःश्लेष्मबहुलउदर्दइतिकीर्त्तितः॥ सोत्संगैर्मध्यनिम्नैः। शशिरःशिशिरर्त्तुभवः॥ ५८६॥

उदर्दका लक्षण॥

खुजली युक्त रक्तवर्ण और बीचमें गहरे मंडलोंको उदर्द कहते हैं ये शिशिर ऋतुमें उत्पन्न होताहै और इसमें कफ अधिक होताहै॥ ५८६॥

कोठोत्कोठयोः लक्षणमाह॥

असम्यग्वमनोदीर्णःपित्तश्लेष्माण्णनिग्रहैः। मण्डलानिसकण्डूनिरागवन्तिवहूनि च॥ सकोठः सानुबन्धस्तुसप्राज्ञैरुत्कोठइतिकथ्यते॥ ५८७॥

कोठ और उत्कोठ का लक्षण॥

अच्छेप्रकार बमन न होने से बढ़े भये पित्त और श्लेष्मा के रोकने से खुजलीयुक्त रक्तवर्ण और बहुत से मंडल होतेहैं उन्हें उत्कोठ कहतेहैं और यदि येही कभी प्रकटहों और कभी अदृश्य होय तो उत्कोठ कहलाताहै॥ ५८७॥

शीतपित्तोदर्दकोठउत्कोठ चिकित्सा॥

शीतपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः। त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्चप्रशस्यते॥ अभ्यङ्गःकटुतैलेनसेकश्चोष्णेनवारिणा। त्रिफलांक्षौद्रसंयुक्तांखादेच्चनवकार्षिकम्॥ नवकार्षिकोयथा। त्रिफलापुरकृष्णानांत्रिपञ्चेकांशयोजिता। गुटिकाशीतपित्तार्शोभगन्दरवतांहिता॥ सितामधुकसंयुक्तागुड़मामलकैःसह। यवानींखादयेच्चापिसव्योषक्षारसंयुताम्॥ आर्द्रकस्यरसःपेयःपुराणगुड़संयुतः। शीतपित्तापहःश्रेष्ठोवह्निमान्द्यविनाशनः॥ सिद्धार्थरजनीकल्कैःप्रपुन्नाटतिलैःसह। कटुतैलेनसंमिश्रमेतदुद्वर्त्तनंहितं॥ सगुडंदीप्यकंयस्तुखादेत्पथ्यान्नभुङ्नरः। तस्यनश्यातिसप्ताहादुदर्दःसर्व्वदेहजः॥ ५८८॥

शीतपित्त उदर्द कोठ और उत्कोठ की चिकित्सा॥

शीतपित्तमें परवल नीम और रूसा इनकेद्वारा बमन त्रिफला गूगुल और पीपल इनकेद्वारा बिरेचन कड़वे तेल से अभ्यंग (बदनमें लगाना) और गरम जल से परिषेक हितहै शहत युक्त त्रिफला

अथवा नवकार्षिक गूगुल का सेवन करै नवकार्षिक गूगुल जैसे त्रिफला तीन कर्ष गूगुल पांचकर्ष और पीपल एक कर्ष इनकी गोलीं शीतपित्त बवासीर और भगंदरवालोंको हित है शक्कर मुलेठी गुड़ आंवला अजवाइन त्रिकटु और जवाखार इनका सेवन करै अदरख के रसमें पुराना गुड़ डालकर पीनेसे शीत पित्त और मंदाग्नि का नाश होताहै सरसों हल्दी और चकवड इनको कडुवे तेलमें मिला के उबटन लगाना हितहै शीतपित्तमें गुड़के साथ अजवाइन खानेसे पथ्य भोजन करनेवालों का सब देहमें भया भी उदर्द रोग नष्ट होताहै ॥ ५८८ ॥

घृतंपीत्वामहातिक्तंशोणितंमोक्षयेत्तथा । स्निग्धस्विन्नस्यसंशुद्धिमादौकोठेसमाचरेत् ॥ उत्कोठेशुद्धदेहस्यकुष्ठघ्नींकारयेत्क्रियाम्। निंबस्यपत्राणिसदाघृतेनधात्रीविमिश्राणिनरःप्रयुज्यात् ॥ विस्फोटकण्डूकृमिशीतपित्तमुदर्दकोठञ्चकफञ्चहन्यात्॥ ५८९ ॥

कोठरोगमें पहले महातिक्त घी पीकर रुधिर निकलवावे और स्निग्ध तथा स्वेद युक्त मनुष्यको वमन विरेचनादि के द्वारा शुद्ध करे उत्कोठ में बमनादि के द्वारा शरीर के शुद्ध होजानेपर कुष्ठ नाशक चिकित्सा करे नीमकी पत्ती और आंवलोंको घीके साथ सदैव सेवन करने से बिस्फोट खुजली कृमि शीतपित्त उदर्द कोठ और कफ का नाश होताहै ॥ ५८९ ॥

आर्द्रकंप्रस्थमेकंस्याद्गोघृतंकुडवद्वयम् । गोदुग्धंप्रस्थयुगलन्तदर्द्धंशर्करामता ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंविश्वभेषजम् । चित्रकञ्चविडङ्गञ्चमुस्तकंनागकेशरम् ॥ त्वगेलापत्रकर्चूरंप्रत्येकंपलमात्रकम् । विधायपाकंविधिवत्खादेत्तत्पलसम्मितम् ॥ इदमार्द्रकखण्डोऽयंप्रातर्भुक्तंव्यपोहति । शीतपित्तमुदर्दञ्चकोठमुत्कोठमेवच ॥ यक्ष्माणंरक्तपित्तञ्चकासंश्वासमरोचकम् । वातगुल्ममुदावर्त्तंशोथंकण्डूंक्रिमीनपि ॥ दीपयेदुदरेवह्निंबलंवीर्य्यंचवर्द्धयेत् । वपुःपुष्टिंप्रकुरुतेतस्मात्सेव्यमिदंसदा ॥ इत्यार्द्रकखण्डम् इतिशीतपित्तोदर्दकोठोत्कोठचिकित्सा ॥ ५९० ॥

अदरख ६४ तोला गौका घी आधसेर गौकादूध १२८ तोला शक्कर ६४ तोला और पीपल पिपलामूर मिर्च सोंठ चीता बायबिडंग मोथा नागकेसर दालचीनी इलायची तेजपात तथा नरकचूर ये सब चार चार तोले इन सबका बिधि पूर्वक पाक करके चार तोले प्रातःकाल रोज खाय इस से शीत पित्त उदर्द कोठ उत्कोठ यक्ष्मा रक्तपित्त खांसी श्वास अरुचि बायगोला उदावर्त सूजन खुजली तथा कृमि इनका नाश होता है उदरकी अग्नि दीप्त होती है बल तथा बीर्य्य बढ़ता है और शरीर पुष्ट होता है इसलिये इसका सदा सेवन करना चाहिये इति आर्द्रकखण्ड इति शीत पित्त उदर्द कोठ उत्कोठ की चिकित्सा समाप्त ॥ ५९० ॥

विसर्पाधिकारस्तत्रविसर्पविप्रकृष्टनिदानंसंख्यांनिरुक्तिञ्चाह ॥

लवणाम्लकटूष्णादिसेवनाद्दोषकोपतः । विसर्प्पःसप्तधाज्ञेयःसर्वतःपरिसर्पणात् ॥ आदिशब्दाच्चरकोक्तहरितशाकशण्डाकीप्रभृतीनांग्रहणम् । सप्तधात्वंविवृणोति वातिकःपैत्तिकश्चैवकफजःसान्निपातिकः । चत्वारएतेवीसर्प्पावक्ष्यन्तेद्वन्द्वजास्त्रयः ॥ आग्नेयोवातपित्ताभ्यांग्रन्थ्याख्यःकफवातजः।यस्तुकर्दमकोघोरःसपित्तकफसम्भवः ५९१॥

बिसर्पका अधिकार बिसर्पका निदान संख्या और निरुक्ति ॥

नोन खटाई कड़ुवई उष्ण बस्तु और हरित शाक शंडाकी प्रभृति के सेवन से कुपित बातादि दोषों के द्वारा सात प्रकारका बिसर्प रोग उत्पन्न होताहै यह रोग सब शरीरमें फैलताहै इससे इसको बिसर्प कहतेहैं बातज पित्तज कफज सन्निपातज बात कफज बातपित्तज औ पित्तकफज इन भेदोंसे सात प्रकारका है इनमें से बातपित्तज को आग्नेय बातकफज को ग्रन्थि और पित्तकफज को कर्दमक् कहते हैं ॥ ५६१ ॥

विसर्पदोषदूष्याणिसंगृह्याह ॥

रक्तंलसीकात्वङ्मांसंदूष्यंदोषास्त्रयोमलाः। विसर्प्पाणांसमुत्पत्तौहेतवःसप्तधातवः ॥ त्रयोमलाःवातपित्तकफाःदोषादूषकाइत्यर्थः । अन्यथादोषामलाइत्यत्रपुनरुक्तिदोषोलगिष्यते ॥ ५९२ ॥

बिसर्प के दोष और दूष्य ॥

रुधिर लसीका त्वचा तथा मांस ये दूष्यहैं और बात पित्त तथा कफ दोष अर्थात् दूषकहैं यही सात धातु बिसर्पों की उत्पत्ति में कारण हैं ॥ ५९२ ॥

वातिकस्यलक्षणमाहतत्रवातात्परीसर्प्पोवातज्वरसमव्यथः । शोफस्फुरणनिस्तोदभेदायामार्तिहर्षवान् ॥ परीसर्प्पोविसर्प्पः । वातज्वरसमव्यथःशिरोहृद्गात्रोदरशूलादियुक्तः । भेदःविदारणेनेवव्यथा । आयामःआकर्णनेवव्यथा ॥ ५९३ ॥

बातज बिसर्प के लक्षण ॥

बातज बिसर्प में शिर हृदय अंग तथा उदर में शूल आदिक बात ज्वर के लक्षण सूजन अंगोंका फड़कना सूजी गड़ने कीसी पीड़ा फाड़ने कीसी पीड़ा खींचने कीसी पीड़ा और रोमहर्ष ये सब लक्षण होते हैं ॥ ५९३ ॥

पैत्तिकमाह ॥

पित्ताद्द्रुतगतिःपित्तज्वरलिङ्गोऽतिलोहितः । द्रुतगतिःशीघ्रप्रसरणशीलः ॥ ५९४ ॥

पित्तज बिसर्प के लक्षण ॥

पित्तजविसर्प बहुतशीघ्रफैलनेवाला पित्तज्वरके लक्षणोंसे युक्त और बहुत रक्तवर्णवालाहोताहै॥५९४॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

कफात्कण्डूयुतःस्निग्धः कफज्वरसमानरुक् ॥ ५९५ ॥

कफजविसर्पके लक्षण ॥

कफज विसर्प खुजली युक्त स्निग्ध और कफज्वरके लक्षणोंसे युक्त होताहै ॥ ५९५ ॥

सान्निपातिकमाह ॥

सन्निपातसमुत्थश्चसर्वरूपसमन्वितः ॥ ५९६ ॥

सन्निपातज विसर्पके लक्षण ॥

सन्निपातज विसर्पमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं ॥ ५९६ ॥

वातपैत्तिकमाह ॥

वातपित्ताज्ज्वरच्छर्दिमूर्च्छातीसारतृड्भ्रमैः। अस्थिभेदोऽग्निसदनतमसारोचकैर्युतः

करोतिसर्वमंगञ्चदीप्तांगारावकीर्णवत् । यंयंदेशंविसर्पश्चविसर्प्पतिभवेत्ससः ॥ शीतांगारःसितोनीलोरक्तोवाशूपचीयते । अग्निदग्धइवस्फोटैःशीघ्रगत्वाद्द्रुतञ्चसः ॥ मर्म्मानुसारिवीसर्प्पःस्याद्वातातिबलस्ततः। व्यथेतांगंहरेत्संज्ञांनिद्राञ्चश्वासमीरयेत्॥ हिध्माञ्चसगतोऽवस्थामीदृशींलभतेनरः। क्वचिच्छर्म्मारतिग्रस्तोभूमिशय्यासनादिषु ॥ चेष्टमानस्ततःक्लिष्टोमनोदेहसमुद्भवाम्। दुःप्रबोधोऽश्नुतेनिद्रांसोऽग्निवीसर्प्पउच्यते ॥ स्फोटैःउपचीयतइत्यन्वयः । मर्म्मानुसारीउदरहृदयानुसारीहरेत्विसर्प्पइत्यन्वयःहिध्मां हिक्कांईरयेत्ऊर्ध्वमुपरिप्रेरयेत्।मनोदेहसमुद्भवांनिद्रांमरणरूपाम्।अश्नुतेप्राप्नोति ५९७॥

बातपित्तज विसर्प के लक्षण ॥

बातपित्तज विसर्प में ज्वर छर्दि मूर्च्छा अतीसार तृषा भ्रम हड़फूटन मन्दाग्नि तमकश्वास तथा अरुचि होतीहै और संपूर्ण शरीर जलतेभये अंगारोंसे आच्छादितके समान दाहयुक्त होताहै विसर्प जिस २ स्थानमें फैलताहै वह २ स्थान काला नीला अथवा रक्तवर्ण होताहै और आगसे जलेभये केसमान स्फोटकोंसे व्याप्त होताहै वायुके बलवान् होनेके कारणसे यहरोग उदर हृदय आदि मर्मोंमें फैलताहै इसलिये शरीरमें पीड़ा संज्ञाका न होना निद्राका नाश श्वास तथा हिचकी ये सब होते हैं इसप्रकारकी अवस्थाको प्राप्त मनुष्य बेचैनहोकर भूमि शय्या तथा आसन आदिमें कहींभी सुखनहीं पाताहै फिर चेष्टा करनेसे क्लेशितभया मृत्युको प्राप्त होताहै इसे अग्नि विसर्प कहते हैं ॥ ५९७ ॥

वातश्लेष्मिकंग्रन्थिविसर्प्पमाह ॥

कफेनरुद्धःपवनोभित्वातंबहुधाकफम्। रक्तञ्चवृद्धरक्तस्यत्वक्शिरास्नायुमांसगम्॥ दूषयित्वातुदीर्घाणांवृत्तस्थूलखरात्मनाम्। ग्रन्थीनांकुरुतेमालांरक्तानांतीव्ररुग्ज्वराम्॥ श्वासकासातिसारांश्चशोषहिक्कावमिभ्रमैः । मोहवैवर्ण्यमूर्च्छांगभंगाग्निसदनैर्युतः ॥ इत्ययंग्रन्थिवीसर्प्पोवातश्लेष्मप्रकोपजः । कफेनस्वहेतुदुष्टेन । पवनोऽपिस्वहेतुदुष्टः। तेनायंवातश्लैष्मिकः। तंकफंबहुधाभित्वारक्तंवादूषयित्वेत्यन्वयः । त्वगादिकमितिरक्तस्यविशेषणम्॥ ५९८ ॥

वातकफज ग्रन्थि विसर्प के लक्षण ॥

अपने कारणसे दूषित कफके द्वारारुकीभई अपने कारणोंसे दूषित वायुकफको अनेक प्रकारसे भिन्नकरके और अधिक रुधिरवाले मनुष्य की त्वचा शिरा स्नायु तथा मांस में प्राप्त रुधिरको दूषित करके दीर्घ गोल स्थूल खुरखुरी रक्तवर्ण तथा अत्यंत पीड़ा युक्त ग्रन्थियों की मालाको उत्पन्न करती है रोगज्वर श्वास खांसी अतीसार शोष हिचकी छर्दि भ्रम मोह विवर्णता मूर्च्छा अंगभंग तथा मन्दाग्निसे युक्त होताहै इसको ग्रंथिविसर्प्प कहतेहैं यहबात कफके कोपसे उत्पन्न होताहै ॥५९८ ॥

अथ पित्तश्लेष्मिकंकर्दमाख्यंविसर्प्पमाह ॥

कफपित्तज्वरस्तम्भनिद्रातन्द्राशिरोरुजाः। अंगावसादविक्षेपप्रलापारोचकभ्रमाः।मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोऽस्थ्नांपिपासेन्द्रियगौरवाः॥आमोपवेशनंलेपःस्रोतसाञ्चविसर्प्पति ॥

प्रायेणामाशयंगृह्णन्नेकदेशंनचातिरुक् । पीड़कैरवकीर्णोऽतिपीतलोहितपाण्डुरैः ॥ स्निग्धोऽसितोमेचकाभोमलिनःशोफवान्गुरुः। गम्भीरपाकःप्राज्योष्मास्पृष्टःक्लिन्नोऽव दीर्य्यते ॥ पङ्कत्वक्शीर्णमांसश्चस्पृष्ठस्नायुशिरागणः । शवगन्धीचवीसर्प्पःकर्दमाख्य मुशन्तितम् ॥ सचसर्पतिएकदेशमित्यन्वयः। पीड़कैःपीड़ाकारिभिः । अवकीर्णःव्याप्तः। असितःकृष्णः। मेचकःरूक्षकृष्णः। प्राज्योष्माप्रचुरोष्मा । स्पृष्टःक्लिन्नोऽवदीर्य्यते। स्पृष्टःसन्नार्द्रोभवतिविदीर्य्यते। पङ्कत्वक्कर्दमवर्णत्वक्यत्रसः। शीर्णमांसःगलितमांसः। अतएवस्पृष्टस्नायुशिरागणः ॥ ५९९ ॥

पित्तकफजकर्दमविसर्प्प के लक्षण ॥

कफपित्तज विसर्प में ज्वरस्तंभ निद्राकी अधिकता तंद्रा शिरकीपीड़ा अंगोंमें पीड़ा अंगोंका गिर-कना बकना अरुचि भ्रम मूर्छा मन्दाग्नि हड़फूटन तृषा इन्द्रियोंका भारीपन आंवगिरना और स्रोतों का लिपा भयासा मालूमहोना येलक्षण होतेहैं यह बिसर्प्प प्रायः आमाशयमें उत्पन्नहोकर शरीरके किसी एकस्थानमें फैलताहै इसमें बहुत पीड़ानहीं होती यह अत्यंत पीत रक्त अथवा पांडुवर्ण पिड़िकाओं से व्याप्त स्निग्ध कृष्ण वर्ण रुक्ष कृष्ण मलिन तथा भारी शोथ युक्त होताहै गंभीर पाक अत्यंत ऊष्मा युक्त स्पर्श करने से गीलासा मालूम होने वाला फटने वाला कीचके तुल्य वर्ण युक्त त्वचा वाला होताहै मांस गलजाताहै इसी से स्नायु तथा शिरा दिखाई पड़ने लगती है और मुर्देकी सी दुर्गंधि आती है इसे कर्दम कहते हैं ॥ ५९९ ॥

अथ क्षतजञ्चविसर्प्पमाह ॥

वाह्यहेतोःक्षतात्क्रुद्धःसरक्तंपित्तमीरयन् । विसर्प्पमारुतःकुर्य्यात्कुलत्थसदृशैश्च तम् ॥ स्फोटैःशोथज्वररुजादाहाढ्यंश्यावशोणितम् । वाह्यहेतोःशस्त्रप्रहारव्यालदन्त नखाद्यागन्तुहेतोः ॥ श्यावशोणितंकृष्णवर्णरक्तम् ॥ ६०० ॥

क्षतज बिसर्प के लक्षण ॥

शस्त्र प्रहार सर्प्प दांत तथा नख आदिकरके भये क्षतसे कुपित बायु रुधिर सहित पित्तको दूषित करतीभई कुल्थीके समान स्फोटकोंसे युक्त शोथ ज्वर पीड़ा तथा दाह सहित कृष्ण वर्ण वाले विसर्प्प को उत्पन्न करती है ॥ ६०० ॥

उपद्रवानाह ॥

ज्वरातिसारौवमथुस्त्वग्मांसदरणक्लमाः।अरोचकविपाकौचविसर्प्पाणामुपद्रवाः॥६०१॥

बिसर्प्प के उपद्रव ॥

अतीसार छर्दि त्वचा तथा मांसका फटना ग्लानि अरुचि औ बिपाक ये बिसर्प्पके उपद्रवहैं ॥६०१॥

साध्यत्वादिकमाह ॥

सिद्ध्यन्तिवातकफपित्तकृत्ताविसर्प्पाः सर्वात्मकःक्षतकृतश्चनासिद्धिमेति । पित्ता-त्मकोऽञ्जनवपुश्चभवेदसाध्यः कृच्छ्राश्चमर्म्मसुभवंतिहिसर्वएव ॥ पित्तात्मकोऽञ्जन

वपुःपित्तजःसचकज्जलवर्णःसर्वएवसध्याअपि । इतिविसर्पनिदानम् ॥ ६०२ ॥

बिसर्प्प के साध्यादि लक्षण ॥

बातज पित्तज और कफज बिसर्प्प साध्य होताहै सन्निपातज तथा क्षतज बिसर्प्प असाध्य होताहै और यदि पित्तज बिसर्प्प कृष्णवर्ण होतो असाध्यहै मर्मस्थान में भये सम्पूर्ण बिसर्प्प असाध्यहोते हैं इति बिसर्प्प निदान ॥ ६०२ ॥

अथ विसर्प्पचिकित्सा ॥

विरेकवमनालेपसेचनास्रविमोक्षणैः । उपाचरेद्यथादोषान्विसर्प्पानविदाहिभिः ६०३॥

बिसर्प्प की चिकित्सा ॥

विरेचन बमन लेप परिषेक रक्तमोक्षण और अबिदाही औषधों के द्वारा दोषोंके अनुसार बिसर्प्प की चिकित्सा करे ॥ ६०३ ॥

रास्नानीलोत्पलंदारुचन्दनंमधुकंबला । घृतक्षीरयुतोलेपोवातवीसर्पनाशनः ॥ चन्दनमत्ररक्तंप्रयोज्यम्कशेरुशृङ्गाटकपद्मगुन्द्रैःसशैवलैःसोत्पलकर्द्दमैश्च । वस्त्रान्तरैः पित्तकृतेविसर्प्पेलेपोविधेयःसघृतःसुशीतः ॥ त्रिफलापद्मकोशीरसमङ्गाकरवीरकम् । नलमूलमनन्ताचलेपःश्लेष्मविसर्प्पके ॥ समङ्गालज्जालूःवातपित्तप्रशमनमग्निविसर्प्पणे हितम् ॥ वातश्लेष्महरंकर्म्मग्रन्थिवीसर्प्पणेहितम् । पित्तश्लेष्मप्रशमनंहितंकर्दमसंज्ञकम् ॥ त्रिदोषजेक्रियांकुर्य्यात्विसर्पेत्रितयापहाम् ॥ ६०४ ॥

रास्ना नीलोत्पल देवदारु लालचंदन मुलेठी और बरियारा इनसबको घी और दूध मिलाकर लेप करने से वातज बिसर्प्प नष्टहोताहै कसेरू सिंघाड़ा पद्म गोंदनी सिवार उत्पल और काई इनको घीमें मिलाय के कपड़े में रखके शीतल लेप पित्तजबिसर्प में करे त्रिफला पद्माख खस लजालू कनेर नल की जड़ और सारिवा इनकालेप कफज बिसर्प्प में करे बात पित्तनाशक अग्नि बिसर्प्प में वातकफ नाशक ग्रन्थि बिसर्प्पमें पित्त कफनाशक कर्दम बिसर्प्प में और त्रिदोषनाशक चिकित्सा सन्निपातज बिसर्प्पमें करे ॥ ६०४ ॥

शिरीषयष्टीनतचन्दनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्ठवालैः लेपोदशाङ्गःसघृतःप्रयोज्योविसर्प्प कुष्ठज्वरशोथहारी ॥ नतंतगरम्चन्दनंरक्तंग्राह्यम् । इतिदशाङ्गोलेपः ॥ ६०५ ॥

सिरसा मुलेठी तगर लालचंदन इलायची जटामांसी हल्दी दारुहल्दी कूट और सुगन्धबाला इनको घीमें मिलाकर लेपकरने से बिसर्प्प कुष्ठ ज्वर तथाशोथ का नाश होता है इति दशांग लेप॥६०५॥

परिषेकःप्रलेपाश्चशस्यन्तेपञ्चवल्कलैः । पद्मकोशीरमधुकैःचन्दनैर्वाविसर्पणे ॥ भूनिम्बवासाकटुकापटोलीफलत्रयंचन्दननिम्बसिद्धः । विसर्पदाहज्वरशोथकण्डूविस्फोटतृष्णावमिहृत्कषायः ॥ कुष्ठेषुयानिसर्पींषिव्रणेषुविविधेषुच । विसर्पेतानियोज्यानिसेकालेपनभोजनैः ॥ ६०६ ॥

बिसर्प्प में पंचवल्कलके द्वारा अथवा पद्माख खस मुलेठी तथा लालचंदनके द्वारा लेप और परिषेक श्रेष्ठहै चीता रूसा कुटकी परवल त्रिफला लाल चन्दन तथा नींब इनका काढ़ा बिसर्प्प दाह ज्वर शोथ खुजली बिस्फोटक तृषा तथा छर्द्दिको नष्ट करता है जो घृत कुष्ठ और नाना प्रकार के

व्रणों में कहे गहे हैं वे सब बिसर्प्प में परिषेक लेप तथा भोजनके द्वारा प्रयोग करने चाहिये ॥ ६०६ ॥

करञ्जसप्तच्छदलाङ्गलीकस्नुह्यर्कदुग्धानलभृंगराजैः । तैलंनिशामूत्रविषैर्विपक्वंविसर्पविस्फोटविचर्चिकाघ्नम् इतिकरञ्जतैलम् ॥ ६०७ ॥

करंजुवा छितवन करिहारी थूहड़ और आककादूध चीता भंगरा हल्दी गोमूत्र तथा सिंगिया इन सबकेद्वारा पाकक्रियाभया तैलविसर्प्प विस्फोटतथा विचर्चिकाकोनष्ट करताहै इतिकरंजतैल॥६०७॥

कुष्ठामयस्फोटमसूरिकोक्तचिकित्सयाप्याशुहरेद्विसर्पान् । सर्वान्विपक्वान्परिशोध्य धीमान्व्रणक्रमेणोपचरेद्यथोक्तम् ॥ इतिविसर्पचिकित्सा ॥ ६०८ ॥

कुष्ठ विस्फोट औरमसूरिकामें कहीभयी चिकित्साकेद्वारा विसर्प्पनष्ट होताहै यदि विसर्प्प पकजायतो पीप निकालकर व्रणमेंकही भई चिकित्साकरै इति विसर्प्पचिकित्सा ॥ ६०८ ॥

अथ स्नाय्वऽधिकारस्तत्रस्नायुरोगस्यविप्रकृष्टंसामान्यलक्षणमाह ॥

शाखासुकुपितोदोषःशोथंकृत्वाविसर्पवत् । भित्त्वैवतंक्षतेतत्रसोष्ममांसंविशोष्यच ॥ कुर्य्यात्तन्तुनिभंसूत्रंतत्पिण्डैस्तक्रशक्तुजैः । शनैःशनैःक्षताद्यातिछेदात्तत्कोपमावहेत् ॥ तत्पाताच्छोथशान्तिःस्यात्पुनःस्थानान्तरेभवेत् । सस्नायुइतिविख्यातःक्रियोक्तात्रविसर्पवत् ॥ बाह्वोर्यदिप्रमादेनत्रुटयतेजङ्घयोरपि । सङ्कोचंखञ्जताञ्चापिछिन्नोनूनंकरोत्यसौ स्नायुरोगनिदानम् ॥ ६०९ ॥

स्नायुरोगका अधिकार स्नायुरोगका सामान्य लक्षण ॥

शाखाओंमें कुपितदोष विसर्प्पके तुल्य शोथको उत्पन्न करके घावको उत्पन्नकरताहै और उसघाव के मांसको सुखाकर ऊष्मा सहितदोष सूत्रके समान करदेता है वहमट्ठे तथा सत्तूके पिंडोंसे धीरे २ घावसे बाहर निकलताहै ये टूटने से बड़ा दुःखदायी होताहै डोरे के गिरपड़ने परशोथ शान्त होजाता है और फिर दूसरी जगह निकलताहै इसे स्नायुरोग कहतेहैं इसमें विसर्प्प कीसी चिकित्सा करै जो असावधानतासे भुजा अथवा जंघाओं में भया सूत्रटूट जाताहै तो हाथ सिकुड़ जाते हैं और पैर खंज (लूला)होजातेहैं इति स्नायुरोगनिदान ६०९ ॥

स्नायुरोगस्यचिकित्सा ॥

स्नेहस्वेदप्रलेपादिकर्म्मकुर्य्याद्यथोचितम् । रामठंशीततोयेनपीतंस्नायुकरोगनुत् ॥ स्वेदात्स्नायुकमत्युग्रंभेकःकाञ्जिकसाधितः । तद्वद्व्बूलजंबीजंपिष्टंहन्तिप्रलेपनात् ॥ गव्यंसर्पिःत्र्यहंपीत्वानिर्गुण्डीस्वरसंत्र्यहम् ॥ पिबेत्स्नायुकमत्युग्रंहन्त्यवश्यंनसंशयः मूलंसुषव्याहिमवारिपिष्टंपानादिदंतन्तुकरोगमुग्रम् ॥ शान्तिंनयेत्सव्रणमाशुपुंसांगन्धर्वगन्धेनघृतेनपीत्वा । गन्धर्वगंधेनगंधर्वगन्धोऽस्यास्तीतिसगन्धर्वगन्धःअश्वगंधः तेनअतिविषमुस्तकभार्गविश्वौषधपिप्पलीविभीतकयः । चूर्णमिदंतन्तुघ्नंपुंसांउष्णेन वारिणापीतम् ॥ शिग्रुमूलदलैःपिष्टैःकाञ्जिकेनससैन्धवैः । लेपनंस्नायुकव्याधेःशमनंपरमंमतम् ॥ अहिंस्रमूलकल्केनतोयपिष्टेनयत्नतः । लेपसम्बन्धनात्तन्तुर्निःसरेन्नैवसंशयः ॥ स्नायुकस्यचिकित्सा ॥ ६१० ॥

स्नायु की चिकित्सा ॥

स्नेह स्वेद तथाप्रलेप आदि चिकित्सा स्नायुरोगमें यथा योग्य करै शीतल जलकेसाथ हींगको पीनेसे स्नायुरोगकानाशहोताहै कांजीमें मेढकको सिद्धकरके स्वेदनकरनेसे स्नायुरोगका नाश होताहै बबूलके बीजोंको पीसकर लेपकरनेसे स्नायुरोग नष्टहोताहै तीनदिन गऊके दूधको पीकर तीनदिन निर्गुंडी के रसको पीने से बहुत बढ़ाभी स्नायुरोग नष्टहोता है करेलेकी जड़को ठंढेपानी में पीस के पीनेसे स्नायुरोग नष्ट होताहै करेलेकी जड़को असगंध घृतके साथ पीनेसे व्रणसहित स्नायु रोगनष्ट होताहै अतीस मोथा भारंगी सोंठ पीपल तथाबहेड़ा इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीनेसे स्नायु रोग नष्ट होताहै कांजी तथा सेंधेनिमक के साथ सहजनकी जड़को पीसकर लेपकरने से स्नायु रोगनष्ट होताहै कुलेखाड़ा की जड़को पानीमें पीसकर लेपकरनेसे सूत्रनिकल जाताहै इति स्नायु चिकित्सा ॥ ६१० ॥

अथ विस्फोटाधिकारस्तत्रविस्फोटकस्याविप्रकृष्टंनिदानपूर्बिकांसंप्राप्तिमाह ॥

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च।तथर्तुदोषेणविपर्य्ययेणकुप्यन्तिदोषाःपवनादयस्तु ॥ त्वचमाश्रित्यतेरक्तंमांसास्थीनिप्रदुष्यच । घोरान्कुर्वन्ति विस्फोटान्सर्वान्ज्वरपुरःसरान् ॥ ऋतुदोषेणऋतुहेतुकशीतोष्णादीनामतियोगेन । विपर्य्ययेणऋतूचिताहारविहारवैपरीत्येन ॥ त्वचमाश्रित्यत्वाचिविस्फोटान्कुर्वन्तीत्यर्थः । ज्वरपुरःसरान्ज्वरपूर्वान् ॥ ६११ ॥

विस्फोट का अधिकार विस्फोट के दूरवाले कारणों सहित संप्राप्ति ॥

कटु खट्टा तीखा उष्ण विदाही रूखा तथा क्षार वस्तुओं से अजीर्णमें भोजनसे धूपसे ऋतु संबंधी शीत उष्ण आदिके अधिक सेवन से और ऋतुओंमें यथा योग्य आहार विहारन होनेसे कुपित वात आदि दोष रक्त मांस तथा हड्डियोंको दूषित करके त्वचामें भयंकर विस्फोटकोंको उत्पन्नकरतेहैं इनमें पहले ज्वर होताहै ॥ ६११ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

अग्निदग्धाइवस्फोटाःसज्वरारक्तपित्तजाः । क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः ॥ रक्तपित्तजाःएतेनसर्वेषुविस्फोटकेषुरक्तपित्तयोःप्रधानकारणत्वम् । यथाशूलेषुवातस्यतथावातानुगतिरपिबोद्धव्या । तथाचभोजः । यदारक्तञ्चपित्तञ्चवातेनानुगतंत्वचि । अग्निदग्धनिभान्स्फोटानकुरुतःसर्व्वदेहगान् ॥ ६१२ ॥

विस्फोटकों का पूर्वरूप ॥

रक्तपित्त से उत्पन्न आगसे पड़ेभये फफोलेके समान देहके किसीभागमें अथवा सर्वत्र जो फफोले पड़ते हैं उन्हें विस्फोटक कहतेहैं सबप्रकारके विस्फोटकों में रक्तऔर पित्त प्रधान कारणहै और शूल रोगके समान वायुभी साथ रहताहै ऐसाही भोजनेभी कहाहै कि जब वायु सहितरक्त औरपित्त त्वचा में आगसे पड़ेभये फफोलों के समान विस्फोटकों को संपूर्ण शरीरमें उत्पन्न करते हैं ६१२ ॥

अथ वातिकमाह । शिरोरुक्शूलभूयिष्ठंज्वरतृट्पर्ववेदनम् ॥ सकृष्णवर्णताचेति वातविस्फोटलक्षणम् । शूलंतोदरूपम् ॥ ६१३ ॥

बातजविस्फोटके लक्षण ॥

वातज विस्फोटमें शिरमें पीड़ा सुजीगड़ने कीसीपीड़ा ज्वर तृषा पोरोंमें हड़फूटन और कृष्ण वर्णता ये लक्षण होतेहैं ॥ ६१३ ॥

अथपैत्तिकमाह ॥

ज्वरदाहरुजापाकस्रावतृष्णासमन्वितम् । पीतलोहितवर्णञ्चपित्तविस्फोटलक्षणम् ६१४॥

पित्तज बिस्फोट के लक्षण ॥

पित्तज विस्फोठ में ज्वर दाह पीड़ा पकना बहना तृषा और पीत तथा रक्तवर्णता ये लक्षण होतेहैं ॥ ६१४ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

छर्द्यरोचकजाड्यानिकण्डूकाठिन्यपाण्डुताः । यस्मिन्नरुक्चिरात्पाकःसविस्फोटःकफात्मकः ॥ जाड्यम्जड़त्वमङ्गानाम् ॥ ६१५ ॥

कफज बिस्फोट के लक्षण ॥

कफज बिस्फोट में छर्दि अरुचि जड़ता खुजली कठोरता पीलापन पीड़ाका न होना और देर में पकना ये लक्षण होतेहैं ॥ ६१५ ॥

कफपैत्तिकमाह ॥

कण्डूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतैश्चकफपैत्तिकः ॥ ६१६ ॥

कफ पित्तज बिस्फोट के लक्षण ॥

कफ पित्तज बिस्फोट में खुजली दाह ज्वर तथा छर्दि होती है ॥ ६१६ ॥

अथवातपित्तमाह ॥

वातपित्तकृतोयस्तुतत्रस्यात्तीव्रवेदना ॥ ६१७ ॥

बातपित्तज बिस्फोट के लक्षण ॥

बात पित्तज बिस्फोट में अत्यन्त पीड़ा होती है ॥ ६१७ ॥

वातश्लैष्मिकमाह ॥

कण्डूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम् ॥ ६१८ ॥

बात कफज बिस्फोट के लक्षण ॥

वात कफज बिस्फोट में खुजली गीले कपड़ेसे ढकाभयासामालूमहोना और भारीपनहोताहै६१८॥

सन्निपातिकमाह ॥

मध्येनिम्नोन्नतान्तश्चकठिनःस्वल्पपाकवान् । दाहरागतृषामोहच्छर्दिमूर्च्छारुजज्वरः ॥ प्रलापोवेपथुर्मूर्च्छासोसाध्यश्चात्रिदोषजः । मोहोविपरीतंज्ञानम्मूर्च्छासर्व्वथाज्ञानशून्यता ॥ ६१९ ॥

सन्निपातज बिस्फोटके लक्षण ॥

सन्निपातज बिस्फोट में फफोले बीचमें गहरे किनारों में उठेभये रक्तवर्ण कठोर तथा स्वल्प पकनेवाले होतेहैं रोगी दाह तृषा मोह (और का और समझना) मूर्छा (बिल्कुल ज्ञान न होना) छर्दि पीड़ा ज्वर बकना कांपना और तन्द्रा इनसे युक्त होताहै यह असाध्यहै ॥ ६१९ ॥

रक्तजमाह ॥

वेदितव्याश्चरक्तेनपैत्तिकेनचहेतुना । गुञ्जाफलसमारक्तारक्तस्रावाविदाहिनः ॥ नतेसिद्धिंसमायांतिसिद्धैर्योगशतैरपि । पैत्तिकेनहेतुनापित्तस्यहेतुनाकट्वादिनारक्तपित्तस्यतुल्यत्वात्सिद्धैर्योगशतैरपितेसिद्धिंनसमायान्ति ॥ ६२० ॥

रक्तज बिस्फोट के लक्षण ॥

रक्तज बिस्फोट पित्त के कटु आदि कारणों से उत्पन्नहोते हैं घुंघुची के समान रक्तवर्ण रुधिर बहने वाले और दाह युक्त होतेहैं ये सैकड़ों सिद्धयोगों से भी अच्छे नहीं होते ॥ ६२० ॥

विस्फोटकानाह ॥

एतेचाष्टविधावाह्याआन्तरोऽपिभवेदयम् । तस्मिन्नन्तर्व्यथातीव्राज्वरयुक्ताभिजायते ॥ यस्मिन्बहिर्गतेस्वास्थ्यंनवातस्यबहिर्गतिः । तत्रवातिकविस्फोटक्रियाकार्य्याविजानता ॥ ६२१ ॥

बिस्फोटकों का वर्णन ॥

ये आठ प्रकार के वाह्यविस्फोटकहोतेहैं और भीतर भी बिस्फोट होते हैं इनमें भीतर बहुत पीड़ा तथा ज्वर होताहै यदि बाहर आजाताहै तो स्वस्थता होतीहै और बातज आभ्यंतर बिस्फोट बाहरनहीं निकलताहै और इसमें बातज बिस्फोट कीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ६२१ ॥

अथोपद्रवानाह ॥

तृट्श्वासमांससंकोचदाहहिक्कामदज्वराः । विसर्पमर्म्मसंरोधास्तेषामुक्ताउपद्रवाः॥ मांससंकोचःमांसस्यशठितत्वम् । मर्म्मसंरोधोमर्म्मव्यथा ॥ तेषांविस्फोटानांकेचिदुपद्रवाणांलक्षणान्तरंप्रठन्ति । हिक्काश्वासोऽरुचिस्तृष्णासांगमर्द्दोहृदिव्यथा ॥ विसर्पज्वरहृल्लासाःविस्फोटानामुपद्रवाः ॥ ६२२ ॥

बिस्फोट के उपद्रव ॥

तृषा श्वास मांस का सिकुड़जाना दाह हिचकी मद ज्वर बिसर्प और मर्म्मों में पीड़ा ये बिस्फोटकों के उपद्रवहैं कोई२ बिस्फोटकों के उपद्रवोंके दूसरे लक्षण कहतेहैं जैसे हिचकी श्वास अरुचि तृषा शरीर तथा हृदय में पीड़ा बिसर्प ज्वर और मतली ये बिस्फोटों के उपद्रवहैं ॥ ६२२ ॥

साध्यत्वादिकमाह ॥

एकदोषोत्थितःसाध्यःकृच्छ्रसाध्योद्विदोषजः । सर्वरूपान्वितोघोरोह्यसाध्योभूर्य्युपद्रवः । विस्फोटनिदानम् ॥ ६२३ ॥

बिस्फोट के साध्यादि लक्षण ॥

एकदोषजबिस्फोट साध्य द्वन्द्वज बिस्फोटकष्टसाध्य और त्रिदोषज तथा अनेक उपद्रवों से युक्त बिस्फोटक असाध्य होताहै इति बिस्फोटक निदान ॥ ६२३ ॥

विस्फोटकस्यचिकित्सा ॥

विस्फोटेलङ्घनंकार्य्यंवमनंपथ्यभोजनम् ॥ यथादोषबलंवीक्ष्ययुक्तमुक्तंविरेचनम् ।

जीर्णशालियवामुद्गामसूराश्चाढ़कीतथा॥एतान्यन्नानिविस्फोटेहितानिमुनयोऽब्रुवन्६२४

बिस्फोटककी चिकित्सा ॥

बिस्फोटक में दोष के बलको देखकर लंघन वमन पथ्य भोजन तथा बिरेचन करना चाहिये पुराने चावल जौ मूंग मसूर तथा अरहर ये अन्न बिस्फोटक में हित हैं ॥ ६२४ ॥

द्वैपञ्चमूल्यौरास्नाचदार्व्युशीरंदुरालभा। गुडूचीधान्यकंमुस्तंएषांक्काथःपिवेन्नरः ॥ विस्फोटान्नाशयत्याशुसमीरणनिमित्तकान्। द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्ज्जूरपटोलारिष्टवासकैः॥ कटुकालाजदुःस्पर्शैःसितायुक्तंतुपैत्तिके। भूनिम्बसवचावासात्रिफलेन्द्रजवत्सकैः ॥ पिचुमर्द्दपटोलाभ्यांकफजेमधुयुक्शृतम्। किराततिक्तकारिष्टयष्ट्याह्वाम्बुदवासकैः ॥ पटोलपर्पटोशीरत्रिफलाकौटजान्वितैः।क्काथितैर्द्वादशांगन्तुसर्वविस्फोटनाशनम् ॥६२५॥

दशमूल रास्ना दारुहलदी खस जवासा गुर्च धनियां औरनागरमोथा इनके क्काथके पीनेसे बातज बिस्फोट शीघ्रही नष्ट होताहै दाख खंभारी खजूर परवल नींब रूसा कुटकी खील तथा जवासा इन के काढ़े में शक्कर डालकर पित्तज बिस्फोटमें पिये चिरायता बच रूसा त्रिफला इन्द्रजौ कुरैया नींब और परवल इनके काढ़े को शहत डालकर कफज बिस्फोट में पिये चिरायता नींब मुलेठी नागरमोथा रूसा परवल पित्तपापड़ा खस त्रिफला और इन्द्रजौ इनके काढ़े को पीनेसे सब बिस्फोटोंका नाश होता है इसे द्वादशांग कहते हैं ॥ ६२५ ॥

विस्फोटव्याधिनाशायतण्डुलाम्बुप्रयोजितैः। बीजैःकुटजवृक्षस्यलेपःकार्य्योविजानता॥छिन्नापटोलभूनिम्बवासकारिष्टपर्पटैः। खदिराब्दयुतैःक्काथोहन्तिविस्फोटकज्वरम् ॥ चन्दनंनागपुष्पञ्चसारिवातण्डुलीयकम्। शिरीषवल्कलंजातीलेपःस्याद्दाहनाशनः ॥ उत्पलंचन्दनंलोध्रउशीरंसारिवाद्वयम्। जलपिष्टेनलेपेनस्फोटदाहार्त्तिनाशनः॥ पुत्रजीवस्यमज्जानंजलेपिष्ट्वाप्रलेपयेत्। कालस्फोटंविषस्फोटंसद्योहन्तिसवेदनम् ॥ कक्षग्रन्थिगलग्रन्थिकर्णग्रन्थिंचनाशयेत्। हन्याच्चस्फोटकंताम्रंपुत्रजीवोविनाशयेत् ॥ इतिविस्फोटस्यचिकित्सा ॥ ६२६ ॥

इन्द्रजवों को चावल के धोवन में पीसकर लेप करने से बिस्फोट को नाश होता है गिलोय परवल चिरायता रूसा नींब पित्तपापड़ा खैरसार और नागरमोथा इनका काढ़ा बिस्फोट ज्वरका नाश करता है चंदन नागकेसर सारिवा चौराई सिरसे की छाल और चँबेली इनके लेपसे दाहका नाश होताहै उत्पलचंदन लोध खस और दोनों साऊँ इन सबको पानी में पीसकर लेप करनेसे स्फोटों के दाहका नाश होता है पतजिया की मींगी को जलमें पीसकर लेप करने से काले स्फोटक पीड़ा सहित स्फोटक कांख की गांठ गले की गांठ कान की गांठ और ताम्र वर्ण स्फोटकका शीघ्रही नाश होताहै इति बिस्फोट चिकित्सा ॥ ६२६ ॥

अथ फिरङ्गाधिकारः ॥

फिरङ्गसंज्ञकेदेशेबाहुल्येनैवयद्भवेत्। तस्मात्फिरङ्गइत्युक्तोव्याधिर्व्याधिविशारदैः ६२७

फिरंगका अधिकार ॥

फिरंग देशमें यह रोग अधिकतासे होताहै इसवास्ते यह फिरंग कहलाताहै ॥ ६२७ ॥

विप्रकृष्टनिदानमाह ॥

गन्धरोगःफिरंगोऽयञ्जायतेदेहिनांध्रुवम् । फिरंगिनोऽङ्गसंसर्ग्गात्फिरंगिण्याप्रसंगतः ॥ व्याधिरागन्तुजोह्येषदोषाणामत्रसंक्रमः । भवेत्तल्लक्षयेत्तेषांलक्षणैर्भिषजांवरः ॥ फिरंगिण्याप्रसंगतइतिविशेषार्थम् ॥ ६२८ ॥

फिरंगरोगकेदूरवाले कारण ॥

फिरंगरोगवालेकेसंसर्गसे और फिरंगिनी स्त्रीकेसाथ प्रसंगकरनेसे यह फिरंग नाम गंधरोग पैदाहोताहै यह आगन्तुजरोगहै इसमें पीछेसेदोष मिलतेहैं दोषोंके अनुसार इसकेलक्षण जानने चाहिये॥६२८॥

रूपमाह ॥

फिरंगस्त्रिविधोज्ञेयोवाह्याभ्यन्तरतस्तथा । वहिरन्तर्भवश्चापितेषांलिंगानिचब्रुवे ॥ तत्रवाह्यःफिरंगःस्याद्विस्फोटसदृशोऽल्परुक् । स्फुटितोव्रणवद्वैद्यःसुखसाध्योऽपिसःस्मृतः ॥ सन्धिष्वाभ्यन्तरःसस्यादामवातइवव्यथाम् । शोथञ्चजनयेदेषकष्टसाध्योबधैःस्मृतः ॥ ६२९ ॥

फिरंगके लक्षण ॥

फिरंगतीन प्रकारका होताहै जैसे वाह्य आभ्यन्तर और बहिरंतर्भव इनके लक्षण कहते हैं इनमें से वाह्य फिरंग विस्फोटकसमान थोड़ी पीड़ावाला फटाभया और व्रणयुक्त होता है यह सुखसाध्य है आभ्यन्तर फिरंग संधियों में होता है और आम बातके समान पीड़ा तथा शोथसे युक्त होता है यह कष्टसध्य होता है ॥ ६२९ ॥

अथोपद्रवानाह ॥

कार्श्यंबलक्षयोनासाभंगोवह्नेश्चमन्दता। अस्थिशोषोऽस्थिवक्रत्वंफिरंगोपद्रवाअमी६३०

फिरंगके उपद्रव ॥

कृशता बलका नाश नाकका बैठना मंदाग्नि हड्डियोंका सूखना हड्डियों का टेढ़ाहोना ये फिरंग के उपद्रव हैं ॥ ६३० ॥

साध्यत्वादिकमाह ॥

वहिर्भवोभवेत्साध्योनवीनोनिरुपद्रवः। अभ्यन्तरस्तुकष्टेनसाध्यःस्यादयमामयः ॥ वहिरन्तर्भवोजीर्णःक्षीणस्योपद्रवैर्युतः । व्याप्तोव्याधिरसाध्योऽयमित्याहुर्मुनयःपुरा ॥ फिरंगनिदानम् ॥ ६३१ ॥

फिरंगके साध्यादि लक्षण ॥

नवीन तथा उपद्रवरहित वाह्यफिरंग साध्य है आभ्यन्तर फिरंग कष्टसाध्य है जीर्ण अवस्था में क्षीण मनुष्योंका उपद्रवों से युक्त और बाहर भीतर व्याप्त बहिरंतर्भव फिरंग असाध्य है इति फिरंग निदान ॥ ६३१ ॥

अथफिरंगस्यचिकित्सा ॥

फिरंगसंज्ञकंरोगंरसःकर्पूरसंज्ञकः। अवश्यंनाशयेदेतदूचुःपूर्वचिकित्सकाः ॥ लिख्यतेरसकर्पूरप्राशनेविधिरुत्तमः । अनेनविधिनाखादेन्मुखेशोथंनविन्दति ॥ गोधूमचूर्ण

न्नीयविदध्यात्सूक्ष्मकूपिकाम् । तन्मध्येनिःक्षिपेत्सूतंत्रतुगुंजामितंभिषक् ॥ ततस्तु गुटिकांकुर्य्याद्यथानदृश्यतेवहिः । सूक्ष्मचूर्णेलवंगस्यतांवटीमवधूलयेत् ॥दन्तस्पर्शोयथा नस्यात्तथातामम्भसागिलेत् । ताम्बूलंभक्षयेत्पश्चाच्छाकाम्ललवणान्त्यजेत् ॥ श्र ममातपमध्वानंविशेषात्स्त्रीनिषेवणम् । इतिकर्पूररसः ॥ ६३२ ॥

फिरंगकी चिकित्सा ॥

रसकर्पूरनाम औषध खानेसे यह रोग निस्सन्देह नष्ट होताहै जिसप्रकारसे रसकर्पूरके खाने से मुखमें शोथ नहो उस बिधिको लिखते हैं गेहूँके आटेकी कुप्पी बनावै उसमें चाररत्ती पाराभरके ऐसी गोली बनावै किपारा न दिखाईदे फिर उस गोलीको लौंगके चूर्ण में लपेटले फिर पानी के साथ गोलीको निगलजावै और दांतन लगनेपावै पीछेसे पानखावै इस औषधके सेवनमें शाक खटाई लवण श्रम धूप मार्गगमन और बिशेश करके स्त्रीप्रसंगको छोड़दे इति कर्पूररस ॥ ६३२ ॥

पारदष्टङ्कमानःस्यात्खदिरष्टङ्कसंमितः । आकारकरभश्चापि ग्राह्यष्टङ्कद्वयोन्मितः ॥ टङ्कत्रयोन्मितंक्षौद्रंखल्वेसर्वंविनिःक्षिपेत् । संमर्द्यतस्यसर्वस्यकुर्य्यात्सप्तवटीर्भिषक् ॥ सरोगीभक्षयेत्प्रातरेकैकामम्बुनावटीम् । वर्जयेदम्ललवणंफिरंगस्तस्यनश्यति सप्त शालिवटी ॥ ६३३ ॥

पारा तथा खैर एक २ टंक अकरकरहा २ टंक और शहत ३ टंक इनसबको खरलमें घोटकरसात गोली बनावै प्रातःकाल एक गोली पानीके साथ रोजखाय और खटाई तथा नोनको त्यागदे इससे फिरंग नष्टहोताहै इतिसप्तशालिवटी ॥ ६३३ ॥

पारदःकर्षमात्रःस्यात्तावानेववहिगन्धकः । तण्डुलाश्चाक्षमात्राःस्युरेषांकुर्वीतिकज्जली म् ॥ तस्याःसप्तवटीःकुर्य्यात्ताभिर्धूमंप्रयोजयेत् । दिनानिसप्ततेनस्यात्फिरंगान्तोनसंश यः धूमप्रयोगः ॥ ६३४ ॥

पारा गन्धक तथा बायबिडंग इनको तोले २ भर लेके कजली करै फिर उसकी सात गोलीबांधे फिर एक २ गोलीका रोज धुंवां सात दिनतक लिवावे इससे फिरंगरोगका निस्सन्देह नाशहोता है इति धूमप्रयोग ॥ ६३४ ॥

पीतपुष्पबलापत्ररसैष्टङ्कमितंरसम् । हस्ताभ्यांमर्दयेत्तावद्यावत्सूतोनदृश्यते ॥ ततः संस्वेदयेद्धस्तावेवंवासरसप्तकम् । त्यजेल्लवणमम्लञ्चफिरंगस्तस्यनश्यति॥चूर्णयेन्निम्ब पत्राणिपथ्यानिम्बाष्टमांशिकाः । धात्रीचतावतीरात्रीनिम्बषोड़शभागिका ॥ शाणमान मिदंचूर्णमश्नीयादम्भसासह । फिरंगंनाशयत्येवबाह्यमाभ्यन्तरंतथा ॥ चोपचीनीभवंचू र्णंशाणमानंसमाक्षिकम् । फिरंगव्याधिनाशायभक्षयेल्लवणंत्यजेत् ॥ लवणंयदिवात्यक्तुं नशक्नोतियदाजनः । सैन्धवंसाहिभुञ्जीतमधुरंपरमंहितम् ॥ पारदःकर्षमात्रःस्यात्ताव न्मात्रंतुगन्धकम् । तावन्मात्रस्तुखदिरस्तेषांकुर्य्यात्तुकज्जलीम् ॥ रजनीकेशरंत्र्यो षरजुगंमंजवानिका । चन्दनद्वितयंकृष्णावासामांसीचपत्रकम् ॥ अर्द्धकर्षमितंसर्वंचूर्णं येत्प्रक्षिपेत् । तत्सर्वंमधुसर्पिर्भ्यांद्विपलाभ्यांपृथक्पृथक् ॥ मर्दयेद्थतत्खादेदर्द्ध

कर्षमितंनरः । व्रणःफिरंगरोगोत्थस्तस्यावश्यंविनश्यति ॥ अन्योऽपिचिरजातोऽपिप्रशाम्यातिमहाव्रणः । एतद्भक्षयाःशोथोमुखस्यान्तर्नजायते॥वर्जयेदत्रलवणमेकविंशतिवासरान् । फिरंगस्यचिकित्सा ॥ ६३५॥

पालेफूलके वरियारेके रसमें एक टंक पारेको हाथोंसे मलै जब पारा न दिखाईदे तब हाथों में स्वेद लेवै इसप्रकार सात दिन करै और नोन खटाई को छोड़देवै इससे फिरंगका नाशहोताहै नींबूके पत्ते ८ भाग हड तथा आंवला एक एक भाग हल्दी आधा भाग इनसबके चूर्णको जलके साथ चार माशे नित्य फांकनेसे भीतर तथा बाहरका फिरंग नष्टहोता है चोबचीनीके चूर्णको शहत के साथ चारमाशे खानेसे फिरंग रोग नष्टहोताहै इसके सेवन करनेवाला लवणको त्यागदे यदि न त्यागसकै तो सैंधानोन खाय इसमें मधुर सेवन हितहै पारा गन्धक और खैर इनकी कजली करके हल्दी नागकेसर दोनों जीरे अजवाइन लालचन्दन चन्दन दोनों इलायची पीपल बंशलोचन जटामांसी और तेजपात इन सबके आध२ तोले चूर्णको कजलीमें मिलावै फिर इन सबको दो दो तोले शहत और घीमें मिलावै इसको आधे तोले खानेसे फिरंग रोगके व्रणोंका नाशहोताहै तथा अन्य पुरानेमहाव्रण भी नष्टहोतेहैं इसके खानेवाले के मुखमें शोथ नहीं होताहै इसके सेवन करनेवालेको २१ दिनतक नोन न खानाचाहिये इति फिरंगरोग चिकित्सा ॥ ६३५ ॥

अथमसूरिकाधिकारमाह । तत्रमसूरिकायाविप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह॥

कट्वम्ललवणक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः । दुष्टनिष्यावशाकाद्यैःप्रदुष्टपवनोदकैः ॥ क्रूरग्रहेक्षणाच्चापिदेशेदोषसमुद्भवाः । जनयन्तिशरीरेऽस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः । मसूराकृतिसंस्थानाःपिड़कासाममूरिका । क्षारोयवक्षारादिः । विरुद्धाध्यशनाशनैःकट्वम्लादिविरुद्धान्नाशनैः । अथचअध्यशनाशनम् । अधिकमशनमध्यशनम् । दुष्टनिष्यावशाकाद्यैः दुष्टैर्निष्यावशाकमादिशब्दान्मध्वालुकादितैः ।प्रदुष्टपवनोदकैःसविषकुसुमादिसंसर्गात् । क्रुद्धग्रहेक्षणाच्चापिदेशेदेशेक्रूरग्रहाराहुशनैश्चरादयस्तेषामीक्षणाद्दष्टेः यस्मिन्देशेक्रूरग्रहदृष्टिस्तत्रापिमसूरिकोत्पत्तिरित्यर्थः । मसूराकृतिसंस्थानाःमसूरस्ययाआकृतिस्तद्वत्संस्थानमाकृतिर्यासांताः ॥ ६३६ ॥

मसूरिका का अधिकार । मसूरिकाके दूरवाले और निकटवालेकारणों समेत संप्राप्ति ॥

कटु खटाई लवण तथा क्षारभारी विरुद्धअन्नखानेसे अधिकभोजनसे दूषितनिष्यावशाक तथा मध्वालुकआदिके सेवनसे विष सहितपुष्पादिके संसर्ग द्वारा दूषितबायु जलके सेवनसे और देशमें क्रूरग्रहों की अशुभ दृष्टि पड़नेसे बातादि तीनों दोष दूषित रुधिरके साथ मिलकर मसूरके समान आकृति वाली पिड़िकाओंको उत्पन्न करतेहैं इनको मसूरिका कहते हैं ॥ ६३६ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

तासांपूर्वंज्वरःकण्डूगात्रभङ्गोऽरतिभ्रमः।त्वचिशोथःसवैवर्ण्योनेत्ररागस्तथैवच॥६३७॥

मसूरिकाका पूर्वरूप ॥

मसूरिका होनेके पहले ज्वर खुजली शरीरमें पीड़ा बेचैनी भ्रमत्वचामें शोथ विवर्णता और नेत्रों में ललाई होती है ॥ ६३७ ॥

वातजामाह ॥

स्फोटाःकृष्णारुणाःरूक्षाःतीव्रवेदनयान्विताः । कठिनाश्चिरपाकाश्चभवन्त्यनिलसम्भवाः ॥ सन्ध्यस्थिपर्व्वणांभेदःकाशःकम्पोऽरतिर्भ्रमः । शोषस्ताल्वोष्ठजिह्वानांतृष्णाचारुचिसंयुताः ॥ ६३८ ॥ बातज मसूरिका के लक्षण ॥

बातजमसूरिका में कृष्ण अथवा रक्तवर्ण रूखे अत्यंत पीड़ा युक्त कठोरतथा बहुत देरमें पकनेवाले स्फोटक होतेहैं रोगी संधि हड्डी तथा पोरों काटूटना खांसी कंप बेचैनी भ्रम तालु ओष्ठ तथा जीभका सूखना तृषा और अरुचि इनलक्षणों से युक्त होता है ॥ ६३८ ॥

पित्तजमाह ॥

रक्ताःपीताःशिताःस्फोटाःसदाहास्तीव्रवेदनाः । भवन्त्यचिरपाकाश्चपित्तकोपसमुद्भवाः ॥ विड्भेदश्चांगमदश्चेदाहस्तृष्णारुचिस्तथा । मुखपाकोऽक्षिपाकश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ॥ ६३९ ॥ पित्तजमसूरिका का लक्षण ॥

पित्तजमसूरिका रक्तपीत तथा कृष्णवर्ण दाहयुक्त तीव्रपीड़ा वाली और शीघ्र पकनेवाली होतीहैं इनमें मलभेद शरीरमें पीड़ा दाह तृषा अरुचि मुखका पकना आँखोंका लालहोना और तीव्रज्वरये लक्षणहोते हैं ॥ ६३९ ॥ रक्तजमाह ॥

रक्तजायांभवन्त्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः ॥ ६४० ॥

रक्तजमसूरिका के लक्षण ॥

रक्तजमसूरिकामें पित्तजमसूरिका के लक्षण होते हैं ॥ ६४० ॥

कफजमाह ॥

श्वेताःस्निग्धाभृशंस्थूलाकण्डूरामन्दवेदना । मसूरिकाःकफोद्भूताश्चिरपाकाःप्रकीर्त्तिता ॥ कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवं । हृल्लासससारुचिनिद्रातन्द्रालस्यसमन्विताः ॥ ६४१ ॥ कफजमसूरिका के लक्षण ॥

कफज मसूरिका श्वेत स्निग्ध अत्यंत स्थूल खुजली तथा स्वल्प पीड़ायुक्त और देरमें पकनेवाली होतीहैं इनमें लारका बहना शरीरकी आर्द्रता शिरमें पीड़ा देहका भारीपन मतली अरुचि निद्रा तन्द्रा तथा आलस्य ये लक्षण होते हैं ॥ ६४१ ॥

सन्निपातिकमाह ॥

निलाःचिपिटविस्तीर्णामध्येनिम्नामहारुजः । पूतिस्रावाश्चिरात्पाकाःप्रभूताःसर्व्वदोषजाः ॥ ६४२ ॥ सन्निपातजमसूरिका का लक्षण ॥

सन्निपातजमसूरिका नीलवण चिपटी फैलीभई बीचमेंदबी भई अत्यन्त पीड़ायुक्त दुर्गंधित पीप बहनेवाली बहुत देरमें पकनेवाली और बहुतसी होती हैं ॥ ६४२ ॥

ताःसप्तधातुगताःप्राह । तत्ररसस्थामाह ॥

मसूरिकास्त्वचंप्राप्तास्तोयबुद्बुदसन्निभाः । स्वल्पदोषाःप्रजायन्तेभिन्नास्तोयंस्रवन्ति च ॥ त्वचंप्राप्ताःत्वचछब्देनात्ररसउच्यतेरसाश्रयत्वात् ॥ ६४३ ॥

सप्तधातुगत मसूरिकाओं के लक्षण रसगत मसूरिका का लक्षण ॥

रसगत मसूरिका पानीके बुल्लों के समान होती हैं फटनेपर पानी बहता है और ये थोड़े दोष से होती हैं ॥ ६४३ ॥

रक्तस्थामाह ॥

रक्तस्थालोहिताकाराःशीघ्रपाकास्तनुत्वचः । साध्यानात्यर्थंदुष्टास्तुभिन्नारक्तंस्रवान्ति च ॥ साध्यारक्तस्थाइत्यर्थः । नात्यर्थदुष्टास्तुअत्यर्थंदुष्टशोणिताःपुनर्न्नसाध्याःकिन्तुकष्ट साध्याः ॥ ६४४ ॥

रक्तगत मसूरिकाका लक्षण ॥

रक्तगत मसूरिका रक्तवर्ण शीघ्र पकनेवाली पतली खालवाली और फटनेपर रुधिर बहनेवाली होती हैं ये साध्यहैं परंतु रुधिर के अत्यंत दूषित होनेपर कष्ट साध्य होतीहैं ॥ ६४४ ॥

मांसस्थामाह ॥

मांसस्थाःकठिनाःस्निग्धाःचिरपाकास्तनुत्वचः । गात्रशूलाऽनिशंकण्डूःमूर्च्छादाह तृषान्विताः ॥ ६४५ ॥

मांसगतमसूरिका के लक्षण ॥

मांसगत मसूरिका कठिन स्निग्ध देरमें पकने वाली मोटी त्वचा वाली निरन्तर शरीरमें पीड़ा खुजली मूर्च्छा दाह तथा पिपासा युक्त होतीहैं ॥ ६४५ ॥

मेदस्थामाह ॥

मेदोजामण्डलाकाराम्रदवःकिञ्चिदुन्नताः । घोरज्वरपरीताश्चस्थूलाःस्निग्धाःसवेद नाः ॥ संमोहाऽरतिसन्तापाःकश्चिदाभ्यांविनिस्तरेत् ॥ ६४६ ॥

मेदोगतमसूरिका के लक्षण ॥

मेदोगतमसूरिका मंडलाकार कोमल कुछ उठी भई स्थूल चिकनी तथा पीड़ा युक्त होती हैं इनमें रोगी मोह बेचैनी संताप तथा अत्यंत ज्वर युक्तहोताहै इनमें रोगी प्रायःनहीं बचताहै ६४६ ॥

अस्थिमज्जागतमाह ॥

क्षुद्रागात्रसमारूक्षाचिपिटाःकिञ्चिदुन्नता।मज्जोत्थाभृशसम्मोहावेदनारतिसंयुताः॥ भ्रमरेणवविद्धानिकुर्वन्त्यस्थीनिसर्वतः । छिन्दान्तसमंधामानिप्राणानाशुहरन्तिच ॥ गात्रसमाःगात्रतुल्यवर्ग्गाःचिपिटाःचिपटाकाराः। मज्जाग्रहणेनास्थ्नोऽपिग्रहणंतदाधारत्वा तूअतएवाग्रेभ्रमरेणवविद्धानिकुर्वन्त्यस्थानसर्वतइतिमर्म्मधामामिमर्मस्थानानि॥६४७॥

अस्थि तथा मज्जागत मसूरिका के लक्षण ॥

मज्जागत मसूरिका छोटी शरीर के समान वर्ण वाली रूखी चिपटी कुछ उठी भई होती हैं इनमें रोगी अत्यंत मोह पीड़ा तथा बेचैनी से युक्त होता है मज्जा से हड्डियोंका भी ग्रहण होताहै क्योंकि मज्जा हड्डियों में ही रहती है इसहीसे ये मसूरिका हड्डियों को भवँर से बिंधी भई के समान सब तरफ से करती हैं और मर्म स्थानों में छेदन के तुल्य पीड़ा को करती हैं तथा बहुत शीघ्रही प्राणों के हरने वाली होती हैं ॥ ६४७ ॥

शुक्रगतामाह ॥

पक्वाभापिड़कास्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः । स्तैमित्याऽरतिसंमोहदाहोन्मादस

मन्विताः॥ शुक्रगायांमसूर्य्यान्तुलक्षणानिभवन्तिहि। निर्दिष्टंकेवलंचिह्नजीवनंनतुदृश्य ते:॥ पक्काभाःपक्काकारानतुपक्काः। श्लक्ष्णाःकोमलाःनिर्दिष्टंकेवलंचिह्नंनत्वस्याश्चिकित्सायुक्तायतोजीवनंनदृश्यते॥ ६४८॥

शुक्रगत मसूरिका के लक्षण॥

शुक्रगत मसूरिका पकीसी मालूम होने वाली स्निग्ध कोमल अत्यंत पीड़ा युक्त होती हैं इनमें रोगी बेचैनी मोह दाह उन्मत्तता तथा शरीरका गीलापन इनसे युक्त होताहै शुक्रगत मसूरिका की चिकित्सा न करनी चाहिये क्योंकि इसमें रोगी कदापि नहीं जीता॥ ६४८॥

सप्ताप्येतादोषहेतुंविनानभवन्तिदोषमन्तरेणरसादिदुष्टेरसम्भवादित्यतआह। दोषमिश्रास्तुसप्तैता द्रष्टव्यादोषलक्षणैः॥ ६४९॥

दोषोंके विनाकुपित भये रसादिक दुष्टनहीं होते इसकारणसे ये सप्तधातुगत मसूरिका विनादोष के कारण भये नहीं होती तब जिस मसूरिका के साथ जो दोष कुपित हो उसके लक्षणों के द्वारा जाना जाता है॥ ६४९॥

अथ चर्म्मजामाह॥

कण्ठरोधोरुचिस्तन्द्रा प्रलापोऽरतिसंयुताः॥ दुश्चिकित्स्याः समुद्दिष्टाः पिड़काश्चर्म्मसंज्ञिताः॥ ६५०॥

चर्मजा मसूरिका का लक्षण॥

चर्मजा मसूरिकामें रोगी कंठका अवरोध अरुचि तन्द्रा बकना तथा बेचैनी इनसे युक्त होता है और ये अत्यन्त कष्ट साध्य है॥ ६५०॥

रोमान्तिकामाह॥

रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यःकफपित्तजाः।कासारोचकसंयुक्तारोमाञ्चज्वरपूर्विका ६५१॥

रोमान्तिका मसूरिका का लक्षण॥

रोमान्तिका मसूरिका रोम कूपोंके तुल्य उन्नत रक्तवर्ण इसमें रोगी खांसी तथा अरुचि से युक्त होताहै इसमें प्रथम ज्वर होताहै और यह कफ पित्त से होती हैं॥ ६५१॥

अथासाध्यत्वमाह॥

त्वग्गतारक्तगाश्चैवपित्तजाःश्लेष्मजास्तथा। श्लेष्मपित्तकृताश्चैव सुखसाध्या मसूरिकाः॥ एताविनापिक्रियया प्रशाम्यान्तशरीरिणाम्। त्वग्गतारसगताः। कष्टसाध्यतमाः प्राह। वातजावातपित्तोत्था वातश्लेष्मकृताश्चयाः। कष्टसाध्याअसाध्यास्तुयत्नादेताउपाचरेत्॥ अथासाध्याःप्राह॥ असाध्यासन्निपातोत्थास्तासांवक्ष्यामिलक्षणम्॥ प्रवालसदृशाःकाश्चित्। काश्चिज्जम्बुफलोपमाः॥ लोहजालसमाः काश्चिदतसीसफलसन्निभाः। आसांबहुविधावर्णाजायन्तेदोषभेदतः॥ प्रवालसदृशाइत्यादि। आसां प्रवालजम्बूफललोहगुटिकातसीफलसादृश्यंवर्णेन। अनुक्तवर्णग्रहणार्थमाह। आसांबहुविधावर्णे इति॥ ६५२॥

मसूरिका के साध्यादि लक्षण॥

रसगत रक्तगत पित्तज कफज तथा पित्त कफज मसूरिका सुख साध्य होती हैं और ये बिना

चिकित्साकेभी शान्त होजातीहैं बातज बात पित्तज बात कफज मसूरिका कष्ट साध्य होतीहैं इससे इनकी चिकित्सा यत्न पूर्वक करे सन्निपातज मूंगे जामुन लोहेका जाल तथा अतसीके फल के तुल्य वर्णवाली और दोषभेदसे नानाप्रकारके बर्णवाली मसूरिका असाध्य होती हैं ॥ ६५२ ॥

अपराश्चाऽसाध्याःप्राह ॥

कासोहिक्काप्रमेहश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ॥ प्रलापारतिमूर्च्छाश्चतृष्णादाहोऽतिघूर्णता ॥ दाहस्थानेदौर्गन्ध्यइतिचपाठः। मुखेनप्रस्रवेद्रक्तंतथाघ्राणेनचक्षुषा । कण्ठेघुघुरकंकृत्वाश्वसित्यत्यर्थदारुणम् ॥ मसूरिकाभिभूतस्ययस्यैतानिभिषग्वरैः । लक्षणानीहदृश्यन्तेनदेयंतस्यभेषजम् ॥ अतिघुर्णताअतिनिद्रा ॥ ६५३ ॥

अन्य असाध्य मसूरिकाके लक्षण ॥

जिस मसूरिका वालेके खांसी हिचकी प्रमेह अत्यन्त ज्वर प्रलाप बेचैनी मूर्च्छा तृषा दाह दुर्गंधि अतिनिद्रा मुखसे नाकसे तथा आंखोंसे रक्तका बहना कंठमें घुरघुराहटके साथ भयंकर श्वासलेना ये लक्षणहों बैद्य उसको औषध न देय ॥ ६५३ ॥

अथारिष्टमाह ॥

मसूरिकाभिभूतोथोभृशंघ्राणेननिःश्वसेत् । सभृशंत्यजतिप्राणान्तृष्णावान्वायुदूषितः ॥ वायुदूषितःअपतानकादिवातव्याधिदूषितः ॥ ६५४ ॥

मसूरिकाके अरिष्ट ॥

जो मसूरिकावाला नाकसे अधिक श्वासले तृषा युक्तहो और अपतानकआदि बातरोगों से पीडित हो वो निस्सन्देह मरजाताहै ॥ ६५४ ॥

मसूरिकाहेतुकंशोथविशेषमाह ॥

मसूरिकान्तेशोथःस्यात्कूर्परेमणिबन्धके । तथासफलकेवापिदुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ॥ दुश्चिकित्स्यःसुदारुणःदुश्चिकित्स्यःकृष्टसाध्यः । दुःशब्दोऽत्रनिषेधार्थःतेनासाध्यइत्येके ॥ ६५५ ॥

मसूरिकासे भया शोथ बिशेष ॥

मसूरिकाके अंतमें कोहनी कलाई तथा कंधोंपर भया शोथ कष्टसाध्य अथवा असाध्यहै॥ ६५५॥

काश्चिद्विनापियत्नेनसिध्यन्त्याशुमसूरिकाः ॥दृष्टाःकृच्छ्रतराःकाश्चित्काश्चित्सिद्ध्यन्तिवानवा॥काश्चिन्नैवतुसिध्यन्तिसाध्यमानाःप्रयत्नतः। इतिमसूरिकानिदानम् ॥६५६॥

कोई२ मसूरिका यत्नके बिनाही शीघ्र अच्छीहोजातीहैं कोई कष्टसाध्य होतीहैं कोई अच्छीहोती भीहैं नहींभी होती और कोई२ यत्नकरनेसेभी नहींअच्छीहोती हैं इति मसूरि का निदान ॥ ६५६ ॥

तत्रमसूरिकायाश्चिकित्सा ॥

मसूरिकायांकुष्ठेषुलेपनादिक्रियाहिता । पित्तश्लेष्मविसर्पोक्ताक्रियाचात्रप्रशस्यते ॥ हिलश्वेतचन्दनकल्कोत्थंहिलमोचीभवन्द्रवम् । पिबेन्मसूरिकारम्भेनैववाकेत्रलंरसम् ॥ हिलमोचिकाशाकविशेषः । हुरहुरेतिलोके । द्वेपञ्चमूल्यौरास्नाचधात्र्युशीरंदुरालभा ॥ साम्रतधान्यकंमुस्तंजयेद्वातमसूरिकाम् ॥ ६५७ ॥

मसूरिकाकी चिकित्सा ॥

कुष्ठमें और पित्तकफज बिसर्पमें कही भई लेपआदिक्रिया मसूरिकामें श्रेष्ठहै मसूरिकाके प्रारंभ में श्वेतचन्दनके कल्कके साथ हुरहुरेका रसपियै अथवा केवल हुरहुरेका रसपियै दशमूल रासना आंवला खस जवासा गिलोय धनियां और नागरमोथा ये सबबात मसूरिकाको नष्टकरते हैं ६५७॥

मञ्जिष्ठाबहुपात्प्लक्षशिरीषोदुम्बरत्वचः । वातजायांमसूर्य्याःस्यात्प्रलेपःसर्वतोहितः ॥ (बहुपाद्वटः) गुडूचीमधुकंद्राक्षामोरटंदाड़िमैःसह । पाककालेप्रदातव्यंभेषजंगुड़संयुतम् ॥ तेनकुप्यतिनोवायुःपाकंयान्तिमसूरिका । मोरटंरोक्षवंमूलम् । मसूरिकासुभुञ्जीतशालीन्मुद्गमसूरिकान् ॥ रसंमधुरमेवाद्यात्सैन्धवंचाल्पमात्रकम् ॥ ६५८ ॥

मंजीठ बड़ पकरिया सिरसा तथा गूलर इनकी छालका लेप बातज मसूरिकामें अत्यन्त हितहै मसूरिकाओंके पकने लगने पर गिलोय मुलेठी दाख ऊंखकीजड़ और अनार इनको गुड़के साथ सेवन करनेसे वात नहीं कुपित होताहै और मसूरिका पकजाती हैं मसूरिका रोगमें शालिधान्य मूंग मसूर मधुररस और थोड़ासा सेंधानोन खाना चाहिये ॥ ६५८ ॥

पटोलमूलंक्कथितंमोरटंस्वरसंतथा । पटोलमूलंक्कथितमित्यत्रपटोलंक्कथितश्चैवत्रापाठः॥आदावेवमसूर्य्यांतुपित्तजायांप्रयोजयेत् ॥ निम्बपर्प्पटकःपाठापटोलश्चन्दनद्वयम् । उशीरंकटुकाधात्रीतथावासादुरालभा ॥ एषोपानेश्रृतंशीतमुत्तमंशर्करान्वितम् । मसूर्य्यांपित्तजायान्तुप्रयोक्तव्यंविजानता ॥ दाहेज्वरेविसर्पेचव्रणेपित्ताधिकेऽपिच । मसूर्य्यो रक्तजानाशंयान्तिशोणितमोक्षणैः ॥ ६५९ ॥

पित्तज मसूरिकामें पहलेही परवलकी जड़का क्काथ और ऊंखकी जड़कारस पियै नींब पित्तपापड़ा पाढ़ परवल दोनों चन्दन खस कुटकी आंवला रूसा और जवासा इनके शीतल काढ़ेमें शक्कर डाल कर पित्तज मसूरिका दाह ज्वर विसर्प तथा अधिक पित्तवाले व्रणमें पियै रक्तज मसूरिका रुधिर निकलवानेसे नष्ट होती है ॥ ६५९ ॥

वासामुस्तकभूनिम्बत्रिफलेन्द्रयवासकम् । पटोलारिष्टकञ्चापिक्काथयित्वासमाक्षिकम् ॥ पिबेत्तेनप्रशाम्यन्तिमसूर्य्यःकफसम्भवाः । इन्द्रइन्द्रयवःशिरीशोदुम्बरत्वग्भ्यांखदिरारिष्टजैर्दलैः ॥ कफोत्थासुमसूरीषुलेपःपित्तोत्थितासुच ॥ ६६० ॥

रूसा मोथा चिरायता त्रिफला इन्द्रजौ जवासा परवल नींब इनके काढ़ेमें शहत डालकर पीने से कफज मसूरिका नष्ट होती हैं सिरसा तथा गूलर की छाल और खदिर तथा नींबकी पत्ती इनका लेपकफज और पित्तज मसूरिकाओं में हित है ॥ ६६० ॥

निम्बपर्पटकःपाठापटोलःकटुरोहिणी । चन्दने द्वेउशीरञ्चधात्रीवासादुरालभा ॥ एषनिम्बादिकःक्काथःपीतःशर्करयान्वितः । मसूरींसर्वजांहन्तिज्वरवीसर्पसंयुतान् ॥ उत्थितांप्रविशेद्याचतांपुनर्वाह्यतोनयेत् । काञ्चनारस्त्वचःक्काथस्ताप्यचूर्णावचूर्णितः ॥ ताप्यंसुवर्णमाक्षिकम् । धात्रीफलंसमधुकंक्कथितंमधुसंयुतम् ॥ मुखेकण्ठेव्रणेजातेगण्डूषा

र्थंप्रशस्यते ॥ अक्ष्णोःसेकंप्रशंसन्तिगवेधुमधुकाम्बुना । गवेधुर्गवेधुकागवडुयाइतिलोके ॥ मधुकंत्रिफलामूर्वादार्वीत्वङ्नीलमुत्पलम् । उशीरलोध्रमञ्जिष्ठाःप्रलेपाश्च्योतनेहिताः ॥ नश्यन्त्यनेनदृग्जातामसूर्य्योनभवन्तिच । प्रलेपञ्चक्षुषोदद्याद्बहुवारस्यवल्कलैः पञ्चवल्कलचूर्णैश्चक्लेदिनीमवधूलयेत् । भस्मनाकेचिदिच्छन्तिकेचिद्गोमयरेणुना ॥ सुषवीपत्रनिर्य्यासंहरिद्राचूर्णसंयुतम् । रोमन्तीज्वरवीसर्पव्रणानांशान्तयेपिवेत् ॥ ६६१ ॥

नींब पित्तपापड़ा पाढ़ परवल कुटकी दोनों चन्दन खस आंवला रूसा तथा जवासा इनसब के काढ़ेमें शक्कर डालकर पीनेसे ज्वर तथा बिसर्प सहित सब प्रकारकी मसूरिका नष्ट होती हैं और उठकर जो मसूरिका दबगईवो इससे फिर उभर आतीहै कचनार की छाल का काढ़ा सोनामक्खी का चूर्ण डालकर मसूरिका में हितहै आंवला और मुलेठी के काढ़ेमें शहत डालकर कुल्ला करना मुख तथा कंठमें भये व्रणमें श्रेष्ठहै गिरड़िया और मुलेठी के काढ़ेको नेत्रमें सींचना चाहिये मुलेठी त्रिफला मरोड़फली दारुहल्दी दालचीनी नीलोत्पल खस लोध और मजीठ इनके द्वारा लेप और चोभाहित है इससे नेत्रोंकी मसूरिका नष्ट होतीहैं और नई नहीं पैदाहोतीं लसोड़ेकी छाल का लेप नेत्रोंमें करना चाहिये पंचवल्कलके चूर्ण व भस्म से अथवा गोबर से क्लेदयुक्त मसूरिकाओंमें धूरा करना चाहिये करेले की पत्तीके रसमें हल्दीका चूर्ण डालकर पीनेसे रोमन्ती मसूरिका ज्वर बीसर्प तथा व्रण शान्त होते हैं ॥ ६६१ ॥

अथ मसूरिकायाभेदस्यशीतलायाअधिकारः ॥

देव्याशीतलयाक्रान्तामसूर्य्येवहिशीतला । ज्वरिणेचयथाभूताधिष्ठितोविषमज्वरः ॥ साचसप्तविधास्यातातासांभेदान्प्रचक्ष्महे ॥ ६६२ ॥

मसूरिका के भेद शीतला रोग का वर्णन ॥

शीतला देवीकरके अधिष्ठित मसूरिकाही शीतला है रोगीको भूतके चढ़ेहुये के समान बिषम ज्वर होताहै यह शीतला सात प्रकारकी हैं उनके भेद कहते हैं ॥ ६६२ ॥

ज्वरपूर्वाबृहत्स्फोटैःशीतलाबृहतीभवेत् । सप्ताहान्निसरत्येवसप्ताहात्पूर्णताव्रजेत् ॥ ततस्तृतीयेसप्ताहेशुष्यतिस्खलतिस्वयम् । तासांमध्येयदाकाचित्पाकंगत्वास्फुटेत्स्रवेत् ॥ तत्रावधूलनंकुर्य्याद्वनगोमयभस्मना । निम्बसत्पत्रशाखाभिर्मक्षिकामपसारयेत् ॥ जलञ्चशीतलंदद्याज्ज्वरेऽपिनतुतत्पचेत् । स्थापयेत्तंस्थलेपूतेरम्येरहसिशीतले ॥ नाशुचिःसंस्पृशेत्तन्तुनचतस्यान्तिकंव्रजेत् । बहवोभिषजोनात्रभेषजंयोजयन्तिहि ॥ केचित्प्रयोजयन्त्येवमतंतेषामथब्रुवे । येशीतलेनसलिलेनविपिष्यसम्यग्निम्बाक्षवीजसहितांरजनींपिवन्ती ॥ तेषांभवन्तिनकदाचिदपीहदेहेपीड़ाकराजगतिशीतलिकाविकाराः । मोचारसेनसहितंसितचन्दनेनवासारसेनमधुकंमधुकेनचाथ ॥ आदौपिवन्तिसुमनास्वरसेनमिश्रंतेनाप्नुवन्तिभुविशीतलिकाविकारान् । मोचारसेनकदलीस्तम्भजलेनमधकेनचाथअथवामधुना ॥ आदौपूर्वरूपेज्वरागमनमात्रेसुमनास्वरसेनजातीपत्रस्वरसेन ॥ ६६३ ॥

बडी शीतलामें पहले ज्वर बड़े स्फोट एकही सप्ताहमें उत्पत्ति तथा भरजाना तीसरे सप्ताहमें सूख जाना तथा गिर पड़ना ये लक्षण होतेहैं यदि कोई स्फोट पककर फूट जाय और बहने लगे तो बिनवे कंडेकी राख से धूरा करे नींबकी टहनीसे मक्षिकाओं को उड़ावै शीतल जल देवै ज्वर होने परभी उष्ण जल न देय रोगीको पवित्र मनोहर एकान्त तथा शीतल स्थान में रक्खै अशुद्ध मनुष्य उसके पास न जाय और नछुवै बहुतसे बैद्य इसमें औषध नहींदेते परन्तु कोई औषध देतेहैं उनकामत कहताहूं जो लोग नींब हल्दी तथा बहेड़ेको शीतल जलमें पीसकर पीतेहैं उनकी देहमें शीतला के बिकार कभी नहींहोतेकेलेके रसके साथ सफेदचन्दनके साथ रूसेके रसकेसाथ शहतके साथ अथवामालतीके रसमें जो पहले केवलज्वर आनेपर मुलेठी पीतेहैं वे पृथ्वीपर शीतलाके बिकारकोनहीं प्राप्तहोते६६३

शीतलासुक्रियाकार्य्याशीतिलारक्षयासह । बध्नीयान्निम्बपत्राणिपारितोभवनान्तरे ॥ कदाचिदपिनोकार्य्यमुच्छिष्टस्यप्रवेशनम् । स्फोटेष्वपिसदाहेषुरक्षारेणूत्करोहितः ॥ तेनतेशोषमायान्तिप्रपाकंनभजन्तिच । रक्षारेणूत्करःशुष्कगोमयभस्मचूर्णप्रक्षेपः ॥ चन्दनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह । एषांशीतकषायस्तुशीतलाज्वरनाशनः (शीतकषायोहिमः) जपहोमोपहारैश्चदानस्वस्त्ययनार्चनैः । विप्रगोशम्भुगौरीणांपूजनैस्तांशमंनयेत् ॥ स्तोत्रञ्चशीतलादेव्याःपठेच्छीतलनान्तिके । ब्राह्मणःश्रद्धयायुक्तस्तेनशाम्यन्तिशीतलाः ॥ स्कन्दउवाच । भगवन्देवदेवेश शीतलायास्तवंशुभम् । वक्तुमर्हस्यशेषेणविस्फोटकभयापहम् ॥ ईश्वरउवाच । वन्देहंशीतलांदेवींरासभस्थांदिगम्बराम् । यामासाद्यनिवर्त्तेतविस्फोटकभयंमहत् ॥ शीतले ! शीतले ! चेतियोब्रूयाद्दाहपीड़ितः । विस्फोटकभयंघोरंक्षिप्रंतस्यप्रणश्यति । यस्त्वामुदकमध्येतुधृत्वासंपूजयेन्नरः । विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यनजायते ॥ शीतले ! ज्वरदग्धस्यपूतिगन्धगतस्यच । प्रणष्टचक्षुषःपुंसस्त्वामाहुर्जीवितोषधम् ॥ नमामिशीतलांदेवींरासभस्थांदिगम्बरीम् । मार्जनीकलशोपेतांशूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ अस्यश्रीशीतलास्तोत्रस्यमहादेवऋषिःअनुपच्छन्दःशीतलादेवताशीतलोपद्रवशान्त्यर्थेजपेविनियोगः । शीतलेतनुजान्रोगान्नृणांहरसिदुस्तरान् । विस्फोटकविशीर्णानांत्वमेकामृतवर्षिणी ॥ गलगण्डग्रहारोगायेचान्येदारुणान्नृणाम् । त्वदनुध्यानमात्रेणशीतले ! यान्तितेक्षयम् ॥ नमन्त्रंनौषधंकिञ्चित्पापरोगस्यविद्यते । त्वमेकाशीतले ! धात्रीनान्योपश्यामिदेवताम् ॥ मृणालतन्तुसदृशींनाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् । यस्त्वांसञ्चिन्तयेद्देवि ! तस्यमृत्युर्नजायते ॥ अष्टकंशीतलादेव्यायःपठेन्तानवःसदा । विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यनजायते ॥ श्रोतव्यंपठितव्यञ्चनरैर्भक्तिसमन्वितैः । उपसर्गविनाशायपरंस्वस्त्ययनंमहत्॥शीतलाष्टकमेतद्धिनदेयंयस्यकस्यचित् । किन्तुतस्मैप्रदातव्यंभक्तिश्रद्धान्वितोहियः । इतिकाशीखण्डेशीतलाष्टकंस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ६६४ ॥

शीतलामें शीतला रक्षाकेसाथ चिकित्सा करै और घरके भीतर चारों तरफ नींबके पत्तेबांधै इसमें अपवित्रका प्रवेश कभी होना न चाहिये यदि स्फोटों में दाह होय तो बिन वे कंडेकी भस्म लगाने से

वेसूखजातेहैं और पकते नहींहैं चन्दन रूसा नागरमोथा गिलोय तथा दाख इनका शीतल काढ़ा शीतलाज्वर को नष्ट करता है जप होम बलिदान दान स्वस्त्ययन देवतापूजन ब्राह्मण गऊ महादेव गौरी इनके पूजन से शीतला शान्त होती हैं श्रद्धा युक्त ब्राह्मण शीतला के समीप शीतला स्तोत्रको पढ़ै इससे शीतला शान्त होती हैं ॥ ६६४ ॥

शीतलायाभेदानाह ॥

वातश्लेष्मसमुद्भूताकोद्रवाकोद्रवाकृतिः । तांकश्चित्प्राहपक्केतिसातुपाकंनगच्छति ॥ जलशूकद्रवाङ्गानिसाविध्यतिविशेषतः । सप्ताहाद्द्वादशाहाद्वाशान्तियान्तिविनौषधम् ॥ यदिवाभेषजंदद्यात्खदिराष्टकनिर्मितम् । कषायंहितदादद्यत्कोद्रवायाःप्रशान्तये ॥ कोद्रवाकोदवाइतिलोके उष्मणातूष्मजारूपासकण्डूस्पर्शनप्रिया । नाम्नापाणिसहाख्याता सप्तहाच्छुष्यतिस्वयम् ॥ उष्मजारूपाषडूष्मजाराजिकाकृतिः । अभौरीइतिलोकेवदन्ति तद्रूपापाणिसहापनिसहाइतिलोके ॥ ६६५ ॥

शीतला के भेद ॥

कोद्रवानाम शीतला कोदों के समान आकृतिवाली उसकोकोई पक्कीभई कहते हैं परन्तुवोपकती नहीं और वात कफसे उत्पन्न होती हैं जल शूकद्रवा नाम शीतला अंगोंको छेदती है सातदिन अथवा बारह दिनमें बिना औषधके शान्त होजाती है यदि औषध देवै तो खदिराष्टकका काढ़ा देवै और कोद्रवामेंभी खदिराष्टक काढ़ादेवै पाणिसहा नाम शीतला राईके समान आकृतिवाली छूनेसे सुखदेने वाली खुजली सहित तथा सातदिनमें सूखनेवाली होती है ॥ ६६५ ॥

चतुर्थीसर्षपाकारापीतसर्षपवर्णिनी । नाम्नासर्षपिकाज्ञेयाभ्यङ्गमत्रविवर्ज्जयेत् ॥ किञ्चिदूष्मनिमित्तनजायतेराजिकाकृतिः । एषाभवतिबालानांमुखंशुष्यतिचस्वयम् ॥ एषा दुःखकोद्रवाइतिलोकेख्याता । कोठवज्जायतेषष्ठीलोहितोन्नतमण्डला । ज्वरपूर्वाव्यथा युक्ताज्वरस्तिष्ठेद्दिनत्रयम् । एषामगधदेशेदामइतिप्रसिद्धा । स्फोटानांमीलनादेषाबहुस्फोटाऽपिदृश्यते । एकस्फोटेचकृष्णाचबोद्धव्याचर्म्मजाभिधा ॥ चर्मजाभिधाचमरगोटीइतिलोके ॥ ६६६ ॥

चौथी सर्षपिका नाम शीतला पीले सरसोंके तुल्य वर्णवाली होतीहै इस में तेल न लगाना चाहिये कुछ गरमीके कारण से जो राईके समान शीतला होती हैं वो दुःखकोद्रवा कहलाती हैं ये लड़कोंके होती हैं और इनका मुख आपही सूखजाता है छठी शीतला मंडलाकार कोढ़के तुल्य लाल और ऊंचेघेरेवाली और पीड़ा युक्त होती है इसमें पहले ज्वर होताहै और तीनदिन रहताहै ये मगध देशमें दाम कहलाती है स्फोटोंके मिलने से जिसमें एक स्फोटमें बहुत स्फोट दिखाई पड़ें और वर्ण कृष्ण हो उसको चर्मजा नाम शीतला जानना चाहिये इसको लोकमें चमरगोटी कहते हैं ॥ ६६६ ॥

एताःसप्तापिबोद्धव्याःशीतलादेव्यधिष्ठिताः । शीतलोचितमाचारमाशुसर्वासुचाचरेत् ॥ ६६७ ॥

येसातों शीतला शीतलादेवी करके अधिष्ठित जाननी चाहिये इन सबमें शीघ्रही शीतलामें कहा भया अर्चनादि अथवा औषधादि करै ॥ ६६७ ॥

एतासांसाध्यत्वादिकमाह ॥

काश्चिद्विनापियत्नेनसुखंसिद्ध्यन्तिशीतलाः। दृष्टाःकष्टतराःकाश्चित्काश्चित्सिध्यन्तिवानवाः ॥ काश्चिन्नैवतुसिध्यन्तियत्नतोऽपिचिकित्सिताः। इतिमसूरिकाशीतलाधिकारः॥ ६६८ ॥

कोई शीतला बिना यत्नही अच्छी होजाती हैं कोई २ कष्टसे अच्छी होती हैं कोई २ सिद्ध होतीभी हैं नहींभी होतीं कोई २ यत्न करनेसेभी नहीं अच्छी होती हैं इति मसूरिका और शीतला का अधिकार समाप्त॥ ६६८ ॥

क्षुद्ररोगाधिकारः ॥

तत्रपलितस्यनिदानपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

क्रोधशोकश्रमकृतःशरीरोष्माशिरोगतः। पित्तञ्चकेशान्पचतिपलितन्तेनजायते ॥ शरीरोष्मादेहाग्निःपित्तञ्चभ्राजकाख्यंतत्रशिरोगतंक्रोधात्कुपितंपित्तंपचति । शोकेनश्रमेणचकुपितोवायुःशरीरोष्माणंशिरोनयति । एकःप्रकुपितोदोषइतरावपिकोपयेदितिवचनाद्वातपित्ताभ्यांश्लेष्माचकोपितःसएवकेशानांशौक्ल्यंकरोति । एवंत्रयोऽपिदोषाःपलितस्यहेतवःपलितंकेशस्यशुक्लता॥ ६६९ ॥

क्षुद्ररोगोंका अधिकार पलितका निदान पूर्वक लक्षण ॥

क्रोध शोक तथा श्रम इनसे देह सम्बन्धी अग्निभ्राजक नाम पित्त शिरमें जाय करके केशोंको पकाते हैं इसहीसे बाल सफेद होजाते हैं अर्थात् क्रोधसे कुपित पित्त शोक और श्रमसे कुपित वायु शरीर सम्बन्धी अग्निको शिरमें लेजाता है एक दोष कुपित होकर अन्य दोषोंकोभी कुपित कर देताहै इस वचनसे कुपित वायु और पित्त कफको कुपित करतेहैं और वोही कफ केशोंको शुक्ल करताहै इस रीति से केशोंकी शुक्लता तीनों दोषोंसे होती है॥ ६६९ ॥

पलितस्यचिचित्सा ॥

लोहचूर्णस्यकर्षंतुदशार्द्धंचूतमज्जतः। धात्रीफलद्वयंपथ्येद्वेतथैकंविभीतकम् ॥ पिष्ट्वालोहमयेभाण्डेस्थापयेन्निशिवासयेत् । लेपोऽयमचिराद्धन्तिपलितंनात्रसंशयः ॥ (दशार्द्धंपञ्चकर्षाणि) काश्मर्य्यामूलमादौसहचरकुसुमंकेतकस्यापिमूलं । लौहंचूर्णंसभृङ्गंत्रिफलपलयुतंतैलमेभिःपचेद्यः ॥ कृत्वालोहस्यभाण्डेक्षितितलनिहितंस्थापयेन्माससेकं। केशाःकाशाप्रकाशाअपिमधुपनिभाअस्ययोगाद्भवन्ति ॥ त्रिफलानीलिकापत्रंभृंगराजायसोरजः। अवीमूत्रेणसंपिष्टंलेपात्कृष्णीकरंपरम् ॥ ६७० ॥

पलितकी चिकित्सा ॥

लोहेका चूर्ण एकतोला आमकी गुठली पांचतोले आंवलेदो हडदो तथा बहेड़ा एक इनसबको पीसकर लोहेकेपात्रमें रात्रिभर रक्खे यह लेप पलितको बहुत शीघ्र नष्ट करता है खंभारीकी जड़ कुरंटकाफूल केतकीकी जड़ लोहेका चूर्ण भँगरा तथा त्रिफला इनसबको चार २ तोले लेकर तेल में पकावै फिर लोहेके बर्तन में रखकर एकमहीने तक पृथ्वीमें गाड़देय इसतैलके लगाने से कासके तुल्य सफेद बालभी भँवरेके तुल्य कृष्णवर्ण होजाते हैं त्रिफला न्यवारीकेपत्ते भँगरा तथा लोहेका

चूर्ण इनसब औषधियोंको मेढ़ीके मूत्रमें पीसकर लेपकरनेसे केश अत्यन्त कृष्णहोजाते हैं ॥ ६७० ॥

अथेन्द्रलुप्तस्यनिदानपूर्व्वकसम्प्राप्तिलक्षणमाह ॥

रोमकूपानुगंरक्तंपित्तेनसहमूर्च्छितम् । प्रच्यावयतिरोमाणिततःश्लेष्मासशोणितः ॥ रुणद्धिरोमकूपांस्तुततोऽन्येषामसम्भवः।तदिन्द्रलुप्तखालित्यंरुज्येतिचविभावयेत् ६७१

इन्द्रलुप्तके निदान पूर्वक सम्प्राप्ति और लक्षण ॥

रोमकूपों में प्राप्त रुधिर पित्तके साथ मूर्च्छित होकर रोमोंको गिरादेता है तब रुधिर कफके साथ रोमकूपों को रोक देता है इससे नयेरोम नहीं उत्पन्न होते इसे इन्द्रलुप्त खालित्य अथवा रुज्या कहते हैं ॥ ६७१ ॥

अथेन्द्रलुप्तस्यचिकित्सा ॥

तिक्तपटोलीपत्रस्वरसैर्घृष्टासमंयाति । चिरकालजापिरुज्यानियतंदिवसत्रयेणापि ॥ गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येचमधुसर्पिषी । शिरःप्रलेपितंतेनकेशैःसमुपचीयते ॥ हस्तिदन्तमषींकृत्वाछागीदुग्धंरसाञ्जनम् । लोमान्येतेनजायन्तेलेपात्पाणितलेष्वपि ॥ यष्टीन्दीवरमृद्वीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः । इन्द्रलुप्तंशमंयातिकेशाःस्युश्चघनादृढाः ॥ जातीकरञ्चबरुणकरबीराग्निपाचितम् । तैलमभ्यञ्जनाद्धन्यादिन्द्रलुप्तनसंशयः ॥ स्नुहीपयःपयोऽर्कस्यलाङ्गलीमार्कवोविषम् । अजामूत्रंसगोमूत्रंरक्तिकासेन्द्रवारुणी ॥ सिद्धार्थकस्तीक्ष्णगन्धासम्यगेभिर्विपाचितम् । तैलंभवतिनियमात्खालित्यव्याधिनाशनम् ॥ इतिस्नुहीदुग्धादितैलम् ॥ ६७२ ॥

इन्द्रलुप्तकी चिकित्सा ॥

कड़ुईतोरईके स्वरसको मलनेसे बहुतपुरानीभी रुज्या तीनदिनमें नष्टहोतीहै गोखुरू तिलकेफूल शहत तथा घी समभाग इनके लेपसे केश उत्पन्न होते हैं हाथीके दांतकी राख तथा रसौत इनको बकरीके दूधमें मिलाकर लेपकरनेसे हथेलीमेंभी केशउत्पन्नहोतेहैं मुलेठी कमलमुनक्का तेलघी तथा दूध इनके लेपसे इन्द्रलुप्त नष्ट होताहै और केशघने तथा पक्केहोजाते हैं चँबेली करंजुवा बरना और कनेर इनऔषधोंको तेलमेंपकावै इसतेलकोलगानेसे इन्द्रलुप्त अवश्यनष्टहोताहै थूहरकादूध आककादूध करिहारी भंगरा सींगिया बकरीकामूत्र गोमूत्र घुंघची इन्द्रायनपीले सरसों और बच इनऔषधोंके द्वारा पाककिया भया तैल अवश्य खालित्यको नाशताहै इति स्नुहीदुग्धादितैल ॥ ६७२ ॥

दारुणकस्यलक्षणमाह ॥

दारुणाकण्डुरारूक्षाकेशभूमौप्रजायते । मारुतश्लेष्मकोपेनविद्याद्दारुणकन्तुतत् ॥ दारुणाकर्कशादारुणकंलोकेरुसीतिख्यातम् ॥ ६७३ ॥

दारुणकका लक्षण ॥

जिस रोगमें केशभूमि कर्कश रूखी तथा खुजली युक्त होतीहै उसे दारुणक कहतेहैं ये बात और कफके कोपसे होताहै इसेरूसी कहते हैं ॥ ६७३ ॥

दारुणकस्य चिकित्सा ॥

कार्योदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः।पियालबीजमधुककुष्ठमाषैःससैन्धवैः ॥ आम्र

वीजंतथापथ्याद्वयंस्यान्मात्रयासमम् । दुग्धेनपिष्टंतल्लेपोदारुणंहंतिदारुणम् ॥ दुग्धेन खाखसंवीजंप्रलेपाद्दारुणंहरेत् ॥ ६७४ ॥

दारुणक की चिकित्सा ॥

चिरौंजी मुलेठी कूट उरद तथा सेंधानोन इनका लेप शहतके साथ दारुणक में करना चाहिये दोहड़ इसीके तुल्य आमकी गुठली को दूधमें मिलाकर लेपकरनेसे दारुणक नष्ट होताहै दूधके साथ खसखसको लेपकरने से दारुणक नष्ट होताहै ॥६७४ ॥

गुञ्जाफलैःशृतंतैलंभृङ्गराजरसेनच । कण्डूदारुणहृत्कुष्ठकपालव्याधिनाशनम् ॥ गुञ्जादितैलम् ॥ ६७५ ॥

घुँघची और भँगरेके रसके द्वारा पाकिया भया तेल खुजली दारुणक कुष्ठ और कापालकुष्ठको नष्ट करताहै इति गुञ्जादितैल ॥ ६७५ ॥

अरूषिकालक्षणमाह ॥

अरूंषिबहुवक्त्राणिबहुक्लेदीनिमूर्द्धनि । कफासृक्क्रिमिकोपेनतानिविद्यादरूषिकाम् ६७६

अरूषिका का लक्षण ॥

बहुत छिद्रवाले तथा बहुत रसियानेवाले कफ रुधिर तथा कृमियोंके कोपसे शिरमें भये व्रणोंको अरूषिका कहतेहैं ॥ ६७६ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

नीलोत्पलस्यकिञ्जल्कोधात्रीफलसमन्वितः । यष्टीमधुकयुक्तश्चलेपाद्धन्यादरूषिकाम् ॥ ६७७ ॥

अरूषिका की चिकित्सा ॥

नीलोत्पलकी केसर आँवला और मुलेठी के लेपसे अरूषिका कानाश होताहै ॥ ६७७ ॥

त्रिफलायोरजोयष्टीमार्कवोत्पलसारिवाः । सैंधवंपक्वमेतैस्तुतैलंहन्यादरुषिकाम् ॥ त्रिफलाद्यंतैलम् ॥ ६७८ ॥

त्रिफला लोहचूर्ण मुलेठी भँगरा उत्पल साई तथा सेंधानोन इनके द्वारा पाककिया भया तैल अरूषिका को नष्ट करताहै इति त्रिफलादि तैल ॥ ६७८ ॥

इरिवेल्लिका लक्षण माह ॥

पिड़िकामुत्तमाङ्गस्थांवृत्तामुग्ररुजाज्वराम् । सर्वात्मिकांसर्वलिंगांजानीयादिरिवेल्लिकाम् ॥ ६७९ ॥

इरिवेल्लिका कालक्षण ॥

तीनो दोषोंके लक्षणोंसे युक्त शिरमें भयी ज्वर तथा अत्यन्त पीड़ायुक्त पिड़िकाको इरिवेल्लिका कहतेहैं ये तीनों दोषोंके कोपसे होताहै ॥ ६७९ ॥

इरिवेल्लिकाचिकित्सा ॥

पैत्तिकस्यविसर्पस्य याचिकित्साप्रकीर्तिता । तयैवभिषगेताञ्चचिकित्सेदिरिवेल्लिकाम् ॥ ६८० ॥

इरिवेल्लिका की चिकित्सा ॥

पित्तज विसर्पकी चिकित्सा इरिवेल्लिका मेंभी करै ॥ ६८० ॥

पनसिका लक्षणम् ॥

कर्णस्याभ्यन्तरेजातांपिड़िकामुग्रवेदनाम् । स्थिरांपनसिकांतान्तुविद्याद्वातकफोत्थिताम् ६८१ ॥

पनसिका का लक्षण ॥

कानके भीतर अत्यंत पीड़ा सहित और स्थिर पिड़िका को पनसिका कहते हैं ये वात कफ से होती है ॥ ६८१ ॥

पनसिकाचिकित्सा ॥

भिषक्पनसिकांपूर्व्वंस्वेदयेदथलेपयेत् । कल्कैर्मनःशिलाकुष्ठनिशातालकदारुभिः ॥ पक्कांविज्ञायतांभित्वाव्रणवत्समुपाचरेत् ॥ ६८२ ॥

पनसिकाकी चिकित्सा ॥

पनसिकामें पहले स्वेदन करके मैनसिल कूट हल्दी हरताल तथा देवदारु के द्वारा लेपकरै फिर पकजानेपरकाटै और व्रण कीसी चिकित्सा करै ॥ ६८२ ॥

पाषाणगर्दभस्यलक्षणमाह ॥

वातश्लेष्मसमुद्भूतःश्वयथुर्हनुसन्धिजः । स्थिरोमन्दरुजःस्निग्धोज्ञेयःपाषाणगर्दभः स्थिरःकठिनः ॥ ६८३ ॥

पाषाण गर्दभ का लक्षण ॥

जबडोंकी संधिमें बातकफके द्वारा उत्पन्नभये कठिन स्वल्प पीड़ायुक्त और स्निग्ध शोथको पाषाण गर्दभ कहते हैं ॥ ६८३ ॥

अथ पाषाणगर्दभस्य चिकित्सा ॥

पाषाणगर्दभंपूर्व्वंस्वेदयेत्कुशलोभिषक्। ततःपनसिकाप्रोक्तैःकल्कैरुष्णैःप्रलेपयेत् ॥ वातश्लेष्मिकशोथघ्नैःकल्कैरन्यैश्चलेपयेत्।परिपाकगतंभित्वाव्रणवत्तमुपाचरेत् ॥ जलौकाभिर्हृतेरक्तेसशाम्यतिविनौषधम् ॥ एतत्स्थलेषुबहुषुप्रोक्षितंलिखितंततः॥ ६८४ ॥

पाषाण गर्दभ की चिकित्सा ॥

पाषाणगर्दभ में पहले स्वेदन करके पनसिकामें कहेभये उष्ण कल्कों के द्वारा अथवा बातकफजशोथनाशक अन्य कल्कोंके द्वारा लेपकरै पकजाने पर चीरके व्रणकीसी चिकित्साकरै यहजोंक लगानेसे औषधके विनाही शांत होजाताहै और बहुतजगहजोंक लगवानेकेअनंतर प्रोक्षणलिखाहै ६८४

मुखदूषिकालक्षणमाह ॥

शाल्मलीकण्टकप्रख्याःकफमारुतरक्तजाः ।जायतेपिड़िकायूनांज्ञेयास्तामुखदूषिकाः प्रख्याःसदृशाःएतायूनामेवमुखेभवन्तिस्वभावात् ॥ ६८५ ॥

मुखदूषिका कालक्षण ॥

कफवायु तथा रुधिरके द्वारा सेमर कांटे के समान जो पिड़िका युवा पुरुषों के मुखमें होती हैं उनको मुखदूषिका कहतेहैं ॥ ६८५ ॥

अतस्तस्याचिकित्सा ॥

अंगुलस्यचतुर्थांशोमुखलेपोविधीयते । मध्यमस्तुत्रिभागःस्यादुत्तमोऽर्द्धाङ्गुलोभवेत् ॥ स्थितिकालोनशुष्कत्वंतथादूषयतित्वचम् । मुखलेपमात्रा ॥ ६८६ ॥

मुखदूषिका की चिकित्सा ॥

मुखमें लेप करनेकी उत्तम मात्रा आध अंगुल मध्यम मात्रा तिहाई अंगुल और सामान्य मात्रा चौथियाई अंगुलकी हैं जबतक सूख नजाय तभीतक रखना चाहिये सूखनेपर रखनेसे त्वचाको दुष्ट करता है ये मुखलेपकी मात्रा है ॥ ६८६ ॥

लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिड़िकापहः । स्थितिकालोऽपितस्योक्तोयावत्कल्कोन शुष्यति ॥ शुष्कस्तुसारहीनःस्यात्तथादूषयतित्वचम् । मुखलेपमाह । तद्गोरोचनायुक्तंमरिचंमुखलेपितम् ॥ सिद्धार्थकवचालोध्रसैन्धवैश्चप्रलेपनम् । वमनञ्चनिहन्त्याशुपिड़िकांयौवनोद्भवाम् ॥ केवलाःपयसापिष्टास्तीक्ष्णाःशाल्मलिकण्टकाः । आलिप्तंत्र्यहमेतेनभवेत्पद्मोपमंमुखम् ॥ ६८७ ॥

लोध-धनियां तथा वच इनका लेप मुखदूषिकाको नष्ट करताहै इस लेपको जबतक सूख न जाय तभीतक रक्खै क्योंकि सूखजानेपर गुण नहीं रहता और त्वचा दूषित होती है गोरोचन तथा मिर्चको मुखमें लेप करने से सरसों वच लोध तथा सेंधेनोनके लेपसे अथवा वमन करनेसे मुखदूषिकाका नाश होताहै तीक्ष्ण सेमरके कांटोंको दूधमें पीसकर तीनदिन लेप करने से मुख कमल सा होजाता है ॥ ६८७ ॥

व्यङ्गस्यलक्षणमाह ॥

क्रोधायसप्रकुपितोवायुःपित्तेनसंयुतः । मुखमागत्यसहसामण्डलंप्रसृजत्यतः ॥ नीरुजंतनुकंश्यावंमुखेव्यंगजमादिशेत् । व्यंगंभ्भाईंइतिलोके ॥ ६८८ ॥

व्यंगका लक्षण ॥

क्रोध तथा श्रमसे कुपित बायु पित्तके साथ मुखमें आकर पीड़ारहित छोटे तथा धुमैले बर्णवाले मंडलोंको मुखमें उत्पन्न करताहै इसे व्यंग (भ्भाईं)कहतेहैं ॥ ६८८ ॥

नीलिकामाह ॥

कृष्णमेवंगुणंवक्त्रेगात्रेवानीलिकांविदुः । एवंगुणं । नीरुजंतनुकंमण्डलम् ॥ ६८९ ॥

नीलिकाके लक्षण ॥

पीड़ा रहित छोटेऔर कृष्णबर्ण जो मंडलमुख अथवा अंगोंमेंहोतेहैं उन्हें नीलिका कहतेहैं ६८९॥

तयोश्चिकित्सा ॥

शिरावेधैःप्रलेपैश्चतथाभ्यंगैरुपाचरेत् । व्यङ्गञ्चनीलिकांवापिन्यच्छञ्चातिलकालकम् ॥ वटांकुरामसूराश्चप्रलेपाद्व्यङ्गनाशनम् । व्यङ्गेमंजिष्ठयालेपःप्रशस्तोमधुयुक्तया ॥ अथवालेपनंशस्तंशशस्यरुधिरेणच । व्यंगहृद्वरुणत्वक्स्यादजामूत्रेणपेषिता ॥ जातीफलस्यलेपस्तुहरेद्व्यंगञ्चनीलिकाम् । अर्कक्षीरहरिद्राभ्यांमर्दयित्वाप्रलेपनात् ॥ मुखकार्ष्ण्यंशमंयातिचिरकालोद्भवंध्रुवम् । मसूरैःक्षीरसंपिष्टैर्लिप्तमास्यंघृतान्वितैः ॥ सप्तरात्राद्भवेत्सत्यंपुण्डरीकदलोपमम् । वटस्यपाण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् ॥ कुष्ठंकालीयकंलोध्रमेभिर्लेपंप्रयोजयेत्।युवास्यपिडिकानांतुव्यंगानांतुविनाशनम् ॥स्यादेतेन

मुखञ्चापिवर्जितंनीलिकादिभिः।कालीयकंकदम्बकइतिलोके॥ युवास्यपिडिकायूनामान नेयत्पिडिकाप्टषोदरादित्वान्नकारलोपः ॥ ६९० ॥

व्यंग और नीलिकाकी चिकित्सा ॥

व्यंगनीलिका न्यच्छ और तिलकालक इनकी चिकित्सा शिराबेध (फस्त) लेप और अभ्यंगके द्वारा करनी चाहिये बर्गदके अंकुर तथा मसूरके द्वारा शहत में मिलाकर मजीठ के द्वारा खर्गोशके रुधिरके द्वारा अथवा गऊके मूत्र में पीसीभई बरुणाके छालके द्वारा लेप करने से व्यंगका नाश होताहै जायफलके लेपसे व्यंग और नीलिकाका नाशहोताहै आकके दूध औ हल्दीको मिलाकर लेप करनेसे बहुत दिन से भई कृष्णता काभी नाश होताहै दूधमें पीसीभई मसूरमें घी मिलाकर मुखमें लेप करनेसे सातही दिनमें मुखकमलके समान होजाताहै बरगदके पीलेपत्ते चमेली लाल-चंदन कूट कदंबक और लोध इनके लेपसे मुख दूषिकाव्यंग और नीलिकाका नाश होताहै ॥६९०॥

कुंकुमंचन्दनंलोध्रंपतंगंरक्तचन्दनम् । कालीयकमुशीरञ्चमंजिष्ठामधुयष्टिका ॥ पत्रकंपद्मकंपद्मंकुष्ठंगोरोचनानिशा । लाक्षादारुहरिद्राचगैरिकंनागकेसरम् ॥ पलाशकुसुमञ्चापिप्रियंगुश्चवटांकुराः । मालतीचमधूच्छिष्टंसर्षपाःसुरभिर्वचा ॥ चतुर्गुणपयःपिष्टैरेतैरक्षमितैःप्टथक् । पचेन्मन्दाग्निनावैद्यस्तैलंप्रस्थद्वयोन्मितम् ॥ वदनाभ्यञ्जनादेतद्व्यंगंनीलिकयासह । तिलकंमाषकंन्यच्छंनाशयेन्मुखदूषिकाम् ॥ पद्मिनीकण्टकंचापिहरेज्जतुमणिंतथा । विदध्याद्वदनंपूर्णचन्द्रमण्डलसुन्दरम् ॥ पतंगंवकमइतिलोके । कालीयकंकदम्बकंसुरभिर्वचामहाभरी इतिलोके॥ कुंकुमाद्यंतैलम् ॥ ६९१ ॥

केसर चन्दन लोध वकम लालचन्दन कदंबक खस मजीठ मुलेठी तेजपात पद्माख कमलकूट गोरोचन हल्दी लाख दारुहल्दी गेरू नागकेसर ढांकके फूल गोंदनी बर्गदके अंकुर चमेली मोम सरसों और महाभरी वच इनसबको एक२ तोले लेकर चौगुने दूधमें पीसै फिर इनके द्वारा १२८ तोले तेलको मन्दाग्निमें पाककरै इसतेलको मुखमें लगानेसे व्यंग नीलिका तिलक माषक न्यच्छ मुख-दूषिका पद्मकंटक और जतुमणिका नाशहोताहै और मुख पूर्णचंद्रमण्डलके समान सुन्दर होजाता है इति कुंकुमादि तेल ॥६९१॥ अथ वल्मीकस्यलक्षणमाह ॥

ग्रीवांसकक्षाकरपाददेशेसन्धौगलेवात्रिभिरेवदोषैः । ग्रन्थिःसवल्मीकवदक्रियाणांजातःक्रमेणैवगतःप्रसिद्धिम् ॥ मुखैरनेकैःस्रुतितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पतिचोन्नताग्रैः । वल्मीकमाहुर्भिषजोविकारंनिष्प्रत्यनीकंचिरजंविशेषात् ॥ ग्रीवाकृकाटिकाअंसस्कन्धकक्षाबाहुमूलं । वल्मीकवदित्यनेनप्रचुरशिखरत्वमुच्चत्वमवगाढमूलत्वञ्चसूच्यतेनिष्प्रत्यनीकमुपचारायोग्यम् ॥ ६९२ ॥

बल्मीकका लक्षण ॥

गटई कंधे काख हाथ पांव सन्धि और गलेमें तीनों दोषोंके कोपसे उत्पन्न बांबीके समान ऊंची गहरी तथा अनेक अंकुरवालीचिकित्सा न करनेसे क्रमशःबढ़नेवाली औरउन्नत अग्रभाग वालेबहनेवाले सूचीगड़ने कीसी पीड़ायुक्त बहुत छिद्रोंसे बिसर्प के समान फैलनेवाली ग्रन्थिको बल्मीक कहतेहैं और यह पुराना होजानेपर असाध्य होजाता है ॥ ६९२ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

शस्त्रेणोत्कृत्यवल्मीकंक्षाराग्निभ्यांप्रसाधयेत् । विधानेनार्बुदोक्तेनशोधयित्वाचरोपयेत् ॥ वल्मीकंतुभवेद्यस्यनातिवृद्धममर्म्मजम् । तत्रसंशोधनंकृत्वाशोणितंमोक्षयेद्भिषक् ॥ कुलत्थकानांमूलैश्चगुडूच्यालवणेनच । आरेवतस्यमूलैश्चदन्तीमूलैस्तथैवच ॥ श्यामामूलैःसपललैःसक्तुमिश्रैःप्रलेपयेत् । सुस्निग्धैश्चसुखोष्णैश्चभिषक्तमुपनाहयेत् ॥ पक्वंतद्वाविजानीयाद्गतिःसर्वायथाक्रमम् ।अभिज्ञायगतिंछित्वाप्रदिह्यान्मतिमान्भिषक्॥ संशोध्यदुष्टमांसानिक्षारेणप्रतिसारयेत् । व्रणंविशुद्धंविज्ञायरोपयेन्मतिमान्भिषक् ६९३॥

बल्मीक की चिकित्सा ॥

बल्मीक को शस्त्र से चीर कर क्षार और अग्नि से जलावै और अर्बुद रोगमें कही भई बिधि से शुद्ध करके घावको भरै मर्म स्थानमें नहीं उत्पन्न भये और बहुत नहीं बढ़े भये बल्मीकको शुद्ध करके रुधिर निकलवावै कुल्थीकीजड़ गिलोय सेंधानोन अमलतासकी जड़ जमालगोटे की जड़ नीलकी जड़ मांस और सत्तू इनको घीमें मिलाकर गरम२ लेप करके बांधै बल्मीक के पकजानेपर गतिको (पीप आने का रास्ता) जानकर उसको चीरके लेपकरै दूषित मांसोंको निकलवाकर क्षारसे ब्रणको शुद्धकरै ब्रण को शुद्ध जानकर उसको भरै ॥ ६९३ ॥

मनःशिलालभल्लातसूक्ष्मैलागुरुचन्दनैः । जातीपल्लवतर्कैश्चनिम्बतैलंविपाचयेत् ॥ वल्मीकंनाशयेत्तद्धिबहुच्छिद्रंबहुव्रणम् । पाणिपादोपरिष्टात्तुछिद्रैर्बहुभिरावृतम् ॥ वल्मीकंयत्सशोफंस्याद्वर्ज्यंतद्धिविजानता इतिमनःशिलाद्यंतैलम् ॥ ६९४ ॥

मैनसिल हरताल भिलावां छोटी इलायची अगर चन्दन चमेली की पत्ती और इन्द्रजौ इनको द्वारा नीमके तेलकोपाककरै इससे बहुत छिद्र तथा बहुत ब्रणयुक्त बल्मीक का नाश होताहै इति मनः-शिलादि तेल हाथ अथवा पैरोंमें भया बहुत छिद्र युक्त और शोथ युक्त बल्मीक असाध्यहै ॥ ६९४ ॥

अथ कक्षागन्धनाम्नोर्लक्षणमाह ॥

बाहुकक्षांसपार्श्वेषुकृष्णस्फोटांसवेदनाम् । पित्तप्रकोपसम्भूतांकक्षांतामितिनिर्द्दिशेत् ॥ एकान्तुतादृशींदृष्ट्वापिडिकांस्फोटसन्निभाम् । त्वग्जातांपित्तकोपेनगन्धनामांप्रचक्षते ॥ तादृशींबाह्वादिषुकृष्णांसवेदनाञ्च ॥ ६९५ ॥

कक्षा और गंधनामाके लक्षण ॥

बाहु बगल कंधे तथा पसलियों में पित्तके कोपसे उत्पन्न भये पीड़ा सहित कालेस्फोटकों को कक्षा कहतेहैं स्फोटके समान पित्त के कोप से त्वचापर उत्पन्न भई कृष्णबर्ण तथा पीड़ायुक्त एक पिड़िका को गंधनामा कहतेहैं ॥ ६९५ ॥

तयोश्चिकित्सा ॥

कक्षाञ्चगन्धनामाञ्चचिकित्सेतिचिकित्सकः।पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययापूर्वमुक्तया ६९६

कक्षा और गंधनामा की चिकित्सा ॥

पहले कही भई पित्तज बिसर्प की चिकित्सा कक्षा और गन्धनामा में करै ॥ ६९६ ॥

अथाग्निरोहिणीलक्षणमाह ॥

कक्षांभागेषुविस्फोटाजायन्तेमांसदारुणाः । अन्तर्दाहज्वरकरादीप्तपावकसन्निभाः ॥ सप्ताहाद्वादशाहाद्वापक्षाद्वाघ्नन्तिमानवम् । तामग्निरोहिणींविद्यादसाध्यांसान्निपातकीम् ॥ सप्ताहादिवातपित्तकफापेक्षयावोद्धव्यम् । घ्नन्तीत्यनुपक्रान्ताःउपक्रान्तास्तुसाध्या एवचरकेणाग्निरोहिण्यांचिकित्सयाउक्तत्वात् ॥ ६९७ ॥

अग्निरोहणी का लक्षण ॥

बगल में मांस के फाड़ने वाले अन्तर्दाह तथा ज्वर युक्त और दीप्त अग्निके समान जो बिस्फोटक होतेहैं वो वातज होनेसे सात दिनमें पित्तज होनेसे दश दिनमें और कफज होने से पक्षभरमें मनुष्य को मारतेहैं इस रोगको अग्निरोहिणी कहते हैं यह सन्निपातज असाध्यहै यह चिकित्सा करने से असाध्यहै क्योंकि चरकने इसकी चिकित्सा कहीहै और चिकित्सा न करने से असाध्य होतीहै॥६९७॥

तस्यचिकित्सा ॥

पित्तविसर्पविधिनासाधयेदग्निरोहिणीम् । रोहिण्यांलंघनंकुर्य्याद्रक्तमोक्षणरुक्षणम् शरीरस्यचसंशुद्धिंतांतुवृद्धांपरित्यजेत् ॥ ६९८ ॥

अग्नि रोहिणीकी चिकित्सा ॥

पित्तज बिसर्पकी बिधिसे अग्निरोहिणी की चिकित्सा करै और लंघन रक्तमोक्षण रुक्षक्रिया तथा शरीरकी शुद्धि करनी चाहिये यदि अग्निरोहिणी बढ़ जाय तो बैद्य उसकी चिकित्सा न करै ॥ ६९८ ॥

विदारिकालक्षणमाह ॥

विदारिकन्दवद्वद्धांकक्षावंक्षणसंधिषु । रक्तांविदारिकांविद्यात्सर्वजांसर्वलक्षणाम् ॥ अत्रपिडिकमितिविशेष्यपदमध्याहारणीयम् ॥ ६९९ ॥

बिदारिका का लक्षण ॥

बगल और बंक्षण की संधियों में बिदारी कंदके तुल्य गँठीभई रक्तवर्ण पिड़िका को बिदारिका कहते हैं यह सन्निपातज होती है और सर्व के लक्षणों से युक्त होतीहै ॥ ६९९ ॥

तस्याश्चिकित्सा ॥

विदारिकायांप्रथमञ्जलौकोयोजनंहितम् ।पाटनञ्चविपक्वायांततोव्रणविधिःस्मृतः ७००

बिदारिका की चिकित्सा ॥

बिदारिका में पहले जोंक लगानी चाहिये पक[illegible] पर चीरना चाहिये उसके पश्चात् ब्रण की बिधिकरे ॥७०० ॥

चिप्प्यस्यलक्षणमाह ॥

नखमांसमधिष्ठायवातःपित्तञ्चदेहिनाम् ॥ करोतिक्षयपाकौचतंव्याधिंचिप्प्यमादिशेत् । चिप्प्यवेड़वाइतिलोके ॥ ७०१ ॥

चिप्प्यका लक्षण ॥

वात तथा पित्त देहियोंके नखके मांसमें स्थित होकर क्षय तथा पाकको उत्पन्न करते हैं इस व्याधि को चिप्प्य कहते हैं इसको लोकमें बेडवा कहते हैं ॥ ७०१ ॥

कुनखस्यलक्षणमाह ॥

अभिघातात्प्रदुष्टोयोनखोरूक्षःसितःखरः । भवेत्तंकुनखंविद्यात्कुलीरंवाभिधानतः अभिधानतःनामतः ॥ ७०२ ॥

कुनखका लक्षण ॥

चोट लगने से जो नख रूखा काला तथा खरखरा होताहै उस दूषित नखको कुनख या कुलीर कहतेहैं ॥ ७०२ ॥

तयोश्चिकित्सा ॥

चिप्प्यंरुधिरमोक्षेणशोधनेनाप्युपाचरेत् । गतोष्मानमर्थेनन्तु सेचयेदुष्णवारिणा । शस्त्रेणापियथायोग्यमुच्छिद्यस्त्रावयेत्ततः।व्रणोक्तेनविधानेनरोपयेत्तंविचक्षणः। स्वरसेनहरिद्रायाःपात्रेकृत्वायसेभयाम् ॥ घृष्ट्वातज्जेनकल्केनलिम्पेत्चिप्प्यंपुनःपुनः । काश्मर्य्याः सप्तभिःपत्रैःकोमलैःपरिवेष्टिताः ॥ अङ्गतोवेष्टकःपुंसांध्रुवमाशुप्रशाम्यति। श्लेष्मविद्रधिकल्केनकुनखंसमुपाचरेत् ॥ नखकोटिप्रविष्टेनटङ्कणेनप्रशाम्यति । कुनखश्चेत्तदाशैलःसलिलेप्लवतेऽपिच ॥ ७०३ ॥

चिप्य और कुनखकी चिकित्सा ॥

चिप्यमें रुधिर निकलवावै और शोधनकरै फिर उष्माके निकलजानेपर गरमजलसे सींचे यदि उचित होतो शस्त्रसे छेदकर रुधिर निकलवावै इसके उपरांत व्रणोक्त बिधिसे घावको भरै लोहेके पात्रमें हल्दीके रसके साथहड़को घिसके चिप्यमें बार २ लगावै खंभारीके कोमल सातपत्तोंको अंगुलियोंमें लपेटनेसे निस्संदेह शीघ्रही चिप्यका नाश होताहै कुनखमें कफज बिद्रधिकीसी चिकित्सा करै सुहागेको नखमें भरनेसे कुनख अच्छा होताहै यदि न अच्छाहोतो पर्वतभी पानीमें तैरे ७०३॥

परिवर्तिकालक्षणमाह ॥

मर्दनात्पीड़नाद्वापितथैवाप्यभिघाततः। मेढ्रचर्मयदावायुर्भजतेसर्वतश्चरन् ॥ तदावातोपसृष्टंतुतच्चर्मपरिवर्त्तते।सवेदनंसदाहश्चपाकश्चव्रजतिक्वचित् ॥ मणेरधस्तात्कोषस्तुग्रन्थिरूपेणलम्बते।मारुतागन्तुसम्भूतांविद्यात्तांपरिवर्त्तिकाम् ॥सकण्डूकठिनाचापि सैवश्लेष्मसमन्विता। अस्यांवातजायामपिपित्तानुबन्धोवोद्धव्योदाहपाकभावात्कोषःचर्मकोषः ॥ ७०४

परिवर्तिका कालक्षण ॥

रगड़से दबाने से अथवा चोट लगनेसे सब ओर घूमती भई बायु जब लिंगके चर्म में प्राप्त होतीहै तब बायुसे मिलाहुआ वह चर्म पीड़ा तथा दाहयुक्त होकर उलट जाताहै तथा कभी २ पकभी जाताहै और लिंगके नीचेका चर्मकोष गांठसा लटकता है इस आगन्तुज और बातज रोगको परिवर्तिका कहते हैं इसमें दाह औपाक होनेसे बातज होने परभी पित्तका संबन्ध जानना चाहिये कफयुक्त परि वर्तिका कठिन औ खुजली युक्त होतीहै ॥ ७०४ ॥

अथ तस्याःचिकित्सा ।

परिवर्त्तिंघृताभ्यक्तंसुस्विन्नामुपनाहयेत् । त्रिरात्रंपञ्चरात्रञ्चवातघ्नैःशाल्वनादिभिः ॥

ततोऽभ्यज्यशनैश्चर्मपाटयेत्पीड़येन्मणिम् । प्रविष्टेचर्मणिमणौस्वेदयेदुपनाहनैः ॥ दद्याद्वातहरान्वस्तीन्स्निग्धान्यन्नानिभोजयेत् ॥ ७०५ ॥

परिवर्तिकाकी चिकित्सा ॥

परिवर्तिका में घी लगाके तथा स्वेदनकरके तीन अथवा पांचरात बातघ्नै शाल्वणादि उपनाह करै फिर घी लगाकर धीरे २ चमड़ेको फैलावै और लिंगके अग्रभागको दबावै अग्रभागके चमड़े में प्रविष्टहोजानेपर उपनाहनसे स्वेदन करावै वात नाशक वस्तिदेवै औ स्निग्धअन्न भोजनकरावै ७०५॥

अथावपाटिकालक्षणमाह ॥

अल्पीयसींयदाहर्षाद्बलाद्गच्छेत्स्त्रियंनरः । हस्ताभिघातादथवाचर्मण्युद्वर्तितेबलात् ॥ मर्दनात्पीड़नाद्वापिशुक्रवेगाभिघाततः । यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकाम्॥ वातेनकर्कशारूक्षासूक्ष्माकृष्णारुगन्विता । पित्तेनपीतारक्तावादाहतृष्णासमन्विता ॥ श्लेष्मणाकठिनास्निग्धाकण्डूमत्स्वल्पवेदना । अल्पीयसीम्अल्पतरंयोनिच्छिद्रंयस्याःताम् । अवपाट्यतेविदीर्य्यते ॥ ७०६ ॥

अवपाटिकाका लक्षण ॥

योनिके छोटे छिद्रवाली स्त्रीके साथ बलात्कारपूर्वक भोग करने से व जोरसे हाथ लगनेके कारण चर्म उलट जानेसे रगड़से दबानेसे और वीर्य्यके वेगके रोकने से जो चर्मफट जाताहै उसे अवपाटिका कहते हैं बातज अवपाटिका कर्कश रूखी सूक्ष्म कृष्णवर्ण तथा पीड़ायुक्त होती है पित्त सहित अवपाटिका पीत अथवा रक्तवर्णवाली और दाह तथा तृषा युक्त होती है कफ सहित अवपाटिका कठिन स्निग्ध और खुजली तथा स्वल्प पीड़ा युक्त होती है ॥ ७०६ ॥

तस्याश्चिकित्सा ॥

स्नेहस्वेदैरिमांवैद्यश्चिकित्स्येदवपाटिकाम् ॥ ७०७ ॥

अवपाटिकाकी चिकित्सा ॥

अवपाटिकामें स्वेदन और स्नेहन करना चाहिये ॥ ७०७ ॥

अथ निरुद्धप्रकशस्यलक्षणमाह ॥

वातोपसृष्टेमेढ्रंतुचर्म्मसंश्रयतेमणिम् । मणिश्चर्मोपनद्धस्तुमूत्रस्रोतोरुणद्धिच ॥ निरुद्धप्रकशेतस्मिन्मन्दधारमवेदनम् । मूत्रंप्रवर्त्ततेजन्तोर्मणिर्विव्रियतेनच ॥ निरुद्धप्रकशंविद्यात्सरुजंवातसम्भवम् । निरुद्धप्रकाशइत्यस्यस्थानेंनिरुध्यप्रकशपदमार्षत्वात् ॥ ७०८ ॥

निरुद्धप्रकशका लक्षण ॥

कुपित बायु ग्रस्तलिंग होनेपर चर्म मणिमें लगजाताहै चर्मसे मणिके ढकजाने पर मूत्रका द्वार रुकजाताहै द्वारके रुकजाने के कारण वेदनारहित सूक्ष्मधारा से मूत्र निकलता है और मणि नहीं खुलता इस बातज रोगको निरुद्धप्रकश कहते हैं ॥ ७०८ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

निरुद्धप्रकशेनाडींलोहीमुभयतोमुखीम् । दारवींवाजतुकृतांघृताक्तांसम्प्रवेशयेत् ॥

परिषिञ्चेद्वसामज्जांशिशुमारबराहयोः। चक्रतैलंतथायोज्यंवातघ्नद्रव्यसंयुतम् ॥ त्र्य हात्स्थूलतरांसम्यक्नाड़ींमार्गेप्रवेशयेत्। स्रोतोविवर्द्धयेदेवंस्निग्धमन्नञ्चभोजयेत् ॥ भित्वावासेवनीमुक्तासद्यःक्षतवदाचरेत् ॥ ७०६ ॥

निरुद्धप्रकशकी चिकित्सा ॥

निरुद्ध प्रकशमें दो मुखवाली लोहेकी काठकी वालाखकी सलाई घी लगाकर प्रविष्ट करै सूस और सुवरकी बसा और मज्जाका सिंचन करै बातघ्न औषधोंको मिलाकर चक्र तैलका प्रयोग करै तीन दिनके अनंतर और मोटीसलाई का प्रवेश करै इसी रीतिसे द्वारको बढ़ावै और स्निग्ध भोजन करावै अथवा सीवनको काटकर सद्यः क्षतकी नाई चिकित्साकरै ॥ ७०६ ॥

अथ संनिरुद्धगुदस्यलक्षणमाह ॥

वेगसन्धारणाद्वायुर्विहितोगुदसंश्रितः। निरुणद्धिमहत्स्रोतःसूक्ष्मद्वारंकरोतिच ॥ मार्गस्यसौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेणपुरीषंतस्यगच्छति। संनिरुद्धगुदंवापिमैनंविद्यात्सुदुस्तरम् ॥ ७१० ॥

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

वेगके रोकनेसे अपान बायु बड़े मलवाहक मार्ग को रोकता है इसीसे द्वार छोटा होजाता है और पुरीष बड़ी कठिनतासे निकलताहै ये अति कठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहलाता है ॥ ७१० ॥

तस्यचिकित्सा ॥

संनिरुद्धगुदेतैलैःसेकोवातहरैर्हितः। तथानिरुद्धप्रकशक्रियाऽपिकथिताथवा ॥ ७११ ॥

सन्निरुद्धगुदकी चिकित्सा ॥

वातनाशक तेलोंका सेक अथवा निरुद्धप्रकशमें कही भई चिकित्सा सन्निरुद्धगुदमें हितहै ७११॥

अथ वृषणकच्छूलक्षणमाह ॥

स्नानोत्सादनहीनस्यमलोवृषणसंस्थितः। प्रक्लिद्यतेतदास्वेदात्कण्डूंजनयतेतदा ॥ ततःकण्डूयनात्क्षिप्रंस्फोटःस्रावश्चजायते। प्राहुर्वृषणकण्डूंतांश्लेष्मरक्तप्रकोपजाम्। उत्सादनंउद्वर्त्तनंमलःमैलइतिलोकेप्रक्लिद्यतेआर्द्रोभवति ॥ ७१२ ॥

वृषणकच्छूका लक्षण ॥

स्नान तथा उबटन न करनेवाले मनुष्योंका अंडकोशोंमें स्थित मैलपसीनेके कारण रसियाताहै और खुजली पैदा होती है खुजलाने से आंवला पड़कर बहने लगताहै इसकफ औ रुधिर के कोपसे उत्पन्न भये रोगको वृषणकंडू कहते हैं ॥ ७१२ ॥

तस्याश्चिकित्सा ॥

सर्जाह्वकुष्ठसैन्धवसितसिद्धार्थैःप्रकल्पितोयोगः। उद्वर्त्तनेननियतंशमयतिवृषणस्य कण्डूतिम् ॥ भिषक्वृषणकच्छ्वांतुचिकित्स्येत्पामरोगवत्। अहिपूतननिर्दिष्टक्रियया पिचतांहरेत् ॥ ७१३ ॥ वृषणकच्छूकी चिकित्सा ॥

राल कूट सेंधानोन और सफेद सरसों इन औषधोंके उबटनकरने से अंडकोशोंकी खुजली नष्ट होतीहै वृषण कच्छूमें पामातथा अहिपूतनामें कही भई चिकित्साकरनी चाहिये ॥ ७१३ ॥

अथाहिपूतनस्यलक्षणमाह ॥

शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेऽपानेशिशोर्भवेत् । स्विन्नेवास्नाप्यमानस्यकण्डूरक्तकफोद्भवा॥कण्डूयनात्ततःक्षिप्रंस्फोटःस्रावश्चजायते।एकीभूतंव्रणंघोरंतंविद्यादहिपूतनम्७१४॥

अहिपूतनका लक्षण ॥

विष्टा और मूतके लगे रहने से जो बालकों की गुदामें खुजली होती है अथवा स्नान न करने से पसीनेसे जो खुजली होतीहै और खुजलानेसे आंवले पड़कर बहने लगतेहैं वो सब मिलकर एक व्रण होजाते हैं इस रोगको अहिपूतन कहते हैं ये रुधिर और कफसे उत्पन्न होता है ॥ ७१४ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

तत्रसंशोधनैःपूर्वंधात्रीस्तन्यंविशोधयेत् । त्रिफलाखदिरक्राथैःव्रणानांक्षारनंहितम् ॥ शंखसौवीरयष्ट्याह्वैर्लेपःकार्य्योऽहिपूतने ॥ ७१५ ॥

अहिपूतनकी चिकित्सा ॥

प्रथम शोधन औषधोंके द्वारा धायके दूधको शुद्धकरै फिर त्रिफला औ खैरके काढ़ेसे व्रणोंको धोवै शंखपुष्पी सौबीर और मुलेठी इनका लेप अहिपूतनमें हितहै ॥ ७१५ ॥

अथगुदभ्रंशस्यलक्षणमाह ॥

प्रवाहिकातिसाराभ्यांनिर्गच्छतिगुदंवहिः।रूक्षदुर्बलदेहस्यगुदभ्रंशंतमादिशेत्७१६ ॥

गुदभ्रंशका लक्षण ॥

रूखी तथा दुर्बल देहवाले मनुष्योंकी गुदासंग्रहणी और अतीसारके कारणसे बाहर निकल आती है यहरोग गुदभ्रंश कहलाताहै ॥ ७१६ ॥ तस्याचिकित्सा ॥

गुदभ्रंशेगुदंस्विन्नंस्नेहेनाक्तंप्रवेशयेत् । प्रविष्टंरोधयेत्यत्नात्गव्यसच्छिद्रचर्मणा ॥ पद्मिन्याःकोमलंपत्रंयःखादेच्छर्करान्वितम्।एतन्निश्चित्यानिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः ७१७

गुदभ्रंशकी चिकित्सा ॥

गुदभ्रंशमें तेल लगाकर सेंकै और भीतरको दबादे अनन्तरछिद्रवाले बैलके चर्मसे उसको रोकै चमड़ेमें छिद्र इसवास्ते कियाजाताहै कि मल निकलजाय और गुदा बाहर न आवै अनन्तर कोमल पद्मिनीके पत्ते शहतके साथखाय तो निश्चयकरके उसकी कांच न निकलैगी ॥ ७१७ ॥

मूषकाणांवसाभिर्वागुदभ्रंशेप्रलेपनम् । सुस्विन्नंमूषकामांसेनाथवास्वेदयेत्गुदम् ॥ वृक्षाम्लानलचाङ्गेरीविल्वपाठायवाग्रजम् । तक्रेणशीलयेपांशुभ्रंशात्तोनलदीपनम् ॥ मूषकादशमूलानिगृह्णीयादुभयंसमम् । तयोःक्वाथेनकल्केनपचेत्तैलंयथोदितम् ॥ अभ्यङ्गात्तस्यतैलस्यगुदभ्रंशोविनश्यति । विनश्यतितथानेनगुदशूलंभगन्दरम् ॥ मूषकतैलम् ॥ ७१८ ॥

चूहोंकी चर्बीका लेप गुदभ्रंशमें हितहै अथवा सुस्विन्न चूहेके मांससे गुदाको सेंकै चूका चीता लोनिया बेल पाठ और जवाखार इनका चूर्ण मट्ठेके साथ सेवनकरै तो कांचवालेकी अग्नि बढ़ती

है चूहा और दशमूल ये दोनों समभाग इनदोनों के क्वाथ और कल्कसे तेलको पकावै इसतेलके लगाने से कांच गुदशूल और भगन्दर नष्टहोतेहैं इतिमूषकतैल ॥ ७१८ ॥

अथशूकरदंष्ट्रस्यलक्षणमाह ॥

सदाहोरक्तपर्य्यन्तस्त्वक्पाकीतीव्रवेदनः । कण्डूमान्ज्वरकारीचसस्याच्छूकरदंष्ट्रकः ॥ सःगुदभ्रंशः ॥ ७१९ ॥ शूकरदंष्ट्रका लक्षण ॥

रक्तपर्यंतत्वचाके पाकवाला अत्यन्त पीड़ायुक्त खुजली ज्वर तथा दाहयुक्त गुदभ्रंशको शूकरदंष्ट्र कहते हैं ॥ ७१९ ॥ तस्याचिकित्सा ॥

भृङ्गराजकमूलस्यरजन्यासहितस्यच । चूर्णंतुसहसालेपात्वाराहद्विजनाशनम् ॥ राजीवमूलकल्कःपीतोगव्येनसर्पिषाप्रातः । शमयतिशूकरदंष्ट्रदंष्ट्रोद्भूतंज्वरंघोरम् ॥ रजनीमार्कवंमूलंपिष्टंशीतेनवारिणा । तल्लेपाद्धन्तिवीसर्पवाराहदशनाङ्कयम् ॥ ७२० ॥

शूकरदंष्ट्रकी चिकित्सा ॥

हल्दी और भंगरेकी जड़के चूर्णके लेपसे शूकरदंष्ट्र नष्टहोताहै कमलकी जड़का कल्क गऊकेघी के साथ प्रातःकाल पीनेसेदंष्ट्रा और दंष्ट्राजन्य ज्वरको नाशताहै हल्दी और भंगरेकी जड़को पानी से पीसकर लेपकरनेसे वीसर्प और शूकरदंष्ट्रा नष्टहोतेहैं ॥ ७२० ॥

अथानुशयीलक्षणमाह

गम्भीरामल्पशोथाञ्चसवर्णामुपरिस्थिताम् ।पादस्यानुशयीतान्तुविद्यादन्तःप्रपाकिनीम् ॥ अत्रपीडिकामितिविशेष्यपदमध्याहरणीयंगम्भीरान्तःपाकेन ॥ ७२१ ॥

अनुशयीका लक्षण ॥

गम्भीर अल्पशोथवाली तुल्यबर्णवाली पैरके ऊपर स्थित भीतर पाकवाली पिड़िकाको अनुशयी कहते हैं ॥ ७२१ ॥ अथतस्याचिकित्सा ॥

हरेदनुशयींवैद्यःक्रिययाश्लैष्मविद्रधेः ॥ ७२२ ॥

अनुशयीकी चिकित्सा ॥

अनुशयीमें कफजविद्रधिकीसी चिकित्साकरै ॥ ७२२ ॥

अलसस्यलक्षणमाह ॥

क्लिन्नांगुल्यन्तरौपादौकण्डूदाहसमान्वितौ । दुष्टकर्दमसंस्पर्शादलसन्तंविभावयेत् ॥ अलसंकन्दईइतिलोके ॥ ७२३ ॥

अलसकालक्षण ॥

खराबकीचड़के लगनेसे पैरोंकी अंगुलियोंके बीचमें क्लेद दाह तथा खुजलीयुक्त जो रोग होता है उसे अलस कहतेहैं इसे लोकमें कंदई कहतेहैं ॥ ७२३ ॥

तस्याचिकित्सा ॥

पादौसिक्त्वारनालेनलेपनंत्वलसेहितम् । पटोलकुनटीनिम्बरोचनामरिचैस्तिलैः ॥ क्षुद्रास्वरससिद्धेनकटुतैलेनलेपयेत् । ततःकासीसकुनटीतिलचूर्णैर्विचूर्णयेत् ॥ विचूर्ण

येद्वधूलयेत्॥करञ्जबीजंरजनीकासीसंपद्मकंमधु । रोचनाहरितालञ्चलेपोऽयमलसे हितः ॥ ७२४ ॥

अलसकी चिकित्सा ॥

अलसरोगमें मोमको कांजीमें मिलाकर पैरोंपर लेपकरै परवल मैनसिल नींब गोरोचन मिर्च तथा तिलोंके द्वारा अथवा भटकटय्याके रसके साथ पाक कियेभये कडुवे तेलके द्वारा लेपकरै इस के उपरांत कसीस मैनसिल तथा तिलके चूर्णसे धूराकरै करंजुवा हल्दी कसीस पद्माख शहत गोरोचन और हरताल इनका लेप अलसमें हितहै ॥ ७२४ ॥

अथ दारीलक्षणमाह ॥

परिक्रमणशीलस्यवायुरत्यर्थरूक्षयोः । पादयोःकुरुतेदारींसरुजांतलसंश्रिताम् ॥ दारीबिवांई ॥ ७२५ ॥

दारीका लक्षण ॥

बहुत घूमनेवाले मनुष्यके बायु अत्यन्त रूखे पैरोंके तलुवोंमें पीड़ा सहित दारीको उत्पन्नकरता है इसको लोकमें बिवांई कहतेहैं ॥ ७२५ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

पाददार्य्यांशिरांप्राज्ञोमोचयेत्तलशोधिनीम् । स्नेहस्वेदोपपन्नौतुपादौवालेपयेन्मुहुः ॥ मधूच्छिष्टवसामज्जाघृतैःक्षारविमिश्रितैः । अथवसामज्जाचसामान्यतःछागादीनांविशेषानभिधानतः॥उक्तञ्चमेदोमज्जावसाज्ञेयाग्राम्यानूपौदकोद्भवा॥इतिमदनपालः । वसाशुद्धमांसभवःस्नेहःस्नेहोऽस्थ्नशुचिरेवस्यात्समज्जाकथितोबुधैः । क्षारोयवक्षारः ७२६ ॥

दारीकी चिकित्सा ॥

दारीमें तलुवोंको शुद्ध करनेवाली शिराका मोक्षण स्नेहन और स्वेदनकरके शहत बकरी आदि पशुओंकी बसा तथा मज्जाघी और जवाखार इनका लेप बारम्बार करै यहांपर विशेषताके न कहने सेवसा तथा मज्जा बकरी आदिकी ही लेनी क्योंकि मदनपालने कहाहै कि मेद मज्जा तथा बसाये ग्राम्य और जलप्रायदेशोद्भव पशुओंकीही लेना बसा मांससे उत्पन्नभये स्नेहको कहते हैं और जो हड्डीका स्नेहहै उसे मज्जा कहतेहैं ॥ ७२६ ॥

सर्ज्जाह्वसिन्धूद्भवयोश्चूर्णंघृतमधुप्लुतम्।निर्मथ्यकटुतैलाक्तंहितंपादप्रमार्जने। मधुसिक्थकगैरिकघृतगुडमाहिषाक्षशालनिर्यासैःगैरिकसहितैर्लेपःपादःस्फुटनापहःसिद्धः॥मधुसिक्थकंमनःप्रथमंगैरिकंशिलाजतुद्वितीयंगैरिकगेरूइतिलोकेशालनिर्यासःराल७२७॥

घी तथा सहत राल और सेंधेनोनमें मिलाकर तेलमें मिलावै इसके लेपसे दारिका नष्टहोती है मोम सिलाजीत घी गुड़ गूगुल राल और गेरू इन औषधोंकालेप बिवांईको नाशताहै ॥ ७२७ ॥

उन्मत्तकस्यबीजेनमानकक्षारवारिणा । विपक्वंकटुतैलन्तुहन्याद्दारींनसंशयः ॥ उन्मत्ततैलम् ॥ ७२८ ॥

धतूरेके बीज और मानकेचूके क्षार जलसे पकायाहुआ कडुवा तेल दारीको अवश्य नष्टकरता है इति उन्मत्त तैल ॥ ७२८ ॥

कदरस्यलक्षणमाह ॥

शर्करोन्मथितेपादेक्षतेवाकण्टकादिभिः। ग्रन्थिःकोलवदुत्सन्नोजायतेकदरस्तुसः॥ शर्करात्रवालुकाकोलवत्क्षुद्रबदरवत्। उत्सन्नःउद्गतः॥ ७२९॥

कदरका लक्षण॥

बालू अथवा कंटकादिके द्वारा पांवोंके उन्मथित अथवा क्षत होनेसे जो झड़बेरी के समान उठीग्रन्थि होतीहै उसे कदर कहते हैं॥ ७२९॥

तस्यचिकित्सा॥

दहेत्कदरमुद्धृत्यतैलेनदहनेनवा॥ ७३०॥

कदरकी चिकित्सा॥

कदरको निकालकर तैल अथवा आगसे जलावै॥ ७३०॥

तिलकालकमाह॥

कृष्णानितिलमात्राणिनीरुजानिसमानिचावातपित्तकफोद्रेकात्तान्विद्यात्तिलकालकान्॥ समानिअनुद्गतानि। अयंतिलइतिलोके॥ ७३१॥

तिलकालकका लक्षण॥

तिलके तुल्य काले पीड़ारहित सम और बात पित्त तथा कफके कोपसे जोरोग उत्पन्न होता है उसे तिलकालक कहतेहैं इसे लोकमें तिल कहते हैं॥ ७३१॥

मशकमाह॥

अवेदनंस्थिरञ्चैवयत्तुगात्रेप्रदिश्यते। माषवत्कृष्णमुत्सन्नंमलिनंमशकंदिशेत्॥ स्थिरमचलम् अवेदनंवेदनारहितं मशकइतिलोके॥ ७३२॥

मशकका लक्षण॥

देहमें बेदना रहित स्थिर उठाहुआ माषके तुल्य काला जो चिह्न होताहै उसे मशक कहतेहैं॥७३२॥

अथ जतुमणिमाह॥

विल्वचस्तनवःस्फोटाःसूक्ष्माग्राःश्यावपिण्डिकाः। भवन्तिकफपित्ताभ्यांक्षिप्रंनाशंप्रयान्तिच॥ सममुत्सन्नमरुजंमण्डलंकफरक्तजम्। सहजंलक्ष्मचैकेषांलक्ष्योजतुमणिश्चसः॥ कृष्णस्निग्धोजतुमणिर्ज्ञेयोश्लेष्मोत्तरैस्त्रिभिः। अरुजंत्वपरेरक्तंलक्ष्मेत्याहुर्भिषग्वराः॥ समंसमवर्णमुत्सन्नंकिञ्चिदुत्सन्नंसहजंशरीरेणसहजातम्। एवंविधंयन्मण्डलंसजतुमणिर्लक्ष्यःलक्ष्मचैकेषामिति। एकेषामाचार्य्याणांमतेतन्मण्डलंलक्ष्मसंज्ञञ्च लक्ष्मलशुनइतिलोके। अदरेपुनर्जतुमणिम्। लक्ष्मणोभेदकंलक्षणमाह। कृष्णइत्यादि॥ ७३३॥

जतुमणिका लक्षण॥

त्वचा रहित पतले सूक्ष्म अग्रभागवाले धुमैले गोल कफ तथा पित्तसे उत्पन्न होनेवाले शीघ्रही नाशको प्राप्तहोनेवाले अथवा जन्महीसे उठेभये कृष्णबर्ण पीड़ारहित गोल कफ तथा रक्तसे उत्पन्न चिह्नोंको जतुमणि कहतेहैं और आचार्य्य ये कहते हैं कि इसका नाम लक्ष्महै (लशुन) अधिक कफ

वाले तीनों दोषोंसे कृष्ण स्निग्ध तथा रक्तबर्ण पीड़ा रहित तीनप्रकारका जतुमणिहोताहै ७३३ ॥

अथ तिलकालकमशकजतुमणीनांचिकित्सा ॥

चर्मकीलंजतुमणिंमशकानूतिलकालकान् । उत्कृत्यशस्त्रेणदहेत्क्षाराग्निभ्याम शेषतः ॥ ७३४ ॥ तिलकालक मशक औरजतुमणिकी चिकित्सा ॥

चर्मकील लहसुन मस्सा और तिल इनकोशस्त्रसे कुरेदकर क्षार और अग्निसे बिशेषकरके जलावै७३४

अथ न्यच्छमाह ॥

मण्डलंमहदल्पंवाश्यावंवायदिवासितम्।संहजंनिरुजंगात्रेन्यच्छंतदभिधीयते॥७३५॥

न्यच्छका लक्षण ॥

बड़े मंडल अथवा छोटे मंडलवाला धुमैले अथवा शुक्लबर्णवाला बेदनारहित सहज जो शरीरमें चिह्न होताहै उसे न्यच्छ कहतेहैं ॥७३५॥ तस्यचिकित्सा ॥

शिरावेधैःप्रलेपैश्चतथाभ्यंगैरुपाचरेत्।न्यच्छंलिम्पेत्पयःपिष्टैःकल्कैःक्षीरतरूद्भवैः॥ त्रिभुवनविजयापत्रंमूलंस्थविरस्यशिंशिपाचैभिः । उद्वर्तनंविरचितंन्यच्छव्यंगापहंसिद्धम्॥ स्थविरस्यवृद्धदारोः॥७३६॥ न्यच्छकी चिकित्सा ॥

शिराबेध लेप और अभ्यंगसे न्यच्छकी चिकित्सा करै अथवा क्षीरवृक्षके कल्कको दूधसे पीसकर लेप करना चाहिये हडके पत्ते बिधारेकी जड़ और सीसम इनके द्वारा बनाया भया उबटन न्यच्छ व्यंगको नष्ट करता है ॥ ७३६ ॥ पद्मिनीकण्टकमाह ॥

कण्टकैराचितंवृत्तंकण्डूमत्पाण्डुमण्डलम् । पद्मिनीकण्टकप्रख्यैस्तदाख्यंकफवातजम् ॥ आचितंव्याप्तंपद्मिनीकण्टकप्रख्यैःपद्मिनीनालकण्टकसदृशैस्तदाख्यंपद्मिनीकण्टकनामैव ॥ ७३७ ॥ पद्मिनीकंटकका बर्णन ॥

जोरोग गोल खुजलीयुक्त पांडुबर्ण औ पद्मिनीके कंटकोंके तुल्य कंटकोंसे व्याप्त मंडलवाला होता है उसे पद्मिनीकंटक कहतेहैं और कफ तथा वातसे उत्पन्न होताहै ॥ ७३७ ॥

तस्याचिकित्सा ॥

पद्मिनीकण्टकेरोगेछर्दयेन्निम्बवारिणा।तेनैवसिद्धंसक्षौद्रंसर्पिःपातुंप्रदापयेत् ७३८॥

पद्मिनीकंटककी चिकित्सा॥

पद्मिनीकंटक रोगमें नीमके पानीसे बमन कराना और नीमके द्वारा सिद्ध घृत सहतके साथ पीने को देना चाहिये ॥ ७३८ ॥

निम्बारग्वधकल्कैर्वामुहुरुद्वर्त्तनंहितम् । चतुर्गुणेननिम्बोत्थपत्रक्काथेनगोघृतम् ॥ पचेत्ततस्तुनिम्बस्यकृतमालस्यपत्रजैः । कल्कैर्भूयःपचेत्सिद्धंतत्पिबेत्पलसंमितम् ॥ पद्मिनीकण्टकाद्रोगान्मुक्तोभवतिनान्यथा । निम्बादिघृतम् ॥ ७३९ ॥

नींब तथा अमलतासके कल्कसे बारम्बार उबटन कराना चाहिये चौगुने नीमकी पत्तीके क्काथमें गऊका घी पकावै अनंतर नीम और अमलतासके पत्तोंके कल्कसे पकावै फिर ४ तोले नित्यपियै इसकेबिना पद्मिनीकंटकसे छुटकारा नहींहोता इति निंबादिघृत ॥ ७३९ ॥

अथाजगल्लिका ॥

स्निग्धासवर्णाग्रथितानीरुजामुद्गसन्निभा । कफवातोत्थिताज्ञेयाबालानामजगल्लिका ॥ ग्रथितागुम्फितेवमुद्गसंनिभामुद्गाकृतिः ॥ ७४० ॥

अजगल्लिकाका लक्षण ॥

कफ तथा बायुके कोपसे स्निग्ध शरीरके समान बर्णवाली गुंथीभईसी पीड़ारहित जो बालकोंके मूंगकेसमान पिडिका होतीहै उसे अजगल्लिका कहतेहैं ॥ ७४० ॥

तस्याश्चिकित्सा ॥

तत्राजगल्लिकांसामांजलौकाभिरुपाचरेत् । शुक्तिसौराष्ट्रिकाक्षारकल्कैश्चालेपयन्मुहुः ॥ कठिनांक्षारयोगेनद्रावयेदजगल्लिकाम् ॥ ७४१ ॥

अजगल्लिकाकी चिकित्सा ॥

कच्ची अजगल्लिकामें जोंकें लगवावै और सीप सोरठी मट्टी तथा जवाखारसे बारम्बार लेपकरै कठिन अजगल्लिकाको क्षारसे गलावै ॥ ७४१ ॥

यवप्रख्यामाह ॥

यवाकाराप्रकठिनाग्रथितामांससंश्रया । पीड़िकाश्लेष्मवाताभ्यांयवप्रख्येतिसोच्यते ॥ यवाकारामध्येस्थूलाप्रान्तेकृशा ॥ ७४२ ॥

यवप्रख्याका लक्षण ॥

जौके समान मध्यमें स्थूल किनारोंपर पतली कठिन गुंथीहुईसी और मांसका आश्रयकरनेवाली कफबातसे उत्पन्नभई पिड़िकाको यवप्रख्या कहते हैं ॥ ७४२ ॥

अथान्त्रालजीमाह ॥

घनामवक्त्रांपिड़िकामुन्नतांपरिमण्डलाम् । अन्त्रालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफवातजाम् ॥ घनांकठिनांपरिमण्डलांवर्त्तुलांअल्पपूयाम् ॥ ७४३ ॥

अन्त्रालजीका लक्षण ॥

कठिन सीधी उन्नत गोल और थोड़ेपीपवाली कफबातसे भईपिड़िकाको अन्त्रालजी कहते हैं॥७४३॥

अथतयोश्चिकित्सा ॥

अन्त्रालजीयवप्रख्यौपूर्वंस्वेदैरुपाचरेत् । मनःशिलादेवदारुकुष्ठकल्कैःप्रलेपयेत् ॥ पक्वांव्रणविधानेनयथोक्तेनप्रसाधयेत् ॥ ७४४ ॥

यवप्रख्या और अन्त्रालजीकी चिकित्सा ॥

अंत्रालजी और यवप्रख्यामें पहले स्वेदन करके मैनासिल देवदारु तथा कूटका लेपलगावै औ पकनेपरव्रणमें कहीभई चिकित्सा करै ॥ ७४४ ॥

अथविवृतामाह ॥

विवृताख्यांमहादाहांपक्वोदुम्बरसन्निभाम् । विवृतामितितांविद्यात्पित्तोत्थांपरिमण्डलाम् ॥ परितःशोथवतीं ॥ ७४५ ॥

विवृताका लक्षण ॥

फैले मुखवाली अत्यन्त दाहवाली पके गूलरके तुल्य आकृतवाली औ गोल पित्तसे भई पिड़िका को विवृता कहते हैं ॥ ७४५ ॥

अथेन्द्रविद्धामाह ॥

पद्मकर्णिकवन्मध्येपीड़िकांपीड़िकाचिताम् ।इन्द्रविद्धान्तुतांविद्याद्वातपित्तोत्थितांभिषक् ॥ पद्मिनीकर्णिकवत्पद्मफलाधारोपमांपीड़िकाचितांकिञ्जल्कवल्लघुपीड़िकाचिताम् ७४६

इन्द्रविद्धाका लक्षण ॥

पद्मकर्णिका (कमलगट्टे जिस जगह रहते हैं) के समान बीचमें छोटी फुन्सियोंसे व्याप्त बातपित्त से भई पिड़िकाको इन्द्रविद्धा कहतेहैं ॥ ७४६ ॥

गर्द्दभिकामाह ॥

मण्डलंवृत्तमुत्सन्नंसुरक्तंपीड़िकाचितम् ।रुजाकरींगर्द्दभिकांतांविद्याद्वातपित्तजाम् ७४७॥

गर्दभिकाका लक्षण ॥

गोल उन्नत रक्तबर्ण तथा पिड़िकाओंसे व्याप्त मंडलको गर्दभिका कहतेहैं इसमें पीड़ा होती है और ये वात पित्तसे होती है ॥ ७४७ ॥

जालगर्द्दभमाह ॥

विसर्पवत्सर्पतियःशोथस्तनुरपाकवान् । दाहज्वरकरःपित्तात्सज्ञेयोजालगर्द्दभः ॥ अपाकवानीषत्पाकवान्पित्तकृतत्वेनसर्वथापाकाभावस्यायुक्तित्वात् । अयमग्निवात इतिख्यातः ॥ ७४८ ॥

जालगर्दभका लक्षण ॥

विसर्पके समान फैलनेवाला कुछ पकने वाला और दाह तथा ज्वरयुक्त अल्प शोथ जाल गर्दभ कहलाता है ये पित्तसे होताहै और अग्नि बात नामसे प्रसिद्धहै ॥ ७४८ ॥

अथविवृतेन्द्रविद्धागर्दभिकाजालगर्दभानां चिकित्सा ॥

विवृतामिन्द्रवृद्धाञ्चगर्दभींजालगर्द्दभम् ॥ पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययासाधयेद्भिषक् ॥ पाकेतुरोपयेदाज्यैःपक्वैर्मधुरभेषजैः ॥ ७४९ ॥

विवृता इन्द्रबिद्धा गर्दभिका और जालगर्दभकी चिकित्सा ॥

विवृता इन्द्रबिद्धा गर्दभिका और जालगर्दभ में पित्तज बिसर्प कीसी चिकित्सा करै पकनेपर मधुर औषधोंके द्वारा पाक किये घीसे भरे ॥ ७४९ ॥

कच्छपिकामाह ॥

प्रथमःपञ्चवाषट्वादारुणाकच्छपोन्नता । कफानिलाभ्यांपिडिकास्मृताकच्छपीबुधैः ॥ कच्छपोन्नतामध्येप्रोन्नताप्रान्तेनता ॥ ७५० ॥

कच्छपिका का लक्षण ॥

कछुई के समान बीचमें ऊंची तथा किनारों में खाली पहले पांच अथवा छः मिलकर उत्पन्न भई पिड़िकाओंको कच्छपी कहतेहैं यह भयंकर रोग कफ बात से होताहै ॥ ७५० ॥

तस्याश्चिकित्सा ॥

कच्छपींस्वेदयेत्पूर्वंततएवप्रलेपयेत् । कल्कीकृतैर्निशाकुष्टसितातालकदारुभिः ॥ तांपक्वांसाधयेच्छीघ्रंभिषग्व्रणचिकित्सया ॥ ७५१ ॥

कच्छपिका की चिकित्सा ॥

कच्छपिका में पहले स्वेदन करके हल्दी कूट शक्कर हरताल तथा देवदारु के द्वारा लेपकरै फिर पकनेपर शीघ्रही व्रणकी चिकित्सा करे ॥ ७५१ ॥

अथशर्करार्बुदस्यलक्षणमाह ॥

प्राज्यमांसशिरास्नायुमेदःश्लेष्मातथानिलाः । ग्रंथिंकुर्वन्त्यसौभिन्नोमधुसर्पिवसानिभम् ॥ स्रवतिस्रावमत्यर्थंतत्रवृद्धिगतोऽनिलः । मांसंविशोष्यग्रथितांशर्करांजनयत्यतः ॥ दुर्गन्धंक्लिन्नमत्यर्थंनानावर्णंततःशिराः । स्रवंतिसहसारक्तंतंविद्याच्छर्करार्बुदम् ॥ शर्करा बालुकातुल्या ॥ ७५२ ॥

शर्करार्बुद का लक्षण ॥

कफ तथा वायु मांस शिरा स्नायु तथा मेदमें प्राप्त होकर ग्रन्थिको उत्पन्न करतेहैं इस ग्रन्थि से फटकर शहत घी तथा बसाके समान बहुत स्राव होताहै और इसमें बढ़ी भई बायु मांसको सुखाकर बालुकीसी गांठको उत्पन्न करतीहै फिर उस गांठकी शिराओं से अनेक प्रकार के वर्ण युक्त तथा दुर्गंधित क्लेद और रुधिर एकाएकी बहताहै इसे शर्करार्बुद कहतेहैं ॥ ७५२ ॥

शर्करार्बुदस्यचिकित्सा ॥

मेदोऽर्बुदविधानेनसाधयेच्छर्करार्बुदम् ॥ ७५३ ॥

शर्करार्बुद का लक्षण ॥

शर्करार्बुद में मेदोज अर्बुद कीसी चिकित्सा करै ॥ ७५३ ॥

अथ सहेतुकान्सलक्षणान्कतिचिद्विकारानाह ॥

शक्तस्यचाप्यनुत्साहःकर्मण्यालस्यउच्यते । अस्वास्थ्यंचिन्तयात्यर्थमरतिःकथ्यते बुधैः ॥ उत्क्लिश्यान्नञ्चनिर्गच्छेत्प्रसेकःष्ठीवनेरितम् । हृदयंपीड्यतेचास्यतमुत्क्लेशंविनिर्दिशेत् ॥ वक्त्रेमधुरतातन्द्राहृदयोद्वेष्टनंभ्रमः । नचान्नंरोचतेयस्मैग्लानिंतस्यविनिर्दिशेत् ॥ ग्लानिरोजःक्षयाद्दुःखादजीर्णाच्चश्रमोद्भवात् । उदानकोपादाहारसुस्थितत्वाच्चयद्भवेत् ॥ पवनस्योर्ध्वगमनन्तमुद्गारंप्रचक्षते । आटोपोगुड़गुड़शब्दःप्रोक्तोजठरसम्भवः ॥ तमःस्थस्येवयज्ज्ञानंतत्तमःकथ्यतेबुधैः । इतिक्षुद्ररोगाधिकारः ॥ ७५४ ॥

कारण तथा लक्षणों सहित कुछ विकारोंका बर्णन ॥

कार्य में सामर्थ्य होनेपरभी उत्साह न होनेको आलस्य कहतेहैं चिन्ताके कारण शरीरकी अस्वस्थताको अरति कहतेहैं उबकाई आकर अन्न बाहर न आवै मुहंमें पानी आवै और थूकनेसे हृदय में पीड़ा हो इसे उत्क्लेश कहते हैं मुखमें मधुरता तन्द्रा हृदयमें ऐंठन भ्रम और अन्न में अरुचि होनेको ग्लानि कहतेहैं ग्लानि ओजका नाश दुःख अजीर्ण श्रमके द्वारा उदान बायुका कोप और आहार का ठीक स्थान में पहुँचना इन कारणों से बायुके ऊर्ध्व गमन को उद्गार कहतेहैं पेटके गड़गड़ाने को आ-

दोप कहतेहैं अन्धकार में स्थितसामालूम होने को तम कहतेहैं इति क्षुद्ररोगोंका अधिकार ॥७५४॥

अथ शिरोरोगाधिकारः। तत्रशिरोरोगस्यनिदानंसंख्यामाह ॥

शिरोरोगास्तुजायन्तेवातपित्तकफैस्त्रिभिः। सान्निपातेनरक्तेनक्षयेणकृमिभिस्तथा॥ सूर्य्यावर्त्तानन्तवातशंखकार्द्धावभेदकाः। एकादशविधस्यास्यलक्षणानिप्रचक्षते॥ शिरोरोगाः अत्रशिरोरोगजाशूलरूपारुगभिधीयतेवातपित्तकफैस्त्रिभिः। ननुवातपित्तकफैरित्युक्तेस्त्रित्वबोधःकिमर्थंत्रिभिरितिपदं॥ वातपित्तकफानांपृथक्कारणानिबोद्धव्यानि। क्षयेणरसादिक्षयेण॥ ७५५॥

. शिरोरोगका अधिकार शिरोरोगके निदान औ संख्या॥

शिरकी पीड़ा वातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज क्षयज (रसादिकों के क्षयसे) कृमिज सूर्यावर्त अनंतवात शंखक और अर्द्धावभेदक इन भेदों से ग्यारह प्रकारकी होतीहै॥ ७५५॥

वातिकस्यलक्षणमाह॥

यस्यानिमित्तंशिरसोरुजश्चभवन्तितीव्रानिशिचातिमात्रम्। बन्धोपतापैःप्रशमोभवेच्चशिरोऽभितापःससमीरणेन॥ भवेदितिशेषः अनिमित्तंअतर्कितविप्रकृष्टनिमित्तंनिशिवातिमात्रंरात्रौशैत्येनवायोराधिक्यात् उपतापः स्वेदनंशिरोऽभितापःशिरःपीड़ा७५६

बातज शिरकी पीड़ा के लक्षण॥

बिना कारण के शिरमें पीड़ा होना रात्रिमें पीड़ाका अधिक होना बंधन तथा स्वेदन से पीड़ाका शान्त होना ये वातज शिरकी पीडा के लक्षण हैं॥ ७५६॥

पैत्तिकमाह॥

यस्योष्णमङ्गारचितंयथैवभवेच्छिरोदह्यातिचाक्षिनाशम्। शीतेनरात्रौचभवेच्छमश्चशिरोऽभितापःसतुपित्तकोपात्॥ दह्यतीत्यार्षत्वात्॥ ७५७॥

पित्तज शिरकी पीड़ाके लक्षण॥

जलते भये अंगारों से व्याप्त के समान शिरका मालूम होना नेत्र तथा नासिकामें दाह होना और शीतल क्रिया के द्वारा तथा रात्रिमें पीड़ा का शान्त होनाये पित्तज शिरकी पीड़ाके लक्षणहैं॥७५७॥

श्लैष्मिकमाह॥

शिरोभवेत्तस्यकफोपदिग्धंगुरुप्रतिष्टब्धमथोहिमञ्च शूनाक्षिनासावदनञ्चयस्यशिरोभितापःसकफप्रकोपात्। कफोपदिग्धंअन्तःकफलिप्तंप्रतिष्टब्धंतच्चशिरः॥ ७५८॥

कफज शिरकी पीड़ा के लक्षण॥

शिरका कफ से भरासा मालूम होना भारीपन स्तब्धता तथा शीतलता औ नेत्र नासिका तथा मुखमें शोथ होना ये कफज शिरकी पीड़ा के लक्षण हैं॥ ७५८॥

सान्निपातिकमाह॥

शिरोऽभितापेत्रितयप्रवृत्तेसर्वाणिलिङ्गानिसमुद्भवन्ति॥ ७५९॥

सन्निपातज शिरकी पीड़ा के लक्षण॥

सन्निपातज शिरकी पीडा में तीनों दोपोंके लक्षण होते हैं॥ ७५९॥

रक्तजमाह ॥

रक्तात्मकःपित्तसमानलिङ्गःस्पर्शासहत्वंशिरसोभवेच्च । पैत्तिकाद्भेदमाह । शिरःस्पर्शासहत्वमिति ॥ ७६० ॥

रक्तज शिरकी पीड़ाके लक्षण ॥

रक्तज शिरकी पीड़ा में पित्तज शिरकी पीड़ाके लक्षण होते हैं और विशेष करके शिरमें स्पर्श नहीं सहाजाता ॥ ७६० ॥

क्षयजमाह ॥

वसाबलासक्षतसम्भवानांशिरोगतानामतिसंक्षयेण । क्षयःप्रवृत्तःशिरसोऽभितापः कष्टोभवेदुग्ररुजोऽतिमात्रम् ॥ क्षतसम्भवंरुधिरम् । संस्वेदनच्छर्दनधूमनस्यैरसृक्कविमोक्षैश्चविवृद्धिमेति ॥ अङ्गंभ्रमतितुद्येतशिरोविभ्रांतनेत्रता।मूर्च्छागात्रावसादश्चशिरोरोगेक्षयात्मिके । कष्टःकष्टसाध्यः ॥७६१ ॥

क्षयज शिरकी पीड़ाके लक्षण ॥

शिर संबंधी चरबी कफ तथा रुधिरके अत्यन्त नाशसे क्षयज शिरकी पीड़ा उत्पन्न होती है यह कष्टसाध्य है स्वेदन छर्दि धूम नस्य और रुधिर निकलवाने से यह बहुत बढ़ती है रोगीके शरीर शिर तथा नेत्रों में चक्करसा आता है सुई गड़ने कीसी पीड़ा होती है और मूर्च्छा तथा शरीरकी शिथिलता होती है ॥ ७६१ ॥

कृमिजमाह ॥

निस्तुद्यतेयस्यशिरोऽतिमात्रंसम्भक्ष्यमाणंस्फुरतीवचान्तः।घ्राणाच्चगच्छेद्रुधिरंसपूयं शिरोऽभितापःकृमिभिःसघोरः । सम्भक्ष्यमाणंकृमिभिरितिशेषः । घ्राणाच्चेतिचकारेण कृमिनिर्गमोऽपिबोध्यते ॥ ७६२ ॥

कृमिज शिरकी पीड़ाके लक्षण ॥

शिरमें सुई गड़ने की सी तथा कीड़ोंके खानेकीसी पीड़ाहोवे शिरके भीतर कीड़े चलते हुयेसे मालूम होवें और नासिका से पीव सहित रुधिर तथा कीड़े निकलें यह भयंकर कृमिज शिरकी पीड़ा के लक्षण हैं ॥ ७६२ ॥

सूर्य्यावर्त्तमाह ॥

सूर्य्योदयंयाप्रतिमन्दमक्षिशंखभ्रुवौरुक्समुपैतिगाढम् । विवर्द्धतेचांशुमतासहैव सूर्यापवृत्तौविनिवर्त्ततेच ॥ शीतेनशान्तिलभतेकदाचिदुष्णेनजन्तुःसुखमाप्नुयाद्वा । स वातमकंकष्टतमंविकारंसूर्य्यापवर्त्तमुदाहरन्ति ॥सूर्योदयइतिलक्षीकृत्यआरभ्येतियावत् सूर्यस्यापवृत्तौसूर्यस्याधोगतौ ॥ ७६३ ॥

सूर्य्यावर्त्त नाम शिरकी पीड़ाके लक्षण ॥

जो शिरकी पीड़ा सूर्य्य के उदय से लेकर धीरे२ नेत्र और भृकुटियोंमें सूर्यके साथही बढ़तीजातीहै और सूर्य के घटने के साथ घटती है और शीतलता अथवा उष्णता आदिक किसी से भी रोगीको चैन नहीं पड़ताहै इस त्रिदोषज शिरकी पीड़ाको सूर्यावर्त्त कहतेहैं यह अत्यन्त कष्ट साध्य है ॥ ७६३॥

अनन्तवातमाह ॥

दोषास्तुदुष्टास्त्रयएवमन्यांसम्पीड्यगाढंसुरुजांसुतीव्राम् । कुर्वन्तिसोऽक्षिणभ्रुविश

ङ्खदेशेस्थितिंकरोत्याशुविशेषतस्तु ॥ गण्डस्यपार्श्वेतुकरोतिकम्पंहनुग्रहंलोचनजानवि कारान् । अनन्तवातंतमुदाहरन्तिदोषत्रयोत्थंशिरसोविकारम्॥एवशब्दोऽत्रपादश्चर्थः। अव्ययानामनेकार्थत्वात् स्वरुजांस्वस्वरूपांरुजांव्यथादाहंगौरवादिरूपांदोषाःकुर्वन्ति अयमनन्तेवातसमः अनन्तवातः अक्ष्यादिषुस्थितिंकरोति ॥ विशेषतःगण्डपार्श्वेस्थितिं करोतिपीडायाःस्थितिंकृत्वाकम्पादींश्चकरोति ॥ ७६४ ॥

अनन्तबातनाम शिरकी पीड़ा के लक्षण ॥

कुपित बातादि तीनोंदोष गलेकी पीछेकी नसको दबाकर अपना २ व्यथादाह तथा भारीपन आदि पीड़ा को उत्पन्न करते हैं यह पीड़ा नेत्र भृकुटी तथा माथेकी हड्डियोंमें स्थित होतीहै इसमें बिशेष करके गंडस्थल के किनारोंपर कंप जावड़ोंका जकड़ना और नेत्रोंके बिकार उत्पन्न होतेहैं इस त्रिदोषज शिरकी पीड़ाको अनन्तबात कहते हैं ॥ ७६४ ॥

शङ्खकमाह ॥

पित्तरक्तानिलाःदुष्टाःशङ्खदेशेविमूर्च्छिताः । तीव्ररुग्दाहरागंहिशोथंकुर्वन्तिदारुण म्॥सशिरोविषवद्वेगान्निरुध्याशुगलन्तथा । त्रिरात्राज्जीवितंहन्तिशङ्खकोनामनामतः त्र्यहंजीवतिभैषज्यंप्रत्याख्यायास्यकारयेत् । पित्तरक्तानिलाःअत्रकफोऽपियोज्यःकृतानु तापः कफपित्तरक्तैरितिसुश्रुतवचनात्विमूर्च्छिताःप्रवृद्धाःसशोथात्रिरात्रात्त्रिरात्रिमध्ये मारयतिइतियावत ॥ ७६५ ॥

शंखक नाम शिरकी पीड़ा के लक्षण ॥

पित्त रुधिर तथा बायु कुपित होकर माथेकी हाड्डियोंमें बढ़ते हुए तीक्ष्ण पीड़ा दाह तथा रक्त वर्ण युक्त भयंकर शोथको उत्पन्न करतेहैं यह शोथ बिषके समान शीघ्रही शिर तथा गलेको रोककर तिनि- हीं दिनमें रोगीको मार डालताहै इसे शंखक कहतेहैं इसकी चिकित्सा रोगी अच्छा नहोगा यह कह कर करनी चाहिये ॥ ७६५ ॥

अर्द्धावभेदकमाह ॥

रूक्षाशनाद्यध्यशनावश्यप्राग्वातमैथुनैः । वेगसन्धारणायासव्यायामैःकुपितोऽनिलः केवलःसकफोवार्द्धंगृहीत्वाशिरसोवलीम् । मन्याभ्रूशंखकर्णाक्षिललाटार्द्धेषुवेदनाम् ॥ शस्त्राशनिनिभांकुर्य्यात्तीव्रांसोर्द्धावभेदकः । नयनंवाथवाश्रोत्रमभिवृद्धोविनाशयेत् ॥ अ वश्यःअवश्यायः । आयासःअतिचलनभारोद्वहनादिःव्यायामःमल्लश्रमः ॥ शस्त्राशनि निभांशस्त्रघातेनेववज्रपातेनेत्रवेदनाम् ॥ ७६६ ॥

रूखी बस्तुके खाने से अजीर्ण में भोजन से जुकाम से पूर्वी हवासे मैथुनसे मलमूत्रादि बेगोंके रोकने से वहुत चलने से भार उठाने आदि श्रमसे तथा मल्ल युद्धादि व्यायाम से कुपित बायु अकेली अथवा कफ सहित शिरके अर्धभाग को ग्रहण करके गलेके पीछेकी नस भृकुटी माथेकी हड्डी कान नेत्र तथा ललाट के आधेभाग में शस्त्र अथवा बज्र लगने कीसी तीव्र पीड़ाको उत्पन्न करतीहै इसे अर्धावभेदक कहतेहैं इसके वहुत बढ़ने में नेत्र अथवा कानका नाश होताहै ॥ ७६६ ॥

अथ शिरोरोगाणांचिकित्सा ॥

वातजातशिरोरोगेस्नेहस्वेदविगर्हणम्। पानाहारोपनहांश्चकुर्य्याद्वातामयापहान् ॥ कुष्ठमेरण्डमूलञ्चनागरंतक्रपेषितम्। कटूष्णंशिरसःपीड़ांभालेलेपनतोहरेत् ॥ रसः श्वासकुठारोयस्तस्यनस्यंविशेषतः। शिरःशूलंहरत्येवविधेयोत्रसंशयः ॥ ७६७ ॥

शिरकी पीड़ाकी चिकित्सा ॥

बातज शिरकी पीड़ामें स्निग्ध स्वेद और बातनाशक पान आहार तथा पुल्टिस लगानाहित है कूट रेंडीकी जड़ तथा सोंठ इनको मट्ठेमें पीसकर कुछ गरम लेपकरनेसे शिरकी पीड़ाका नाशहोता है श्वास कुठार नाम रसकीनास लेने से निस्सन्देह शिरकी पीड़ा नाशहोती है ॥ ७६७ ॥

शिरोवस्तिविधिः ॥

आशिरोव्ययितश्चर्मषोड़शांगुलमुच्छ्रितः। तेनावेष्ट्यशिरोऽधस्तान्माषकल्केनलेपयेत् ॥ निश्चलस्योपविष्टस्यतैलैःकोष्णैःप्रपूरयेत्। धारयेदारुजःशान्त्यैयामंयामार्द्धमेववा ॥ शिरोवस्तिर्हरत्येषशिरोरोगंमरुद्भवम्। हनुमन्याक्षिकर्णार्त्तिमर्दितंमूर्द्धकम्पनम् ॥ विनाभोजनमेवैषाशिरोवस्तिःप्रयुज्यते। दिनानिपञ्चवासप्तरुचितोऽग्रेततोऽपि च ॥ ततोऽपनीतस्नेहस्तुमोचयेद्वास्तिबन्धनम्। शिरोललाटवदनंग्रीवांसादीन्विमर्दयेत्। सुखोष्णेनाम्भसागात्रंप्रक्षाल्याश्नातियद्धितम्। आमिषञ्जांगलंपथ्यंतत्रशाल्यादयोऽपिच ॥ मुद्गमाषान्कुलत्थांश्चखादेद्वानिशिकेवलान्। कटुकोष्णान्ससर्पिष्कानुष्णंक्षीरंपिवेत्तथा ॥ ७६८ ॥

शिरोवस्तिकी विधि ॥

जितने लम्बे चमड़ेसे शिर लिपटजाय उतना लम्बा चमड़ा शिरमें १६ अंगुल ऊंचा लपेटकर नीचे उर्दके आटेसे लेपकरदेवे फिर निश्चल बैठकर गरम २ तेल उस चमड़ेमें भरदेवे एक पहर आधे पहर अथवा पीड़ाकी शान्ति पर्य्यन्त रहनेदेवे इससे बातज शिरकी पीड़ा ज्ञावड़े गलेके पीछेकी नस नेत्र तथा कानकी पीड़ा और शिरका कांपना नष्टहोताहै भोजनसे पहलेही शिरोवस्ति लेनी चाहिये पांच अथवा सात दिन और इच्छाहोय तो अधिक दिनभी शिरोवस्ति को लेवे इसके उपरान्त तेलको निकालकर बन्धनको खोले और शिर ललाट मुख ग्रीवा और कन्धोंको मलकर कुछ गरम जलसे धोवे फिर हितकारी अन्न भोजन करे जांगलमांस शालिधान्य मूंग उर्द तथा कुलथी खाय और रात्रिके समय घृत सहित कडुवे उष्ण पदार्थ तथा उष्ण दूधका सेवनकरे ॥ ७६८ ॥

पित्तात्मकेशिरोरोगेशीतानांचंदनाम्भसा।कुमुदोत्पलपद्मानांस्पर्शाःसेव्याश्चमारुताः॥ सर्पिषःशतधौतस्यशिरसाधारणंहितम्। रसःश्वासकठारोऽल्पःकर्पूरःकुंकुमंनवम्। सिताच्छागीपयःसर्वंचन्दनेनानुघर्षयेत्।तस्यनस्यंभिषग्दग्धात्पित्तजायांशिरोरुजि ॥ किन्तु मस्तकशूलेषुसर्वेष्वेवंहितंमतम्। गुड़नागरकल्कस्यनस्यंमस्तकशूलनुत् ॥ रक्तजेपित्तवत्सर्वंभोजनालेपसेचनम्। शीतोष्णयोश्चविन्यस्यविशेषोरक्तमोक्षणम्॥ ७६९ ॥

पित्तज शिरकी पीड़ामें चन्दनके जलसे शीतलकोझाबेली उत्पन्न कमल तथा बायुका सेवन करना चाहिये सौबार धोयेहुये घृतका भी शिरमें धारण करनाहितहै थोड़ासा श्वास कठार रसकपूर

केसर मिश्री तथा बकरीके दूधको चन्दनके साथ घिसकर नासलेने से पित्तज शिरकी पीड़ा नष्टहोतीहै यह नास सम्पूर्ण शिरकी पीड़ाओंमें हितकारी है गुड़ तथा सोंठको पीसके नासलेने से शिरकी पीड़ा नष्ट होतीहै रक्तजशिरकी पीड़ामें पित्तज शिरकी पीड़ाके समान भोजन लेप तथा सींचना होताहै और शीतल तथा उष्ण क्रियाको करके रुधिर निकलवाना विशेष हितकारीहै ॥ ७६९ ॥

कफजेलङ्घनंस्वेदरूक्षोष्णैःपावकात्मकैः । सन्निपातभवेकार्यासन्निपातहरीक्रिया ॥ पुराणसर्पिषःपानंविशेषेणदिशन्तिहि ॥ ७७० ॥

कफज शिरकी पीड़ामें अग्न्यात्मक रूखे तथा उष्ण स्वेददेने चाहिये सन्निपातज शिरकी पीड़ामें त्रिदोष नाशक औषधकरे और इसमें पुराने घीका पीना अत्यन्त हितकारी है ॥ ७७० ॥

एरण्डमूलंतगरंशताह्वाजीवन्तिकारास्निकासैन्धवचभृङ्गंविडङ्गंमधुयष्टिकाचविश्वौषधंकृष्णातिलस्यतैलम् ॥ अजापयस्तैलविमिश्रितञ्चचतुर्गुणंभृङ्गरसेविपक्वम् । षड्विन्दवोनासिकयाप्रदेयाःसर्वान्निहन्युःशिरसोविकारान् ॥ च्युतांश्चकेशान्पतितांश्चदन्तान्निर्बन्धमूलान्प्रकटीकरोति । सुपर्णगृध्रप्रतिमंचचक्षुःकुर्वन्तिबाह्वोरधिकंबलञ्च ॥ जीवन्तिकात्रहरीतकीशाकविशेषश्च । इतिषड्विन्दुतैलम् ॥ ७७१ ॥

अरण्डकी जड़ तगर सौंफ जीवन्ती रासना सेंधानोन भांगरा वायविड़ंग मुलहठी तथा सोंठ इनके द्वारा समभाग बकरीके दूध और चौगुने भंगरेके रसके साथ तिलके तेलको पाककरके छः बूंद नासिकामें छोड़े इसके द्वारा संपूर्ण शिरके रोग नष्ट होतेहैं गिरेहुये बाल तथा दांत फिर निकल आते हैं गरुड़ तथा गृद्धकीसी दृष्टि होजाती है और भुजाओं में अधिक बल होता है इति षड्विन्दुतैल ॥ ७७१ ॥

क्षयजेक्षयनाशायकर्त्तव्योवृंहणोविधिः । पानेनस्येचसर्पिस्याद्वातघ्नैर्मधुरैर्घृतम् ॥ ७७२ ॥

क्षयज शिरकी पीड़ामें क्षयके नाशके लिये धातुवर्द्धक क्रियाकरे पीनेमें तथा नासलेनेमें बातघ्न मधुर औषधियोंके द्वारा पाककियेहुये घीका सेवनकरे ॥ ७७२ ॥

कृमिजेव्योषनक्ताह्वशिग्रुबीजैश्चनावनम् । अजामूत्रयुतंनस्यंकर्त्तव्यंकृमिनुत्परम् ॥ सूर्य्यावर्तेविधातव्यंनस्यकर्मादिभेषजम् ॥ ७७३ ॥

कृमिज शिरकी पीड़ामें त्रिकटु करंजुआ तथा सहजनके बीजोंको बकरीके मूत्रमें पीसकर नास ले सूर्य्यावर्त नाम शिरकीपीड़ामें नासलेनाआदि औषधकरे ॥ ७७३ ॥

कुमार्य्याःस्वरसःप्रस्थेधत्तूरस्यरसेतथा ॥ भृंगराजस्यचरसेप्रस्थद्वयसमायुते । चतुःप्रस्थमितेक्षीरेतैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ कल्कैर्मधुकह्रीवेरमञ्जिष्ठाभद्रमुस्तकैः । नखकर्पूरभृंगैलाजीवन्तीपद्मकुष्ठकैः ॥ मार्कवासकतालीससर्जनिर्यासपत्रकैः । विडंगशतपुष्पाश्वगन्धागन्धर्वहस्तकैः ॥ शोषंवटंनालिकेराभ्यांकर्षामानैर्विपाचिते । उत्तार्य्यवस्त्रपूतंतुशुभेभाण्डेसुधूपिते ॥ त्रिरात्रमथगुप्तञ्चधारयेद्विधिवद्भिषक् । ततस्तुतैलमभ्यंगेमूर्द्धिक्षेपेनियोजयेत् ॥ शमयेदर्दितङ्गाढमन्यास्तम्भाशिरोगदान् । तालुनासाक्षियातन्तुशोषमूर्च्छाहलीमकम् ॥ हनुग्रहगदार्तिवावाधिर्य्यकर्णवेदनम् । इतिकुमारीतैलम् ॥ ७७४ ॥

मुलहठी सुगन्धबाला मजीठ अगरमोथा नखी कपूर तज इलायची जीवन्ती पद्माक कूट भंगरा अडूसा तालीस राल तेजपात बायबिड़ंग सौंफ असगन्ध और भिलावां तथा नारियलकीजड़ तोले२ भर इन औषधियों के द्वारा ६४ तोले घींग्वार के रस ६४ तोले धतूरे के रस १२८ तोले भंगरेके रस और २५६ तोले दूधके साथ ६४ तोले तेलको पाककरके छानकर उत्तम पात्रमें रखकर तीनदिन मट्टीमें रक्खे इसको शरीर तथा शिरमें लगानेसे अर्दित मन्यास्तंभ शिरके रोग तालु नासिका तथा नेत्रोंके रोग शोथ मूर्च्छा हलीमक जवड़ोंका जकड़ना बधिरता और कानों की पीड़ा इनसबका नाश होता है इति कुमारी तैल ॥ ७७४ ॥

योजयेत्सगुड़ंसर्पिर्घृतपूयांश्चभक्षयेत् । नावनंक्षीरसर्पिर्भ्यांपानञ्चक्षीरसर्पिषोः ॥ क्षीरपिष्टैस्तिलैःस्वेदाजविनर्यैश्चशस्यते । भृंगराजरसःछागीक्षीरतुल्योऽर्कतापितः ॥ सूर्य्यावर्त्तंनिहन्त्याशुनस्येनैवप्रयोगराट् ॥ ७७५ ॥

गुड़ सहित घी तथा घीके मालपुए खाने से घी दूधके पीने तथा नासलेने से दूधमें पिसेहुए तिलों के द्वारा अथवा जीवनीगणके द्वारा स्वदेलेनेसे अथवा बकरी के दूध और भंगरेके रसको धूप में गरम करके नास लेनेसे सूर्यावर्त्त का शीघ्रही नाश होताहै ॥ ७७५ ॥

अर्द्धावभेदकेपूर्वंस्नेहस्वेदौहिभेषजम् । विरेकःकायशुद्धिश्चधूपःस्निग्धोष्णभोजनम् ॥ विड़ंगानितिलान्कृष्णान्समान्पिष्टान्विलेपयेत् । नस्यञ्चाप्याचरेत्तस्मादर्द्धभेदं व्यपोहति ॥ पिबेत्सशर्करंक्षीरंनीरंवानारिकेरजम् । सुशीतंवापिपानीयंसर्पिर्वानस्ततस्तयोः ॥ नस्यतःनासिकयापिबेदित्यन्वयःतयोःसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदयोः ॥ ७७६ ॥

अर्द्धावभेदक नाम शिरकी पीड़ा'में पहले स्निग्ध स्वेदन करके फिर विरेचन शरीर शोधन और धूम प्रयोग करके स्निग्ध तथा उष्ण भोजन करे बायबिड़ंग और काले तिलोंको पीसकर लेपकरने से अथवा नाश लेनेसे अर्द्धावभेदक नष्ट होता है नासिका के द्वारा शक्कर सहित दूध नारियल का जल शीतल जल अथवा घी पीने से सूर्यावर्त्त और अर्धावभेदक का नाश होताहै ॥ ७७६ ॥

अनन्तवातेकर्त्तव्यःसूर्य्यावर्तहितोविधिः । शिरोवेधश्चकर्त्तव्योऽनन्तवातप्रशान्तये आहारश्चप्रदातव्योवातपित्तविनाशनः । मधुमस्तकसञ्जावघृतपूयोविशेषतः ॥ संजावःपक्वान्नविशेषःपेराकियाइतिलोकेसचमधुमस्तकःमधुनोपलिप्तःघृतपूयःपूया ॥ ७७७॥

अनन्त बात नाम शिरकी पीड़ामें सूर्य्यावर्त्तनाशक चिकित्सा करे और फस्त लेवे इसमें बात पित्तनाशकवस्तु भोजनकेलिये देवे और सहतमें पगहिुईपिड़किया और पूए विशेषकरकेखाय७७७

पथ्याक्षधात्रीरजनीगुडूचीभूनिम्बनिम्बैःसगुड़ःकषायः॥भ्रूशङ्खकर्णाक्षिशिरोऽर्द्धशूलं निहन्तिनासानिहितःक्षणेन इतिपथ्यादिक्काथः ॥ ७७८ ॥

हड़ बहेड़ा आवँला हल्दी गिलोय चिरायता तथा नींब इन सबके काढ़ेमें गुड़ मिलाकर नासिकामें छोड़ने से भृकुटी माथेकी हड्डी कान नेत्र तथा शिरके अर्धावभेदक का नाश होता है इति पथ्यादि क्काथ ॥ ७७८ ॥

दार्वीहरिद्रामञ्जिष्ठासनिम्बोशीरपद्मकम् । एतत्प्रलेपनंकुर्य्याच्छङ्खकस्यप्रशान्तये॥ शीततोयाभिषेकश्चशीतलंक्षीरसेवनम्।कल्कैश्चक्षीरवृक्षाणांशङ्खकेलेपनंहितम् ७७९॥

दारुहल्दी हल्दी मजीठ नींब खस तथा पद्माक इनसबके लेपसे शंखक नाम शिरकी पीड़ाका नाश होताहै शीतल जलसे सींचना शीतल दूधका सेवन और दूधवाले वृक्षोंका लेप शंखक पीड़ामें हितकारी है॥ ७७९॥

सर्वेषुशिरोरोगेषु॥

यष्टीमधुकमाषःस्यात्तूर्य्यांशंतुविषंभवेत्। तयोश्चूर्णंसुसूक्ष्मंस्यात्तच्चूर्णंसर्षपोन्मितम्। नासिकाभ्यन्तरेन्यस्तंसर्वांशीर्षव्यथांहरेत्। दृष्टप्रयोगोयोगोऽयमनुभाविभिरादृतः॥आर्द्रयच्छुक्तिकाचूर्णंचूर्णितंनवसादरम्। उभयेयोजितंतस्यगन्धात्नश्यतिशीर्षरुक् शिरोरोगाधिकारः॥ ७८०॥

सम्पूर्ण शिरकी पीड़ाओंकी चिकित्सा॥

माशेभर मुलहठी और चौथाई माशे विषको सूक्ष्म चूर्ण करके सरसोंभर नासिकामें छोड़ने से सबप्रकारकी शिरकी पीड़ा नष्टहोतीहै यह अनुभव कियागयाहै गीले सीपके चूनेमें नौसादर मिलाकर सूंघनेसे शिरकी पीड़ाका नाशहोताहै इति शिरोरोगाधिकार समाप्त॥ ७८०॥

अथ नेत्ररोगाधिकारः। नेत्रस्यप्रमाणमाह॥

विद्याद्द्व्यङ्गुलबाहुल्यंस्वाङ्गुष्ठोदरसम्मितम्। द्व्यङ्गुलंसर्वतःसार्द्धंभिषकनयनमंडलम्॥ द्व्यङ्गुलबाहुल्यंद्व्यङ्गुलप्रमाणस्थौल्यंयस्यतत्। अङ्गुलीनांस्थौल्यस्यवैषम्यात्पुनराहसाङ्गुष्ठोदरसम्मितंद्व्यङ्गुलंसर्वतःसार्द्धंदैर्घ्येण॥ ७८१॥

नेत्ररोगोंका अधिकार नेत्रका प्रमाण॥

अपने२ अंगूठेके मध्यभागके समान दो अंगुल चौड़ा और ढाई अंगुल लम्बा नेत्र मंडलहोताहै ७८१

नेत्रस्याङ्गान्याह॥

पक्ष्मवर्त्मश्वेतकृष्णदृष्टीनांमण्डलानितु। अनुपूर्वन्तुतेमध्याश्चत्वारोऽन्त्यायथोत्तरम्। तेपक्ष्मादयोदृष्ट्यन्ताःअनुपूर्वंयथापूर्वंमध्याश्चत्वारःकृष्णादयःयथोत्तरंअन्त्याः॥७८२॥

नेत्रके अंग॥

पक्ष्म वर्त्म श्वेत कृष्ण और दृष्टि यह पांच नेत्र मण्डलके अंगहैं इनमेंसे पक्ष्मको आदि लेकर दृष्टि पर्य्यन्त पूर्वके क्रमसे मध्य और कृष्णको आदि लेकर उत्तरोत्तर अन्त्यहैं॥ ७८२॥

तत्रनेत्रमण्डलेअष्टसप्ततिव्याधयोभवन्तिताश्चाह॥

द्वादशव्याधयोदृष्टौतत्रैवान्योगदावुभौ। कृष्णमार्गेतुचत्वारोदशैकःशुक्लभागजाः॥ वर्त्मन्येकोविंशतिश्चपक्ष्मजौद्वौप्रकीर्त्तितौ। नवसन्धिषुसर्वस्मिन्नेत्रेसप्तदशोदिताः॥ एवंनेत्रेसमस्ताःस्युरष्टसप्ततिरामयाः। तत्रदृष्टौअन्यौचरकोक्तौसुश्रुतोक्तषट्सप्ततिसंख्येभ्योऽधिकौ॥ ७८३॥

नेत्रमण्डलमें होनेवाले अठहत्तररोगोंका वर्णन॥

दृष्टिमें १२ तथा चरकके कहेहुए दो अन्य कृष्णमें चार ४ श्वेतमें ११ वर्त्ममें २१ पक्ष्ममें २ संधियोंमें ९, और सम्पूर्ण नेत्रमें १७ इसप्रकार नेत्रमें सब मिलाकर अठहत्तर रोग होतेहैं सुश्रुतमें ७६ नेत्र रोग कहेहैं यहां चरकके कहेहुए दो और मिलाकर अठहत्तरलिखेगयेहैं॥ ७८३॥

सुश्रुतोक्तषट्सप्ततिसंख्यामाह ॥

वाताद्दशतथापित्तात्कफाच्चैवत्रयोदश । रक्तात्षोड़शविज्ञेयाःसर्वजाःपञ्चविंशतिः ॥ वाह्योपुनर्द्वौनयनेरोगाःषट्सप्ततिःस्मृताः ॥ ७८४ ॥

सुश्रुतके कहेहुए छहत्तररोगोंकी जुदी२ संख्या ॥

बातज १० पित्तज १० कफज १३ रक्तज १६ सन्निपातज २५ और २ बाहरी इसप्रकार सब मिल कर ७६ नेत्ररोग होतेहैं ॥ ७८४ ॥

नेत्ररोगाणांसामान्यतोविप्रकृष्टंसन्निकृष्टंनिदानमाह ॥

उष्णाभितप्तस्यजलप्रवेशाद्दूरेक्षणात्स्वप्नविपर्ययाच्च । स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्चछ र्द्देर्विघाताद्वमनातियोगात्॥ शुक्तारनालाम्बुकुलत्थमाषाद्विण्मूत्रवातागमनिग्रहाच्च। प्रस क्तसंरोदनशोकतापाच्छिरोऽभिघातादतिशीघ्रयानात् ॥ तथाऋतूनांचविपर्ययेणक्लेशा भितापादतिमैथुनाच्च।वाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्चनेत्रेविकारंजनयन्तिदोषाः ॥ उष्णा भितप्तस्यजलप्रवेशात् आतपादिजनितोष्मणासहबहिर्भूतस्यनयनतेजसोजलावगाह नेनाभिभवात्दूरेक्षणात्दूरस्थद्रव्यदर्शनात् । स्वेदात्स्विद्यतेऽनेनेतिस्वेदोऽग्न्यादि स्तस्मात् ॥ रजोधूमनिषेवणात्नेत्रेण । शोकतापात्शोकजनितात्सन्तापात् ॥ शिरो भिघातात्शिरसिप्रहारात् । ऋतूनांविपर्ययेणऋतूक्तचर्य्याविपरीताचरणेन ॥ क्लेशाभि तापात्क्लिश्यतेऽनेनेतिक्लेशंकामक्रोधादिदुःखंतेनाभितापः पीड़ाततःवाष्पग्रहात् अश्रुवे गविघातात् ॥ ७८५ ॥

नेत्ररोगों के सामान्यतासे निकटवाले और दूरवाले कारण ॥

धूपआदिके द्वारा संतापयुक्त मनुष्यके जल में स्नानकरनेके कारण नेत्रके तेजके नष्ट होनेसे दूरकी बस्तुके देखनेसे निद्राके बिपर्य्ययसे अग्नि आदिसे धूल तथा धूमके नेत्रमें लगने से बमनके रोकनेसे अत्यन्त बमनसे शिरका कांजी कुलथी तथा उर्दके अधिक सेवनसे मलमूत्रादि बेग रोकने से बहुत रोनेसे शोकज संतापसे शिरमें चोट लगनेसे और जल्दी चलनेसे ऋतुचर्य्याके बिपरीत आचरणसे कामक्रोधादि दुःखोंकी पीड़ासे अधिक मैथुनसे आंशुओंके रोकनेसे और बहुत सूक्ष्म बस्तु देखनेसे कुपित बातादिकदोष नेत्ररोगोंको उत्पन्न करते हैं ॥ ७८५ ॥

संप्राप्तिमाह ॥

शिरानुसारिभिर्दोषैर्विगुणैरूर्ध्वमाश्रितैः । जायन्तेनेत्रभागेषुरोगाःपरमदारुणाः ॥ नेत्रभागेषुनेत्रस्यदृष्ट्याद्यवयवेषु ॥ ७८६ ॥

नेत्ररोगोंकी संप्राप्ति ॥

कुपित दोष शिराओंके द्वारा ऊपर जाके नेत्रके दृष्टिआदि अंगों में अत्यन्त भयंकर रोगोंको उत्पन्न करते हैं ॥ ७८६ ॥

आदौदृष्टिरोगानाहतत्रनेत्रदृष्टिलक्षणम् ॥

मसूरदलमात्रांतुपञ्चभूतप्रसादजाम् । खद्योतविस्फुलिङ्गाभांसिद्धांतेजोभिरव्ययैः ॥

आवृतांपटलेनाक्ष्णोर्बाह्येनविवराकृतिम् । शीतसात्म्यानृणांदृष्टिमाहुर्नयनचिन्तकाः ॥ मसूरदलमात्रांनेत्रगतकृष्णमण्डलमध्यस्थमसूरद्विदलप्रमाणांपञ्चभूतप्रसादजाम् ॥ प्रसन्नपञ्चभूतात्मिकाम्खद्योतविस्फुलिंगाभांनिमेषैःकदाचित्खद्योताभांखद्योतवत् निमेषाभावेविद्योतमानत्वाद्विस्फुलिंगवत्अव्ययैश्चिरस्थायिभिस्तेजोभिः सिद्धांउत्पन्नांविवराकृतिंसच्छिद्राम्अक्ष्णोःबाह्येनपटलेनरसरक्ताधारभूतेनआवृताम् ॥ ७८७ ॥

दृष्टिरोगोंका वर्णन । दृष्टिका लक्षण ॥

कृष्णमंडल के मध्य में मसूर की दालके समान परिमाण वाली निर्म्मल पंच महाभूत स्वरूप पलक लगने में जुगनूके समान तथा पलक खुलनेमें चिनगारी के समान प्रकाशवाली बहुतकाल रहनेवाले तेजोंसे उत्पन्न हुई छिद्रयुक्त और नेत्रके बाहरी रस तथा रुधिरके आधार भूतपटलसे ढकीहुई दृष्टि कहलातीहै इसमें शीतलक्रिया स्वाभाविक गुणदायकहै ॥ ७८७ ॥

तत्रपटलानिचत्वारिभवन्तितान्याह ॥

तेजोजलाश्रितंबाह्यंतेष्वन्यत्पिशिताश्रितम् । मेदस्तृतीयंपटलमाश्रितंत्वस्थिचापरम् ॥ पञ्चमांशसमंदृष्टेस्तेषांबाहुल्यमीष्यते । तत्रतेजोरक्तंजलंरसःतेनरक्ताधारमित्यर्थः पटलेत्वक्अपरंचतुर्थस्थितिदृष्टःस्वाङ्गुष्ठोदरस्थूलस्यनेत्रस्यपञ्चमांशसमंतेषांचतुर्णां पटलानांमिलितानांबाहुल्यंस्थौल्यंईष्यते ॥ ७८८ ॥

दृष्टिके चारपटलोंका [illegible]म ॥

बाहरी पटल रस तथा रुधिरके आश्रय द्वितीय पटल मांसके आश्रय तृतीय पटल मेदके आश्रय और चतुर्थपटल अस्थिके आश्रित होताहै इनचारोंकी स्थूलता मिलकर अपने अंगूठेके समान स्थूलनेत्रके पांचमांश होती है ॥ ७८८ ॥

तत्रप्रथमपटलगतस्यदोषस्यस्वभावमाह ॥

प्रथमेपटलेयस्यदोषोदृष्टेर्व्यवस्थितः । अव्यक्तानिस्वरूपाणिकदाचिदथपश्यति ॥ प्रथमेपटलेपूर्वाभ्यन्तरेनतुबाह्ये । दृष्टेरभ्यन्तरेदोषाःपटलेसमधिष्ठिताः ॥ एकैकमनुपद्यंतेपर्यायात्पटलान्तरमिति । विदेहवचनात् ॥व्यवस्थितःस्थितःअव्यक्तानिईषद्व्यक्तानि। अथकदाचित्पश्यतिव्यक्तान्येवेतिशेषःदोषाल्पतया ॥ ७८९ ॥

प्रथम पटल में प्राप्त दोष का स्वभाव ॥

प्रथम पटलमें दोषके स्थित होनेपर कभी कुछ प्रकट और कभी प्रकटरूप देखताहै यहां प्रथम पटल से भीतरे चौथे पटल का बोध होताहै क्योंकि विदेहने कहाहै कि दृष्टि के भीतरे पटल में स्थित हुए दोष इत्यादि क्रमसे एक २ पटल में प्राप्त होते हैं॥ ७८९ ॥

अथ द्वितीयपटलगतस्याह ॥

दृष्टिर्भृशंविह्वलतिद्वितीयेपटलेगते । मक्षिकामशकान्केशान्जालकानीवपश्यति ॥ मण्डलानिपताकांश्चमरीचीन्कुण्डलानिच । परिप्लवांश्चविविधान्वर्षमभ्रन्तमांसिच ॥ दूरस्थानिचरूपाणिमन्यतेचसमीपतः । समीपस्थानिदूरेचदृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ॥ यत्न

वानपिचात्यर्थंसूचीच्छिद्रंनपश्यति ॥ विह्वलतिरूपंसम्यक्कृत्वाग्रहीतुंनशक्नोतिविह्व लत्वमेवविवृणोतिमक्षिकादीन् जालकानिवमर्कटरचितजालानीवपश्यतिमण्डलादीनि असन्त्यपिसन्तीवपश्यतिकुण्डलानिकुण्डलानीवविद्योतमानानिकिञ्चित् पश्यतिपरिप्लु वांश्चविविधान्प्रतिच्छायादीनां सञ्चारात्ऊर्ध्वाधस्तिर्य्यग्गतानिनानाविधान्पश्यतिव र्षवृष्टिंअभ्रंमेघंवर्षादीनिअसन्त्यपिसन्तीवपश्यतिगोचरविभ्रमात् गोचरोऽत्ररूपंतत्र भ्रमःअयथाग्रहणंतस्मात् ॥ ७९० ॥

द्वितीय पटलगत दोषका स्वभाव ॥

द्वितीय पटल में दोषके स्थित होनेपर दृष्टि अच्छे प्रकार से रूपको नहीं ग्रहण करसकी मक्खी मच्छर तथा बाल मकड़ी के जालेके समान दिखाई देतेहैं मंडल पताका किरण तथा प्रकाशमान कुं- डल से न होनेपरभी दिखाई देते हैं छाया आदि के पड़ने से अनेक प्रकारके ऊपर नीचे चंचल से पदार्थ दिखाई देते हैं वृष्टि मेघ तथा अन्धकार यह न होनेपरभीदिखाई देते हैं और दृष्टिके रूपमें भ्रम होने के कारण दूर की बस्तु निकट और निकटकी वस्तु दूर मालूम होतीहै और बड़े यत्न करनेपरभी सुईका छिद्र नहीं मालूम पड़ता है ॥ ७९० ॥

तृतीयपटलगतमाह ॥

ऊर्ध्वंपश्यतिनाधस्तात्तृतीयंपटलंगते । सुमहान्त्यपिरूपाणिछादितानीवचाम्बरैः ॥ कर्णनासाक्षिरूपाणिविकृतानिचपश्यति । यथादोषञ्चरज्येतदृष्टिर्दोषेबलीयसी ॥ अधः स्थेतुसमीपस्थंदूरस्थंचोपरिस्थिते । पार्श्वस्थितेपुनर्दोषेपार्श्वस्थानिनपश्यति ॥ समन्त तःस्थितेदोषेसंकुलानीवपश्यति । दृष्टिमध्यस्थितेदोषेमहद्ध्रस्वंचपश्यति ॥ दोषेदृष्टि स्थितेतिर्य्यगेकंवामन्यतेद्विधा । द्विधास्थितेत्रिधापश्येत्बहुधाचाऽनवस्थिते ॥ ऊर्ध्वंप श्यतिऊर्ध्वमपियादृक्पश्यतितादृगाहसुमहान्तीत्यादिअम्बरैःवस्त्रैः अधःस्थेतुसमीपस्थं नपश्यतीत्यन्वयः तथाउपरिस्थितेदोषेदूरस्थंनपश्यतिसमन्ततःउपर्य्यध पार्श्वेषुसकुं लानिभिन्नानिअपिरूपाणिमिश्रितानीवपश्यतिअनवस्थिते अनियतावस्थानेबहुधाबहू निपश्येत् ॥ ७९१ ॥

तृतीय पटलगत दोषोंका स्वभाव ॥

तृतीय पटल में दोषके स्थित होनेपर ऊपर दिखाई देताहै परनीचे दिखाई नहीं देता ऊपर की ओर वड़े २ भी पदार्थ बस्त्रके द्वारा ढकेहुए से मालूम होतेहैं कान नासिका तथा नेत्रादिक रूप विकार युक्त दिखाई देतेहैं जो बलवान दोष कुपित होताहै उसी दोषके अनुसार संपूर्ण बस्तुओं का वर्ण दि- खाई देताहै पटल के नीचे की ओर दोष के स्थित होनेपरनिकट की बस्तु ऊपरकी ओर स्थित होने पर दूरकी बस्तु तथा किनारों पर स्थित होनेपर किनारे की बस्तु नहीं दिखाई देती है दोष के सब ओर स्थितहोने पर भिन्न २ रूप मिलेहुए से दिखाई देते हैं मध्यमें दोष के स्थितहोने पर बड़ी वस्तुछोटी दिखाई देती है दृष्टिमें दोषके तिरछे स्थितहोने पर एकबस्तु दो के समान दिखाई देती है दोनोंओर दोषके स्थितहोने पर एकबस्तु की तीनबस्तु दिखाई देती हैं औरदोषकेस्थिर न रहनेपर एक वस्तु की बहुतसी बस्तु दिखाई देती हैं ॥ ७९१ ॥

अथचतुर्थपटलगतदोषमाह ॥

तिमिराख्यःसयोदोषश्चतुर्थपटलंगतः । रुणद्धिसर्वतोदृष्टिंलिङ्गनाशइतिकचित् ॥ अस्मिन्नपितमोभूते नातिरूढेमहागदे । चन्द्रादित्यौसनक्षत्रौ अन्तरिक्षेचविद्युतः ॥ निर्मलानिचतेजांसिभ्राजिष्णूनीवपश्यति । सएवलिङ्गनाशस्तुनीलिकाकाचसंज्ञितः ॥ योदोषःदोषोऽत्ररोगःचतुर्थपटलंवाह्यंफ्टलंगतःसतिमिराख्यः तिमिरदर्शनेनतिमिरमस्यास्तीतितिमिरःअर्शआदित्वात्अच्तस्यलक्षणमाह।रुणद्धीत्यादिसर्वतःसर्वत्र लिङ्गनाशेक्कचित्तन्त्रांतरेलिङ्गनाशसंज्ञः । तस्यनिरुक्तिश्च।लिंग्यतेज्ञायतेऽनेनेतिलिंगदृष्टितेजःतस्यनाशोऽस्मिन्नितिलिंगनाशः अस्मिन्नपितिमिरेपितमोभूतेतमस्तुल्येअत्रभूतशब्दस्तुल्यार्थः भूतंप्राप्यतीतेसमेत्रिष्वित्यमरात्नातिरूढेअप्रौढेनवेचंद्रादित्यौनक्षत्राणिचपश्यतिअन्तरिक्षे अन्तरिक्षस्यप्रकाशसमयत्वेनतमोऽभिभावात्तेजांसिअग्न्यादेःभ्राजिष्णूनिरत्नसुवर्णा दीनिअस्मिन्प्रौढेचिरजेचन्द्रादीन्यपिनपश्यतीत्याशयःनीलिकाकाचसंज्ञितःनीलिकाकाचेतिनामान्तराभ्यांयुक्तः ॥ ७९२ ॥

चतुर्थ पटलगत दोषों का स्वभाव ॥

चतुर्थ पटल में दोष अर्थात् रोगके प्राप्तहोने पर सबओरसे दृष्टि रुकजातीहै उसे तिमिर कहतेहैं और कोई २ लिंगनाश (लिंग अर्थात् दृष्टि का तेज जिसमें नष्टहोवे उसे लिंगनाश कहते हैं) भी कहते हैं अन्धकार के समान इसरोगके नवीन होनेपर सूर्य्य चन्द्रमा नक्षत्र आकाशमें बिजली तथा अग्नि आदि दीप्तिमान् रत्न सुवर्णादि पदार्थ सा देखता है इसके पुराने होजानेपर सूर्य्यादिक भी नहीं दिखाई देते हैं इसरोगको नीलिका और काचभी कहते हैं ॥ ७९२ ॥

दृष्टिरोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

दृष्ट्याश्रयाःषट्चषडेवरोगाःषट्लिंगनाशाहिभवन्तितत्र । वातेनपित्तेनकफेनसर्वैःरक्तात्परिम्लायभिधश्चषष्ठः ॥ दृष्ट्याश्रयारोगाःषट्षट्द्वादशेत्यर्थःतत्रलिंगनाशाःषट्तान्विवृणोतिवातेनेत्यादि । तथानरःपित्तविदग्धदृष्टिःकफेनवान्यस्त्वथधूमदर्शी ॥ योह्रस्वजात्योनकुलान्धसंज्ञोगम्भीरसंज्ञाचतथैवदृष्टिः । पित्तविदग्धदृष्ट्यादयश्चषट्एवंदृष्ट्याश्रयाद्वादशरोगास्तत्रद्वावन्यौचाहतत्रवान्यौगदौबद्धौसन्निमित्तकौ ॥ ७९३ ॥

दृष्टिगत रोगोंके नाम और संख्या ॥

दृष्टि के रोग १२ प्रकार के होतेहैं उनमें से लिंगनाश छःप्रकारके हैं जैसे बातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज और परिम्लायी अन्य छःप्रकार यह हैं जैसे पित्त विदग्ध दृष्टि कफविदग्धदृष्टि धूमदर्शी ह्रस्वजाड्य नकुलान्ध्य और गंभीरक इनमें दो रोग और भी होते हैं ॥ ७९३ ॥

तेषुवातजस्यलिङ्गनाशस्यलक्षणमाह ॥

वातेनखलुरूपाणिभ्रमन्तीवचपश्यति । आविलान्यरुणाभानिव्याविद्धानीवमानवः ॥ आविलानिकलुषाणिअरुणाभानिअव्यक्तलौहित्ययुक्तानि ॥ ७९४ ॥

बातजलिंगनाश का लक्षण ॥

बातजलिंगनाश में मनुष्य चंचल गंदे कुछ रक्तबर्ण और बिंधेहुए से रूप देखताहै ॥ ७९४ ॥

पित्तेनादित्यखद्योतशक्रचापतडिद्गुणान्नृत्यतश्चैवशिखिनःसर्वंनीलञ्चपश्यति । सर्वंनीलञ्चपश्यतिआदित्यादीनांगुणान्रूपाणि ॥ ७९५ ॥

पित्तज लिंगनाशका लक्षण ॥

पित्तजलिंगनाशमें मनुष्य सूर्य्य जुगनू इन्द्रधनुष तथा बिजलीकेसमान रूप देखताहै और नाचते हुए मोरकेसमान सब नीलबर्ण देखताहै ॥ ७९५ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

कफेनपश्येद्रूपाणिस्निग्धानिवमितानिच।सलिलप्लावितानीवजालकानीवमानवः ७९६॥

कफज लिंगनाशके लक्षण ॥

कफजलिंगनाशमें मनुष्य सम्पूर्णबस्तु स्निग्ध शुक्लबर्ण स्थूल जलमें बहतीहुईसी और मण्डलाकार देखताहै ॥ ७९६ ॥

सन्निपातजमाह ॥

सन्निपातेनचित्राणिविप्लुतानिचपश्यति । बहुधापिद्विधावापिसर्वाण्येवसमन्ततः ॥ हीनाधिकाङ्गान्यथवाज्योतींष्यपिचपश्यति । चित्राणिनानावर्णानिविप्लुतानिविपरीतानि वैपरीत्यंविष्टणोतिबहुधेत्यादि ॥ ७९७ ॥

सन्निपातजलिंगनाशके लक्षण ॥

सन्निपातज लिंगनाशमें मनुष्य नानाप्रकारके वर्णयुक्त बस्तुओं को देखता है और बिपरीतता से सम्पूर्ण बस्तुओंको बहुतप्रकारकी अथवा दोप्रकारकी हीनअंगवाली अथवा अधिक अंगवाली देखता है और तेजोंको देखताहै ॥ ७९७ ॥

रक्तजमाह ॥

पश्येद्रक्तेनरक्तानितमांसिविविधानिच।हरितान्यथकृष्णानिपीतान्यपिचमानवः॥७९८॥

रक्तजलिंगनाशके लक्षण ॥

रक्तजलिंगनाशमें रक्त कृष्णहरित तथा पीतवर्ण अनेक प्रकारके अन्धकारमेंरूप दिखाईदेतेहैं॥७९८॥

परिम्लायिनमाह ॥

रक्तेनमूर्च्छितंपित्तंपरिम्लायिनमाचरेत् । तेनपीतादिशःपश्येदुद्यन्तमिवभास्करम्॥ विकीर्य्यमाणान्खद्योतैर्वृक्षांस्तेजोभिरेवहि । विकीर्य्यमाणान्व्याप्यमानान्तेजांसिअग्न्यादिभिरिव ॥ ७९९ ॥

परिम्लायी लिंगनाशके लक्षण ॥

रुधिर सहित पित्त बढ़कर परिम्लायी नाम लिंग नाशको उत्पन्न करताहै इसमें सम्पूर्ण दिशा पीतबर्ण तथा उदयहुए सूर्य्यसे दिखाईदेते हैं और वृक्ष जुगनू अथवा अग्निआदिसे ढकेहुए से मालूम होतेहैं ॥ ७९९ ॥

वातादिजनितैर्नेत्रवर्णैरपिचषड्विधः ॥

लिङ्गनाशोनिगदितोवर्णवातादितोयथा । रागोऽरुणोमारुततःप्रद्दष्टोम्लायीतुनीलश्चतथैवपित्तात् ॥ कफात्सितःशोणिततःसरक्तःसमस्तदोषप्रभवोविचित्रः । वातादिना

हेतुभूतेनजनितेनेत्रविषयेमण्डलरूपविशेषमाह ॥ अरुणंमण्डलंवाताच्चञ्चलंपरुषंत था। पित्ततोमण्डलंनीलंकांस्याभंवासपीतकम् ॥ श्वेतपीतंवाकथमेतत्व्याधिप्रभावा त्। श्लेष्मणाबहुलंस्निग्धंशङ्खकुन्देन्दुपाण्डुरम् ॥ चलत्पद्मपलाशस्थःशुक्लोबिन्दुरिवा म्भसः। मृद्यमानेतुनयनेमण्डलेतद्विसर्पति ॥ बहुलंस्थूलम्। मण्डलंतुभवेच्चित्रंलिंग नाशेत्रिदोषजे ॥ प्रवालपद्मपत्राभंमण्डलंशोणितात्मकम्। चित्रंवातादिवर्णं ॥ रक्तजं मण्डलंदृष्टौस्थूलकाचारुणप्रभम्। परिम्लायिनिरोगेस्यात्म्लानंनीलमथापिवा ॥ दो षक्षयात्स्वयंतत्रकदाचित्स्यात्तुदर्शनम्। रक्तजंपित्तानुगामिरक्तजंस्थूलकाचारुणप्रभं स्थूलकाचस्यैवारुणाप्रभायस्यतत्एतेनस्थौल्यमारुणत्वंचबोध्यते दोषक्षयादित्यादित त्रपरिम्लायिनिकालान्तरेणदोषक्षयात्। कदाचित्स्वयमेवदर्शनंस्यात् ॥ अनुक्तव्यथा दाहगौरवादिदोषलिंगसंग्रहार्थमाह। यथास्वंदोषलिंगानिसर्वेष्वेवभवन्तिहि ॥ ८००॥

बातादि के द्वारा उत्पन्नहुए छः प्रकारके लिंगनाश में नेत्र मण्डलके जो वर्ण होते हैं उनको कहते हैं जैसे नेत्र मंडल बातज दृष्टिनाश में लोहित वर्ण परिम्लायी तथा पित्तज लिंगनाश में नीलवर्ण कफज लिंगनाश में श्वेतवर्ण रक्तजमें रक्तवर्ण और सन्निपातज में बिचित्र वर्ण होता है बातादि भेदसे हुए लिंगनाश में नेत्र मंडल के बिशेष बर्णोंको कहते हैं जैसे बातज दृष्टि रोगमें नेत्र मंडल चंचल रक्तवर्ण तथा कठोर होताहै पित्तजमें नीलवर्ण कांसे के समान श्वेतवर्ण अथवा पीत वर्ण होताहै कफज में स्थूल स्निग्ध शंख कुन्द तथा चन्द्रमा के समान श्वेत नेत्रके मलने पर कमल के पत्तेमें स्थित श्वेत बर्ण जल बिन्दुके समान मालूम होनेवाला होताहै सन्निपातजमें बातादि तीनों दोषोंके वर्णहोतेहैं रक्तजमें मूंगे तथा कमलपत्रके समान वर्णयुक्त होताहै पित्तसहित रक्तज में स्थूल तथा रक्तवर्णवाले काच के समान वर्ण युक्त होताहै परिम्लायी में म्लान तथा नीलवर्ण होता है इसमें दोषोंके क्षय होनेपर कालान्तर में कभी आपही दिखाई देने लगताहै इनसब में पीड़ा दाह तथा गौरव आदिक दोषोंके लक्षण दोषों के अनुसार होतेहैं ॥ ८०० ॥

पित्त विदग्धदृष्टेर्लक्षणमाह ॥

पित्तेनदुष्टेनगतेनदृष्टिंपीताभवेद्यस्यनरस्यदृष्टिः पीतानिरूपाणिचतेनपश्येत्सर्वैनरः पित्तविदग्धदृष्टिः ॥ पित्तेनगतेनदृष्टिंदृष्टावपिप्रथमद्वितीयेपटलगतेनेतिबोद्धव्यम् ॥ तेनव्याधिनातस्मिन्नेवपित्तेदृष्टौतृतीयपटलंगतेविशेषरूपमाह। प्राप्तेतृतीयंपटलंतुदोषे दिवानपश्येन्निशिवीक्षतेसः ॥ रात्रौसशीतानुगृहीतदृष्टिः पित्ताल्पभावात्सकलानिपश्येत्। दोषेऽत्रपित्ते ॥ ८०१ ॥

पित्त बिदग्ध दृष्टि के लक्षण ॥

दूषित पित्तके प्रथम तथा द्वितीय पटल मेंप्राप्त होनेपर दृष्टि पीतवर्ण होजाती है और संपूर्ण रूप पीतवर्ण दिखाई देतेहैं ऐसे रोगवाले मनुष्य को पित्त बिदग्ध दृष्टि कहतेहैं इसी रोगमें पित्तके तृतीय पटल में प्राप्त होनेपर बिशेष लक्षण को कहतेहैं पित्त के तृतीय पटल में प्राप्त होनेपर दिनको नहीं दिखाई देताहै और रात्रिको दिखाई देताहै क्योंकि रात्रिमें पित्तके स्वल्प होने के कारण दृष्टि में शीतलता होतीहै इसलिये सब पदार्थ दिखाई देतेहैं ॥ ८०१ ॥

श्लेष्म विदग्धदृष्टिलिंगमाह ॥

तथानरःश्लेष्मविदग्धदृष्टिस्तान्येवशुक्लानिहिमन्यतेतु । तत्रापिश्लेष्मणोदृष्टौप्र थमद्वितीयपटलगतस्यतल्लिंगंबोद्धव्यम् ॥ सएवश्लेष्मादृष्टौपटलत्रयंगतोनक्तान्ध्यं करोतीत्याह । त्रिषुस्थितोयःपटलेषुदोषो नक्तान्ध्यमापादयतिप्रसह्य ॥ दिवासमूर्यान गृहीतदृष्टिः पश्येत्तुरूपाणिकफाल्पभावात् । दोषोऽत्रकफस्तस्योपक्रान्तत्वात् नक्तान्ध्य स्यश्लेष्मविदग्धदृष्टावन्तभूतत्वान्नपृथग्गणना ॥ ८०२ ॥

श्लेष्म बिदग्ध दृष्टि के लक्षण ॥

दूषित कफके प्रथम तथा द्वितीय पटलमें प्राप्तहोने पर संपूर्ण पदार्थ श्वेत दिखाई देतेहैं इसरोग वाले मनुष्य को श्लेष्म बिदग्ध दृष्टिवाला कहते हैं और दूषित कफके तृतीय पटल में प्राप्तहोनेपर रात्रिके समय नहीं दिखाई देता और दिनमें सूर्य्यकी कृपासे कफके स्वल्पहोने के कारण दिखाई देताहै ॥ ८०२ ॥

अथ धूमदर्शनमाह ॥

शोकज्वरायासशिरोऽभितापैरभ्याहतायस्यनरस्यदृष्टिः । धूमांस्तुयःपश्यतिसर्वभा वान्सधूम्रदर्शीतिनरःप्रदिष्टः ॥ शिरोऽभितापैः शिरसिघर्मादीनांसन्तापैः एतस्यपित्त दोषोबोद्धव्यः ॥ ८०३ ॥

धूम दर्शन का लक्षण ॥

शोक ज्वर परिश्रम और शिरमें धूपआदि के लगने से दृष्टि के नष्टहोजाने पर जो मनुष्य सब बस्तुओं को धुएंके समान देखताहै उसे धूमदर्शी कहतेहैं इसरोगमें पित्तका दोष होताहै ॥ ८०३ ॥

अथ ह्रस्वजात्यमाह ॥

योवासरेपश्यतिकष्टतोऽथरूपंमहच्चापिनिरीक्षतेऽल्पम् । रात्रौपुनर्यःप्रकृतानिपश्येत् सह्रस्वजात्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ८०४ ॥

ह्रस्वजात्य के लक्षण ॥

जो दिनमें बड़ी बस्तुओंको भी बहुत कष्टसे छोटी देखताहै और रात्रिमें स्वाभाविक देखता है उसे ह्रस्वजात्य कहते हैं ॥ ८०४ ॥

नकलान्ध्यमाह ॥

विद्योततेयस्यनरस्यदृष्टिदोषाभिपन्नानकलस्ययद्वत् । चित्राणिरूपाणिदिवाचपश्ये त्सवैविकारोनकुलान्ध्यसंज्ञः ॥ ८०५ ॥

नकुलान्ध्यके लक्षण ॥

जिसकी दोषोंसे भरीहुई दृष्टि नकुल की दृष्टिकेसमान दीप्तिवाली होवे और दिनमें बिचित्ररूप दिखाई देवें उस रोगको नकुलान्ध्य कहते हैं ॥ ८०५ ॥

गम्भीरकमाह ॥

दृष्टिर्विरूपाश्वसनोपसृष्टासंकुच्यतेऽभ्यन्तरतःप्रयाति । रुजावगाढाचतमक्षिरोगं गम्भीरिकेतिप्रवदन्तिधीराः ॥ विरूपाविकृताश्वसनोपसृष्टावातोपहतारुजावगाढागं म्भीरवेदनान्विता ॥ ८०६ ॥

गंभीरक के लक्षण ॥

जिस रोगमें वायुसे भरीहुई दृष्टि बिकार युक्तहोवे तथा संकुचितहोकर भीतरकीओरजाय और बहुत पीड़ा युक्तहोय उसरोगको गंभीरक कहते हैं ॥ ८०६ ॥

वाह्यौपुनर्द्वाविहसम्प्रदिष्टौनिमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च । निमित्ततस्तत्रशिरोऽभितापात्ज्ञेयस्त्वभिष्यन्दनिदर्शनैःसः ॥ वाह्योसुश्रुतोक्तद्वादशसंख्येभ्योऽधिकौ । तत्र निमित्तमाह । शिरोऽभितापःशिरोऽभितप्यतेयेनविषकुसुमगन्धवहपवनस्पर्शेनाशिरोऽभितापः तस्मात्अभिष्यन्दनिदर्शनैः । रक्ताभिष्यन्दलिंगैरितिगदाधरः सन्निपाताभिष्यन्दलिंगैरितिकार्त्तिकः ॥ ८०७ ॥

सुश्रुत के कहेहुए १२ प्रकारोंसे अधिक चरकके कहेहुए निमित्त और अनिमित्तनाम दो रोगहोतेहैं इनमें से निमित्तज दृष्टि रोग विषयुक्त पुष्पों की बायुके लगने के कारण शिरके संताप से उत्पन्न हुआ रक्तज अथवा सन्निपातज अभिष्यन्द के लक्षणों से युक्तहोताहै ॥ ८०७ ॥

अनिमित्तमाह ॥

सुरर्षिगन्धर्वमहोरगाणांसंदर्शनेनापिचभास्करस्य।हन्येतदृष्टिर्मनुजस्यतस्यसलिंगनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः॥अनुपलभ्यमानानांसुरादीनांनिमित्तमपिअनिमित्तंमन्यते८०८॥

अनिमित्त का वर्णन ॥

देवता ऋषि गन्धर्व बड़ेसर्प तथा सूर्य्यके दर्शनसे हुए दृष्टिनाशको अनिमित्त कहतेहैं यहां देवता आदिकोंके कारण होनेपरभी उनके दर्शन नहोनेसे अनिमित्त कहतेहैं ॥ ८०८ ॥

अनिमित्ततोलिंगनाशस्यलक्षणमाह ॥

तत्राक्षिविस्पष्टमिवावभातिवैदूर्यवर्णाविमलाचदृष्टिः । विस्पष्टंज्योतिर्युक्तंवैदूर्यवर्णाश्यामाविमलानिर्मला इतिदृष्टिरोगाः ॥ ८०९ ॥

अनिमित्तज लिंगनाशके लक्षण ॥

अनिमित्तज लिंगनाशमें दृष्टि तेजयुक्त श्यामबर्ण तथा बिमलहोतीहै इति दृष्टिरोग समाप्त॥८०९॥

अथकृष्णमण्डलजारोगाः। तेषांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

यत्सव्रणंशुक्रमथाव्रणंचपाकात्ययश्चाप्यजकातथैव । चत्वारएतेनयनामयास्तुकृष्णप्रदेशेनियताभवन्ति ॥ ८१० ॥

कृष्णमण्डलके रोग इनके नाम और संख्या ॥

सव्रणशुक्र अव्रणशुक्र पाकात्यय और अजका यह चाररोग कृष्णमण्डलमें होतेहैं ॥ ८१० ॥

तत्रसव्रणंशुक्रलिंगमाह ॥

निमग्नरूपंतुभवेद्धिकृष्णेसूच्येवविद्धंप्रतिभातियद्वै । स्रावंस्रवेदुष्णमतीवचापितत्सव्रणंशुक्रमुदाहरन्ति ॥ निमग्नरूपमितिशुक्रविशेषणंसूच्येवविद्धमितिशुक्रस्यवर्तुलत्वंव्यथायुक्तंचबोधयाति । स्रवेदित्यनेनैवस्रावोबोधितःस्रावपदंनिरन्तरंस्रावः ॥ ८११ ॥

सव्रणशुक्रलिंगका लक्षण ॥

जिसरोगमें कृष्णमण्डलके ऊपर गहरा सुई गड़ेहुएके समान सुई गड़नेकीसी पीड़ा युक्त शुक्र चिह्न होताहै और नेत्रसे निरन्तर उष्ण आंशू बहतेहैं उसे सव्रणशुक्र कहते हैं ॥ ८११ ॥

अथ सन्धिजारोगाः । तत्रसन्धयःषट्तानाह ॥

पक्ष्मेवर्त्मगतःसन्धिर्वर्त्मशुक्रगतोऽपरः।शुक्लकृष्णगतश्चान्यःकृष्णदृष्टिगतोऽपिच ॥ गतःकनीनकगतःषष्ठश्चापाङ्गसंश्रितः ॥ ८१२ ॥

सन्धिजरोग छःसन्धियोंका वर्णन ॥

पक्ष्मवर्त्म संधिवर्त्म शुक्ल संधिशुक्ल कृष्ण संधि कृष्णदृष्टि सन्धि कनीनका सन्धि और अपांग सन्धि यह छः संधियां हैं ॥ ८१२ ॥

तत्रत्यानांरोगाणांनामानिसङ्ख्याञ्चाह ॥

पूयालसःसोपनाहःस्रावाश्चत्वारएवच।पर्वणीकालजीजन्तुर्ग्रन्थिसन्धौनवामयाः ८१३ ॥

सन्धिजरोगोंकेनाम और संख्या ॥

पूयालस उपनाह चारप्रकारके स्राव पर्वणीका अलजी और जन्तुग्रन्थि यहनव संधिजरोगहैं ॥८१३॥

तेषुपूयालसमाह ॥

पक्वशोथःसन्धिजःसंस्रवेद्यःसान्द्रंपूयंपूतिपूयालसाख्यः । सन्धिजःकनीनकसन्धिजो बोद्धव्यः ॥ पूयालसस्तुतंविद्यात्सन्धौकानीनकेनृणामितिवचनात् ॥ ८१४ ॥

पूयालसका लक्षण ॥

कनीनिकाकी सन्धिमें उत्पन्न हुआ शोथ पकजाय और उससे गाढ़ी दुर्गन्धित पीप बहै उस रोग को पूयालस कहतेहैं ॥ ८१४ ॥

उपनाहमाह ॥

ग्रन्थिर्नाल्पोदृष्टिसन्धावपाकीकण्डूप्रायोनीरुजश्चोपनाहः।नाल्पःमहान्अपाकीईषत्पाकीनीरुजःईषद्वेदनःअरुणंकठिनंग्रन्थिंजनयत्यल्पवेदनमितिविदेहवचनात्॥८१५॥

उपनाहका लक्षण ॥

दृष्टिकी सन्धिमें उत्पन्नहुई अपाकी खुजलीयुक्त तथा पीड़ारहित बड़ी ग्रन्थिको उपनाह कहते हैं यहां अपाकीका अर्थ कुछ पकनेवाली क्योंकि विदेहने कहाहै कि रक्तबर्ण कठिन तथा अल्पपीड़ा युक्त ग्रंथिको उत्पन्न करताहै ॥ ८१५ ॥

स्रावानांसम्प्राप्तिमाह ॥

गत्वासन्धीनश्रुमार्गेणदोषाःकुर्युःस्रावान्लक्षणैःस्वैरुपेतान् । तंहिस्रावंनेत्रनाड़ीति चैकेतस्यालिंगंकीर्तयिष्येचतुर्द्धा ॥ सन्धीनितिबहुवचनेनसर्वएवसन्धयोगृह्यते । एके वदन्तीतिशेषः ॥ वातिकस्रावोनभवन्तिकेवलेनवातेनतदसम्भवात् ॥ ८१६ ॥

स्रावोंकी संप्राप्ति ॥

कुपित दोष अश्रुओंके मार्ग से संपूर्ण सन्धियों में जाकर अपने२ लक्षणोंसे युक्त चार प्रकारों के स्रावों को उत्पन्न करतेहैं इनको कोई २ नेत्र नाड़ी कहतेहैं इनके लक्षण आगे कहते हैं बातज स्राव नहीं होताहै क्योंकि केवल बात से स्रावहोना असंभवहै ॥ ८१६ ॥

पैत्तिकंस्रावमाह ॥

हारिद्राभंपीतमुष्णंजलंवापित्तस्रावः संस्रवेत्सन्धिमध्यात् । हरिद्राभंपीतरक्तम् । परतःपीतशब्दप्रयोगात्जलंचेतिवाशब्दो हरिद्राभंपीतंचेत्यत्रसम्बध्यतेपित्तस्रावःपित्तात् स्रावःएवंश्लेष्मस्रावादयः ॥ ८१७ ॥

पित्तज स्रावका लक्षण ॥

पित्तजस्रावमें सन्धि से पीतरक्त वर्ण उष्ण जल बहता है ॥ ८१७ ॥

श्लेष्मस्रावमाह ॥

श्वेतंसान्द्रंपिच्छिलंयःस्रवेत्तुश्लेष्मस्रावोऽसौविकारःप्रदिष्टः ॥ ८१८ ॥

कफस्रावका लक्षण ॥

कफज स्रावमें सन्धि से श्वेत गाढ़ा तथा लसलसा जल बहता है ॥ ८१८ ॥

सन्निपातस्रावमाह ॥

शोथःसंधौसंस्रवेद्यस्तुपक्कः पूयंस्रावः सर्वजः सम्मतःस्यात् ॥ ८१९ ॥

सन्निपातजस्राव का लक्षण ॥

सन्धि में शोथ उत्पन्न होकर पककर पीप बहने को सन्निपातज स्राव कहतेहैं ॥ ८१९ ॥

रक्तजश्रावमाह ॥

रक्तास्रावः शोणिताद्योविकारोगच्छेद्दुष्णंतत्ररक्तंप्रभूतम् ॥ ८२० ॥

रक्तजस्राव का लक्षण ॥

रक्तज स्रावमें सन्धि से गरम रुधिर बहुत सा बहताहै ॥ ८२० ॥

पर्वणीकामाह ॥

ताम्रातन्वीदाहपाकोपपन्नारक्तात्ज्ञेयापर्वणीवृत्तशोफा । जातासंधौकृष्णशुक्लेऽलजी स्यात्तस्मिन्नेवव्याहतापूर्वलिङ्गैः ॥अलजीमाहअलजीस्यादित्यादितस्मिन्नेवकृष्णशुक्लयो रेवसन्धौभेदार्थमाह । पूर्वलिङ्गैःप्रमेहाऽधिकारलिखितैःरक्तासितास्फोटचित्रा दारुणा त्वलजीभवेदितिवचनैर्व्याहताकथिता ॥ ८२१ ॥

पर्वणीका और अलजी का लक्षण ॥

कृष्ण शुक्ल सन्धि में दाह तथा पाकयुक्त ताम्रवर्ण और गोल थोड़ी सूजनको पर्वणी का कहते हैं यह रक्तजहै इसी संधि में प्रमेहाधिकार में कही हुई रक्ततथा श्वेत वर्णवाली फुंसियों से व्याप्त भयंकर अलजी नाम पिड़िका के समान पिड़िकाको अलजी कहतेहैं ॥ ८२१ ॥

जन्तुग्रन्थिमाह ॥

जन्तुग्रन्थिर्वर्त्मनःपक्ष्मणश्चकण्डूंकुर्युर्जन्तवःसन्धिजाताः। नानारूपावर्त्मशुक्लान्तसन्धौगच्छन्त्यन्तर्लोचनंदूषयन्तः ॥ वर्त्मनःपक्ष्मणश्चसन्धिजाताइत्यन्वयःइतिसन्धिजा रोगाः ॥ ८२२ ॥

जन्तुकग्रंथिका लक्षण ॥

वर्त्मतथा पक्ष्मकी संधिमें उत्पन्नहुए नानाप्रकार के कृमिखुजलीको उत्पन्न करते हैं और वर्त्म शुक्ल संधिमें जाकर नेत्रोंको दूषित करते हैं इसे जंतुकग्रंथि कहते हैं इति संधिज रोग ॥ ८२२ ॥

अथ शुक्लभागजारोगाः ॥

तेषांनामानिसंख्याञ्चाह । प्रस्तारिशुक्लक्षतजाधिमांस स्नाय्वर्मसंज्ञाःखलुपञ्चरोगाः ॥ स्याच्छुक्तिकाचार्जुनपिष्टकौचजालंशिराणांपिडिकाश्चयाःस्युः । रोगावलासग्रथितेनसार्द्धमेकादशाक्ष्णोखलुशुक्लभागे ॥ ८२३ ॥

शुक्ल भागजरोग । इनकेनाम और संख्या ॥

प्रस्तार्य्यर्म शुक्लार्म अधिमांसार्म रक्तार्म स्नाय्वर्म शुक्ति अर्जुन पिष्टक शिराजाल शिरापिड़िका और बलास ग्रन्थियह ११ रोग नेत्रके शुक्लभागमें होते हैं ॥ ८२३ ॥

तेषुप्रस्तार्य्यर्मणोलक्षणमाह ॥

प्रस्तार्य्यर्मतनुस्तीर्णंश्यावरक्तनिभंसितम् । तनुपत्तलंस्तीर्णं,विस्तीर्णंश्यावरक्तनिभमित्यत्रविकल्पोबोद्धव्यः ॥ ८२४ ॥

प्रस्तार्य्यर्मका लक्षण ॥

नेत्रके शुक्लभागमें विस्तीर्ण धुमैले अथवा रक्तबर्ण युक्त पतले मांसके बढ़नेको प्रस्तार्य्यर्म कहते हैं ॥ ८२४ ॥

शुक्लार्ममाह ॥

सुश्वेतंमृदुशुक्लार्मशुक्लेतद्वर्द्धतेचिरात् ॥ ८२५ ॥

शुक्लार्मका लक्षण ॥

शुक्लभागमें कुछ श्वेतबर्ण कोमल धीरे २ होनेवाली मांसवृद्धिको शुक्लार्म कहते हैं ॥ ८२५ ॥

रक्तार्ममाह ॥

पद्माभंमृदुरक्तार्मयन्मांसञ्चीयतेसिते।पद्माभंवर्णेनरक्तमित्यर्थःचीयतेउपचीयते ८२६॥

रक्तार्मका लक्षण ॥

शुक्लभागमें रक्तबर्ण तथा कोमल मांसके इकट्ठेहोनेको रक्तार्म कहते हैं ॥ ८२६ ॥

अधिमांसार्ममाह ॥

पृथुमृद्वधिमांसार्मबहलञ्चयकृन्निभम् । पृथुविस्तीर्णंबहलंपुष्टंयकृन्निभंईषत्कृष्णलोहितम् ॥ ८२७ ॥

अधिमांसार्मका लक्षण ॥

शुक्लभागमें बिस्तीर्ण पुष्ट कोमल तथा कृष्ण और लोहितबर्ण युक्त मांसके बढ़नेको अधिमांसार्म कहतेहैं ॥ ८२७ ॥

स्नाय्वर्ममाह ॥

स्थिरंप्रसारिमांसाढ्यंशुष्कंस्नाय्वर्मपञ्चमम् । स्थिरंकठिनंशुष्कंस्रावरहितम् ८२८

स्नाय्वर्मका लक्षण ॥

कठिन फैलेहुए मांससेयुक्त तथा स्रावरहित मांसवृद्धिको स्नाय्वर्म कहते हैं ॥ ८२८ ॥

शुक्तिमाह ॥

श्यावाःस्युःपिशितनिभाश्चविन्दवोये शुक्लाभाःसितनिचितासशुक्तिसंज्ञाः ॥ श्यावा इत्यादिवर्णत्रयेविकल्पोबोद्धव्यः ॥ ८२९ ॥

शुक्तिका लक्षण ॥

शुक्लभागमें धुमैलेमांसकेसमान बर्णवाले अथवा सीपीकेसमान बर्णवाले उत्पन्नहुए मांसके विन्दुओंको शुक्तिका कहतेहैं ॥ ८२९ ॥

अर्जुनमाह ॥

एकोयःशशरुधिरप्रभस्तुविन्दुः शुक्लस्थोभवतितमर्जुनंवदन्ति ॥ ८३० ॥

अर्जुनका लक्षण ॥

श्वेतभागमें उत्पन्न हुए खरगोशके रुधिरके समान बर्णवाले एक विन्दुको अर्जुन कहतेहैं॥८३०॥

पिष्टकमाह ॥

श्लेष्ममारुतकोपेनशुक्लेमांसंसमुन्नतम् । पिष्टवत्पिष्टकंविद्धिमलाक्तादर्शसन्निभम् पिष्टवत् श्वेतम् ॥ ८३१ ॥

पिष्टकका लक्षण ॥

बायु तथा पित्तके कोपसे नेत्रके श्वेतभागमें श्वेतबर्ण मैले दर्पणके समान मांसके उठनेको पिष्टक कहतेहैं ॥ ८३१ ॥

शिराजालमाह ॥

जालाभःकठिनःशिरोऽरुणःशिराणाम् सन्तानोभवतिशिरादिजालसंज्ञः । शिरा जालसंज्ञः ॥ ८३२ ॥

शिराजालका लक्षण ॥

नेत्र के श्वेत भाग में जालके समान आकृतियुक्त कठिन अरुणबर्ण शिराओंके फैलनेको शिराजाल कहते हैं ॥ ८३२॥

शिरापीड़िकामाह ॥

शुक्लस्थाःसितपीड़िकाःशिरावृत्तायास्ताविद्याद्सितसमीपजाःशिराजाः ॥ ८३३ ॥

शिरापिड़िकाका लक्षण ॥

नेत्रके शुक्ल भागके समीप शिराओंसे ढकीहुई श्वेतपिड़िकाओंको शिरापिड़िका कहते हैं॥८३३॥

वलासग्रथितमाह ॥

कांस्याभोऽमृदुरथवारिविन्दुकल्पो विज्ञेयोनयनसितेवलाससंज्ञः ॥ कांस्याभःश्वेत इत्यर्थः । अमृदुःकठिनःवारिविन्दुकल्पः ॥ एतेनमनाक्उन्नतत्वंबोध्यतेवलाससंज्ञः । वलासग्रथितसंज्ञःक्वचिदेकदेशेनापिसमुदायावगमात् ॥ यथाभीमोभीमसेनइतिअतएव सुश्रुतेनामसंग्रहेवलासग्रथितपदंनिर्दिष्टम् इति शुक्लभागजारोगाः ॥ ८३४ ॥

वलासग्रथितका लक्षण ॥

नेत्रके शुक्लभागमें श्वेतबर्ण कठिन जलबिन्दुके समान कुछ उन्नत मांसवृद्धिको वलासग्रथितकहते हैं इति शुक्लभागज रोग समाप्त ॥ ८३४ ॥

अथ वर्त्मजारोगाः ॥

तत्रवर्त्मनीद्वेयतआह । वर्त्मनीनयनच्छदाविति ॥ ८३५ ॥

वर्त्मजरोग ॥

वर्त्मदोहोते हैं क्योंकि नेत्रके दोनों ढकनेवालोंको बर्त्म कहतेहैं ऐसा कहागयाहै ॥ ८३५ ॥

तत्रत्यानांरोगाणां नामानिसंख्याञ्चाह ॥

उत्सङ्गिन्यथकुम्भीकापोथक्योवर्त्मशर्करा । तथार्शोवर्त्मशुष्कार्शस्तथैवाञ्जनदूषिका ॥ बह्लवर्त्मयच्चापितथान्योवर्त्मबन्धकः । क्लिष्टवर्त्मतथावर्त्मकर्दमःश्यावबर्त्मच ॥ प्रक्लिन्नवर्त्मचाक्लिन्नवर्त्मवातहतश्चतत् । वर्त्मार्बुदंनिमेषश्चशोणितार्शस्तथैवच ॥ लगणोविषवर्त्मापिकुञ्चनंनामतत्परम् । एकविंशतिरित्येतेविकारावर्त्मसंश्रयाः ॥ ८३६ ॥

वर्त्मजरोगोंके नाम और संख्या ॥

उत्संगिनी कुंभीका पोथकी वर्त्मशर्करा बर्त्मार्श शुष्कार्श अंजनदूषिका बहलवर्त्म वर्त्मबंधक क्लिष्टवर्त्म वर्त्मकर्द्दम श्याववर्त्म प्रक्लिन्नवर्त्म अक्लिन्नवर्त्म वातहतवर्त्म वर्त्मार्बुद निमेष शोणितार्श लगण बिषवर्त्म और कुंचन यह २१ वर्त्म हैं ॥ ८३६ ॥

तेषूत्सङ्गपीडिकामाह ॥

अभ्यन्तरमुखीताम्रावाह्यतोवर्त्मसंश्रया । सोत्सङ्गोत्सङ्गपिड़िकारक्तजास्थूलकण्डुरा ॥ अभ्यन्तरमुखी । वर्त्मनोऽभ्यन्तरेमुखंयस्याःसावर्त्मनोवाह्यतस्ताम्रासोत्सङ्गाअन्तःपूया ॥ उत्सङ्गपीड़िकाउत्सङ्गेक्रोड़ेबह्व्यःपीड़िकायस्याःसास्थूलकण्डुरास्थूलाकण्डुराचेतिकर्मधारयः।एषाअधरवर्त्मजाबोद्धव्यावर्त्मोत्संगेऽधरेजन्तोरितिविदेहवचनात् ८३७

उत्संग पिडिकाका लक्षण ॥

वर्त्मके भीतर मुखवाली बाहर ताम्रवर्ण भीतर पीपयुक्त अनेक छोटी २ फुंसियों से युक्त स्थूल तथा खुजली युक्त जो वर्त्ममें पिड़िका होतीहै उसे उत्संगापिड़का कहतेहैं यहनीचेके पलकमें होती है क्योंकि बिदेहने कहाहै कि प्राणीकी नीचेवाली पलकमें इत्यादि यह पिड़िका सन्निपातजहै ८३७

कुम्भीकामाह ॥

वर्त्मान्तेपीड़िकाध्माताभिद्यन्तेचस्रवन्तिच । कुम्भीकाबीजसदृशाःकुम्भीकाकठोरस्देशेदाड़िमाकारफलालतातद्बीजतुल्याः ॥ ८३८ ॥

कुंभीकाका लक्षण ॥

पलकके अन्तमें कुंभीक (अनार के समान फलवालीलताबिशेष) के बीजके समान उभरीहुई पिड़िकाफूटकर बहने लगतीहै इनको कुंभीका कहतेहैं यह सन्निपातज होतीहैं ॥ ८३८ ॥

पोथिकामाह ॥

स्राविण्यःकण्डुरागुर्व्योरक्तसर्षपसन्निभाः।रुजावत्यश्चपिड़िकापोथकीइतिकीर्तिता ८३९

पोथकीका लक्षण ॥

बहनेवाली खुजलीयुक्तभारी लालसरसोंके समान आकृतवाली और पीड़ायुक्तपलकोंमें होनेवाली पिड़िकाकोपोथकी कहतेहैं ॥ ८३९ ॥ वर्त्मशर्करामाह ॥

पीड़िकाभिःसुसूक्ष्माभिर्घनाभिरभिसंवृता । पीड़िकायाखरास्थूलावर्त्मस्थावर्त्मशर्करा ॥ ८४० ॥

वर्त्मशर्कराका लक्षण ॥

सूक्ष्म तथा घनी पिड़िकाओं से व्याप्त कठोर और स्थूल पलक में होनेवाली पिड़िकाको वर्त्म-शर्करा कहते हैं ॥ ८४० ॥

अर्शोवर्त्माह ॥

ऐर्वारुबीजप्रतिमःपीड़िकामन्दवेदनाः । श्लक्ष्णाःखराश्चवर्त्मस्थास्तदर्शोवर्त्मकीर्त्यते ॥ ऐर्वारुकर्कटी खराःतीक्ष्णाग्राः ॥ ८४१ ॥

अर्शोवर्त्मका लक्षण ॥

ककड़ीके बीजकेसमान आकृतिवाली थोड़ीपीड़ावाली चिकनी तथा तीक्ष्ण अग्रभागवाली पलक में होनेवाली पिड़िकाको अर्शोवर्त्म कहते हैं ॥ ८४१ ॥

शुष्कार्शआह ॥

दीर्घांकुरःखरस्तब्धोदारुणोऽभ्यन्तरोद्भवः । व्याधिरेषोऽभिविख्यातःशुष्कार्शोनाम नामतः ॥ ८४२ ॥

शुष्कार्शका लक्षण ॥

पलकके भीतर कर्कश कठिन उत्पन्न हुए मांसके दीर्घअंकुरको शुष्कार्श कहते हैं ॥ ८४२ ॥

अञ्जननामिकामाह ॥

दाहतोदवतीताम्रापीड़िकावर्त्मसम्भवा । मृद्वीमन्दरुजासूक्ष्माज्ञेयासांजननामिका८४३

अंजनदूषिकाका लक्षण ॥

दाह तथा सूजीगड़नेकीसी पीड़ायुक्त ताम्रबर्णवाली कोमल अल्प पीड़ायुक्त पलकमें हुई छोटी पिड़िकाको अंजनदूषिका कहते हैं ॥ ८४३ ॥

बहलवर्त्माह ॥

वर्त्मोपचीयतेयस्यपीड़िकाभिःसमन्ततः । सवर्णाभिःस्थिराभिश्चविद्यात्बहलवर्त्म तत् ॥ ८४४ ॥

बहलवर्त्मका लक्षण ॥

पलकके समान बर्णवाली तथा कठिन पिड़िकाओंसे पलकके घिरजानेको बहलवर्त्म कहतेहैं ८४४ ॥

वर्त्मबन्धकमाह ॥

कण्डूरेणात्मतोदेनवर्त्मशोफेनमानवः । असमंछादयेदक्षियत्रासौवर्त्मबन्धकः ८४५॥

वर्त्मबन्धकका लक्षण ॥

खुजली तथा कुछ सुई गड़नेकीसी पीड़ायुक्त पलकोंकी सूजनसे नेत्रोंकी समतासे नहीं आच्छादन होनेको वर्त्मबंधककहतेहैं ॥ ८४५ ॥

क्लिष्टवर्त्माह ॥

मृद्वल्पवेदनंताम्रंयद्वर्त्मसममेवच । अकस्माच्चस्रवेद्रक्तंक्लिष्टवर्त्मेतितद्विदुः ॥ एतत् कफजुष्टरक्तजम् ॥ ८४६ ॥

क्लिष्टवर्त्मका लक्षण ॥

कोमल स्वल्प पीड़ायुक्त पलकें ताम्रबर्ण होकर एकाएकी रक्तबर्ण होजांय इसे क्लिष्टवर्त्म कहते हैं यह कफ सहित रुधिरसे होता है ॥ ८४६ ॥

वर्त्मकर्दममाह ॥

क्लिष्टंपुनःपित्तयुतंशोणितंविदहेद्यदा । तदाक्लिन्नत्वमापन्नमुच्यतेवर्त्मकर्दमम् ॥ क्लिन्नत्वंआर्द्रत्वम् ॥ ८४७ ॥

वर्त्मकर्दमका लक्षण ॥

क्लिष्टवर्त्ममें पित्तका संयोग होकर रुधिरके दाहयुक्त होनेपर जबआर्द्रता उत्पन्न होतीहै तब उसे वर्त्मकर्दम कहते हैं ॥ ८४७ ॥

श्याववर्त्माह ॥

यद्वर्त्मबाह्यतोऽन्तश्चश्यावंशूनंसवेदनम् । सकण्डूकंपरिक्लेदिश्याववर्त्मेतितन्सतम् ८४८

श्यावववर्त्मका लक्षण ॥

पलकोंके बाहर तथा भीतर खुजलीयुक्त धुमैलेवर्ण अल्पपीड़ायुक्त और आर्द्र उत्पन्नहुए शोथको श्याववर्त्म कहते हैं ॥ ८४८ ॥

प्रक्लिन्नवर्त्माह ॥

अरुजंबाह्यतःशूनंवर्त्मयस्यनरस्यहि । प्रक्लिन्नवर्त्मतद्विद्यात्क्लिन्नमत्यर्थमन्ततः ॥ अरुजं ईषद्व्यथम् ॥ ८४९ ॥

प्रक्लिन्नवर्त्मका लक्षण ॥

बाहर कुछ पीड़ा तथा शोथयुक्त और अन्तमें आर्द्रपलकको प्रक्लिन्नवर्त्म कहते हैं ॥ ८४९ ॥

अक्लिन्नवर्त्माह ॥

यस्यधौतान्यधौतानिसम्बध्यन्तेपुनःपुनः। वर्त्मान्यपरिपक्वानिविद्यादक्लिन्नवर्त्मतत् ८५०

अक्लिन्नवर्त्मका लक्षण ॥

बिनापकेहुए पलकोंके धोनेपर और न धोनेपरभी बारम्बारचिपकजानेको अक्लिन्नवर्त्म कहतेहैं ८५०

वातहतवर्त्माह ॥

विमुक्तसन्धिनिश्चेष्टंवर्त्मयस्यनिमील्यते । एतद्वातहतंविद्यात्सरुजंयदिवारुजम् ॥ विमुक्तसन्धिःस्वस्थानच्युतसन्धिःनिश्चेष्टं । निमेषोन्मेषादिरहितम् ॥ ८५१ ॥

वातहतवर्त्मका लक्षण ॥

पीड़ासहित अथवा पीड़ारहित पलकोंकी सन्धिके अलग होजानेसे निमेष तथा उन्मेष (पलकका खुलना मुंदना) रहित पलकोंके ढकजानेको वातहतवर्त्म कहते हैं ॥ ८५१ ॥

वर्त्मार्बुदमाह ॥

वर्त्मान्तरस्थंविषमग्रन्थिभूतमवेदनम् । आचक्षीतार्बुदमितिसरक्तमविलम्बि च । विषमंअवर्तुलंग्रन्थिभूतंकठिनम् । अवेदनमीषद्वेदनंसरक्तंईषल्लोहितम् ॥ अवलम्बि अस्रस्तम् ॥ ८५२ ॥

वर्त्मार्बुदका लक्षण ॥

पलकोंके भीतर बिषम (बिनागोल) कुछ पीड़ायुक्त कुछ रक्तबर्ण और नहीं रुकीहुई ग्रंथिसी उत्पन्नहोनेको वर्त्मार्बुद कहते हैं ॥ ८५२ ॥

निमेषमाह ॥

निमेषिणीःशिरावायुःप्रविष्टोवर्त्मसंशयः । संचालयतिवर्त्मानिनिमेषःसनसिध्यति ८५३ ॥

निमेषका लक्षण ॥

कुपितबायुवर्त्ममें स्थितपलकोंके खोलने मूंदने वाली शिराओंमें प्रविष्टहोकरजोपलकोंको बहुत चलातीहैउसे निमेष कहतेहैं यह रोग असाध्यहै ॥ ८५३ ॥

शोणितार्शमाह ॥

वर्त्मस्थोयोविवर्द्धतेलोहितोमृदुरंकुरः। तद्रक्तजंशोणितार्शंछिन्नंवाऽपिविवर्द्धते॥८५४॥

रक्तार्शका लक्षण ॥

रुधिर के द्वारा पलकमें उत्पन्न हुए रक्तवर्ण कोमल मांस के अंकुरको रक्तार्श कहते हैं यह काटने परभी बढ़ता है ॥ ८५४ ॥

लगणमाह ॥

अपाकोकठिनःस्थूलोग्रन्थिवर्त्मभवोरुजः। सकण्डूःपिच्छलःकोलप्रमाणोलगणः स्मृतः ॥ ८५५ ॥

लगण का लक्षण ॥

पलक में उत्पन्न हुई नहीं पकनेवाली कठिन स्थूल खुजली युक्त तथा लसलसी बेरके समान ग्रंथिको लगण कहते हैं ॥ ८५५ ॥

विषवर्त्माह ॥

त्रयोदोषाःवहिःशोथंकुर्य्याच्छिद्राणिवर्त्मनोः। प्रस्रवत्यन्तमुदकंविषवद्विषवर्त्मयत् ॥ छिद्राणिअन्तश्छिद्राणिचकुर्य्युरित्यन्वयः विषवद्बहुछिद्रत्वात् ॥ ८५६ ॥

विषवर्त्म का लक्षण ॥

तीनों दोष कुपित होकर पलकोंके बाहर शोथको उत्पन्न करें और भीतर छिद्र उत्पन्न करें और बहुत सा पानीबहै इस बिष तुल्य रोगको बिषवर्त्म कहते हैं ॥ ८५६ ॥

कुञ्चनमाह ॥

वाताद्यावर्त्मसंकोचंजनयन्तिमलायदा। तदाद्रष्टुंनशक्नोतिकुंचनंनामतद्विदुः ॥ इति वर्त्मरोगाः ॥ ८५७ ॥

कुंचन का लक्षण ॥

बातादि दोष कुपित होकर जब पलकोंको संकुचित करदेते हैं तब मनुष्य देख नहीं सक्ता इस रोगको कुंचन कहते हैं इति वर्त्म रोग समाप्त ॥ ८५७ ॥

अथ पक्ष्मरोगाः ॥

तत्रपक्ष्माण्यक्षिलोमानि तत्रत्ययोरोगयोर्नामनीआह। पक्ष्मकोपःपक्ष्मशातो रोगौ द्वौपक्ष्मसंश्रयौ ॥ ८५८ ॥

पक्ष्मके रोग बिरूनियों के दोनों रोगोंके नाम ॥

पक्ष्मकोप और पक्ष्मशात यह दो रोग पक्ष्ममें होते हैं॥ ८५८॥

तत्रपक्ष्मकोपमाह ॥

प्रचालितानिवातेनपक्ष्माण्यक्षिविशन्तिहि। असितेसितभागेचमूलकोशात्पतन्त्यपि ॥ घृष्यन्त्यक्षिमुहुस्तानिसंरम्भंजनयन्तिच। पक्ष्मकोपः सविज्ञेयोव्याधिःपरमदारुणः ॥ संरम्भंशोथम् ॥ ८५९ ॥

पक्ष्मकोपका लक्षण ॥

बायु से चलायमान पक्ष्म (बिरूनी) नेत्रके भीतर कृष्ण अथवा श्वेत मंडल में प्रबिष्ट होजातीहैं तथा अपने स्थानसे गिरजातीहैं इस्से मनुष्य बारंबार नेत्रोंको मलताहै और नेत्रोंमें शोथ उत्पन्न हो जाता है इस भयंकर रोग को पक्ष्मकोप कहते हैं ॥ ८५९ ॥

तन्त्रान्तरोक्तंपक्ष्मकोपमाह ॥

यत्पक्ष्मदेहलीमुल्कावर्त्मनोऽन्तःप्रजायते । घर्षेत्पक्ष्मसितेश्वेते पक्ष्मकोपःसउच्यते ॥ ८६० ॥ तंत्रान्तर में कहेहुये पक्ष्म कोप का लक्षण ॥

पलकके भीतर बरौनियां पर जो पिड़िका होवे और बरौनियां श्वेत अथवा कृष्ण मंडल में रगड़ खाय इसे पक्ष्मकोप कहते हैं ॥ ८६० ॥

पक्ष्मशातमाह ॥

वर्त्मपक्ष्माशयगतंपित्तंलोमानिशातयेत् । कण्डूंदाहञ्चजनयेत्पक्ष्मशातन्तदादिशेत् शातयेत् स्खलयेत् ॥ ८६१ ॥

पक्ष्मशातका लक्षण ॥

वर्त्म तथा पक्ष्म में प्राप्त पित्त रोमों को गिरावे और खुजली तथा दाहको उत्पन्न करे इसे पक्ष्म शात कहते हैं ॥ ८६१ ॥

अथ समस्तनेत्रजारोगाः ॥

तेषांनामानिसंख्याश्चाह । ष्यन्दाश्चतुष्काइहसम्प्रदिष्टाश्चत्वारएवेहतथाधिमन्थाः । पाकःसशोथःसचशोथहीनोहताधिमन्थोऽनिलपर्य्ययश्च ॥ शुष्काक्षिपाकस्त्विहकीर्त्तितश्चतथान्यतोवातउदीरितश्च । दृष्टिस्तथाम्लाध्युषिताशिराणामुत्पातहर्षौचसमस्तनेत्रे॥एवंसमस्तनेत्रेस्युरामयादशसप्त च।तेषामिहपृथक्वक्ष्येयथावल्लक्षणान्यपि ८६२ ॥

संपूर्ण नेत्रोंमें होनेवाले रोग । इनकेनाम और संख्या ॥

चार अभिष्यन्द चारअधिमन्थ शोथहीन नेत्रपात सशोथ नेत्रपात हताधिमन्थ अनिलपर्य्यय शुष्काक्षिपात अन्यतोबात अम्लाध्युषित शिरोत्पात और शिराहर्ष यह १७ रोग संपूर्ण नेत्रमें होते हैं इनके लक्षण आगे लिखते हैं ॥ ८६२ ॥

तेष्वभिष्यन्दाश्चत्वारइत्याह ॥

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यन्दश्चतुर्विधः । प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्रभयङ्करः ८६३ ॥

चार अभिष्यन्दोंका बर्णन ॥

वातज पित्तज कफज और रक्तज यहचारप्रकारके अभिष्यन्द संपूर्णनेत्रमें अत्यन्त पीड़ाकरतेहैं ८६३ ॥

तेषुवातिकाभिष्यन्दमाह ॥

निस्तोदनस्तम्भनरोमहर्षसंघर्षपारुष्पशिरोऽभितापाः । विशुष्कभावःशिशिराश्रुताचवाताभिपन्नेनयनेभवन्ति ॥ संहर्षःकरकटीकाशिरोऽभितापःशिरसोऽयथाविशुष्कभावः दूषिकाराहित्यंवाताभिपन्नेवातेनोपहृनुते ॥ ८६४ ॥

बातज अभिष्यन्दका लक्षण ॥

बातज अभिष्यन्दमें सूईगड़नेकीसीपीड़ा जड़ता कर्कराहट और मैलका न निकलना यहलक्षण होतेहैं शीतल आंसूबहै और रोगी रोमांच तथा शिरकी पीड़ासे व्याकुलरहै ॥ ८६४ ॥

पैत्तिकमभिष्यन्दमाह ॥

दाहप्रपाकःशिशिराभिनन्दाधूमायनंवाष्पसमुद्भवश्च । उष्णाश्रुतापीतकनेत्रताच पित्ताभिपन्नेनयनेवदन्ति ॥ शिशिराभिनन्दाशीतलेच्छाधूमायनंनेत्राद्धूमोद्गमइववाष्प समुद्भवः अश्रुस्रावः ॥ ८६५ ॥

पित्तज अभिष्यन्दका लक्षण ॥

पित्तज अभिष्यन्दमें दाह पाक शीतलताकी इच्छा धुआं निकलता हुआसा मालूम पड़ना उष्ण बहुतसे आंसुओंका निकलना और पीतबर्ण यहलक्षण नेत्रमें होतेहैं ॥ ८६५ ॥

श्लैष्मिकमभिष्यन्दमाह ॥

उष्णाभिनन्दागुरुताक्षिशोथः कण्डूपदेहावतिशीतताच । स्रावोमुहुःपिच्छिलएवचा पिकफाभिपन्नेनयनेभवन्ति ॥ उपदेहः दूधिकयालिप्तता ॥ ८६६ ॥

कफज अभिष्यन्दके लक्षण ॥

कफज अभिष्यन्दमें उष्णताकीइच्छा भारीपन शोथ खुजली बहुतमैल निकलना बहुतशीतलता और बारम्बार चिपचिपे आंसूबहना यहलक्षण नेत्रोंमेंहोते हैं ॥ ८६६ ॥

रक्तजमभिष्यन्दमाह ॥

ताम्राश्रुतालोहितनेत्रताचराज्यःसमन्तादतिलोहिताश्च । पित्तस्यलिंगानिचया नितानिरक्ताभिपन्नेनयनेभवन्ति (अनुक्तसंग्रहार्थमाह) पित्तलिंगानिपित्ताभिष्यन्द लिंगानि ॥ ८६७ ॥

रक्ताभिष्यन्दके लक्षण ॥

लालआंसूबहना नेत्रोंकारक्तहोना नेत्रमेंसबओर लाल २ लकीर पड़ना और पित्तके संपूर्ण लक्षण रक्तज अभिष्यन्द में होते हैं ॥ ८६७ ॥

अधिमन्थानामभिष्यन्दजत्वमाह । वृद्धैरेतैरभिष्यन्दैर्नराणामक्रियावताम्॥तावन्तः। स्त्वधिमन्थाःस्युर्नयनेतीव्रवेदना ॥ ८६८ ॥

अभिष्यन्दोंसे अधिमन्थों के होने का बर्णन ॥

चिकित्सा न करनेवाले मनुष्योंके बढ़ेहुए अभिष्यन्दोंसे अत्यन्त पीड़ायुक्त चार प्रकारके अधिमन्थ नेत्रों में उत्पन्न होते हैं ॥ ८६८ ॥

अधिमन्थानांलक्षणमाह ॥

उत्पाट्यतइवात्यर्थंतथानिर्मथ्यतेऽपिच । शिरसोऽर्द्धंतुतंविन्द्यादधिमन्थःस्वलक्षणैः ॥ स्वलक्षणैःयथोक्तवातादिकृताभिष्यन्दलक्षणैः अधिमन्थंविन्द्यात् । अभिष्यन्देभ्योऽधि मन्थानांभेदार्थमाह॥ शिरसोऽर्द्धमुत्पाट्यतइवतथानिर्मथ्यतेऽपिचेतिचतुष्वधिमन्थेषुबोद्ध व्यंशिरसोऽर्द्धवेदनाव्याधिप्रभावात् ॥ ८६९ ॥

अधिमन्थोंके लक्षण ॥

अधिमन्थोंमें बातजआदि अभिष्यन्दोंके अलग २ लक्षणोंसे बातजआदिक जाने और इनमें टूटने कीसी तथा मथनेकीसी पीड़ा आधेशिरमें होती है ॥ ८६९ ॥

सचाधिमन्थोयदात्मकोयावताकालेनमिथ्याचाराद्दृष्टिंहंतितान्श्चतमाह ॥

हन्याद्दृष्टिंश्लैष्मिकःसप्तरात्राद्योऽधिमन्थोरक्तजःपञ्चरात्रात्। षड्रात्राद्वातिकोवैनिहन्यान्मिथ्याचारात्पैत्तिकःसद्यएव॥ अत्रसद्यः शब्देनत्रिरात्रउच्यतेतन्त्रान्तरेत्रिरात्रवचनात् ॥ ८७० ॥

जिसदोषसे हुआ अधिमन्थ जितनेकालमें दृष्टिको नाशकरताहै उसका बर्णन ॥

अहित आचरण करने से कफज अधिमन्थ ७ रात्रिमें रक्तज ५ रात्रिमें बातज ६ रात्रिमें और पित्तज तीन रात्रिमेंही दृष्टिको नाशकरता है ॥ ८७० ॥

सशोथंपाकमाह ॥

कण्डूपदेहोऽश्रुयुतःपक्वोदुम्बरसन्निभः । संरम्भोपच्यतेयस्तुनेत्रपाकःसशोथकः ॥ पक्वोदुम्बरसन्निभःलोहितत्वात् । शोथहीनानिलिंगानिनेत्रपाकेत्वशोथजे ॥ ८७१ ॥

सशोथपाकका लक्षण ॥

खुजली मैल तथा अश्रुयुक्त पकेहुये गूलरके समान शोथयुक्तनेत्रके पकनेको सशोथनेत्रपाक कहते हैं और शोथरहित इनसब लक्षणोंके होनेको शोथहीन नेत्रपाक कहतेहैं ॥ ८७१ ॥

हताधिमन्थमाह ॥

उपेक्षणादक्षिपदाधिमन्थोवाताधिकःशोषयातिप्रसह्य । रुजाभिरुग्राभिरसाध्यएषहताधिमन्थःखलुनामरोगः ॥ शोषयतिशोषयित्वानाशयति । अतएवविदेहः ॥ तत्पक्वमिवसंशुष्कमवसीदतिलोचनमिति ॥ ८७२ ॥

हताधिमन्थका लक्षण ॥

चिकित्सा न करनेसे वातज अधिमन्थ बलात्कारपूर्वक नेत्रको सुखाकर नष्टकरदेताहै इसमेंबहुत पीड़ाहोतीहै यह असाध्य है ॥ ८७२ ॥ वातपर्य्यायमाह ॥

वारंवारञ्चपर्य्येतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः । रुजाभिःमहत्तीव्राभिःसज्ञेयोवातपर्ययः ॥ पर्य्येतिपर्यायेणयातिकदाचिद्भ्रुवौकदाचिन्नेत्रे ॥ ८७३ ॥

बातपर्य्यायका लक्षण ॥

कुपितबायु बारंबार कभीभृकुटियोंमें तथा कभीनेत्रोंमें क्रमसेजाकर तीव्रपीड़ा उत्पन्नकरताहै ८७३ ॥

शुष्काक्षिपाकमाह ॥

यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्मसन्दह्यतेचाविलदर्शनंयत् । सुदारुणंयत्प्रतिबोधनेचशुष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि ॥ कूणितंसङ्कोचितंमुद्रितमितियावत्। दारुणरूक्षवर्त्मेदारुणंविकृतंरूक्षंचवर्त्मयस्यतत् ॥ इदमक्ष्णोविशेषणंसन्दह्यतेसदाहंभवतिआविलदर्शनंआविलस्यअनघस्यदर्शनंयेनतत् । तत्प्रतिबोधने । उद्घाट्यसुदारुणंअतिशयेनाविकृतं ८७४

शुष्काक्षिपाकका लक्षण ॥

जिसरोगमें नेत्रबन्दहोजांय तथा दाहयुक्तहों पलकें बिकारयुक्त तथा रूखीहोजांय स्वच्छ न दिखाई पड़े और नेत्रके खोलने में बहुतबिकार मालूमपड़े उसरोगको शुष्काक्षिपाककहते हैं ॥ ८७४ ॥

अन्यतोवातमाह ॥

यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थोमन्यागतोवाप्यनिलोऽन्यतोवा। कुर्याद्रुजोऽतिभ्रुविलोचने चतमन्यतोवातमुदाहरन्ति ॥अवटूघाटइतिमैथिलादिलोकाःअन्यतोवापृष्ठादिदेशञ्चागतःअन्यतोवातःअन्यत्रस्थितोऽन्यत्ररुजंकरोतिइत्यन्यतोवातः। विदेहेनाप्युक्तं ॥ मन्यानामन्तरेवायुरुत्थितःपृष्ठतोपिकरोतिभेदान्निस्तोदम्। शङ्खेवाक्ष्णोर्भ्रुवस्तथातमाहुरन्यतोवातंरोगंदृष्टिविदोजनाः ॥ ८७५ ॥

अन्यतोबातका लक्षण ॥

घांटी कान शिर जावड़े गलेके पीछे की नस तथा अन्य पीठ आदि स्थानोंमें प्राप्त बायु जो भृकुटी और नेत्रोंमें पीड़ा करतीहै उसे अन्यतोबात कहते हैं ॥ ८७५ ॥

अम्लाध्युषितमाह ॥

श्यावंलोहितपर्यन्तंसर्वमक्षिप्रपच्यते। सदाहशोथंसस्रावमम्लाध्युषितमम्लतः ॥ अम्लतःअम्लभोजनात्। तथाचसुश्रुतःअम्लेनभुक्तेनेत्यादि ॥ ८७६ ॥

अम्लाध्युषित का लक्षण ॥

बहुत खटाई खाने से बीचमें धुमैला तथा किनारों पर लाल और दाह शोथ स्रावयुक्त संपूर्ण नेत्र पकजाताहै उसे अम्लाध्युषित कहते हैं ॥ ८७६ ॥

शिरोत्पातमाह ॥

अवेदनावापिसवेदनावायस्याक्षिराज्योहिभवन्तिताम्राः। मुहुर्विरज्यन्तिचयाःसमन्ताद्व्याधिःशिरोत्पातइतिप्रदिष्टः॥अक्षिराज्यःअक्षिशिराःविरज्यन्तिविकृतवर्णाभवन्ति ८७७

शिरोत्पात का लक्षण ॥

पीड़ा सहित अथवा पीड़ा रहित नेत्रकी शिरा ताम्रवर्ण होयँ और बारंबार बिकृत वर्ण होजायँ उस रोगको शिरोत्पात कहते हैं ॥ ८७७ ॥ शिरोहर्षमाह ॥

मोहात्शिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगःसशिरोप्रहर्षः। ताम्राक्षितास्रावयतिप्रगाढं तथानशक्नोत्यभिवीक्षितुञ्च ॥ ८७८ ॥

शिराहर्ष का लक्षण ॥

अज्ञान से शिरोत्पातकी चिकित्सा न करनेपर शिराप्रहर्ष रोग उत्पन्न होता है इसमें नेत्र ताम्रवर्ण होतेहैं बहुत आंसू बहते हैं और देखनेकी शक्ति नहीं रहती है ॥ ८७८ ॥

नेत्रस्यसमतालक्षणमाह ॥

उदीर्णवेदनंनेत्रंरागदोषेसमन्वितम्। घर्षनिस्तोदशूलास्रयुक्तमामान्वितंविदुः॥उदीर्णवेदनंउद्भटवेदनंघर्षःकरकटिकाएतल्लक्षणानिधानार्थमञ्जनादिनिषेधार्थंचोक्तं। तथाच

तन्त्रान्तरे ॥ स्वेदोदितानिचत्वारिलङ्घनंभोजनेरसः। स्वादुतिक्तश्चलेपश्चवाष्पस्त्रेदन मेवच ॥ एतानिनेत्ररोगाणांसामान्यवचनानिहि । अञ्जनंसर्पिषःपानंकषायंगुरुभोजनम् ॥ नेत्ररोगेषुसामेषुस्नानञ्चपरिवर्जयेत् ॥ ८७९ ॥

आमसहित नेत्रके लक्षण ॥

अत्यन्त पीड़ा युक्त रक्तवर्ण कर्कराहट सूई गड़ने कीसी पीड़ा तथा पीड़ा युक्त और अश्रु युक्त नेत्रको आम सहित जानना चाहिये यह लक्षण अंजनादि के निषेध के लिये कहेगये हैं और ऐसाही तन्त्रान्तर में भी कहागयाहै कि नेत्ररोगोंमें चार प्रकारका श्वेत लंघन मधुर तथा तिक्त रसका भोजन लेप और वाष्प स्वेद यह सामान्य हैं अंजन घृतपान क्वाथ भारी बस्तुओं का भोजन और स्नान यह सब आमसहित नेत्ररोग में त्याज्यहैं ॥ ८७९ ॥

नेत्रस्यनिरामतालक्षणमाह ॥

मन्दवेदनताकण्डूसंरम्भाश्रुप्रशान्तता । प्रसन्नवर्णताचाक्ष्णोनिरामेक्षणलक्षणम् ॥ (संरम्भःशोथः) इतिसमस्तनेत्रजारोगाः ॥ ८८० ॥

आमरहित नेत्रका लक्षण ॥

थोड़ी पीड़ा खुजली शोथ आंसुओं का न निकलना और स्वच्छ वर्णता यह आम रहित नेत्र के लक्षण हैं इति समस्त नेत्रज रोग समाप्त ॥ ८८० ॥

अथ नेत्ररोगाणाञ्चिकित्सा ॥

द्वेपादमध्येपृथुसन्निवेशेशिरेगतेद्वेबहुधाहिनेत्रे । ताःप्रोक्षणोत्सादनलेपनादीन्पाद प्रयुक्तान्नयनंनयन्ति ॥ प्रोक्षणंसेचनंउत्सादनमुद्वर्त्तनम् । मलोष्मसङ्घट्टनपीड़नाद्यैस्ता दूषयन्तेनयनानिदुष्टाः ॥ भजेन्महादृष्टिहितानितस्मादुपानदभ्यञ्जनधावनानि । मलन्धूल्यादि । मलादिभिःदुष्टाःताःशिराःनयनानिदूषयन्तेइत्यन्वयः ॥ चक्षुष्याःशालयो मुद्गायवाःमांसंतजाङ्गलम् । पक्षिमांसंविशेषेणवास्तुकंतण्डुलीयकम् ॥ पटोलकर्कोटककार वेल्लफलानिसर्पिःपरिपाचितानि । तथैववार्ताकफलंनवीनमक्ष्णोर्हितःस्वादुरथातितिक्तः ॥ कट्वम्लगुरुतीक्ष्णोष्णमाषनिष्पावमैथुनम् । मद्यवल्लूरपिण्याकमत्स्यशाकविरूढजम् ॥ विदाहीन्यन्नपानानिनहितान्यक्षिरोगिणे ॥ ८८१ ॥

नेत्ररोगोंकी चिकित्सा ॥

पैरोंसे मस्तक पर्य्यन्त दो स्थूल शिरा स्थितहैं यही शिरा प्रायः परिषेक उबटन तथा लेप आदिक जो कुछ पैरोंमें किये जातेहैं उनको नेत्रोंमें प्राप्त करतीहैं धूलि आदिक मल ऊष्मा रगड़ तथा दबने आदिसे दूषित शिरा नेत्रोंको दूषित करतीहैं इसलिये जूता पहरना पैरों में तैलादि मलना और पैरोंका धोना सदैव हितकारीहै शालि धान्य मूंग यव जांगलमांस पक्षियों का मांस बथुआ चौराही पर्वल खिकसा करेला घीके पदार्थ नवीन बैंगन और मधुर तथा तिक्तरस यह सब नेत्रोंको हितहैं कटु तथा अम्लरस भारी तीक्ष्ण तथा उष्ण बस्तु उर्द लोबिया स्त्री प्रसंग मद्य शुष्कमांस खली मछली शाक अंकुरित अन्न और बिदाही अन्नपान यह सब नेत्र रोगोंमें अहितहैं ॥ ८८१ ॥

सेकआश्चोतनंपिण्डीविड़ालस्तर्पणंतथा । पुटपाकोऽञ्जनञ्चैभिःकल्कैर्नेत्रमुपाचरेत् ॥ ८८२ ॥

सेक आश्च्योतन पिंडी बिड़ाल तर्पण पुटपाक और अंजनइनकेद्वारा नेत्रोंकी चिकित्साकरे८८२॥

तत्रसेकविधिः । सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः ॥ मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलः । सचापिस्नेहोवातेपित्तेरक्तेचरोपणः ॥ लेखनस्तुकफेकार्य्यस्तस्यमात्राभिधीयते ॥ ८८३ ॥

सेककी बिधि ॥

रोगीके नेत्र बन्द करवाके सूक्ष्म धाराओंसे संपूर्ण नेत्रमें चार अंगुल का सेक (तरारा) देना चाहिये बातज नेत्र रोगमें स्निग्ध सेक पित्तज तथा रक्तजमें रोपणसेक (पूरनेवाला) और कफज में लेखन सेक (घटानेवाला) करना चाहिये इसकी मात्रा आगे कहेंगे ॥ ८८३ ॥

षड्भिर्वाचांशतैः स्नेहेचतुर्भिस्तैस्तुरोपणे । तैस्त्रिभिर्लोचनेकार्य्योसेकोनेत्रप्रसादने ॥ निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याछोटिकाथवा । गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः ॥ छोटिकाचुट्कीइतिलोके । सेकस्तुदिवसेकार्य्योरात्रौचात्यन्तिकेगदे ॥ ८८४ ॥

छः सौ वाक्य कहनेमें जितना समय लगताहै उतनी देरतक स्निग्ध सेक देना चाहिये रोपण सेकमें चारसौ और लेखन सेकमें तीनसौ वाक्य के उच्चारणका समय आवश्यक है पलक लगाना चुटकी वजाना अथवा गुरु अक्षर उच्चारण करना इनमें जितना समय लगताहै उतनाही समय यहां एक बाक्य का समझना चाहिये सेक दिनमें करना चाहिये और रोगके बहुत बढ़जाने पर रात्रिमें भी करे ॥ ८८४ ॥

सयथा । एरण्डदलमूलत्वक्शृतमात्रंतयोर्हितम् ॥ सुखोष्णंनेत्रयोःसिक्तंवाताभिष्यन्दनाशनम् । पथ्याक्षामलखाखसवल्कलकल्केनसूक्ष्मवस्त्रेणकृत्वापोटलिकांतामहिफेनोत्थद्रवेणयुक्ताम् ॥ विदधीतलोचनेस्यात्सर्वाभिष्यन्दसंक्षयःशीघ्रम् । योगोऽयमृषिभिरुक्तो जगदुपकारायकारुणिकैः ॥ भुक्तापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते । अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥ स्नानंकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् । आमलैःसततंस्नानंपरंदृष्टिबलावहम् ॥ त्रिफलायाःकषायस्तु धावनान्नेत्ररोगजित् । कवलान्मुखरोगघ्नः पानतःकामलापहः ॥ ८८५ ॥

अरंडकी जड़ पत्ती तथा छालके काढ़ेसे कुछ गरम २ नेत्रोंमें तरारा देनेसे बाताभिष्यन्दका नाश होताहै हड़ बहेड़ा आमला और पोस्त इन सबको पीसकर सूक्ष्म बस्त्रमें पोटली बांधे फिर अफीम के पानीके साथ उस पोटरीको नेत्रोंमें लगावे इस्से सब प्रकारके अभिष्यन्दों का नाश होता है भोजनके उपरान्त हथेलियों को घिसकर नेत्रोंमें लगावे हथेलियों में लगाहुआ जल शीघ्रही तिमिर को नाशकरता है काले तिलोंको जलमें मिलाकर स्नान करनेसे नेत्रोंको हित होताहै और बायुका नाशहोता है आमलोंको जलमें मिलाकर स्नान करनेसे दृष्टि बलकी वृद्धि होतीहै त्रिफला के काढ़े से नेत्रोंको धोनेसे नेत्ररोगका नाश होताहै इसको मुखमें रखने से मुखरोग और पीनेसे कामलाका नाश होताहै ॥ ८८५ ॥

आश्च्योतनविधिः ॥

क्वाथक्षीरद्रवंस्नेहविन्दूनांयत्तुपातनम् । द्व्यंगुलोन्मीलितेनेत्रेप्रोक्तमाश्चोतनंहितत् ॥ विन्दवोऽष्टौलेखनेषुरोपणेदशविन्दवः ।स्नेहनेद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः ॥उष्णे तुशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः ।वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलम्॥कफेतीष्णो ष्णरूक्षंस्यात्क्रमादाश्चोतनंहितम् ।आश्चोतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाक्शतोन्मिता॥त तःपरंलोचनाभ्यांभेषजायत्रयोमताः । आश्चोतनंनकर्त्तव्यंनिशायांकेनचित्क्वचित् ८८६

आश्च्योतनकी बिधि ॥

खुलेहुए नेत्रोंमें दो अंगुलतक क्वाथ दूध स्नेह अथवा अन्य पतले पदार्थ के बूंदटपकाने को आश्च्योतन कहते हैं लेखन आश्च्योतनमें ८ बूंद रोपण में १० और स्नेहन में १२ बूंद छोड़नी चाहिये शीतल नेत्रमें उष्ण आश्च्योतन और उष्ण नेत्रमें शीतल आश्च्योतन देनाचाहिये यह सर्वत्र निश्चय है बातज नेत्र रोगमें तिक्त तथा स्निग्ध पित्तज में मधुर तथा शीतल और कफज में तीक्ष्ण रुक्ष तथा उष्ण आश्च्योतन देना चाहिये सब प्रकारके आश्च्योतनों का समय एक सौ बाक्य है क्योंकि इस्से अधिक समय तक नेत्रोंमें औषध धारण करनी नहीं उचितहै रात्रिके समय कभी आश्च्योतन नहीं करना चाहिये ॥ ८८६ ॥

तद्यथा । विल्वादिपञ्चमूलेनबृहदेरण्डशिग्रुभिः । क्वाथआश्चोतनेकोष्णोवाताभिष्यन्दनाशनः ॥ त्रिफलाश्चोतनेनेत्रेसर्वाभिष्यन्दनाशनम् ॥ ८८७ ॥

बेल आदि पंचमूल भटकटैया अरण्ड की जड़ तथा सहजन इनके काढ़ेके द्वारा कुछ गरम २ आश्च्योतन देनेसे बाताभिष्यन्दका नाश होता है त्रिफले के काढ़ेका आश्च्योतन सब अभिष्यन्दों को नष्ट करता है ॥ ८८७ ॥

पिण्डीविधिः ॥

उक्तभेषजकल्कस्यपिण्डीचकोलमात्रया । वस्त्रखंडेनसंबद्धाभिष्यन्दव्रणनाशिनी ॥ स्निग्धोष्णापिण्डिकावातेपित्तेसाशीतलामता। रुक्षोष्णाश्लेष्मणिप्रोक्ताविधिरुक्ताबुधैरियम् ॥ ८८८ ॥

पिंडी की बिधि ॥

पिसीहुई युक्त औषधियों की आठमासे भरकी पिंडियाको कपड़े में रखकर बांधने से अभिष्यन्द और ब्रणों का नाश होताहै बातज नेत्र रोगमें स्निग्ध तथा उष्ण पिंडी पित्तज में शीतल और कफज में रूखी तथा उष्ण पिंडी बांधनी चाहिये ॥ ८८८ ॥

सायथा।एरण्डपत्रमूलत्वङ्निर्मितावातनाशिनी । धात्रीविरचितापित्तेशिग्रुपत्रकृता कफे॥निम्बपत्रकृतापिण्डीपित्तश्लेष्महरीभवेत् ।शुण्ठीनिम्बदलैःपिण्डीसुखोष्णास्वल्प सैंधवा ॥ धार्यानेत्रेऽनिलेकफेशोथकण्डूव्यथाहरी, । त्रिफलापिण्डिकानेत्रेवातपित्तकफापहा ॥ पथ्याक्षामलखाखसवल्कलकल्कोहिफेनजलयुक्तः । तेनविरचितापिण्डीशमयतिसकलानापि ॥ ८८९ ॥

अरण्डकी पत्ती जड़ तथा छाल के द्वारा बनीहुई पिंडी बायुको नाश करतीहै आमलेकी पिंडी पित्त में सह जन के पत्तोंकी पिंडी कफमें और नींबके पत्तोंकी पिंडी पित्त तथा कफमें हितहै सोंठ तथा

नींबके पत्तोंमें कुछ सेंधानोन मिलाकर बनाई हुई पिंडी कुछ गरम २ बांधनेसे बातकफ और शोथ तथा खुजली का नाश होताहै त्रिफले की पिंडी बात पित्त और कफ तीनोंको नष्ट करतीहै हड़ बहेड़ा आमला और पोस्त इनसब को पीसकर अफीमके पानी के साथ बनाईहुई पिंडी संपूर्ण नेत्ररोगोंको शान्त करतीहै ॥ ८८९ ॥

विड़ालकविधिः ॥

विड़ालकोवहिर्लेपो नेत्रेपक्ष्मविवर्जिते । तस्यमात्रापरिज्ञेया मुखालेपविधानवत् ॥ मुखालेपोयथा । अंगुलस्यचतुर्थांशो मुखलेपःकनिष्ठिकः । मध्यमस्तुत्रिभागःस्यादुत्तमो द्व्यंगुलोभवेत् ॥ स्थितिकालोऽपितस्योक्तो यावत्कल्कोनशुष्यति । शुष्कस्तुगुणहीनः स्यात्तथादूषयतित्वचम् ॥ ८९० ॥

विड़ालक की बिधि ॥

नेत्रोंके ऊपर बरौनियों को छोड़कर लेप करनेको बिड़ालक कहतेहैं इसकी मात्रा मुखके लेपकी समानहै मुख लेपकी मात्रा यहहै जैसे चौथाई अंगुल मुखका लेप सामान्य तिहाई अंगुल मध्यम और आधा अंगुल उत्तम होताहै यह लेप जबतक सूख न जाय तबतक रखना चाहिये क्योंकि सूखने पर गुणहीन होजाताहै और त्वचाको दूषित करताहै ॥ ८९० ॥

सयथा । यष्टीगैरिकसिन्धूत्थ दार्वीतार्क्ष्यैःसमांशकैः । जलपिष्टैर्बहिर्लेपः सर्वनेत्रामयापहः (तार्क्ष्यरसाञ्जनम्) रसाञ्जनेनवालेपः पथ्याविल्वदलैरपि । वचाहरिद्राविश्वैर्वा तथानागरगैरिकैः ॥ ८९१ ॥

मुलहठी गेरू सेंधानोन दारुहल्दी तथा रसौत इनसब को पानी में पीस करके नेत्रोंपर लेप करने से सब नेत्ररोगोंका नाश होताहै रसौतके द्वारा अथवा हड़ तथा बेलपत्र के द्वारा या वच हल्दी तथा सोंठके द्वारा वा सोंठ तथा हल्दी के द्वारा नेत्रों पर लेपकरे ॥ ८९१ ॥

अथ तर्पणविधिः ॥

वातातपरजोहीने वेश्मन्युत्तानशायिनः । आधारौमाषचूर्णेन क्लिन्नेनपरिमण्डलौ ॥ समौदृढावसन्धानौ कर्त्तव्यौनेत्रकोशयोः । पूरयेत्घृतमण्डेन विलीनेनमुखोदकैः ॥ सर्पिषाशतधौतेन क्षीरजेनघृतेनवा । निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेवहि ॥ पूरयेन्मीलितेनेत्रे ततउन्मीलयेच्छनैः । भिषग्भिरेषकथितः पुराणैस्तर्पणोविधिः ॥ यद्रूक्षंपरिशुष्कञ्चनेत्रंकुटिलमाविलम् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ॥ तिमिरार्जुनशुष्काद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यां युतंपवनपर्य्ययैः ॥ तंनेत्रंतर्पयेत्सम्यक् नेत्ररोगविशारदः ॥ ८९२ ॥

तर्पण की विधि ॥

वायु धूप तथा धूलरहित स्थानमें रोगी को उताना सुलावे फिर नेत्रमंडलों पर उर्दके मलेहुए आटे से सम तथा दृढ़ सन्धिवाले दो मंडलाकार आधार बनावे और उनमंडलों में गरम जल के द्वारा टिघले हुए घृत युक्त मांड़को सौबार धोयेहुए घृतको अथवा दूधसे निकाले हुए घृतको बरौनियों के डूबजाने तक नेत्रोंको बन्द करवाके भरे फिर धीरे२ नेत्र खुलवावे यह प्राचीन बैद्योंने तर्पण की

बिधि कहीहै रुक्ष परिशुष्क आविल शीर्णपक्ष्म तथा कुटिल नेत्र और शिरोत्पात कृच्छ्रोन्मीलन तिमिर अर्जुन शुष्क अभिष्यन्द अधिमन्थ शुष्काक्षि पाक शोथ तथा बात बिपर्य्यय आदि से युक्त नेत्र में अच्छे प्रकार तर्पण करे ॥ ८६२ ॥

तर्पणंधारयेद्वर्त्मरोगेवाचांशतम्बुधः । स्वस्थेकफेसन्धिरोगे वाचांपञ्चशतानिच ॥ षट्शतानिकफेकृष्णरोगेसप्तशतानिहि । दृष्टिगेचशतान्यष्टावधिमन्थेसहस्रकम् ॥ सहस्रंवातरोगेषु धार्य्यमेवंहितर्पणम् । तर्पणेयोगतःस्नेहं स्रावयित्वाक्षिशोषयेत् ॥ स्विन्नेनयवपिष्टेन स्नेहवार्य्येरितंततः । यथास्वंधूमपानेन कफमस्यविरेचयेत् ॥ एकाहंवात्र्यहं वापिपञ्चाहंवापितर्पयेत् । तर्पणेतृप्तिलिङ्गानिनेत्रस्यैतानिलक्षयेत् ॥ सुखसुप्तावबोधत्वं वैशद्यंदृष्टिपाटवम् । निर्वृतिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच ॥ क्रियालाघवंनेत्रस्य क्रियायांनिमेषोन्मेषादौलघुताम् । गुर्वाविलमतिस्निग्धमश्रुकण्डूपदेहवत् ॥ घर्षतोदयुतंनेत्रमतितर्पितमादिशेत् । अस्रावशोफरोगाढ्यमुपदेहसमाकुलम् ॥ रूक्षमस्राविरुषं नेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् । अनयोर्दोषबाहुल्यात् प्रयत्नेनचिकित्सिते ॥ रूक्षस्निग्धोपचाराभ्या मनयोःस्यात्प्रतिक्रिया । अनयोःअतितर्पितहीनतर्पितयोः ॥ दुर्दिनान्युष्णशीतेषुचितायांसम्भ्रमेषुच।अशान्तोपद्रवेवाक्षिण तर्पणंनप्रशस्यते॥सम्भ्रमोऽत्रभयम्८६३॥

वर्त्मरोग में १०० वाक्य स्वस्थ तथा कफजरोगमें ५०० वाक्य कफज रोगमें ६०० वाक्य कृष्णरोग में ७००वाक्य दृष्टि रोग में ८०० वाक्य और अधिमन्थ तथा बात रोगमें हजार वाक्य पर्य्यन्त तर्पण धारण करे फिर उस स्नेहको निकालकर जौकी पिट्ठीसे नेत्रोंको शुद्धकरे इसके उपरान्त धूम्रपान कराकर कफ निकलवावे १ दिन ३ दिन अथवा ५ दिन तक तर्पण करे तर्पण के ठीक २ होजाने पर यह लक्षण होतेहैं यथा अच्छे प्रकारसे निद्रा नेत्रों की निर्मलता दृष्टिकी समर्थता रोगका नाश और पलकके खोदने मूंदने में शीघ्रता तर्पण के अधिक होजाने में नेत्रभारी मैले अत्यन्त स्निग्ध अश्रु तथा खुजली युक्त मैल से भरेहुए और कर्कराहट तथा सूई गड़नेकी सी पीड़ा युक्त होतेहैं तर्पण के हीन होने में नेत्र रूखे मैले कर्कश अश्रुरहित शोथ तथा रोग युक्त और मैल से युक्त होते हैं अतितर्पण और हीनतर्पण में दोषके अधिक होजानेसे अति तर्पणमें रूक्षक्रिया और हीनतर्पण में स्निग्ध क्रिया करनी चाहिये बदरीवाले दिनमें बहुत उष्ण तथा शीतल समयमें चिन्तामें क्रोधमें और नेत्ररोगके उपद्रवोंके शान्त न होने में तर्पण हितकारी नहीं है ॥ ८९३ ॥

पुटपाकविधिः ॥

द्वेबिल्वेस्निग्धमांसस्य परंद्रव्यपलंमतम् । द्रवस्यकुडवोन्मानं सर्वमेकत्रपेषयेत् ॥ तदेकत्रसमालोड्य पत्रैःसुपरिवेष्टितम् । पुटपाकविधानेन तत्पक्वातद्रसंबुधः ॥ तर्पणोक्तेनविधिना यथावद्विनियोजयेत् । दृष्टिमध्येनिषेक्तव्यः नित्यमुत्तानशायिनः ॥ तेजांस्यनिलमाका शमातपंभास्करस्यच । नेक्षेततर्पितेनेत्रे यस्यवापुटपाकवान् ॥ ८९४ ॥

पुटपाककी विधि ॥

स्निग्ध मांस दोपल अन्य औषध एक पल द्रवपदार्थ ४ पल इनसबको एकमें पीसकर और

अच्छेप्रकारसे घोटकर पुटपाककी विधिसे पत्तोंमें लपेटके पुटपाक करे फिर उस रसको ऊपर कही हुई तर्पणकी विधिके अनुसार रोगीको उताना सुलाकर दृष्टिमें छोड़े इसे पुटपाक कहते हैं तर्पण और पुटपाकवाला तेज वायु आकाश तथा धूपको न देखे ॥ ८९४ ॥

अथाऽञ्जन विधिः ॥

अथसंपक्वदोषस्यप्राप्तमञ्जनमाचरेत् । अञ्जनंक्रियतेयेन तद्द्रव्यंचाञ्जनंमतम् ॥ तद्यथा ॥ वटिकारसचूर्णानि त्रिविधान्यञ्जनानिहि । कुर्य्याच्छलाकयांगुल्या हीनानि स्युर्यथोत्तरम् ॥ स्नेहनंरोपणञ्चापि लेखनंतत्त्रिधापृथक् । मधुरंस्नेहसम्पन्नमञ्जनं स्नेहनंमतम् । तत् त्रिविधंपृथगितितत्वटिका रसचूर्णरूपंपृथक्प्रत्येकं त्रिधास्नेहनंरोपणंलेखनंचेति । कषायतिक्तरसयुक् सस्नेहंरोपणंस्मृतम् ॥ अञ्जनंक्षारतिक्ताम्लरसैर्लेखनमुच्यते । हरेणुमात्रांकुर्वीत वर्तींतीक्ष्णाञ्जनेभिषक् ॥ प्रमाणंमध्यमेसार्द्धं द्विगुणंतु मृदौभवेत् । रसक्रियातूत्तमास्यात् त्रिविडङ्गमितामता ॥ मध्यमाद्विविडंगासा हीनात्वेक विडंगिका । शलाकास्नेहनेचूर्णे चतस्रःप्राहुरञ्जने ॥ रोपणेतासुतिस्रःस्युस्तेउभेलेखने स्मृते । मुखयोःकुञ्चिताश्लक्ष्णा शलाकाष्टांगुलोन्मिता ॥ अश्मजाधातुजावास्यात्कलायपरिमण्डला । अग्रेकलायवत्परिवर्त्तुला ॥ सुवर्णरजतोद्भूता शलाकास्नेहनेस्मृता । ताम्रलोहाश्मसञ्जाता शलाकालेखनेमता॥अंगुलीतुमृदुत्वेन रोपणेकथिताबुधैः८९५॥

अंजनकी विधि ॥

दोषके परिपाक होजाने पर यथा योग्य अंजन लगावे जिसबस्तु का अंजन लगाया जाताहै उसे अंजन कहतेहैं गोली रस तथा चूर्ण यह तीन प्रकारका अंजन होताहै यह उत्तरोत्तर हीन गुणहैं अंजन शलाका अथवा उंगलीके द्वारा लगाया जाताहै यह तीनों अंजन स्नेहन रोपण और लेखन भेद से तीन २ प्रकारकेहैं मधुर औषध तथा स्नेहके के द्वारा बनाहुआ अंजन स्नेहन कषाय तथा तिक्त औषधि तथा स्नेह के द्वारा बनाहुआ अंजन रोपण और तिक्त तथा खट्टी औषधि और क्षारके द्वारा बनाहुआ अंजन लेखन कहलाताहै तीक्ष्ण अंजनमें हरेणु (संभालूके बीज) के समान गोली मध्यम अंजनमें १॥ हरेणु के बराबर गोली और कोमल अंजनमें २ हरेणुके समान गोली बनानी चाहिये रसक्रिया में उत्तम मात्रा ३ बायबिड़ंगके समान मध्यम मात्रा दो बायबिड़ंगके समान और हीनमात्रा १ बायबिड़ंगके समान करनी चाहिये स्नेहन चूर्णकी चार सलाई रोपण चूर्णकी ३ सलाई और लेखन चूर्णकी २ सलाई लगानी चाहिये किनारोंपर सुकड़ीहुई आठ उंगलकी लम्बी चिकनी और मटरके समान गोल पत्थर अथवा धातुकी सलाई होनीचाहिये स्नेहन अंजनमें सोने अथवा चांदी की शलाका और लेखन अंजनमें तांबे लोहे अथवा पत्थरकी सलाका उचितहै रोपणअंजनमें कोमलताके कारण उंगलीही श्रेष्ठहै ॥ ८९५ ॥

अञ्जनेकेवलमपिशलाकाविशेषमाह ॥

त्रिफलाभृङ्गशुण्ठीनांरसैःशुद्धश्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तोनागःप्रतापितः । तच्छलाकाहरत्येवसकैलान्नेत्रजान्गदान् । दृष्टिप्रसादनीशलाका ॥ ८९६ ॥

अंजनमें केवल शलाका विशेषकावर्णन ॥

त्रिफला दालचीनी तथा सोंठकाकाढ़ा घी गोमूत्र सहत और बकरीकादूध इनसबमें बुझायेहुये सीस को ढिघलाकर बनाईहुई शलाकासम्पूर्ण नेत्ररोगोंको नष्टकरती है इतिदृष्टिप्रसादनीशलाका८९६॥

कृष्णभागादधःकुर्य्यात्यावत्नयनमञ्जनम् । हेमन्तेशिशिरेचापिमध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते ॥ पूर्वाह्णेवापराह्णेवाग्रीष्मेशरदि चेष्यते । वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसन्तेतुसदैवहि॥ प्रातःसायन्तुतत्कुर्य्यान्नचकुर्य्यात्सदैवहि । श्रान्तेप्ररुदितेभीतेपीतमद्येनवज्वरे ॥ अंजीर्णेवेगघातेचनाञ्जनंसम्प्रशस्यते ॥ ८९७ ॥

कृष्णमण्डलके नीचे नेत्रमण्डलभर में अंजन लगाना चाहिये हेमन्त तथा शिशिरऋतु में मध्याह्नके समयमें ग्रीष्म तथा शरदऋतु में पूर्व्वाह्ण अथवा अपराह्णकेसमय और बर्षाकालमें मेघरहित तथा बहुत उष्णता रहित समयमें और बसन्तमें सदैव अंजन लगानाचाहिये प्रातःकाल और सायंकालहीमें अंजन लगाना चाहिये सदैव नहीं थकेहुए रोयेहुए भीत मद्य पियेहुए नवीन ज्वर तथा अजीर्णयुक्त और मलमूत्रादिके बेगको रोकनेवाले पुरुषको अंजन नहीं हितकारी है ॥ ८९७ ॥

तत्रवटिकास्नेहनी यथा ॥

पथ्याक्षधात्रीबीजानिएकद्वित्रिगुणानिच । पिष्ट्वाम्बुनावटींकुर्य्यादञ्जनंहिहरेणुकम् । नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजंतथा ॥ ८९८ ॥

स्नेहनी बटी ॥

हड़के बीज १ भाग बहेड़े के बीज २ भाग और आमले के बीज ३ भाग इनको पानी में पीसकर दोहरेणुके समान गोलीबनावे इससे नेत्रस्राव और बातरक्तज पीड़ाका नाशहोताहै ॥ ८९८ ॥

अथरोपणी ॥

रसाञ्जनंहरिद्रेद्वेमालतीनिम्बपल्लवाः । गोशकृद्रससंयुक्तावटीनक्तान्ध्यनाशिनी ॥ एतस्याश्चाञ्जनेमात्राप्रोक्तासार्द्धहरेणुका ॥ ८९९ ॥

रोपणीवटी ॥

रसौत हल्दी दारुहल्दी चमेलीके फूल और नींबकी पत्ती इनसबको गोबरकेरस में पीसकर १ ॥ हरेणुकेसमान गोली बनावे इससे रतौंधीका नाशहोताहै ॥ ८९९ ॥

अथ लेखनी ॥

शङ्खनाभिर्विभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिला । पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम् ॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवटींकुर्य्याद्यवोन्मिताम् । हरेणुमात्रांसंघृष्यजलेनाञ्जनमाचरेत् ॥ तिमिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलमर्बुदम् । रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवटीचन्द्रोदयाजयेत् ॥ चंद्रोदयावटी ॥ ९०० ॥

लेखनीबटी ॥

शंखकी नाभि बहेड़ेकीमींगी हड़ मैनसिल पीपल मिर्च कूट और बच इनसबको बकरीके दूधमें पीसकर जौकी बराबर गोली बनावे फिर १ हरेणुके समान गोली पानीमें घिसकर नेत्रमें लगावे इससे तिमिर मांसवृद्धि काच पटल अर्बुद रतौंधी और बर्षभर का पुराना पुष्परोग नष्टहोता है इति चन्द्रोदयावटी ॥ ९०० ॥

पलाशपुष्पस्वरसैर्बहुशःपरिभावितम् । करञ्जबीजंतद्वर्त्तिर्दृष्टेःपुष्पंविनाशयेत् ॥ पुष्प हरीवर्त्तिः ॥ ९०१ ॥

ढाकके फूलके रसमें करंजुएके बीजोंको बारम्बार भावनादेकर बनाईगई बटी दृष्टिके पुष्परोगको नष्टकरतीहै इति पुष्पहरीवर्त्ति ॥ ९०१ ॥

अथ रसक्रियास्नेहनी यथा ॥

कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमञ्जयेत् । ईषत्कर्पूरसहितंतत्स्यान्नेत्रप्रसादनम् ९०२॥

स्नेहनी रस क्रिया ॥

निर्मलीको सहतमें घिसकर कुछ कपूर मिलाके अंजन लगानेसे नेत्रस्वच्छ होतेहैं ॥ ९०२ ॥

अथ रोपणी ॥

रसाञ्जनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिलाः । समुद्रफेनंलवणंगैरिकंमरिचंतथा ॥ एतत् समांशंमधुनापिष्टंप्रक्लिन्नवर्त्मनि । अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नंपक्ष्मणाञ्चप्ररोहणम् ॥ दुग्धेनकण्डूं क्षौद्रेणनेत्रस्रावञ्चसर्पिषा । पुष्पंतैलेनतिमिरंकाञ्जिकेननिशान्धताम् ॥ पुनर्नवाहरत्याशु भास्करस्तिमिरंयथा । वब्बूलदलनिःक्वाथोलेहीभूतस्तदञ्जनात् ॥ नेत्रस्रावोव्रजेच्छोषं मधुयुक्तान्नसंशयः ॥ ९०३ ॥ रोपणीरसक्रिया ॥

रसौत राल चमेलीके फूल मैनसिल समुद्रफेन सेंधानोन गेरू और मिर्च इनसबको सहत के साथ पीसकर प्रक्लिन्नवर्त्मनाम रोगमें अंजन लगानेसे क्लेद तथा खुजलीका नाशहोताहै और गिरी हुई बरौनियां फिर जमआतीहैं पुनर्नवाको दूधकेसाथ पीसकर अंजन लगानेसे खुजली सहतकेसाथ नेत्रस्राव घीकेसाथ पुष्प तेलके साथ तिमिर और कांजीकेसाथ पीसकर अंजनदेने से रतौंधीकानाश होताहै बबूलकी पत्तीके काढ़ेको अवलेहके समान गाढ़ा पकाकर सहत मिलायके अंजन लगाने से निस्सन्देह नेत्रस्रावका नाशहोताहै ॥ ९०३ ॥

अथ लेखनी ॥

वटक्षीरेणसंयुक्तोमुख्यंकर्पूरजोरजः । क्षिप्रमञ्जनतोहन्तिकुसुमंतुद्विमासिकम् । क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमञ्जनात् । अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्य्योदयादिव ॥ ९०४ ॥

लेखनीरसक्रिया ॥

कपूरके चूर्णको वरगदके दूधमें मिलाकर अंजनदेनेसे दोमहीनेका पुरानापुष्परोग शीघ्रही नष्टहोताहै सहत तथा घोड़ेकी लारकेसाथ मिर्चको घिसकर अंजनदेनेसे बहुत निद्राका नाशहोताहै ९०४॥

अथ चूर्णितं स्नेहनं यथा ॥

अग्नितप्तंहिसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः । सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तंविचूर्णितम्॥अञ्जयेत्तेननयनेप्रत्यहञ्चक्षुषोर्हितम्। सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः९०५

स्नेहनचूर्ण ॥

सुरमेको तपाकर त्रिफलेके रसमें और नारीके दूधमें सात२बार बुझावे फिरउसे पीसकर अंजन लगानेसे निस्सन्देह सम्पूर्ण नेत्ररोगोंका नाशहोताहै ॥ ९०५ ॥

अथ रोपणम् ॥

शिलायांरसकंपिष्ट्वासम्यगाप्लाव्यवारिणा। गृह्णीयात्तज्जलंसर्वंत्यजेच्चूर्णमधोगतम् शुष्कञ्चतज्जलंसर्वंपर्पटीसन्निभंभवेत्। विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः॥ कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशेननिःक्षिपेत्। अञ्जयेन्नयनेतेननेत्राखिलगदच्छिदः॥ ९०६॥

रोपण चूर्ण ॥

खपरियाको सिलपर पीसकर पानीमें भिजोवे फिर नीचे जमेहुए चूर्णको छोड़कर नितरा २ पानी लेवे जब वह जल सूखकर पपड़ीसा होजाय तो उसे त्रिफले के रसमें तीनवार भावना देवे फिर दशांश कपूर मिलाकर अंजन देनेसे संपूर्ण नेत्ररोगों का नाश होता है ॥ ९०६॥

अथ लेखनम् ॥

दक्षाण्डत्वक्शिलाकाचशङ्खचन्दनसैन्धवैः। चूर्णितैरञ्जनंप्रोक्तंपुष्पादीनांनिकृन्तनम्॥ ९०७॥

लेखन चूर्ण ॥

मुरगे के अण्डे का छिलका मैनसिल काच शंख चन्दन और सेंधानोन इन सबको पीसकर अंजन लगानेसे पुष्पादि रोगोंकानाश होताहै ॥ ९०७॥

अथ सामान्याञ्जनानि ॥

मुक्ताकर्पूरकाचागुरुमरिचकणासैन्धवंसैलवालं शुण्ठीकङ्कोलकांस्यत्रपुरजनिशिलाशङ्खनाभ्यभ्रतुत्थम्॥ दक्षाण्डत्वक्चसाक्षंक्षतजमथशिवाक्लीतकंराजवर्त्तं जातीपुष्पंतुलस्याःकुसुकमभिनवंबीजकंस्यात्तथैव॥ पूतीकनिम्बार्जुनभद्रमुस्तंसताम्रसारंरसगर्भयुक्तम्। प्रत्येकमेषांखलुमाषकैकंयत्नेनपिष्येन्मधुनातिसूक्ष्मम्॥ भवन्तिरोगानयनाश्रितायेनितान्तमात्रोपचिताश्चतेषाम्। विधीयतेशान्तिरवश्यमेवमुक्तादिनानेनमहाञ्जनेन। एलवालंएलवालकनाम्नाप्रसिद्धंकङ्कोलम्॥ सुगन्धद्रव्यंसुगन्धकोकिलेतिप्रसिद्धा तदलाभे जातीपुष्पंग्राह्यम। तस्याप्यलाभेलवङ्गंकांस्यंतच्चमारितंग्राह्यम्॥ त्रिपुरङ्गं तच्चमारितंग्राह्यम्। शिलामनःशिलाअभ्रमभ्रकंतच्चमारितंग्राह्यम्॥ दक्षाण्डत्वक्। दक्षःकुक्कुटःतस्याण्डत्वक्अक्षंविभीतकफलंक्षतजमत्रकुंकुमम्॥ शिवाहरीतकीक्लीतकंयष्ठीमधुराजवर्तंरावटीइतिलोके। पूतीकःघोराकरञ्जइतिलोकेअञ्जनंसुरमाइतिलोके ॥ भद्रमुस्तं नागरमुस्तंताम्रसारञ्च मारितंग्राह्यंरसगर्भरसाञ्जनम्। इतिमुक्तादिमहाञ्जनम् ॥९०८॥

सामान्य अंजन ॥

मोती कपूर काच अगर मिर्च पीपल सेंधानोन एलुआ सोंठ कंकोल कांसेकी भस्म बंगकी भस्म हल्दी मैनसिल शंखकी नाभि अभ्रक तूतिया मुरगे के अण्डे का छिलका बहेड़ा केसर हड़ मुलहठी रावटी चमेली के फूल तुलसी की नवीन मंजरी बिजयसार करंजुआ नींब सुरमा नागरमोथा तांबे की भस्म लोहेकी भस्म और रसौत इनसब को एक २ मासे लेकर सहत के साथ महीन पीसे इसके अंजन लगाने से बहुत बढ़ेहुए भी नेत्ररोगों का नाश होताहै इति मुक्तादिमहांजन ॥ ९०८॥

कणासलवणोषणासहरसाञ्जनासाञ्जना। सरित्पतिकफःसितासितपुनर्नवासम्भवा ॥

रजन्यंरुणचन्दनंमधुचतुत्थपथ्याशिला । अरिष्टदलसावरस्फटिकशङ्खनाभीन्दवः ॥ इमानितुविचूर्णयेन्निविडवाससाशोधयेत् । तथायसिविमर्दयेत्समधुताम्रखण्डेनतत् ॥ इदंमुनिभिरीरितंनयनशोणनामाऽञ्जनम् । करोतितिमिरक्षयंपटलपुष्पनाशंबलात् ॥ लवणंसैन्धवंअञ्जनंसुरमासरित्पतिकफःसमुद्रफेनंशिलामनःशिलाशावरोलोध्रः स्फटिकःफुट्करीइन्दुःकर्पूरःतिमिरेनूतनकुसुमेनूतनपटलेच । इतिनयनशोणाञ्जनम् ६०६ ॥

पीपल सेंधानोन मिर्च रसौत सुरमा समुद्रफेन मिश्री श्वेत गदापूरना हल्दी लालचन्दन सहत तूतिया हड़ मैनसिल नींबकी पत्ती लोध फिटकरी शंखनाभि और कपूर इनसबको महीन पीसकर गाढे कपड़े में छानलेवे और लोहे के पात्रमें तांबेकी मोगरी से सहत मिलाकर घोटे इसके अंजन से तिमिर और नवीन पटल तथा पुष्प का नाश होताहै इति नयनशोणांजन ॥ ६०६ ॥

हरीतकीवचाकुष्ठंपिप्पलीमरिचानिच। विभीतकस्यमज्जाचशङ्खनाभिर्मनःशिला ॥ सर्वमेतत्समंकृत्वागव्यक्षीरेणपेषयेत् । नाशयेत्तिमिरंकण्डूपटलान्यर्बुदानिच ॥ अपित्रिवार्षिकंशुक्रमासेनैकेननाशयेत् । अधिकानिचमांसानिरात्रावन्धत्वमेवच ॥ चन्द्रोदयावटीपुष्पेतिमिरे ॥ ६१० ॥

हड़ बच कूट पीपल मिर्च बहेड़ेकी मींगी शंखनाभि और मैनसिल इनसबको गौके दूधमें महीन पीसे इसके अंजन से तिमिर खुजली पटल अर्बुद तीन वर्ष का पुराना शुक्र अधिमांस और रतौंधी इन सबका १ महीने में नाश होताहै इति चन्द्रोदयावटी ॥ ६१० ॥

रजनीनिम्बपत्राणिपिप्पलीमरिचानिच । विडङ्गभद्रमुस्तंचसप्तमीत्वभयास्मृता ॥ अजामूत्रेणसंपिष्यछायायांशोषयेद्वटीम् । वारिणातिमिरंहन्तिगोमूत्रेणतुपिष्टिकम् ॥ मधुनापटलंहन्तिनारीक्षीरेणपुष्पकम् । एषाचन्द्रप्रभावर्त्तिःस्वयंरुद्रेणनिर्मिता ॥ चन्द्रप्रभावर्त्तिः ॥ ६११ ॥

हल्दी नींबकी पत्ती पीपल मिर्च बायबिडंग नागरमोथा और हड़ इनसबको बकरीके मूत्र में पीसकर गोली बनाके छाया में सुखावे फिर इस गोलीको पानीमें घिसकर लगाने से तिमिर गोमूत्र में लगानेसे पिष्टक सहत के साथ पटल और नारी के दूधके साथ लगानेसे पुष्परोग का नाश होता है यह आप चन्द्रमा जीने कहाहै इति चन्द्रप्रभावर्ति ॥ ६११ ॥

कणाछागयकृन्मध्येपक्वातद्रसपेषिता । अचिराद्धन्तिनक्तान्ध्यंतद्वत्सक्षौद्रमूषणम् ६१२

पीपल अथवा मिर्चको बकरी के गोबर में रखकर पकावे फिर उसे बकरीके गोबर के रस में पीसकर सहत के साथ नेत्रोंमें लगाने से रतौंधी का नाश होताहै ॥ ६१२ ॥

त्रिफलायारसंप्रस्थंप्रस्थंभृङ्गरजस्यच। वृषस्यचरसंप्रस्थंशतावर्याश्चतत्समम् ॥ गुडूच्याआमलक्याश्चरसंछागीपयस्तथा । प्रस्थंप्रस्थंसमाहृत्यसर्वैरेभिर्घृतंपचेत् ॥ कल्कःकणासिताद्राक्षात्रिफलानीलमुत्पलम् । मधुकंक्षीरकाकोलीमधुपर्णीनिदिग्धिका ॥ तत्साधुसिद्धंविज्ञायशुभेभाण्डेनिधापयेत् । ऊर्ध्वंपानमधःपानंमध्येपानंचशस्यते ॥ यावन्तोनेत्ररोगाःस्युस्तान्पानादपकर्षति। सुरक्तेरक्तदुष्टेचरक्तेवाविश्रुतेतथा ॥ नक्तान्ध्येतिमि

रेकाचेनीलिकापटलार्बुदे। अभिष्यन्देऽधिमन्थेचपक्ष्मकोपेसुदारुणे ॥ नेत्ररोगेषुसर्वेषु दोषत्रयकृतेष्वपि। परंहितामिदंप्रोक्तंत्रिफलाद्यंमहाघृतम् ॥ भृङ्गरजः भृङ्गराजःक्षरिका कोल्याऽलाभेऽश्वगन्धामूलंग्राह्यम् मधुपर्णीअत्रयष्टीमधुचक्षुष्यत्वात् तदलाभेऽसामान्य यष्टीमधुतुल्यगुणत्वात्। इतित्रिफलाद्यंघृतम् ॥ ६१३ ॥

त्रिफले का रस भंगरे का रस अडूसे का रस सतावरका रस गुर्चका रस आमलेका रस और बकरी का दूध इनसब को चौंसठ२ तोले लेकर इनसब के साथ पीपल मिश्री दाख त्रिफला नीलोत्पल मुलहठी क्षीरकाकोली गिलोय और भटकटैया इनसबके कल्क के द्वारा घृतको विधिपूर्वक पाक करके उत्तम पात्र में रखलेवे इसको भोजनसे पहले बीच में तथा अन्त में पीने से दूषित रक्त रक्तस्राव रतौंधी तिमिर काच नील पटल अर्बुद अभिष्यन्द अधिमन्थ और पक्ष्मकोप आदि संपूर्ण नेत्ररोग तथा त्रिदोषज नेत्र रोग नष्ट होतेहैं इति त्रिफलादि घृत ॥ ६१३ ॥

शतमेकंहरीतक्याद्विगुणञ्चविभीतकम् । चतुर्गुणंत्वामलकंवृषमार्कवयोःसमम् ॥ चतुर्गुणोदकंदत्वाशनैर्मृद्वग्निनापचेत्। भागंचतुर्थंसंरक्ष्यक्काथंतमवतारयेत् ॥ शर्करा मधुकंद्राक्षामधुयष्टीनिदग्धिका। काकोलीक्षीरकाकोलीत्रिफलानागकेसरम् ॥ पिप्पली चन्दनंमुस्तंत्रायमाणातथोत्पलम्। घृतप्रस्थंसमंक्षीरंकल्कैरेतैःशनैःपचेत् ॥ हन्यात्स तिमिरंकाचंनक्तान्ध्यंशुक्रमेवच ॥ तथास्रावंचकण्डूञ्चश्वयथुंचकषायताम् ॥ कलुष त्वंचनेत्रस्यविन्दुर्मपटलानिच । बहुनात्रकिमुक्तेनसर्वान्नेत्रामयान्हरेत् ॥ यस्यचोपह ताद्दृष्टिःसूर्य्याग्निभ्यांप्रपश्यतः। तस्यैतद्भेषजंप्रोक्तंमुनिभिःपरमंहितम् ॥ मार्जितंदर्पणं यद्वत्परांनिर्मलतांव्रजेत्। तद्वदेतेनपीतेननेत्रंनिर्म्मलतामियात् ॥ वारिद्रोणद्वयंचात्रवृ षमार्कवयोस्तुले। काकोलीयुगलाऽलाभेऽश्वगन्धामूलंद्विगुणंग्राह्यम् ॥ इतिद्वितीयंत्रि फलाद्यंघृतम् ॥ ६१४ ॥

सौ १०० हर २०० बहेडे ४०० आमले और अडूसा तथा भंगरा सम भाग इनसब को चौगुने जल में मिलाकर मंदाग्नि में पाक करे चौथाई बाकी रहजाने पर काढ़े को उतारकर छान लेवे फिर काढ़े तथा ६४ तोले दूधके साथ ६४तोले घीको शक्कर मुलहठी दाख महुआ भटकटैया काकोली क्षीरकाकोली त्रिफला नागकेशर पीपल चन्दन मोथा त्रायमाणा और उत्पल इनके कल्कके द्वारा धीरे२ पाककरे इस घृत के सेवन से तिमिर काच रतौंधी शुक्र स्राव खुजली सूजन कषायता मलिनता बिन्दु अर्म तथा पटल आदिक संपूर्ण नेत्ररोग नष्ट होते हैं और सूर्य्य तथा अग्नि के देखने से बिगड़ीहुई दृष्टि को अत्यन्त हित होता है जिसप्रकार दर्पण धोनेसे अत्यन्त निर्मल होजाताहै उसी प्रकार इस घीके पीने से भी नेत्र निर्मल होजातेहैं इतिद्वितीयत्रिफलादि घृत ॥ ९१४ ॥

वासाविश्वामृतादार्वीरक्तचन्दनचित्रकैः। भूनिम्बनिम्बकटुकापटोलात्रिफलाम्बुदैः॥ नि शाकलिङ्गकुटजैःक्काथःसर्वाक्षिरोगहा। वैस्वर्य्यपीनसश्वासंकासंनाशयतिध्रुवम् ॥ इति वासकादिक्काथः। इतिनेत्ररोगाधिकारः ॥ ६१५ ॥

अडूसा सोंठ गिलोय दारुहल्दी लाल चन्दन चीता चिरायता नींब कुटकी परवल त्रिफला मोथा

हल्दी इन्द्रजौ और कुरैया इन सबका काढ़ा पीने से संपूर्ण नेत्ररोग स्वरभंग पीनस श्वास और खांसी का निस्सन्देह नाश होता है इति बालकादिक्काथ इति नेत्ररोगाधिकार समाप्त ॥ ९१५ ॥

अथ कर्णरोगाधिकारः। तत्रकर्णरोगानांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

कर्णशूलंकर्णनादःबाधिर्य्यंक्ष्वेडएवच।कर्णस्रावःकर्णकण्डूकर्णगूथस्तथैवच॥प्रतिनाहोजन्तुकर्णोविद्रधिर्विविधस्तथा। कर्णपाकःपूतिकर्णस्तथैवार्शश्चतुर्विधः॥तथार्बुदंसप्तविधंशोफश्चापिचतुर्विधः। एतेकर्णगतारोगाअष्टाविंशतिरीरिताः॥ ९१६ ॥

कर्णरोगका अधिकार। कर्णरोगों के नाम और संख्या ॥

कर्णशूल कर्णनाद बधिरता क्ष्वेड़ कर्णस्राव कर्णकंडू कर्णगूथ प्रतिनाह जन्तुकर्ण दो प्रकार की विद्रधि कर्णपाक पूतिकर्ण चारप्रकारके कर्णार्श सात प्रकार के कर्णार्बुद और चारप्रकार के कर्णशोथ यह अट्ठाईस २८ कर्ण रोगहैं ॥ ९१६ ॥

तेषुकर्णशूलस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

समीरणःश्रोत्रगतोन्यथाचरन्समन्ततःशूलमतीवकर्णयोः। करोतिदोषैश्चयथास्वमावृतःसकर्णशूलःकथितोदुराचरः ॥ अन्यथाचरन्समन्ततःप्रतिलोमञ्चरन्दोषैःपित्तकफरक्तैः रक्तस्यापिरुजादिकर्तृत्वेनदोषसाम्यात्दोषत्वमत्रयथास्वंआत्मीयनिदानकुपितैःअथवायथास्वमिति। शूलविशेषणंदुराचरःदुरुपचारः ॥ ९१७ ॥

कर्णशूलके संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

कानमें प्राप्तवायु उलटी चलतीहुई अपने कारणोंसे कुपित कफ पित्त तथा रुधिरकेद्वारा आच्छादित होकर कानमें सबओरको अत्यन्त शूलको करतीहै इसी दुस्साध्य रोगको कर्णशूल कहतेहैं ९१७

मूर्च्छाद्युपद्रवयोगात्कर्णशूलस्यासाध्यताञ्चाह ॥

मूर्च्छादाहोज्वरःकासःश्वासोऽथवमथुस्तथा। उपद्रवाःकर्णशूलेभवन्त्येतेमरिष्यतः॥ ९१८ ॥

कर्णशूलके असाध्य लक्षण ॥

मूर्च्छा दाह ज्वर खांसी श्वास तथा छर्द्दि इन उपद्रवोंसे युक्त कर्णशूलवाला नहींजीता है ९१८

कर्णनादस्यलक्षणमाह ॥

कर्णस्रोतस्थितेवातेशृणोतिविविधान्स्वनान्। भेरीमृदङ्गशङ्खानांकर्णनादःसउच्यते॥ भेरीमृदङ्गशङ्खादीनामित्युपलक्षणंतेनभृङ्गादिकृतशब्दानांग्रहणम्॥ ९१९ ॥

कर्णनादका लक्षण ॥

बायुको कानके स्रोत में स्थितहोनेपर भेरी मृदंग शंख तथा भौंरों आदिके नाना प्रकारके शब्द सुनाईदेते हैं इसेकर्णनाद कहतेहैं ९१९ ॥ बाधिर्य्यमाह ॥

यदाशब्दवहोवायुःश्रोतआवृत्यातिष्ठति।शुद्धश्लेष्मान्वितोवापिबाधिर्य्यंतेनजायते ९२०

बधिरताका लक्षण ॥

जबशब्दकी लेचलनेवाली बायु अकेली अथवा कफ सहित होकर कानके स्रोतको रोककर स्थित होतीहै तबसुनाई नहीं देता इसेबधिरता कहतेहैं ॥ ९२० ॥

असाध्यबाधिर्य्यमाह ॥

बाधिर्य्यंबालवृद्धोत्थंचिरोत्थञ्चविवर्जयेत् ॥ ६२१ ॥

बधिरताके असाध्यलक्षण ॥

बालक तथा वृद्धोंकी बधिरता और बहुत पुरानी बधिरता असाध्य होती है ॥ ९२१ ॥

क्ष्वेड़माह ॥

वायुःपित्तादिभिर्युक्तोवेणुघोषसमंस्वनम् । करोतिकर्णयोःक्ष्वेडंकर्णक्ष्वेडःसउच्यते ॥ क्ष्वेड़शब्दार्थंव्यनक्तिवेणुघोषसमंस्वनमितियतउक्तम् । क्ष्वेडनंवेणुघोषवत्इति । ननुकर्णनादकर्णक्ष्वेड़योःकोभेदःउच्यतेकर्णनादः केवलेनवातेनजायतेतत्रनानाशब्दांश्चशृणोतिकर्णक्ष्वेड़स्तुपित्तादियुक्तेनवातेनजन्यतेतत्रनियमेनवेणुघोषमेवशृणोतीतिभेदः ६२२

क्ष्वेडका लक्षण ॥

पित्तादि सहित बायुकानोंमें वंशीके समान शब्दको उत्पन्न करती है इसे कर्णक्ष्वेड़ कहते हैं कर्णनाद केवल बायुसे उत्पन्न होताहै तथा उसमें नानाप्रकार के शब्द होतेहैं और कर्णक्ष्वेड़ पित्तादियुक्त बायुसे उत्पन्न होताहै तथा इसमें केवल बंशीहीकासा शब्द होताहै यहीइनदोनोंमें भेद है ॥ ६२२ ॥

कर्णस्रावमाह ॥

शिरोऽभिघातादथवानिमज्जतोजलेप्रपातादथवापिविद्रधेः । स्रवेद्धिपूयंश्रवणोऽनिलार्दितःसकर्णसंस्रावइतिप्रकीर्त्तितः ॥ पूयइत्युपलक्षणम् । जलंरसञ्चस्रवेत्श्रवणशब्दो पुंलिङ्गेऽप्यस्ति ॥ ६२३ ॥

कर्णस्रावका लक्षण ॥

शिरमें चोट लगनेसे जलमें गोतामारनेसे वाबिद्रधिके पकनेसे कुपित बायुके द्वारा पीड़ितकानसे पीप जल तथा रसबहता है इसेकर्णस्राव कहते हैं ॥ ६२३ ॥

कर्णकण्डूमाह ॥

मारुतःकफसंयुक्तःकर्णेकण्डूंकरोतिहि ॥ ६२४ ॥

कर्णकंडूका लक्षण ॥

कफयुक्त बायुकानमें खुजलीको उत्पन्न करती है इसेकर्णकंडू कहते हैं ॥ ९२४ ॥

कर्णगूथमाह ॥

पित्तोष्मशोषितःश्लेष्माकुरुतेकर्णगूथकम्।कर्णेगूथयतेयस्मात्सकर्णगथोव्याधिः६२५॥

कर्णगूथका लक्षण ॥

पित्तकी ऊष्मासे सूखाहुआ कफ कानमें मैलको उत्पन्न करताहै इसे कर्णगूथ कहतेहैं ॥ ९२५ ॥

प्रतिनाहमाह ॥

सकर्णगूथोद्रवतांयदागतोविलायितोघ्राणमुखंप्रपद्यते । तदासकर्णप्रतिनाहसंज्ञितोभवेद्विकारःशिरसोऽर्द्धभेदकृत् ॥ घ्राणञ्चमुखञ्चघ्राणमुखम्एकत्वंद्वन्द्वेशिरसोऽर्द्धभेदकृत् अर्द्धावभेदकाख्यशिरोरोगकृत् ॥ ६२६ ॥

प्रतिनाहका लक्षण ॥

कानका मैल पतला होकर मुख तथा नासिकाके द्वारा जो निकलने लगताहै तब इसे कर्णप्रतिनाह कहतेहैं इसमें आधाशीशी होती है ॥ ९२६ ॥

कृमिकर्णमाह ॥

यदातुमूर्च्छन्त्यथवातुजन्तवःसृजन्त्यपत्यान्यथवापिमक्षिकाः । तदञ्जनत्वाच्छ्रवणोनिरुध्यतेभिषग्भिराद्यैःकृमिकर्णकोगदः ॥ तदञ्जनत्वात्कृमिलक्षणत्वात् । श्रवणेकृमिकर्णकोगदोनिरुध्यतइत्यन्वयः ॥ ९२७ ॥

कृमिकर्णका लक्षण ॥

जब कान में कीड़े उत्पन्न होवें अथवा मक्खियां बच्चे पैदाकरें इसरोगको कृमियों के लक्षण से कृमिकर्ण कहते हैं ॥ ९२७ ॥

पतङ्गादिषुकर्णप्रविष्टेषुलक्षणमाह ॥

पतगाःशतपद्मश्चकर्णेश्रोत्रंप्रविश्यहि । अरतिंव्याकुलत्वञ्चभृशंकुर्वन्तिवेदनाम् ॥ कर्णोनिस्तुद्यतेयस्यतथाफर्फरायते । कीटेचलतिरुक्तीव्रानिस्पन्देमन्दवेदना ॥ निस्पन्दःनिश्चलः ॥ ९२८ ॥

पतंगादिकोंके कानमें घुसजानेका लक्षण ॥

कानमें पतंग अथवा खनखजूरा घुसजानेसे बेचैनी व्याकुलता सूई गड़ने कीसी पीड़ा अत्यन्त पीड़ा और फरफराहट होती है कीड़ेके चलनेपर बहुतपीड़ा और कीड़ेके रुकजानेपर थोड़ीपीड़ा होती है ॥ ९२८ ॥

द्विविधंकर्णविद्रधिमाह ॥

क्षताभिघातप्रभवस्तुविद्रधिर्भवेत्तथादोषकृतोपरःपुनः । सरक्तपीतारुणमस्रमास्रवेत्प्रतोदधूमायनदाहचोषवान् ॥ क्षतप्रभवोऽभिघातप्रभवश्चतयोर्द्वयोरप्यागन्तुजत्वाद्वैक्यम् । अस्रंआस्रावमित्यर्थः ॥ ९२९ ॥

दोप्रकारकी कर्णविद्रधिके लक्षण ॥

घाव तथा चोट लगनेसे अथवा कुपितदोषोंके द्वारा कानमें विद्रधि होतीहै इसमें सूईगड़ने कीसी पीड़ा दाह ताप और रक्त पीत तथा अरुणवर्ण स्रावहोताहै इसेकर्णविद्रधि कहते हैं ॥ ९२९ ॥

कर्णपाकमाह ॥

कर्णपाकस्तुपित्तेनकोथविक्लेदकृद्भवेत् । कोथःपूतिभावः । विक्लेदःआर्द्रता ॥ ९३० ॥

कर्ण पाक का लक्षण ॥

पित्त के द्वारा कान में दुर्गंधि और गीलापन होने को कर्णपाक कहते हैं ॥ ९३० ॥

पूतिकर्णमाह ॥

कर्णविद्रधिपाकेनकर्णेवावारिपूरणात् । पूयंस्रवतियःपूतिःसज्ञेयःपूतिकर्णकः ॥ कर्णस्रावाद्भेदार्थमाह पूतीतिनियमेनपूतिर्यथास्यादेवंस्रवति ॥ ९३१ ॥

पूति कर्ण का लक्षण ॥

कर्ण बिद्रधि के पकजाने से अथवा कान में जल भरजाने से दुर्गन्धित पीप बहने लगतीहै इसे पूति कर्ण कहतेहैं ॥९३१॥

कर्णगतानांशोथार्बुदार्शसांलक्षणान्याह ॥

कर्णशोथार्बुदार्शांसिजानीयादुक्तलक्षणैः।कर्णशोथाश्चचत्वारोवातपित्तकफरक्तजाः। एवमर्शोऽपिचतुर्विधम्।अन्येषांशोथानामर्शसाञ्चार्शःसम्भवःआधारप्रभावात्।अर्बुदंसप्तविधंवातपित्तकफरक्तमांसमेदःशिराजम्।एतेकर्णरोगाअष्टाविंशतिःसुश्रुतोक्ताः९३२॥

कान में हुए शोथ अर्बुद और अर्श के लक्षण ॥

कान में हुए शोथ अर्बुद और अर्श के लक्षण इन्हीं रोगों के पहले कहे हुए लक्षणों के अनुसार जानने चाहिये कर्ण शोथ बातज पित्तज कफज और रक्तज इन भेदों से चारप्रकार के हैं और कर्णार्श भी इन्हीं भेदों से चारप्रकार का है कर्णार्बुद बातज पित्तज कफज रक्तज मांसज मेदोज और शिरोज इन भेदोंसे सात प्रकारकाहै यह २८ सुश्रुत के कहे हुए कर्ण रोगहैं ॥ ९३२ ॥

इदानींचरकोक्तंकर्णरोगचतुष्टयम्। वातपित्तकफसन्निपातकृतमाह ॥ ९३३ ॥

अब चरक के कहे हुए बातज पित्तज कफज और सन्निपातज इन भेदों से चारप्रकार के कर्ण रोग कहे जाते हैं ॥ ९३३॥

तत्रवातजमाह ॥

नादोऽतिरुक्कर्णतलेषुशोथःस्रावस्तनुश्चाश्रवणञ्चवातात् ॥ ९३४॥

बातज के लक्षण ॥

बातज कर्ण रोगमें नाद अत्यन्त पीड़ा कान के मैलका सूखना कुछ स्राव और बधिरता यहसब लक्षण होतेहैं ॥ ९३४॥

पित्तजमाह ॥

शोथःसरागोदरणंविदाहःसपूतिपीतश्रवणञ्चपित्तात् ॥ ९३५ ॥

पित्तज कर्णरोगके लक्षण ॥

पित्तज कर्णरोगमें शोथ रक्तबर्ण दाह फटना और दुर्गंधित तथा पीतबर्णस्राव होताहै ॥ ९३५ ॥

कफजमाह ॥

वैश्रुत्यकण्डूस्थिरशोथशुक्लःस्निग्धःस्रुतिःस्वल्परुजःकफाच्च । वैश्रुत्यंअन्यथाश्रवणम् ॥ ९३६ ॥

कफजकर्णरोगके लक्षण ॥

कफजकर्ण रोगमें औरका और सुनाईदेना खुजली स्थिर शोथ स्वेतबर्ण स्निग्ध स्राव और स्वल्प पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ ९३६ ॥

सन्निपातिकमाह ॥

सर्वाणिरूपाणिचसन्निपातेस्रावश्चतत्राधिकदोषवर्णः ॥ ९३७ ॥

सन्निपातजकर्णरोगका लक्षण ॥

सन्निपातज कर्णरोग में बातादि तीनोंदोषोंके लक्षण होते हैं और जो दोष अधिक होता है उसीके बर्णयुक्त स्रावहोता है ॥ ९३७ ॥

कर्णपाल्याःकर्णावयवत्वात्तद्विकारमप्यत्रैवाह तत्रसनिदानंपरिपोटकलक्षणमाह ॥
सौकुमार्य्याच्चिरोत्सृष्टेसहसैवातिवर्द्धिते।कर्णेशोथोभवेत्पाल्याःसरुजःपरिपोटवान् ॥
कृष्णारुणनिभस्तब्धःसवातात्परिपोटकः। परिपोटवान्मनाक्विदारुणवान् ॥ ९३८ ॥

कानके भंग होने के कारण कर्णपालीके रोगोंका यहीं परवर्णन करते हैं ॥

परिपोटक का निदान पूर्व्वक लक्षण ॥

क्रम से न बढ़ाकर एकाएकी बढ़ाने से कोमलता के कारण कर्ण पालीमें कृष्ण तथा अरुण वर्ण युक्त कठोर पीड़ा युक्त और कुछ फटाहुआ शोथ उत्पन्न होताहै इसे परिपोटक कहते हैं यह बात से होता है ॥ ९३८ ॥

उत्पातमाह ॥

गुर्वाभरणसंयोगात्ताड़नात्घर्षणादपि। शोथःपाल्यांभवेत्श्यावोदाहपाकरुजान्वितः ॥ रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पातःसगदःस्मृतः ॥ ९३९ ॥

उत्पात का लक्षण ॥

भारी आभूषण के पहरने से ताड़नसे अथवा रगड़ने से कर्णपाली में दाह पीड़ा तथा पाक युक्त और धुमैला अथवा रक्त वर्ण वाला शोथ उत्पन्न होताहै इस रोगको उत्पात कहते हैं यह रक्त पित्त से होता है ॥ ९३९ ॥

उन्मन्थकमाह ॥

कर्णंबलाद्वर्द्धयतःपाल्यांवायुःप्रकुप्यति। कफंसंगृह्यकुरुतेशोथंस्तब्धमवेदनम् ॥ उन्मन्थकःसकण्डूकोविकारःकफवातजः। अवेदनमीषद्वेदनम् ॥ ९४० ॥

उन्मन्थक का लक्षण ॥

बल पूर्व्वक कर्ण पालि (कानकीलौ) के बढ़ाने से कुपित वायु कफको लेकर कुछ पीड़ा सहित कठोर तथा खुजली युक्त शोथ को उत्पन्न करताहै इस रोगको उन्मन्थक कहतेहैं ॥ ९४० ॥

दुःखवर्द्धनमाह ॥

सम्वर्द्धमानेदुर्विद्धेकण्डूदाहरुजान्वितः। शोथोभवतिपाकश्चत्रिदोषोदुःखवर्द्धनः ॥ सम्वर्द्धमानेदुर्विद्धकर्णइतिशेषः ॥ ९४१ ॥

दुःख बर्धन का लक्षण ॥

बढ़ने के समय कानके अच्छेप्रकार न छिदनेपर खुजली दाह पीड़ा तथा पाक युक्त शोथ उत्पन्न होताहै इसे दुःख बर्धन कह हैं यहते त्रिदोषज है ॥ ९४१ ॥

परिलेहिनमाह ॥

कफासृक्कृमयःक्रुद्धाःसर्षपाभाविसारिणः।कुर्वन्तिपीड़िकांपाल्यांकण्डूदाहसमन्विताः ॥ कफासृक्कृमिसम्भूतःसविसर्पन्नितस्ततः। लिह्यात्सशष्कुलींपालींपरिलेहीचसस्मृतः ॥ सपीड़िकात्मकःपरिलेहिसंज्ञोगदःलिह्यात्निर्मांसीकुर्य्यात् ॥ ९४२ ॥

परिलेही का लक्षण ॥

कफ रुधिर तथा कृमि कुपित होकर कर्ण पालीमें सरसों के समान तथा फैलने वाली और पीली तथा दाह युक्त पिड़िका उत्पन्न करतेहैं यह रोग संपूर्ण कान में फैलजाताहै और कर्ण शष्कुली तथा पाली मांस रहित होजाती है इस रोग को परि लेही कहते हैं ॥ ९४२ ॥

कर्णरोगचिकित्सा ॥

कर्णशूलेकर्णनादेवाधिर्य्येक्ष्वेड़एवच। चतुर्ष्वपिचरोगेषुसामान्यंभेषजंस्मृतम् ॥ शृङ्गवेरंसहमधुसैन्धवंतैलमेवच। कदुष्णंकर्णयोर्धार्य्यमेतत्स्याद्वेदनापहम्॥ लशुनार्द्रकशिग्रूणांवारुण्यामूलकस्यच। कदल्याःस्वरसःश्रेष्ठःकदुष्णःकर्णपूरणे॥ वारुणीवरुणा९४३॥

कर्ण रोगकी चिकित्सा ॥

कर्णशूल कर्णनाद वधिरता और क्ष्वेड़ रोग की चिकित्सा सामान्य है अदरकका रस सहत सेंधानोन और तेल इनसबको कुछ गरम करके कान में भरने से पीड़ा का नाश होता है लहसन अदरक सहजन बरुणा की जड़ और केले के रस को कुछ गरम करके कान में भरना श्रेष्ठहै ॥ ९४३ ॥

अर्काङ्कुरानम्लपिष्टान्सतैललवणान्वितान् । संनिदध्यात्सुधाकाण्डेकोरितेमृत्स्नयावृते ॥ पुटपाकक्रमात्सिक्तंपीड़येदारसागमात्। सुखोष्णन्तद्रसंकर्णेप्रक्षिपेच्छूलशान्तये ॥ अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतमाज्येनलिप्तंशिखियोगतप्तम् । आपीड्यतस्याम्बुसुखोष्णमेवकर्णेनिषिक्तंहरतेहिशूलम् ॥ तीव्रशूलातुरेकर्णेसशब्देक्लेदवाहिनि । छागमूत्रंप्रशंसन्तिकोष्णंसैन्धवसंयुतम् ॥ तैलंश्वेतार्कमूलेनमन्देऽग्नौविधिनाकृतम् । हरेदाशुत्रिदोषोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥ हिंगुसैन्धवशुण्ठीभिस्तैलंसर्षपसम्भवम्। विपक्वंहरतेऽवश्यंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥ कर्णशूलेकर्णनादेवाधिर्य्येक्ष्वेडएवच । पूरणंकटुतैलेनहितंवातघ्नमौषधम् ॥ शिखरिक्षारजंवारितत्कृतकल्केनसाधितंतैलम् । अपहरतिकर्णनादंवाधिर्य्यंचापिपूरणतः ॥ शिखरीअपामार्गः ॥ ९४४ ॥

आकके अंकुरोंको कांजीके साथपीसकर तेल और सेंधानोन मिलाकर थूहरकी लकड़ी को कुरेदके भरे फिर कपड़ौटी करके विधि पूर्वक पुटपाककरै कुछ गरम २ इसरसको कानमें छोड़ने से कर्णकाशूल नष्टहोताहै आकके पीलेपत्तोंपर घी चुपड़कर अग्निमें सेके फिर उनका अर्क निकालकर कुछ गरम कानमें छोड़नेसे कानका शूल नष्टहोताहै अत्यन्त पीड़ा शब्द तथा क्लेदयुक्त कानमें सेंधानोन मिलाहुआ बकरेका मूत्र गरम २ छोड़े स्वेत आककीजड़के द्वारा मन्दाग्निमें पाककियेहुए तेलको कानमें भरनेसे त्रिदोषज कर्णशूल शीघ्रही नष्टहोताहै हींग सेंधानोन और सोंठ के द्वारा पाककियेहुए कडुए तेलको कानमें भरनेसे निस्सन्देह कर्णशूल नष्टहोता है कर्णशूल कर्णनाद वधिरता और क्ष्वेड़में कडुआ तेल भरना और बातघ्न औषधश्रेष्ठ है लटजीरेके खारकाजल और लटजीरेका खार इनके द्वारा पाककियेहुए तेलके भरनेसे कर्णनाद और वधिरताका नाशहोता है ॥ ९४४ ॥

गवांमूत्रेणविल्वानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् । सजलञ्चसदुग्धञ्चतद्बाधिर्य्यहरंपरम् ॥ क्षीरमत्रापिग्राह्यम् इतिविल्वतैलम् ॥ ९४५ ॥

गोमूत्रमें पीसेहुए बेलोंके द्वारा जल और दूधके साथपाककिया हुआ तेल वधिरताका अत्यन्त नाशकहै इतिबिल्व तैल ॥ ९४५ ॥

कर्णस्रावेपूतिकर्णेतथैवकृमिकर्णके । सामान्यंकर्म्मकुर्वीतयोगान्वैशेषिकानपि ॥ स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंवीजपूररसंक्षिपेत् । कर्णस्रावरुजोदाहास्तेनश्यन्तिनसंशयः ॥ आम्र

जम्बूप्रवालानिमधुकस्यवंटस्यच । एभिस्तुसाधितंतैलंपूतिकर्णगदंहरेत् ॥ जातीपत्ररसैस्तैलंविपक्कंपूतिकर्णजित् । पिष्टंरसाञ्जनंनार्य्याःक्षीरेणक्षौद्रसंयुतम् ॥ प्रशस्यते चिरोत्थेततस्रावकेपूतिकर्णके ॥ ९४६ ॥

कर्णस्राव पूतिकर्ण और कृमिकर्ण रोगमें सामान्य अथवा बिशेष चिकित्साभी करै बिजौरा नींबूके रसमें सज्जी मिल.कर कानमें भरनेसे कर्णस्राव पीड़ा तथा दाहका निस्सन्देह नाश होता है आंब जामन महुआ तथा बर्गद की कोंपलके द्वारा पाक कियाहुआ तेल पूतिकर्णको नष्टकरता है चमेली की पत्तियोंके द्वारा पाक कियाहुआ तेल पूतिकर्णका नाशकहै नारीके दूधके साथ पीसे हुए रसौतमें सहत मिलाकर कानमें भरनेसे पुराने कर्णस्राव और पूतिकर्णका नाशहोता है ॥ ९४६ ॥

कुष्ठहिंगुवचादारुशताह्वाविश्वसैन्धवैः । पूतिकर्णापहंतैलंवस्तमूत्रेणसाधितम् ॥ कुष्ठादितैलम् ॥ ९४७ ॥

कूट हींग बच देवदारु सौंफ सोंठ तथा सेंधे नोनके द्वारा बकरेके मूत्रके साथ पाककियाहुआ तेल पूतिकर्णको नष्ट करता है इति कुष्ठादि तैल ॥ ९४७ ॥

शम्बूकस्यतुमांसेनकटुतैलंविपाचयेत् । तस्यपूरणमात्रेणकर्णनाड़ीप्रशाम्यति ॥ चूर्णेनगन्धकशिलारजनीभवेनमुष्टंचशकेनकटुतैलपलाष्टकंतु । धत्तूरपत्ररसतुल्यमिदंविपक्कं नाड़ींजयेच्चिरभवामपिकर्णजाताम् ॥ मुष्टिःपलम् ॥ ९४८ ॥

घोंघे के मांसके द्वारा पाककियाहुआ कडुआतेल कानमें हुए नासूर को नष्ट करता है गन्धक मैनसिल और हल्दी इनके चारतोले चूर्णके द्वारा ३२ तोले कडुवे तेल को ३२ हीतोले धतूरे के पत्तोंके रसके द्वारा पाककरे इस तेल के कानमें छोड़नेसे कान में हुआ बहुत पुरानाभी नासूर नष्ट होताहै ॥ ९४८ ॥

कृमिकर्णविनाशायकृमिघ्नींकारयेत्क्रियाम् । वार्त्ताकधूमश्चाहितःसार्षपस्नेहएवच ॥ पूरणंहरितालेनगव्यमूत्रयुतेनच । धूपनेकर्णदौर्गन्ध्येगुग्गुलुःश्रेष्ठउच्यते ॥ चिकित्सा कर्णशोथानांतथाकर्णार्शसामपि । कर्णार्बुदानांकुर्वीतशोथार्शोर्बुदवद्भिषक् ॥ ९४९ ॥

कृमिकर्ण के नाशके लिये कृमिनाशक चिकित्सा करे वार्त्ताक धूम और कडुआ तैल इसमें हित है गोमूत्र में हरताल मिलाकर कानमें भरनेसे कृमिकर्णका नाश होताहै पूतिकर्ण में गूगलकी धूप देनीचाहिये कर्णशोथ कर्णार्श और कर्णार्बुदकी चिकित्सा शोथअर्श और अर्बुदके समानकरे ९४९ ॥

अथ कर्णपाली विकाराणांचिकित्सा ॥

पालीसंशोषणेकुर्याद्वातकर्णरुजःक्रियाम् । स्वेदयेद्यत्नतस्तांश्चस्विन्नांसंवर्द्धयेत्तिलैः ९५०

कर्णपाली रोगोंकी चिकित्सा ॥

कर्णपाली के सुखाने में बातज कर्णरोग की चिकित्सा करे और स्वेददेवे फिर तिलों के द्वारा बढ़ावे ॥ ९५० ॥

शतावरीवाजिगन्धापयस्यैरण्डबीजकैः । तैलंविपक्कंसक्षीरंपालींसंवर्द्धयेत्सुखम् ॥ पयस्यात्रक्षीरकाकोली । शतावरीतैलम् ॥ ९५१ ॥

सतावर असगन्ध क्षीरकाकोली और अरण्डके बीज इनके द्वारा दूधके साथ पाककिया हुआ तेल सुखपूर्व्वक कर्णपालीको बढ़ाताहै इतिसतावरीतैल ॥ ९५१ ॥

जीवनीयस्यकल्केनतैलंदुग्धेनपाचयेत् । चिकित्स्येत्तेनतैलेनहृत्वास्रंपरिपोटकम् ॥ शीतलेपैर्जलौकाभिरुपात्तंसमुपाचरेत् । हलिनीसुरसाभ्यांचगोधाकङ्कवसान्वितम् ॥ तैलञ्चपक्कमभ्यंगादुन्मन्थंनाशयेद्ध्रुवम् । दुःखवर्द्धनकंसिक्काजङ्काम्रविल्वपत्रजैः ॥ क्काथैस्तैलेनसुस्निग्धंतच्चूर्णैश्चावधूलयेत् । बहुशोगोमयैस्तप्तैःस्वेदितंपरिलेहितम् ॥ घनसारैःसमालिम्पेदजामूत्रेणकल्कितैः । कर्णरोगाधिकारः ॥ ९५२ ॥

जीवनीय गणके कल्क और दूधके द्वारा पाककियेहुए तेलको रुधिर निकलवाकर परिपोटकमें लगावे शीतललेप और जोंकोंके द्वारा उपात्तकी चिकित्साकरे करिहारी और तुलसी के कल्कके द्वारा गोह और केकड़ेकी चरबीके साथ पाककियेहुए तेलको लगानेसे उन्मन्थका निस्सन्देह नाशहोताहै दुःखवर्धनकमें जामन आम तथा बेलकेपत्तोंके क्काथकेद्वारा परिषेक करके तेल लगावे और तेल लगाके आम जामन तथा बेलके पत्तोंके चूर्णसे अधूराकरे परिलेही में गरम गोबरके द्वारा स्वेदनकर के गोमूत्रमें पीसेहुए कपूरको लगावे इतिकर्णरोगाधिकार समाप्त ॥ ९५२ ॥

अथ नासारोगाधिकारस्तत्रनासारोगाणांनामातिसंख्याञ्चाह ॥

आदौचपीनसःप्रोक्तःपूतिनाशस्ततःपरम् । नासापाकोऽत्रगणितःपूयशोणितमेवच॥ क्षवथुर्भ्रंशथुर्दीप्तिःप्रतीनाहःपरिस्रवः । नासाशोषःप्रतिश्यायाःपञ्चसप्तार्बुदानिच॥ चत्वार्य्यर्शांसिचत्वारःशोथाश्चत्वारितानिच । रक्तपित्तानिनासायांचतुस्त्रिंशद्भेदाःस्मृताः ९५३

नासिकाके रोगोंका अधिकार । नासिकारोगोंकेनाम और संख्या ॥

पीनस पूतिनाश नासापाक पूयशोणित क्षवथु भ्रंशथुदीप्ति प्रतीनाह परिस्राव नासाशोष पांचप्रकारके प्रतिश्याय सात अर्बुद चारअर्श चारशोथ और चार रक्त पित्त यह चौंतीसनासिका के रोगहैं॥९५३॥

तेषुपीनसस्य लक्षणमाह ॥

आनह्यतेशुष्यतियस्यनासाप्रक्लेदमायातितुधूप्यतेच । नवेत्तियोगन्धरसांश्चजन्तुर्जुष्टंव्यवस्येदिहपीनसेन ॥ आनह्यतेश्वासशोषितकफेनबध्यते अवरुध्यतइतियावत् प्रक्लेदंआर्द्रतांगच्छतीतियावत्।धूप्यतेसंताप्यतेगन्धरसान्गन्धान्सुरभीन्असुरभींश्च नवेत्तिनासायाम् आनद्धत्वंतत्रहेतुःतथारसान्मधुरादींश्चनवेत्ति । नासारोगारम्भक दोषेणरसनायाअपिदुष्टत्वात्व्यवस्येत् जानीयात्अपीनसपीनसौद्वावपिशब्दौस्तःअवाप्यो स्तमानद्धादित्वादिवेतिसूत्रेणविकल्पेनाकारलोपात् ॥ अनुक्तसंग्रहार्थमाह तंचानिलश्लेष्मभवंविकारंब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिंगम् । तंविकारंपीनसंप्रतिश्यायसमानलिंगं वातश्लैष्मिकप्रतिश्यायतुल्यलक्षणम् ॥ ९५४ ॥

पीनसका लक्षण ॥

जिस रोगमें नासिका श्वास के द्वारा सूखेहुए कफसे रुकजाय सूखी गीलीहोय तथा संताप युक्त

होय और गन्ध तथा रसोंका ज्ञान न रहै उसरोगको पीनस अथवा अपीनस कहते हैं इसरोगमें बात कफज प्रतिश्यायकेसे लक्षण होते हैं ६५४॥

पूतिनस्यमाह ॥

दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूलात्सन्दूषितोयस्यसमीरणस्तु। निरेतिपूतिर्मुखनासिकाभ्यां तंपूतिनस्यंप्रवदन्तिरोगम् ॥ दोषैःपित्तकफरक्तैःअत्ररक्तस्यापिदोषत्वंदोषसाहचर्यात् विदग्धैःदुष्टैःसन्दूषितः पूतिभावंनीतःपूतिनस्यंनासायांभवोनस्यःवायुःपूतिर्नस्योयत्रसपूतिनस्यःतम् ॥ ६५५ ॥

पूतिनस्यका लक्षण ॥

दूषित पित्त कफ और रक्तके द्वारा गले और तालुकी बायु दुर्गन्धित होकर मुख और नासिका से निकलतीहै इसरोगको पूतिनस्य कहते हैं ॥ ६५५ ॥

नासापाकमाह ॥

घ्राणाश्रितंपित्तमरूंषिकुर्य्याद्यस्मिन्विकारेबलवांश्चपाकः। तंनासिकापाकमितिव्यवस्येद्विक्लेदकोथावथवापियत्र ॥ विक्लेदआर्द्रताकोथःपूतिभावः ॥ ६५६ ॥

नासापाकका लक्षण ॥

जिसरोगमें नासिका स्थित पित्त बहुतसे व्रणोंको उत्पन्नकरे और उनव्रणोंसे पककर दुर्गन्धित क्लेद (पानी) निकले उसे नासापाक कहते हैं ॥ ६५६ ॥

पूयरक्तमाह ॥

दोषैर्विदग्धैरथवापिजन्तोर्ललाटदेशेऽभिहतस्यतैस्तैः। नासास्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रन्तंपूयरक्तंप्रवदन्तिरोगम् ॥ ६५७ ॥

पूयरक्तका लक्षण ॥

दूषित दोषोंके द्वारा अथवा माथेमें चोट लगनेके द्वारा नासिकासे रुधिर सहित पीपबहै इसे पूयरक्त कहते हैं ॥ ९५७ ॥

क्षवथुमाह ॥

घ्राणाश्रितेमर्मणिसम्प्रदुष्टोयस्यानिलोनासिकयानिरेति । कफानुजातोबहुशोऽतिशब्दस्तंरोगमाहुःक्षवथुंगदज्ञाः ॥ घ्राणाश्रितेमर्मणिशृङ्गाटकेदोषजक्षवथुमभिधाय ६५८

क्षवथुका लक्षण ॥

नासिकामें स्थित शृंगाटक नाम मर्म में दूषित वायु नासिका के द्वारा कफके साथ अत्यन्त शब्द के साथ बारंबार निकले इसे क्षवथु (छींक) कहते हैं ॥ ६५८ ॥

आगन्तुजंक्षवथुमाह ॥

तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतोवाभावान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा । सूत्रादिभिर्वातरुणास्थिमर्मण्युद्घट्टितेऽन्यःक्षवथुर्निरेति ॥ तीक्ष्णोपयोगाद्राजिकादिभक्षणात्अर्कनिरीक्षणात्सूर्य्यदर्शनात्तेनकफविलयनात्तरुणा स्थिनासावंशास्थिमर्मणिशृंगाटकेऽनेकत्वंअन्यः आगन्तुजः ॥ ६५९ ॥

आगन्तुज छींक लक्षण ॥

राई आदि तीक्ष्ण तथा कटु वस्तुओं के खाने से अथवा सूंघने से सूर्य्य के देखने से अथवा सूत्रादि के द्वारा नासिका में स्थित शृंगाटक नाम मर्म के रगड़नेसे आगन्तुज छींक आतीहै ॥ ६५९ ॥

भ्रंशथुमाह ॥

प्रभ्रंश्यतेनासिकयातुयस्यसान्द्रोविदग्धोलवणःकफस्तु । प्राक्सञ्चितोमूर्द्धनिपित्ततप्तंतंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरन्ति ॥ ६६० ॥

भ्रंशथुका लक्षण ॥

मस्तकके पित्तसे तप्त होने पर गाढ़ा दूषित तथा लवण रसयुक्त पूर्व संचित कफ नासिका से निकले इस रोगको भ्रंशथु कहते हैं ॥ ९६० ॥

दीप्तिमाह ॥

घ्राणोभृशंदाहसमन्वितेतुविनिःसरेद्धूमइवेहवायुः । नासाप्रदीप्तेवचयस्यजन्तोर्व्याधिन्तुतंदीप्तिमुदाहरन्ति ॥ प्रदीप्तेवप्रज्वलितेव ॥ ६६१ ॥

दीप्तिका लक्षण ॥

अत्यन्त दाह युक्त और जलती हुईसी नासिकासे धुएंके समान बायु निकले इसे दीप्तिरोग कहते हैं ॥ ९६१ ॥

प्रतिनाहमाह ॥

उच्छ्वासमार्गेन्तुकफःसवातोरुन्ध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम् ॥ ६६२ ॥

प्रतीनाहका लक्षण ॥

बायु सहित कफ नासिकाके छिद्र को रोके उसे प्रतीनाह कहतेहैं ॥ ६६२ ॥

स्रावमाह ॥

घ्राणाद्घनःपीतसितस्तनुर्वादोषःस्रवेत्स्रावमुदाहरेत्तम् ॥ ६६३ ॥

स्रावका लक्षण ॥

नासिकासे पीत अथवा श्वेतबर्ण और गाढ़ा अथवा पतलादोष निकले इसे स्रावकहते हैं ६६३ ॥

नासाशोषमाह ॥

घ्राणाश्रितेश्लेष्मणिमारुतेनपित्तेनगाढंपरिशोषितेच । कृच्छ्रात्श्वसित्यूर्ध्वमधश्चजन्तुर्यस्मिन्सनासापरिशोषउक्तः ॥ ६६४ ॥

नासाशोथका लक्षण ॥

नासिकामें स्थित कफके बायु और पित्तके द्वारा सूखजानेपर बहुत कष्टसे श्वास आवेजाय उसे नासाशोथ कहते हैं ॥ ६६४ ॥

अथ प्रतिश्यायमाह ॥

तस्यनिदानंद्विविधंएकंसद्योजनकंतत्प्रबलत्वेनापेक्षते,नक्रमंयत्उक्तम् । नकेवलंचयंप्राप्यदोषाःकुप्यन्तिदेहिनाम् ॥ अन्यदापिहिकुप्यन्तिहेतुबाहुल्यतोरणात् ॥ हेतुबाहुल्यतोरणात्हेतूनांबाहुल्येनत्वराकरणात् अपरञ्चयत्क्रमेणजनकचयादिक्रमोयथा

निदानात्सञ्चयःसञ्चयात्प्रकोपःप्रकोपात्प्रसरः प्रसरात्स्थानसंश्रयः ततोऽव्यक्तिःततो भेदइति ॥ ९६५ ॥ प्रतिश्यायका वर्णन ॥

प्रतिश्याय के निदान दोप्रकारके हैं एक सद्योजनक यह दोषोंकी प्रबलतासे क्रमकी अपेक्षा नहीं करता है क्योंकि कहागया है कि प्राणियोंकेदोष केवल इकट्ठे होकरही नहीं कुपितहोते किन्तु कारणोंकी अधिकता से शीघ्रता के कारण क्रमके विनाभी कुपित होतेहैं और दूसरा चयादि क्रमसे उत्पन्न करनेवाला चयादि क्रम यहहै जैसे कारणोंसे दोषोंका इकट्ठा होना इकट्ठे होनेसे कोप कोपसे फैलना फैलनेसे स्थानका ग्रहणकरना उससे फिर व्यक्तहोना और व्यक्तसे अलग२होना ॥ ९६५ ॥

तत्रप्रतिश्यायस्यसद्योजनकनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

सन्धारणाजीर्णरजोऽतिभाष्यक्रोधर्त्तुवैषम्यशिरोऽभितापैः । संजागरातिस्वपनाम्बुशीतावश्यायकैर्मैथुनवाष्पसेकैः ॥ संस्त्यानदोषैःशिरसिप्रवृद्धोवायुःप्रतिश्यायमुदीरयेत्तु । संधारणंमूत्रपुरीषधारणम् । रजोधूलिःतच्चनासाप्रविष्टंहेतुःऋतुवैषम्यंऋतुचर्य्याविपरीताचरणंशिरोऽभितापःशिरसोऽभितापोयेनधूपादिनासःअवश्यायस्तुषारः । वाष्पसेकोरोदनंसंस्त्यानदोषैःशिरसिसंहतकफे ॥ ९६६ ॥

प्रतिश्याय के शीघ्रही उत्पन्न करने वाले कारणों समेत सम्प्राप्ति ॥

मल मूत्रादि बेगों के रोकने से अजीर्ण से नासिका में धूल चले जानेसे बहुत बोलने से क्रोध से ऋतुचर्य्या के बिपरीत आचरणों से धूप आदि के द्वारा शिरके संतप्त होने से रात्रि में जागनेसे दिन में सोने से शीतल जल से पालेसे बहुत मैथुन से रोने से और शिर में कफके इकट्ठे होने से बढ़ीहुई बायु प्रतिश्यायको उत्पन्न करती है॥ ९६६ ॥

चयादिक्रमजनकनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

चयङ्गतामूर्द्धनिमारुतादयःपृथक्समस्ताश्चतथैवशोणितम् । प्रकोप्यमाणाविविधैःप्रकोपनैस्ततःप्रतिश्यायकराभवन्ति ॥ ९६७ ॥

प्रतिश्याय के चयादि क्रम से उत्पन्न करने वाले कारणों समेत संप्राप्ति ॥

अनेक कोपकारी आहारादि व्यवहार के सेवन से बातादि तीनों दोष अलग२ तथा मिलेहुए और रुधिर शिरमें इकट्ठे होकर और कुपित होकर प्रतिश्यायको उत्पन्न करते हैं ॥ ९६७ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

क्षयप्रवृत्तिःशिरसोऽभिपूर्णतास्तम्भोऽङ्गमर्दःपरिहृष्टरोमताः । उपद्रवाश्चाप्यपरेपृथग्विधानृणांप्रतिश्यायपुरःसराःस्मृताः ॥ शिरसोऽभिपूर्णताशिरसोभारेणेवव्याप्तिः अपरेपृथग्विधाःघ्राणधूमायनतालुविदरणनासामुखस्रावादयोविदेहोक्ताबोद्धव्याः ९६८ ॥

प्रतिश्यायके पूर्व्व रूप ॥

प्रतिश्याय होने से पहले छींक आना शिरका भराहुआ सा मालूम होना स्तब्धता शरीर में पीड़ा रोमांच नासिका से धुआं सा निकलना तालु दाह और नासिका तथा मुख से स्रावहोना इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥ ९६८ ॥

वातिकस्यप्रतिश्यायस्यलक्षणमाह ॥

आनद्धापिहितानासातनुस्रावप्रसेकिनी। गलताल्वोष्ठशोषश्चनिस्तोदःशङ्खयोस्तथा ॥ भवेत्स्वरोपघातश्चप्रतिश्यायेऽनिलात्मके। आनद्धास्तब्धाअपिहितानपिहिताअतएवतनुस्रावप्रसेकिनी ॥ ९६९ ॥

बातज प्रतिश्याय के लक्षण ॥

बातज प्रति श्याय में नासिका स्तब्ध खुलीहुई तथा कुछ पतले स्रावसे युक्त होतीहै गला तालु तथा ओष्ठ सूखतेहैं माथेकी हड्डियोंमें सूई गड़ने कीसी पीड़ा होती है बहुत छींकें आती हैं मुख बे रस होजाता है और स्वरभंग होता है ॥ ९६९ ॥

पैत्तिकमाह ॥

उष्णःसपीतकःस्रावोघ्राणात्स्रवतिपैत्तिके। कृशोऽतिपाण्डुःसन्तप्तोभवेदुष्णाभिपीड़ितः ॥ नासयातुसधूमाग्निंवमतीवसमानवः। सपीतकःईषत्पीतकः ॥ ९७० ॥

पित्तज प्रति श्यायके लक्षण ॥

पित्तज प्रति श्यायमें नासिका से उष्ण तथा कुछ पीतवर्ण स्राव होताहै रोगी कृश अत्यन्त पांडु वर्ण ताप युक्त तथा उष्णता से पीड़ित होताहै और नासिका से धूम सहित अग्निसी निकलतीहै ९७०

श्लैष्मिकमाह ॥

घ्राणात्कफकृतेश्वेतोकफःशीतःस्रवेद्बहु। शुक्लावभासःशूनाक्षोभवेद्गुरुशिरानरः ॥ गलताल्वोष्ठशिरसांकण्डूभिरतिपीड़ितः ॥ ९७१ ॥

कफज प्रतिश्यायके लक्षण ॥

कफज प्रतिश्यायमें श्वेत तथा शीतल बहुतसा कफ निकलताहै रोगीका वर्णशुक्ल नेत्रशोथयुक्त शिरभारी और गला तालु ओष्ठ तथा मस्तक अत्यन्त खुजलीयुक्त होतेहैं ॥ ९७१ ॥

सान्निपातिकमाह ॥

भूत्वाभूत्वाप्रतिश्यायोयोऽकस्मात्सन्निवर्त्तते। संपक्कोवाप्यपक्कोवासचसर्वभवःस्मृतः अत्रयद्यपिदोषत्रयलिंगानिनोक्तानितथापितानिज्ञेयानित्रिदोषजत्वात् अयमसाध्यः (अतएवाह) नृणांदुष्टःप्रतिश्यायःसर्वजश्चनसिद्ध्यति ॥ ९७२ ॥

सन्निपातजप्रतिश्यायके लक्षण ॥

जो प्रतिश्याय बारंबार उत्पन्न होकर अकस्मात् निवृत्त होजाय पकाहोय अथवा बेपकाहोय वह सन्निपातज है इसमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं यह असाध्य है इसीसे कहागयाहै कि दूषित और सन्निपातज प्रतिश्याय असाध्यहै ॥ ९७२ ॥

दुष्टप्रतिश्यायलक्षणमाह ॥

प्रक्लिद्यतेमुहुर्नासापुनश्चपरिशुष्यति। पुनरानह्यतेवापिपुनर्विवृयतेतथा ॥ निःश्वासोवापिदुर्गन्धोनरोगन्धान्नवेत्तिच। एवंदुष्टंप्रतिश्यायंजानीयात्कृच्छ्रसाधनम् ॥ आनह्यतेविबद्धाभवति विवृयतेआविवद्धास्यात् क्लेदशोषविबन्धासनैककालंभवन्तिकि

न्तुयदायदायद्यत्दोषाधिक्यंभवतितदातदातद्दोषकृतःससबोद्धव्यःइतिनविरोधः। कृच्छ्रसाधनंअसाध्यञ्च ॥ ९७३ ॥

दुष्टप्रतिश्यायके लक्षण ॥

दुष्टप्रतिश्यायमें नासिका बारंबार गीलीहोतीहै सूखतीहै खुलतीहै अथवा रुकजातीहै दुर्गन्धित श्वासआतीहै और गन्धिकाज्ञान नहीं रहता है यह असाध्यहै॥ ९७३ ॥

रक्तजमाह ॥

रक्तजेतुप्रतिश्यायेरक्तस्रावःप्रवर्त्तते। पित्तप्रतिश्यायकृतैर्लिङ्गैश्चापिसमान्वितः ॥ ताम्राक्षश्चभवेज्जन्तुरुरोघातप्रपीड़ितः। दुर्गन्धोच्छ्वासवक्रश्चगन्धानपिनवेत्तिसः ॥ उरोघातप्रपीड़ितःउरोघातेनवप्रपीड़ितः ॥ ९७४ ॥

रक्तजप्रतिश्यायके लक्षण ॥

रक्तजप्रतिश्यायमें नासिकासे रुधिरबहताहै नेत्रताम्रवर्ण होतेहैं उरोघातकीसी पीड़ाहोतीहै श्वास तथा मुखसे दुर्गन्धि आतीहै गंधकाज्ञान नहींरहता और पित्तजप्रतिश्यायके लक्षण होतेहैं ॥ ९७४ ॥

अप्रतीकारेणकालान्तरेएवसर्वेप्रतिश्यायाअसाध्याभवन्तीत्याह । सर्वेएवप्रतिश्यायाअसाध्याप्रतिकारिणः। दुष्टतांयान्तिकालेनतदासाध्याभवान्तिच ॥ ९७५ ॥

समयपर चिकित्सा नकरनेसे संपूर्णप्रतिश्याय कालपाकर दुष्टहोकर असाध्य होजातेहैं॥ ९७५ ॥

प्रतिश्यायेषु कृमयोभवन्तीत्याह ॥

मूर्च्छन्तिकृमयश्चात्रश्वेताःस्निग्धास्तथाणवः। कृमिजोयःशिरोरोगस्तुल्यंतेनात्रैलक्षणम् ॥ अत्रएषुप्रतिश्यायेषुकफजाएवकृमयोभवन्तीतिश्वेताःस्निग्धाश्च ॥ ९७६ ॥

प्रतिश्यायोंमें कृमिहोनेकावर्णन ॥

प्रतिश्यायों में श्वेत स्निग्ध तथा पतले कफज कृमि उत्पन्न होते हैं इसमें कृमिज शिरोरोग के लक्षण होते हैं ॥ ९७६ ॥

वृद्धाःप्रतिश्यायाअपरानपिविकारान्कुर्वन्तीत्याह। बाधिर्य्यमान्ध्यमघ्रत्वंघोरांश्चनयनामयान्। शोषाग्निमान्द्यकासांश्चवृद्धाःकुर्वन्तिपीनसाः॥घोरांश्चनयनामयान्इतिवचनेऽप्यान्ध्यग्रहणंपुनर्विशेषार्थेअघ्रत्वंनजिघ्रतीत्यघ्रस्तस्यभावोऽघ्रत्वम् ॥ ९७७ ॥

बढ़ेहुये प्रतिश्याय अन्यरोगोंकोभी उत्पन्न करतेहैं जैसे बधिरता अन्धता सूंघनेकीशक्तिका न रहना घोरनेत्र रोग शोष मंदाग्नि और खांसी यहसबरोग बढ़ेहुये प्रतिश्यायोंसे होतेहैं ॥ ९७७ ॥

चतुस्त्रिंशत्संख्यापूरणायाह ॥

अर्बुदंसप्तधाशोथाश्चत्वारोऽर्शश्चतुर्विधम्। चतुर्विधंरक्तपित्तमुक्तंघ्राणेऽपितद्विदुः ॥ अर्बुदानिसप्तवात पित्तश्लेष्मसन्निपातरक्तमांसमेदोजानिशोथाश्चत्वारोवातपित्तश्लेष्मसन्निपातजाः अर्शांसिचत्वारिवातपित्तश्लेष्मसन्निपातजानिरक्त पित्तानिचत्वारिवातपित्तश्लेष्मसान्निपातजानिएतानियथोक्तलिङ्गानिघ्राणेऽपिभवन्ति ॥ ९७८ ॥

नासिकाके चौंतीसरोगोंकी संख्याके पूर्णकरनेको कहतेहैं ॥

बातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज मांसज्ञ तथा मेदोज यह सात प्रकारके अर्बुद बात पित्त कफ तथा सन्निपातसे हुये चारप्रकारके शोथ बात पित्त कफ तथा सन्निपातसे हुये चारप्रकार के अर्श और बात पित्त कफ तथा सन्निपातसे हुये चारप्रकारके रक्तपित्त यह संपूर्ण रोग अपने २ लक्षणोंसे युक्त नासिकामें भी होते हैं ॥ ६७८ ॥

चिकित्साभेदात्पीनसस्यलक्षणमाह ॥

शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासास्रावस्तनुस्वरः । क्षामःष्ठीवतिचाभीक्ष्णमामपीनसलक्षणम् ॥ नासास्रावःतनुःस्वरःक्षामइत्यन्वयः ॥ ६७९ ॥

चिकित्साके भेदसे पीनसका लक्षण ॥

शिरका भारीपन अरुचि नासिकाका बहना स्वरभंग और बारंबार थूकना यह बेपकी हुई पीनसके लक्षण हैं ॥ ९७९ ॥

पक्वस्य पीन सस्य लक्षण माह ॥

आमलिंगान्वितःश्लेष्माघनःस्वेषुनिमज्जति । स्वरवर्णविशुद्धिश्चपक्वपीनसलक्षणम् ॥ आमलिंगान्वितःश्लेष्माआमलिङ्गैःशिरोगुरुत्वादिभिर्युक्तःपश्चात्घनःनिविड़ःअथवा स्वेषुनासारन्ध्रेषुनिमज्जातिसक्तोभवतिवर्णविशुद्धिःश्लेष्मणःप्रकृतवर्णता ॥ ६८० ॥

पक्वपीनसके लक्षण ॥

पहलेकहेहुये बेपकीहुई पीनसके लक्षणोंसे युक्त गाढ़ेकफका नासिकाके छिद्रोंमें लगना स्वरका ठीकहोना और कफका बर्णस्वाभाविक होना यह पकीहुई पीनसके लक्षणहैं ॥ ९८० ॥

अथ नासारोगाणांचिकित्सा ॥

सर्वेषुसर्वकालंपीनसरोगेषुजातमात्रेषु । मरिचंगुडेनदध्नाभुञ्जीतनरःसुखंलभते ॥ कट्फलंपौष्करंशृंगीव्योषंयासश्चकारवी । एषांचूर्णंकषायंवादद्यादार्द्रकजैरसैः ॥ पीनसस्वरभेदेचतमकेचहलीमके । सन्निपातेकफेकासेज्वरेश्वासेचशस्यते ॥ कलिंगाहिंगुमरिचलाक्षास्वरसकट्फलैः । कुष्टोग्राशिग्रुजंतुघ्नैरवपीड़ःप्रशस्यते ॥ पीनसादिषु ॥ ६८१ ॥

नासिकाके रोगोंकी चिकित्सा ॥

संपूर्ण पीनस रोगोंके उत्पन्न होतेही सदैव गुड़ तथा दहीके साथ मिर्चका चूर्ण खानेसे आनन्द होता है कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी त्रिकटु जवासा और कालाजीरा इनके चूर्ण अथवा काढ़ेको अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे पीनस स्वरभंग तमकश्वास हलीमक सन्निपातज तथा कफज खांसी ज्वर और श्वास का नाशहोताहै इन्द्रजौ हींग मिर्च लाख तुलसी कायफल कूट बच सहँजन और बायबिडंग इनसबको पीसकर नासलेनेसे पीनस आदिरोग नष्टहोते हैं ॥ ६८१ ॥

व्योषचित्रकतालीसतिन्तिड़ीकाम्लवेतसम् । सचव्याजाजितुल्यांशमेलात्वक्पत्रपादिकम् ॥ व्योषादिकमिदंचूर्णपुराणगुडामिश्रितम् । पीनसश्वासकासघ्नंरुचिस्वरकरंपरम् (व्योषादिवटी) ६८२ ॥

त्रिकटु चीता तालीस इमली अमलवेत चव्य तथा कालाजीरा यह सब समभाग और इलायची तथा दालचीनी चतुर्थांश इनसब के चूर्ण में पुराना गुड़ मिलाकर खानेसे पीनस श्वास खांसी अरुचि तथा स्वरभंगका नाश होताहै इति व्योषादि बटी ॥ ९८२ ॥

व्याघ्रीदन्तीवचाशिग्रुसुरसाव्योषासन्धुजैः। सिद्धंतैलंनासिक्षिप्तंपूतिनासागदापहम्। व्याघ्रीतैलम् ॥ ९८३ ॥

भटकटैया जमालगोटेकी जड़ बच सहजन तुलसी त्रिकटु सेंधानोन इनके कल्क के द्वारा पाक किये हुए तेलकी नास लेने से पूतिनासा नाम रोगका नाश होताहै इति व्याघ्री तैल ॥ ९८३ ॥

शिग्रुसिंहीनिकुम्भानां वीजैःसव्योषसैन्धवैः। विल्वपत्ररसैःसिद्धं तैलंस्यात्पूतिनस्य नुत् ॥ निकुम्भीदन्तीपूतिनस्यनुत्नस्यात् । शिग्रुतैलम् ॥ ९८४ ॥

सहजन भटकटैया जमालगोटे के बीज त्रिकटु और सेंधानोन इनके द्वारा बिल्वपत्रके रसके साथ पाक किये हुए तेलकी नास लेने से पूतिनस्यका नाश होता है इति शिग्रु तैल ॥ ९८४ ॥

घृतगुग्गुलुमिश्रस्यसिक्थकस्यप्रयत्नतः। धूमंक्षयथुरोगघ्नंभ्रंशथुघ्नञ्चनिर्दिशेत् ॥ शुंठीकुष्ठकणाविल्वद्राक्षाकल्ककषायवत्। तैलंपक्कमथाज्यंवानस्यात्क्षयथुनाशनम् ९८५

घी गूगल और मोम इनको मिलाकर यत्न पूर्वक धूम लेने से छींक और भ्रंशथुका नाश होताहै सोंठ कूट पीपल बेल तथा दाखके कल्क और काढ़े के द्वारा पाक किये हुए तेल अथवा घीके सूंघने से छींकका नाश हाताहै ॥ ९८५ ॥

नस्यंहितंनिम्बरसाञ्जनाभ्यां दीप्तेशिरःस्वेदनमल्पशस्तु । नस्येकृतेक्षीरजलावसेकान् शंसन्तिभुञ्जीतचमुद्गयूषैः ॥ नासास्रावेघ्राणयोश्चूर्णमुक्तं नाड्यादेयंयेऽवपीड़ाश्चपथ्याः। तीक्ष्णान्धूमान्देवदार्वग्निकाभ्यां मांसंवाज्यंपथ्यमत्रादिशन्ति ॥ ९८६ ॥

दीप्तिरोगमें नींबतथा रसौत के द्वारा नास और अल्प स्वेदन लेकर और दूध तथा जलके द्वारा परिषेककरके मूंगके यूषके द्वारा भोजनकरे नासास्रावमें नलीके द्वारा दोनों नासापुटोंमें चूर्णछोड़े हितकारी नासलेवे और देवदारु तथा चीतेके द्वारा तीक्ष्ण धूमग्रहणकरे इसमें बकरेका मांसपथ्यहै ९८६

प्रतिश्यायेषुसर्वेषुगृहंवातविवर्जितम्। वस्त्रेणगुरुणातेनशिरसोवेष्टनंहितम् ॥ विड़ङ्गसैन्धवंहिंगु गुग्गुलुःसमनःशिलाः। वचैतच्चूर्णमाघ्रातं प्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥ घृततैलसमायुक्तं शक्तुधूमंपिवेन्नरः। सधूमःस्यात्प्रतिश्यायः कासाहिक्काहरःपरः ॥ प्रतिश्याये पिवेद्धूमं सर्वगन्धसमायुतम् । चातुर्जातकचूर्णंवा घ्रेयंवाकृष्णजीरकम् ॥ कृष्णजीरकमत्रकलौञ्जीपुटपक्कंजयापत्रंतैलसैन्धवसंयुतम्। प्रतिश्यायेषुसर्वेषुशीलितंपरमौषधम् ॥ जयाविजयाभङ्गेतियावत शीलितंभुक्तम्। पिप्पल्यःशीग्रुवीजानि विड़ङ्गमरिचानिच ॥ अवपीड़ःप्रशस्तोऽयंप्रतिश्यायनिवारणे। शिरसोऽभ्यञ्जनैःस्वेदैर्नस्यैर्मन्दोष्णभोजनैः ॥ वमनैर्घृतपानैश्च तान्यथास्वमुपाचरेत् ॥ ९८७ ॥

सम्पूर्ण प्रतिश्यायों में बात रहितगृह और भारी बस्त्रसे शिरका लपेटना हितहै बायबिडंग सेंधानोन हींग गूगल मैनसिल और बच इनसबके चूर्णके सूंघनेसे प्रतिश्यायका नाशहोताहै घी और तेल

से मिलेहुए सत्तुओंका धुआंपीनेसे प्रतिश्याय खांसी और हिचकी का नाशहोता है प्रतिश्यायमें सब गन्धका धुआं पिये अथवा दालचीनी इलायची तेजपात तथा नागकेसरको या कलौंजीके चूर्णको सूंघे तेल और सेंधेनोन समेत भंगको पुटपाककरके खानेसे सम्पूर्ण प्रतिश्यायों का नाशहोताहै पीपल सहजने के बीज बायबिड़ंग और मिर्च इनसबकी हुलास सूंघनेसे प्रतिश्यायका नाशहोताहै शिरोभ्यंग स्वेद नस्य अल्पतथा उष्ण भोजन बमन और घृतपान इनसबके द्वारा दोषों के अनुसार चिकित्साकरे ॥ ९८७ ॥

कृमिघ्नायेक्रमाःप्रोक्ताः तान्वैकृमिषुयोजयेत् । नावनानिकृमिघ्नानि भेषजानिचबुद्धिमान् ॥ रक्तपित्तानिशोथांश्च तथार्शांस्यर्बुदानिच । नासिकायांस्युरेतेषां स्वंस्वंकुर्याच्चिकित्सितम् ॥ गृहधूमकणादारु क्षारनक्ताङ्कसैन्धवैः । सिद्धंशिखरिबीजैश्च तैलंनासार्शसांहितम् । इतिनासारोगाधिकारः ॥ ९८८ ॥

कृमिनासारोगमें कृमिनाशक चिकित्सा करे और कृमिनाशक हुलास तथा औषध देवे रक्तपित्त शोथ अर्श और अर्बुद जो नासिकामें होयँ तो उन्हींके अधिकारमें कहीहुई चिकित्साकरे गृहधूम पीपल देवदारु जवाखार करंजुआ सेंधानोन और लटजीरेके बीज इनके द्वारा पाक किया हुआ तेल नासार्शकोहितहै इतिनासारोगाधिकार समाप्त ॥ ९८८ ॥

अथ मुखरोगाधिकारस्तत्रमुखस्यस्वरूपमाह ॥

ओष्ठौचदंतमूलानिदंतजिह्वाचतालुच । गलोमुखादिसकलंसप्ताङ्गंमुखमुच्यते ९८९॥

मुखके रोगों का अधिकार मुखकास्वरूप ॥

दो ओष्ट दांतोंकीजड़ दांत जिह्वा तालु और गलाइनसातों अंगोंको मिलाकर मुख कहतेहैं ॥ ९८९ ॥

अथ मुखरोगाणांसंख्यामाह ॥

स्युरष्टावोष्ठयोर्दन्तमूलेतुदशषट्तथा । दन्तेष्वष्टौचजिह्वायां पञ्चस्युर्नवतालुनि ॥ कण्ठेत्वष्टादशप्रोक्तास्त्रयःसर्वेषुचस्मृताः । एवंमुखामयाःसर्वेसप्तषष्टिर्मताबुधैः ९९० ॥

मुखकेरोगोंकी संख्या ॥

ओठोंमें ८ दंत मूलों में १६ दांतोंमें ८ जिह्वामें ५ तालुमें ९ कंठमें १८ और सम्पूर्ण मुखमें ३ इस प्रकारसे मुखरोग ६७ होते हैं ॥ ९९० ॥

मुखरोगाणांनिदानान्याह ॥

आनूपपिशितक्षारदधिमाषादिसेवनात् । मुखमध्येगदान्कुर्युःक्रुद्धादोषाःकफोत्तराः ९९१

मुख रोगोंके निदान ॥

अनूपमांस क्षार दही तथा उर्द आदिके सेवनसे कफ प्रधानतीनों दोष कुपित होकर मुख में रोगोंका उत्पन्न करते हैं ॥ ९९१ ॥

तत्रओष्ठरोगास्तेषांनिदानपूर्विकांसंख्याञ्चाह ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चरक्तजोमांसजस्तथा।मेदोजश्चाभिघातोत्थएवमष्टौष्ठजागदाः ९९२

ओष्ठरोगोंकी निदान पूर्व्वक संख्या ॥

बातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज मांसज मेदोज और अभिघातज यह आठ ओष्ठरोगहैं ९९२

तत्रवातिकस्य लक्षणमाह ॥

कर्कशौपरुषौस्तब्धौसंप्राप्तानिलवेदनौ। दाल्येतेपरिपाट्येतेओष्ठौमारुतकोपतः॥ परुषौरूक्षौदाल्येते विदार्येतेपरिपाट्येतेकिञ्चिद्विदीर्णत्वचौक्रियेते ॥ ९९३ ॥

बातज ओष्ठरोगका लक्षण ॥

बायुके कोपसे कर्कश रूखे स्तब्ध बातज पीड़ायुक्त और कुछ फटीहुई त्वचावाले ओष्ठ फटा करते हैं ॥ ९९३ ॥

पैत्तिकमाह ॥

चीयेतेपीड़िकाभिस्तुसरुजाभिःसमन्ततः। सदाहपाकपिड़िकौपीताभासौचपित्ततः॥ सरुजाभिःपैत्तिकरुगन्विताभिः ॥ ९९४ ॥

पित्तज ओष्ठरोग के लक्षण ॥

पित्तके कोपसे ओठोंमें दाह पाक पित्तजपीड़ा सहित सब ओरको पिड़िका होती हैं और वर्ण पीत होता है ॥ ९९४ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

सवर्णाभिस्तुचीयेतेपीड़िकाभिरवेदनौ॥कंडूमन्तौकफात्श्वेतौपिच्छिलौशीतलौगुरू ९९५

कफज ओष्ठरोगका लक्षण ॥

कफके कोपसे ओठोंमें शरीरके समान बर्णवाली पीड़ा रहित पिड़िका होती हैं और खुजली लसलसापन शीतलता तथा भारीपन होताहै ॥ ९९५ ॥

सन्निपातिकमाह ॥

सकृत्कृष्णौसकृत्पीतौसकृच्छ्वेतौतथैवच। सन्निपातेनविज्ञेयावनेकपिड़िकान्वितौ ९९६॥

सन्निपातज ओष्ठरोग के लक्षण ॥

त्रिदोषके कोपसे ओठोंमें कभी काली कभी पीली अथवा कभी श्वेत वर्ण पिड़िका होतीहैं॥९९६॥

रक्तजमाह ॥

खर्जूरफलवर्णाभिःपिड़िकाभिर्निपीड़ितौ । रक्तोपसृष्टौरुधिरंस्रवन्तौशोणितप्रभौ ॥ मांसजमाह । मांसदुष्टौगुरूस्थूलौमांसपिण्डवदुद्गतौ॥ जन्तवश्चात्रमूर्च्छन्तिनरस्यो भयतोमुखात् । जन्तवःकृमयःमूर्च्छन्तिवर्द्धन्तेमुखादुभयतःसृक्किण्योः ॥ ९९७ ॥

रक्तजओष्ठ रोगके लक्षण ॥

रक्तज ओष्ठरोगमें ओठोंपर खजूरके फलके वर्णकी समान पिड़िकाहोतीहैं ओठोंसे रुधिर बहता है और उनकावर्ण रुधिरके समान होजाताहै मांसके दूषित होनेपर दोनों ओठ मांस पिण्डके समान ऊंचे भारी तथा मोटे होजाते हैं और ओठोंके किनारोंमें कीड़े होजाते हैं ॥ ९९७ ॥

मेदोजमाह ॥

सर्पिर्मण्डप्रतीकाशौमेदसाकण्डुरौमृदु। स्वच्छस्फटिकसङ्काशमास्रवंस्रवतोभृशम् ९९८

मेदोज ओष्ठरोगके लक्षण ॥

मेदज ओष्ठरोग में ओष्ठ घी तथा मांड़के समान और खुजली युक्त तथा भारी होते हैं और इनसे स्वच्छ स्फटिक के समान बहुतसा जल निकलताहै ॥ ९९८ ॥

अभिघातजमाह ॥

क्षतजाभौविदीर्य्येतेपीड्येतेचाभिघाततः । मथितौचसमाख्यातावोष्ठौकण्डूसमन्वितौ ॥ मथितौमृदितावित्रअतएवक्षतजाभौरुधिराभावितिसंगतम् ॥ ९९९ ॥

अभिघातज ओष्ठरोगके लक्षण ॥

अभिघातज ओष्ठरोगमें ओष्ठ पीड़ायुक्त मलेहुएसे खुजली युक्त तथा रुधिर के समान होते हैं और फटते हैं ॥ ९९९ ॥

अथोष्ठ रोगाणांचिकित्सा ॥

गलदन्तमूलदशनच्छदेषुरोगाःकफास्त्रभूयिष्ठाः । तस्माद्देतेष्वसकृद्रुधिरंविस्रावयेदुष्णम् ॥ चतुर्विधेनस्नेहेनमधुच्छिष्टयुतेनच ।वातजेऽभ्यञ्जनंकुर्य्यान्नाडीस्वेदञ्चबुद्धिमान् ॥ चतुर्विधेनस्नेहेनतैलघृतवसामज्जारूपेण । वेधंशिराणांवमनंविरेकंतिक्तस्यपानंरसभोजनञ्च॥शीताःप्रदेहाःपरिषेचनञ्चपित्तोपसृष्टेष्वधरेषुकुर्य्यात् । शिरोविरेचनंधूमस्वेदःकवलएवच ॥० हृतेरक्तेप्रयोक्तव्यम्ओष्ठकोपेकफात्मके । मेदोजेशोधितेस्विन्नेस्वेदितेकवलोहितः ॥ प्रियंगुत्रिफलालोध्रंसक्षौद्रंप्रतिसारणम् ॥ १००० ॥

ओष्ठरोगोंकी चिकित्सा ॥

कण्ठ दन्तमूल और ओष्ठके रोगोंमें कफ तथा रुधिरकी अधिकता होतीहै इसलिये इनरोगोंमें से बारम्बार दूषित रुधिर निकलवावे बातज ओष्ठरोगमें तेल घी चरबी तथा मज्जाकेसाथ मोम मिला कर मले और नाड़ी स्वेददेवे पित्तज ओष्ठरोगमें शिरावेध बमन विरेचन तिक्तघृतपान मांसके रसका भोजन शीतललेप और परिषेककरे कफज ओष्ठरोगमें रुधिर निकलवाकर शिरोविरेचन धूम स्वेद और कवलका व्यवहारकरे मेदोज ओष्ठरोग में चीरकर मेद निकलवावे तथा स्वेद देवे इसके उपरान्त दागदेवे प्रियंगु त्रिफला लोध और सहतके द्वारा प्रतिसारण करे ॥ १००० ॥

प्रतिसारणस्य विधिमाह ॥

दंताजिह्वामुखानांयच्चूर्णकल्कावलेहकैः । शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम् १००१ ॥

प्रतिसारणकी विधि ॥

चूर्ण कल्क अथवा अवलेहके द्वारा दांत जिह्वा तथा मुखको धीरे२अंगुलीसे रगड़ने को प्रतिसारण कहते हैं ॥ १००१ ॥

ओष्ठरोगेष्वशेषेषुदृष्ट्वादोषमुपाचरेत्।तेषुव्रणत्वंजातेषुव्रणवत्समुपाचरेत् १००२ ॥

सम्पूर्ण ओष्ठरोगोंमें दोषके अनुसार चिकित्साकरे और घाव होजानेपर घावकी चिकित्साकरे १००२

अथ दन्तवेष्टरोगास्तत्रदन्तवेष्टरोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

शीतादोदन्तपुप्पुटकस्तथा। दन्तवेष्टःसौषिरश्चमहासौषिरएवच । ततःपरिदरःप्रोक्तस्ततस्तूपकुशःस्मृतः । वैदर्भश्चततःप्रोक्तःखलिवर्द्धनएवच ॥ अधिमांसकनामाचदन्तनाड्यश्चपञ्चच । दन्तविद्रधिरप्यत्रदन्तवेष्टेषषोडश ॥ १००३ ॥

दन्तमूल के रोग । दन्तमूलोंके रोगों के नाम और संख्या ॥

शीताद दन्तपुप्पुटक दन्तवेष्ट सौषिर महासौषिर परिदर उपकुश वैदर्भ खलिबर्द्धन अधिमांसक पांचप्रकारकी दन्तनाड़ी और दन्तविद्रधि यह १६ दन्तमूलरोग हैं ॥ १००३ ॥

तत्रशीतादस्यलक्षणमाह ॥

शोणितंदन्तवेष्टेभ्योयस्याकस्मात्प्रवर्त्तते। दुर्गन्धीनिसकृष्णानिप्रक्लेदीनिमृदूनिच ॥ दन्तमांसानिशीर्य्यन्तेपचन्तिचपरस्परम् । शीतादोनामसव्याधिःकफशोणितसम्भवः । दन्तवेष्टेभ्यःदन्तवेष्टनमांसेभ्यःअकस्मात्अभिघातंविनाशीर्य्यन्तेपतान्तिपचान्तिचपरस्परंपाकोष्मणामांसानिशोणितंपचन्ति ॥ १००४ ॥

शीतादका लक्षण ॥

जिस रोगमें चोटके बिना दांतों के मांससे रुधिर निकले और दन्तमांस दुर्गन्धित कृष्ण वर्ण क्लेद युक्त कोमल तथा परस्पर पाक युक्त होकर गिरे उसे शीताद कहतेहैं यह कफ और रुधिर से होताहै ॥ १००४ ॥

दन्तपुप्पुटमाह ॥

दन्तयोस्त्रिषुवाप्यत्रश्वयथुर्जायतेमहान् । दन्तपुप्पुटकोनामसव्याधिःकफरक्तजः १००५

दन्तपुप्पुटका लक्षण ॥

जिसरोगमें दो अथवा तीन दांतोंमें अत्यन्त शोथ उत्पन्नहो उसेदन्तपुप्पुट कहते हैं यह कफ और रुधिरसे होताहै ॥ १००५ ॥

दन्तवेष्टमाह ॥

स्रवन्तिपूयंरुधिरंचलादन्ताभवन्तिच । दन्तवेष्टःसविज्ञेयोदुष्टशोणितसम्भवः ॥ अत्रदन्तमूलानीतिकर्त्तृपदमध्याहरणीयम् ॥ १००६ ॥

दन्तवेष्ट के लक्षण ॥

दांत हिलने लगें और उनसे रुधिर तथा पीप बहै इसरोगको दन्तवेष्ट कहते हैं यह दूषित रुधिर से उत्पन्नहोता है ॥ १००६ ॥

सौषिरमाह ॥

श्वयथुर्दन्तमूलेषुरुजावान्कफवातजः। लालास्रावीकण्डुरश्चसज्ञेयःसौषिरोगदः १००७

सौषिरका लक्षण ॥

दन्तमूलोंमें पीड़ा तथा खुजली युक्त शोथ उत्पन्नहोवे और लार बहै इसरोगको सौषिर कहते हैं यह कफ और रुधिरसे होता है ॥ १००७ ॥

महासौषिरमाह ॥

दन्ताश्चलन्तिवेष्टेभ्यस्तालुचाप्यवदीर्य्यते । दन्तमांसानिपच्यन्तेमुखञ्चपरिपच्यते ॥ यस्मिन्ससर्वजोव्याधिर्महासौषिरसंज्ञकः । तालुचाप्यवदीर्यतेचकाराद्दन्तवेष्टःचाप्यवदीर्यतेसप्तरात्रान्मारकश्चायम् । यतआहभोजः ।महासौषिरइत्येषःसप्तरात्रान्निहन्त्यसूनिति ॥ १००८ ॥

महासौषिरका लक्षण ॥

दांत हिलने लगें तालु तथा दन्तमूल बिदीर्ण होजायँ और दन्तमांस तथा मुख पकजाय इसरोग

को महासौषिर कहते हैं यह सन्निपातज है भोज ने कहा है कि यह रोग सातदिनमें प्राणों को हर लेता है॥ १००८॥

परिदरमाह॥

दन्तमांसानिशीर्य्यन्तेयस्मिन्ष्ठीवतिचाप्यसृक्। पित्तासृक्कफजोव्याधिर्ज्ञेयःपरिदरोहिसः॥ १००९॥

परिदरका लक्षण॥

दांतोंका मांस गलजाय और थूकमें रुधिर निकले इसरोगको परिदर कहते हैं यह पित्त रुधिर तथा कफसे होता है॥ १००९॥

उपकुशमाह॥

वेष्टेषुदाहःपाकश्चताभ्यांदन्ताश्चलन्तिच। आघट्टिताःप्रस्रवन्तिशोणितंमन्दवेदनम्॥ आध्मायतेस्रुतेरक्तेमुखंपूतिचजायते। यस्मिन्नुपकुशःसस्यात्पित्तरक्तसमुद्भवः॥ आघट्टिताःघृष्टाः॥ १०१०॥

उपकुशका लक्षण॥

दांतों का मांस दाह तथा पाक युक्त होकर दांत हिलनेलगें रगड़ने से रुधिर निकले और रुधिर न निकलनेपर कुछ पीड़ा सहित शोथहोवे तथा मुख दुर्गन्धित होजाय इसरोगको उपकुश कहते हैं यह पित्त और रुधिरसे होताहै॥ १०१०॥

वैदर्भमाह॥

घृष्टेषुदन्तमूलेषुसंरम्भोजायतेमहान्। चलन्तिचरदायस्मिन्सवैदर्भोऽभिघातजः॥ संरम्भःशोथःचलन्तिचेतिचकाराद्वेदनादाहपाकाः॥ १०११॥

वैदर्भका लक्षण॥

दांतों के मांस में रगड़ने से अत्यन्त शोथ होवे और दांत हिलने लगें और पीड़ा दाह तथा पाक उत्पन्नहोय इस रोगको वैदर्भ कहते हैं यह अभिघातज है॥ १०११॥

खलिवर्द्धनमाह॥

मारुतेनाधिकोदन्तोजायतेतीव्रवेदनः। खलिवर्द्धनसंज्ञोऽसौसञ्जातेरुक्प्रशाम्यति सञ्जाते दन्ते॥ १०१२॥

खलिवर्धन का लक्षण॥

वायु के द्वारा अत्यन्त पीड़ा सहित दांत उत्पन्न होता है और दांत निकलआनेपर पीड़ा शान्तहो जाती है इसे खलिवर्धन कहते हैं॥ १०१२॥

अधिमांसकमाह॥

हानव्येपश्चिमेदन्तेमहाशोथोमहारुजः। लालास्रावीकफकृतोविज्ञेयःसोऽधिमांसकः॥ हानव्येहनुभवेपश्चिमेदन्तेअन्त्यजे॥ १०१३॥

अधिमांसक का लक्षण॥

जावड़े के पिछले दांत में अत्यन्त शोथ तथा अत्यन्त पीड़ा होती है और लार बहती है इसे अधिमांसक कहते हैं यह कफसे होता है॥ १०१३॥

पञ्चदन्तनाडीराह॥

दन्तमूलगतानाड्यःपञ्चज्ञेयायथेरिताः। यथानाडीव्रणेवातापित्तकफसन्निपातागंनिमित्ताःपञ्चनाड्यःकथितास्तथात्रापीत्यर्थः॥ १०१४॥

पांचदन्त नाड़ियोंका लक्षण ॥

नाड़ीव्रण में जिसप्रकार बातज पित्तज कफज सन्निपातजं और आगन्तुज पांच प्रकारकी नाड़ी कहीगई हैं दन्तमूलों में भी उसीप्रकार के लक्षणों समेत बातजआदिक नाड़ी होती हैं ॥ १०१४ ॥

दन्तविद्रधिमाह ॥

दन्तमांसमलैःसास्रैर्बाह्यतःश्वयथुर्महान्। सदाहरुक्स्रवेद्भिन्नःपूयास्रंदन्तविद्रधिः ॥ दन्तमांसमलैःदन्तवेष्टगतदोषैःसास्रैःसरक्तैःहेतुभिः ॥ १०१५ ॥

दन्तविद्रधिका लक्षण ॥

दन्तमांसों में स्थित दोष और रुधिर के द्वारा दांतों के बाहरीओर दाह तथा पीड़ायुक्त अत्यन्त शोथ होता है और फटकर उससे पीप तथा रुधिर बहता है इसे दन्त विद्रधि कहते हैं ॥ १०१५ ॥

अथ दन्तवेष्टरोगाणांचिकित्सा ॥

शीतादेहृतरक्तेतुतोयेनागरसर्षपान्। निःक्वाथ्यत्रिफलाञ्चापिकुर्य्याद्गण्डूषधारणम् ॥ कासीसलोध्रकृष्णामनःशिलाप्रियंगुतेजोह्वाः एषांचूर्णंमधुयुक्शीतादेपूतिमांसहरम् ॥ तेजोह्वातेजवल्कलइतिलोके। तैलंघृतंवावातघ्नंशीतादेसंप्रशस्यते। दन्तपुप्पुटकेकार्य्यंत रुणेरक्तमोक्षणम्। सपञ्चलवणक्षारःसक्षौद्रःप्रतिसारणम्। शिरोविरेकश्चहितोनस्यं स्निग्धञ्चभोजनम् ॥ विस्रावितेदन्तवेष्टेव्रणन्तुप्रतिसारयेत्। लोध्रपतंगमधुकलाक्षाचूर्णै र्मधूत्तमैः। प्रतिसारयेदंगुल्याघर्षयेत्। पतङ्गःचोकइतिलोके। गण्डूषेक्षीरिणोयोज्याः सक्षौद्रघृतशर्कराः। चलदन्तस्थिरकरंकार्य्यंवकुलचर्वणम् ॥ १०१६ ॥

दन्तमूल के रोगों की चिकित्सा ॥

शीताद रोगमें रुधिर निकलवाकर सोंठ सरसों तथा त्रिफला के काढ़े से कुल्लेकरे कसीस लोध पीपल मैनसिल गोंदी और तेजवल्कल इनके चूर्णको सहत में मिलाकर सेवनसे शीताद में दुर्गंधित मांसका नाश होताहै बातघ्न तैल अथवा घी शीताद में श्रेष्ठहै नवीन दन्त पुप्पुटकमें रुधिर निकल वाना चाहिये पांचों नोन तथा जवाखार को सहत में मिलाकर प्रतिसारण (रगड़े) करे अथवा शिरो विरेचन नस्य और स्निग्ध भोजन हितकारी है दन्तवेष्टमें रुधिर निकलवाकर लोध चोक मुलहठी और लाख इनके चूर्ण को सहत में मिलाकर उंगली से घावों में रगड़े दूधवाले वृक्षों के काढ़े में सहत घी तथा शक्कर मिलाकर कुल्लेकरने से हिलते हुए दांत दृढ़ होजाते हैं मोमसिरी के चावने से दांत दृढ़ होते हैं ॥ १०१६ ॥

भद्रमुस्ताभयाव्योषविड़ङ्गारिष्टपल्लवैः। गोमूत्रपिष्टैर्गुटिकांछायाशुष्कांप्रकल्पयेत् ॥ तांनिधायमुखेसुप्याच्चलदन्तातुरोनरः। नातःपरतरंकिञ्चिच्चलदन्तस्यभेषजम् ॥ मुस्तादिवटिका ॥ १०१७ ॥

नागरमोथा हड़ त्रिकटु बायबिड़ंग और नींबकी पत्ती इन सबको गोमूत्र में पीसकर गोली बनाकर छाया में सुखावे एक गोलीको मुख में डालकर सोनेसे दांत दृढ़ होजाते हैं इससे उत्तम दांतों के हिलनेकी दूसरी औषध नहीं है इति मुस्तादि बटिका ॥ १०१७ ॥

तुलाघृतंनीलसदाचरन्तुद्रोणाम्भसासंश्रययेद्यथावत् । ततश्चतुर्भागरसेतुतैलं पचेच्छनैरर्द्धपलप्रमाणैः ॥ कल्कैरनन्ताखदिरेरिमेदजम्ब्वाम्रयष्टीमधुकोत्पलानाम् । तत्तैलमाज्यञ्चघृतंमुखेनस्थैर्य्यंद्विजानांविदधातिसद्यः ॥ नीलसदाचरःनीलपुष्पकटसरैयाअनन्तादुरालभातदलाभेयवासोग्राह्यःइरिमेदोदुर्गन्धखदिरः । सहचराद्यतैलम् ॥ १०१८ ॥

चारसौ तोले नीलीकटसरैया को १०२४ तोले जलमें पकावे चौथाई रहजानेपर उस काढ़ेके साथ जवासा कत्था दुर्गन्धित कत्था जामन आंब मुलहठी और नीलोत्पल इनके दो दो तोले कल्क के द्वारा पाक कियेहुये तेल अथवा घीको मुखमें रखनेसे दांत दृढ़होजातेहैं इति सहचर तैल १०१८॥

सौषिरेहृतरक्तेतुलोध्रमुस्तारसाञ्जनैः।सक्षौद्रैःशस्यतेलेपोगण्डूषेक्षीरिणोहिताः १०१९॥

सौषिर रोग में रुधिर निकलवाकर लोध मोथा तथा रसौत के चूर्णको सहत में मिलाकर लेप करना और दूधवाले वृक्षों के क्वाथसे कुल्ले करना हितहै ॥ १०१९ ॥

क्रियांपरिदरेकुर्य्याच्छीतादोक्तांविचक्षणः । संशोध्योभयतःकार्य्यंशिरश्चोपकुशेतथा ॥ काष्ठोदुम्बरिकापत्रैर्व्रणंविस्रावयेद्भिषक् । लवणैःक्षौद्रयुक्तैश्चसव्योषैःप्रतिसारयेत् ॥ शस्त्रेणोद्धृत्यवैदर्भेदन्तमूलानिशोधयेत् । ततःक्षारंप्रयुञ्जीतक्रियासर्वाश्चशीतलाः ॥ उद्धृत्याधिकंदन्तंतुततोऽग्निमवचारयेत् । कृमिदन्तकवच्चात्रविधिःकार्य्योविजानता ॥ इयंखलिवर्द्धनस्यचिकित्सा । छित्वाधिमांसंसक्षौद्रैरेतैश्चूर्णैरुपाचरेत् ॥ वचातेजोवतीपाठास्वर्जिकायावशूकजैः । तेजोवतीतेजोवल्कलःस्वर्णजीवन्तीच ॥ क्षौद्रद्वितीयाःपिप्पल्यःकवलेचात्रकीर्त्तिताः । पटोलनिम्बत्रिफलाकषायश्चात्रधावने ॥ नाडीव्रणहरंकर्म्मदन्तनाड़ीषुकारयेत् । यद्दन्तमध्येजायेतनाड़ीदन्तंतदुद्धरेत् ॥ छित्वामांसानिशस्त्रेणयदिनोपरिजोभवेत् । उद्धृत्यचदहेच्चापिक्षारेणज्वलनेनवा ॥ भिन्नस्युपेक्षितेदन्तहनुमस्थिगतिंध्रुवम् । समूलंदशनंतस्मादुद्धरेद्भग्नमस्थिच ॥ उद्धृतेतूत्तरेदन्तेशोणितंप्रस्रवेदति । रक्ताभिषेकात्पूर्वोक्ताघोरारोगाभवन्तिहि ॥ काणःसञ्जायतेजन्तुरर्दितंतस्य जायते । चलमप्युत्तरंदन्तमतोनैवोद्धरेद्भिषक् ॥ धावनंजातिमदनस्वादुकण्टकखादिरैः । कषायैरितिशेषःकषायैः ॥ १०२० ॥

परिदररोगमें शीताद रोगकीसी चिकित्साकरे और बमन विरेचन तथा शिरो विरेचनकरे उपकुशमें भी यहीरीति करनी चाहिये कठिया गूलरके पत्तोंके द्वारा रुधिर निकलवाकर त्रिकटु और सेंधेनोनको सहतमें मिलाकर घावोंमें रगड़ै बैदर्भरोगमें शस्त्र क्रिया करके दन्तमूलोंको शुद्धकरे फिरक्षारका प्रयोग करे और संपूर्ण शीतलक्रिया करे खलिबर्धन रोगमें अधिक दांतको उखाड़कर दागे और कृमिदन्तकरोगकीसी चिकित्साकरे अधिमांसरोगमें छेदन करके वच तेजबल्कल पाठा सज्जी तथा जवाखार इनके चूर्णको सहतमें मिलाकर लगावे पीपलको सहतमें मिलाकर मुखमें कवल रखना अथवा पर्वल नींब तथा त्रिफलाके काढ़ेसे धोना इसमें हितहै दन्तनाड़ियोंमें नासूरोंकी सी चिकित्साकरे जो दांतके ऊपर न होय तो जिसदांतमें नाड़ीहुई होवे उसदांतकेमांसकोकाटकर

दांतको उखाड़ले फिर क्षार अथवा अग्निके द्वारा दागे इसकी उपेक्षाकरनेसे जाबड़ेकीहड्डी पर्य्यन्त घाव होजाताहै इसीसे मूलसहित दांत और टूटीहड्डीको उखाड़लेवे ऊपरी दांतके उखाड़नेसे बहुत रुधिर बहता है और रुधिर बहनेसे पहले कहेहुये घोररोग उत्पन्न होतेहैं मनुष्य काणा होजाता है तथा अर्दितरोग उत्पन्नहोताहै इसलिये हिलतेहुये भी ऊपरी दांतको न उखाड़े चमेली धतूरा गोखुरू और कत्थेके काढ़ेसे धोना हितहै ॥ १०२० ॥

जातिमदनकण्टकीस्वादुकण्टकैः । मञ्जिष्ठालोध्रखदिरयष्ट्याह्वैश्चापियत्कृतम् ॥ तैलंयत्साधितंतत्तुहन्याद्दन्तगतांगतिम् । जात्यादिचतुष्टयस्यकषायेणमञ्जिष्ठादिचतुष्टयस्यचकषायेणतैलमिदंपचेत् ॥ जातीचम्बेलीइतिलोकेतस्याःपत्रंग्राह्यंमदनोधत्तूरस्तस्यापिपत्रमत्रग्राह्यंकण्टकीबड़ीकटैयातस्याः मूलंग्राह्यंस्वादुकण्टकोगोक्षुरस्तस्यपञ्चांगंग्राह्यम्। इतिजात्यादितैलम् ॥ १०२१ ॥

चमेलीकीपत्ती धतूरेकीपत्ती कुटकी गोखुरूका पंचांग मजीठ लोध कत्था और मुलहठी इनके काढ़ेके द्वारा पाककियाहुआ तेल दन्तनाड़ीको नष्टकरताहै इति जात्यादितैल ॥ १०२१ ॥

विद्रध्योक्तंविधिंयुक्तंविदध्याद्दन्तविद्रधौ। शस्त्रकर्म्मनरस्तत्रकुशलोनैवकारयेत्॥१०२२॥

दन्तविद्रधिमें विद्रधिरोगकीसी चिकित्साकरे परन्तु शस्त्रक्रियानहींकरे ॥ १०२२ ॥

अथ दन्तरोगास्तत्रदन्तरोगाणां नामानिसंख्याञ्चाह ॥

दालनःकथितःपूर्वं कृमिदन्तकएवच। प्रोक्तोभञ्जनकोदन्तहर्षोवैदन्तशर्करा ॥ कपालिकात्रकथिता श्यावदन्तकएवच । करालसंज्ञइत्यष्टौ दन्तरोगाःप्रकीर्त्तिताः॥ १०२३॥

दांतोंकेरोगदन्तरोगोंके नाम और संख्या ॥

दालनकृमि दन्तक भंजनक दन्तहर्ष दन्तशर्करा कपालिका श्यावदन्त और कराल यह आठ दन्त रोग हैं ॥ १०२३ ॥

तत्रदालनस्यलक्षणमाह ॥

दीर्यमाणेशिवरुजायत्रदन्तेषुजायते। दालनोनामसव्याधिःसदागतिनिमित्तजः १०२४॥

दालनका लक्षण ॥

जिसरोगमें बायुके कोपसे दांतोंमें फटनेकीसी पीड़ाहोवे उसेदालन कहते हैं ॥ १०२४ ॥

कृमिदन्तकमाह ॥

कृष्णश्छिद्रश्चलस्रावी ससंरम्भोमहारुजः । अनिमित्तरुजोवातात् सज्ञेयोकृमिदन्तकः ॥ संरम्भःदन्तमूलशोथयुक्तः तत्रैवस्रावीबोद्धव्यः अनिमित्तरुजअवघट्ट नादिनिमित्तंविनैवमहारुजावान् ॥ १०२५ ॥

कृमिदन्तकका लक्षण ॥

जिस रोग में बायुके कोपसे दांतों के मूल में शोथ तथा अत्यन्त पीड़ायुक्त और चोट आदिके बिनाही पीड़ावाला कृष्णवर्ण छिद्र उत्पन्न होवे और उस्से स्रावहोवे तथा दांत हिलने लगें उसे कृमिदन्तक कहते हैं ॥ १०२५ ॥

भञ्जनकमाह ॥

वक्त्रंवक्रंभवेद्यत्रदन्तभङ्गश्चजायते। कफवातकृतोव्याधिःसभञ्जनकसंज्ञकः १०२६॥

भंजनकका लक्षण ॥

दांतगिरपड़ें और मुखटेढ़ाहोजाय इस कफ बातज रोगकोभंजनक कहते हैं ॥ १०२६ ॥

दन्तहर्षमाह॥

शीतरूक्षप्रवाताम्ल स्पर्शानामसहाद्द्विजाः। तत्रस्युर्वातपित्ताभ्यां दन्तहर्षःस कीर्त्तितः॥ १०२७॥

दन्तहर्षका लक्षण॥

दांतोंमें शीतल रूखी तथा खट्टीबस्तु और बायुका स्पर्श असह्य होय इस बात पित्तजरोगको दन्तहर्ष कहते हैं॥ १०२७॥

दन्तशर्करामाह ॥

मलोदन्तगतोयस्तु कफश्चानिलशोषितः। शर्करेवखरस्पर्शा साज्ञेयादन्तशर्करा॥ (शर्करा सिकता)॥ १०२८॥

दन्तशर्कराका लक्षण ॥

दांतोंका मैल और कफ बायुके द्वारा सूखकर रेतके समान खुरखुरा होजाय उसे दन्तशर्करा कहते हैं॥ १०२८ ॥

कपालिकामाह ॥

कपालेष्विवदीर्य्यत्सुदन्तेषुसमलेषुच। कपालिकेतिविज्ञेया दन्तच्छिद्दन्तशर्करा॥ कपालानिमृण्मयघटादिखण्डानि तेष्विवसमलेषुदन्तेषु मलसहितदन्तावयवेषुदीर्य्यत्सु सत्सुयादन्तशर्करासाकपालिकेतिविज्ञेयासाकपालिकादन्तच्छित्दन्तनाशिनी॥१०२९॥

कपालिकाका लक्षण॥

मलयुक्त दांतोंमें मिट्टीके टूटेहुए खपरोंके समान जो दन्तशर्करा होती है उसे कपालिका कहते हैं इसमें दांत टूटजाते हैं॥ १०२९॥

श्यावदन्तकमाह॥

योसृङ्मिश्रेणपित्तेन दग्धोदन्तस्त्वशेषतः। श्यावतांनीलतांवापि गदःसश्यावदन्तकः॥ दग्धःदग्धइव॥ १०३०॥

श्यावदन्तकका लक्षण॥

रुधिर सहित पित्तके द्वारा जलेहुये से संपूर्ण दांतधुमैले अथवा नीले होजायँ इसरोगको श्याव दन्तक कहते हैं॥ १०३०॥

करालमाह॥

शनैःशनैःप्रकुरुते यत्रदन्ताश्रितोऽनिलः। करालान्विकटान्दन्तान् सकरालोनसिध्यति॥ करालान्भयानकान् अयंसुश्रुतेनोक्तःसंग्रहकारेण॥ १०३१॥

करालका लक्षण॥

जिस रोगमें दांतोंमें स्थितबायु धीरे २ दांतोंको भयानक और बिकट करतीहै उसे कराल कहते हैं यह असाध्य है॥ १०३१॥

अथ दन्तरोगाणांचिकित्सा॥

तैलंलाक्षारसंक्षीरं पृथक्प्रस्थमितंपचेत्। द्रव्यैःपलमितैरेतैः क्वाथैश्चापिचतुर्गुणैः॥

लोध्रकट्फलमञ्जिष्ठा पद्मकेशरपद्मकैः । चन्दनोत्पलयष्ट्याह्वैस्तत्तैलंवदनेधृतम् ॥ दालनंदन्तचाम्लंच दन्तमोक्षकपालिकाम् । शीतादंपूतिवक्त्रञ्च विरुचिंविरसास्यताम् ॥ हन्यादाशुगदानेतान् कुर्य्याद्दन्तानपिस्थिरान् । लाक्षादिकमिदंतैलं दन्तरोगेषुपूजितम्॥ लाक्षाद्यंतैलम् ॥ १०३२ ॥

दन्तरोगोंकी चिकित्सा ॥

लाख का रस ६४ तोले दूध ६४ तोले और लोध कायफल मजीठ कमलकी केसर पद्माक चन्दन उत्पल तथा मुलहठी चार २ तोले इनसब औषधियों का काढ़ा इनसब के साथ लोध आदि औषधियों के कल्क के द्वारा ६४ तोले तेलको पकावे इस तेलको मुख में रखने से दालन दन्तहर्ष दन्तमोक्ष कपालिका शीताद पूतिवक्र अरुचि तथा मुखकी विरसता का नाश होताहै और दांत दृढ़ होजातेहैं इति लाक्षाद्य तैल ॥ १०३२ ॥

जयेद्विस्रावणैःस्विन्नमचलंकृमिदन्तकम् । तथावपीडैर्वातघ्नैः स्नेहगण्डूषधारणैः ॥ भद्रदार्व्यादिवर्षाभू लेपैःस्निग्धैश्चभोजनैः । कृमिदन्तापहंकोष्णं हिंगुदन्तान्तरेस्थितम् वृहतीभूमिकदम्बंपञ्चांगुलकण्टकारिकाक्काथः । गण्डूषस्तैलयुतःकृमिदन्तकवेदनाशमनः ॥ नीलीवायसजंघाकटुतुम्बीमूलमेकैकम् । संचूर्ण्यदशनविधृतंदशनकृमिनाशनं प्राहुः ॥ स्नेहानांकवलाःकोष्णाःसर्पिषस्त्रैवृतस्यच । निर्यूहाश्चानिलघ्नानांदन्तहर्षप्रमर्दनाः ॥ त्रैवृतस्यसर्पिषःत्रिवृतापक्कस्यसर्पिषः कवलइत्यर्थः । स्नेहिकोऽत्रहितोधूमनस्यं स्नैहिकमेवच ॥ पेयारसयवाग्वश्च क्षीरसन्तानिकाघृतम् । शिरोवस्तिहितश्चापि क्रमोयश्चानिलापहः ॥ अत्रदन्तहर्ष । अच्छिद्रंदन्तमूलानि शर्करामुद्धरेद्भिषक् ॥ लाक्षाचूर्णैर्मधुयुतैस्ततस्तांप्रतिसारयेत् ॥ दन्तहर्षक्रियाञ्चात्रकुर्य्यान्निरवशेषतः । कपालिका कृच्छ्रतमातत्राप्येषाक्रियामता ॥ एषाक्रियादन्तहर्षक्रियाफलान्यम्लानिशीताम्बुरूक्षान्नं दन्तधावनम् । तथातिकठिनंभक्ष्यंदन्तरोगीनभक्षयेत् ॥ १०३३ ॥

कृमिदन्तक रोगमें स्वेद देकर दृढ़हुए दांतों से रुधिर निकलवावे बातघ्न नस्य तैलादि स्नेहों के कुल्ले देवदारु आदि गण अथवा पुनर्नवा का लेप और स्निग्ध भोजन इसमें हितहैं हींगको कुछ गरम करके दांतोंमें रखने से कृमिदन्तका नाश होताहै दोनों भटकटैया मुंडी और अरंड इनके काढ़े में तेल डालकर कुल्ले करने से कृमिदन्तक का नाश होताहै नीली काकजंघा और कड़वी लौकी इनमें से किसी की जड़के चूर्णको दांतोंमें रखने से कृमिदन्तका नाश होताहै कुछ गरम स्नेह निसोथ के द्वारा पाककिये हुए घी और वातघ्न औषधियों के काढ़े के द्वारा कवल ग्रहण करने से दन्तहर्ष रोगका नाश होताहै स्नेहों का धूम स्नेहोंकी नस्य पेया मांस रस दूध मलाई घी शिरोवस्ति और अन्य वातनाशक औषध दन्तहर्ष रोगमें हितहैं दन्त शर्करामें छिद्रोंको छोड़कर दन्त मूलोंकी शर्कराको छुड़ालें और फिर लाख के चूर्णको सहत में मिलाकर उँगली से रगड़े और दन्तहर्षकीसीही सब चिकित्सा करे कपालिका कष्टसाध्य हैं इसमें भी दन्तहर्ष कीसी चिकित्सा करे खट्टेफल शीतल जल रूखा अन्न दंतौन और बहुत कठिन भोजन दांतोंके रोगवाला त्यागदेवे ॥ १०३३ ॥

अथ जिह्वारोगाः । तत्रजिह्वारोगाणां निदाननामसंख्यामाह ॥

वातजापित्तजाचापिकफजोलाससंज्ञकः।उपजिह्विकाचगदाजिह्वायांपञ्चकीर्तिताः १०३४

जिह्वा के रोग । जिह्वा रोगोंके निदान नाम और संख्या ॥

बातज पित्तज कफज अलास और उपजिह्विका यह पांच रोग जिह्वाके हैं ॥ १०३४॥

तत्रवातजस्य लक्षणमाह ॥

जिह्वानिलेनस्फुटिताप्रसुप्ताभवेच्चशाकच्छदनप्रकाशा । स्फुटितामनाग्विदीर्णाप्रसुप्ता रसानामभिज्ञतयासुप्तेव ॥ शाकच्छदनप्रकाशाशाकोमरुभूमिजद्रुमस्तद्वत्कण्टकाचिता ॥ १०३५ ॥

बातज जिह्वा रोगका लक्षण ॥

बायु के कोपसे जिह्वा कुछ बिदीर्ण रस ज्ञानरहित और मरुभूमि में हुए बृक्ष के पत्ते के समान कंटकों से व्याप्त होती है ॥ १०३५ ॥

पित्तजमाह ॥

पित्तात्सदाहैरुपचीयतेचदीर्घैःसरक्तैरपिकण्टकैश्च ।अयंलोकेजलीइतिख्यातः १०३६

पित्तज जिह्वा रोगका लक्षण ॥

पित्तके कोपसे जिह्वापर दाह युक्त दीर्घ तथा रक्त बर्णके कांटे पड़जाते हैं इसरोगको लोकमें जली कहते हैं ॥ १०३६ ॥

कफजमाह ॥

कफेनगुर्वीबहुलाचिताचमांसोच्छ्रयैःशाल्मलिकण्टकाभैः । बहुत्वास्थूलामांसोच्छ्रयैः मांसजकण्टकैः ॥ १०३७ ॥

कफज जिह्वा रोगका लक्षण ॥

कफ के कोप से जिह्वा भारी तथा स्थूल होजातीहै और सेमर के कांटों के समान मांसके अंकुरों से व्याप्त होतीहै ॥ १०३७ ॥

अलासमाह ॥

जिह्वातलेयःश्वयथुःप्रगाढःसोऽलाससंज्ञःकफरक्तमूर्त्तिः । जिह्वांसतुस्तम्भयतिप्रवृद्धोमूलेचजिह्वाभृशमेतिपाकम् ॥ प्रगाढःप्रकर्षेणगाढोदारुणःकफरक्तमूर्त्तिःकफरक्ताभ्यां मूर्त्तिर्यस्यसःकफरक्तजइत्यर्थः । जिह्वास्तम्भेनवायुरप्यत्रबोद्धव्यःभृशम्पाकेनपित्तञ्च अतस्त्रिदोषजोऽयम्असाध्यत्वञ्चास्य ॥ १०३८ ॥

अलास का लक्षण ॥

जिह्वा में जो अत्यन्त शोथ उत्पन्न होताहै उसे अलास कहतेहैं इसके बढ़जाने से जिह्वास्तब्ध होजातीहै और जिह्वा मूल पकजाताहै यह रोग कफ तथा रुधिरसे उत्पन्नहोता है और इसमें स्तब्धता से बायु तथा बहुत पकने से पित्तभी जानना चाहिये इसलिये यह सन्निपातज है और असाध्यहै१०३८॥

उपजिह्विकामाह ॥

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुर्हिजिह्वामुन्नम्यजातःकफरक्तयोनिः । प्रसेककण्डूपरिदाहयुक्तः प्रकथ्यतेऽसावुपजिह्विकेतिजिह्वाग्ररूपःजिह्वाग्राकृतिः ॥ १०३९ ॥

उपजिह्विका का लक्षण ॥

जिह्वा के नीचे स्राव खुजली तथा दाह युक्त और जिह्वाके अग्रभाग के समान शोथ उत्पन्न होता है इसे उप जिह्विका कहते हैं यह कफ और रुधिर से होता है ॥ १०३९ ॥

अथ जिह्वारोगाणांचिकित्सा ॥

जिह्वागतविकाराणांशस्तंशोणितमोक्षणम् । गुडूचीपिप्पलीनिम्बकवलःकटुभिःसुखः ॥ ओष्ठप्रकोपेऽनिलजेयदुक्तंप्राक्चिकित्सितम् । कण्टकेष्वनिलोत्थेषुतत्कार्य्यंभिषजाखलु ॥ पित्तजेपरिघृष्टेतुनिःसृतेदुष्टशोणिते । प्रतिसारणगण्डूषनस्यञ्चमधुरंहितम् ॥ कण्टकेषुकफोत्थेषुलिखितेष्वसृजःक्षये । पिप्पल्यादिर्मधुयुतःकार्य्यस्तुप्रतिसारणे॥ उपजिह्वांतुसंलिख्यक्षारेणप्रतिसारयत् । शिरोविरेकगण्डूषधूमश्चैनामुपाचरेत् ॥ व्योषक्षाराभयावह्निचूर्णमेतत्प्रघर्षणम्।उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थमेभिस्तैलञ्चपाचयेत्॥१०४०॥

जिह्वा रोगों की चिकित्सा ॥

जिह्वाके रोगोंमें रुधिर निकलवाना श्रेष्ठहै गिलोय पीपल नींब तथा कडुवी औषधियों के क्काथ के द्वारा कुछ गरम कवलग्रहण करना चाहिये बातज ओष्ठ प्रकोप में जो चिकित्सा पहले कहीगई है वही बातज कंटकों में करनी चाहिये पित्तज जिह्वा रोग में रगड़कर दूषित रुधिर निकाले और मधुर औषधियों के द्वारा प्रतिसारण कुल्ले और नस्यको ग्रहण करे कफज कंटकों में रगड़कर रुधिर निकलवाके पिप्पल्यादि गणके चूर्ण को सहत में मिलाकर उंगलीसे रगड़े उपजिह्वा रोगमें रगड़कर जवाखार को उंगली से मलै शिरोबिरोचन कुल्ले तथा धूमसे इसकी चिकित्सा करे त्रिकटु जवाखार हड़ तथा चीता इनसबके चूर्णको मलनेसे अथवा इनके द्वारा पाककियेहुये तेलसे उपजिह्वा का नाश होता है ॥ १०४० ॥

अथ तालुरोगास्तत्रतालुरोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

गलशुण्डीतुण्डिकेर्य्यध्रूषकच्छपएवच । तालव्वर्बुदश्चकथितोमांससङ्घातएवच ॥ तालुपुप्पुटनामाचतालुशोषस्तथैवच। तालुपाकश्चकथितःतालुरोगाश्रमीनव १०४१॥

तालुरोगोंकी चिकित्सा तालुरोगोंके नाम और संख्या ॥

गलशुंडी तुंडिकेरी अध्रूश कच्छप ताल्वर्बुद मांससंघात तालुपुप्पुट तालुशोष और तालुपाक यह नवतालु रोग हैं ॥ १०४१ ॥

तत्रगलशुण्डीलक्षणमाह ॥

श्लेष्मासृग्भ्यांतालुमूलात्प्रवृद्धोदीर्घःशोथोध्मातवस्तिप्रकाशः । तृष्णाकासश्वासकृत्तंवदन्तिव्याधिंवैद्याःकण्ठशुण्डीतिनाम्ना ॥ ध्मातवस्तिप्रकाशःवातपूरितचर्मपुटतुल्यः ॥ १०४२ ॥

गलशुंडीका लक्षण ॥

कफ तथा रुधिर के द्वारा तालुमूल में लंबा और फूलीहुई कुप्पी के समान अत्यंत शोथ उत्पन्न होता है इसे गलशुंडीकहते हैं इसमें तृषा खांसी और श्वास होता है ॥ १०४२ ॥

तुण्डिकेरीमाह ॥

शोथस्थूलस्तोददाहप्रपाकीश्लेष्मासृग्भ्यांकीर्त्तितातुण्डिकेरी । तुण्डिकेरीवनकर्पासीफलंतत्तुल्या ॥ १०४३ ॥

तुंडिकेरीका लक्षण ॥

कफ तथा रुधिरके द्वारा सूई गड़नेकीसी पीड़ा दाह तथा पाकयुक्त और स्थूल वनके कपासके फलके समान शोथ तालुमें होताहै उसेतुंडिकेरी कहतेहैं ॥ १०४३ ॥

अध्रूषमाह ॥

शोथस्तब्धोलोहितः शोणितोत्थोज्ञेयोऽध्रूषः सज्वरस्तीव्ररुक्च ॥ १०४४ ॥

अध्रूशका लक्षण ॥

रुधिरके द्वारा तालुमें अत्यन्त पीड़ा युक्त स्तब्ध तथा रक्तवर्ण शोथ उत्पन्न होताहै उसे अध्रूश कहते हैं इसमें ज्वर आता है ॥१०४४॥ कच्छपमाह ॥

कूर्मोत्सन्नोवेदनोशीघ्रजन्मा रोगोज्ञेयःकच्छपः श्लेष्मणःस्यात । कूर्मोत्सन्नःमध्ये प्रोच्चःप्रान्तेनतः ॥ १०४५ ॥ कच्छपका लक्षण ॥

कफ के द्वारा तालु में पीड़ा रहित धीरे धीरे उत्पन्न होनेवाला और कछुए के समान बीच में ऊंचा तथा किनारों में नीचा शोथ उत्पन्न होता है इसे कच्छप कहते हैं ॥ १०४५ ॥

तालव्वर्बुदमाह ॥

पद्माकारंतालुमध्येतुशोथंविद्याद्रक्तादर्बुदंपित्तलिंगम् । पद्माकारंपद्मकर्णिकावत्केसरैरिवपार्श्वतोदीर्घमांसांकुरैर्वेष्टितम् ॥ १०४६ ॥

तालव्वर्बुदका लक्षण ॥

रुधिर के द्वारा तालु में कमल की कर्णिका के समान किनारोंपर दीर्घ मांसके अंकुरों से घिरा हुआ पहले कहेहुए रक्तार्बुद के लक्षणों से युक्त शोथ उत्पन्न होताहै इसे तालव्वर्बुद कहतेहैं१०४६ ॥

मांससङ्घातमाह ॥

दुष्टंमांसंश्लेष्मणानीरुजञ्चताल्वन्तस्थंमांससङ्घातमाहुः ॥ १०४७ ॥

मांससंघातका लक्षण ॥

कफ के द्वारा दूषित मांस पीड़ारहित तालुमें उठ आताहै इसे मांस संघात कहते हैं १०४७ ॥

तालुपुप्पुटमाह ॥

नीरुक्स्थायीकोलमात्रोकफात्मामेदोयुक्तःपुप्पुटस्तालुदेशे ॥ १०४८ ॥

तालुपुप्पुटका लक्षण ॥

कफके द्वारा तालु में पीड़ा रहित बहुत कालतक रहनेवाला मेदो युक्त बेरकें समान शोथ उत्पन्न होताहै इसे तालुपुप्पुट कहते हैं ॥ १०४८ ॥

तालुशोषमाह ॥

शोषोऽत्यर्थंदीर्य्यतेवापितालुश्वासो वातात्तालुशोषोऽयमुक्तः ॥ १०४९ ॥

तालुशोषका लक्षण ॥

बायु के द्वारा तालु अत्यन्त सूखजाता है और बिदीर्ण होजाताहै इसे तालु शोष कहते हैं इसमें श्वासभी होती है ॥ १०४९ ॥

तालुपाकमाह ॥

पित्तंकुर्य्यात्पाकमत्यर्थघोरंतालुन्येवंतालुपाकंवदन्ति ॥ १०५० ॥

तालुपाकका लक्षण ॥

पित्तकेद्वारा तालु बहुत पकजाताहै इसे तालुपाक कहते हैं ॥ १०५० ॥

अथ तालुरोगाणांचिकित्सा ॥

कुष्ठोषणवचासिन्धुकणापाठाप्लवैःसह । सक्षौद्रैर्भिषजाकार्य्यंगलशुण्डीप्रघर्षणम् ॥ प्लवःकेवड़ीमोथागुड़तजीइतिलोके । अंगुष्ठांगुलिसन्दंशेनाकृष्यगलशुण्डिकाम् ॥ छेदयेन्मण्डलाग्रेणजिह्वोपरितुसंस्थिताम् । मण्डलाग्रेणशस्त्रविशेषेण ॥ अत्यादानात्स्रवेद्रक्तंततःसम्रियतेनरः । हीनच्छेदाद्भवेच्छोथोलालास्रावोभ्रमस्तथा ॥ तस्माद्वैद्यःप्रयत्नेनदृष्टकर्माविशारदः । गलशुण्डींतुसंछिद्यकुर्य्यात्प्राप्तमिमंक्रमम् ॥ पिप्पल्यतिविषाकुष्ठवचामरिचनागरैः । क्षौद्रयुक्तैःसलवणैस्ततस्तांप्रतिसारयेत् ॥ वचामतिविषापाठारास्नाकटुकरोहिणीः । निःक्वाथ्यपिचुमर्दञ्चकवलंतत्रकारयेत् ॥ तुण्डिकेर्य्यध्रुषेकूर्मेसङ्घातेतालुपुप्पुटे । एषएवविधिःकार्य्योविशेषःशस्त्रकर्म्मणि ॥ तालुपाकेतुकर्त्तव्यंविधानंपित्तनाशनम् ॥ स्नेहस्वेदस्तालुशोषेविधिश्चानिलनाशनः ॥ १०५१ ॥

तालुरोगोंकी चिकित्सा ॥

कूट मिर्च बच सेंधानोन पीपल पाठा और मोथा इनसबके चूर्णको सहतमें मिलाकर गलशुंडी में रगड़े अंगूठे और तर्जनीके द्वारा गलशुंडीको पकड़कर खेंचे और मंडलाग्रशस्त्रके द्वारा जिह्वापर रक्खीहुई गलशुंडीको छेदे बहुत छिदनेसे रुधिर बहताहै और रोगी मरजाताहै कम छिदनेसे शोथ लारका बहना तथा भ्रम होताहै इसलिये अत्यन्त चतुर वैद्य गलशुंडीको बड़े यत्नपूर्वक छेदकर पीपल अतीस कूट बच मिर्च सोंठ और सेंधानोन सहत डालकर इनसबके चूर्णको रगड़े बच अतीस पाठा रासना कुटकी और नींब इनके काढ़ेको मुखमें रक्खे तुंडिकेरी अध्रूश कच्छप मांससंघात और तालुपुप्पुटमें यही बिधि करनीचाहिये परन्तु शस्त्रकर्ममें विशेषता तालुपाकमें पित्तनाशक चिकित्सा करे तालुशोषमें स्नेहस्वेद और बातनाशक चिकित्साकरे ॥ १०५१ ॥

अथ गलरोगास्तत्रगलरोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

रोहिणीपञ्चधाप्रोक्ताकण्ठशालूकएवच । अधिजिह्वश्चवलयोवलासश्चैकवृन्दकः ॥ ततोवृन्दःशतघ्नीचगिलायुःकण्ठविद्रधिः । गलौघश्चस्वरघ्नश्चमांसतानस्तथैवच ॥ विदारीकण्ठदेशेतुरोगाअष्टादशस्मृताः ॥ १०५२ ॥

गलेके रोग गलरोगोंके नाम और संख्या ॥

पांचप्रकारकी रोहिणी कंठशालूक अधिजिह्ववलय बलास एकवृन्द वृन्द शतघ्नी शिलाघ कण्ठ बिद्रधि गलौघ स्वरघ्न मांसतान और बिदारी यह अठारहरोग गले में होतेहैं ॥ १०५२ ॥

तत्रपञ्चानामपिरोहिणीनां सामान्यांसम्प्राप्तिमाह ॥

गलेऽनिलःपित्तकफौचमूर्च्छितौप्रदूष्यमांसञ्चतथैवशोणितम् । गलोपसंरोधकरै

स्तथांकुरैर्निहन्त्यसूनव्याधिरियंचरोहिणी ॥ अनिलःमूर्च्छितःप्रवृद्धःकफपित्तौचमूर्च्छितौपित्तंवामूर्च्छितंकफोवामूर्च्छितः । ननुत्रयोऽपिमूर्च्छिताःपृथक्दोषजायाअविवक्षमाणत्वात् ॥ १०५३ ॥

पांचोंरोहिणीकीसामान्यसंप्राप्ति ॥

बढ़ेहुए बात पित्त कफ तथा रुधिर गलेके मांसको दूषित करके गलेके रोकनेवाले मांसके अंकुरों को उत्पन्न करतेहैं इसरोगमें रोगी जीता नहीं है इसे रोहिणी कहतेहैं ॥ १०५३ ॥

तस्यावातजायालक्षणमाह ॥

जिह्वासमन्तात्भृशवेदनास्तुमांसांकुराःकण्ठनिरोधनाःस्युः । सारोहिणीवातकृताप्रदिष्टावातात्मकोपद्रवगाढ़जुष्टा ॥ जिह्वासमन्तात्जिह्वायाःसर्वतःकफात्मकोपद्रवगाढ़जुष्टास्तम्भादिभिरतिशयेनयुक्ताः ॥ १०५४ ॥

बातजरोहिणीके लक्षण ॥

बातजरोहिणीमें जिह्वाके सबओर अत्यन्त पीड़ायुक्त कंठके रोकनेवाले मांसकेअंकुर होतेहैं और स्तंभादिक बायुके उपद्रव अधिकतासे होतेहैं ॥ १०५४ ॥

पित्तजामाह ॥

क्षिप्रोद्गमाक्षिप्रविदाहपाका तीव्रज्वरापित्तनिमित्तजाता ॥ १०५५ ॥

पित्तजरोहिणीके लक्षण ॥

पित्तज रोहिणी शीघ्रही उत्पन्न होती है और शीघ्रही दाह तथा पाकयुक्त होती है ॥ १०५५ ॥

श्लेष्मजामाह ॥

श्रोतोनिरोधिन्यपिमन्दपाका गुर्वीस्थिरासाकफसम्भवातु । स्रोतोऽत्रकंठस्रोतः १०५६॥

कफजरोहिणीके लक्षण ॥

कफजरोहिणी कंठकी रोकनेवाली अल्प पकनेवाली भारी तथा स्थिरहोतीहै ॥ १०५६ ॥

सन्निपातजामाह ॥

गम्भीरपाकिन्यनिवार्य्यवीर्य्यत्रिदोषलिङ्गात्रिभवाभवेत्सा ॥ १०५७ ॥

सन्निपातजरोहिणीके लक्षण ॥

सन्निपातज रोहिणी तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त और गहरी पकनेवाली होतीहै यह किसी प्रकार रुकती नहीं ॥ १०५७ ॥

रक्तजामाह ॥

स्फोटैश्चितापित्तसमानलिंगासाध्या प्रदिष्टारुधिरात्मिकातु ॥ १०५८ ॥

रक्तजरोहिणीके लक्षण ॥

रक्तजरोहिणी स्फोटकोंसे घिरहुई और पित्तके समान लक्षणवाली होती है यहसाध्यहै १०५८॥

रक्तहेतुरासांमारकत्वादवधिमाह ॥

सद्यस्त्रिदोषजाहन्तित्र्यहात्कफसमुद्भवा।पञ्चाहात्पित्तसम्भूतासप्ताहात्पवनोत्थिता१०५९

रोहिणी के प्राणनाश करनेकी अवधि ॥

सन्निपातज रोहिणी शीघ्रही कफजरोहिणी ३दिनमें पित्तजरोहिणी ५दिनमें और बातजरोहिणी७ दिनमें प्राणहरतीहै ॥ १०५९ ॥

कण्ठशालूकमाह ॥

कोलास्थिमात्रःकफसम्भवोयोग्रन्थिर्गलेकण्ठकशूकभूतः।खरस्थिरःशस्त्रनिपातसाध्यस्तं कण्ठशालूकमितिब्रुवन्ति ॥ कण्टकशूकभूतःकण्टकवत्शूकवच्चवेदनाजनकः १०६० ॥

कंठशालूकका लक्षण ॥

कफके द्वारा गलेमें कांटे तथा शूककीसी पीड़ासे युक्त खुरखुरी और स्थिरबेरकी गुठलीके समान गांठ उत्पन्नहोतीहै उसे कंठशालूक कहतेहैं यहशस्त्रसे साध्यहै ॥ १०६० ॥

अधिजिह्वकमाह ॥

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःकफात्तुजिह्वोपरिष्टादसृजैवमिश्रात् । ज्ञेयोऽधिजिह्वःखलुरोगएषविवर्जयेदागतपाकमेनम् ॥ असृजामिश्रादित्यन्वयः ॥ १०६१ ॥

अधि जिह्वका लक्षण ॥

रुधिर से मिलेहुए कफ के द्वारा जिह्वापर जिह्वाके अग्रभाग के समान शोथ उत्पन्न होताहै इसे अधि जिह्व कहते हैं यह पकनेसे असाध्य होजाता है ॥ १०६१ ॥

अथ वलयमाह ॥

वलासएवायतमुन्नतञ्च शोथंकरोत्यन्नगतिंनिवार्य्य । तंसर्वथैवप्रतिवार्य्यमेवविवर्जनीयंवलयंवदन्ति ॥ १०६२ ॥

वलयका लक्षण ॥

कफके द्वारा फैलाहुआ अत्यन्त उन्नत शोथ अन्न के मार्गको रोककर उत्पन्न होताहै इसे वलय कहतेहैं यह सर्वथा असाध्यहै ॥ १०६२ ॥

वलासमाह ॥

गलेतुशोथंकुरुतःप्रवृद्धौ श्लेष्मानिलौश्वासरुजोपपन्नम् । मर्म्मच्छिदंदुस्तरमेनमाहुर्वलाससंज्ञंभिषजोविकारम् ॥ मर्मच्छिदंहृदयमर्मणिछेदनेववेदनाजनकम् ॥ १०६३ ॥

वलास का लक्षण ॥

बढ़ेहुए कफ बात गले में श्वास तथा पीड़ा युक्त शोथ को उत्पन्न करतेहैं इसे वलास कहतेहैं इसमें हृदय मर्म में छेदने कीसी पीड़ा होतीहै यह अत्यन्त दुस्तरहै ॥ १०६३ ॥

अथ एकवृन्दमाह ॥

वृत्तोन्नतोऽन्तःश्वयथुःसदाहःसकण्डुरोऽपाक्यमृदुर्गुरुश्च।नाम्नैकवृन्दःपरिकीर्त्तितोऽसौव्याधिर्वलासक्षतजप्रसूतः ॥ अन्तःगलमध्येअपाकीईषत्पाकीअमृदुःईषन्मृदुः १०६४॥

एकवृन्दका लक्षण

कफ तथा रुधिरके द्वारा गले के भीतर गोल ऊंचा दाह तथा खुजली युक्त कुछ पकनेवाला भारी और कुछ कोमल शोथ उत्पन्न होताहै इसे एकवृन्द कहते हैं ॥ १०६४ ॥

अथवृन्दमाह ॥

समुन्नतंवृत्तममन्ददाहंतीव्रज्वरंवृन्दमुदाहरन्ति । तच्चापिपित्तक्षतजप्रकोपाद्विद्यात्स
तोदंपवनात्मकंतु ॥ १०६५ ॥ वृन्दका लक्षण ॥

पित्त तथा रुधिर के कोपसे गले में ऊंचा गोला तथा अत्यन्त दाह युक्त शोथ उत्पन्न होताहै इसे वृन्द कहतेहैं इसमें अत्यन्त ज्वर आताहै और जो इसरोग में बायुभी होती है तो सूई गड़नेकी सी पीड़ा होती है १०६५ ॥

अथ शतघ्नीमाह ॥

वर्त्तिर्घनाकण्ठनिरोधनीतु चितातिमात्रंपिशितप्ररोहैः । अनेकरुक्प्राणहरीत्रिदोषा
ज्ञेयाशतघ्नीसदृशीशतघ्नी ॥ घनाकठिनाअनेकरुक् वातपित्तकफजतोददाहकण्ड्वादिय
क्ताशतघ्नीसदृशीलौहकण्टकसंच्छन्ना शतघ्नीमहतीशिलातत्तुल्यायतःप्राणहरी १०६६

शतघ्नी का लक्षण ॥

तीनों दोषों के कोपसे गले में कठिन कंठकी रोकने वाली मांसके अंकुरों से अत्यन्त व्याप्त और बात पित्त तथा कफके तोद दाह तथा खुजली आदि पीड़ाओं से युक्त बत्तीसी उत्पन्न होतीहै इसे शतघ्नी कहते हैं यह शतघ्नी के समान प्राण नाशकहै ॥ १०६६ ॥

अथ गिलायुमाह ॥

ग्रन्थिर्गलेत्वामलकास्थिमात्रः स्थिरोऽल्परुक्स्यात्कफरक्तमूर्त्तिः । संलक्ष्यतेसक्तमि
वासितञ्च सशस्त्रसाध्यस्तुगिलायुसंज्ञः ॥ १०६७ ॥

शिलाघका लक्षण ॥

कफ तथा रुधिर के द्वारा गलेमें स्थिर तथा स्वल्प पीड़ा युक्त आमले की गुठली के समान गांठ उत्पन्न होती है इसे शिलाघ कहते हैं इस में भोजन गले में लगाहूआसा मालूम होता है यह रोग शस्त्रसाध्य है ॥ १०६७ ॥

अथ गलविद्रधिमाह ॥

सर्वंगलंव्याप्यसमुत्थितोयः शोफोरुजःसन्तिचयत्रसर्वाः । ससर्वदोषैर्गलविद्रधिस्तु
तस्यैवतुल्यःखलुसर्वजश्च ॥ १०६८ ॥

गलबिद्रधि का लक्षण ॥

तीनों दोषों के कोपसे तीनोंदोषों की पीडाओं से युक्त संपूर्ण गले में शोथ उत्पन्न होता है इसे गलविद्रधि कहते हैं इसमें सन्निपातज बिद्रधि के लक्षण होते हैं ॥ १०६८ ॥

अथ गलौघमाह ॥

शोथोमहान्यस्तुगलावरोधी तीव्रज्वरोवायुगतेर्निहन्ता । कफेनजातोरुधिरान्वितेन
गलेगलौघःपरिकीर्त्तितोऽसौ ॥ वायुगतेर्निहन्ता उदानवायुगतिरोधकः ॥ १०६९ ॥

गलौघ का लक्षण ॥

रुधिर सहित कफके द्वारा कंठका रोकने वाला और उदान बायु की गतिका रोकने वाला शोथ उत्पन्न होता है इसे गलौघ कहते हैं इसमें अत्यन्त ज्वर होता है ॥ १०६९ ॥

अथ स्वरघ्नमाह ॥

यस्ताम्यमानःश्वसितिप्रसक्तं भिन्नस्वरःशुष्कविमुक्तकण्ठः । कफोपदुष्टेष्वनिलायनेषुज्ञेयःसरोगःश्वसनात्स्वरघ्नः ॥ ताम्यमानःतमःपश्यन् शुष्कविमुक्तकण्ठः शुष्कोविमुक्तोऽस्वाधीनकण्ठोयस्यसःअस्वाधीनताभक्तंगिलितुमशक्यत्वात् अनिलायनेषुवायुवर्त्मसुश्वसनाद्वातात् ॥ १०७० ॥ स्वरघ्नका लक्षण ॥

वायु के कोपसे अन्धकार सा दिखाई देवे बहुत श्वास होवे स्वर भंग होजाय भोजन निगला न जाय और बायु के मार्ग कफसे दूषित होजायँ इस रोगको स्वरघ्न कहते हैं ॥ १०७० ॥

अथ मांसतानमाह ॥

प्रतानवान्यःश्वयथुःसुकष्टोगलोपरोधंकुरुतेक्रमेण । समांसतानःकथितोऽवलम्बीप्राणप्रणुत्सर्वकृतोविकारः ॥ प्रतानवान्विस्तारवान्सुकष्टःअतिशयितंकष्टंयत्रसः १०७१ ॥

मांसतानका लक्षण ॥

तीनों दोषों के कोपसे उत्पन्न हुआ बिस्तार युक्तलंबा और अत्यन्त कष्टकारी शोथ धीरे २ गले को बन्द करता है इसे मांसतान कहते हैं यह रोग प्राणनाशक है ॥ १०७१ ॥

अथ विदारीमाह ॥

सदाहतोदंश्वयथुंसुताम्रमन्तर्गलेपूतिविशीर्णमांसम् । पित्तेनविद्याद्वदनेविदारीपार्श्वेविशेषात्सतुयेनशेते ॥ सपुरुषोयेनपार्श्वेणविशेषाद्बाहुल्येनशेतेतस्मिन्पार्श्वेसाविदारीभवतीत्यर्थः ॥ १०७२ ॥ बिदारीका लक्षण ॥

पित्तके कोप से गले के भीतर दाह तथा सूई गड़ने कीसी पीड़ासे युक्त ताम्रवर्ण और दुर्गन्धित तथा गलेहुए मांससे युक्त शोथ उत्पन्न होता है इसे बिदारी कहतेहैं मनुष्य जिस करवट से अधिक सोताहै उसी ओर को यह रोग होताहै ॥ १०७२ ॥

अथ मुखरोगाणांचिकित्सा ॥

रोहिणीनान्तुसाध्यानांहितंशोणितमोक्षणम् । वमनंधूमपानञ्चगण्डूषोनस्यकर्म्मच वातजान्तुहतेस्रुक्तैलवणैःप्रतिसारयेत् । सुखोष्णान्स्नेहगण्डूषान्धारयेच्चाप्यभीक्ष्णशः विस्राव्यपित्तसम्भूतांसिताक्षौद्रप्रियंगुभिः । घर्षयेत्कवलोद्राक्षापरुषैःकथितोहितः । आगारधूमकटुकैःकफजांप्रतिसारयेत् । आगारधूमःकोलइतिलोकेकटुकानिशुण्ठीपिप्पलीमरिचानि । श्वेताविडंगदन्तीषुतैलंसिद्धंससैन्धवम् । नस्यकर्मणिदातव्यंकवलश्चकफोच्छ्रये ॥ श्वेतापराजितापित्तवत्साधयेद्वैद्योरोहिणींपित्तसम्भवाम् । विस्राव्यकण्ठशालूकंसाधयेत्तुण्डिकेरिवत् ॥ एककालंयवान्नञ्चभुञ्जीतस्निग्धमल्पशः । उपजिह्वकवच्चापिसाधयेदधिजिह्वकम् ॥ एकवृन्दन्तुविस्राव्यविधिंशोधनमाचरेत् । एकवृन्दमिवप्रायोवृन्दञ्चसमुपाचरेत् ॥ गिलायुश्चापियोव्याधिस्तञ्चशस्त्रेणसाधयेत् । अमर्मस्थंसुसंपक्वंभेदयेद्गलविद्रधिम् ॥ १०७३ ॥

गलेके रोगोंका चिकित्सा ॥

साध्य रोहिणी रोगमें रक्तका निकालना बमन धूमपान कुल्लेकरना और नस्यकर्महितहै बातज रोहिणी में रुधिर निकलवाकर सेंधानोन मलै और कुछ उष्णस्नेहके द्वारा बारंबार कुल्लेकरे पित्तज रोहिणी में रुधिर निकलवाकर गोंदी शक्कर तथा सहत कोमलै और दाख तथा फालसोंके क्काथके द्वारा कवल धारणकरे कफज रोहिणी में गृहधूम तथा त्रिकटुके चूर्णको मलै श्वेत विष्णुक्रान्ता बायबिड़ंग जमालगोटेकीजड़ तथा सेंधेनोनके द्वारा पाक कियेहुये तेलकी नासलेवे और कवल धारण करे इससे कफज रोहिणी नष्ट होतीहै पित्तज रोहिणी में पित्तरोगकी चिकित्सा करे कंठ शालूकमें तुंडिकेरी रोगकीसी चिकित्साकरे औरएकबार जौका बनाहुआ थोड़ासा चिकना पदार्थ खाय अधिजिह्व में उपजिह्व की सी चिकित्साकरे एकवृन्दमें रुधिर निकलवाकर शोधन बिधिकरे वृन्दरोग में भी इसीकीसी चिकित्सा करे शिलाघ में शस्त्र क्रियाकरे मर्म में नहींहुई गल विद्रधिको पकजाने परछेदे ॥ १०७३ ॥

अथ सामान्यकण्ठरोगाणांचिकित्सा ॥

कण्ठरोगेष्वसृङ्मोक्षैस्तीक्ष्णैर्नस्यादिकर्मभिः । चिकित्सकश्चिकित्सान्तुकुशलोऽत्रसमाचरेत् ॥ क्काथंदद्याद्दार्वीत्वङ्निम्बताक्ष्यकलिङ्गकम् । हरीतकीकषायोवाहितोमाक्षिकसंयुतः । कटुकातिविषादारुपाठामुस्तकलिङ्गकाः । गोमूत्रक्कथिताःपीताःकण्ठरोगविनाशनाः ॥ मृद्वीकाकटुकाव्योषदार्वीत्वक्त्रिफलाघनम् । पाठारसाञ्जनंदूर्वातेजोह्वेतिसुचूर्णितम् ॥ क्षौद्रयुक्तंविधातव्यंगलरोगेमहौषधम् । योगाश्चैतेत्रयःप्रोक्ताःवातपित्तकफापहाः ॥ यवाग्रजंतजयतीञ्चपाठांरसाञ्जनंदारुनिशांसकृष्णाम् । क्षौद्रेणकुर्य्याद्गुटिकांमुखेनतांधारयेत् सर्वगलामयेषु ॥ १०७४ ॥

सामान्य कंठरोगोंकी चिकित्सा ॥

कंठरोगों में रुधिर निकलवाना और तीक्ष्ण नस्यआदि कर्म के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये दारुहल्दीकीछाल नीम रसौत तथा इन्द्रजौ इनका काढ़ा अथवा सहतयुक्त हड़का काढ़ा कंठरोगों में हित है कुटकी अतीस देवदारु पाढ़ मोथा और इन्द्रजौ इनसबका गोमूत्रके द्वारा क्काथ करके पीनेसे कंठरोग नष्ट होते हैं दाख कुटकी त्रिकटु दारुहल्दी दालचीनी त्रिफला मोथा पाढ़ रसौत दूब और तेजबल इनके चूर्णको सहत के साथ सेवन करनेसे कंठरोगों का नाश होता है ये तीनों योग क्रमसे बात पित्त तथा कफ नाशक हैं जवाखार तेजबल पाढ़ रसौत दारुहल्दी और पीपल इनकी सहत में गोली बांधकर मुखमें रखनेसे सम्पूर्ण कंठरोग नष्ट होतेहैं ॥ १०७४ ॥

अथ समस्तमुखरोगास्तत्रतेषांनिदानंसंख्याञ्चाह ॥

पृथक्दोषैस्त्रयोरोगाःसमस्तमुखजाःस्मृताः ॥ १०७५ ॥

सम्पूर्ण मुखके रोग इनके निदान और संख्या ॥

सम्पूर्ण मुख के रोग बातज पित्तज औ कफज भेदसे तीनप्रकारके होते हैं ॥ १०७५ ॥

तत्रवातिकस्यलक्षणमाह ॥

स्फोटैःसतोदैर्वदनंसमन्ताद्यस्याचितंसर्वसरःसवातात् ॥ १०७६ ॥

बातजसर्वमुखरोग का लक्षण ॥

बातज सर्वमुख रोगमें सम्पूर्ण मुखमें सूजी गड़नेकीसी पीड़ा सहित स्फोटक होतेहैं ॥ १०७६ ॥

पैत्तिकमाह ॥

रक्तैःसदाहैःतनुभिःसुपीतैर्य्यत्राञ्चितश्चापिसपित्तकोपात् ॥ १०७७ ॥

पित्तज सर्वमुखरोग का लक्षण ॥

पित्तजसर्वमुखरोग में रक्त तथा पीतवर्ण दाहयुक्त छोटी२ फुन्सियां होती हैं ॥ १०७७ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

अवेदनैःकण्डूयुतैःसवर्णैर्यत्राचितश्चापिसवैकफेन । यतउक्तंसुश्रुतेन । अल्पवेदनैरिति ॥ १०७८ ॥

कफजसर्व मुखरोगका लक्षण ॥

कफजसर्व मुखरोगमें थोडी पीड़ा तथा खुजली युक्त शरीरके समानवर्ण वाले स्फोटक होतेहैं १०७८

मुखरोगेष्वसाध्यानाह ॥

ओष्ठप्रकोपेवर्ज्यास्तुमांसरक्तत्रिदोषजाः । दन्तवेष्ठेषुवर्ज्यौतुत्रिलिंगगतिशोषिरौ ॥ त्रिलिंगगतिःत्रिदोषजानाड़ी । दन्तेषुचनसिध्यन्तिश्यावदालनभञ्जनाः । जिह्वारोगेष्वलसस्तुतालुजेष्वर्बुदंतथा ॥ स्वरघ्नोवलयोवृन्दोवलासःसहिदारुणः । गलौघमांसतानश्चशतघ्नीरोहिणीगले ॥ असाध्याःकीर्तिताःह्येतेरोगादशनवोत्तराः । तेषुचापिक्रियांवैद्यःप्रत्याख्येयंसमाचरेत् ॥ १०७९ ॥

असाध्य मुखरोग ॥

ओष्ठरोगोंमें मांसज रक्तज तथा त्रिदोषज असाध्यहैं दंतमूल रोगों में सन्निपातज नासूर तथा सौषिर रोग असाध्यहैं दंतरोगोंमें श्यावदंत दालन तथा भंजन असाध्य हैं जिह्वा रोगोंमें अलास असाध्य हैं तालुरोगोंमें अर्बुद असाध्यहै कंठरोगोंमें स्वरघ्न वलय वृन्दबलास बिदारिका गलौघ मांसतान शतघ्नी और रोहिणी असाध्यहैं ये उन्नीस मुखरोग असाध्यहैं वैद्य इनको असाध्य कहकरके चिकित्साकरे १०७९

अथ समस्तमुखरोगाणांचिकित्सा ॥

वातात्सर्वसरश्चूर्णैर्लवणैःप्रतिसारयेत् । तैलंवातहरैःसिद्धंहितंकवलनस्ययोः ॥ पित्तात्मकेसर्वसरेशुद्धकायस्यदेहिनः । सर्वःपित्तहरःकार्य्योविधिर्मधुरशीतलः ॥ प्रतिसारणगण्डूषधूमसंशोधनानिच । कफात्मकेसर्वसरेक्रमेकुर्य्यात्कफापहम् ॥ मुखपाकेशिरावेधःशिरसश्चविरेचनम् । मधुमूत्रघृतक्षीरैःशीतैश्चकवलग्रहः ॥ जातीपत्रामृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः । क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूषोमुखपाकनुत् ॥ कार्य्यश्चबहुधानित्यंजातीपत्रस्यचर्वणम् । कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवचर्वणतस्त्र्यहात् । मुखपाकव्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति । पटोलनिम्बजम्ब्वाम्रमालतीनवपल्लवैः ॥ पञ्चपल्लवजःश्रेष्ठःकषायोमुखधावने । पञ्चवल्कलजःक्वाथस्त्रिफलासम्भवोऽथवा ॥ मुखपाकेप्रयोक्तव्यःसक्षौद्रोमुखधावने । स्वरसःक्वथितोदार्व्याघनीभूतोरसक्रिया ॥ सक्षौद्रामुखरोगासृग्दोषनाड़ीव्रणापहा । सप्त

च्छदोशीरपटोलमुस्तहरीतकीतिक्तकरोहिणीभिः ॥ यष्ट्याह्वराजद्रुमचन्दनैश्चक्वाथंपिबे त्पाकहरंमुखस्य । राजद्रुमः धनबहेराइतिलोके । तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच । क्षौद्राढ्योदग्धवक्त्रस्यगण्डूषोमुखपाकनुत् ॥ आस्वादितासकृदपिमुखगन्धंसकलमपन यति । त्वग्बीजपूरफलजापवनमपाच्यंवारयति ॥ हरिद्रानिम्बपत्राणिमधुकंनीलमुत्पल म् । तैलमेभिर्विपक्तव्यंमुखपाकहरंपरम् ॥ यष्टीमधुपलमेकंत्रिंशन्नीलोत्पलस्य । तैलस्य प्रस्थंतद्द्विगुणपयोविधिनापक्वंतुनस्येन ॥ निशिवदनस्यस्रावंक्षपयतिगात्रस्यदोषसंघा तम् । कचत्वघर्षंत्वमवश्यंक्रमशोऽभ्यङ्गेनतन्तुनाम् ॥ इतिमुखरोगाधिकारः ॥ १०८० ॥

समस्तमुखरोगोंकी चिकित्सा ॥

बातज सर्वमुखरोगोंमें बातघ्न चूर्ण तथा सेंधानोन रगडै और बातज औषधियोंसे पाककिये भये तेलकेद्वारा कवल तथा नस्यका ग्रहणकरे पित्तज सर्वमुखरोगमें बिरेचनादिके द्वारा शरीरको शुद्ध करके मधुर तथा शीतल औषधोंके द्वारा पित्तनाशक सम्पूर्ण चिकित्साकरै कफज सर्वमुख रोगोंमें कफघ्न प्रतिसारण कुल्ले धूम तथा संशोधन इनका प्रयोग क्रमसेकरै मुखपाकरोगमें शिरावेध शिरोविरे- चन और शीतल सहतगोमूत्र घी तथा दूधके द्वारा कवल ग्रहणकरै चँबेलीकी पत्ती गिलोय दाख जवासा दारुहल्दी और त्रिफला इनके काढेमें सहतडालकर ठंढेकुल्ले करनेसे मुखपाक नष्टहोताहै मुख पाकमें बहुधा चँबेलीकीपत्ती नित्यचबानी चाहिये कालाजीरा कूट और इन्द्रजौ इनको तीन दिनचबानेसे मुख पाक और मुखके घाव क्लेद तथा दुर्गन्धिका नाशहोताहै परवल नींबजामुन आम तथा चँबेली की पत्तियों के द्वारा काढा करके मुखधोनेसेमुखपाक नष्टहोता है अथवा त्रिफलाके काढेमें सहत डालकर धोवै दारु- हल्दी के स्वरसको आंचमें गाढाकरके सहतडालै इससे मुखरोग रक्तदोष और नासूरका नाशहोताहै छितवन खस परवल मोथा हड़ पित्तपापड़ा रोहिणी मुलेठी अमलतास और लालचंदन इनके काढे को पीनेसे मुखपाकका नाशहोताहै तिल नीलोत्पल घी शक्कर दूध और सहत इनसबको मिलाकर कुल्ले करनेसे दग्ध मुखका मुखपाकनष्टहोता है बिजौरे नींबूकी छालको एकबारभी चाबनेसे मुखकी दुर्गन्धि तथा धुवैंधीडकारनष्टहोती है हल्दी नीमकी पत्ती मुलेठी और नीलोत्पल इनके द्वारापाक कियाभया तैल मुखपाकका अत्यन्त नाशकारी है मुलेठी चारतोले और नीलोत्पल १२० इनके द्वारा दूने दूधके साथ बिधि पूर्वक ६४ तोले तेलको पकावै इसकी नासलेनेसे सोतेमेंरालका बहना नष्टहो जाताहै और क्रम पूर्वक इसकोमलनेसे दोष संघात शुष्कव्रण और त्वग्धर्षका नाशहोताहै इतिमुख रोगाऽधिकार समाप्त ॥ १०८० ॥

अथ विषाधिकारः ॥

तत्रविषस्यद्वैविध्यमाह । स्थावरंजंगमञ्चैवद्विविधंविषमुच्यते । दशाधिष्ठानमाद्यंतु द्वितीयंषोड़शाश्रयम् ॥ १०८१ ॥

विषका अधिकार । दोप्रकारका बिष ॥

स्थावर और जंगम भेदसे बिषदो प्रकारका होता है उसमेंसे स्थावर बिषके दश और जंगम बिषके सोलह आश्रय हैं ॥१०८१ ॥

स्थावरविषस्यदशाश्रयानाह ॥

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वक्क्षीरंसारमेवच । निर्यासोधातवःकन्दःस्थावरस्याश्रयादश ॥

तद्यथामूलंविषंकरवीरादिपत्रविषंविषपत्रिकादि फलविषंकर्कोटकादिपुष्पविषंवेत्रादि त्वक्सारनिर्य्यासविषाणिकरम्भादीनि क्षीरविषंस्नुह्यादिधातुविषंहरितालादिकन्दविषं वत्सनाभशक्तुकादि ॥ १०८२ ॥

स्थावरबिषके दशआश्रय ॥

मूल पत्र फ़ल पुष्प छाल दूध सार गोंद धातु और कंद ये दश स्थावर बिषके आश्रय हैं जैसे मूल विष कनैर आदि पत्र बिष बिषपत्रिका आदिफल बिष कर्कोटक आदि पुष्पाबिष बेंतआदि त्वचा सार तथा निर्यास विष करंभादि दुग्ध बिष थूहरआदि धातु बिष हरिताल आदि और कंद बिष बत्स नाभआदि ॥ १०८२ ॥ जंगमविषस्यषोड़शाश्रयानाह ॥

दृष्टिनिःश्वासदंष्ट्राचनखमूत्रमलानिच । शुक्रंलालामुखस्पर्शःसदंशंश्चावमर्दितम् ॥ गुदास्थिपित्तशुक्रानिदशषट्जङ्गमाश्रयाः । तद्यथा । दृष्टिनिःश्वासविषाःदिव्याःसर्पाःदंष्ट्राविषाःभौमसर्पाःदंष्ट्रानखविषाव्याघ्रादयः मूत्रपुरीषविषाःगृहगोधिकादयःशुक्रविषामूषिकादयःलालाविषाःउच्चिटिकादयः लालास्पर्शमूत्रपुरीषार्त्तवशुक्रमुखसन्दंष्ट्रास्पर्शावमर्दितगुदपुरीषविषाश्चित्रशीर्षादयःअस्थिविषाः सर्पादयःपित्तविषाःशकुलमत्स्यादयः शूकविषाःभ्रमरादयः ॥ १०८३ ॥

जंगम विष के सोलह आश्रय ॥

दृष्टि निःश्वास दाढ़ नाखून मूत्र मल वीर्य लार आर्तव स्पर्श संदंश अवमर्दित गुदा अस्थि पित्त और शूक ये सोलह स्थावर बिषके आश्रय हैं जैसे दृष्टि तथा निःश्वास बिषदिव्य सर्प द्रंष्ट्रा बिष भौम-सर्प द्रंष्ट्रा नखविष व्याघ्र आदि मूत्र तथा पुरीष बिष छिपकली आदि शुक्रबिष मूसआदि लालाबिष उच्चटिका आदि लाला स्पर्श मूत्र पुरीष आर्तव वीर्य मुख संदंष्ट्रा अवमर्दित गुदाबिष चित्रशीर्षआदि अस्थि बिषसर्पआदि पित्त बिष शकुलमछली आदि औशूक बिष भ्रमर आदि ॥ १०८३ ॥

स्थावरविषाणांसामान्यानांकार्य्याण्याह । तत्रमूलविषस्यकार्य्यमाह ॥

उद्वेष्ठनंमूलविषेर्मोहःप्रलपनंतथा ॥ १०८४ ॥

सामान्य स्थावर बिषोंके कार्य मूल बिषके कार्य ॥

मूलविषों से ऐंठन मोह और प्रलाप होताहै ॥ १०८४ ॥

तत्रपत्रविषस्यकार्य्य माह ॥

जृम्भणंवेपनंश्वासोनृणांपत्रविषैर्भवेत् ॥ १०८५ ॥

पत्र विषके कार्य ॥

पत्र बिषों से जमुहाई कंप और श्वास होते हैं ॥ १०८५ ॥

फलविषस्यकार्य्य माह ॥

शुष्कशोथःफलविषैर्दाहोद्वेषश्चभोजने ॥ १०८६ ॥

फलबिषका कार्य ॥

फलबिषोंसे अंडकोशोंमें शोथ दाह और भोजनमें द्वेषहोताहै ॥ १०८६ ॥

पुष्पविषस्यकार्य्य माह ॥

भवेत्पुष्पविषैश्छर्दिराध्मानंमूर्च्छनंतथा ॥ १०८७ ॥

पुष्पविषका कार्य ॥

पुष्प बिषोंसे छर्दि आध्मान और मूर्च्छा होती है ॥ १०८७ ॥

त्वक्सारनिर्य्यासकार्य्याण्याह ॥

त्वक्सारनिर्य्यासविषैरुपमुक्तैर्भवन्तिहि । आस्यदौर्गन्ध्यपारुष्यशिरोरुक्कफसंश्रयाः ॥ १०८८ ॥

त्वचासार तथा निर्यास बिषके कार्य ॥

त्वचासार तथा निर्यास बिषोंसे मुखमें दुर्गन्धि कर्कशता शिरमें पीड़ा औरकफश्रावहोताहै ॥ १०८८ ॥

क्षीरविषकार्य्यमाह ॥

फेनागमःक्षीरविषैर्विड्भेदोगुरुजिह्वता ॥ १०८९ ॥

दूधविषके कार्य ॥

दूध बिषसे फेना निकलना मलभेद और जिह्वा का भारीपन होताहै ॥ १०८९ ॥

धातुविषकार्य्यमाह ॥

हृत्पीड़नंधातुविषैर्मूर्च्छादाहश्चतालुनि । प्रायेणकालघातीनिविषाण्येतानिनिर्दिशेत ॥ एतानिमूलविषाणिनवकालघातीनिकालान्तरमारकाणि ॥ १०९० ॥

धातु बिषके कार्य

धातु बिषोंसे हृदयमेंपीड़ा मूर्च्छा तथा तालु में दाह होताहै प्रायः ये नौ बिष कालान्तर में प्राण नाशक होतेहैं ॥ १०९० ॥

कन्दविषस्यकार्य्यमाह ॥

कन्दजान्युग्रवीर्य्याणियान्युक्तानित्रयोदश । सर्वाण्येतानिकुशलैर्ज्ञेयानिदशभिर्गुणैः ॥ स्थावरंजंगमंवापिकृत्रिमंचापियद्विषम् ॥ सद्योनिहन्तितत्सर्वंगुणैश्चदशभिर्युतम् १०९१

कंदबिष के कार्य ॥

कंद जो तेरह उग्र वीर्य कंदबिष कहेगयेहैं वह दश गुणों से युक्त होने चाहिये स्थावर जंगम अथवा कृत्रिमबिष दशों गुणों से युक्त होनेपर शीघ्रही प्राणनाशक होताहै ॥ १०९१ ॥

तान्दशगुणानाह ॥

रूक्षमुष्णंतथातीक्ष्णंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच । विकाशिविशदञ्चैवलघुपाकिचतेदश १०९२

दश गुण ॥

रुक्ष उष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म आशुकारी व्यवायी (असर होनेके बाद पचनेवाला) विकाशी विशद लघु और अपाकी ये दश गुणहैं ॥ १०९२ ॥

तैर्गुणैर्विषस्यकार्य्यमाह ॥

तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तंसशोणितम् । तैक्ष्ण्यान्मतिंमोहयतिमर्मबन्धान्च्छिनत्तिहि ॥ शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोतिच । आशुत्वादाशुतत्प्रोक्तं

व्यवायात्प्रकृतिंहरेत् ॥ विकाशित्वात्क्षपयतिदोषान्धातून्मलानपि। अतिरिच्यतेवैश-द्यात्दुश्चिकित्स्यंचलाघवात ॥ दुर्जरंचाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयतेचिरम्॥१०९३॥

दश गुण युक्तविषके कार्य ॥

दश गुण युक्त विष रुक्षतासे वायुको उष्णतासे पित्त तथा रुधिरको कुपित करता है तीक्ष्णता से बुद्धि भ्रंश तथा मर्म बंधनोंका छेद करता है सूक्ष्मतासे अंगों में प्रवेश करके उनको विकृत करताहै आशुता गुणसे शीघ्रता करताहै व्यवाय गुणसे प्रकृतिको नष्ट करता है विकाशी गुणसे दोष धातु तथा मलों को नष्ट करताहै विशद गुणसे बहुत दस्तलाताहै लाघवसे दुःसाध्य होताहै और अपाकी होने से पचता नहींहै इन्हीं कारणोंसे यह बहुत कालतक क्लेश देताहै ॥ १०९३ ॥

विषलिप्तशस्त्रहतस्य लक्षणमाह ॥

सद्यःपाकयतियस्यक्षतंततत्स्रवेद्रक्तंपच्यतेचाप्यभीक्ष्णम्। कृष्णीभूतंक्लिन्नमत्यर्थपूति क्षतान्मांसंशीर्य्यतेयस्यवापि॥तृष्णातापौदाहमूर्च्छेचयस्यदिग्धंविद्धंतंमनुष्यंव्यवस्येत्। लिङ्गान्येतान्येवकुर्य्यादमित्रैर्दत्तःक्ष्वेडोवाव्रणेयस्यचापि ॥ पच्यतेचाप्यभीक्ष्णंपुनःपुनः पाकमेतितापःवहिःस्थितःदाहोऽभ्यन्तरेयःकुर्य्यादित्यत्रक्षतंकर्त्तृपदंबोद्धव्यम्॥१०९४॥

विष युक्त शस्त्रलगनेका लक्षण ॥

विषमें बुझाये हुये शस्त्रके लगनेसे घाव जल्दी पकताहै घावसे रुधिर बहताहै घाव बारंबार पकता है और काला क्लेद युक्त तथा दुर्गंधित मांस गलकर गिरताहै और रोगीको तृषा बाहर तथा भीतर ताप और मूर्च्छा होती है व्रणमें शत्रुओंके द्वारा विषदेनेपरभी येहीलक्षण होतेहैं॥ १०९४॥

प्रायेणराजादीनामन्नादौशत्रवोविषं ददतितेषांज्ञानार्थं लक्षणमाह ॥

इंगितज्ञोमनुष्याणांवाक्चेष्टामुखवैकृतैः।जानीयाद्विषदातारमेभिर्लिङ्गैश्चबुद्धिमान् ॥ नददात्युत्तरंपृष्टोविवक्षुर्मोहमेति[illegible] । अपार्थंबहुसंकीर्णंभाषतेचापिमूढवत् ॥ अंगुलीः स्फोटयेदुर्वींविलिखेत्प्रहसेदति। वेपथुश्चास्यभवतित्रस्तश्चैकैकमीक्षते॥विवर्णवक्त्रोध्या मश्चनखैःकिञ्चिच्छिनत्तिच । आलभेतासकृद्दीनःकरेणचशिरोरुहान् ॥ निर्यियासुरप द्वारैःवीक्षतेचपुनःपुनः । वर्त्ततेविपरीतंचविषदाताविचेतनः ॥ इंगितमभिप्रायसूचकम् आकारंमुखवैकृतंमुखवैवर्ण्यादिएभिर्लिङ्गैर्वक्ष्यमाणैः नददात्युत्तरंपृष्टःस्वीयासत्कर्म्मज नितव्यामोहात्संकीर्णम् अस्फुटंभयजनितपर्वव्यथापनोदायांगुलीःस्फोटयेत्प्रहसेत् । अहेतावपिध्यामःदग्धसमानवर्णःआलभेत्स्पृशेत्विपरीतंयथास्यादेवंवर्त्तते॥१०९५ ॥

प्रायःशत्रुगण राजा लोगोंको अन्नआदिमें बिषदेते हैं उनके जाननेके लिये लक्षण ॥

बुद्धिमान् हृदयकी बात जाननेवाला मनुष्य बाणी चेष्टा मुखके बिकार और आगे कहेभये लक्षणोंके द्वारा बिष देनेवालेको जाने बिष देनेवाला मनुष्य पूंछनेसे उत्तर नहींदेता कहने की इच्छा करने परभी मोहित होजाताहै मूर्खकी तरह अनर्थक बहुत तथा अस्फुट बचनकहता है भयसे भयी पोरोंकी पीड़ाको निवारण करने के लिये अंगुली चिटकावे भूमि में चिलबिलोए खिचावै बेकारण हँसै कांपै डरकर एक २ को देखै मुख विवर्ण अथवा झुलसासा मालूम होय नखोंसे कुछतृणआदि

तोड़े दीनहोकर बारंबार कान तथा बालोंको छुवै दुर्मार्गोंसे भागने की इच्छा करताहुआ बारंबार देखै और ज्ञान रहित होकर उलटा बैठै॥ १०९५ ॥

जंगमविषाणांसामान्यानां कार्य्याण्याह ॥

निद्रांतन्द्रांक्लमन्दाहंसम्पाकंलोमहर्षणम् ।शोथंचैवातिसारंचकुरुते जंगमंविषम् १०९६

सामान्य जंगम बिषों के कार्य ॥

जंगमबिष निद्रा तंद्रा ग्लानि दाह पाक रोमांच शोथ औ अतीसार को उत्पन्न करताहै ॥ १०९६ ॥

जंगमेषुतीक्ष्णतरेषु सर्पानाह ॥

वातपित्तकफात्मानोभोगिमण्डलराजिलाः । यथाक्रमंसमाख्याताद्व्यन्तराद्वन्द्वरूपिणः ॥ फणिनोभोगिनोज्ञेयासंख्यातास्तेऽत्रविंशतिः । मण्डलैर्विविधैश्चित्राःपृथवोमन्दगामिनः ॥ षट्तेमण्डलिनोज्ञेयाज्वलनार्कविषाःस्मृताः । स्निग्धाविविधवर्णाभिस्तिर्य्यगूर्ध्वंञ्चराजिभिः ॥ विचित्राइवयेभान्तिराजिलास्तेहितेऽपिषट् । एतेयथाक्रमंवातपित्तकफात्मानःद्व्यन्तराः द्वेअन्तरेभेदौयेषांतेद्व्यन्तराः यथाभोगिनोमण्डलिनोजाताः इत्यादि ॥ १०९७ ॥

तीक्ष्ण जंगमबिषों में सर्पोंका वर्णन ॥

भोगी वातात्मक मंडली पित्तात्मक तथा राजिल सर्प कफात्मक और दो गले द्वंद्वात्मक होते हैं फन वाले भोगी सर्प जानने चाहिये और वह बीस प्रकार के होतेहैं मंडली सर्प अनेक प्रकार के मंडलों से चित्रित स्थूल और मंदगामी होते हैं यह छःप्रकारके हैं इनका विष अग्नि और सूर्य्य से होताहै राजिलसर्प स्निग्ध और तिरछी ऊपरको चढ़ी भई तथा अनेक बर्ण वाली रेखाओंसे चित्रित होतेहैं यह छःप्रकारके हैं ॥ १०९७ ॥

भोगिप्रभृतिकृतदंशदेश लक्षणभेदमाह ॥

दंशोभोगिकृतःकृष्णःसर्ववातविकारकृत् । पीतोमण्डलिनःशोथोमृदुःपित्तविकारवान् ॥ राजिलोत्थोभवेद्दंशःस्थिरशोथश्चपिच्छिलः । पाण्डुःस्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सर्वश्लेष्मविकारवान् ॥ १०९८ ॥

भोगी आदि सर्पोंसे काटेभये स्थानके लक्षण ॥

भोगी सर्पके काटेका स्थान कृष्णवर्ण और सम्पूर्ण वातके विकारोंकाकरनेवाला होताहै मंडली सर्पके काटेका स्थान पीतवर्ण शोथ युक्त कोमल और पित्त के विकारोंसे युक्त होताहै राजिलसर्प के काटेका स्थान स्थिर शोथ युक्त लसलसा पांडुवर्ण स्निग्ध अति गाढ़े रुधिरवाला और संपूर्णकफ के विकारोंसे युक्त होता है ॥ १०९८ ॥

देशविशेषेकालविशेषेच दष्टस्यासाध्यत्वमाह ॥

अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसन्ध्यासुचतुष्पथेषु । याम्येचपित्र्येपरिवर्जनीयाऋक्षेनरामर्मसुयेचदष्टाः ॥ याम्येभरण्यांपित्र्येमघायाम् । दर्वीकराणांविषमाशुहन्तिमेघानिलोष्णाद्द्विगुणाभवन्ति ॥ उष्णेउष्णसंयोगे ॥ १०९९ ॥

स्थान विशेष और काल विशेषमें काटे भयेके असाध्य लक्षण ॥

पीपलमें देवालयमें श्मशानमें बांबीमें सायंकाल के समय और चौराहेमें काटने से सर्पों का विष शीघ्रही प्राणों को हरलेताहै सर्पोंका विष मेघवायु तथा उष्णतासे द्विगुण होताहै भरणी तथा मघामें काटाहुआ असाध्यहोताहै और मर्म स्थानमें भी काटाहुआ असाध्यहोताहै ॥ १०९९ ॥

दर्वीकरलक्षणमाह ॥

रथाङ्गलाङ्गलच्छन्नस्वस्तिकांकुशधारिणः । ज्ञेयादर्वीकराःसर्पाःफणिनःशीघ्रगामिनः ॥ ११०० ॥ दर्वीकरका लक्षण ॥

चक्र हल स्वस्तिक तथा अंकुश इनलक्षणोंसे युक्त शीघ्रचलने वाले फनवाले सर्पोंको दर्व्वीकर कहते हैं ॥ ११०० ॥

अपरेषुयेषुविषमाशुमारकंभवतितानाह ॥

अजीर्णपित्तातपपीड़ितेषुबालेषुवृद्धेषुबुभुक्षितेषु । क्षीणेक्षतेमेहिनिकुष्ठजुष्टेरूक्षेत्रलेगर्भवतीषुचापि ॥ शस्त्रक्षतेयस्यनरक्तमस्तिराज्योलताभिश्चनसम्भवन्ति । शीताभिरद्भिश्चनरोमहर्षोविषाभिभूतंपरिवर्जयेत्तम् ॥ जिह्मंमुखंयस्यचकेशशातोनासावसादश्च सकण्ठभंगः । कृष्णश्चरक्तःश्वयथुश्चदंशेहन्वोःस्थिरत्वञ्चविवर्जनीयम् ॥ केशशातः आकर्षणात्नासावसादःनासायाःनतत्वं।कण्ठभंगःग्रीवाधारणाशक्तिः। हन्वोःस्थिरत्वंहनुद्वयस्तम्भःअपरञ्च ॥ वान्तिर्घनायस्यनिरेतिवक्त्राद्रक्तंस्रवेदूर्ध्वमधश्चयस्य।दंष्ट्रानिपातांश्चतुरश्चपश्येद्यस्यापिवैद्यःपरिवर्जनीयः ॥ यस्यचनासामुखलिङ्गगुदादिभ्योरक्तंस्रवेत्। उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतंवाहीनस्वरंवाप्यथवाविवर्णम् ॥ सारिष्टमत्यर्थमवेगिनञ्च जह्यान्नरंतत्रनकर्मकुर्य्यात् । अत्यर्थमुपद्रुतंवाज्वरातिसारादिभिरतिशयेनोपद्रुतंहीनस्वरंवक्तुमक्षमंविवर्णंकृष्णवर्णंसारिष्टंनासाभंगादियुक्तम् ॥ अवेगिनंवेगोविषवेगः । लहरिइतिलोके। तद्रहितं ॥ ११०१ ॥

अन्य जिनमें विष शीघ्र मारकहोता है उनका वर्णन ॥

अजीर्ण पित्त तथा धूपसे पीड़ित बालक वृद्ध बुभुक्षित क्षीण क्षत प्रमेह तथा कुष्ठ युक्त रूक्ष निर्बल तथा गर्भिणी इनको विष असाध्य होजाता है काटने से जिस के रुधिर न बहै जिसके लताके द्वारा मारने से चिह्न न होय और ठंढे पानी के सींचने से रोमांच न होय ऐसे बिष से पीड़ित की चिकित्सा न करे जिसका मुख टेढ़ा होजाय खींचने से बालभरें नासिका झुकजाय ग्रीवा डालदेय जब जावड़ेजकड़जायँ और काटनेके स्थानमें कालारक्त तथासूजन होयऐसा बिषपीड़ित मनुष्यअसाध्य है जिसविष पीड़ितको गाढ़ावमनहो औ नासिका मुख लिंग तथा गुदा आदि से रुधिर बहै और चार दांत जिसके लगे होयँ वह असाध्य है जो बिष पीड़ित उन्मत्त होय अथवा ज्वर तथा अतीसार आदि उपद्रवों से अत्यन्त पीड़ितहो बोलने में असमर्थ होय कृष्ण वर्ण होय नासाभंग आदि अरिष्टों से युक्त होय अथवा जिसे लहरें न आतीहों वह असाध्यहै ॥ ११०१ ॥

स्थावरंजङ्गमंचविषमेवजीर्णत्वादिभिःकारणैःदूषीविषसंज्ञांलभतेतदाह । जीर्णविष

ओषधिदूषितंवादावाग्निवातातपशोषितंवा॥स्वभावतोवागुणविप्रहीनंविषंहिदूषीविषता मुपैति । जीर्णम् अतिपुराणंविषघ्नौषधिदूषितंविषघ्नीभिरौषधीभिर्वीर्य्यहानिकृतंस्वभाव तोवागुणविप्रहीनंस्वभावादेवदशानांगुणानांमध्येएकद्वित्र्यादिगुणहीनम् ॥ ११०२ ॥

स्थावर तथा जंगमही विष जीर्णत्व आदि कारणों से दूषीबिष कहलाताहै उसका लक्षण ॥ बहुतपुराना बिषघ्न औषधोंसे हीन वीर्य कियागया दावाग्नि बायु तथा धूपआदि से सूखा भया अथवा स्वभावहीसे दश गुणों में से एक दो तीन आदि गुणोंसे रहित बिष दूषीबिषकहलाताहै॥ ११०२॥

दूषीविषस्यकार्य्यमाह ॥

वीर्य्याल्पभावान्ननिपातयेत्तत्कफान्वितंवर्षगणानुबन्धि । तेनार्दितोभिन्नपुरीषवर्णो विगन्धिवैरस्ययुतःपिपासी ॥ मूर्च्छाभ्रमंगद्गद्वाग्वमिञ्चविचेष्टमानोरतिमाप्नुयाद्वा । ननिपातयेत्नमारयतिकफान्वितं कफेनमन्दीकृतोष्णादिगुणंवर्षगणानुबन्धिकफेनाग्ने र्मान्द्यादित्वादपाकाच्चिरस्थायितथादूषीविषजदद्रुरोगवतांभिन्नपुरीषवर्णःभिन्नपुरीषोद्गत मलःभिन्नवर्णोविवर्णःविचेष्टमानःविरुद्धांचेष्टांकुर्वन्मूर्च्छादीन्व्याधीन्लभते॥ ११०३॥

दूषीबिष का कार्य ॥

दूषीबिष वीर्य की अल्पता से नहीं मारताहै परन्तु कफके द्वारा उष्णता आदि गुणों के मंद होने से बहुत कालतक रहताहै जैसे दूषीबिष से भये दाद रोग वाले के दूषीबिष पीड़ित मनुष्य मलभेद विवर्णता दुर्गंधि बिरसता तृषा मूर्च्छा भ्रम गद्गद बाणी छर्दि और बिरुद्ध चेष्टाओंके द्वारा मूर्च्छा आदि रोगों सेयुक्त होताहै और बेचैन होता है ॥ ११०३ ॥

स्थानविशेषोत्थितेदूषीविषेलिङ्गविशेषमाह ॥

आमाशयस्थेकफवातरोगीपक्वाशयस्थेऽनिलपित्तरोगी । भवेत्समुद्ध्वस्तशिरोऽङ्गरु ट्कोविलूनपक्षश्चयथाविहङ्गः ॥ समुद्ध्वस्तशिरोऽङ्गरुट्कःसमुद्ध्वस्ताःशिरोरुहाःकेशाः अंगरुहाणिलोमानियस्यसःएतदपिलिङ्गंपक्वाशयस्थेदूषीविषेबोद्धव्यम् । स्थितंरसादि ष्वथतद्यथोक्तान्करोतिधातुप्रभवान्विकारान् ॥ तत्रदूषीविषेयथोक्तान्सुश्रुतेव्याधिसमु द्देशीयोक्तान् ॥ ११०४ ॥

स्थानें बिशेष में स्थित दूषीबिष के बिशेष लक्षण ॥

दूषीबिषके आमाशय में स्थित होनेपर कफ बातज रोग होतेहैं पक्वाशयमें स्थित होनेपर बात तथा पित्त के रोगहोतेहैं और शिरके केश तथा शरीर के रोमोंके गिरनेसे पक्षहीन पक्षी कीसी आकृति होजातीहै और रसादि धातुओं में स्थित होनेपर सुश्रुत के व्याधिसमुद्देशीयाध्याय में कहे हुए धातुओं में होनेवाले रोग होतेहैं ॥ ११०४ ॥

दूषीविषस्यप्रकोपसमयमाह ॥

कोपंतुशीतानिलदुर्दिनेषुयात्याशुपूर्वंश्रृणुतस्यरूपम् ॥ ११०५ ॥

दूषीबिषके कुपित होनेका समय ॥

शीत बायु तथा मेघोंसे युक्त दिन में दूषीबिष कुपित होताहै ॥ ११०५ ॥

कुपितस्यदूषीविषस्यपूर्वरूप माह ॥

निद्रागुरुत्वञ्चविजृम्भणञ्चविश्लेषहर्षावथवाङ्गमर्दः। विश्लेषःगात्रशैथिल्यंहर्षःरोमाञ्चः ॥ ११०६ ॥ कुपित दूषीबिष का पूर्व रूप ॥

निद्रा भारीपन जंभाई अंगोंकी शिथिलता रोमांच और शरीर में पीड़ा यह लक्षण दूषीविष कुपित होने के पहले होतेहैं ॥ ११०६ ॥ रूपमाह ॥

ततःकरोत्यन्नमदाविपाकावरोचकंमण्डलकोठजन्मा । मांसक्षयंपाणिपदेप्रशोथंमूर्च्छांतथाच्छर्दिमथातिसारम् ॥ दूषीविषंश्वासतृषोज्वरांश्चकुर्य्यात्प्रवृद्धिंजठरस्यचापि। अन्नेभुक्तेपूगफलेनेवमदःअविपाकःअन्नस्य ॥ ११०७ ॥

कुपित दूषीबिष के लक्षण ॥

दूषीबिष के कुपित होनेपर भोजनके उपरान्त सुपारीकासा मद अबिपाक अरुचि मंडलाकार चकत्ते मांस क्षय हाथपैरों में सूजन मूर्च्छा छर्दि अतीसार श्वास तृषा ज्वर और उदर की वृद्धि यह लक्षण होतेहैं ॥ ११०७ ॥ दूषीविषभेदेन विकारभेदमाह ॥

उन्मादमन्यज्जनयेत्तथान्यदानाहमन्यच्चकृमींश्चशुक्रम् । गद्गद्यमन्यज्जनयेच्चकुष्ठंतांस्तान्विकारांश्चबहुप्रकारान् ॥ अन्यत्दूषीविषंतांस्तान्विकारान्विसर्पविस्फोटादीन् ॥ ११०८ ॥ दूषीबिषके भेदसे बिकारोंका भेद ॥

कोई२ दूषीविष उन्माद कोई आनाह कोई कृमि तथा वीर्य्य क्षय कोई गद्गदता और कोई कुष्ठ विसर्प तथा विस्फोटक रोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ ११०८ ॥

दूषीविषस्यनिरुक्तिमाह ॥

दूषितंदेशकालान्नंदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः । यस्मात्सन्दूषयेद्धातूंस्तस्माद्दूषीविषंस्मृतम् ॥ देशःआनूपादिःकालोदुर्दिनादिःअन्नंकुलत्थतिलमसूरादिधातुदूषकत्वाद्दूषीविषम् ॥ ११०९ ॥ दूषीबिषकी निरुक्ति ॥

अनूप आदि देश दुर्द्दिन आदि काल कुलथी तिल तथा मसूरादि अन्न और दिनमें सोना इन कारणों से कुपित होकर धातुओं को बारंबार दूषित करताहै इसलिये दूषीबिष कहलाताहै ॥ ११०९ ॥

दूषीविषस्यसाध्यत्वादिकमाह ॥

साध्यमात्मवतःसद्योजाप्यःसंवत्सरोत्थितः । दूषीविषमसाध्यंस्यात्क्षीणस्याहितसेविनः ॥ १११० ॥ दूषीबिषके साध्यादि लक्षण ॥

पथ्य करने वाले का शीघ्रही दियाहुआ दूषीविष साध्य होताहै वर्ष दिन रहनेवाला याप्य होताहै और अपथ्य करने वाले क्षीण मनुष्य का दूषीबिष असाध्य होताहै ॥ १११० ॥

कृत्रिमंविषंद्विविधंएकंसविषंदूषीविषसंज्ञम्अपरम्विषंतदेवगरसंज्ञंतथाचकाश्यपसंहितायाम्। संयोगजश्चद्विविधंद्वितीयंविषमुच्यते। दूषीविषंतुसविषमविषङ्गरउच्यते ॥ संयोगजंकृत्रिमंविषंद्वितीयंस्वाभाविकंतच्चद्विविधम् ॥ ११११ ॥

कृत्रिम विष दोप्रकारका होता है उनमेंसे बिष युक्त दूषीबिषऔर दूसराबिष रहित गर कहाताहै ऐसाही काश्यप संहिता में कहाभी गया है कि संयोगज बिष दो प्रकारका है बिष सहित संयोगजको दूषी बिष और विष रहित संयोगज बिषको गर कहते हैं ॥ ११११ ॥

तत्रदूषीविषमभिधायगरंदर्शयितुमाह ॥

सौभाग्यार्थंस्त्रियःस्वेदरजोनानाङ्गजानमलान् । शत्रुप्रयुक्तांश्चगरान्प्रयच्छन्त्यन्नमिश्रितान् ॥ १११२ ॥

गर बिषका वर्णन ॥

स्त्रियां अपने सौभाग्य के लिये पुरुषों को अपना स्वेद रज तथा अन्य अनेक अंगोंका मल अन्न के साथ खिला देती हैं और शत्रुओं के दिये हुएभी गरों को अन्न में मिलाकर देती हैं ॥ १११२ ॥

गरकार्य्यमाह ॥

तैःस्यात्पाण्डुकृशोऽल्पाग्निर्ज्वरश्चास्योपजायते । मर्मप्रधमनाध्मानंहस्तयोःशोथसम्भवः ॥ जठरंग्रहणीदोषोयक्ष्मागुल्मक्षयज्वराः । एवम्विधस्यचान्यस्यव्याधेर्लिङ्गानि दर्शयेत् ॥ तैःगरैःस्वेदरजःप्रभृतिभिःज्वरश्चास्योपजायतइतिअपाकात्मर्मप्रधमनंमर्मव्यथाक्षयोधातुक्षयः ॥ १११३ ॥

गरविषका कार्य्य ॥

स्वेद तथा रज आदि गरबिषों से पांडुता कृशता मंदाग्नि ज्वर मर्मों में पीड़ा आध्मान हाथों में शोथ उदर ग्रहणी यक्ष्मा गुल्म धातुक्षय और अन्य नानाप्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ १११३ ॥

लूतानांजन्तुविशेषाणामुत्पत्तिनिरुक्तिसङ्ख्याश्चाह ॥

यस्माल्लूनंतृणंप्राप्तामुनेःप्रस्वेदविन्दवः । तेभ्योजातास्तथालूताइतिख्यातास्तुषोड़श ॥ अत्रसुश्रुते । विश्वामित्रोनृपवरःकदाचिदृषिसत्तमम् । वशिष्ठंकोपयामासगत्वाश्रमपदंकिल ॥ कुपितस्यमुनेस्तस्यललाटात्स्वेदविन्दवः । अपतद्दर्शनादेवह्यधस्तात्तीव्रवर्चसः ॥ लूनेतृणेमहर्षेस्तुधेन्वर्थेसम्भृतेऽपिच । ततोजातास्त्विमेघोरानानारूपामहाविषाः ॥ तासामष्टौकष्टसाध्यावर्ज्यास्तावत्यएवहि । तत्रत्रिमण्डलप्रभृतयोऽष्टौकष्टसाध्याः सौवर्णिकप्रभृतयोऽष्टावसाध्याः ॥ १११४ ॥

लूता (मकड़ी) ओंकी उत्पत्ति निरुक्ति और संख्या ॥

मुनि के स्वेद बिन्दु लून (कटेहुये) तृणों में प्राप्त हुये उनसे उत्पन्न हुई लूता कहलाती हैं यह १६ प्रकारकी हैं सुश्रुत में कहा है कि एक समय राजर्षि बिश्वामित्र ने बशिष्ठजी के आश्रम में जाकर उन्हें कुपित किया कुपित हुये बशिष्ठजी के ललाट से गिरेहुये स्वेद विन्दु गौकेलिये इकट्ठे किये गये तृणोंके ऊपर गिरे उनसे यह घोर नानाप्रकारके रूपवाली महा बिषवाली मकड़ी उत्पन्न हुई उनमें से त्रिमंडलादिक ८ कष्ट साध्य हैं और सौवर्णिक आदिक ८ असाध्य हैं ॥ १११४ ॥

तासांसामान्यानांदंशलक्षणमाह ॥

ताभिर्दष्टेदंशकोऽथप्रवृत्तिःक्षतजस्यच । ज्वरोदाहोऽतिसारश्चगदाःस्युश्चत्रिदोषजाः ॥ पिड़िकाविविधाकारामण्डलानिमहान्तिच । शोथामहान्तोमृदवोरक्ताःश्यावाश्च

लास्तथा ॥ सामान्यंसर्वलूतानामेतद्दंशस्यलक्षणम् । दंशकोथःदंशमध्येपूतिभावः । दंशमध्येतुयत्कृष्णंश्यावंवाजालकावृतम् । दग्धाकृतिभृशम्पाकक्लेदशोथज्वरान्वितम् ॥ दूषीविषाभिर्लूताभिस्तद्दष्टमितिनिर्दिशेत् ॥ १११५ ॥

मकड़ियों के काटने के सामान्य लक्षण ॥

मकड़ियोंके काटेहुयेव्रणमें दुर्गन्ध आतीहै तथा रुधिर बहताहै और ज्वर दाह अतीसार त्रिदोषज नाना प्रकार के रोग अनेक प्रकारकी पिड़िका बड़े २ मंडल तथा धुमैले अथवा रक्तवर्ण कोमल और चंचलबड़े२ शोथ होतेहैं यह सम्पूर्ण मकड़ियों के काटनेके सामान्य लक्षणहैं काटाहुआ स्थान कृष्ण अथवा धुमैला जालेसे व्याप्त क्लेद तथा स्वेदसे युक्त बहुत पकाहुआ तथा झुलसाहुआसा होय और ज्वर आवे ये लक्षण दूषीबिषा मकड़ियोंके काटने के हैं ॥ १११५ ॥

सौवर्णिकादयोऽष्टावसाध्याःप्राणहरास्तासांलक्षणमाह ॥

शोषःश्वेतासितारक्तापीताचपिड़िकाज्वरः । प्राणान्तिकोभवेद्दाहःश्वासहिक्काशिरोग्रहः ॥ १११६ ॥

सौवर्णिक आदि प्राणनाशक असाध्य ८ आठ मकड़ियों के लक्षण ॥

सौवर्णिक आदि मकड़ियोंके काटनेमें शोथ स्वेत कृष्ण रक्त तथा पीत वर्णकी पिड़िका ज्वर दाह श्वास हिचकी तथा शिरोग्रह होता है ॥ १११६ ॥

आखुविषलक्षणमाह ॥

आदंशाच्छोणितंपाण्डुमण्डलानिज्वरोऽरुचिः । लोमहर्षश्चदाहश्चाप्याखुदूषीविषार्दिते ॥ १११७ ॥

मूसेके बिषका लक्षण ॥

काटनेके स्थानसे रुधिर निकलना पांडुमंडल ज्वर अरुचि रोमांच और दाह यह लक्षण मूसेके विषके हैं ॥ १११७ ॥

प्राणहरमूषकविषकार्य्यमाह ॥

मूर्च्छाङ्गशोथवैवर्ण्यक्लेदशब्दाःश्रुतिज्वराः । शिरोगुरुत्वंलालासृक्छर्दिश्चासाध्यमूषकात् ॥ अंगशोथोऽत्रमूषकाकारोबोद्धव्यइतितन्त्रान्तरे ॥ १११८ ॥

प्राणनाशक मूसेके बिषके कार्य्य ॥

मूर्च्छा मूसेके समान शरीरमें शोथ बिवर्णता क्लेद बधिरता ज्वर शिरकाभारीपन और लार तथा रुधिरकी वमन यह असाध्य मूसेके बिषके लक्षण हैं ॥ १११८ ॥

कृकलासदष्टस्यलक्षणमाह ॥

शोथस्यकार्श्यमथवानानावर्णत्वमेवच । मोहोऽथवर्चसोभेदोदष्टस्यकृकलासकैः ॥ १११९ ॥

गिरगिटके काटेके लक्षण ॥

गिरगिटके काटनेसे कृश तथा नानावर्ण युक्त शोथ मोह और मलभेद होताहै ॥ १११९ ॥

वृश्चिक विषस्यलक्षण माह ॥

दहत्यग्निरिवादौतु भिनत्तीवोर्ध्वमाशुच । वृश्चिकस्यविषंयाति पश्चात्दंशेऽवतिष्ठते ॥ ११२० ॥

बिच्छूके बिषके लक्षण ॥

बिच्छूका बिष पहले अग्निके समान दाह तथा फाड़ने कीसी पीड़ाको उत्पन्न करके ऊपरको चढ़ता है और फिर पीछेसे काटने के स्थानमें स्थित रहता है ॥ ११२० ॥

असाध्यस्यवृश्चिकदष्टस्यलक्षणमाह ॥

दष्टोऽसाध्यैस्तुहृत्घ्राणरसनोपहतोनरः। मांसैःपतद्भिरत्यर्थंवेदनार्तोजहात्यसून् ॥ असाध्यैर्वृश्चिकैस्तेषामेवानुवृत्तैः हृदादिषुउपहतःहृदादिकार्यरहितोभवतिअत्यर्थंवेदनार्तइत्यन्वयः ॥ ११२१ ॥ बिच्छूके काटनेके असाध्य लक्षण ॥

हृदय नासिका तथा जिह्वामें असाध्य बिच्छुओं के काटनेसे अत्यन्त पीड़ा युक्त रोगी बहुत मांसके गलजानेपर मरजाता है ॥ ११२१ ॥

कणभदष्टस्यलक्षणमाह ॥

विसर्पःश्वयथुःशूलंज्वरश्छर्दिरथापिवा। लक्षणंकणभैर्दष्टेदंशश्चैवावशीर्य्यते ॥ कणभःकीटविशेषः ॥ ११२२ ॥

कणभ (कीटविशेष) के काटेके लक्षण ॥

बिसर्प शोथ शूल ज्वर छर्दि और काटे हुए स्थानका गलना यह लक्षण कणभके काटेके हैं ११२२ ॥

उच्चिटिंगदष्टस्यलक्षणमाह ॥

कृष्णलोमोच्चिटिंगेनस्तब्धलिंगोभृशार्त्तिमान्। दष्टःशीतोदकेनैवसिक्तान्यंगानिमन्यते ॥ कृष्णलोमाअधिकतरकृष्णरोमाउच्चिटिंगश्चीटाकीटविशेषः ॥ ११२३ ॥

चींटेके काटनेके लक्षण ॥

चींटेके काटनेसे अत्यन्त रोमांच स्तब्धता अत्यन्त पीड़ा औ अंग शीतल जलसे सिंचेहुए से मालूम होना यह लक्षण होते हैं ॥ ११२३ ॥

सविषमण्डूकदष्टस्य लक्षणमाह ॥

एकदंष्ट्रार्दितःशूनःसरुजःपीतकःसतट्। सनिद्रश्छर्दिमान्दष्टोमण्डूकैःसविषैर्भवेत् ॥ एकदंष्ट्रार्दितःस्वभावादेकयैवदंष्ट्रयादष्टोभवति ॥ ११२४ ॥

बिषदार मैढ़कके काटनेके लक्षण ॥

बिषदार मैढ़क प्रायः एकही दांतसे काटता है इसमें शोथ पीड़ा पीतवर्ण तृषा निद्रा और छर्दि होती है ॥ ११२४ ॥

मत्स्यविषस्य कार्य्यमाह ॥

मत्स्यास्तुसविषाःकुर्युर्दाहंशोथंरुजंतथा ॥ ११२५ ॥

मछली के बिषका कार्य्य ॥

बिषदार मछलियों के काटनेसे सूजन दाह तथा पीड़ा होती है ॥ ११२५ ॥

जलौकाविषकार्यमाह ॥

कण्डूंशोथंज्वरंमुर्च्छांसविषास्तुजलौकसः। कुर्य्युरितिशेषः ॥ ११२६ ॥

जोंकके बिषका कार्य्य ॥

बिषदार जोंकके काटनेसे खुजली शोथ ज्वर तथा मूर्च्छा होती है ॥ ११२६ ॥

गृहगोधिकाविषकार्यमाह ॥

विदाहंश्वयथुंतोदंप्रस्वेदंगृहगोधिकाः। कुर्य्युरितिशेषः ॥ ११२७ ॥

छिपकली के बिषके कार्य्य ॥

छिपकली के काटनेसे दाह सूजन सूई गड़नेकीसी पीड़ा तथा स्वेद होता है ॥ ११२७ ॥

शतपदीविषकार्यमाह ॥

दंशंस्वेदंरुजंदाहंकुर्याच्छतपदीविषम्। शतपदीगिजाईइतिलोके ॥ ११२८ ॥

खनखजूरेके बिषका कार्य्य ॥

खनखजूरे के काटेहुए स्थानमें स्वेद पीड़ा तथा दाह होता है ॥ ११२८ ॥

मशकविषकार्य्यमाह ॥

कण्डूमान्मशकैरीषच्छोथःस्यान्मन्दवेदनः ॥ ११२९ ॥

मच्छरके विषका कार्य्य ॥

मच्छरों के काटनेसे खुजली तथा स्वल्पपीड़ा युक्त कुछ शोथ होताहै ॥ ११२९ ॥

असाध्यमशकलक्षणमाह ॥

असाध्यकीटसदृशमसाध्यंमशकक्षतम्। असाध्यकीटसदृशंअसाध्यैःकीटैर्लूतादिभिः कृतंयत्क्षतंतत्सदृशवेदनम् ॥ ११३० ॥

असाध्य मच्छर के बिषका लक्षण ॥

असाध्य मकड़ी आदिके काटेके समान पीड़ायुक्त मच्छरोंका काटाहुआ असाध्य होताहै ११३०॥

मक्षिकादंशलक्षणमाह ॥

सद्यःसंस्राविणीश्यावादाहमूर्च्छाज्वरान्विता। पिड़िकामाक्षिकादंशेतासान्तुस्थगिका सुहृत्॥ तासामित्यादितासांसुश्रुतोक्तानांषण्णांमक्षिकाणांमध्येस्थगिकानाम्नीशीघ्रंप्राणं हरतीत्यर्थः ॥ ११३१ ॥

मक्खियों के काटेके लक्षण ॥

मक्खी के काटने में शीघ्रही बहनेवाली धुमैली और दाह मूर्च्छा तथा ज्वरयुक्त पिड़िका होतीहैं सुश्रुत की कही हुई छः प्रकारकी मक्खियों में से स्थगिका नाम मक्खी काटने से शीघ्रही प्राणों को हरती है ॥ ११३१ ॥

व्याघ्रादिविषाणांकार्यमाह ॥

चतुष्पाद्भिर्द्विपाद्भिर्वानखैर्दन्तैश्चयत्कृतम्। श्रूयतेपच्यतेतत्तुश्रवतिज्वरयत्यपि ॥ चतुष्पाद्भिःव्याघ्रादिभिःद्विपाद्भिःवनमनुष्यादिभिःश्रूयतेशूनंभवति ॥ ११३२ ॥

व्याघ्रादि के बिषों के कार्य्य ॥

व्याघ्रादि चौपाये और वनमनुष्यादि द्विपादोंके द्वारा नख तथा दांतोंसे कियाहुआ घाव सूजता है तथा पकताहै और ज्वर आताहै ॥ ११३२ ॥

विषोज्झितस्य लक्षणमाह ॥

प्रसन्नदोषंप्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकामंसममूत्रविट्कम् । प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टंवैद्योऽवगच्छेदविषंमनुष्यम् ॥ प्रसन्नदोषंप्रकृतिस्थदोषंशेषंसुगमम् ॥ ११३३ ॥

बिष रहितका लक्षण ॥

बातादि दोष तथा धातुओंका स्वाभाविक होना अन्नमें रुचि मल तथा मूत्रकी समता और वर्ण चेष्टा इन्द्री तथाचित्तकी प्रसन्नता यह बिष रहित के लक्षणहैं ॥ ११३३ ॥

अथ विषाणाञ्चिकित्सा ॥

तत्रस्थावरविषचिकित्सा । स्थावरेणविषेणार्त्तंनरंयत्नेनवामयेत् ॥ वमनेनसमंनास्ति यतस्तस्यचिकित्सितम् । विषमत्यर्थमुष्णञ्चतीक्ष्णंचकथितंयतः ॥ अतःसर्वविषेषूक्तः परिषेकस्तुशीतलः ॥औष्ण्यात्तैक्ष्ण्याद्विशेषेणविषंपित्तंप्रकोपयेत्॥वमितंसेचयेत्तस्माच्छीतलेनजलेनच ।पाययेन्मधुसर्पिर्भ्यांविषघ्नंभेषजंद्रुतम्॥भोक्तमम्लैरसंदद्यात्घर्षयेन्मरिचानिच । यस्ययस्यचदोषस्यपश्येल्लिंगानिभूरिशः ॥ तस्यतस्यौषधैःकुर्याद्विपरीतगुणैःक्रियाम् । शालयःषष्टिकाश्चैवकोरदूषाप्रियंगवः ॥ भोजनार्थेविषार्तानांऊर्ध्वञ्चाधश्चशोधनम् । प्रियंगुःकंगु ॥ मूलत्वक्पत्रपुष्पाणिबीजंचेतिशिरीषतः । गवांमूत्रेणसम्पिष्टंलेपाद्विषहरंपरम् ॥ दूषीविषार्त्तंसुस्निग्धमूर्ध्वञ्चाधश्चशोधनम् । पाययेदगदंमुख्यमिदंदूषीविषापहम् ॥ पिप्पलीध्यामकंमांसीलोध्रमेलासुवर्चिका । मरिचंवालकञ्चैलातथाकनकगैरिकम् ॥ क्षौद्रयुक्तःकषायोऽयंदूषीविषमपोहति । ध्यामकंरोहिषन्तदलाभेउशीरन्देयम् ॥ कनकगैरिकम्अत्यन्तमारक्तंगैरिकंसोनागेरूइतिलोके ॥ ११३४ ॥

बिषोंकी चिकित्सा । स्थावर बिषकी चिकित्सा ॥

स्थावर विषसे पीड़ित मनुष्य को यत्न पूर्वक बमन करावे क्योंकि बमन के सिवाय और कोई इसकी चिकित्सा नहीं है बिष अत्यन्त उष्ण तथा तीक्ष्ण होताहै इसलिये सम्पूर्ण बिषोंमें शीतल परिषेक कहा गयाहै बिषउष्णता तथा तीक्ष्णतासे पित्तको बिशेष कुपित करताहै इसलिये बमनकराकर शीतल जल सींचना चाहिये बिष खाये हुएको शीघ्रही घी तथा सहत के साथ बिषघ्न औषध देवे खट्टीवस्तु भोजन करावे और मिर्चैं रगड़वावे जिस २ दोष के लक्षण अधिक दिखाई देवें उसी २ दोष के बिपरीत गुणवाली औषधों से चिकित्सा करे बिष पीड़ितको भोजन के लिये शालिधान्य साठीकोदों तथा काकुन देवे और बमन बिरेचन के द्वारा ऊपर नीचे शोधन करे सिरस की जड़ छाल पत्ते फूल तथा बीजों को गोमूत्र में पीसकर लेप करनेसे बिषका नाश होताहै दूषीबिषसे पीड़ितको स्निग्धबमन तथा बिरेचन देवे पीपल रोहिष (इसके अभावमें खस) जटामांसी लोध इलायची सज्जी मिर्च सुगन्धबाला बड़ी इलायची और सुनहरी गेरू इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे दूषी बिषका नाशहोता है ॥ ११३४ ॥

अथ जंगमविषस्यचिकित्सा ॥

अभयांरोचनांकुष्ठमर्कपत्रंतथोत्पलम् । नलवेतसमूलानिगरलंसुरसान्तथा ॥

सकलिंगांसमञ्जिष्ठांसमन्ताञ्चशतावरीम्। शृंगाटकंसमंगांचपद्मकेसरमित्यपि ॥ कल्कीकृत्यपचेत्सर्पिःपयोदद्याच्चतुर्गुणम्।सम्यक्पक्केऽवतीर्णेचशीतेतस्मिन्विनिःक्षिपेत्॥ सर्पिस्तुल्यंभिषक्क्षौद्रंकृतरक्षम्निधापयेत् । विषाणिहन्तिदुर्गाणिगरदोषकृतानिच ॥ स्पर्शाद्धन्तिविषंसर्वंगरैरुपहतांत्वचम्। योगजन्तमकंकण्डुमांससादंविसंज्ञताम्॥ नाशयत्यञ्जनाभ्यंगपानवस्तिषुयोजितम्। सर्पकीटाखुलूतादिदष्टानांविषहृत्परम्॥ मृत्युपाशछेदिघृतम्॥ ११३५॥

जंगम बिषकी चिकित्सा॥

हड़ गोरोचन कूट आककेपत्ते उत्पल नरकुल तथा बेंतकीजड़ बिष तुलसी इन्द्रजौ मजीठ साईं सतावर सिंघाड़े लजालू कमलका जीरा इनके कल्कके द्वारा चौगुने दूधके साथ घी को बिधि पूर्वक पाककरे फिर अच्छे प्रकार पककर उतारकर शीतल होजानेपर घीकेसमान सहत मिलावे इसघीको अंजन अभ्यंग पान तथा वस्तिकर्म में व्यवहार करने से दुर्जयबिष गरदोष योगजबिष तमक श्वास खुजली मांससाद तथा अचैतन्यता का नाशहोता है इसके स्पर्शसे सब प्रकारके बिष नष्टहोते हैं और गरदोषसे बिगड़ीहुई त्वचा अच्छी होती है यह घृत सर्प कीट मूसा तथा मकड़ी आदिके काटे हुए बिषका अत्यन्त नाशकहै इतिमृत्युपाशच्छेदि घृत॥ ११३५॥

धतूरस्यशिफापेयाक्षीरेणपरिपेषिता। अङ्कोटवंशजाचापिश्वविषघ्नीप्रयत्नतः॥ रजनीयुग्मपतङ्गमञ्जिष्ठानागकेशरैः । शीताम्बुपिष्टैरालेपःसद्योलूतांविनाशयेत्॥ जीरकस्यकृतःकल्कोघृतसैन्धवसंयुतः। सुखोष्णोमधुनालेपोवृश्चिकस्यविषंहरेत्॥ गन्धमाघ्रायमृदितंसूर्य्यावर्त्तदलस्यतु । वृश्चिकेननरोविद्धः क्षणाद्भवतिनिर्विषः ॥ इति विषाधिकारः ॥ ११३६॥

धतूरा सहोरा अथवा बांसकीजड़को दूधके साथ पीसकर पीनेसे कुत्तेके बिषका नाशहोता है हल्दी दारुहल्दी पतंग मजीठ और नागकेसर इनसबको शीतल जलमें पीसकर लेपकरने से शीघ्रही मकड़ीका नाशहोता है पिसेहुएजीरेको घी और सेंधेनोनके साथ कुछ गरमकरके सहतमें मिलाकर लेपकरनेसे बिच्छूका बिषनष्टहोता है सूर्य्यावर्त्तकी पत्ती कोमलकर सूंघनेसे बिच्छूका बिष क्षणभरमें उतरजाताहै इति बिषाधिकार समाप्त॥ ११३६॥

अथ स्त्रीणांप्रदरादिरोगाणामधिकारमाह। तत्रप्रदराधिकारमाह॥

तत्रप्रदरस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह॥

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च। यानाध्यशोकादतिकर्षणाच्चभाराभिघाताच्छयनाद्दिवाच॥ तंश्लेष्मपित्तानिलसन्निपातैश्चतुःप्रकारंप्रदरंवदन्ति। अत्रवातपित्तयोरादौश्लेष्मणोऽभिधानंश्लैष्मिकेऽतिप्रवृत्तिबोधनार्थम्॥ ११३७॥

स्त्रियोंके प्रदर आदि रोगोंका अधिकार। प्रदरका अधिकार॥

प्रदरके दूरवाले कारण॥

विरुद्ध भोजन मद्य अजीर्ण में भोजन अजीर्ण गर्भपात अत्यन्त मैथुन घोड़े आदिकी सवारी मार्ग

गमन शोक अत्यन्त लंघनादिसे धातुक्षय भार चोट और दिनमें सोना इन सब कारणों से कफज पित्तज बातज और सन्निपातज इनभेदोंसे चारप्रकारका प्रदरहोता है यहां कफजके पहले कहनेसे कफजमें अधिक स्रावका बोधहोता है ॥ ११३७ ॥

प्रदरस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

असृग्दरंभवेत्सर्वंसाङ्गमर्द्दसवेदनम् । असृक्दरंअसृक्दार्य्यतेच्यव्यतेऽनेनेत्यसृग्दरम् ॥ अचप्रत्ययान्तम्सवेदनंसशूलम् ॥ ११३८ ॥

प्रदरका सामान्य लक्षण ॥

सम्पूर्ण प्रदरोंमें शरीरमें पीड़ा होती है और पीड़ा सहित रुधिर बहताहै ॥ ११३८ ॥

श्लैष्मिकप्रदरस्यलक्षणमाह ॥

आमंसपिच्छाप्रतिमंसपाण्डुपुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु । आमंअपक्करसयुक्तंसपिच्छाप्रतिमंसपिच्छाशाल्मल्यादिनिर्य्यासस्तत्तुल्यंपिच्छिलमित्यर्थः सपाण्डुसहशब्दो ऽत्रेषदर्थःतेनेषत्पाण्डुपुलाकतोयप्रतिमंकफात्तुपुलाकस्तुच्छधान्यंतद्धावनतोयतुल्यमित्यर्थःरुधिरंस्रवेदित्यर्थः ॥ ११३९ ॥

कफज प्रदरके लक्षण ॥

कफज प्रदरमें अपकरस युक्त सेमर आदिके गोंदके समान लसलसा कुछ पांडुवर्ण और तिन्नी के धोवनके समान रुधिर बहता है ॥ ११३९ ॥

पैत्तिकमाह ॥

सपीतनीलासितरक्तमुष्णंपित्तार्त्तियुक्तंभृशवेगिपित्तात् । सपीतनीलासितरक्तंपीतादिवर्णयुक्तंपित्तार्त्तियुक्तंदाहादियुक्तम्भृशवेगिबारंबारप्रवृत्तियुक्तम् ॥ ११४० ॥

पित्तज प्रदरके लक्षण ॥

पित्तज प्रदर में पीत नील कृष्ण तथा रक्तवर्ण युक्त उष्ण और पित्तकी दाहादि पीड़ा युक्त रुधिर बारम्बार बहता है ॥ ११४० ॥

वातिकमाह ॥

रूक्षारुणंफेनिलमल्पमल्पंवातात्सतोदंपिशितोदकाभंपिशितोदकाभंमांसधावनतोयाभम् ॥ ११४१ ॥

बातज प्रदरके लक्षण ॥

बातज प्रदरमें रूखा अरुण सूई गड़ने कीसी पीड़ा समेत और मांस के धोवन के समान रुधिर थोड़ा २ बहताहै ॥ ११४१ ॥

सन्निपातिकमाह ॥

सक्षौद्रसर्पिर्हरितालवर्णंमज्जप्रकाशंकुणपंत्रिदोषम् । तच्चाप्यसाध्यंप्रवदन्तितज्ज्ञा नतत्रकुर्वीतभिषक्चिकित्साम्॥सक्षौद्रसर्पिःक्षौद्रादिवर्णसहितंकुणपंशवगन्धि॥११४२॥

सन्निपातज प्रदर के लक्षण ॥

सन्निपातज प्रदर में सहत घी अथवा हरताल के समान वर्णयुक्त और मुर्देकीसी गन्ध युक्त मज्जा के समान रुधिर बहता है यह असाध्य है इसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ ११४२ ॥

रक्तस्यातिप्रवृत्तावुपद्रवानाह् ॥

तस्यातिवृत्तौदौर्बल्यंभ्रमोमूर्च्छामदस्तृषा । दाहःप्रलापःपाण्डुत्वतन्द्रारोगाश्चवात जाः ॥ वातजारोगाःआक्षेपकादयः ॥ ११४३ ॥

रुधिर के बहुत बहनेमें उपद्रव ॥

रुधिर के बहुत बहने में दुर्बलता भ्रम मूर्च्छा मद तृषा दाह प्रलाप पांडुता तंद्रा और आक्षेपादि बातज रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ११४३ ॥

असाध्यांप्रदरव्याधिमतीमाह् ॥

शश्वत्स्रवन्तीमास्रावंतृष्णादाहज्वरान्वितम् । दुर्बलांक्षीणरक्ताञ्चतामसाध्यांविव र्ज्जयेत् ॥ ११४४ ॥ असाध्य प्रदरवाली स्त्रीके लक्षण ॥

निरन्तर रुधिर के स्रावबाली तृषा दाह तथा ज्वर युक्त दुर्बल और क्षीण रुधिरवाली प्रदर वाली स्त्रीको असाध्य जानना चाहिये ॥ ११४४ ॥

चिकित्सानिवृत्त्यर्थंशुद्धार्त्तवलक्षणमाह ॥

मासान्निःपिच्छिदाहार्त्तिपञ्चरात्रानुबन्धिच । नैवातिबहुनात्यल्पमार्त्तवंशुद्धिमादिशे त्॥ निःपिच्छदाहार्त्तिअपिच्छिलमदाहमशूलम् । एतेनविकृतवातादिलक्षणरहितमित्यर्थः पञ्चरात्रानुबन्धिप्रभूतप्रवृत्त्यात्रिरात्रानुबन्धिततोमध्यमप्रवृत्त्यापञ्चरात्रानुबन्धिततः प रंकस्याञ्चिच्चेत्स्रवतितदास्वल्पप्रवृत्त्याषोड़शदिनानियावत्तदपिशुद्धमेव ॥ ११४५ ॥

चिकित्सा की निवृत्ती के लिये । शुद्ध आर्तवके लक्षण ॥

एक मासके उपरान्त दाह तथा पीड़ारहित अपिच्छिल न बहुत अधिक और न बहुतथोड़ा पांचरा- त्रितक रुधिर बहै वह शुद्ध है बहुत बहने से तीन दिन कुछ कम बहने से पांच दिन और बहुत कम बहने से किसी२ के १६ दिन तक बहताहै यह भी शुद्ध कहलाताहै ॥ ११४५ ॥

प्रदरस्यचिकित्सा ॥

दध्नासौवर्चलंजाजीमधुकंनीलमुत्पलम् । पिबेत्क्षौद्रयुतंनारीवातासृग्दरशान्तये ॥ चौहारजीरायष्ठीमधुनीलकमलपुष्पाण्येषांप्रत्येकं माषद्वयम्सर्वमेकीकृत्यदध्नाकर्षचतु ष्टयेनपिष्ट्वातत्रमाषाष्टकंमधुक्षिप्त्वापिबेत । मधुकंकर्षमेकंतुकर्षैकाञ्चसितांतथा । तण्डु लोदकसम्पिष्टालोहितेप्रदरेपिबेत् ॥ बलाकङ्कतिकाख्यायातस्यामूलंसुचूर्णितम् । लो हितप्रदरेखादेच्छर्करामधुसंयुतम् ॥ शुचिस्थानेव्याघ्रनख्यामूलमुत्तरदिग्भवम्नीतमुत्त रफाल्गुन्यांकटिबद्धंहरेदसृक् ॥ व्याघ्रनखीबघनहीइतिलोकेरसाञ्जनंतण्डुलकस्यमूलं क्षौद्रान्वितंतण्डुलतोयपीतम् । असृग्दरंसर्वभवंनिहन्तिश्वासञ्चभार्गीसहनागरेण ॥ तण्डुलस्यतण्डुलीयकस्यअशोकवल्कलक्वाथशृतंदुग्धंसुशीतलम् । यथाबलंपिबेत्प्रात स्तीव्रासृग्दरनाशनम् ॥ अशोकवल्कलपलंद्वात्रिंशत्पलसम्मितेनजलेन । निःक्वाथ्यशे षंरक्षत्पलाष्टकम्क्वाथम् ॥ तेनक्वाथेनसहक्षीरंपलाष्टकमितंविपचेत्तत्रदुग्धावशेषःकर्त्त व्यःतन्मध्येपलचतुष्ठयमितंदुग्धंपेयंवह्निबलापेक्षया । कुशमूलंसमुद्धृत्यपेषयेत्तण्डुला

म्बुना ॥ एतत्पीत्वात्र्यहंनारीप्रदरात्परिमुच्यते । क्षौद्रयुक्तंफलरसमौदुम्बरभवंपिवेत् ॥ असृग्दरविनाशायसशर्करपयोऽन्नभुक् । अन्नमोदनम्‌अलाबूफलचूर्णस्यशर्करासहित स्यच ॥ मधुनामोदकंकृत्वाखादेत्प्रदरशान्तये ॥ ११४६ ॥

प्रदरकी चिकित्सा ॥

कालानोन जीरा मुलहठी नीलकमल इनसबको दो२ मासे लेकर चार तोले दहीमें पीसे और उसमें आठमासे सहत मिलाकर पिये इससे बातज प्रदरनष्ट होताहै १)तोले मुलहठी और १) तोले शक्कर को चावलों के धोवन में पीसकर,रक्त प्रदरमें पिये ककही की जड़ को पीसकर सहत और शक्कर के साथ खाने से रक्त प्रदर नष्ट होताहै उत्तर दिशामें पवित्र स्थान में उत्पन्न हुई बघनखीको उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र में लाकर कमरमें बांधने से प्रदरका नाश होताहै रसौत और चौराही कीजड़ को सहत मिलाकर चांवलों के धोवन के साथ पीने से संपूर्ण प्रदर नष्ट होतेहैं सोंठ के साथ भारंगी को खाने से श्वास का नाश होताहै चार तोले अशोककीछालको १२८ तोले जल में काढ़ा करे चौथाई बाकी रहै तब उस काढ़के साथ ३२ तोले दूध को पकावे जब केवल दूध बाकी रहै तब उतारले इस दूधको अग्नि बलके अनुसार पीनेसे तीव्र प्रदरका नाश होताहै कुशाकी जड़को चावल के धोवन के साथ पीसकर तीन दिन पीने से प्रदरका नाश होताहै गूलर के रसमें सहत मिलाकर पिये और दूध शक्कर के साथ भातखाय इससे प्रदर नष्ट होताहै लौकीके बीज के चूर्णको शक्कर और सहतके साथ मिलाकर लड्डूबनावे इनके खाने से प्रदर नष्ट होता है ॥ ११४६ ॥

दार्वीरसाञ्जनकिराततवृषाब्दविल्वसक्षौद्रचन्दनदिनेशभवप्रसूनैः । क्वाथःकृतोमधुयुतोविधिनानिपीतोरक्तंसितञ्चसरुजंप्रदरंनिहन्ति ॥ दार्व्यादिक्वाथःरक्तपित्ताधिकारोक्तं हितंकूष्माण्डखण्डकम् । इतिप्रदरनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ११४७ ॥

दारुहल्दी रसौत चिरायता अडूसा मोथा बेल चन्दन और आकके फूल इनके काढ़ेमें सहत मिलाकर पीने से पीड़ा सहित श्वेत और रक्तप्रदर का नाश होता है इति दार्व्यादि क्वाथ रक्त पित्ताधिकारमें कहाहुआ कूष्मांड खंडप्रदर में हितहै इति प्रदर निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥११४७॥

सोमरोगाधिकारः । तत्रसोमरोगस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

स्त्रीणामतिप्रसङ्गेनशोकाच्चापिश्रमादपि । अतीसारकयोगाद्वागरयोगात्तथैवच ॥ आपःसर्वशरीरस्थाःक्षुभ्यन्तिप्रस्रवन्तिच । तस्यास्ताःप्रच्युताःस्थानान्मूत्रमार्गंव्रजन्तिहि ॥ ११४८ ॥

सोमरोगका अधिकार सोमरोगकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

वहुत मैथुन शोक श्रम अतीसार के योग और गरदोषसे स्त्रियोंके सम्पूर्ण शरीरमें स्थित जल क्षुभित होकर बहताहुआ मूत्रमार्गसे निकलता है ॥ ११४८॥

तस्यलक्षणमाह ॥

प्रसन्नाविमलाःशीतानिर्गन्धानीरुजाःसिताः । स्रवन्तिचातिमात्रन्तासानशक्नोति दुर्वला ॥ वेगन्धारयितुन्तासांनविन्दतिसुखंक्वचित् । शिरःशिथिलतातस्यामुखंतालूच शुष्यति॥मूर्च्छाजृम्भाप्रलापश्चत्वग्रूक्षाचातिमात्रतः । भक्ष्यैर्भोज्यैश्चपेयैश्चनतृप्तिंलभ

तेसदा॥ सन्धारणाच्छरीरस्यताप्यायःसोमसंज्ञिताः। ततःसोमक्षयात्स्त्रीणांसोमरोगइति स्मृतः॥ ११४९॥

सोमरोगका लक्षण॥

सोमरोगमें स्वच्छ निर्मल शीतल गन्ध और पीड़ा रहित तथा श्वेतवर्ण जल बहताहै और वह स्त्री दुर्बल होकर जलके बेगको रोकनहीं सकती कहीं सुख नहीं पाती उसका शिर शिथिल होजाता है मुख तथा तालु सूखता है मूर्च्छा जम्भाई प्रलाप तथा अत्यन्त त्वचाकी रूक्षता होती है उसे भक्ष्य भोज्य और पेय आदि किसी से भी तृप्ति नहीं होती शरीरके धारण करने वाली सोमनाम धातुओं के क्षयसे इसरोगको सोम कहते हैं॥ ११४९॥

अथ सोमरोगस्यचिकित्सा॥

कदलीनांफलंपक्वंधात्रीफलरसंमधु। शर्करासहितंखादेत्सोमधारणमुत्तमम्॥ माषचूर्णंसमधुकंविदारींमधुशर्कराम्। पयसापाययेत्प्रातःसोमधारणमुत्तमम्॥ सएवसरुजःसोमःस्रवेन्मूत्रेणचेन्मुहुः। तत्रैलापत्रचूर्णेनपाययेत्तरुणीसुराम्॥ जलेनामलकीबीजकल्कंसमधुशर्करम्। पिवेद्दिनत्रयेणैवश्वेतप्रदरनाशनम्॥ तक्रौदनाहाररतासंपिवेन्नागकेशरम्। त्र्यहंतक्रेणसंपिष्टंश्वेतप्रदरशान्तये॥ ११५०॥

सोमरोगकी चिकित्सा॥

केलेका पक्काफल आमलेका रस और सहत इनको शक्कर के साथ खाने से सोमरोग नष्ट होता है उर्द मुलहठी तथा बिदारीकन्द के चूर्ण को सहत और शक्कर मिलाकर दूधके साथ प्रातःकाल पीनेसे सोमरोग नष्ट होता है जो पीड़ा सहित मूत्रके साथ बारम्बार सोम बहै तो इलायची और तेजपातका चूर्ण मिलाकर बारुणी मदिरा को पिलावे पिसे हुये आमले के बीजों को सहत और शक्कर मिलाकर जलके साथ पीनेसे श्वेत प्रदर नष्ट होताहै नागकेसर को मट्ठेके साथ पीसकर पिये और मट्ठा भात खाय इस से तीनदिन में श्वेत प्रदर नष्ट होताहै॥ ११५०॥

अत्रैवमूत्रातीसारस्यलक्षणं चिकित्साञ्चाह॥

सोमरोगेचिरञ्जातेयदामूत्रमतिस्रवेत्। मूत्रातीसारंतंप्राहुर्बलविध्वंसनम्परम्॥ इतिसोमरोगमूत्रातीसाराधिकारः॥ ११५१॥

मूत्रातीसार का लक्षण॥

सोमरोग के पुराने होजानेपर जो बहुत मूत्र निकले उसे मूत्रातीसार कहतेहैं यह अत्यन्त बल-नाशकहै इति सोमरोग मूत्रातीसराधिकार समाप्त॥ ११५१॥

अथ योनिरोगाधिकारः। तत्रयोनिरोगाणांनिदानान्याह॥

मिथ्याहारविहाराभ्यांदुष्टैर्दोषैःप्रदूषितात्। आर्त्तवाद्बीजतश्चापिदैवाद्वास्युर्भगेगदाः॥ ११५२॥ योनिरोगका अधिकार। योनिरोगों के निदान॥

बिपरीत आहार बिहारों के द्वारा कुपित दोषों से दूषित रजसे अथवा दैवयोग से योनि में रोग उत्पन्न होते हैं॥ ११५२॥ योनिरोगाणां नामान्याह॥

उदावृत्तातथावन्ध्याविप्लुताचपरिप्लुता। वातलायोनिजोरोगोवातदोषेणपञ्चधा॥

पञ्चधापित्तदोषेणतत्राद्यौलोहिताक्षरा। प्रस्रंसिनीवामनीचपुत्रघ्नीपित्तलातथा॥ अत्या नन्दाकर्णिनीचचरणानन्दपूर्विका। अतिपूर्वापिसाज्ञेयाश्लेष्मलाचकफादिमाः। षण्डा ण्डिनीचमहतीसूचीवक्त्रात्रिदोषिणी॥ पञ्चैतायोनयःप्रोक्ताःसर्वदोषप्रकोपतः ११५३॥

योनिरोगों के नाम॥

उदावर्त्ता बंध्या बिप्लुता परिप्लुता और बातला यह पांच बातज योनि रोग हैं लोहितक्षरा प्रस्रंसिनी बामनी पुत्रघ्नी और पित्तला यह पांच पित्तज योनिरोग हैं अत्यानन्दा कर्णिनी आनन्द-चरणा अतिचरणा और श्लेष्मिला यह पांच कफज योनिरोगहैं षण्डा अण्डिनी महती सूचीवक्त्रा और त्रिदोषिणी यह पांच सन्निपातज योनिरोग हैं॥ ११५३॥

अथ तासांलक्षणान्याह॥

सफेनिलमुदावृत्तारजःकृच्छ्रेणमुञ्चति। वन्ध्यानिरार्त्तवाज्ञेयाविप्लुतानित्यवेदना॥ परिप्लुतायांभवतिग्राम्यधर्मेरुजाभृशम्। वातलाकर्कशास्तब्धाशूलानिस्तोदपीडितः॥ चतसृष्वपिचाद्यासुभवन्त्यनिलवेदनाः। अनिलवेदनास्तोदादयवातलायांत्वति॥ वा तवेदनाबोद्धव्याः। वातलेत्यन्वर्थात्॥ ११५४॥

इनके लक्षण॥

जिस योनिसे कष्ट सहित फेनायुक्त रज निकले उसे उदावर्त्ता आर्तव रहित योनिको बंध्या सदैव पीड़ा युक्त योनिको बिप्लुता मैथुन के समय अत्यन्त पीड़ा युक योनिको परिप्लुता और क-र्कश स्तब्ध शूल तथा सूई गड़ने कीसी पीड़ा युक्त योनिको बातला कहतेहैं पहली चारयोनियों में भी तोद आदि बातज पीड़ा होतीहै परन्तु बातला में अधिक होती है॥ ११५४॥

सदाहंक्षरतेरक्तंयस्याःसालोहिताक्षरा। प्रस्रंसिनीसंस्रतेचक्षोभितादुष्प्रजायिनी॥ क्षोभिताविमर्दितासंस्रतेस्वस्थानाच्यवतेदुष्प्रजायिनीदुष्टप्रजननशीला। सवातमुद्गिरे द्वीर्य्यंवामनीरजसायुतम्॥ स्थितंहिपातयेद्गर्भंपुत्रघ्नीरक्तसंस्रवात्। पुत्रशब्दोऽत्राप त्योपलक्षकः॥ अत्यर्थंपित्तलायोनिदाहेपाकज्वरान्विता। चतसृष्वपिचाद्यासुपित्तलिङ्गो च्छ्रयोभवेत्॥ ११५५॥

जिस योनिसे दाहसहित रुधिर निकले उसे लोहितक्षरा मलनेसे अपने स्थानसेच्युत होनेवाली तथा दुःख सहित प्रसव करने वाली योनिको प्रस्रंसिनी जिस योनि से बायु सहित तथा रजसे मिला हुआ वीर्य्य निकले उसे बामनी जिस योनिमें स्थित हुआ गर्भ रुधिर के बहने से पतित होजाय उसे पुत्रघ्नी और दाह पाक तथा ज्वर युक्त योनिको पित्तला कहतेहैं पहली भी चार योनियोंमें पित्तके लक्षण होते हैं॥ ११५५॥

अत्यानन्दानसन्तोषंग्राम्यधर्मेणविन्दति। कर्णिन्यांकर्णिकायोनौश्लेष्मासृग्भ्यांप्रजाय ते॥ कर्णिकामांसस्यकर्णिकाकारोग्रन्थिः। मैथुनेचरणापूर्वंपुरुषादतिरिच्यतेअतिरिच्यतेर जोमुञ्चतीत्यर्थःबहुशश्चातिचरणास्तयोर्वीर्यंनतिष्ठति॥ बहुशःवारंवारमतिरिच्यतेतयोः

चरणातिचरणयोः । श्लेष्मलापिच्छिलायोनिःकण्डूयुक्तातिशीतला । चतसृष्वपिचाद्यासुश्लेष्मलिंगोच्छ्रयोभवेत् ॥ ११५६ ॥

जो योनि मैथुन से संतुष्ट न होय उसे अत्यानन्दा जिस योनिमें कफ तथारुधिरके द्वारा कर्णिका के समान मांसकी गांठ उत्पन्न होवे उसे कर्णिनी जो योनि मैथुन के समय पुरुष के पहलेही रजका त्याग करे उसे आनन्दचरणा जो योनि बहुत मैथुन करने से बारंबार स्खलितहोय उसे अतिचरणा (चरणा तथा अतिचरणा इनदोनों में वीर्य्य नहीं ठहरता) और लसलसी खुजली युक्त तथा अत्यन्त शीतल योनिको श्लेष्मला कहतेहैं पहली चार योनियोंमें भी कफके लक्षण होते हैं॥ ११५६॥

अनार्त्तवाऽस्तनीषण्डीखरस्पर्शाचमैथुने । अस्तनीईषतूस्तनौयस्यासाअत्रलक्ष्याषण्डी ॥ महामेढ्रग्रहीतायाबालायाअण्डिनीभवेत् । महामेढ्रःपुरुषस्तेनग्रहीतायाःबालायाःसूक्ष्मयोनिच्छिद्रायाः अण्डिनीअण्डवल्लम्बमानायोनिर्भवति । विवृतासूचीमाह ॥ विवृतातिमहायोनिःसूचीवक्त्रातिसंवृता । त्रिदोषजमाह । सर्वलिङ्गसमुत्थानंसर्वदोषप्रकोपजम् । चतसृष्वपिचाद्यासुसर्वलिंगनिदर्शनम् ॥ ११५७ ॥

जिस स्त्री के रज न होय स्तन छोटेहोंय और मैथुन के समय योनि खुरखुरी मालूम होय उसे षंडी कहतेहैं योनिके छोटे छिद्रवाली स्त्रीके साथ बड़े लिंगवाले पुरुषके भोगकरने से अंडे के समान योनिलटक आती है इसे अंडिनी कहतेहैं बहुत बड़ी योनिको विवृता और बहुत छोटे मुख वाली योनि को सूचीवक्त्राकहते हैं त्रिदोषज योनिरोग में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं पहली चार योनियोंमें भी तीनों दोषोंके लक्षण होतेहैं॥ ११५७ ॥

अथासाध्यांयोनिमाह ॥

पञ्चासाध्याभवन्तीहयोनयःसर्वदोषजाः । पञ्चषण्डीप्रभृतयः ॥ ११५८ ॥

असाध्य योनिके लक्षण ॥

षंडी आदि पांचों त्रिदोषज योनि असाध्य हैं॥ ११५८ ॥

अथयोनिकन्दस्यनिदानमाह ॥

दिवास्वप्नादतिक्रोधात्व्यायामादतिमैथुनात् । क्षताच्चनखदन्ताद्यैर्वाताद्याःकुपिता यथा ॥ यथास्वनिदानंकुपितावाताद्याः ॥ ११५९ ॥

योनिकन्दकानिदान ॥

दिन में सोने से बहुत क्रोध से व्यायाम से बहुत मैथुनसे और नख तथा दांत आदिके लगने से अपने २ कारणों के द्वारा कुपितहुए बातादि दोष योनिकन्द को उत्पन्न करते हैं ॥ ११५९ ॥

रूपमाह ॥

पूयशोणितसङ्काशंलकुचाकृतिसन्निभम् । जनयन्तियदायोनौनाम्नाकन्दःसयोनिजः॥ लकुचाकृतिसन्निभंलकुचाकारंगुड़कमत्रविशेष्यंबोध्यम् ॥ ११६० ॥

योनिकन्दका लक्षण ॥

वातादिक दोष पीप तथा रुधिर के समान वर्ण युक्त और बड़हल के समान आकृति युक्त गोला सा योनिमें उत्पन्न करते हैं उसे योनिकन्द कहते हैं ॥ ११६० ॥

वातजादिभेदेनरूपमाह ॥

रूक्षंविवर्णंस्फुटितंवातिकंतंविनिर्दिशेत् । दाहरागज्वरयुतंविद्यात्पित्तात्मकंतुतम् ॥ तिलपुष्पप्रतीकाशंकण्डूमन्तंकफात्मकम्।सर्वलिंगसमायुक्तंसन्निपातात्मकंवदेत् ११६१

बातज आदिभेदसे योनिकन्दके लक्षण ॥

रूखा विवर्ण फटाहुआ योनिकन्दबातज दाहरक्तवर्ण तथा ज्वर युक्त योनिकन्द पित्तज तिलके फूल के समान तथा खुजली युक्त योनिकन्द कफज और तीनों दोषों के लक्षणों से युक्त योनिकन्द सन्निपातजहोता है ॥ ११६१ ॥

अथ योनिरोगाणांचिकित्सातत्रबन्ध्याचिकित्सा ॥

तस्यालक्षणमाह । बन्ध्यानष्टार्त्तवाज्ञेयेति । ततःप्रथमतोनष्टार्त्तवचिकित्सा । आर्त्त वादर्शनेनारीमत्स्यान्सेवेतनित्यशः । काञ्जिकंचतिलान्माषानुदश्विच्चतथादधि ॥ इ क्ष्वाकुःवीजदन्तीचपलागुड़मदनकिण्वयवशूकैः। सस्नुकक्षीरैर्वर्तिर्योनिगताकुसुमसंजन नी ॥ इक्ष्वाकुकटुतुम्बी।चपलापिप्पली।मदनोमयनफलम् । किण्वंसुरावीजंपीतंज्योतिष्म तीपत्रंस्वर्ज्जिकोग्रासनम्। त्र्यहंशीतेनपयसापिष्टंकुसुमंजनयेद्ध्रुवम् ॥ ज्योतिष्मतीकट भीवृक्षविशेषःकरहीइतिलोके।अथवाउमिजिनीमालकंगुनीइतिचअसनं आसनेतिलोके विजयसारःइतिचपयसादुग्धेन ॥ ११६२ ॥

योनिदोषों की चिकित्सा । बंध्याकी चिकित्सा ॥

नष्ट हुये आर्त्तववाली स्त्री को बंध्या कहते हैं आर्त्तव के नष्टहोनेपर स्त्री मछली कांजी तिल उर्द मट्ठा तथा दही का नित्य सेवनकरे कड़वी लौकी के बीज दन्ती पीपल गुड़ मैनफल सुराबीज और जवाखार इनसबको थूहड़ के दूधमें मिलाकर बत्ती बनावे इसबत्ती को योनि में रखनेसे रज निक- लता है मालकांगनी की पत्ती सज्जी बच और बिजयसार इनसबको शीतल दूधमें पीसकर पीनेसे तीनदिन में निस्संदेह आर्त्तव उत्पन्न होताहै ॥ ११६२ ॥

अथ बन्ध्याचिकित्सा ॥

बलासिताढ्यामधुकंचजीवकंतथार्षभंवैगजकेशरंच।एतन्मधुक्षीरघृतैर्निपीतंबन्ध्यासुपु त्रंनियतंप्रसूते॥अश्वगन्धाकषायेण सिद्धंदुग्धंघृतान्वितम्।ऋतुस्नातांगनाप्रातःपीत्वाग र्भंदधातिहि ॥ पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायामूलंदुग्धेनकन्यया । पिष्टंपीत्वाऋतुस्नातागर्भंधत्तेन संशयः ॥ कुरण्टमूलंधातक्याःकुसुमानिवटांकुराः । नीलोत्पलंपयोयुक्तंमेतद्गर्भप्रदंध्रुवम्॥ कुरण्टमूलंपीतपुष्पकटसरैया । याऽबलापिबतिपार्श्वपिप्पलंजीरकेणसहितंहिताशनी । श्वेतयाविशिखपुङ्खयायुतंसासुतंजनयतीहनान्यथा ॥ पार्श्वपिप्पलीगजहडइतिलोकेश्वे तपुष्पयाशरपुङ्खयासह । पत्रमेकंपलाशस्यपिष्ट्वादुग्धेनगर्भिणी । पीत्वापुत्रत्वमाप्नोति वीर्य्यवन्तंनसंशयः ॥ शूकरशिम्बीमूलंमध्यंवादधिफलस्यसपयस्कम् । पीत्वाथोभयलिं गीवीजंकन्यांनसूतेस्त्री ॥ शूकरशिम्बीसुअरासेवीदधिफलःकैथतस्यमज्जाभवलिंगीपञ्च

गुरिया । पुत्रकमञ्जरिमूलंविष्णुक्रान्तेशलिंगिनीसहिता । एतद्गर्भेऽष्टदिनंपीत्वाकन्यां नसर्वथासूते ॥ पुत्रमञ्जरीपतजियातस्याःमूलंईशलिंगीपञ्चगुलिया ॥ ११६३ ॥

बंध्याकी चिकित्सा ॥

बरियारा मुलहठी जीवक ऋषभक नागकेसर और मिश्री इनको सहत घी तथा दूधकेसाथ पीनेसे बंध्या निस्सन्देह पुत्रको उत्पन्न करती है असगंध के काढ़े के द्वारा पाक कियेहुए दूधमें घी मिलाकर ऋतुस्नाता स्त्री प्रातःकाल पीने से गर्भ को धारण करती है ऋतुस्नाता स्त्री पुष्य नक्षत्र में उखाड़ी हुई लक्ष्मणाकी जड़को घीकारके रसके साथ पीसकर दूधके साथ पीने से निस्सन्देह गर्भको धारण करतीहै पीली कटसरैयाकी जड़ धवके फूल बरगदके अंकुर और नीलोत्पल इनको दूधके साथ पीने से निस्सन्देह गर्भ रहताहै पार्श्व पिप्पल (गजहड़) जीरा और सफेद फूलका सफोंका इनसबको पीसकर पीनेसे और पथ्य भोजन करने से निस्सन्देह गर्भ रहताहै गर्भिणी स्त्री ढाकके एक पत्तेको दूध के साथ पीसकर पीने से बलवान् पुत्रको उत्पन्न करतीहै सूअर सेंमी की जड़ कैथेकीगूदी और शिवलिंगी के बीज इनसबको दूधके साथ पीने से. स्त्री के कन्या नहीं होती पतिजिया की जड़ बिष्णुक्रांता और शिवलिंगी इनसबको आठ दिन गर्भमें पीने से कन्या नहीं होती है ॥ ११६३ ॥

गर्भप्रदभेषजकथनावसरेगर्भाजनकभेषजमाह ॥

पिप्पलीविड़ंगटङ्कणसमचूर्णंयापिबेत्पयसा । ऋतुसमयेनहितस्यागर्भःसञ्जायतेक्कापि ॥ आरनालपरिपेषितंत्र्यहंयाजयाकुसुममत्तिपुष्पिणी । सतुपुराणगुड़मुष्टिसेविनीसन्दधातिनहिगर्भमंगना ॥ ११६४ ॥

गर्भको न होनेदेने वाली औषध ॥

पीपल बायबिड़ंग और सुहागे के चूर्णको जो स्त्री ऋतुकाल में दूधके साथ पीती है उसके कभी गर्भ नहीं रहता जाहीके फूलको आरनाल में पीसकर ऋतु समयमें पुराने गुड़के साथ चार २ तोले तीन दिन खाने से गर्भ नहीं रहताहै ॥ ११६४ ॥

तासुयोनिषुचाद्यासुस्नेहादिक्रमइष्यते । वस्त्यभ्यंगपरिषेकप्रलेपपिचुधारणम् ॥ वस्तिरत्रोत्तरवस्तिःपिचुःफाहाइतिलोके ॥ ११६५ ॥

वातज योनिरोगोंमें पहले स्नेहादिका क्रम करना चाहिये उत्तर बस्ति अभ्यंग परिषेक लेप और फाहा रखना यह सब क्रम करे ॥ ११६५ ॥

क्रमेणचिकित्सा ॥

नतंवार्त्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः । तिलतैलंपचेन्नारीपिचुमस्यविधारयेत् ॥ विप्लुतायांसदायोनौऽयथातेनप्रशाम्यति । नतंतगरंवार्त्ताकिनीबृहती ॥ वातलांकर्कशांस्तब्धामल्पस्पर्शांतथैवच । कुम्भीस्वेदैरुपचरेदन्तर्वेश्मनिसंवृते ॥ धारयेद्वापिचुर्योनौतिलतैलस्यसासदा ॥ ११६६ ॥

योनिरोगोंकी क्रमसे चिकित्सा ॥

तगर बनभाटा कूट सेंधानोन और देवदारु इनके द्वारा पाक किये हुए तिलके तेलका फाहा रखने से विप्लुता योनिकी पीड़ा नष्ट होतीहै कर्कश स्तब्ध तथा थोड़े स्पर्शवाली बातला योनिवाली को ढकेहुए घरमें कुंभी स्वेद देवे अथवा सदैव तिलके तेल का फाहा रक्खे ॥ ११६६ ॥

पित्तलानांचयोनीनांसेकाभ्यंगपिचुक्रियाः।शीताःपित्तहराःकार्य्याःस्नेहनार्थंघृतानिच॥ प्रस्रंसिनींघृताभ्यक्तांक्षीरस्विन्नांप्रवेशयेत् ॥ पिधायवेशवारेणततोबन्धंसमाचरेत् । शुण्ठीमरिचकृष्णाभिर्धान्यकांजिकदाड़िमैः ॥ पिप्पलीमूलसंयुक्तैर्वेशवारःस्मृतोवुधैः । धात्रीरसंसितायुक्तंयोनिदाहेपिवेत्सदा ॥ सूर्य्यकान्ताभवंमूलंपिवेद्यातण्डुलाम्बुना । योन्यांतुपूयस्राविण्यांशोधनद्रव्यनिर्मितैः ॥ सगोमूत्रैःसलवणैःपिण्डैःसंपूरणंहितम् । शोधनद्रव्याणिनिम्बपत्रादीनि ॥ दुर्गन्धांपिच्छिलांवापिचूर्णैःपञ्चकषायजैः । पूरयेद्वारयेद्राजवृक्षादिक्वथिताम्बुना ॥ पञ्चकषायाःवचावासापटोलप्रियंगुनिम्बाःराजवृक्षादिर्यथा धनवहेरा ॥ ११६७ ॥

पित्तलायोनिमें परिषेक अभ्यंग और फाहेका व्यवहार करनाचाहिये और पित्तघ्न शीतल क्रिया तथा स्नेहन के लिये घृतका व्यवहार करे प्रस्रंसिनी रोगमें घी मलकर और दूधकेद्वारा स्वेददेकर योनिको अपने स्थानमें प्रवेश करे फिर वेशवार के द्वारा ढककर बांधदे२ सोंठ मिर्च पीपल धनियां कालाजीरा अनार पीपलामूल इनसबको वेशवार कहते हैं योनिदाहमें शक्कर मिलाकर आमलेका रस अथवा सूर्य्यकान्ताकीजड़ को चावलोंके धोवनके साथ पिये योनि से पीप बहने में नींवकीपत्ती आदि शोधन औषध सेंधानोन और गोमूत्र इनसबकी पिंडिका बनाकर योनिमें भरे पिच्छिलतथा दुर्गन्धित योनि में बच अडूसा परवल प्रियंगु तथा नींबके चूर्णको अथवा अमलतास आदि गणके काढ़ेको भरे ॥ ११६७ ॥

पिप्पल्यामरिचैर्माषैःशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः ॥ वर्तिस्तुल्याप्रदेशिन्यायोनौश्लेष्मविशोधिनी ॥ तुल्याप्रदेशिन्यादैर्घ्येणपरिणाहेनचकर्णिन्यांवर्त्तयोदेयाः शोधनद्रव्यनिर्मिताः । गुडूचीत्रिफलादन्तीक्वथितोदकधारया ॥ योनिंप्रक्षालयेत्तेनतत्रकण्डूःप्रशाम्यति । मुद्गयूषंसखदिरंपथ्यांजातीफलंतथा ॥ विम्बींपूगञ्चसंचूर्ण्यवस्त्रपूतंक्षिपेद्भगे । योनिर्भवतिसंकीर्णानस्रवेच्चजलंततः ॥ कपिकच्छूभवंमूलंक्वाथयेद्विधिनाभिषक् । योनिःसङ्कीर्णतांयातिक्वाथेनानेनधावयेत् ॥ जीरकाद्वितयंकृष्णासुषवीसुरभिर्वचा । वासकःसैन्धवञ्चापियवक्षारोयवानिका ॥ एषांचूर्णंघृतेकिंचिद्भृष्ट्वाखण्डेनमोदकम् । कृत्वाखादेद्यथावह्निर्योनिरोगाद्विमुच्यते ॥ मूषकक्वाथसंसिद्धंतिलतैलंकृतोपिचुः । नाशयेद्योनिरोगांस्तान्धृतोयोनौनसंशयः ॥ ११६८ ॥

पीपल मिर्च उर्द सोंफ कूट तथा सेंधानोन इनके द्वारा तर्जनी उंगलीके समान मोटी तथा लम्बी बत्ती बनाकर योनिमें रखने से कफ शुद्धहोताहै कर्णिनीयोनिमें शोधन औषधियोंकी बत्तीबनाकर रक्खे गिलोय त्रिफला और दन्ती इनके काढ़ेकीधारसे योनिके धोनेसे खुजली कानाश होताहै कत्था हड़ जायफल नींब तथा सुपारी इनकेचूर्णको मूंगके यूष में मिलाकर कपड़ेसे छानलेवे इस यूषको योनिमेंछोड़नेसे योनि सुकड़ जाती है और उससे जल नहीं बहता किवांचकी जड़के काढ़ेसे योनिको धोनेसे योनि सुकड़ जाती है दोनोंजीरे पीपल कालीजीरी तुलसी वच अडूसा सेंधानोन, जवाखार तथा अजवाइन इनसबके चूर्णको घीकेसाथ कुछ भूनकर शक्कर मिलाकरलड्डू बनावे इन

लड्डुओंको अग्निबलके अनुसार खानेसे योनि रोगनष्टहोते हैं मूसेके मांसके काढ़ेकेसाथ पाक किये हुए तिलके तेलके फाहेके रखनेसे निस्सन्देह योनिरोग नष्टहोते हैं॥ ११६८॥

त्रिफलांद्वौसहचरौगुडूचींसपुनर्नवाम् । शुकनासांहरिद्रेद्वेरास्नांमेदांशतावरीम् ॥ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे । तत्सिद्धंपाययेन्नारींयोनिरोगप्रशान्तये ॥ त्रिफलाघृतम् ॥ ११६९ ॥

त्रिफला दोनों कटसरैया गिलोय गदापूर्णा सोनापाठा हल्दी दारुहल्दी रासना मेदा और सतावर इनके कल्कके द्वारा ६४ तोले घीको चौगुने दूधकेसाथ पकावे इसघीके पीनेसे योनिरोग नष्टहोतेहैं इति त्रिफलाघृत ॥ ११६९ ॥

मञ्जिष्ठामधुकंकुष्ठंत्रिफलाशर्कराबला । मेदेपयस्याकाकोल्यौमूलंचैवाश्वगन्धजम् ॥ अजमोदाहरिद्रेद्वेप्रियंगुःकटुरोहिणी । उत्पलंकुमुदंद्राक्षांकाकोल्यौचन्दनद्वयम् ॥ एतेषांकार्षिकैर्भागैःघृतप्रस्थंविपाचयेत् । शतावरीरसंक्षीरंघृताद्देयंचतुर्गुणम् ॥ सर्पिरेतन्नरःपीत्वास्त्रीषुनित्यंवृषायते । पुत्रान्जनयतेवीरान्मेधाढ्यान्प्रियदर्शनात् ॥ याचैवास्थिरगर्भास्यात्पुत्रंवाजनयेन्मृतम् । अल्पायुषंवाजनयेद्याचकन्यांप्रसूयते ॥ योनिरोगेरजोदोषेपरिस्रावेचशस्यते । प्रजावर्द्धनमायुष्यंसर्व्वग्रहनिवारणम् ॥ नाम्नाफलघृतंह्येतदश्विभ्यांपरिकीर्त्तितम् । अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपन्त्यत्रचिकित्सकाः॥ जीवद्वत्सैकवर्णायाःघृतंतत्रप्रयुज्यते । आरण्यगोमयेनैववह्निज्वालाचदीयते ॥ मेदामहामेदयोरभावेशतावरीद्विगुणादेयापयस्यात्रक्षीरकाकोली युगलाभावेअश्वगन्धाद्विगुणादेयाप्रियंगुस्थानेकेचिद्धिंगुंपठन्तिपयस्याकाकोलीत्युक्तापुनः काकोल्यौइतिकाकोलीक्षीरकाकोल्यौद्वैगुण्यार्थंएतस्यफलघृतस्यपाठोनानाविधस्तन्त्रेषु । तत्रहिंगुवचातगरजीवकर्षभकाएवाधिकाःजीवकर्षभयोरभावेविदारीकन्दोद्विगुणोदेयः । (फलघृतम्) सकलयोनिरोगेषु ॥ ११७० ॥

मजीठ मुलहठी कूट त्रिफला शक्कर बरियारा मेदा महामेदा (इनके न मिलनेमें दूनी सतावर) काकोली क्षीरकाकोली (इनके न मिलनेमें दूनी असगन्ध) असगन्धकी जड़ अजमोद हल्दी दारुहल्दी प्रियंगु कुटकी उत्पल कुमुद दाख काकोली क्षीरकाकोली चन्दन तथा लालचन्दन इनके द्वारा चौगुने जीतेहुए बछड़ेवाली गौके दूध और चौगुने सतावरके रसके साथ जीतेहुए बछडेवाली एक बर्णवाली गौके घीको बिनवे कंडोंकी आंचमें पकावे इस घीको पीनेसे पुरुष नित्यही मैथुनकरनेमें समर्थ होताहै और बीर बुद्धिमान तथा सुन्दर पुत्र होतेहैं जिस स्त्रीका गर्भ न ठहरताहोय जो मृतक संतान उत्पन्न करतीहो जिसकी सन्तान थोड़ी उमरमें मरजातीहो और जिसके कन्याही होतीहोय उनकेलिये यह घी श्रेष्ठहै योनिरोग रजोदोष तथ परिस्रावमें यह श्रेष्ठहै यहघी सन्तानकारी आयुको हित और सम्पूर्ण ग्रहोंका नाशकहै इसमें लक्ष्मणाकी जड़भी छोड़नी चाहिये इसघृतमें हींग बच तगरजीवक तथा ऋषभक भी छोड़नेचाहिये यह किसी२ का मतहै इतिफलघृत ॥ ११७० ॥

अथ योनिकन्दस्यचिकित्सामाह ॥

गैरिकाम्रास्थिजन्तुघ्नरजन्यञ्जनकट्फलाः। पूरयेद्योनिमेतेषांचूर्णैःक्षौद्रसमन्वितैः॥ त्रिफलायाःकषायेणसक्षौद्रेणचसेवयेत्।प्रमदायोनिकन्दनव्याधिनापरिमुच्यते ११७१॥

योनिकन्दकी चिकित्सा ॥

गेरू आमकी गुठली बायबिडंग हल्दी रसौत और कायफल इनसबके चूर्णको सहतमें मिलाकर योनिमें भरनेसे और त्रिफलाके काढेमें सहत मिलाकर सींचनेसे योनिकन्दका नाशहोताहै ११७१॥

गुर्विण्यारोगाणां चिकित्सा ॥

ह्रीवेरातिविषामुस्तमोचशक्रैर्घृतंजलम् । दद्याद्गर्भेप्रचलितेप्रदरेकुक्षिरुज्यपि ॥ कुक्षिरुक्उदरव्यथाचलितगर्भस्थापनेह्रीवेरादिक्काथः॥ ११७२॥

गर्भिणीके रोगोंकी चिकित्सा ॥

सुगन्धवाला अतीस मोथा मोचरस तथा इन्द्रजौ इनका काढा चलितगर्भ प्रदर और उदरकी पीड़ामें देना चाहिये इतिह्रीबेरादि क्काथ॥ ११७२॥

मधुकंचन्दनोशीरसारिवापद्मपत्रकैः। शर्करामधुसंयुक्तैकषायोगर्भिणीज्वरे ॥ चन्दनंसारिवालोध्रमृद्वीकाशर्करान्वितम् । क्काथंकृत्वाप्रदद्याच्चगर्भिणीज्वरशान्तये ॥ पीतं विश्वमजाक्षीरैर्नाशयेद्विषमज्वरम्। (गर्भिण्याः) आम्रजम्बुत्वचःक्काथैर्लेहयेल्लाजसक्तुकम् ॥ अनेनलीढमात्रेनगर्भिणीग्रहणींजयेत्। ह्रीवेरारलुरक्तचन्दनवलाधान्याकवत्सादनी ॥ मुस्तोशीरयवासपर्पटविषाक्काथंपिवेद्गर्भिणी । नानाव्याधिरुजातिसारगदकेरक्तस्रुतौवाज्वरे ॥ योगोऽयंमुनिभिःपुरानिगदितःसूत्यामयेऽप्युत्तमः ११७३ ॥

मुलहठी चन्दन खस साईं पद्माक तथा तेजपात इनके काढेमें सहत और शक्कर डालकर अथवा चन्दन साईं लोध तथा दाख इनके काढेमें शक्कर डालकर पीनेसे गर्भिणीका ज्वर नष्टहोता है सोंठको बकरीके दूधके साथ पीनेसे गर्भिणीका विषमज्वर नष्टहोता है आम तथा जामनकी छाल के काढेके साथ खीलोंके सत्तूखानेसे गर्भिणीका ग्रहणीरोग नष्टहोताहै सुगन्धवाला सोनापाठा लालचन्दन बरियारा धनियां गिलोय मोथा खस जवासा पित्तपापड़ा तथा अतीस इनकेकाढेके पीनेसे गर्भिणीका ज्वर रक्तस्राव अतीसार तथा नानाप्रकार के रोग नष्टहोते हैं और यह सूतिका रोगों में भी हित है॥ ११७३॥

अथ गर्भस्यस्रावपातयोर्निदानमाह ॥

ग्राम्यधर्माध्वगमनयानायासप्रपीड़नैः। ज्वरोपवासोत्पतनप्रहाराजीर्णधावनैः ॥ वमनाच्चविरेकाच्चकुन्थनाद्गर्भपातनात् । तीक्ष्णधारोष्णकटुकतिक्तरूक्षानिषेवणात् ॥ वेगाभिघाताद्विषमादासनाच्छयनाद्भयात् । गर्भपतातिरक्तस्यसशूलंदर्शनंभवेत् ॥ गर्भपातनात्गर्भपातनियमेनगर्भपातनशीलंद्रव्यम्॥ ११७४॥

गर्भके स्राव और पातके निदान ॥

अत्यन्त मैथुन मार्गगमन सवारी श्रम पीड़न ज्वर उपवास उछलना प्रहार अजीर्ण दौड़नाबमन विरे-

चन कुन्थन गर्भके गिराने वाली औषध बेगोंका रोकना बिषमतासे शयन अथवा बैठना और तीक्ष्ण उष्ण कटु तिक्त तथा रूखी बस्तुओंका भोजन इन्हीं कारणोंसे गर्भकास्राव और पातहोताहै॥ ११७४ ॥

अथ गर्भस्यस्रावपातयोःपूर्वरूपमाह ॥

गर्भपततिइत्यादि । पततिस्रावेणपातेनवापातिष्यति ॥ ११७५ ॥

गर्भकेस्राव और पातका पूर्वरूप ॥

गर्भके स्राव अथवा पात होने से पहले पीड़ा सहित रुधिर योनि से बहता हैं ॥ ११७५ ॥

स्रावपातयोरवधिमाह ॥

आचतुर्थात्ततोमासात्प्रस्रवद्गर्भविद्रवः । ततःस्थिरशरीरस्यपातःपञ्चमषष्ठयोः ॥ आचतुर्थान्मासाच्चतुर्थमासपर्य्यन्तंगर्भस्यविद्रवः शोणितरूपःगर्भःस्रवतिशोणितमितिभोजवचनात्स्थिरशरीरस्यकठिनशरीरस्य ॥ ११७६ ॥

स्राव और पातकी अवधि ॥

चार महीनेतक रुधिर रूप गर्भका स्राव होताहै और इसके उपरान्त पांचवें अथवा छठे महीने में शरीर के स्थिर होजाने से गर्भका पात होता है ॥ ११७६ ॥

गर्भपातस्यदृष्टान्तंदर्शयति ॥

गर्भोऽभिघातविषमासनपीड़नाद्यैःपक्वंद्रुमादिवफलंपतति क्षणेन। यथावृन्तलग्नंपक्कं फलमभिघातेनाकालेएवपततितथागर्भोऽप्यभिघातादिनाऽकालेपतति ॥ ११७७ ॥

गर्भ पातका दृष्टान्त ॥

जिस प्रकार पका फल अभिघातआदि के द्वारा समय के बिनाही वृक्ष से गिर पड़ता है उसी प्रकार चोट विषमासन तथा दबनेआदिकेद्वारा गर्भभी समयके बिनाही गिर पड़ताहै ॥ ११७७ ॥

अथगर्भस्रावस्यचिकित्सा ॥

गुर्विण्यागर्भतोरक्तंस्रवेद्यदिमुहुर्मुहुः । तन्निरोधायसादुग्धमुत्पलादिश्रृतंपिबेत् ॥ उत्पलादिगणमाह । उत्पलंनीलमारक्तंकह्लारंकुमुदंतथा ॥ श्वेताम्भोजश्चमधुकमुत्पलादेरयंगणः । संशीलितोहरत्येवदाहंतृष्णांहृदामयम् ॥ रक्तपित्तञ्चमूर्च्छाञ्चतथाच्छर्दिमरोचकम् ॥ ११७८ ॥

गर्भस्राव की चिकित्सा ॥

जो गर्भ से बारम्बार रुधिर बहताहोय तो उसके रोकने के लिये उत्पलादि गण के द्वारा पाक किया हुआ दूधपिये नीलोत्पल रक्तोत्पल कल्हार कुमुद श्वेतकमल और मुलहठी यह उत्पलादि गण हैं इसके सेवन से दाह तृषा हृदय के रोग रक्तपित्त मूर्च्छा छर्दि औरअरुचिका नाशहोता है॥ ११७८ ॥

गर्भपातस्योपद्रवानाह ॥

प्रस्रंसिमानेगर्भेस्याद्दाहःशूलञ्चपार्श्वयोः । पृष्ठरुक्प्रदरानाहोमूत्रसङ्गश्चजायते ॥ प्रस्रंसमानेपतति ॥ ११७९ ॥

गर्भपात के उपद्रव ॥

गर्भपात होनेपर दाह पसलियों में पीड़ा पीठ में पीड़ा प्रदर आनाह और मूत्ररोध यह उपद्रव होते हैं ॥ ११७६ ॥

अथगर्भस्यस्थानान्तरगमनेचोपद्रवानाह ॥

स्थानात्स्थानान्तरंतस्मिन्प्रयात्यपिचजायते । आमपक्वाशयादौतुक्षोभःपूर्वेऽप्युपद्रवाः ॥ पूर्वेऽप्युपद्रवाःपार्श्वशूलादयः ॥ ११८० ॥

गर्भ के स्थानान्तर गमन में उपद्रव ॥

गर्भके अन्य स्थानमें जानेपर आमाशय तथा पक्वाशयमें क्षोभ और पहले कहेहुए पार्श्व शूलादि उपद्रव होते हैं ॥ ११८० ॥

तस्यचिकित्सा ॥

स्निग्धशीतक्रियास्तेषुदाहादिषुसमाचरेत् । कुशकाशोरुवूकानांमूलैर्गोक्षुरकस्यच ॥ शृतंदुग्धंसितायुक्तंगर्भिण्याःशूलहृत्परम् । श्वदंष्ट्रामधुकक्षुद्राम्लानैःसिद्धंपयःपिवेत् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंगर्भिणीवेदनापहम् । अम्लानःपुष्पजातिःअयंवाणपुङ्खइतिगौड़ादौप्रसिद्धः ॥ मृत्कोष्ठागारिकागेहसम्भवानवमालिका । समङ्गांधातकीपुष्पंगैरिकंचरसाञ्जनम्॥तथासर्जरसश्चैतान्यथालाभंविचूर्णयेत् । तच्चूर्णंमधुनालिह्यात्गर्भपातप्रशान्तये ॥ मृत्कोष्ठागारिकागेहसम्भवाकोष्ठागारकारिकिवरटी तन्निर्मितगृहभवामृत्तिकासमंगालज्जालुः । कसेरूत्पलशृंगाटकल्कंवापयसापिवेत् ॥ पक्वंवचारसोनाभ्यांहिंगुसौवर्चलान्वितम् । आनाहेतुपिवेद्दुग्धंगुर्विणीसुखिनीभवेत् ॥ सौवर्चलंचौहाइतिलोके । तृणपञ्चकमूलानांकल्केनविपचेत्पयः ॥ तत्पयोगुर्विणीपीत्वामूत्रसंगाद्विमुच्यते । शालीक्षुकुशकाशैःस्यात्क्षुरेणतृणपञ्चकम् ॥ एषांमूलंतृषादाहपित्तासृक्मूत्रसंगहृत् ॥ ११८१ ॥

उपद्रवों की चिकित्सा ॥

दाहादि उपद्रवों में स्निग्ध तथा शीतल क्रियाकरे कुश कांस तथा अरण्डकी जड़ और गोखुरू इनके द्वारा पाककिये हुये दूध में शक्कर डालकर अथवा गोखुरू मुलहठी भटकटैया तथा बाणपुंख इनके द्वारा पाककिये हुये दूध में शक्कर और सहत डालकर पीने से गर्भिणी की पीड़ा नष्ट होतीहै कुम्हारी मक्खी के घरकी मिट्टी नवमालिका लज्जालू धवईकेफूल गेरू रसौत और राल इनमें से जितनी औषधें मिलसकें उनके चूर्ण को सहत के साथ चाटने से गर्भपात नहीं होता है कसेरू उत्पल तथा सिंहाड़े के कल्कको दूध के साथ पिये बच तथा लहसन के द्वारा पाककिये हुए दूधमें हींग और कालानोन मिलाकर पीने से गर्भिणीका आनाह नष्ट होता है तृणपंचमूल कल्कके द्वारा पाककिये हुए दूध के पीने से गर्भिणीका मूत्ररोध नष्ट होता है शाल्य धान्य ईख कुश कांस तथा सरपत इन पांचों को तृणपंचक कहते हैं इनकी जड़ तृषा दाह रक्त पित्त तथा मूत्ररोध को नष्ट करती है ॥ ११८१ ॥

अतःपरंमासानुमासिकंवक्ष्यामः ॥

मधुकंशाकवीजञ्चपयस्यासुरदारुच । अश्मन्तकस्तिलाकृष्णताम्रवल्लीशतावरी ॥

वृक्षादनीपयस्याचलताचोत्पलिसारिवा।अनन्तासारिवारास्नापद्मामधुकमेवच॥वृहत्यौ काश्मरीचापिक्षीरीशुंगास्त्वचोघृतम्। पृष्टिपर्णीवचाशिग्रुश्वदंष्ट्रामधुपर्णिका॥ शृंगाट कंविषंद्राक्षाकसेरुमधुकंसिता। वत्सैतेसप्तयोगाःस्युरर्द्धश्लोकसमापनाः॥ यथासंख्यंप्र योक्तव्यंगर्भस्रावेपयोयुताः। एवंगर्भेनपततिगर्भशूलञ्चशाम्यति॥ शाकबीजंशाकोमहा वृक्षःकर्कशपत्रस्तस्यबीजंपयस्यात्रक्षीरकाकोलीतदलाभेऽश्वगन्धाग्राह्याअश्मन्तकःकी विदारसदृशोऽम्लपत्रोअम्लोनाइतिलोके। ताम्रवल्लीरामकान्तामञ्जिष्ठाइतिलोकेप्रियं गुःकंगुःअनन्ताउत्पलसारिवापद्मापद्मचारिणीभांर्गीतिकेचितृवृहत्यौस्थूलफलास्वल्पफ लाच॥ क्षीरीशुंगाक्षीरिणांवटादीनांशुंगाःअविकाशिताः प्रबालाःमधुपर्णिकागम्भारीप योयुताःप्रतिमासंअर्द्धश्लोकोक्ताःऔषधमिलिताःकर्षमिताःशीततोयेनसंपिष्टाःपलमिते नदुग्धेनालोडिताःपातव्याइत्यर्थः। कपित्थवृहतीविल्वपटोलेक्षुनिदग्धिकाः॥ मूलानि क्षीरसिद्धानिदापयेद्भिषगष्टमे। कपित्थादीनांमूलानिमिलितानिपलमितानिपलाष्टकमि तेक्षीरेद्वात्रिंशज्जलपलयुक्तेक्वाथयित्वाक्षीरमात्रमवशिष्टंपातुंदद्यादित्यर्थः॥ नवमेमधुका नन्तापयस्यासारिवापिवेत्। अत्रापिमधुकादीन्मिलित्वाकर्षमितान्शीततोयेनसंपिष्टा न्पलपरिमितेनदुग्धेनालोडितानिपिवेत्॥ क्षीरंशुण्ठीपयस्याभ्यांसिद्धंस्याद्दशमेहितम्। सक्षीरंवाहिताशुण्ठीमधुकंसुरदारुच॥ दशमेशुण्ठीपयस्याभ्यांपूर्ववत्क्कथितंपिवेत्।अथ वाशुण्ठीमधुकसुरदारूणिशीतलजलपिष्टानिदुग्धेनालोडितानिपिवेत्॥ क्षीरिकामुत्पलं दुग्धंसमंगामूलकंशिवाम्। पिवेदेकादशेमासिगर्भिणीशूलशान्तये॥ अत्रक्षीरिकायाःफ लंदद्यात्समंगामूलकम्।लज्जालूमूलम्॥ सिताविदारीकाकोलीक्षीरीचैवमृणालिका। गर्भिणीद्वादशेमासिपिवेच्छूलघ्नमौषधम्॥ काकोल्यभावेऽश्वगन्धामूलंग्राह्यम्। एवम प्यायतेगर्भस्तीव्रारुक्चोपशाम्यति॥ ११८२॥

महीने २ की चिकित्सा॥

मुलहठी शाकबीज क्षीरकाकोली तथा देवदारु १ अमलौना कालेतिल मजीठ तथा सतावर २ गिलोय क्षीरकाकोली प्रियंगु तथा उत्पल सारिवा ३ उत्पलसारिवा साईं रासना भारंगी तथा मुलहठी ४ दोनों भटकटैया खंभारी बरगदआदि दूधवाले वृक्षोंकी कोंपल तथा छाल घी ५ पृष्टिपर्णी वच सहजना गोखुरू तथा गंभारी ६ सिंघाड़ा कमलकी डंडी दाख कसेरू मुलहठी तथा शक्कर ७ यह सात योगे क्रमसेसातों महीनों में शीतल जलके साथ पीसकर ४ तोले दूध मिलाकर एक तोला पीना चाहिये इनके द्वारा गर्भ नहीं गिरता है और गर्भशूलका नाश होताहै कैथा भटकटैया बेल परवल ईख तथा बड़ी भटकटैया इनसबकी जड़को चारतोले लेकर ३२ तोले दूधमें १२८ तोले जलके साथ पाक करे जब केवल दूध बाकीरहै तब छानलेवे यह आठवें महीने में पिलावे मुलहठी सांईं क्षीरकाको-ली तथा उत्पल सारिवा एक तोले इनसब औषधियोंको शीतल जलमें पीसकर चार तोले दूध मिलाकर नवें महीने में पिलावे सोंठ तथा क्षीरकाकोलीके द्वारा पूर्वोक्त रीतिसे पाक किये हुए दूधको अथवा सोंठ मुलहठी तथा देवदारुको तोले भरलेके शीतल जलमें पीसकर चारतोले दूध

मिलाकर दशवें महीनेमें पीवे खिन्नी उत्पल लजालू की जड़ तथा हड़ इनसबको दूधके साथ शूल के दूरकरने के लिये ग्यारहवें महीने में पिये शक्कर बिदारीकन्द काकोली खिन्नी तथा कमलकी डंडी इनसबको बारहवें महीने में शूलके नाशके लिये पिये इसप्रकार से गर्भ बढ़ता है और तीव्र पीड़ा शान्त होती है ॥ ११८२ ॥

अथ वातशुष्कस्यगर्भस्यचिकित्सा ॥

गर्भोवातेनसंशुष्कोनोदरंपूरयेद्यदि।सार्वृंहणीयैःसंसिद्धंदुग्धंमांसरसंपिवेत्॥११८३॥

बातशुष्क गर्भकी चिकित्सा ॥

बायुकेद्वारा सूखाहुआ गर्भ जो उदरको पूर्ण न करे तो वृंहण औषधियोंके द्वारा पाक कियाहुआ दूध और मांसका रसपिये ॥ ११८३ ॥

शुष्कार्त्तवमजातांगंसंशुष्कंमरुतार्दितम् । त्यक्तंजीवेनतंतस्मात्कठिनञ्चावतिष्ठते ॥ शुष्कार्त्तवार्द्रकोवायुरुदराध्मानकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदाध्मानंस्वयमेवप्रशाम्यति ॥ नैगमेयेनगर्भोऽयंहृतोलोकध्वनिस्तदा । नैगमेयःबालग्रहः । सएवाल्पप्रवृत्त्याचेल्लघुर्भूत्वाव तिष्ठति । तदासगर्भोभवतिलोकेनागोदराह्वयः ॥ धान्यकुट्टनमुख्यास्याच्चिकित्सातूभ योरपि ॥ ११८४ ॥

बायु के द्वारा सूखेहुए बीर्य्य तथा रजमें अंगन उत्पन्न होयँ यथा जीवभी न उत्पन्न हुआ हो और वह कठोर होकर स्थितहोय तथा बीर्य्य रजको सुखाने वाली बायु उदरमें आध्मानको उत्पन्नकरे और यह आध्मान कभी २ अपने आपही शान्तहोजाय तो बलग्राह गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते हैं यदि यहीगर्भ थोड़ी प्रवृत्तिसे छोटा होकर स्थितरहै तो उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों रोगों में ओखलीमें मूसलसे धानकुटवाना चिकित्सा है ॥ ११८४ ॥

अथप्रसवमासानाह ॥

नवमेदशमेमासिनारीगर्भंप्रसूयते। एकादशेद्वादशेवाततोऽन्यत्रविकारतः॥११८५॥

प्रसवके महीने ॥

नवें दशवें ग्यारहवें अथवा बारहवें महीनेमें स्त्री गर्भको उत्पन्न करतीहै इससे अधिक काल व्यतीत होनेपर बिकार जानना चाहिये ॥ ११८५ ॥

अथ प्रसवमासमतिक्रम्यस्थायिनिगर्भेचिकित्सा ॥

वातेनगर्भसङ्कोचात्प्रसूतिसमयेऽपिया। गर्भंनजनयेन्नारीतस्याःशृणुचिकित्सितम्॥ कुट्टयेन्मुशलेनैषाकृत्वाधान्यमुलूखले । विषमञ्चासनंपानंसेवेतप्रसवार्थिनी ॥ ११८६ ॥

प्रसवमासों से अधिक स्थितहोनेवाले गर्भकी चिकित्सा ॥

बायुकेद्वारागर्भके संकुचित होजानेसे प्रसवके समयमेंभी जो गर्भको नहीं उत्पन्नकरे वह ओखलीमें धानोंको डालकर मूसलसे कूटे और विषम आहारपानकरे ॥ ११८६ ॥

अथ कालेप्रसवविलम्बेचिकित्सामाह ॥

प्रसवस्यविलम्बेतुधूपयेदभितोभगम् । कृष्णसर्पस्यनिर्मोकैस्तथापिण्डीतकेनवा ॥ निर्मोकःसर्पकञ्चुकःपिण्डीतकःमयनफलइतिलोके । तन्तुनालांगलीमूलंबध्नीयाद्धस्त

पादयोः । सुवर्चलंविशल्यंवाधारयेदाशुसूयते । सुवर्चलासूर्यकान्ताविशल्यापाटला ॥ करंकीभूतगोमूर्द्धासूतिकाभवनोपरि । स्थापितस्तत्क्षणान्नार्य्यासुखंप्रसवकारकः ॥ करंकीभूतःअस्थिमात्रेणस्थितः । पोतकीमूलकल्केनतिलतैलयुतेनच ॥ योनेरभ्यन्तरंलिप्त्वा सुखंनारीप्रसूयते ॥ पोतकीपोईइतिलोके । कृष्णावचाचापिजलेनपिष्ट्वासैरण्डतैला खलुनाभिलेपात् । सुखंप्रसूतिंकुरुतेऽङ्गनानांनिपीडीतानांबहुभिःप्रमादैः ॥ मातुलुंगस्यमूलंतुमधुकेनयुतंतथा । घृतेनसहितंपीत्वासुखंनारीप्रसूयते ॥ इक्ष्वोरुत्तरमूलंनिजतनुमानेनतन्तुनाबद्ध्वा॥कटिविषयेगर्भवतीसुखेनसूतेऽविलम्बेन॥ तालस्यचोत्तरामूलस्वप्रमाणेनतन्तुना । बद्ध्वाकट्यान्तुनियतंसुखंनारीप्रसूयते ॥ ११८७॥

समयमें प्रसवके बिलंबहोने की चिकित्सा ॥

प्रसवके बिलम्ब होनेपर काले सर्पकी कैंचली अथवा मैनफलकी धूप योनि के चारों ओर करे करिहारीकी जड़ सूर्य्यकान्ता अथवा पाटलाको सूतमें लपेटकर हाथ और पैरोंमें बांधनेसे शीघ्रही प्रसवहोताहै मांसादि रहित गौके माथेकी हड्डीको सूतिका गृहके ऊपर रखनेसे तत्क्षण सुखपूर्वक प्रसवहोताहै पोयकी जड़के कल्कको तिलके तेलमें मिलाकर योनिके भीतर लेपकरनेसे सुखपूर्वक प्रसव होताहै पीपल तथा बचको पानी में पीसकर रेंड़ीके तेलके साथ नाभि में लेप करने से अनेक प्रमादों से पीड़ित भी स्त्रियों का सुख पूर्वक प्रसव होताहै बिजौरा नींबूकी जड़ तथा मुलहठी को पीसकर घीके साथ पीने से सुख पूर्व्वक प्रसव होताहै उत्तर दिशामें हुई ईखकी जड़को अथवा ताड़की जड़को अपने शरीरके बराबर डोरेमें बांधकर कमरमें बांधने से सुख पूर्व्वक प्रसव होताहै११८७॥

अथ मूढ़गर्भस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

मूढ़ःकरोतिपवनःखलुमूढ़गर्भं शूलञ्चयोनिजठरादिषुमूत्रसंगम् ॥ भुग्नोऽनिलेनविगुणेनततःसगर्भो संख्यामतीत्यबहुधासमुपैतियोनिम् ॥ अस्यायमर्थःपवनःस्वहेतुभिर्दुष्टःततोमूढ़ःरुद्धगतिः । मूढ़गर्भरुद्धगतिंगर्भयोन्यादिषुशूलंमूत्रसंगञ्चकरोति ततःतेनअनिलेनविगुणेनरुद्धगतिनासगर्भःभुग्नःकुटिलीकृतःचतुर्भिःप्रकारैःयातीत्यर्थः अष्टभिरपरेतत्संख्यानिरासार्थमाह । संख्यामतीत्यउक्तांसंख्यामतिक्रम्यबहुधाबहुभिः प्रकारैःयोनिंसमुपैति ॥ ११८८ ॥

मूढ़गर्भका निदान और संप्राप्ति पूर्वक लक्षण ॥

अपने कारणों से कुपित बायु रुकीहुई गतिवाली होकर मूढ़गर्भ (रुकीहुई गतिवाले गर्भ) को योनि तथा उदरमें शूलको और मूत्र रोधको उत्पन्न करतीहै इसके उपरान्त बिरुद्ध गतिवाली कुपित बायु के द्वारा टेढ़ाहुआ गर्भ कहीहुई संख्याको उल्लंघन करके अनेक प्रकारसे योनि में प्राप्त होता है मूढ़गर्भ चार प्रकार का है और कोई २ आठ प्रकारका कहतेहैं ॥ ११८८ ॥

तत्र प्रथमतश्चतुरःप्रकारानाह ॥

संकीलकप्रतिखुरःपरिघोऽथबीजस्तेषूर्ध्वबाहुचरणैःशिरसाचयोनौ । संगीचयोभवतिकीलकवत्सकीलोदृश्यैःखुरैःप्रतिखुरःसहिकायसंगी॥ गच्छेद्भुजद्वयशिराःसचबीजका

स्योयोनौस्थितःसपरिघःपरिघेणतुल्यः। संशब्दोऽत्रछन्दोऽनुरोधात्कप्रत्ययोऽपिस्वार्थे तेनकीलइतिनाम ॥ तस्यलक्षणमाह। ऊर्ध्वबाहुचरणैरिति उत्थितैःबाहुचरणशिरोभिःयो नौयः संगीभवति सकीलः कलिकाख्योमूढ़गर्भः द्वयैर्बहिर्गतैः खुरैःखुरसाधर्म्यात्खुर शब्देनात्रहस्तौपादौचगृह्येते। तेनहस्तद्वयपाद्द्वयैर्बहिर्गतैःप्रतिखुरःसहिकासंगीहस्त पादेतरकायेनसक्तोभवतियोगर्भःभुजद्वयशिराः भुजद्वयमध्येशिरोयस्यएतादृक्गच्छेन्निः सरेत् ॥ तच्छेषेणशरीरेणसक्तोभवतिसवीजकाख्यःपरिघवद्योनावित्यादि ॥ ११८९॥

चार प्रकारोंका वर्णन ॥

संकीलक प्रतिखुर परिघ और बीज यह चारप्रकारके मूढ़गर्भ हैं उठेहुयेहाथ पैर तथा शिरके द्वारा योनिमें अटककर जो कील के समान स्थित होय उसे कीलनाम मूढ़गर्भ कहते हैं जिस गर्भ के हाथ पैर बाहर निकल आवैं और बाकी धड़ योनि में अटकरहै उसे प्रतिखुर नाम मूढ़गर्भ कहते हैं जिस गर्भके दोनों हाथों के बीचमें शिरहोकर निकले और बाकी धड़ अटकरहै उसे बीजनाम मूढ़-गर्भ कहतेहैं जोगर्भ परिघ (खिड़ना) के समान योनिमें अटके उसे परिघनाम मूढगर्भ कहतेहैं ११८९॥

अथाष्टौप्रकारानाह ॥

द्वारंनिरुध्यशिरसाजठरेणकश्चित् कश्चित्शरीरपरिवर्त्तनकुब्जकायः ॥ एकेनक श्चिदपरस्तुभुजद्वयेन तीर्य्यग्गतोभवतिकश्चिदवाङ्मुखोऽन्यः ॥ पार्श्वापवृत्तगतिरेति तथैवकश्चि दित्यष्टधाभवतिगर्भगतिःप्रसूतौ ॥ अयमर्थः। कश्चित्शिरसायोनि द्वारंनिरुध्यसक्तोभवतिजठरेणतं निरुध्यकश्चित्कुब्जकायेनसकुब्जेनपृष्ठेनसक्तोभवति कश्चिदेकेनभुजेनयोनिःसृतेनसक्तोभवतिकश्चित् भुजद्वयेनतिर्यक्भूत्वासक्तोभवति। अन्यःग्रीवाभङ्गादधोभूतेनमुखेनसक्तोभवति। कश्चित्पार्श्वेनअपवृत्यानिरुद्धागति र्य्यस्यएवंविधःयोनिद्वारंएतियाति ११९०॥

मूढ़गर्भके आठप्रकार ॥

कोई गर्भ मस्तक के द्वारा योनिमें अटकता है कोई उदरके द्वारा योनिको रोककर अटकता है कोई उल्टाहोकर कुबड़ी पीठके द्वारा योनि में अटकता है कोई एकहाथके बाहर निकलनेपर ति-रछाहोकर योनिमें अटकताहै कोई दोनों हाथोंके बाहर निकलनेपर योनिमें तिरछाहोकर अटकताहै कोई तिरछाहोकर योनिमें अटकताहै कोई ग्रीवाके टेढ़े होनेसे अधोमुख होकर योनि में अटकताहै और कोई पार्श्व के टेढ़े होनेसे रुकीहुई गतिवालाहोकर योनिमें अटकताहै यह आठप्रकारकी गर्भकी गतिप्रसवके समयमें होती है ॥ ११९०॥

सुश्रुतस्त्वष्टौप्रकारान्तराण्याह ॥

कश्चिद्द्वाभ्यांसक्थिभ्यांयोनिमुखंप्रतिपद्यते १ कश्चिदाभुग्नैकसक्थिरितरेणसक्थ्ना २ कश्चिदाभुग्नसक्थिशरीरः स्फिग्देशेनतिर्य्यग्गतः ३ कश्चिदुदरपार्श्वपृष्ठानामन्यतमे नयोनिद्वारंपिधायावतिष्ठते ४ अन्यपार्श्वापवृत्तशिराःकश्चिदेकेनबाहुना ५ कश्चिदाभुग्न

शिराबाहुद्वयेन ६ कश्चिदाभुग्नमध्योहस्तपादशिरोभिः ७ कश्चिदेकेनसक्थ्नायोनिद्वारं प्रतिपद्यतेऽपरेणपायुमिति ८॥ ११६१॥

सुश्रुतमें कहेहुए अन्य आठप्रकारके मूढ़गर्भ॥

कोई गर्भ दोनों जंघाओंके द्वारा योनिमें आकर रुकताहै कोई एकजंघाके टेढ़े होजानेसे एकजंघा के द्वारायोनि में आकर रुकताहै कोई जंघा तथा शरीरके टेढ़े होजानेसे तिरछा होकर नितम्बोंके द्वारा योनि में अटकताहै कोई उदर पार्श्व अथवा पीठ इनमेंसे किसीके द्वारायोनिको रोककर स्थितहोताहै कोई मस्तकके एकपार्श्वमें झुकजानेसे एकभुजाके द्वारायोनिमें आकर अटकताहै कोई मस्तक के टेढ़ेहोजाने से भुजाओं के द्वारायोनिमें आकर अटकताहै कोई कमरके टेढ़ेहोजाने से हाथ पैर तथा शिरके द्वारा योनिमें अटकताहै और कोई एक जंघाके द्वारा योनि में तथा द्वितीयजंघाकेद्वारागुदा में प्राप्तहोकर अटकताहै॥ ११६१॥

अथासाध्यमूढ़गर्भिण्या लक्षणमाह॥

अपविद्धशिरायातुशीताङ्गीनिरपत्रपा। नीलोद्गतशिराहन्तिसागर्भंसचतान्तथा॥ अपविद्धशिराः अवनताशिराःशिरोऽपिधारयितुंअशक्तेतियावत्निरपत्रपालज्जाशून्या नीलोद्गतशिराकुक्षौनीलाउद्गताशिरायस्याःसा॥ ११६२॥

असाध्यमूढ़ गर्भके लक्षण॥

जो अशक्तता से शिरको भी न धारण करसकीहो शीतल अंगवाली हो तथा लज्जा रहितहो और जिसकी कोखमें नीलीनस उभर आईहो वह स्त्री मरजातीहै और उसका गर्भभी नष्ट होजाताहै ११६२

मृतस्यगर्भस्यक्रमेणकर्षणार्थं लक्षणमाह॥

गर्भास्यन्दनमावीनांप्रणाशःश्यावपाण्डुता। भवेदुच्छ्वासपूतित्वंशूलञ्चान्तर्मृतेशिशौ॥ गर्भास्यन्दनंगर्भस्याचलत्वंआवीनांप्रणाशइतिप्रसववेदनानामभावःअथवाअवीशब्देनप्रसवलिङ्गानिमूत्रकफप्रसेकादीनिकथ्यन्तेतेषांनाशः शूलःअन्तर्मृतस्यशिशोरुच्छूनतया॥ ११६३॥

मरेहुए मूढ़गर्भके खैंचने के लिये क्रम से लक्षण॥

गर्भाशयमें बालक के मरजानेपर गर्भका नहीं फड़कना प्रसवकी पीड़ाओं का न होना धुमैला अथवा पांडुवर्ण श्वासमें दुर्गन्धि आना और मरेहुए बालकके फूलनेसे पीड़ा यह लक्षण होतेहैं ११६३

गर्भस्यमरणेहेतुमाह॥

मानसागन्तुभिर्मातुरुपतापैःप्रपीडितः। गर्भोव्यापद्यतेकुक्षौव्याधिभिश्चप्रपीडितः॥ उपतापोदुःखंमानसउपतापोबन्धुधनक्षयादिनाआगन्तुरुपतापःप्रहारादिः ११६४

गर्भके मरने के कारण॥

गर्भिणीके मानसी अथवा आगन्तुज प्रहारादि दुःखोंसे वा रोगोंसे पीड़ितहुआगर्भ मरजाता है ११६४॥

अपरमसाध्यगर्भिणी लक्षणमाह॥

योनिसम्बरणंसङ्गःकुक्षौमक्कल्लएवच। हन्युस्त्रियंमूढ़गर्भोयथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः॥

योनिसम्वरणंव्याधिविशेषः। (तथाचोक्तंतन्त्रान्तरे) वातलान्यन्नपानानिग्राम्यधर्मं प्रजागरम्॥ अत्यर्थंसेवमानायांगर्भिण्यांयोनिमार्गगः। मातरिश्वाप्रकुपितोयोनिद्वारस्य संवृतिम्। कुरुतेऊर्द्ध्वमार्गत्वात्पुनरन्तर्गतोऽनिलः। निरुणद्ध्याशयद्वारंपीडयन्गर्भसंस्थितम्॥ निरुद्धवचनोच्छ्वासोगर्भश्चाशुविपद्यते।उच्छ्वासऊर्ध्वंहृदयान्नाशयत्यथ गर्भिणी॥ योनिसम्वरणंनामव्याधिमेनंप्रचक्षते। संगःकुक्षौगर्भस्यलग्नताअप्रवृत्ति रितियावत्कुक्षौमक्कल्लरक्तमारुतजः शूलविशेषःयद्यपिप्रसूतायामक्कल्लशूलमुक्तम्॥ तथापिसुश्रुते। प्रजातायाश्चेतिचकारेणाप्रसूतायाअपिमक्कल्लशूलंभवतिइतिबोद्धव्यम् उपद्रवाःअक्षेपककासश्वासादयः॥ ११९५॥

गर्भिणीके अन्य असाध्य लक्षण॥

योनि संबरण नाम रोग कुक्षिमें गर्भका लगना मक्कलनाम रोग और श्वास आदिक उपद्रव यह मूढगर्भ वाली स्त्री को नष्टकरते हैं तन्त्रान्तरमें कहागयाहै कि वादी अन्नपानके सेवन से मैथुन से और रात्रिमें जागनेसे कुपित हुई बायु गर्भिणीके योनिमार्गमें प्राप्तहोकरयोनिद्वारको सकोड़तीहै फिर मार्गके ऊपरहोने के कारण भीतर गई हुई वायु गर्भाशय के द्वारको रोकती है और गर्भको पीड़ित करती है बचन तथा श्वासके रुकने से गर्भ शीघ्रही नष्टहोजाता है और ऊर्ध्व श्वासके कारण गर्भिणी भी मरजातीहै इसरोगको योनिसंबरण कहते हैं॥ ११९५॥

अथ मूढगर्भस्यचिकित्सा॥

याभिःसङ्कटकालेऽपिबह्व्योनार्य्यःप्रसाविताः। सम्यक्लब्धयशस्तास्तनार्य्यःकुर्य्युरिमांक्रियाम्॥ गर्भेजीवतिमूढेतुगर्भंयत्नेननिर्हरेत्। हस्तेनसर्पिषाक्तेनयोनेरन्तर्गतेनसा॥ (साजनयित्री) मृतेतुगर्भेगर्भिण्यायोनौशस्त्रंप्रवेशयेत्। शस्त्रशास्त्रार्थविदुषी लघुहस्ताभयोज्भिता॥ सचेतनंतुशस्त्रेणनकथञ्चनदारयेत्। सदीर्य्यमाणोजननीमात्मानंचापिमारयेत्॥ नोपेक्षेतमृतंगर्भंमुहूर्त्तमपिपण्डितः। तदाशुजननींहन्तिप्रभूतान्नंयथा पशुम्। प्रभूतान्नंअतिमात्रमन्नम्॥ ११९६॥

मूढगर्भकी चिकित्सा॥

* जिन दाइयोंने संकटके समयमें भी बहुतसी स्त्रियोंको अच्छे प्रकारसे प्रसवकराकर बहुत यश पायाहो वहस्त्रियां आगे कहीहुई क्रियाओं को करें मूढगर्भके जीवते होनेपर प्रसव करावने वाली स्त्री घी चुपड़े हुए हाथको योनिके भीतर डालयत्न पूर्वक गर्भको निकाले गर्भके मरजानेपर शस्त्र क्रिया तथा शास्त्रकी जानने वाली हलके हाथवाली तथा भय रहित दाई योनिमें शस्त्र डालकर गर्भको काटकर निकाले गर्भके जीवतेहुए होनेपर उसको किसी प्रकारसे भी न काटे क्योंकि उसके कटने से वह आपमरता है और माताको भी मारडालताहै परन्तुमरे हुये गर्भको मुहूर्त्त भरभी भीतर न रहने देवे किन्तु शस्त्रसे निकालले क्योंकि वह रुकनेसे शीघ्रही माताको ऐसेमारडालता है जैसे कि बहुत खायाहुआ अन्न पशुको मारडालता है॥ ११९६॥

छेदनप्रकारमाह ॥

यद्यद्‌अंगंहिगर्भस्ययोनौसक्तंतुतद्भिषक् । सम्यक्‌विनिर्हरेच्छित्वारक्षेन्नारींप्रयत्नतः ॥ एवंनिर्हृतशल्यानांसिञ्चेदुष्णेनवारिणा । ततोऽभ्यक्तशरीरायायोनौस्नेहंविधारयेत् ॥ एवंमृद्वीभवेद्योनिस्तच्छूलंचोपशाम्यति ॥ ११९७ ॥

मूढगर्भके काटनेका प्रकार ॥

गर्भका जौन २ सा अंगयोनिमें लगाहोय उस २ अंगको काटकर निकाले परन्तु योनिमें न लगने पावे इसबातपर बहुत दृष्टिकरेरहै इसप्रकार शस्त्र निकालकर योनिमें गर्मजलसींचे फिर शरीर में तैल आदिक मर्दन करके योनिमें स्नेहभरे इसप्रकार करनेसे योनि कोमल होजाती है और उसकी पीड़ा नष्टहोजाती है ॥ ११९७ ॥

अथ प्रसूतायायोनौक्षतादेस्तु चिकित्सा ॥

तुम्बीपत्रंतथालोध्रंसमभागंसुपेषयेत् । तेनलेपोभगेकार्य्यःशीघ्रंस्याद्योनिरक्षता ॥ पलाशोदुम्बरफलंतिलतैलसमान्वितम् । योनौविलिप्तंमधुनागाढीकरणमुत्तमम् ॥ प्रसूतावनितावृद्धकुक्षिह्रासायसंपिबेत् । प्रातर्मथितसंमिश्रंत्रिसप्ताहात्कणाजटाम् ११९८॥

प्रसवके उपरान्तयोनिमें हुएक्षत आदिकी चिकित्सा ॥

लौकीकी पत्ती और लोधको समभाग लेकर पीसलेवे इसके लेपसे शीघ्रही योनिके घावनष्टहोते हैं ढाक तथा गूलर के फलोंको तिलोंका तेल और सहत मिलाकर योनिमें लेप करने से योनि कड़ी होजाती है पीपलामूलको मट्ठेके साथ तीन सप्ताह तक प्रातःकाल पीने से प्रसूता स्त्री की बढ़ी हुई कोख छोटी होजाती हैं ॥ ११९८ ॥

अथ प्रसूतायाःउदरस्थापरोपद्रवानाह ॥

प्रसूतायानपतिताजठरादपरायदि । तदासाकुरुतेशूलमाध्मानंवह्निमन्दताम् ॥ अपराआम्बरइतिलोके ॥ ११९९ ॥

प्रसूताके उदरमें स्थित अपराके उपद्रव ॥

प्रसवके उपरान्त जो उदरसे अपरा (जेर) नहीं गिरती है तो शूल आध्मान तथा मन्दाग्नि होजाती है ॥ ११९९ ॥

तस्य चिकित्सा ॥

केशवेष्टितयांगुल्यातस्याःकण्ठंप्रघर्षयेत् । निर्मोककटुकालाबुकृतबन्धनसर्षपैः ॥ चूर्णितैःकटुतैलाक्तैःधूपयेदभितोभगम् । निर्मोकःसर्पकञ्चुकःकृतबन्धनंकोशातकः ॥ लांगलीमूलकल्केनपाणिपादतलानिहि । प्रलिम्पेत्सूतिकायोषिदपरापातनायवै ॥ हस्तंछिन्ननखंस्निग्धंसूतायोनौशनैःक्षिपेत् । अपरान्तेनहस्तेनजनयित्रीविनिर्हरेत् ॥ एवंनिर्हृतशल्यांतांसिञ्चेदुष्णेनवारिणा॥ततोऽभ्यक्तशरीरायायोनौस्नेहंनिधापयेत् १२००॥

अपराके न गिरनेकी चिकित्सा ॥

उँगली में बाललपेटकर प्रसूताके गलेमें रगड़े सांपकी कांचली कुटकी लौकी तुरई और सरसों इनके चूर्णमें कडुआ तेल मिलाकर योनिके सब ओर धूपदेवे करिहारीकी जड़को पीसकर हाथ

पैरोंमें लेपकरे इससे अपरा गिरपड़ती है दाई नखूनोंको काटकर तथा तेल लगाकर हाथको योनि में डालकर धीरेसे अपराको निकाललेवे फिर उष्णजलसे सींचे और शरीरमें तेल लगाकर योनि में स्नेह भरे १२०० ॥

अथमक्कल्लस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्वकलक्षणमाह ॥

वनितायाःप्रसूतायाःवातोरूक्षेणवर्द्धिता । तीक्ष्णोष्णशोषितंरक्तंरुद्धाग्रन्थिंकरोति हि ॥ नाभ्यधःपार्श्वयोर्वस्तौवास्तिमूर्द्धनिचापिवा । ततश्चनाभौवस्तौचभवेच्छूलंतथोदरे । भवेत्पक्वाशयाध्मानंमूत्रसङ्गश्चजायते ॥ एतद्भिषग्भिरुदितंमक्कल्लामयलक्षणम् ॥ १२०१ ॥

मक्कल्ल रोगका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

प्रसूता स्त्रीके रूखी बस्तुओं के सेवन से बढ़ीहुई बायु तीक्ष्ण तथा उष्ण बस्तुओं के सेवन से सूखेहुए रुधिरको रोककर नाभिके नीचे पार्शुओं में वस्तिमें अथवा वस्तिके ऊपर ग्रंथिको उत्पन्न करतीहै तब नाभि वस्ति तथा उदरमें पीड़ा होतीहै और पक्वाशय में आध्मान तथा मूत्ररोध होता है इसरोग को मक्कल्ल रोग कहते हैं ॥ १२०१ ॥

अथमक्कल्लस्यचिकित्सा ॥

सचूर्णितयवक्षारंपिवेत्कोष्णेनवारिणा । सर्पिषावापिवेन्नारीमक्कल्लस्यनिवृत्तये ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजपिप्पली । नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकैलाजमोदिकाम् ॥ सर्षपोहिंगुभार्गीचपाठेन्द्रयवजीरकाः। महानिम्बश्चमूर्वाचविषातिक्ताविडंगकम् ॥ पिप्पल्यादिर्गणोह्येषकफमारुतनाशनः । क्वाथमेषांपिवेन्नारीलवणेनसमन्वितम् ॥ गुल्मशूलज्वरहरंदीपनञ्चामपाचनम् । मक्कल्लशूलगुल्मघ्नंकफानिलहरम्परम् ॥ त्रिकटुकचातुर्जातककुस्तुम्बूरुचूर्णसंयुक्तम् । खादेद्गुडंपुराणंनित्यंमक्कल्लदलनाय ॥ १२०२ ॥

मक्कल्लकी चिकित्सा ॥

जवाखार को पीसकर गरम जल के साथ अथवा गरम घीके साथ पीने से मक्कल्ल का नाश होता है पीपल पीपलामूल मिर्च गजपीपल सोंठ चीता चव्य संभालू के बीज इलायची अजवाइन सरसों हींग भारंगी पाठा इन्द्रजौ जीरा बकायन मरोरफली अतीस कुटकी और बायबिडंग इनसब औषधियोंको पिप्पल्यादि गणकहतेहैं यह कफ तथा बायु नाशकहै स्त्री इनके काढ़ेको सेंधानोन डालकर पिये इससे गोला शूल ज्वर मक्कल्ल शूल कफ तथा बायुका नाश होताहै और अग्नि दीप्त होती है तथा आम पचजाताहै त्रिकटु दालचीनी इलायची तेजपात नागकेसर तथा धनियां इनसब के चूर्ण कोपुराने गुड़में मिलाकर नित्यखाने से मक्कल्ल रोगका नाश होताहै ॥ १२०२ ॥

अथ प्रसूतायाहितान्याह ॥

प्रसूतायुक्तमाहारंविहारंचसमाचरेत् । व्यायामंमैथुनंक्रोधशीतसेवाञ्चवर्जयेत् ॥ मिथ्याचारात्सूतिकायाःयोव्याधिरुपजायते । सकृच्छ्रसाध्योऽसाध्योवाभवेत्तत्पथ्यमाचरेत् ॥ १२०३ ॥

प्रसूताको हितकारी पदार्थ ॥

प्रसूता स्त्री योग्य आहार बिहार करे और व्यायाम मैथुन क्रोध तथा शीतका सेवन त्यागदेवे अयोग्य आहार बिहार करने से सूतिका को जो रोग होताहै वह कष्टसाध्य अथवा असाध्य होताहै इसलिये परहेज सब बातोंका करना चाहिये ॥ १२०३ ॥

अथ सूतिकारोगनिदानम् ॥

मिथ्योपचारात्संक्लेशाद्विषमाजीर्णभोजनात् । सूतिकायास्तुयेरोगाजायन्तेदारुणा श्चते ॥ मिथ्योपचारादनुचिताचरणात्प्रवातादिसेवनात्संक्लेशात्उत्क्लिश्यन्तेदोषाअनेनेति । सङ्क्लेशोदोषजनकमात्रंतस्मात्दारुणाःकष्टसाध्याः ॥ १२०४ ॥

सूतिका रोगके निदान ॥

बातादि सेवन अनुचित आचरणसे दोषकारी बस्तुओंसे बिषम भोजनसे और अजीर्णमें भोजनसे सूतिका के जो रोग होतेहैं वह कष्टसाध्य हैं ॥ १२०४ ॥

तेकेव्याधेइत्याकांक्षायामाह ॥

अंगमर्दोज्वरःकासःपिपासागुरुगात्रता । शोथःशूलातिसारोचसूतिकारोगलक्षणम् ॥ एतेऽङ्गमर्दादयःप्रायेणसूतिकायाःभवन्तिसूतिकारोगत्वेनलक्ष्यन्ते ॥ १२०५ ॥

इनरोगोंका बर्णन ॥

बदनका टूटना ज्वरखांसीतृषा शरीरका भारीपन शोथशूल और अतीसारयह सूतिकाके रोगहैं१२०५॥

ज्वरादीनांरोगविशेषाणांनिदानविशेषमाह ॥

ज्वरातीसारशोथाश्चशूलानाहबलक्षयाः । तन्द्राऽरुचिप्रसेकाद्याःवातश्लेष्मसमुद्भवाः ॥ कृच्छ्रसाध्याहितेरोगाक्षीणमांसबलाश्रिताः । तेसर्वेसूतिकानाम्नारोगास्तेचाप्युपद्रवाः ॥ सूतिकाभवत्वेनसूतिकानाम्नातेरोगाः । आश्रयाश्रितयोरभेदोपचारात्तेचाप्युपद्रवाइति ॥ अतएवज्वरादयःउक्तानांरोगाणामन्यतमंप्रधानीकृत्योपद्रवाश्च ॥ १२०६॥

ज्वरादि बिशेष रोगों के बिशेष निदान ॥

ज्वर अतीसार शोथ शूल आनाह बलक्षय तन्द्रा अरुचि तथा प्रसेक आदि प्रसूता स्त्रीके रोग बात कफज जानने चाहियें क्षीण मांस तथा बलवाली स्त्री के यह सब रोग अत्यन्त कष्टसाध्य हैं इन्हींको सूतिका रोग कहतेहैं इन्हीं रोगोंमें से कोई रोग प्रधान और बाकी उपद्रव रूपहोतेहैं ॥ १२०६ ॥

अथ सूतिकारोगचिकित्सामाह ॥

सूतिकारोगशान्त्यर्थंकुर्य्याद्वातहरींक्रियाम् । दशमूलकृतंक्काथंकोष्णंदद्यात्घृतान्वितम् ॥ अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपञ्चमूलकञ्जलदम् । शृतशीतंमधुयुक्तंशमयत्यचिरेणसूतिकान्तकम् ॥ १२०७ ॥ सूतिका रोगोंकी चिकित्सा ॥

सूतिका रोगोंके नाशके लिये बातनाशक चिकित्सा करे दशमूल के काढ़ेमें घी डालकर कुछ गरम २ पीनेसे सूतिका रोग नष्टहोतेहैं गिलोय सोंठ कठसरैया खंभारी बड़ापंचमूल और नागरमोथा इनसब के काढ़े में सहत डालकर शीतल २ पीनें से शीघ्रही सूतिका रोग नष्ट होतेहैं ॥ १२०७ ॥

देवदारुवचाकुष्ठंपिप्पलीविश्वभेषजम् । भूनिम्बकट्फलंमुस्तंतिक्ताधान्यहरीतकी ॥ गजकृष्णासदुःस्पर्शागोक्षुरुधन्वयासकः । बृहत्यतिविषाछिन्नाकर्कटःकृष्णजीरकः ॥ समभागान्वितैरेतैःसिन्धुरामठसंयुतम् । क्वाथनष्टावशेषंतुप्रसूतांपाययेत्स्त्रियम् ॥ शूलकासज्वरश्वासमूर्च्छाकम्पशिरोर्तिभिः । युक्तंप्रलापतृट्दाहतन्द्रार्तासारवान्तिभिः ॥ निहन्तिसूतिकारोगंवातपित्तकफोद्भवम् । कषायोदेवदार्व्वादिःसूतायाःपरमौषधम् ॥ देवदार्व्वादिःक्वाथः ॥ १२०८ ॥

देवदारु बच कूट पीपल सोंठ चिरायता कायफल मोथा कुटकी धनियां हड़ गजपीपल भटकटैया गोखुरू जवासा बड़ीभटकटैया अतीस काकडासिंगी और कालाजीरा इनके अष्टावशेषकाढ़ेमें सेंधानोन और हींगडालकर पिलावे इस्से प्रसूतास्त्रीके शूल खांसी ज्वर श्वास मूर्च्छा कंप शिरकी पीड़ा प्रलाप तृषा दाह तन्द्रा अतीसार छर्दि और बात पित्त तथा कफके हुये संपूर्ण सूतिकारोग नष्टहोते हैं यह प्रसूता स्त्रीकी परम औषधहै इतिदेवदार्वादिक्वाथ ॥ १२०८ ॥

जीरकंस्थूलजीरश्चशतपुष्पाद्वयंतथा । यवानीचाजमोदाचधान्यकंमेथिकापिच ॥ शुंठीकृष्णाकणामूलंचित्रकंहवुषापिच । वदरीफलचूर्णञ्चकुष्ठंकम्पिल्लकंतथा ॥ एतानिपलमात्राणिगुडंपलशतंमतम् । क्षीरप्रस्थद्वयंदद्यात्सर्पिषःकुडवंतथा ॥ पञ्चजीरकपाकोऽयंप्रसूतानांप्रशान्तये । युज्यतेसूतिकारोगेयोनिरोगेज्वरेक्षये ॥ कासेश्वासेपाण्डुरोगेकार्श्येवातामयेषुच । पञ्चजीरकपाकः ॥ १२०९ ॥

जीरा स्थूलजीरा सौंफ सोया अजवाइन अजमोद धनियां मेथी सोंठ पीपल पीपलामूल चीता हाऊबेर बेरकाचूर्ण कूट और कबीला इनसबको चार २ तोले लेकर चारसौ तोले गुड़ १२८ तोले दूध और १६ तोले घीके साथ पाककरे इस पाकको सूतिका रोगोंके नाशकेलिये प्रसूता स्त्रियोंकोदेवे इस्से योनिरोग ज्वर क्षय खांसी श्वास कृशता पांडुरोग और बातरोगोंका नाश होता है इति पंचजीरक पाक ॥ १२०९ ॥

आज्यंस्यात्पलयुग्ममत्रपयसःप्रस्थद्वयंखण्डतः । पञ्चाशत्पलमत्रचूर्णितमथोप्रक्षिप्यतेनागरम् ॥ प्रस्थार्द्धंगुडवल्लिपाच्यविधिनामुष्टित्रयंधान्यकात् । मिश्याःपञ्चपलंपलंकृमिरिपोःसाजाजिजीरादपि ॥ व्योषाम्भोददलोरगेन्द्रसुमनस्त्वग्द्राविडीनांपलंप्रक्तंनागरखण्डसंज्ञकमिदंतत्सूतिकारोगहृत् ॥ तृट्छर्दिज्वरदाहशोषशमनंसश्वासकासापहम् । प्लीहव्याधिविनाशनंकृमिहरंमन्दाग्निसन्दीपनम् ॥ दलंपत्रकंउरगेन्द्रसुमनःनागकेशरम् । द्राविडीसूक्ष्मैलासौभाग्यशुण्ठी ॥ १२१० ॥

आठ८ तोले घी १२८ तोले दूध तथा २०० तोले शक्कर इनसबको गुड़के समान पाककरके ३२ तोले सोंठ १२ तोले धनियां २० तो० सौंफ ४ तो० बायबिड़ंग४ तोले जीरा ४ तो० कालाजीरा त्रिकटुमोथा तेजपात नागकेसर दालचीनी तथा छोटीइलायची यहसबभी चार४तोले इनसबकेचूर्णको मिलावे इसके सेवनसे सूतिकारोग तृषा छर्दि ज्वर दाह शोष श्वास खांसी प्लीहा तथा कृमिरोग का नाश होताहै और मंदहोनेवालीअग्नि बढ़तीहै इतिसौभाग्यशुंठी ॥ १२१० ॥

अथ प्रसूतायानियमसमयावधिमाह ॥

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याल्पभोजना । स्वेहाभ्यङ्गपरानित्यंभवेन्मासमतन्द्रिता ॥ सर्वतःपरिशुद्धानिःसृताशेषदुष्टरुधिराअतन्द्रितापथ्यादौसावधाना । प्रसूतासार्द्धमासान्तेदृष्टेवापुनरार्त्तवे । सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वन्तरेर्मतम् ॥ उपद्रवाविशुद्धाञ्चविज्ञायवरवर्णिनीम् । ऊर्ध्वञ्चतुर्भ्योमासेभ्योपरिहारंविवर्जयेत् ॥ १२११ ॥

प्रसूताके नियमोंके समयकी अवधि ॥

प्रसूतास्त्री दूषित संपूर्ण रुधिर निकलवाकर महीनेभरतक स्निग्ध अल्प तथा पथ्य भोजनकरे तेल लगावे और पथ्यआदि करनेमें सावधानरहे प्रसूता स्त्री डेढ महीनेके उपरान्त अथवा फिर रजोदर्शन होनेपर सूतिका नामसे रहित होती है यह धन्वन्तरिजीका मत है प्रसूता स्त्री को उपद्रवोंसे रहित तथा सुन्दर वर्णवाली जानकर चारमहीने के पीछे नियमोंको छुड़ावे ॥ १२११ ॥

अथ स्तनरोगस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

सक्षीरौवाप्यदुग्धौवादोषःप्राप्यस्तनौस्त्रियाः ।रक्तंमांसञ्चसन्दूष्यस्तनरोगायकल्प्यते ॥ अदुग्धावपिस्तनौप्रसूतायागर्भिण्याश्चस्त्रियाःबोद्धव्यौ । अतआहसुश्रुतःधमन्यःसंवृतद्वाराकन्यानांस्तनसंश्रिताः । दोषाविसरणास्तासांनभवन्तिस्तनामयाः ॥ दोषाविसरणाःसंवृतद्वारत्वेनदोषाणामविसरणमसञ्चारोयासुताः । तासामेवप्रसूतानांगर्भिणीनाञ्चताःपुनः । स्वभावादेवविवृताजायन्तेसंस्रवन्त्यतः ॥ १२१२ ॥

स्तनरोगोंकी संप्राप्ति ॥

कुपितदोष दुग्धसहित अथवा दुग्धरहित स्तनोंमें प्राप्तहोकर मांस तथा रुधिरको दूषितकरकेस्तन रोगोंको दूषित करतेहैं यहांदुग्धरहितस्तनभी प्रसूता अथवा गर्भिणीही स्त्री के जानने चाहियें इसीसे सुश्रुतने कहाहै कि कन्याओंकेस्तनोंमें स्थितधमनी ढकेहुए द्वारवालीहोती हैं इसकारणसे उनमें दोषनहींफैलतेहैं इसीलिये उनकेस्तनरोगभी नहींउत्पन्न होते गर्भिणी तथा प्रसूतास्त्रियोंकी स्तनों में स्थित धमनी स्वभावहीसे खुलजाती हैं इसी कारण उनसे स्रावहोता है ॥ १२१२ ॥

अथ स्तनरोगाणामतिदेशेनलक्षणान्याह ॥

पञ्चानामपितेषांतुहित्वाशोणितविद्रधिम् । लक्षणानिसमानानिवाह्यविद्रधिलक्षणैः पञ्चानांवातपित्तकफसन्निपातागन्तुजानाम् । आगन्तुजस्तनरोगोऽभिघातेनशल्येनच बोद्धव्यः । रक्तजस्यासम्भावात्स्वभावात् ॥ १२१३ ॥

स्तनरोगोंकेलक्षण ॥

बातज पित्तज कफज सान्निपातज तथा आगन्तुज इनपांचोंप्रकारके स्तनरोगोंकेलक्षण रक्तज विद्रधि को छोड़कर अन्यपांच बाहरवाली बिद्रधियोंके लक्षणोंकेसमानहोते हैं १२१३ ॥

अथ स्तनरोगस्यचिकित्सा ॥

शोथंस्तनोत्थितमवेक्ष्यभिषग्विदध्यात् यद्विद्रधावभिहितंबहुधाविधानम् । आमे

विदाहिनितथैवचतस्यपाकेःयस्याःस्तनौसततमेवचनिग्रहातौ ॥ पित्तघ्नानितुशीतानि द्रव्याण्यत्रप्रयोजयेत्। जलौकाभिर्हरेद्रक्तंनस्तनावपुनाहयेत् ॥ उपनाहयेतुस्वेदयेतुले पोविशालामूलेन। हन्तिपीड़ांस्तनोत्थिताम्। निशाकनककल्काभ्यांलेपःप्रोक्तस्तनार्त्ति हा ॥ विशालाइन्द्रवारुणीकनकस्यधत्तूरस्यपत्रंग्राह्यम्। लेपोनिहन्तिमूलंवन्ध्याकर्कोटी भवंशीघ्रम्। निर्वाप्यतप्तलोहंसलिलेतद्वापिवेत्तत्र ॥ स्त्रीरोगाधिकारः ॥ १२१४ ॥

स्तनरोगोंकीचिकित्सा ॥

स्तनोंमें शोथहुआ देखकर विद्रधिमें कहीहुई चिकित्साकरे जिसकेस्तनरोग पकनेपर अथवा न पकनेपर दाहयुक्तहोंय वहांपरपित्तनाशक और शीतलबस्तुओंसे औषधकरे और जोंकोंसेरुधिरनिकल-वावे परन्तुस्तनोंमें स्वेदनदेवे इन्द्रायणकीजड़के लेपसे अथवा हल्दी तथा धतूरकी पत्तीके लेपसे स्तनरोगनष्टहोतेहैं बांझककड़ीकीजडकेलेपसे और लोहेसेबुझेहुए जलकेपीनेसे स्तनरोगोंकानाश होताहै इति स्त्रीरोगाधिकारसमाप्त ॥ १२१४ ॥

अथ बालरोगाधिकारः ॥

बालग्रहाअनाचारात्पीड़यन्तिशिशुंयतः।तस्मात्तदुपसर्गेभ्योरक्षेद्बालंप्रयत्नतः ॥१२१५॥

बालरोगाधिकार ॥

अनाचारसे बालग्रह बालकोंको पीड़ा देते हैं इसलिये उनके उत्पातों से यत्नपूर्व्वक बालकों कीरक्षा करे ॥ १२१५ ॥

अथ बालग्रहाणांनामान्याह ॥

स्कन्दग्रहस्तुप्रथमःस्कन्दापस्मारएवच। शकुनीरेवतीचैवपूतनाचान्धपूतना ॥ पूतनाशीतपूर्वाचतथैवमुखमण्डिका। नवमोनैगमेयश्चप्रोक्ताबालग्रहाअमी ॥ १२१६ ॥

बालग्रहोंके नाम ॥

स्कन्दग्रह स्कन्दापस्मार शकुनी रेवती पूतना अन्धपूतना शीतपूतना मुखमुंडिका और नैगमेय यह नौ बालग्रह हैं ॥ १२१६ ॥

अथ ग्रहाणामुत्पत्तिमाह ॥

नवस्कन्दादयःप्रोक्ताःबालानांयेग्रहाअमी। श्रीमन्तोदिव्यवपुषोनारीवपुषविग्रहाः ॥ एतेस्कन्दस्यरक्षार्थंकृत्तिकामाग्निशूलिभिः। सृष्टाःशरवनस्थस्यरक्षितस्यस्वतेजसा ॥ स्कन्दःसृष्टोभगवतादेवेनत्रिपुरारिणा। विभर्त्तिचापरांसंज्ञांकुमारइतिसंग्रहः ॥ (अयं हिकार्त्तिकेयादन्यः) स्कन्दापस्मारसंज्ञोयःसोऽग्निनातत्समद्युतिः। सचस्कन्दसखोनाम्नाविशाखइतिचोच्यते ॥ ग्रहाःस्त्रीविग्रहाएतेनानारूपाःप्रकीर्त्तिताः। देवानांकृत्तिकानांतेभागाराजसतामसाः ॥ नैगमेयस्तुपार्वत्यांसृष्टोमेषाननोग्रहः। कुमारःसाहिदेवस्यगुहस्यात्मसमोऽस्तिवै ॥ ततोभगवतास्कन्देसुरसेनापतौकृते। उपतस्थुर्ग्रहाएतेदीप्तशक्तिधरंगुहम् ॥ ऊचुःप्राञ्जलयश्चैनंवृत्तिर्नोदीयतामिति। तेषामर्थेततःस्कन्दःशिवंदेवमचोदयेत् ॥ ततोग्रहांस्तानुवाचभगवान्भगनेत्रहृत्। तैर्य्यग्योनिंमानुषंचदैवञ्चात्रितयं

जगत् ॥ परस्परोपकारेणवर्त्ततेधार्य्यतेतथा। देवान्नरान्प्रीणयन्तितैर्य्यग्योनेस्तथैवच॥ यथाकालंप्रवृत्तास्तुऊष्मवर्षाहिमानिलैः। इज्याञ्जलिनमस्कारैर्जपहोमैस्तथैवच ॥ सम्यक्प्रयुक्तैश्चनराःप्रीणयन्त्यपिदेवताः। भागधेयविभक्तञ्चशेषंकिञ्चिन्नविद्यते ॥ तद्युष्माकंशुभावृत्तिर्बालेष्वेवभविष्यति (अथबालग्रहाणांबालग्रहणमाह) कुलेषुयेषुनेज्यन्तेदेवाःपितरएवच। ब्राह्मणाःसाधवोवापिगुरवोऽतिथयस्तथा ॥ निवृत्तशौचाचारेषुतथाकुत्सितवृत्तिषु। निवृत्तभिक्षावलिषुभग्नकांस्यगृहेषुच॥ तेवैबालांश्चतांस्तान्हिग्रहाहिंसन्त्यशङ्किताः ॥ तत्रवोविपुलावृत्तिःपूजाचैवभविष्यति। एवंग्रहाःसमुत्पन्नाबालान्हिंसन्तिवायथा ॥ ग्रहोपसृष्टाबालाःस्युर्दुश्चिकित्स्यतमास्ततः ॥ १२१७ ॥

बालग्रहोंकी उत्पत्ति ॥

यह जो स्कन्दादिक नौ बालग्रह कहेगये हैं वह श्रीमान् तथा दिव्य शरीरधारी हैं इनमेंसे कुछ स्त्रियोंके और कुछपुरुषोंके रूपधारी हैं यह शरवनमें स्थित स्वामिकार्त्तिकजीकी रक्षाकेलिये कृत्तिका पार्वती अग्नि तथा महादेवजीने अपने २ तेजसे उत्पन्न किये हैं भगवान् शिवजीने स्कंदग्रहको उत्पन्न किया उसका दूसरा नाम कुमार भी है (इसको स्वामिकार्त्तिक न समझना) स्कन्दापस्मार अग्निसे उत्पन्न हुआ यह अग्निके समान तेजस्वी है इसे स्कन्दसख और विशाख भी कहते हैं अन्य स्त्री रूप जो नानाप्रकार के ग्रह कहेगयेहैं वह देव तथा कृत्तिकाओंके रजोगुण तथा तमोगुणसे उत्पन्न हुए हैं और नैगमेयग्रहको भगवती श्रीपार्वतीजीने उत्पन्न किया है यह स्वामिकार्त्तिक केही समान है जब स्वामिकार्त्तिक देवता लोगोंके सेनापति कियेगये तबसंपूर्ण ग्रह दीप्त शक्तिवाले स्वामिकार्त्तिकजीसे हाथ जोड़कर बोले कि हे भगवन् आप हमको जीविका दीजिये इनके लिये स्वामिकार्त्तिकजीने श्री शिवजी से प्रार्थना की इसके उपरान्त भगवान् शिवजी उन ग्रहोंसे बोले कि तिर्य्यग्योनि मनुष्य और देवता यह तीनों इस संसारमें परस्परके उपकार से वर्त्तमानरहते हैं और पुष्टरहते हैं देवतालोग मनुष्य तथा तिर्य्यग्योनियों को ऊष्मा बर्षा शीत तथा बायुकेद्वारा समय २ पर प्रसन्न करते हैं और मनुष्य अच्छे प्रकार यज्ञ अंजलि नमस्कार जप तथा होमों से देवतालोगोंको प्रसन्न करते हैं इसप्रकार सम्पूर्ण भागबँटगये हैं कुछ बाकी नहीं हैं इसलिये तुमलोगोंकी वृत्तिबालकोंहीमें शुभ होगी जिनकुलों में देवता पितर ब्राह्मण साधू गुरू तथा अतिथियोंका पूजन सत्कार नहींहोता जोकुल शौचाचारसे रहित हैं जोकुत्सित जीविकाकरते हैं जिनके यहाँ भिक्षुकों को भिक्षादान तथा बलिकर्म नहींहोताहै और जिनके घरमेंकांसे के फूटेबर्त्तन रहते हैं उन के घर में हे बालग्रहगणो निस्सन्देह होकर बालकों की हिंसाकरो वहाँ तुमलोगोंकी जीविका समेत पूजनहोगा इसप्रकारसे उत्पन्नहुए बालग्रह बालकोंकी हिंसाकरते हैं बालग्रहोंसे युक्त बालक अत्यन्त कष्ट साध्यहोतेहैं १२१७॥

अथ सामान्यग्रहजुष्टानांलक्षणान्याह ॥

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणात्त्रतिरोहति। नखैर्दन्तैर्दारयतिधात्रीमात्मानमेवच ॥ ऊर्ध्वंनिरीक्षतेदन्तान्खादेत्कूजतिजृम्भति। भ्रुवौक्षिपतिदष्टौष्ठःफेनंवमतिचासकृत् ॥ क्षामोऽतिनिशिजागर्त्तिशूनाङ्गोभिन्नविट्स्वरः। मत्स्यशोणितगन्धश्चनचाश्नातियथापुरा ॥ दुर्बलोमलिनाङ्गश्चनष्टसंज्ञोपजायते। सामान्यग्रहजुष्टस्यलक्षणंसमुदाहृतम् ॥१२१८॥

सामान्यग्रहों से युक्तबालकों के लक्षण ॥

बालग्रहोंसे पीड़ित बालक कभी उद्विग्न होता है कभी डरताहै तथा कभी रोता है नख तथा दांतोंसे धाय को तथा अपनेहीको काटता है ऊपरकी ओर देखता है दांतोंसे दांतोंको रगड़ता है चिल्लाताहै जंभाई लेताहै भृकुटियोंको हिलाताहै ओठोंकोचाबता है बारंबार फेनेउगलताहै रात्रिको नहीं सोता दुर्बल होजाता है पहलेके समान भोजन नहीं करता और दुर्बलता शोथ मलभेद स्वर भंग मछली तथा रुधिर कीसी गंध दुर्बलता अंगोंकी मलिनता तथा संज्ञाका नाश इनसब लक्षणों से युक्त होताहै यह ग्रहयुक्त बालकोंके सामान्य लक्षणहैं ॥ १२१८ ॥

अथ विशिष्टग्रहजुष्टानांलक्षणानाह ॥

स्रस्तांगक्षतजसगन्धिकस्तनद्विट्। वक्रास्योहतचरणैकपक्षनेत्रः। उद्विग्नःससलिलचक्षुरल्परोदी। स्कन्दार्त्तोभवतिचगाढ़मुष्टिबन्धः॥ निःसंज्ञोभवतिपुनर्लभेतसंज्ञाम्। संस्तब्धःकरचरणैश्चनृत्यतीव। विण्मूत्रेसृजतिचिरेणजृम्भमाणः। फेनंवासृजतिचतत्सखाभिजुष्टः॥ तत्सखाभिजुष्टःस्कान्दापस्मारयुक्तः।स्रस्तांगोभयचकितोविहंगगन्धिः। सास्रावव्रणपरिपीड़ितःसमन्तात्। स्फोटैश्चप्रचिततनुःसदाहपाकै विंज्ञेयोभवतिशिशुःक्षतःशकुन्या॥ रक्तास्योहरितमलोऽतिपाण्डुदेहः। श्यावोवामुखकरपाकवेदनार्त्तः॥ गृह्णातिव्यथिततनुश्चकर्णनासम्। रेवत्याभृशमभिपीड़ितःकुमारः॥ विट्स्रावीस्वपितिनवासरेनरात्रौ। विड्भिन्नंविसृजतिकाकतुल्यगन्धः। छर्द्यार्त्तोहृषिततनूरुहःकुमारस्तृष्णालुर्भवतिचपूतनागृहीतः॥ योद्वेष्टिस्तनमतिसारकासहिक्काच्छर्दीभिर्ज्वरसहिताभिरर्द्यमानः। दुर्वर्णःसततमथापियोऽस्रगन्धिस्तम्ब्रूयाद्भिषगथगन्धपूतनार्त्तम्॥ आक्रन्दत्यभिचकितंसुवेपमानः। संलीनोभवतिव्यथान्त्रकूजयुक्तः। स्रस्तांगोभृशमतिशीर्यतेचशीतात्तम्ब्रूयाद्भिषगथशीतपूतनार्तम्॥ म्लानांगःसरुधिरपाणिपादवक्त्रो वक्राशीकलुषशिरावृतोदरोयः। सज्ञेयःशिशुरथवक्रमण्डिकार्त्तो। सोद्वेगोभवतिचमूत्रतुल्यगन्धिः॥ यः फेनंवमतिविनम्यतेचमध्ये। सोद्वेगोविहसतिचार्द्धवीक्ष्यमाणः। कूजेच्चप्रततमथोवसास्रगन्धिः। निःसंज्ञोभवतिसनैगमेयजुष्टः॥ १२१९ ॥

ग्रहपीड़ित बालकोंके विशेष लक्षण ॥

स्कन्दग्रह पीड़ित बालक शिथिलांग रुधिरके समान गंधयुक्त दुग्धपान रहित टेढ़े मुखवाला पैरोंको पटकने वाला एकओर नेत्रोंको रखनेवाला उद्विग्न नेत्रोंसे आंशू बहनेवाला थोड़ारोनेवाला और पुष्टतासे मुट्ठी बांधने वाला होताहै स्कन्दापस्मार पीड़ित बालक कभी संज्ञासहित तथा कभी संज्ञारहित होताहै स्तब्धहोजाता है नाचने केसे हाथपैर फेंकताहै बहुतदेरमें मलमूत्रका त्याग करता है जंभाई लेताहै और मुखसे भागोंको उगलता है शकुनी पीड़ित बालक शिथिलांग भयसे चकित पक्षिकीसी गन्धसे युक्त स्रावयुक्त घाव तथा दाह और पाकयुक्त स्फोटकोंसे सबओर पीड़ित होता है रेवती पीड़ित बालक रक्तमुख हरितमल तथा पांडु अथवा धुमैले शरीरवाला मुख तथा हाथोंकेपकने से पीड़ित और शरीरके पीड़ित होनेसे कान तथा नासिकाको हाथसे ग्रहणकरनेवाला होताहै पूतना

पीड़ित बालककोमलभेद होकरदस्तआते हैं रात्रिदिन सोतानहीं छर्दि तथातृषा होतीहै रोमांचहोतेहैं औरउसकीगंधकौवेकीसी होजातीहै गन्धपूतना पीड़ित बालकदूधनहीं पीताहै अतीसारखांसी हिचकी छर्दि तथा ज्वरसे पीड़ित होताहै बिवर्ण होजाताहै और उसके रुधिरकीसी गन्धि आतीहै शीतपूतना पीड़ित बालक कांपताहुआ चौंककर चिल्लाता है छिपतासा है पीड़ा उदरकी गड़गड़ाहट तथाशरीर की शिथिलतासे युक्त होताहै और शीतसे बहुत ठिठरता है मुखमुंडिका से पीड़ित बालक म्लान अंग वाला हाथ पैर तथा मुखमें रुधिर युक्त बहुत खाने वाला मैलीशिराओं से युक्त उदरवाला उद्विग्न और मूत्रकीसी गन्धसे युक्तहोताहै नैगमेय पीड़ित बालक मुखसे झागोंको डालताहै शरीर के मध्यभागमें नम्रहोता है उद्विग्नहोकर ऊपर देखताहुआ हंसता है बहुत चिल्लाता है संज्ञारहित हो जाता है और उस्से चरबी तथा रुधिरकीसी गन्ध आती है॥ १२१९॥

अथ सामान्यग्रहाणांजुष्टानांचिकित्सामाह॥

सहामुण्डितिकोदीच्यक्काथस्नानंग्रहापहम्। सहामाषपर्णी। सप्तच्छदामयनिशाचन्दनैश्चानुलेपनम्॥ सर्पत्वक्लसुनंमूर्वासर्पिषारिष्टपल्लवाः। विड़ालविड्जालोममेषशृङ्गीवचामधु॥ धूपःशिशोर्ज्वरघ्नोऽयमशेषग्रहनाशनः। बलीशान्तीष्टकर्माणिकार्य्याणिग्रहशान्तये॥ १२२०॥ सामान्यग्रह पीड़ित बालकोंकी चिकित्सा॥

मासपर्णी मुंडी और सुगन्धबाला इनके काढ़ेके द्वारा स्नानकरनेसे ग्रहों के दोषोंका नाशहोता है छितवन कूट हल्दी तथा चन्दन इनके लेप से ग्रहदोष नष्टहोते हैं सांपकी केंचुली लहसन मरोर॰ फली घी नींबकी पत्ती बिल्लीकी बिष्ठा बकरीकेरोम मेढ़ासिंगी बच और सहत इनसबके द्वारा धूप देनेसे बालकों के ज्वर और सम्पूर्ण ग्रहदोष नष्टहोते हैं बालग्रहोंकी शान्ति के लिये बलि शान्ति तथा इष्टकर्म करने चाहिये॥ १२२०॥

वचाकुष्ठंतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमथापिच। सारिवासैन्धवंचैवपिप्पलीघृतमष्टमम्॥ सिद्धंघृतमिदंमेध्यंपिवेत्प्रातर्दिनेदिने। दृढ़स्मृतिःक्षिप्रमेधाःकुमारोबुद्धिमान्भवेत्॥ न पिशाचानरक्षांसिनभूतानचमातरः। नभवन्तिकुमाराणांपिवतामष्टमङ्गलम्॥ (अष्टमङ्गलंघृतम्॥ १२२१॥

बच कूट ब्राह्मी सरसों सांई सेंधानोन और पीपल इनके द्वारा पाककियाहुआ घी मेधाको हित कारी है इसको प्रातःकाल नित्यपीने से बालक दृढ़स्मृति शीघ्र मेधा तथा सुबुद्धी होताहै और पिशाच राक्षस भूत तथा मातृकाओं की पीड़ानहीं होतीहै इति अष्टमंगल घृत॥ १२२१॥

अथ विशिष्टग्रहजुष्टानांचिकित्सामाह। तत्रस्कन्दग्रहजुष्टस्यचिकित्सा॥

स्कन्दग्रहोपसृष्टस्यकुमारस्यप्रशान्तये। वातघ्नद्रुमपत्राणांक्काथेनपरिषेचनम्॥ देवदारुणिरास्नायांमधुरेषुगणेषुच। सिद्धंसर्पिश्चसक्षीरंपातुमस्मैप्रदापयेत्॥ सर्षपाःसर्पनिर्मोकोवचाकाकादनीघृतम्।उष्ट्राजाविगवांचापिरोमाण्युद्धूपनंभवेत्॥ काकादनीश्वेतगुञ्जा। सोमवल्लीमिन्द्रवृक्षंवन्दाकंविल्वजंशमीम्॥ मृगादन्याश्चमूलानिग्रथितानिविधारयेत्। सोमवल्लिसोमलताइन्द्रवृक्षंककुभवृक्षंमृगादनींइन्द्रवारुणी॥ रक्तानिमा

ल्यानितथापताकारक्तांश्चगन्धानूविविधांश्चभक्ष्यान् । घण्टाचदेवायबलिंनिवेद्यंसकुक्कुटंस्कन्दगृहेनिधाय ॥ स्नानंत्रिरात्रंनिशिचत्वरेषुकुर्य्यात्परंशालियवैर्निवेद्यम् । गायत्रिपूताभिरथाद्भिरग्निंप्रज्वालयेदाहुतिभिश्चधीमान् ॥ रक्षामतःप्रवक्ष्यामिबालानांपापनाशिनीम् । अहन्यहनिकर्त्तव्यायाभिरद्भिरतन्द्रितैः ॥ तपसांतेजसांचैवयशसांवपुषांतथा । निधानंयोऽव्ययोदेवःसतेस्कन्दःप्रसीदतु ॥ ग्रहःसेनापतिर्देवोदेवसेनापतिर्विभुः । देवसेनारिपुहरःपातुत्वांभगवान्गुहः ॥ देवदेवस्यमहतःपावकस्यचयःसुतः । गङ्गोमाकृत्तिकानांचसतेशर्मप्रयच्छतु ॥ रक्तमाल्याम्बरधरोरक्तचन्दनभूषितः । रक्तदिव्यवपुर्देवपातुत्वांक्रौञ्चसूदनः ॥ १२२२ ॥

विशेषग्रहपीड़ितबालकोंकीचिकित्सा । स्कन्दग्रहपीड़ितकीचिकित्सा ॥

स्कन्दग्रहपीडित बालकको शान्तिके लिये अरंड के पत्तोंके काढ़ेसे सींचे औरदेवदारु रासनातथा मधुर गणके द्वारा पाककिये हुये घीको दूधमें मिलाकर पिलावे सरसों सर्पकी कांचली बच श्वेतगुंजा घीऔर ऊंट बकरी मेढ़ी तथा गौकेरोम इनसबकी धूपदेवे सोमलता अर्जुन इन्द्रायण बेलकाबांदा और छोंकर इनकीजड़की माला पहरे रक्तमाला रक्तपताका रक्तसुगंधित बस्तु अनेक प्रकार के भक्ष्य घंटा और मुर्गा इनसबकी बलिस्कन्दग्रहको देवे तीनरात्रि चौराहेपर बालकको स्नान कराकर शालिधान्य और जौको निवेदनकरै गायत्रीमंत्रके द्वारा पढ़ेहुये जलसे अग्नि में आहुति देवे आगे कहेहुये (तपसां तेजसांचैव) इत्यादिक मंत्रों के द्वारा पढ़ेहुये जलोंसे बालकोंकी पाप नाशक रक्षा नित्य करे ॥ १२२२ ॥

अथ स्कन्दापस्मारजुष्टस्य चिकित्सामाह ॥

बिल्वःशिरीषोगोलोमीसुरसादिश्चयोगणः । परिषेकःप्रयोक्तव्यःस्कन्दापस्मारशान्तये॥गोलोमीश्वेतदूर्वासुरसादिगणोयथा । सुरसाश्वेतसुरसापाठाफञ्जीफणिञ्जकः॥सौगन्धिकंभूस्तृणकोराजिकाश्वेतबर्वरी ॥ कट्फलंखरपुष्पाचकाशमर्दश्चशल्लकी विडङ्गमथनिर्गुण्डीकर्णिकारउदुम्बरः॥वलाचकाकमाचीचतथाचविषमुष्टिका । कफकृमिहरःस्यात्ःसुरसादिरयंगणः ॥ सुरसाकृष्णतुलसीश्वेतसुरसाश्वेततुलसीफञ्जीभार्गीफणिञ्जकःमरुवकःसौगन्धिकंकह्लारंभूस्तृणकःसुगन्धतृणंअनेनैवनाम्नागौड़ादौप्रसिद्धः । खरपुष्पाबर्वरीकाशमर्दःकसौंदीअनेनैवनाम्नाप्रसिद्धःविषमुष्ठिःवकायनइति । अष्टमूत्रविपक्वंचतैलमभ्यञ्जनेहितम् । मूत्राष्टकमाहगोऽजाविमहिषाश्वानांखरोष्ट्रकरिणांतथा मूत्राष्टकमितिस्यातंसर्वशास्त्रेषुसम्मतम् ॥ क्षीरीवृक्षकषायेणकाकोल्यादिगणेनच । विपक्तव्यंततःपश्चाद्दातव्यंपयसासह । काकोल्यादिगणेनकल्कीकृतेनतैलंपक्तव्यम् ॥ काकोल्यादिगणोयथा । काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकस्तथाऋद्धिर्वृद्धिस्तथामेदामहामेदागुडूचिका ॥ मुद्गपर्णीमाषपर्णीपद्मकंवंशलोचना । शृङ्गीप्रपौण्डरीकञ्चजीवन्तीमधुयष्टिका ॥ द्राक्षाचेतिगणोनाम्नाकाकोल्यादिरुदीरितः । स्तन्यकृद्बृंहणोवृष्यःपित्त

रक्तानिलापहः॥उत्सादनंवचाहिङ्गुयुक्तमत्रप्रकीर्तितम् । गृध्रोलूकपुरीषाणिकेशाहस्तिनखोद्धतम् ॥ वृषभस्यचरोमाणियोज्यान्युद्धूपनेसदा । अनन्तांकुक्कुटींविम्बींमर्कटींञ्चापिधारयेत् ॥ अनन्ताजवासाकुक्कुटीशाल्मली । पक्वान्यन्नानिमांसानिप्रसन्नारुधिरंपयः । मुद्गौदनंनिवेद्याथस्कन्दापस्मारिणेवटे ॥ (वटेवटतलेबलिंनिवेद्येत्यन्वयः चतुष्पथेकारयेच्चस्नातंतेनततःपठेत् (तेनस्कन्दापस्मारिणास्नानंकारयेदित्यन्वयः) स्कन्दापस्मारसंज्ञोयःस्कन्दस्यदयितःसखा । विशाखःसशिशोरस्यशिवायास्तुशुभाननः १२२३

स्कन्दापस्मार पीड़ितकीचिकित्सा ॥

बेलसिरस श्वेतदूब और सुरसादिगण इनके काढ़ेके द्वारा सींचने से स्कन्दापस्मार शान्त होताहै कृष्ण तुलसी श्वेत तुलसी पाठा भारंगी मरुआ कह्लार सुगन्धतृण राई श्वेतबबई कायफल बठई कसौंदी सोनापाठा बायबिड़ंग निर्गुंडी कठचंपा गूलर बरियारा काकजंघा और बकायन इन सबको सुरसादिगण कहते हैं यहकफतथा कृमिनाशक हैं मूत्राष्टक के द्वारा पाक कियेहुये तेल के मलने से स्कन्दापस्मार शान्त होताहै गौ बकरी भेड़ भैंसा घोड़ा गधा ऊंटऔर हाथी इनसब के मूत्रको मूत्राष्टक कहते हैं दूधवाले वृक्षों के काढ़े के साथ काकोल्यादि गणके कल्कके द्वारा पाक कियेहुये तेलको दूधके साथ सेवन करे काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा गिलोय मुद्गपर्णी माषपर्णी पद्माक बंशलोचन काकड़ासिंगी पुंडरिया जीवन्ती मुलहठी और दाख इनसबको काकोल्यादि गण कहते हैं यहदूध तथा धातुओं का बढ़ाने वाला वीर्यवर्द्धक और रक्तपित्त तथा बातनाशक है बचतथा हींगके द्वारा उबटन करना चाहिये गिद्ध तथा उल्लूकी विष्ठा केश हाथी के नख घीऔर बैलके रोम इनकी धूपदेनी चाहिये जवासा सेंमर कुंदुरू और किवांच इनको धारण करना चाहिये बरगदके नीचे पकान्न मांस मदिरा रुधिर दूध और मूंगभात इन सबको निवेदन करके स्कन्दापस्मार वाले को चौराहे में स्नानकरावे और स्कन्दापस्मार संयोगः इत्यादि मंत्रको पढ़े ॥ १२२३ ॥

अथ शकुनीग्रहजुष्टस्यचिकित्सामाह ॥

शकुनीग्रहजुष्टस्यकार्य्यंवैद्येनजानता।वेतसाम्रकपित्थानांक्वाथेनपरिषेचनम् ॥ ह्रीवेरमधुकोशीरसारिवोत्पलपद्मकैः । लोध्रप्रियंगुमञ्जिष्ठागैरिकैःप्रदिहेच्छिशुम् ॥ प्रदिहेत्तालिम्पेत्दिह्यादितिसिद्धेदिहेदितिरूपसिद्धिरार्षत्वात् । स्कन्दग्रहोक्ताधूपाश्चहिताअत्रभवन्तिहि । स्कन्दापस्मारशमनंघृतमत्रापिपूजितम् ॥ शतावरीमृगैर्वारुनागदन्तीनिदिग्धिकाम् । लक्ष्मणांसहदेवींचवृहतींचापिधारयेत् ॥ मृगैर्वारुबड़ीइन्द्रवारुणीनागदन्तीनागहुलीतिलोकेप्रसिद्धा । तिलतण्डुलकंमाल्यंहरितालंमनःशिलाम् । बलिरेषांकरञ्जेतुनिवेद्योनियतात्मना ॥ निकटेचप्रयोक्तव्यंस्नानमपियथाविधि । श्वेतशिरीषगन्धाष्टगुग्गुलुसर्षपैः । सिद्धमभ्यञ्जनेतैलंधारणंपूर्वमेवतु।शकुनीग्रहशान्त्यर्थंप्रदेहंकारयेद्धितम् । कुर्य्याच्चविविधांपूजांशकुन्याःकुसुमैःशुभैः ॥ निकुम्भोक्तेनविधिनास्नापयेत्तंततःपठेत् । निकुम्भःशिवस्यगणविशेषस्तेनोक्तेनविधिनाशिशुरक्षायांदेव्यास्तुतिः ॥ अन्तरिक्षचरा

देवीसर्व्वालङ्कारभूषिता। अधोमुखीसूक्ष्मतुण्डाशकुनीतेप्रसीदतु॥ दुर्दर्शनामहाकाया पिंगांगीभैरवस्वरा। लम्बोदरीशंकुपर्णीशकुनीतेप्रसीदतु॥ १२२४॥

शकुनीग्रहपीड़ितकीचिकित्सा॥

शकुनीग्रहपीड़ित बालकको बेंत आम तथा कैथेके काढ़ेसेसींचे और सुगन्धबाला मुलहठी खस साँई उत्पल पद्माक लोध प्रियंगु मजीठ तथा गेरू इनसबसेलेपकरे स्कन्दग्रहकी चिकित्सामें कही हुई धूपऔरस्कन्दापस्मारकाशान्तकरनेवालाघीभी इसमें हितकारीहै शतावरबड़ीइन्द्रायणनागाहुल्ली भटकटैया लक्ष्मणा सहदेई और बड़ीभटकटैया इनकेधारणसे शकुनीग्रहशान्तहोताहै सावधानहोकर तिल चावल माला हरताल तथा मैनसिल इनकीबलिकरंजुएकेनीचेदेवे तथा उसीकेनिकटस्नान करावे श्वेतसिरस अष्टगंध धौ गूगल तथा सरसों इनकेद्वारा पाककियेहुए तेलकोलगावे और पहले कहाहुआ लेपलगावे उत्तमपुष्पोंसे शकुनीग्रहकी अनेकप्रकारसे पूजाकर और निकुंभ (शिवगण) की कहीहुईबिधिसे बालककोस्नानकरवाके अन्तरिक्षचरादेवी इत्यादिमंत्रोंकोपढ़े॥ १२२४॥

अथ रेवतीग्रहजुष्टस्यचिकित्सा॥

अश्वगन्धाजशृङ्गीचसारिवाथपुनर्नवा। सहाविदारीह्येतासांक्काथेनपरिषेचनम्॥ (अजशृंगीमेढ़ाशृंगीसहासेवतीपुष्पजातिः) तैलमभ्यञ्जनेकार्य्यंकुष्ठेसर्जरसेतथा॥ पलंकषायंनलदेतथागौरकदम्बके। सर्जरसःसरालःपलङ्कषायगुग्गुलुःनलदंलामज्जक मूउशीरवत्पीतच्छविः॥ गौरकदम्बकःहारिद्रकःहरदुआकदम्बइतिलोके। धवाश्वकर्ण ककुभशल्लकीतिन्दुकेषुच॥ काकोल्यादौगणेचापिसिद्धंसर्प्पिःपिबेच्छिशुः। अश्वकर्णः साखूइतिलोकेप्रसिद्धः॥ कुलत्थंशङ्खचूर्णञ्चप्रदेहःसाश्वगन्धिकः। गृध्रोलूकपुरीषाणिय वान्यवफलोद्भृतम्॥ सन्ध्ययोरुभयोःकार्य्यमेतद्धूपनंशिशोः (यवफलोवंशांकुरः)शुक्लाः सुमनसोलाजाःपयःशाल्योदनंदधिः॥ बलिर्निवेद्योगोतीर्थेरेवत्यैप्रयतात्मना (गोतीर्थे गोष्ठे)स्नानंधात्रीकुमाराभ्यांसंगमेकारयेद्भिषक्॥नानाशस्त्रधरादेवीचित्रमाल्यानुलेपना। चलत्कुण्डलिनीश्यामारेवतीतेप्रसीदतु॥ उपासतेयांसततंदेव्योविविधभूषणाः। लम्बा करालाविनताथैवबहुपुत्रिका॥ रेवतीशुष्कनासाचतुभ्यंदेवीप्रसीदतु॥ १२२५॥

रेवतीग्रहपीड़ितकी चिकित्सा॥

असगंध मेढ़ासिंगी साँई गदापूर्णा सेवती तथा बिदारीकन्द इनकेक्काथ के द्वारा रेवती ग्रहपीड़ित बालकको सींचे कूट राल गूगल लामज्जक तथा हरदुआ कदंब इनकेद्वारापाक कियाहुआतेललगावे धौ साखू अर्जुन सलाई तेंदू तथा काकोल्यादिगणकेद्वारा पाककियाहुआ घीबालककोपिलावे कुलथी शंखचूर्ण तथा असगंधकेद्वारा लेपकरे गिद्ध तथा उल्लूकी बीट जौ बांस तथा घीइनसबके द्वारा प्रातः-काल तथा सायंकाल धूपदेवे सावधानहोके श्वेतपुष्प खील दूध भात तथा दही इनकीबलि रेवती ग्रहको गौशालामेंदेवे औरधाय तथा बालक दोनों को स्नानकराकर नानाशस्त्र धरा देवी इत्यादि मंत्रोंको पढ़े॥ १२२५॥

अथपूतनाग्रहजुष्टस्यचिकित्सा॥

कपोतवङ्काश्योनाकोवरुणःपारिभद्रकः। आस्फोताचैवयोज्याःस्युर्बालानांपरिषेचने॥

कपोतवङ्काब्राह्मीआस्फोताऽपराजिता । नत्रापयस्यागोलोमीहरितालंमनःशिला ॥ कुष्ठ सर्जरसश्चैवतैलार्थेकल्कइष्यते । नत्रापयस्यानूतनाक्षीरविदारीगोलोमीश्वेतदूर्वा । हितं घृतंतुगोक्षीर्य्यासंसिद्धंमधुकेऽपिच ॥ कुष्ठतालासखदिरस्यन्दनोऽर्जुनएवच । पत्तसःककुभश्चापिमज्जानोवदरस्यच ॥ कुक्कुटास्थिघृतंचापिधूपनंसहसर्षपैः । स्यन्दनःस्यन्दनइत्येवंनाम्नाप्रसिद्धः ॥ काकादनींचित्रफलांनिम्बींगुञ्जाञ्चधारयेत् । काकादनीश्वेतगुञ्जाचित्रफलाबृहदिन्द्रवारुणी ॥ मत्स्योदनंबलिंदद्यात्कृशरांपललंतथा । शरावसंपुटेकृत्वातस्य शून्येगृहेभिषक् ॥ उत्सृष्टान्नाभिषिक्तस्यशिशोःस्नपनमिष्यते । कुष्ठतालीसखदिरंचन्दनंस्यन्दनंतथा ॥ देवदारुवचाहिंगुकुष्ठंगिरिकदम्बकम् । एलाहरेणवश्चापियोज्याउद्धूपनेसदा ॥ मलिनाम्बरसंवीतामलिनारूक्षमूर्द्धजा । शून्यागाराश्रयादेवीबालकंपातुपूतना ॥ १२२६ ॥

पूतनाग्रह पीड़ितकी चिकित्सा ॥

ब्राह्मी सोनापाठा बरुणा नींब बिष्णुक्रान्ता इनके काढ़ेके द्वारा पूतनाग्रहपीड़ित बालक को सींचे नवीन क्षीर बिदारी श्वेतदूर्बा हरताल मैनसिल कूट तथा राल इनसबके द्वारा पाक कियेहुये तेलको लगावे बंशलोचन तथा मुलहठी के द्वारा पाककिया हुआ घी हितहै कूट तालीस कत्था स्यन्दन अर्जुन कटहर अर्जुन तथा बेरकी गूदी मुरगीकी हड्डी सरसों औरघी इन सबकी धूपदेनी चाहिये श्वेत गुंजा बड़ी इन्द्रायन कुंदुरू तथा घोंघची इनकाधारण करनाचाहिये मछली भात खिचड़ी तथा मांस इनको दोसकोरोंमें रखकर पूतनाग्रहको शून्य घरमें बलिदेवे फिर जूठे अन्नको लगाकर बालकको स्नान करावे कूट तालीस कत्था चन्दन स्यन्दन देवदारु बच हींग कूट पहाड़ी कदंब इलायची तथा संभालू के बीज इनकी धूप देवे और मलिनाम्बर संवीता इत्यादि आगे कहे हुये मंत्रको पढ़े ॥ १२२६ ॥

अथगन्धपूतनाग्रहजुष्टस्यचिकित्सा ॥

तिक्तद्रुमाणांपत्रेषुक्वाथःकार्य्योऽभिषेचने । तिक्तद्रुमानाह ॥ निम्बंपटोलःक्षुद्राचगुडूचीवासकस्तथा । विसर्पकुष्ठनुतरूयातोगणोऽयंपञ्चतिक्तकः ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकोमधुकोमधु । शालिपर्णीबृहत्यौचघृतार्थेचसमाहरेत् ॥ सर्वगन्धैःप्रदेहश्चगात्रेचाक्ष्णोश्चशीतलैः । सर्वगन्धैःकुंकुमागुरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनैःसहअक्ष्णोस्तुशीतलैःचन्दनकर्पूरैः ॥ नतुकस्तूरीकुंकुमागुरुभिस्तेषामुष्णत्वात् । पुरीषंकौकुटंकेशाश्चर्मसर्पभवंस्तथा ॥ जीर्णमाभिक्ष्णशोवासोधूपनायोपकल्पयेत् । कुकुटींमर्कटींविम्बीमनन्तांचापिधारयेत् ॥ मांसमामतथापक्वंशोणितंचचतुष्पथे । निवेद्यमन्तश्चगृहेशिशोःस्नपनमिष्यते ॥ करालापिंगलामुण्डाकषायाम्बरसंवृता । देविबालमिमंप्रीतारक्षत्वंगन्धपूतने ॥ १२२७ ॥

गन्धपूतनाग्रह पीड़ितकी चिकित्सा ॥

तिक्तवृक्षोंकेकाढ़ेसे गन्धपूतना पीड़ित बालकको सींचे नींब पर्वल भटकटैया गिलोय अडूसा इन सबको पंचतिक्त कहते हैं यह विसर्प तथा कुष्ठनाशकहैं पीपल पीपलामूल चीता मुलहठी सहत

शालिपर्णी और दोनोंभटकटैया इनकेद्वारा पाककियाहुआ घी हित है सर्वगन्ध (केसर अगर कपूर कस्तूरी तथा चन्दन) के द्वारा शरीरमेंलेपकरे औरनेत्रों में कपूर तथा चन्दनकालेपकरे मुर्गेकी बीट बाल सर्पकीकांचली तथा पुरानेबस्त्रइनकीधूपबारम्बारदेवे सेमर किवांच कुंदुरू तथासांईं को धारण करे कच्चे तथा पक्के मांस और रुधिरकेद्वारा चौराहेमें बलि देकर घरके भीतर बालकको स्नानकरावे और करालापिंगला इत्यादि आगेकहेहुए मंत्रकोपढे ॥ १२२७ ॥

अथशीतपूतनाग्रहजुष्टस्यचिकित्सा ॥

गोमूत्रंचाश्वमूत्रञ्चमुस्तांचामरदारुच । कुष्ठञ्चसर्वगन्धांश्चतैलार्थमवधारयेत् ॥ सर्वगन्धान्चन्दनादीन् । रोहिणीनिम्बखदिरपलाशककुभत्वचः ॥ निःक्काथ्यतस्मिन्नः क्काथेसक्षीरेविपचेत्घृतम् । गृध्रोलूकपुरीषाणिवस्तिगन्धामहित्वचम् ॥ निम्बपत्राणि च तथाधूपनार्थंसमाहरेत् । धारयेदपिगुञ्जाञ्चबलांकाकादनींतथा ॥ नद्यांमुद्गौदनैश्चापि तर्पयेच्छीतपूतनाम् । जलाशयान्तेबालस्यस्नपनंचोपादिश्यते ॥ (जलाशयान्तेजला शयतीरे) देव्यैदेयश्चोपहारोवारुणींरुधिरंतथा । मुद्गौदनाशिनीदेवीसुराशोणितपायि नी ॥ जलाशयरतानित्यंपातुत्वांशीतपूतना ॥ १२२८ ॥

शीतपूतना ग्रहपीड़ितकी चिकित्सा ॥

गोमूत्र अश्वमूत्र मोथा देवदारु कूट तथा चन्दनादि सम्पूर्ण सुगन्धितबस्तु इनके द्वारा पाक कियाहुआ तेल लगावे कुटकी नींब कत्था ढाक तथा अर्जुनकीछाल इनसबकेक्काथ और दूधके द्वारा पाककिया हुआ घी हितहै गिद्ध तथा उल्लूकीबीट अजमोद सर्पकी कांचली तथा नींबकीपत्ती इनसबकी धूपदेवे घोंघची बरियारा तथा श्वेत गुंजाको धारणकरे मूंग तथा भात के द्वारा नदीमें शीतपूतना को तृप्तकरे जलाशयके निकट बालकको स्नानकरवावे और बारुणी मदिरा तथा रुधिरकी बलि शीतपूतनाको देकर मुद्गौदनाशिनी इत्यादि आगे कहेहुए मंत्रको पढे ॥ १२२८ ॥

अथ मुखमण्डिकाग्रहजुष्टस्य चिकित्सा ॥

कपित्थंविल्वतर्कारीवामागन्धर्वहस्तका । कुबेराक्षीचयोज्याःस्युर्बालानांपरिषेचने ॥ तर्कारीगणियारइतिलोकेगन्धर्वहस्तकःश्वेतएरण्डःकुबेराक्षीपाड़रिइतिलोके । स्वरसे भृंगवृक्षाणांतथैवहयगन्धया ॥ तैलंवचांचसंयोज्यपचेदभ्यञ्जनंशिशोः । (भृंगवृक्षः भँगराइतिलोके) वचासर्जरसंकुष्ठंसर्पिश्चोद्धूपनेहितम् ॥ वर्णकंचूर्णकंमाल्यमञ्जनंपा रदंतथा । मनःशिलांचोपहरेद्गोष्ठमध्येबलिंततः ॥ पायसंसपुरोडाशंतद्बल्यर्थमुपाहरेत् । मन्त्रपूताभिरद्भिश्चतत्रैवस्नपनंहितम् ॥ जलाभिमन्त्रणमन्त्रमाह । अलंकृताकामव तीसुभगाकामरूपिणी ॥ गोष्ठमध्यालयापातुयातुत्वंमुखतुण्डिका ॥ १२२९ ॥

मुखमुंडिकाग्रहपीड़ितकी चिकित्सा ॥

कैथा बेल गनियारी अडूसा श्वेतअरंड तथा पाढ़र इनकेक्काथके द्वारा मुखमुंडिका पीड़ित बाल- कको सींचे भंगरेकारस असगन्ध तथा बच इनके द्वारा पाककिये हुए तेलको बालकके लगावे बच राल कूट तथा घीकी धूपदेवे चन्दन सुगन्धित वस्तुओं के चूर्ण माला रसौत पारा तथा मैनसिल

खीर और पुरोडास इनसबकी बलि गोशालामें मुखमुंडिकाग्रहको देवे और अलंकृता कामवती इत्यादि आगे कहे हुए मंत्रसे अभिमंत्रित कियेहुए जलके द्वारा बालकको वहीं स्नानकरवावे ॥१२२९

अथ नैगमेयग्रहजुष्टस्यचिकित्सामाह ॥

बिल्वाग्निमन्थपूतीकैःकार्य्यंस्यात्परिषेचनम्। (पूतीकःघोराकरञ्जः) प्रियंगुसरलानन्ताशतपुष्पाकुटन्नटैः ॥ पचेत्तैलंसगोमूत्रंदधिमस्त्वम्लकाञ्जिकः । कुटन्नटंवितुन्नकनाम्नोवृक्षविशेषस्यत्वक्गुड़तजीइतिलोकेमुस्ताकृतिः ॥ श्योनाकंवावचांवयस्याजटिलांगोलोमींश्चापिधारयेत । वयस्याआमलकीगुडूचीवागोलोमीश्वेतवचा ॥ जटिलाजटामांसी । मिसिसोयाइतिलोके । लांगलीकरीहारी । वयस्यामलकीगुडूचीवाउत्सादनंहितञ्चात्रस्कन्दापस्मारनाशनम्॥ मर्कटोलूकगृध्राणांपुरीषाणिप्रधूपनम्। धूमःसुप्तजनेकार्य्योबालस्यहितमिच्छता ॥ तिलतण्डुलकंमाल्यंभैक्ष्यांश्चविविधानपि । कौमारभृत्येमेषायप्लक्षमूलेनिवेदयेत ॥ (कौमारभृत्येबालरक्षायांमेषायनैगमेयग्रहाय) अधस्तात्क्षीरवृक्षस्यस्नपनञ्चोपदिश्यते। अजाननश्चलाक्षिभ्रूःकामरूपीमहायशाः ॥ बालंपालयितादेवोनैगमेयोऽभिरक्षतु ॥ १२३० ॥

नैगमेय ग्रहपीड़ितकी चिकित्सा ॥

बेल अरणी तथा करंजुयेके काढ़ेसे नैगमेय ग्रहपीड़ित बालकको सींचे प्रियंगु सरो साईं सौंफ तथा सोनापाठा इनके द्वारा गोमूत्र दहीकातोड़ तथा कांजीके द्वारा पाककिया हुआ तेल लगावे बच आमला अथवा गिलोय जटामांसी तथा श्वेत बच इनसबको धारण करे स्कन्दापस्मार के दोष का नाशक उबटन इसमें हित है बानर उल्लू तथा गिद्धकी बीटकी धूप मनुष्योंके सोजानेपर बालक के हितकेलियेदेवे बालक की रक्षाके लिये तिल तंडुल माला तथा नाना प्रकारके भक्ष्य पदार्थ नैगमेय ग्रहको पकरियाकी जड़में बलिदेवे और दूधवाले वृक्षके नीचे बालकको स्नानकरवाके अजाननश्चलाक्षिभ्रू इत्यादि आगेकहेहुये मंत्रको पढ़े ॥ १२३० ॥

अथ बालरोगाणांनिदानानिलक्षणानि चाह ॥

धात्र्यास्तुगुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषलैस्तथा। दोषादेहेप्रकुप्यन्तिततःस्तन्यंप्रदुष्यति॥ मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादयस्त्रयः । दूषयन्तिपयस्तेनजायन्तेव्याधयःशिशोः ॥ वातदुष्टंशिशुस्तन्यंपिबन्वातगदातुरः । क्षामस्वरःकृशांगःस्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः ॥ स्विन्नोभिन्नमलोबालःकामलापित्तरोगवान्। तृष्णालुरुष्मसर्वांगःपित्तदुष्टंपयःपिबन्॥ श्लेष्मदुष्टंपिबन्क्षीरंलालालुःश्लेष्मरोगवान् । निद्रार्दितोजड़ःशूनोवक्राक्षश्छर्दनःशिशुः ॥ ज्वराद्याःव्याधयःसर्वे वक्ष्यन्तेमहतान्तुये । बालानामपितेतद्वद्बोद्धव्याभिषगुत्तमैः ॥ बालानामेवयेरोगाभवन्तिमहतांनच । तालुकण्टकमुख्यांस्तानवधारययत्नतः ॥ १२३१ ॥

बालरोगों के निदान और लक्षण ॥

भारी विषमतथा दोषकारी धायके भोजनों से कुपित हुये दोषदूध को दूषित करते हैं अनुचित

आहार बिहार करने वाली धायके कुपित हुये तीनों बातादि दोष दूध को दूषित करते हैं इसी दूधके पीने से बालकों के रोग होते हैं बात दूषित दूधके पीनेसे बातरोग स्वरभंग कृशता और मलमूत्र तथा बायुका अवरोध होताहै पित्तदूषित दूधपीने से स्वेद मलभेद कामला तृषा शरीर की उष्णता और अन्यपित्तज रोगहोते हैं कफदूषित दूधके पीनेसे लारबहना अधिक निद्रा जड़ता शोथ नेत्रोंकी रक्तता छर्दि और अन्य कफज रोगहोतेहैं ज्वरआदिक सम्पूर्ण रोग जो बड़ोंके लिये कहेगये हैं वह बालकों के भी उसीप्रकार से होते हैं और जोरोग केवल बालकों केही होते हैं किन्तु बड़ों के नहीं होतेहैं उन तालुकंटक आदिरोगों का बर्णन करतेहैं ॥ १२३१ ॥

तत्रादौतालुकण्टक माह ॥

तालुमांसेकफःक्रुद्धःकुरुतेतालुकण्टकम् । तेनतालुप्रदेशस्य निम्नतामूर्द्धिजायते ॥ तालुपातात्स्तनद्वेषःकृच्छ्रात्पानंशकृद्द्रवम्। तृडक्षिकण्ठास्यरुजाग्रीवादुर्द्धरतावमिः ॥ पानंस्तनस्यशकृद्द्रवद्रवरूपम्॥ १२३२ ॥

तालुकंटक रोगका लक्षण ॥

बालकों के तालुमांसमें कुपित हुआ कफ तालुकंटक रोग को उत्पन्न करता है इसरोग में तालु मस्तकसे नीचे को लटक आताहै और तालुके लटकने से स्तनों से द्वेषकरता हुआ बहुत कष्टसे दूधपीताहै ग्रीवाको बहुत कष्टसे धारण करता है और मलभेद तृषा छर्दि तथानेत्र कंठ और मुख की पीड़ा से युक्त होता है १२३२ ॥

महापद्ममाह ॥

वीसर्पस्तुशिशोःप्राणनाशनःशीर्षवस्तिजः । पद्मवर्णोमहापद्मरोगोदोषत्रयोद्भवः ॥ शङ्खाभ्यांहृदयंयातिहृदयाच्चगुदंव्रजेत् । पद्मवर्णःलोहितवर्णःतत्रशीर्षजोवीसर्पः ॥ शङ्खाभ्यांहृदयंयातिहृदयाच्चगुदंव्रजेत् । एवंवास्तिजोगुदंयातिगुदतःहृदयंहृदयाच्छिरोयातिइतिबोद्धव्यम्॥ १२३३ ॥

महापद्मकालक्षण ॥

बालकोंके शिर तथा पेडूमें त्रिदोषके कोपसे हुआ पद्मवर्ण बीसर्प असाध्य होता है शिरमें हुआ बीसर्प कपालकी हड्डियोंसे हृदयमें जाताहै तथा हृदयसे गुदामेंजाता है और पेडूमें हुआ बीसर्पगुदा में जाकर गुदासे हृदयमेंजाताहै तथा हृदयसे शिरमेंजाताहै इसेमहापद्मकहतेहैं ॥ १२३३ ॥

कुकूणकमाह ॥

कुकूणकंक्षीणदोषाच्छिशूनामेववर्त्मनि । जायतेसरुजंनेत्रंकण्डूरंप्रस्रवेद्बहु ॥ शिशुः कुर्य्याल्ललाटाक्षिकूटनासाप्रघर्षणम्। शक्तोनार्कप्रभांद्रष्टुंनचाक्ष्यन्मीलनक्षमः ॥ कुकूणकंकौथुआह इतिलोके॥ १२३४ ॥

कुकूणककालक्षण ॥

दूधकेदोषसे बालकोंके पलकोंमें कुकूणक (कौथुआ) रोगहोताहै इसरोगमें पीड़ा खुजली तथा बहुतस्रावनेत्रोंमेंहोताहै और ललाट नेत्र तथा नासिकाको बालक बारम्बार रगड़ताहै और सूर्य्यको नहीं देखसक्ता न नेत्रखोलसक्ताहै ॥ १२३४ ॥

अथ तुण्डीगुदपाकमाह ॥

वातेनाध्मापितानाभिःसरुजातुण्डिरुच्यते । बालस्यगुदपाकाख्योव्याधिःपित्तेन जायते॥ १२३५ ॥

तुंडी और गुद पाकका लक्षण ॥

बायुके द्वारा फूली हुई पीड़ा सहित नाभिको तुंडी कहते हैं और पित्तसे जो बालकों की गुदा पकजाती है उसे गुदपाक कहते हैं ॥ १२३५ ॥

अहिपूतनमाह ॥

शकृन्मूत्रसमायुक्तेधौतेपानेशिशोर्भवेत्। स्विन्नेवास्नाप्यमानस्यकण्डूरक्तकफोद्भवा॥ कण्डूयनात्ततःक्षिप्रंस्फोटाःस्रावश्चजायते । एकीभूतंव्रणंघोरंतंविद्यादहिपूतनम् ॥ स्विन्नेस्वेदिते॥ १२३६ ॥

अहिपूतन का लक्षण ॥

बालकोंकी मलमूत्रयुक्त गुदाके न धोनेसे अथवा पसीना आनेपर स्नान न करवानेसे रुधिर तथा कफके द्वारा खुजली उत्पन्न होती है फिर खुजलाने से बहतेहुए स्फोटक (फोड़े) उत्पन्नहोते हैं और यह सब मिलकर छत्तासा होकर एक घाव होजाताहै उसे अहिपूतनकहते हैं॥ १२३६ ॥

अजगल्लीमाह ॥

स्निग्धासवर्णाग्रथितानीरुजामुद्गसन्निभा। कफवातोत्थिताज्ञेयाबालानामजगल्लिका ॥ ग्रथितागुम्फितेवमुद्गसन्निभामुद्गाकृतिः ॥ १२३७ ॥

अजगल्लीका लक्षण ॥

कफ तथा वायुकेद्वरा बालकों के शरीर में स्निग्ध शरीर के समान बर्णवाली गुथीहुई सी और पीड़ा रहित मूंगके समान पिड़िका होती है उसे अजगल्लिका कहते हैं॥ १२३७ ॥

परिगर्भिकमाह ॥

मातुःकुमारोगर्भिण्याःस्तन्यंप्रायःपिबन्नपि । कासाग्निसादवमथुतन्द्राकार्श्यारुचिभ्रमैः ॥ युज्यतेकोष्ठवृद्ध्याचतमाहुःपरिगर्भिकम् । रोगंपरिभवाख्यञ्चतत्रयुञ्जीतदीपनम् ॥ पिबन्नपीत्यपिशब्दादपिबन्नपिपरिगर्भिकः । अहीड़ीतिलोकेपरिभवाख्यंपरिभवेतिनामान्तरम् ॥ १२३८ ॥

परि गर्भिकका लक्षण ॥

जो बालक गर्भिणी माताका दूधपीता है उसे प्रायःखांसी मन्दाग्नि छर्दि तन्द्रा कृशता अरुचि भ्रम तथा कोष्टवृद्धि यह रोग होतेहैं इसरोगको परिगर्भिक और परिभव कहते हैं इसमें दीपन औषध देनी चाहिये और दूध न पीनेसे भी यह रोगहोते हैं॥ १२३८ ॥

अथ दन्तोद्भेदकान्रोगानाह ॥

दन्तोद्भेदःशिशोःसर्वं रोगाणांकारणंस्मृतम् । विशेषात्ज्वरविड्भेदकासच्छर्दिशिरोरुजाम्। अभिष्यन्दस्यपोथक्याविसर्पस्यचजायते ॥ कारणमित्यन्वयःपोथक्यावर्त्मरोगविशेषस्य ॥ १२३९ ॥

दांतोंके निकलनेसे हुए रोगोंका वर्णन ॥

दांतोंका निकलना बालकों के सम्पूर्ण रोगोंका कारणहै और विशेष करके ज्वर मलभेद खांसी छर्द्दि शिरकी पीड़ा अभिष्यन्द पोथकी तथा विसर्पका कारण है ॥ १२३९ ॥

अथ बालरोगाणांचिकित्सा ॥

भैषज्यंपूर्वमुद्दिष्टंमहतांयज्ज्वरादिषु । तदेवकार्य्यंबालानांकिन्तुदाहादिकंविना ॥ दाहादिकंविनाअग्निदाहादिक्षीरवमनविरेचनशिराव्यधादिकंविना । महाकष्टेचोत्पन्नेवमनविरेकाद्यपिदद्यात् । यतआहसुश्रुतःविरेकवस्तिवमनान्यृतेकुर्य्याच्चनात्ययादिति । अत्ययात्विनाशकरकष्टात्ऋतेविना ॥ १२४० ॥

बालरोगोंकी चिकित्सा ॥

जो औषध पहले बड़ों के लिये ज्वरादि रोगोंमें कहीगई हैं बालकों के लियेभी वही औषध दाह बमन बिरेचन तथा फस्त आदिक तीक्ष्ण कर्मोंके बिना करनी चाहिये परन्तु बहुत कष्टहोनेपर बमन आदिकभी करानी चाहिये क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि प्राणनाशक कष्टके बिना बिरेचन वस्तिकर्म तथा बमन न कराना चाहिये ॥ १२४० ॥

तएवदोषादूष्याश्चज्वराद्याव्याधयश्चते । अतस्तदेवभैषज्यंमात्रातत्रकनीयसी १२४१ ॥

बड़ों के जो दोष दूष्य और ज्वरादिक रोगहोते हैं वहीबालकोंके भी होते हैं इसलिये वही औषध भी देनी चाहिये परन्तु मात्रा बहुत थोड़ी देनी चाहिये ॥ १२४१ ॥

अस्यबालस्यकनीयसामात्रामाहविश्वामित्रः ॥

विडंगफलमात्रंतुजातमात्रस्यभेषजम् । अनेनैवप्रमाणेनमासिमासिप्रवर्द्धयेत् ॥ विडंगपरिमितंभेषजंचूर्णीकृत्यकिंवाकल्कीकृत्याऽथवावलेहीकृत्यदद्यादित्यर्थः तन्त्रान्तरेत्वन्यथाभिहितम् । प्रथमेमासिबालायदेयाभैषज्यरक्तिका । अवलेह्यातुकर्त्तव्यामधुक्षीरसिताघृतैः ॥ एकैकांवर्द्धयेत्तावद्यावत्संवत्सरोभवेत् । तदूर्ध्वंमाषवृद्धिःस्याद्यावत्षोड़शवत्सराः ॥ एकैकांरक्तिकांतदूर्ध्ववर्षोपरिमाषवृद्धिःप्रतिवर्षंपञ्चगुञ्जात्मकस्यमाषस्यवृद्धिर्भवतिगुञ्जापञ्चाद्योमाषकइत्यमरसिंहः । ततःस्थिराभवेत्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः । ततोबालकवन्मात्राह्रासनीयाशनैःशनैः ॥ ततःषोडशवत्सरोपरि । चूर्णकल्कावलेहानामियंमात्राप्रकीर्त्तिता । कषायस्यपुनःसैवविज्ञातव्याचतुर्गुणा ॥ क्षीरपस्यशिशोर्देयमौषधंक्षीरसर्पिषा । धात्र्यास्तुकेवलंदेयंनक्षीरेणापिसर्पिषा ॥ क्षीरान्नादस्यपूर्ववत्क्षीरसर्पिषा॥ १२४२ ॥

विश्वामित्रकी कहीहुई थोड़ीमात्रा ॥

उत्पन्नही हुए बालकको एक बायबिड़ंगके समान औषध चूर्ण करके कल्क करके अथवा अवलेह करके देनी चाहिये और महीने २ भरकेबाद इसीक्रमसे बढ़ानी चाहिये और तन्त्रान्तरमें कहाहै कि बालक को प्रथम महीनेमें रत्तीभर औषध सहत दूध शक्कर तथा घी के साथ चटानी चाहिये फिर महीने २ भरमें एकवर्षतक रत्ती २ भर औषध बढ़ानी चाहिये इसके उपरान्त १६ वर्ष तक प्रति वर्ष एक २ मासे (पांचरत्ती) औषध बढ़ानी चाहिये फिर सत्तरवर्षतक यहीमात्रा स्थिर रखनी

चाहिये और सत्तरवर्षकेपीछे धीरे २ बालकोंकेसमान मात्रा घटानी चाहिये यहमात्रा चूर्ण कल्क तथा अवलेहकी कहीगई है परन्तु क्वाथकी मात्रा इससे चौगुनी जाननी चाहिये दूधपीने वाले और दूध तथा अन्न दोनों खाने वाले बालकोंको दूध तथा घी के साथ औषध देनी चाहिये और धायको केवल औषध देनी चाहिये दूध घी के साथ न देनी चाहिये ॥ १२४२ ॥

प्रकारान्तरेणौषधोपायनमाह सुश्रुतः ॥

येषांगदानांयेरोगाःप्रवक्ष्यन्तेगदङ्कराः। तेषुतत्कल्कसंलिप्तौपाययेत्तुशिशुंस्तनौ १२४३॥

सुश्रुतमें कहाहुआ औषध देनेका अन्यप्रकार ॥

जिस जिस रोगमें जौन जौनसी औषध कहीगई हैं उस उस रोगमें वही वही औषध स्तनों में लगाकर बालकको स्तन पिलाने चाहिये १२४३ ॥

अवचनानांबालानामाभ्यन्तरव्याधिज्ञानोपायमाह ॥

अंगप्रत्यङ्गदेशेतुरुजायत्रास्यजायते। मुहुर्मुहुःस्पृशातितंस्पृश्यमानेनरोदिति ॥ निमीलिताक्षोमूर्द्धस्थेरोगेनोधारयेच्छिरः । वस्तिस्थेमूत्रसंगार्त्तःक्षुधातृड्पिगच्छति ॥ विण्मूत्रसंगवैकल्याच्छर्द्याधमानान्त्रकूजनैः । कोष्ठव्याधीन्विजानीयात्सर्वत्रस्थांश्चरोदनैः ॥ १२४४ ॥

नहीं बोलनेवाले बालकों के आभ्यन्तरिक रोगोंके जाननेका उपाय ॥

बालकके जिस अंगमें पीड़ा होती है बारंबार उसी अंगको छूताहै और उसके छूनेसे रोताहै शिर में रोग होनेसे बालक नेत्र नहीं खोलताहै और शिरको डाले रहताहै पेडूमें रोग होनेसे बालकका मूत्र रुकजाता है और क्षुधा तथा तृषा नहीं लगती कोष्ठमें रोगहोनेसे मलमूत्र रुकजाताहै और विकलता छर्दि आध्मान तथा उदर में गड़गड़ाहट होती है और रोनेसे बालकोंके संपूर्ण अंगमें स्थित रोग जानना चाहिये ॥ १२४४ ॥

अत्रादौज्वरस्यचिकित्सा माह ॥

सर्वंनिवार्य्यतेबालेस्तन्यंनैवनिवार्य्यते। मात्रयालङ्घयेद्धात्रींशिशोरेतद्धिलंघनम् ॥ मात्रयालंघयेत्लघुभोजयेत्भद्रमुस्ताभयानिम्बपटोलमधुकैःकृतः। क्वाथःकोष्णःशिशोरेषनिःशेषज्वरनाशनः ॥ भद्रमुस्तादिक्वाथःसर्वज्वरेषु ॥ १२४५ ॥

ज्वरकी चिकित्सा ॥

बालकोंको और सब पदार्थ निषेध किये जाते हैं परन्तु दूधपीनेका कभी भी निषेध नहीं किया जाताहै धायको लघु भोजन करानेसे बालकको लंघन होजाता है नागरमोथा हड़ नींब पर्वल और मुलहठी इनकाकाढ़ा कुछ गरम गरम पिलानेसे बालकोंके संपूर्ण ज्वर नष्ट होतेहैं इति सर्वज्वरों पर बज्रमुस्तादि क्वाथ ॥ १२४५ ॥

घनकृष्णारुणाश्रृंगीचूर्णंक्षौद्रेणसंयुतम्। शिशोर्ज्वरातीसारघ्नंकासंश्वासंवमिंहरेत् ॥ अरुणाअतिविषाचतुर्भद्रिकाज्वरातिसारेषु ॥ १२४६ ॥

मोथा पीपल अतीस तथा काकड़ासिंगी इनके चूर्णको सहतके साथ चटानेसे बालकोंके ज्वरातीसार खांसी श्वास तथा छर्दिका नाशहोताहै इति चतुर्भद्रिका ज्वरातीसारपर ॥ १२४६ ॥

विल्वंचपुष्पाणिचधातकीनांजलंसलोध्रंगजपिप्पलीच । क्वाथावलेहौमधुनाविमिश्रौबालेषुयोज्यावतिसारितेषु ॥ जलंबालाविल्वादिक्काथावलेहौअतिसारेषु ॥ १२४७॥

बेल धौकेफूल सुगन्धवाला लोधतथा गजपीपल इनके क्वाथ अवलेहको सहतके साथ सेवनकराने से बालकों का अतिसार नष्टहोता है इति अतिसारनाशक बिल्वादि क्वाथ और अवलेह ॥१२४७॥

समङ्गाधातकीलोध्रसारिवाभिःशृतंजलम् । दुर्द्धरेऽपिशिशोर्देयमतीसारेसमाक्षिकम्॥ समंगालज्जालुमूलंसमंगादिक्काथोदुर्द्धरेऽतीसारे ॥ १२४८ ॥

लज्जालू धौ लोध तथा सांई इनके काढेमें सहत डालकर पिलाने से बालकों का बहुत बढ़ा हुआ भी अतीसार नष्टहोता है इतिदुर्द्धरातीसार नाशक समंगादिक्काथ ॥ १२४८ ॥

विडंगान्यजमोदाचपिप्पलीतण्डुलानिच । एषामालीढ्यचूर्णानिसुखंतप्तेनवारिणा॥ आमेप्रवृत्तेऽतीसारे कुमारंपाययेद्भिषक् विडंगादिचूर्णमतीसारे ॥ १२४९ ॥

वायबिडंग अजमोद पीपल और चावल इनके चूर्ण को कुछ गरम जल के साथ बालकको आमातीसार में पिलावे इतिअतीसारनाशकबिडंगादि चूर्ण ॥ १२४९ ॥

मोचारसःसमंगाचधातकीपद्मकेशरम् । पिष्टैरेतैर्यवागूःस्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥ मोचारसःलज्जालूमूलंधावेफूलकमलकेशरसमुदिततोला१।तण्डुलकीबूटीतोला १।जल तोला११सर्वमेकीकृत्ययवागूःसाधनीया । मोचरसादियवागूरक्तातीसारे ॥ १२५० ॥

मोचरस लज्जालूकी जड़ धौके फूल तथा कमलकी केसर यहसब १ तो० चांवल १ तो० और जल ११ तो० इन सबकी यवागू बनाकर पिलाने से बालक के रक्तातीसार का नाशहोता है इतिरक्तातीसार नाशक मोचरसादियवागू ॥ १२५० ॥

नागरातिविषामुस्तबालकेन्द्रयवैःशृतम् । कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥ नागरादिक्काथःसर्वातीसारे ॥ १२५१ ॥

सोंठ अतीस मोथा सुगन्धवाला तथा इन्द्रजौ इनके काढ़ेको प्रातःकाल पिलाने से बालकों के सम्पूर्ण अतीसार नष्टहोते हैं इतिसर्वातीसारनाशक नागरादि क्वाथ ॥ १२५१ ॥

लाजासयष्टीमधुकाशर्कराक्षौद्रमेवच । तण्डुलोदकयोगेनाक्षिप्रंहन्तिप्रवाहिकाम् ॥ लाजादिचूर्णंप्रवाहिकायाम् ॥ १२५२ ॥

खील मुलहठी शक्कर और सहत इनसबको चांवल के धोवनके साथ मिलाने से बालकोंकी प्रवाहिका शीघ्रही नष्टहोजाती है इतिप्रवाहिका नाशक लाजादिचूर्ण ॥ १२५२ ॥

रजनीसरलोदारुबृहतीगजपिप्पली । पृष्ठिपर्णीशताह्वाचलीढंमाक्षिकसर्पिषा ॥ दीपनंग्रहणींहन्ति मारुतार्त्तिसकामलाम् । ज्वरातीसारपाण्डुघ्नी बालानांसर्वरोगनुत् ॥ रजन्यादिचूर्णंग्रहण्यादौ ॥ १२५३ ॥

हल्दी सरलकाष्ठ देवदारु बड़ीभटकटैया गजपीपल पृष्ठिपर्णी तथा सौंफ इनसबके चूर्णको सहत तथा घी के साथ चटाने से बालकोंकी अग्निदीप्ति होतीहै और ग्रहणी बातजपीड़ा कामला ज्वर अतीसार पांडुरोग तथा अन्य सबरोगोंका नाशहोताहै इति ग्रहण्यादिनाशक रजन्यादिचूर्ण ॥ १२५३॥

पौष्करातिविषावासाकणाशृंगीरसंलिहेत् । मधुनामुच्यतेबालःकासैःपञ्चभिरुत्थितैः मुस्तकादिस्वरसःकासेषु ॥ १२५४ ॥

मोथा अतीस अडूसा पीपल तथा काकड़ासिंगी इनके रसमें सहत डालकर चटानेसे बालकोंकी पांचों प्रकारकी खांसी नष्टहोती है इति कासनाशक मुस्तादि स्वरस ॥ १२५४ ॥

व्याघ्रीसुमनसंजातकेशरैरवलेहिका । मधुनाचिरसंजाताशिशोःकासान्व्यपोहति कासे ॥ १२५५ ॥

भटकटैया के फूल तथा चमेली के जीरेको सहत के साथ चटानेसे बालकोंकी बहुत पुरानीभी खांसी नष्टहोतीहै ॥ १२५५ ॥

धान्यंचशर्करायुक्तंतण्डुलोदकसंयुतम् । पानमेतत्प्रदातव्यंकासश्वासापहंशिशोः ॥ धान्यादिपानंकासश्वासयोः ॥ १२५६ ॥

धनिया शक्कर और चावलोंका धोवन इनके पन्नेको पिलानेसे बालककी खांसी और श्वासका नाशहोताहै इतिकासश्वासनाशक धान्यादिपान ॥ १२५६ ॥

द्राक्षावासाभयाकृष्णाचूर्णंक्षौद्रेणसर्पिषा । लीढंश्वासंनिहन्त्याशुकासञ्चतमकंतथा ॥ तमकंश्वासभेदम् । इतिद्राक्षादिचूर्णंकासश्वासयोः ॥ १२५७ ॥

दाख अडूसा हड तथा पीपल इनके चूर्णको सहत तथा घी के साथ चटानेसे बालककी खांसी तथा तमक श्वासका नाशहोता है इतिकासश्वास नाशक द्राक्षादि चूर्ण ॥ १२५७ ॥

चूर्णंकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजयेत् । हिक्कांप्रशमयेत्क्षिप्रंछर्दिंचापिचिरोत्थिताम् ॥ हिक्कायांछर्द्यांञ्च ॥ १२५८ ॥

कुटकी के चूर्णको सहत के साथ चटानेसे बालककी हिचकी तथा छर्दिका नाशहोताहै १२५८ ॥

आम्रास्थिलाजसिन्धूत्थंसक्षौद्रंछर्दिनुद्भवेत् । छर्द्यांपीतंतुमेध्यन्तुस्तन्येनमधुसर्पिषा ॥ द्विवार्त्ताकीफलरसंपञ्चकोलञ्चलेहयेत् । द्विवार्त्ताकीबृहतीद्वयम्पञ्चकोलंयथा ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यंचित्रकनागरम् । क्षीरछर्द्याम् ॥ १२५९ ॥

आमकी गुठली खील सेंधानोन इनको सहतके साथ चाटनेसे बालकोंका दूध डालना बन्दहोता है दोनों भटकटैयों के फल के रसको दूध सहत तथा घीकेसाथ चटानेसे अथवा पीपल पीपलामूल चव्य चीता तथा सोंठ इनसबके चटानेसे बालकों का दूध डालना बन्दहोता है १२५९ ॥

घृतेनसिंधुविश्वलाहिंगुभार्गीरजोलिहन् । आनाहंवातिकंशूलंहन्यात्तोयेनवाशिशुः ॥ इतिआनाहेवातशूलेच ॥ १२६० ॥

सेंधानोन सोंठ इलायची हींग तथा भारंगी के चूर्णको घीकेसाथ अथवा जल के साथ चटाने से बालक का आनाह तथा वात शूल नष्टहोताहै ॥ १२६० ॥

कणोषणासिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैन्धवैःकृतः । मूत्रग्रहेप्रयोक्तव्यःशिशूनांलेहउत्तमः ॥ मूत्राघाते ॥ १२६१ ॥

पीपल मिर्च मिश्री छोटी इलायची तथा सेंधानोन इनसबको सहत के साथ चटाने से बालकों का मूत्राघात नष्टहोता है ॥ १२६१ ॥

यदातुदुर्बलोवालःखादन्नपिचवह्निमान्। विदारीकन्दगोधूमयवचूर्णंघृतंप्लुतम् ॥ खादयेत्तदनुक्षीरंशृतंसमधुशर्करम्। कार्श्ये ॥ १२६२ ॥

जो दीप्ताग्नि वाला बालक भोजन करने पर भी दुर्बल बनारहै उसे बिदारीकन्द गेहूं तथा जौके चूर्णको घीकेसाथ चटाकर पीछेसे औटेहुये दूधमें सहत और शकर डालकर पिलावे ॥१२६२॥

मुस्तंकूष्माण्डबीजानिभद्रदारुकलिंगकान्। पिष्ट्वातोयेनसंलिप्तंलेपोऽयंशोथहच्छिशोः ॥ शोथे ॥ १२६३ ॥

मोथा पेठेके बीज देवदारु तथा इन्द्रजौ इनसबको पानी में पीसकर लेपकरने से बालकों का शोथ दूर होताहै ॥ १२६३ ॥

पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्वथितंपिवेत्। क्षतविसर्पविस्फोटज्वराणांशान्तयेशिशुः। इतिक्षतविसर्पविस्फोटज्वरेषु ॥ १२६४ ॥

पर्वल त्रिफला नींब तथा हल्दी इनके काढ़ेको पिलाने से बालकोंका चत वीसर्प विस्फोटक तथा ज्वर नष्टहोताहै ॥ १२६४ ॥

गृहधूमनिशाकुष्ठराजिकेन्द्रयवैःशिशोः। लेपस्तक्रेणहन्त्याशुसिध्मपामाविचर्चिकाम् ॥ इतिसिध्मपामाविचर्चिकायाम् ॥ १२६५ ॥

गृहधूम हल्दी कूट राई तथा इन्द्रजौ इनसबके लेपसे बालकोंका सिध्म (कुष्ठभेद) खुजली तथा विचर्चिका (खुजली का भेद) का नाशहोताहै ॥ १२६५ ॥

सारिवातिललोध्राणांकषायोमधुकस्यच। संस्राविणिमुखेशस्तोधावनार्थंशिशोःसदा॥ मुखस्रावे। अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाकेप्रलेपनम् ॥ १२६६ ॥

साईं तिल लोधतथा मुलहठी इनके काढ़े के द्वारा मुखधोने से बालकोंका लार बहना नष्टहोताहै पीपलकी छाल और पत्तों को पीसकर सहत के साथलेप करने से बालकों का मुखपाक नष्टहोताहै ॥ १२६६ ॥

पिप्पलीत्रिफलाचूर्णघृतक्षौद्रपरिप्लुतम्। वालोरोदितियस्तस्मैलीढंदद्यात्सुखावहम्॥ रोदने ॥ १२६७ ॥

पीपल तथा त्रिफले के चूर्णको घी और सहत के साथ उसबालक को चटावे जो बहुत रोता हो इस्से रोना बन्द होता है ॥ १२६७ ॥

हरीतकीवचाकुष्ठंकल्कंमाक्षिकसंयुतम्। पीत्वाकुमारःस्तन्येनमुच्यतेतालुकंठकात् १२६८

हड़ बच कूट तथा सहत इनको दूधके साथ पिलानेसे बालकों का तालुकंटक रोग नष्टहोताहै १२६८

फलत्रिकंलोध्रपुनर्नवेचसश्रृङ्गवेरंबृहतीद्वयंच। आलेपनंश्लेष्महरंसुखोष्णंकुकूणके कार्य्यमुदाहरंति ॥ कुकूणके ॥ १२६९ ॥

त्रिफला लोध गदापूर्णा सोंठ और दोनोंभटकटैया इनसबको पीसकर कुछगरम लेपकरने से कफ और कुकूणक रोग का नाश होताहै ॥ १२६९ ॥

मृत्पिण्डेनाग्नितप्तेनक्षीरसिक्तेनसोष्मणा । स्वेदयेदुत्थितांनाभिंशोथस्तेनोपशाम्यति ॥ नाभिशोथे॥ १२७० ॥

अग्निमें तपायेहुये मिट्टीके पिंडपर दूधछिड़के फिरउस गरम गरम पिंडसे बालकोंकी शोथयुक्त नाभिको सेंके इससे शोथका नाश होताहै ॥ १२७० ॥

नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम् । तैलमभ्यञ्जनेशस्तमेभिश्चाप्यवधूलनम् ॥ दग्धेनछागशकृतानाभिपाकेऽवचूर्णनम् । त्वक्चूर्णैःक्षीरिणांवापिकुर्य्याच्चन्दनरेणुना ॥ नाभिपाके ॥ १२७१ ॥

हल्दी लोध प्रियंगु तथा मुलहठीके चूर्णके द्वारा धूराकरनेसे अथवा इन्हीं के द्वारापाककियेहुयेतेल के लगानेसे जलायेहुये बकरेके गोबरके चूर्ण के बुरकानेसे दूधवाले वृक्षोंकी छालके चूर्ण के बुरकाने से अथवा चन्दनके चूर्णके बुरकानेसे नाभिपाक नष्टहोताहै ॥ १२७१ ॥

गुदपाकेतुबालानांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम् । रसाञ्जनंविशेषेणपानालेपनयोर्हितम् । (अञ्जनंरसाञ्जनम्) शङ्खयष्ट्याञ्जनैश्चूर्णंशिशूनांगुदपाकनुत् । गुदपाके ॥ १२७२ ॥

बालकोंके गुदपाकरोगमें पित्तनाशक चिकित्साकरे और इसमें रसौत पीना तथा लेपकरना बिशेष हितकारीहै शंख मुलहठी तथा रसौत इनका चूर्ण बालकोंके गुदपाकको नष्टकरताहै ॥ १२७२ ॥

शङ्खसौवीरयष्ट्याह्वैर्लेपोदेयोऽहिपूतने । अहिपूतने ॥ १२७३ ॥

अहिपूतन रोगमें शंख सुरमा तथा मुलहठीकालेप करना चाहिये ॥ १२७३ ॥

परिगर्भिकरोगेतुपूज्यतेवह्निदीपनम् । परिगर्भिके ॥ १२७४ ॥

परिगर्भिकरोग में अग्निको दीप्तकरनेवाली औषध हितहैं ॥ १२७४ ॥

दन्तपालींतुमधुनाचूर्णेनप्रतिसारयेत् । धातकीपुष्पपिप्पल्योर्धात्रीफलरसेनवा ॥ दन्तोत्थानभवारोगाःपीडयन्तिनबालकम् । जातेदन्तेहिशाम्यन्तियतस्तद्धेतुकागदाः ॥ इतिदन्तोद्भेदजरोगेषु ॥ १२७५ ॥

धौकेफूल तथा पीपलके चूर्णको सहतकेसाथ अथवा आमलेकेरसकेसाथ उंगलीसे दांतोंके मांसमें रगड़नेसे दांतोंके निकलनेसे होनेवालेरोग बालकको नहींपीड़ित करते हैं क्योंकि दांतोंके निकलनेपर उन्हीं के कारणसे हुयेरोग शान्तहोजातेहैं ॥ १२७५ ॥

सौवर्णंसुकृतंचूर्णंकुष्ठंमधुघृतंवचा । मत्स्याक्षकंशङ्खपुष्पीमधुसर्पिःसकाञ्चनम् ॥ अर्कपुष्पीमधुघृतंचूर्णितंकनकंवचा ।सहेमचूर्णंकैटर्य्यंश्वेतादूर्वाघृतंमधु ॥ चत्वारोऽभिहिताःप्राशाअर्द्धश्लोकसमापनाः । कुमाराणांवपुर्मेधाबलपुष्टिकराःस्मृताः ॥(सौवर्णचूर्णम्) चतुर्ष्वपियोगेषुमारितसुवर्णचूर्णम् । मत्स्याक्षकःब्राह्मीइतिलोकेवकमइत्येकेअर्कपुष्पी अर्कसदृशपुष्पीलतादूर्वाश्वेतदूर्वाकटर्य्यंकटफलंसंवत्सरंयावदेतेयोगाःप्रयोज्याःद्वादशवर्षाणीतिकेचित् ॥ १२७६ ॥

सुवर्णकी भस्म कूट तथा बच इनके चूर्णको घी तथा सहतके साथ ब्राह्मी शंखाहूली तथा सुवर्णकी भस्म इनको सहत तथा घीके साथ अर्कपुष्पीसुवर्णकी भस्म तथा बच इनको घी तथा सहत के

साथ अथवा सुवर्णकी भस्म कायफल तथा श्वेत दूर्बा इनको सहत तथा घीके साथ खिलानेसे बालकोंकी मेधा बल पुष्टि तथा शरीरकी वृद्धि होतीहै ॥ १२७६ ॥

बालानाञ्चवपुर्मेधाबलपुष्टिःकराःस्मृताः ।-लाक्षारसेसमेतैलंमस्तुन्यथचतुर्गुणे ॥ रास्नाचन्दनकुष्टाब्दावाजिगन्धानिशायुतैः । शताह्वादारुयष्ट्याह्वमूर्वातिक्ताहरेणुभिः ॥ संसिद्धज्वररक्षोघ्नंबलवर्णकरंशिशोः।लाक्षादितैलंबालेषुइतिबालरोगाधिकारः १२७७॥

इतिभावप्रकाशेज्वरादिव्याधिनिदानचिकित्साप्रकरणंसमाप्तम् ॥

इतिमध्यमखण्डःसमाप्तः ॥

रासना चन्दन कूट असगन्ध हल्दी देवदारु मुलहठी मरोरफली कुटकी तथा संभालूके बीज इनके द्वारा समभाग लाख केरस और चौगुने दही के तोड के साथपाक किया हुआ तेल बालकों के ज्वर तथा राक्षसी दोषोंका नाशकहै और बल तथा बर्णकारीहै इतिबालकोंकेलिये लाक्षादितैल इति बालरोगाधिकार समाप्त ॥ १२७७ ॥

इति भावप्रकाशस्य भाषानुवादे ज्वरादिव्याधि निदानचिकित्सा प्रकरणं समाप्तम् ॥

इति मध्यमखंड समाप्तः ॥

अथोत्तरखण्डः ॥

अथ वाजीकरणाधिकारः ॥

तत्र वाजीकरणस्य लक्षणमाह ॥

यद्द्रव्यंपुरुषंकुर्याद्वाजीवसुरतक्षमम् । तद्वाजीकरमाख्यातंमुनिभिर्भिषजांवरैः ॥ १ ॥

अथ उत्तरखण्ड ॥

बाजीकरणाधिकार ॥

बाजीकरण का लक्षण ॥

जोद्रव्य पुरुषको मैथुन करनेमें घोड़ेके समान समर्थकरे उसे मुनिलोगोंने बाजीकरणकहाहै ॥१॥

अत्र प्रसङ्गात्क्लैब्यस्यलक्षणंसंख्यां निदानंचाह ॥

क्लीवःस्यात्सुरताशक्तस्तद्भावःक्लैब्यमुच्यते । तच्चसप्तविधंप्रोक्तंनिदानंतस्यकथ्यते॥ तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तुरिरंसोर्मनसिक्षते । ध्वजःपतत्यतोनॄणांक्लैब्यंसमुपजायते ॥ द्वेष्यस्त्रीसंप्रयोगाच्चक्लैब्यंतन्मानसंस्मृतम् । तैस्तैर्भावैःभयशोकक्रोधादिभिःअहृद्यैःहृदयाहितैदुः

खत्वात्क्षतेपीडितेअस्वस्थीकृतेइतियावत्ध्वजःशिश्ना ॥ तथाच। ध्वजंचिह्नेपताकायां मेहनेशौण्डिकेऽपिचेतिविश्वप्रकाशः ॥ पततीतिनूनमतिसंप्रयोगोमैथुनम् ॥ २ ॥

प्रसंग से नपुंसकताके लक्षण संख्या और निदान ॥

मैथुन करनेमें असमर्थ को क्लीव (नपुंसक) कहतेहैं और उसके भावको क्लैब्य (नपुंसकता) कहतेहैं नपुंसकता सात प्रकारकी है उसकानिदान कहते हैं भय शोक तथा क्रोधादिकोंसे हृदय को अप्रिय बस्तुओंके सेवनसे और द्वेषिणी स्त्रीकेसाथ मैथुनकरनेसेमैथुनकी इच्छाकरनेवालेके मनके बिगड़जानेपर मनुष्य की लिंगेन्द्रिय नहींउठती इसको मानसी नपुंसक कहते हैं ॥ २ ॥

कटुकाम्लोष्णलवणैरतिमात्रोपसेवितैः। पित्ताच्छुक्रक्षयोदृष्टःक्लैब्यंतस्मात्प्रजायते ॥ कटुकादिनातिमात्रेणप्रवृद्धेनपित्तेनशुक्रस्यदग्धत्वात्क्लैब्यंभवतिपित्तजमितिद्वितीयम् ३

कड़वी खट्टी नोनकी तथा उष्ण बस्तुओं के बहुत सेवन से बढ़ाहुआ पित्त बीर्य्यको नष्ट करता है इससे नपुंसकता होती है इसे पित्तज नपुंसकता कहते हैं ॥ ३ ॥

अतिव्यवायशीलोयोनचवाजीक्रियारतः। ध्वजभङ्गमवाप्नोतिसशुक्रक्षयहेतुकः ॥ शुक्रक्षयेनतृतीयम् ॥ ४ ॥

जो बहुत मैथुन करता है और बाजीकरण औषधियों का सेवन नहीं करता है उसके बीर्य्य क्षय से होनेवाली नपुंसकता होतीहै ॥ ४ ॥

महतामेढ्ररोगेणचतुर्थीक्लीवताभवेत् ॥ ५ ॥

बहुत बड़े लिंग रोगसे चौथी नपुंसकता होती है ॥ ५ ॥

वीर्यवाहिशिराछेदान्मेहनादुन्नतिर्भवेत् ॥ ६ ॥

वीर्य्य के लेचलने वाली नसके कटनेसे नपुंसकता होतीहै ॥ ६ ॥

बलिनःक्षुब्धमनसोनिरोधाद्ब्रह्मचर्य्यतः। षष्ठंक्लैब्यंस्मृतंतत्तुशुक्रस्तम्भनिमित्तकम् ॥ बलिनःपुष्टस्यक्षुब्धमनसःकामात्संचलतऽमनसोब्रह्मचर्यंअमैथुनंतस्मान्निरोधात् शुक्रस्यक्लैब्यंभवति ॥ ७ ॥

बलवान् पुरुष काम से चलायमान मनके रोकनेसे नपुंसक होजाता है यह वीर्य्यके रोकने से होनेवाली छठी नपुंसकताहै ७ ॥

जन्मप्रभृतियत्क्लैब्यंसहजंतद्धिसप्तमम् ॥ ८ ॥

जन्मसे लेकर जोनपुंसकताहोतीहै उसेसहज नपुंसकता कहतेहैं यहसातवीं नपुंसकताहै ॥ ८ ॥

असाध्यंक्लैब्यमाह ॥

असाध्यंसहजंक्लैब्यंमर्मछेदाच्चयद्भवेत्। यन्मर्मछेदाद्वीर्यवाहिशिराछेदात् ॥ ९ ॥

असाध्यनपुंसकताके लक्षण ॥

सहज और वीर्य्य की लेचलनेवाली नसके कटने से होनेवाली नपुंसकता असाध्यहै ॥ ९ ॥

अथक्लैब्यस्यचिकित्सा ॥

क्लैब्यानामिहसाध्यानांकार्योहेतुविपर्ययः।मुख्यचिकित्सितंयस्मान्निदानपरिवर्जनम् १०

नपुंसकता की चिकित्सा ॥

साध्य नपुंसकतामें हेतुओंके बिपरीत औषध करनी चाहिये क्योंकि निदानका छोड़नाही मुख्य चिकित्साहै ॥ १० ॥ अथ क्लैब्यस्यचिकित्सायांवाजीकरणविधिमाह ॥

नरोवाजीकरान्योगान्सम्यक्शुद्धोनिरामयः । सप्तत्यन्तंप्रकुर्वीतवर्षादूर्ध्वंतुषोड़शात् ॥ नचवैषोड़शादर्वाक्सप्तत्याःपरतोनच । आयुष्कामोनरःस्त्रीभिःसंयोगंकर्त्तुमर्हति ॥ क्षयवृद्ध्युपदंशाद्यारोगाश्चातीवदुस्तयाः । अकालमरणञ्चस्याद्भजतेस्त्रियमन्यथा ॥ (स्त्रीभजनविधिः) विस्तरतोरात्रिचर्यायांलिखितोऽस्तितत्रद्रष्टव्यः ॥ ११ ॥

नपुंसकता की चिकित्सामें बाजीकरणविधि ॥

नीरोग मनुष्य अच्छे प्रकार से शरीर को शुद्धकरके बाजीकरण औषधियों का सेवनकरे सोलह बर्षसे ऊपर और सत्तर बर्षके भीतर आयुका चाहनेवाला पुरुष स्त्री प्रसंग करे १६ बर्षके भीतर और सत्तरबर्षके उपरान्तनकरे बिधिपूर्व्वक स्त्रीप्रसंग नकरनेसे क्षय वृद्धि तथा उपदंश आदिक कष्टसाध्य रोग औरअकालमृत्युभी होतीहै स्त्रीप्रसंगकी बिधि रात्रिचर्य्यामें बिस्तारपूर्व्वक लिखीगईहै वहींदेखनी चाहिये ॥ ११ ॥

विलासिनामर्थवतांरूपयौवनशालिनाम् । नराणांबहुभार्य्याणांविधिर्वाजीकरोहितः ॥ स्थविराणांरिरंसूनांस्त्रीणांवाल्लभ्यमिच्छताम् ।योषित्प्रसङ्गात्क्षीणानांक्लीवानामल्परेतसाम् ॥हितावाजीकरायोगाःप्रीणयन्तिबलप्रदाः।एतेऽपिपुष्टदेहानांसेव्याःकालाद्यपेक्षया १२

बिलासी धनवान् तथा रूपयौबन युक्त पुरुषोंको और बहुत स्त्रीवाले पुरुषोंको बाजीकरणविधि हितकारी है वृद्ध रमणकी इच्छा करनेवाले स्त्रियोंका प्रेम चाहनेवाले मैथुन करनेसे क्षीणहुए नपुंसक और स्वल्पवीर्य्यवाले पुरुषोंको बाजीकरण औषध हितकारी बलकारी तथा प्रीतिकारी हैं यह पुष्टशरीरवालोंको समय आदिका बिचारकरके सेवन करनाचाहिये ॥ १२ ॥

वाजीकराण्याह ॥

भोजनानिविचित्राणिपानानिविविधानिच । गीतंश्रोत्राभिरामाश्चवाचःस्पर्शसुखास्तथा ॥ कामिनीसान्द्रतिलकाकामिनीनवयौवना । गीतंश्रोत्रमनोज्ञञ्चताम्बूलंमदिरास्रजः ॥ गंधामनोज्ञारूपाणिचित्राण्युपवनानिच । मनसश्चाप्रतीघातंवाजीकुर्व्वन्ति मानवम् ॥ १३ ॥

बाजीकरण औषध ॥

विचित्र भोजन अनेक प्रकारके पानकरनेके पदार्थ गीत कानोंको सुखदेनेवाले वाक्य स्पर्श सुख सुन्दर तिलक आदिकोधारणकरनेवाली रूपवती युवतीस्त्रीकानोंको सुखदेनेवाले गीत ताम्बूल मद्य माला मनोहर सुगन्ध बिचित्ररूप उपवन और मनका न रुकना यहसबमनुष्योंकेलिये वाजीकरण हैं ॥ १३ ॥

माक्षिकधातुमधुपारदलोहचूर्णम् पथ्याशिलाजतुविड़ङ्गघृतानिलिह्यात् । एकाग्रविंशतिदिनानिगदार्दितोऽपिसाशीतिकोऽपिरमयेत्प्रमदांयुवेव ॥ १४ ॥

सोनामक्खी सहत पारेकी भस्म लोहभस्म हड़ शिलाजीत बायविड़ंगइनसबको २१ दिनचाटने से रोगसे पीड़ित अस्सी वर्षका बुड्ढा भी युवाके समान स्त्री प्रसंग करनेमें समर्थ होताहै १४ ॥

सत्वंगुडूच्यागगनंसलोहमेलाशितामागधिकासमेतम् । एतत्समेतंमधुनावलीढंरा माशतंसेवयनीवषण्डः ॥ १५ ॥

गिलोयका सत अभ्रक लोहभस्म इलायची मिश्री और पीपल इनसबको मिलाकर सहत के साथ चाटनेसे नपुंसकको भी सौस्त्रियोंकेसाथ रमणकरनेकी शक्तिहोती है ॥ १५ ॥

गवांविरूढवत्सानांसिद्धंपयसिपायसम् । गोधूमचूर्णञ्चतथासितामधुघृतान्वितम्॥ भुक्त्वाहृष्यतिजीर्णोऽपिदशदारान्व्रजत्यपि ॥ १६ ॥

बडे बछड़ेवाली गौओंकेदूधसाथ गेहूंका आटा शक्कर सहत तथा घी मिलाकर खीर बनावे इसके खानेसे जीर्ण पुरुषभी प्रसन्नहोकर दशबार रमणकरसक्ताहै ॥ १६ ॥

दध्नोर्द्धाढकमीषदम्लमधुरंखण्डस्यचन्द्रद्युतेःप्रस्थंक्षौद्रपलम्पलञ्चहविषःशुंठ्याश्च माषाष्टकम् ।तद्वन्माषचतुष्टयंमरिचतःकर्षंलवंगन्तथाधृत्वाशुक्लपटेशनैःकरतलेनोन्नाप्य विस्रावयेत् ॥ मृद्भाण्डेमृगनाभिचन्दनरससृष्टेगुरूद्धूपितेकर्पूरेणसुगन्धितंतदखिलंसं लोड्यसंस्थापयेत् । स्वस्यार्थेमकरेश्वरेणरचिताह्येषारसालास्वयम्भोक्तुर्मन्मथदी पनीसुखकरीकान्तेवानित्यंप्रिया ॥ १७ ॥

कुछ खटमिट्ठा दही १२८ तोले सफेद शक्कर या खांड़६४तोले सहत ४ तोले घी ४ तोले सोंठ ८ मासे मिर्च ४ मासे और लौंग १ तोले इनसबको मिलाकर श्वेत वस्त्रमें हाथसे धीरे २ छाने फिर कस्तूरी तथा चन्दनसे लिपेहुए तथा अगरसे बसायेहुए मृत्तिकाके पात्रमें रखकर कपूरसे सुगन्धितकरके और सबको एकमें मिलाकर रक्खे यह रसाला (सिखरन) कामदेवने अपने लिये बनाईहै यह भोक्ता (खानेवाले और मैथुनकरनेवाले) को कामकी बढ़ानेवाली और सुखदेनेवाली स्त्रीके समान नित्यही प्रियहै ॥ १७॥

गोक्षुरेक्षुरवीजानिवाजिगन्धाशतावरी।मुसलीवानरीवीजंयष्टीनागबलाबला॥ एषां चूर्णंदुग्धसिद्धंगव्येनाज्येनभर्जितम् । सितयामोदकंकृत्वाभक्ष्यंवाजीकरंपरम् ॥ चूर्णाद ष्टगुणंक्षीरंघृतंचूर्णसमंस्मृतम् । सर्वतोद्विगुणंखण्डंखादेदग्निबलंयथा ॥ वाजीकराणि भूरीणिसंगृह्यरचितोयतः । तस्माद्बहुषुयोगेषुयोगोऽयंप्रवरोमतः ॥ रतिवर्द्धनम्॥ १८

गोखुरू तालमखाना असगन्ध सतावर मुसली किवांचके बीज मुलहठी गुलसकरी बरियार इनसबके चूर्णको समभाग घीमेंभूनकर अठगुने दूधमेंपकावे फिर दूनी शक्कर डालकेलड्डूबांधे यह अत्यन्त बाजीकरणहै इनको अग्निबलके अनुसार खाय बहुतसे बाजीकरण योगोंमें से संग्रह करके यहयोग बनायागयाहै इसलिये यह सबसे श्रेष्ठहै इतिरतिवर्द्धन मोदक ॥ १८ ॥

चत्वारोव्योमभागास्तदनुनिगदितंभागयुग्मञ्चवङ्गम् भागैकंशम्भुवीजन्त्रितयम पिमृतंतत्समासिद्धमूली । चातुर्जातंसजातीफलमरिचकणानागरंदेवपुष्पम् ॥ जाती पत्रञ्चभागद्वितयमपिपृथक्सर्वमेकत्रचूर्णम् ॥ सर्वद्व्यंशासितास्यात्घृतमधुसहितांमो दकीकृत्यचेतत् । खादेदग्निंसमीक्ष्यप्रसभमभिनवानन्दसम्बर्द्धनाय ॥ योगोवाजीक

राख्योऽयमिहनिगदितोभैरवानन्दनाम्ना । निःशेषव्याधिहन्तादलितबहुवधुद्दामकंदर्प दर्पः मदनमञ्जरीवटी ॥ १९ ॥

अभ्रक भस्म ४ भाग बंगभस्म २ भाग पारद भस्म १ भागसिद्धमूली ७ भाग दालचीनी इलायची तेजपात नागकेसर जायफल मिर्च पीपल सोंठ लौंग तथा जावित्री दो २ भाग इनसबको एकसाथ चूर्ण करके सबकी दूनी शक्कर मिलाकर घी और सहत के साथ लड्डूबांधे और अग्निबलके अनुसार खाय यह शीघ्रही नवीन आनन्द को बढ़ाताहै बहुतसी स्त्रियोंकेसाथ रमण करने की सामर्थ्य देताहै और संपूर्ण रोगोंको नष्ट करताहै इतिमदनमंजरीवटी ॥ १९ ॥

पिप्पलीलवणोपेतेवस्ताण्डेघृतसाधिते। कच्छपस्याथवाखादेत्तत्तुवाजीकरंभृशम् २०॥

पीपल तथा सेंधव लवण युक्त बकरेके अथवा कछुवे के अंडको शोंको घीमें पकाकर खानेसे अत्यंत मैथुनमें शक्ति होती है ॥ २० ॥

पूगंदक्षिणदेशजंदशपलान्मानंभृशंकर्त्तयेत् । ततुस्विन्नंजलयोगतोमृदुतरंसंकुट्य चूर्णीकृतम् ॥ तच्चूर्णंपटशोधितंवसुगुणोगोशुद्धदुग्धेपचेत् । द्रव्याञ्ग्याञ्जलिसंयुतेऽति निविडेदद्यात्तुलार्द्धंसिताम् ॥ पक्कंतज्ज्वलनात्क्षितिंप्रतिनयेत्तस्मिन्पुनःप्रक्षिपेत् । यद्यत्तत्तदुदाहरामिबहुलादृष्ट्वादरातसंहिताः॥ एलानागबलाबलासचपलाजातीफलालिंगका । जातीपत्रसुपत्रपत्रकयुतंतच्चत्वचासंयुतम् ॥ विश्वावीरणवारिवारिदवरावांशीवरीवानरी । द्राक्षासेक्षुरगोक्षुराथमहतीखर्जूरिकाक्षीरका ॥ धान्याकंसकसेरुकंसमधुकंशृंगाटकंजीरकम् । पृथ्वीकाथयवानिकावरटिकामांसीमिसीमेथिका ॥ कन्देष्वत्रविदारिकाथमुशलीगन्धर्वगन्धातथा । कर्चूरंकरिकेशरंसमरिचञ्चारस्यवीजंनवम् ॥ वीजंशाल्मलिसम्भवंकरिकणावीजञ्चरार्जावजम् । श्वेतंचन्दनमत्ररक्तमपिचश्रीसंज्ञपुष्पैःसमम् ॥ सर्वञ्चेतिपृथक्पृथक्पलमितंसंचूर्ण्यतत्रक्षिपेत् । सूतंवंगभुजंगलोहगगनंसन्मारितंस्वेच्छया ॥ कस्तूरीघनसारचूर्णमपिचप्राप्तंयथाप्रक्षिपेत् । पश्चादस्यतुमोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणानथ ॥ तान्भुक्तातिसदायथानलबलंम्भुंजीतनाम्लंरसम् पूर्वस्मिन्नशितेगतेपरिणतिंप्राग्भोजनाद्भक्षयेत् ॥ नित्यंस्त्रीरतिबल्लभाख्यकमिमंपूगस्यपाकंभजेत् सस्याद्वीर्यविवृद्धिवृद्धमदनोवाजीवशक्तोरतौ । दीप्ताग्निर्बलवान्बलीविरहितोदृष्टःसपुष्टःसदा वृद्धोयोऽपियुवेवसोपिरुचिरःपूर्णेन्दुवत्सुन्दरः । वसुगुणोऽष्टगुणःअञ्जलिरर्द्धशरावः तुलार्द्धंपञ्चाशत्पला।नियतःद्विःपञ्चाशत्पलानामभिदधतितुलांसंहिताःसुश्रुताद्याः। नागबलागुलशकरीबलाबरिआरातस्याःमूलञ्जातीपत्रकञ्जाइपत्रीविश्वाशुण्ठीवीरणमुशीरंग्राह्यंवारिसुगन्धबालावारिदः मुस्तकःवरात्रिफलावांशीवंशलोचनावरीशतावरीवानरीकपिकच्छुइक्षुरःकोकिलाक्षस्तस्यवीजंग्राह्यंगोक्षुरस्यचवीजंमहतीमहाखर्जूरकाक्षीरिकाक्षीरीपृथ्वीकाकलोंञ्जी "सालूकमेषांकन्दंस्याद्वीजकोशोवराटिका"

मांसीजटामासिमिसिःसौंफगन्धर्व्वगन्धाअश्वगंधातस्यामूलंश्रीसंज्ञःलवंगंघनसारः कर्पूरःविल्वमानानूपलप्रमाणान् ॥ इतिरतिवल्लभाख्यपूगपाकः ॥ २१ ॥

दक्षिणी सुपारियों को ४० तोले लेकर महीन काटलेवे फिर उनको जलमें उबालकर कोमल होजानेपर कूटकर चूर्ण करलेवें और उसचूर्ण को कपड़े में छानकर अठगुने दूध में पकावे और गाढ़े होजानेपर १६ तोले घी तथा २०० तोले शक्कर मिलावे इसके उपरान्त अच्छेप्रकार से पकजानेपर अग्नि से उतारकर इलायची गुलशकरी वरियाराकीजड़ पीपल जायफल कैथा जावित्री तज तेजपात दालचीनी सोंठ खस सुगंधबाला मोथा त्रिफला वंशलोचन सतावर किवांचकेबीज दाख तालमखाना गोखुरू छुहारा बड़ी भटकटैया खिन्नी धनियां कसेरू मुलहठी सिंघाड़ा जीरा कलौंजी अजवाइन कमलकाछत्ता जटामांसी सौंफ मेथी विदारीकन्द मूसली असगंध कचूर नागकेसर मिर्च चिरौंजी सेमरकेबीज गजपीपल कमलगट्टा श्वेतचंदन रक्तचंदन और लौंग इनसबके चार २ तोले चूर्णको मिलावे और पारेकी भस्म बंगकी भस्म सीसेकी भस्म लोहेकी भस्म अभ्रककी भस्म कस्तूरी तथा कपूर इनमें से जोकुछ मिलसकें उनको अपनी इच्छाके अनुसार मिलावे इसकेउपरान्त चार२ तोलेके लड्डू बांधकर अग्निबलके अनुसारखाय औरखटाई न खाय एकबारके भोजनके पचजाने पर भोजनसे पहले इसको खाय इसके द्वारा अग्नि बल वीर्य्य काम तथा पुष्टताकी वृद्धि होती है और बुड्ढाभी झुर्रियोंसे रहित होकर चन्द्रमाके समान कान्तियुक्त तरुणसा होजाताहै ॥ इतिरतिवल्लभाख्यपूगपाग ॥ २१ ॥

एतस्मिन्सतिवल्लभेयदिपुनःसम्यक्सुराशाणिका धत्तूरस्यचवीजमर्ककरभःपोथोऽब्धिशोषस्तथा । सम्माजूफलकंतथाखसफलन्त्वक्कार्षिकान्निःक्षिपेत् चूर्णार्द्धाविजयातदासहिभवेत्कामेश्वरोमोदकः ॥ इतिकामेश्वरमोदकः ॥ २२ ॥

जो इसीरतिवल्लभनाम पूगपागमें सुरा ४ मासे धतूरेकेबीज अकरकरा सूर्य्यावर्त्त समुद्रशोषमाजूफल तथा पोस्त यहसबतोले २ भर और सम्पूर्णचूर्णकी आधभंग मिलाकरलड्डू बाँधेतो इसे कामेश्वरमोदककहतेहैं ॥ इति कामेश्वरमोदक ॥ २२ ॥

रक्तपित्ताधिकारोक्तखण्डकुष्माण्डकोमहान् । रक्तपित्तादिरोगघ्नोमहावाजीकरःस्मृतः२३

रक्तपित्ताधिकारमें कहाहुआ कुष्माण्डखंड रक्तपित्तादिरोगनाशक और अत्यन्तवाजीकरणहै २३॥

पक्वाम्रस्यरसद्रोणेसितामाढकसम्मिताम् । घृतम्प्रस्थमितंदद्यात्नागरस्यपलाष्टकम् ॥ मरिचंकुडवोन्मानंपिप्पलीद्विपलोन्मिता । सलिलस्याढकंदत्वासर्वमेकत्रकारयेत् ॥ विपचेन्मृण्मयेपात्रेदारुदर्व्याप्रचालयेत् । चूर्णान्येषांक्षिपेत्तत्रघनीभूतेऽवतारिते ॥ धान्याकञ्जीरकम्पथ्यांचित्रकंमुस्तकन्त्वचम् । बृहज्जीरकमप्यत्रग्रन्थिकन्नागकेशरम् ॥ एलाबीजंलवंगञ्चपृथक्जातींपलम्पलम् । सिद्धंशीतेप्रदद्याच्चमधुनाकुडवद्वयम् ॥ भक्षयेद्भोजनादर्वाक्पलमात्रमिदंनरः । अथवानियतानात्रमात्रांखादेद्यथानलम् ॥ मानवःसेवनादस्यवाजीवसुरतेभवेत् । समर्थोबलवान्पुष्टोनित्यंसस्यान्निरामयः ॥ ग्रहणींनाशयेदेषक्षयंश्वासमरोचकम् । अम्लपित्तमहाश्वासंरक्तपित्तञ्चपाण्डुताम् ॥ बृहज्जीरकमंगरैला । इतिआम्रपाकः ॥ २४ ॥

१०२४ तोले पक्के आमकेरसमें शक्कर २५६ तोले घी ६४ तोले सोंठ ३२ तोले मिर्च १६ तोले और पीपल ८ तोले तथा जल २५६ तोले इनसबकोएकमें मिलाकर मट्टीकेपात्रमें पाककरे और काठकी करछीसे चलावे इसके उपरान्तजबपाकगाढ़ाहोजाय तबउतारकर धनियां जीरा हड़ चीता मोथा दालचीनी स्थूलजीरा पीपरामूल नागकेशर इलायचीकेदाने लौंग तथा चमेली यहसबचार चारतोले मिलावे फिर शीतलहोजानेपर ३२ तोले सहत मिलावे इसकोभोजनसे पहले चारतोले अथवा अग्निबलकेअनुसारखाय इस्से मनुष्य घोड़ेकेसमान मैथुनमें समर्थ बलवान्पुष्ट तथा नीरोग होताहै और इसके सेवनसे ग्रहणीक्षय श्वास अरुचि अम्लपित्त महाश्वास रक्तपित्त तथा पांडुताका नाशहोताहै ॥ इति आम्रपाक ॥ २४ ॥

शमयतिगोक्षुरचूर्णंछागक्षीरेणसाधितंसमधु।भुक्तंक्षपयतिजाड्यंयज्जनितंकुप्रयोगेण २५

कुत्सित प्रयोगोंसे हुई लिंगकी जड़ता बकरीकेदूधके साथ पाक कियेहुए गोखुरूके चूर्णमें सहत मिलाकरखानेसे नष्टहोतीहै ॥ २५ ॥

द्रव्याणिचन्दनादेस्तुचन्दनंरक्तचन्दनम्।पतंगमथकालीयगुरुकृष्णागुरूणिच ॥ देवद्रुसरलंपद्मंपञ्चकेतृणिकेऽपिच । कर्पूरोमृगनाभिश्चलताकस्तूरिकापिच ॥ सिह्लकःकुंकुमन्नव्यंजातीफलकमेवच । जातीपत्रंलवंगंचसूक्ष्मैलामहतीचसा ॥ कंकोलफलकंस्पृक्कापत्रकन्नागकेशरम् । बालकञ्चतथोशीरंमांसीदारुसिताऽपिवा ॥ कृतकर्पूरकश्चापि शैलेयम्भद्रमुस्तकम् । रेणुकाचप्रियंगुश्चश्रीवासोगुग्गुलुस्तथा ॥ लाक्षानखश्चरालश्चधातकीकुसुमन्तथा । ग्रन्थिपर्णंचमञ्जिष्ठातगरंसिक्थकन्तथा ॥ एतानिशाणमानानिकल्कीकृत्यशनैःपचेत् । अनेनाभ्यक्तगात्रस्तुवृद्धोऽशीतिसमोऽपिसः । युवाभवतिशुक्राढ्यः स्त्रीणामत्यन्तवल्लभः ॥ वन्ध्यापिलभतेगर्भंवृद्धोऽपितरुणायते ॥ अपुत्रःपुत्रमाप्नोतिजीवेच्चशरदांशतम् । चन्दनादिमहातैलंरक्तपित्तक्षयंज्वरम् ॥ दाहम्प्रस्वेददौर्गन्ध्यंकुष्ठंकण्डूंविनाशयेत् । पतंगवकम्इतिलोकेकालीयकंकलम्बकटुइतिलोकेलताकस्तूरिकामुष्कदानाकङ्कोलफलस्यालाभेजातीपुष्पंग्राह्यंतदलाभेलवंगंग्राह्यम्। दारुसितादालचीनीशैलेयछराश्रीवासःगुग्गुलुःग्रंथिपर्णीगठिवनअशीतिसमःअशीतिवार्षिकः (चन्दनादितैलम्) ॥ २६ ॥

लालचन्दन पतंग पीलाचन्दन अगर कालाअगर देवदारु सरलकाष्ठ पद्माक पंचतृण कपूरकस्तूरी वेदमुश्क लोबान केसर जायफल जावित्री लौंग छोटीइलायची बड़ीइलायची कंकोल(इसकेअभाव में चमेली) स्पृक्का तेजपात नागकेशर सुगन्धबाला खस जटामांसी दालचीनी भीमसेनीकपूर छड़ नागरमोथा संभालूकेबीज प्रियंगु श्रीवास गूगल लाख नखी राल धौकेफूल ग्रंथिपर्णी मजीठ तगर तथा मोम चार चार मासे इनसब औषधियोंकेद्वारा पाककियेहुए तेलकोलगानेसे अस्सीबर्षकाबुड्ढा भी तरुण वीर्य्ययुक्त तथा स्त्रियोंका अत्यन्त प्रियहोजाताहै इसके लगानेसे बन्ध्यास्त्रीभीगर्भकोधारण करतीहै जिसके पुत्रनहोय उसकेपुत्रहोतेहैं सौबर्षकीअवस्थाहोतीहै और रक्तपित्त क्षय ज्वर दाह स्वेद दुर्गन्धि कुष्ठ तथा खुजलीकानाश होताहै ॥ इति चन्दनादितैल ॥ २६ ॥

दशमूलकणावह्निकपित्थश्चविभीतकम्।कट्फलम्मरिचंविश्वमूलंपिप्पलिसैन्धवम्॥ रक्तरोहीतकन्दन्तीद्राक्षाजाजिनिशाद्वयम् । धात्रीजन्तुघ्नशिखरिश्रृंगीदारुपुनर्नवा ॥ धान्याकन्देवकुसुमंराजवृक्षस्त्रिकण्टकम् । वृद्धदारुकुवेराक्षीमूलंवीरणिकाभवम् ॥ एतेषांपलयुग्मन्तुभेषजानांपृथक्पृथक् । आढ़कञ्चापिपथ्यायास्तोयेपञ्चाढ़केपचेत् ॥ खिन्नापथ्याभवेद्यावत्पश्चान्मधुविनिक्षिपेत् । गुरूपदेशाद्विधिवत्त्रिदिनञ्चततःपरम् ॥ पुनःक्षिपेत्पञ्चदिनन्तथाचदशवासरम्।संसिद्धाचाभयापश्चात्घृतभाण्डेनिधापयेत्॥विमलेसुदृढेक्षौद्रपरिपूर्णेप्रयत्नतः । पश्चात्पूर्वोक्तभाण्डेतुक्षिपेद्बुद्धिपरायणः ॥ एषाहरीतकीचैवधन्वन्तरिकृताशुभा । भक्षयेद्योनरोनित्यंरोगानश्यन्तिसर्वशः ॥ श्वासङ्कासंक्षयंपाण्डुंहिक्काञ्छर्दिमदभ्रमान् । मुखरोगन्तथातृष्णामरुचिंवह्निमान्द्यताम् ॥ यकृत्प्लीहोदराणाञ्चवातरक्तंसुदारुणम्।शिरोऽक्षिकर्णजांपीड़ांतथाबद्धगुदोद्भवम्॥ग्रहणींदुर्विकाराञ्चशोषंदोषत्रयोद्भवम् । मधुपक्वेतिविख्याताहन्तिरोगाननेकशः॥इतिमधुपक्वहरीतकी २७॥

दशमूल पीपल चीता कैथा बहेड़ा कायफल मिर्च सोंठ सैंधानोन लालरोहितक जमालगोटे की जड़ दाख जीरा हल्दी दारुहल्दी आमला बायबिडंग लटजीरा काकड़ासिंगी देवदारु गदापूर्णा धनियां लौंग अमलतास गोखुरू बिधारा तुन तथा खस यहसब औषध आठ २ तोले और हड़ २५६ तोले इनसबको १२८० तोले जलमें पकावे जबहड़ गलजायँ तब उसमें सहतडाले गुरू के उपदेशके अनुसार तीन दिनमें पांच दिनमें और दश दिनमें सहतडाले इसके उपरान्त हड़ोंके सिद्ध होजाने पर सुन्दर घृतके पात्रमें सहत भरकर हड़ें रखदेवे यह धन्वन्तरकी कहीहुई हड़ श्वास खांसी क्षय पांडु हिचकी छर्दि मद भ्रम मुखरोग तृषा अरुचि मंदाग्नि यकृत् प्लीहा उदर बातरक्त शिर नेत्र तथा कानोंकी पीड़ा बद्धगुद ग्रहणी त्रिदोषजशोष और अन्यसंपूर्ण रोगोंकानाश करतीहै ॥ इति मधुपक्व हरीतकी ॥ २७ ॥

बीजानिकपिकच्छ्वांकुडवमितानिस्वेदयेच्छ्वनकैः । प्रस्थेगोभवदुग्धेतावत्यावद्भवेद्गाढ़म् ॥ त्वग्रहितानिचकृत्वासूक्ष्मंसम्पेषयेत्तानि । पिष्टिकायालघुवटिकाःकृत्वागव्येपचेदाज्ये ॥ द्विगुणितशर्करापातावटिकाःसम्पक्वयालेप्याः । वटिकामाक्षिकमध्येमज्जनयोग्येविरलाःस्थाप्याः ॥ पञ्चटङ्कमितास्तास्तुप्रातःसायञ्चभक्षयेत् । अनेनशीघ्रद्रावीयोयश्चस्यात्पतितध्वजः ॥ सोऽपिप्राप्नोतिसुरतेसामर्थ्यमतिवाजिवत् ॥ नानेनसदृशंकिञ्चिद्दृष्टंवाजिकरंपरम् ॥ वानरीवटिका ॥ २८ ॥

१६ तोले किवांचके बीजोंको ६४ तोले दूधमें जबतक गाढ़ा न होय तबतक धीरे २ पकावे फिर किवांचके बीजोंको छीलकर महीन पीसलेवे इसके उपरान्त उस पिट्ठीके छोटे छोटे बड़े बनाकर गौके घी में पकावे फिर इनबड़ोंको दूनी शक्कर में पागकर सहत में भिजोदेवे इनको बीस बीस मासे प्रातःकाल और सायंकाल खाने से जिसका बीर्य्य शीघ्र गिरता होय और जिसका लिंग न उठता होय वहभी घोड़ेके समान मैथुनमें समर्थ होताहै इसके समान और कोई बाजीकरण औषध नहीं है ॥ इति बानरी बटिका ॥ २८ ॥

आकारकरभःशुण्ठीलवंगंकुंकुमंकणा। जातीफलंजातीपुष्पंचन्दनंकार्षिकंपृथक् ॥ चूर्णयेदहिफेनन्तुतत्रदद्यात्पलोन्मितम्। सर्वमेकीकृतंमाषमात्रंक्षौद्रेणभक्षयेत् ॥ शुक्रस्तम्भकरंपुंसामिदमानन्दकारकम्। नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामुकः ॥ बाजीकरणाधिकारः ॥ २९ ॥

अकरकरा सोंठ लौंग केसर पीपल जायफल चमेली चन्दन यहसब एक एक तोले और अफीम चारतोले इनसबको एकमें मिलाकर सहतके साथ एकमासे औषध रात्रिको खाय इस्से बीर्य्य रुकता है पुरुषोंको आनन्द मिलताहै और स्त्रियोंको प्रीति होतीहै॥इति बाजीकरणाधिकार समाप्तः ॥ २९ ॥

अथ रसायनाधिकारः। तत्ररसायनस्य लक्षणमाह ॥

यज्जराव्याधिविध्वंसिवयःस्तम्भकरंतथा।चक्षुष्यंबृंहणंवृष्यंभेषजंतद्रसायनम्३०

रसायनका अधिकार। रसायनका लक्षण ॥

जिस औषधके सेवनकरनेसे बुढ़ापेका तथा रोगोंका नाशहोय अवस्था स्थिर होय नेत्रोंको हित होय और धातु तथा वीर्यकी वृद्धिहो उसे रसायन कहतेहैं ॥ ३० ॥

रसायनस्यफलमाह ॥

दीर्घमायुःस्मृतिंमेधामारोग्यंतरुणंवयः। देहेन्द्रियबलंकान्तिंनरोविन्देद्रसायनात् ३१

रसायनका फल ॥

मनुष्य रसायन औषध से दीर्घायु स्मृति मेधा आरोग्य तरुणावस्था देह तथा इन्द्रियों में बल और कान्तिको पाता है ॥ ३१ ॥

नाविशुद्धशरीरस्ययुक्तोरासायनोविधिः। नभातिवाससिश्लिष्टेरंगोयोगविवाहितः ३२

बमन विरेचनादिके द्वारा शरीरको बिनाशुद्धाकिये रसायनका सेवन न करना चाहिये क्योंकि मैले बस्त्रमें मैलेपनसे बिगड़ाहुआ रंग नहीं शोभित होताहै ॥ ३२ ॥

तदुदाहरणानि ॥

शीतोदकंपयःक्षौद्रंघृतमेकैकशोद्विशः। त्रिशःसमस्तमथवाप्राक्पीतंस्थापयेद्वयः ॥ मण्डूकपर्ण्याःस्वरसःप्रभातेप्रयोज्ययष्टीमधुकस्यचूर्णम्। रसोगुडूच्यास्तुसमूलपुष्पःकल्कःप्रयोज्यःखलुशंखपुष्प्याः ॥ आयुःप्रदान्यामयनाशनानिबलाग्निवर्णस्वरबर्द्धनानि। मेध्यानिचैतानिरसायनानिमेध्याविशेषेणचशंखपुष्पी ॥ (मण्डूकपर्णीब्राह्मी) तदलाभे मञ्जिष्ठाग्राह्यातस्यापिरसायनत्वात्। माक्षिकेनतुगोक्षीरीपिप्पल्यालवणेनच। त्रिफलासितयावापियुक्तासिद्धंरसायनम् ॥ सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैःक्रमात्। वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा ॥ पुनर्नवस्यार्द्धपलन्नवस्यपिष्टंपिबेद्यःपयसार्द्धमाषम्। मासत्रयंतत्त्रिगुणंसमंवाजीर्णोऽपिभूयःसपुनर्भवःस्यात् ॥ ३३ ॥

रसायनके उदाहरण ॥

शीतलजल दूध सहत तथा घी इनको अलग २ दो दो तीन तीन अथवा सबको प्रातःकाल पीने

से अवस्था स्थिर होतीहै ब्राह्मीकारस मुलहठीका चूर्ण गिलोयकारस अथवा जड़ तथा पुष्प सहित शंखाहुलीका कल्क प्रातःकाल सेवन करनेसे आयुको देताहै रोगोंको नष्ट करता है और बल अग्नि बर्ण तथा स्वरको बढ़ाताहै यहचारों रसायन हैं तथा मेधाको हितहैं परन्तु शंखाहुली बिशेष करके मेधाको हितहै यहाँ ब्राह्मीके अभावमें मजीठका ग्रहण करना चाहिये सहत युक्त बंशलोचन सैंधव लवण युक्त पीपल अथवा शक्कर युक्त त्रिफला रसायन है रसायनके गुणको चाहने वाला मनुष्य सैंधानोन शक्कर सोंठ पीपल सहत तथा गुड़ इनके साथ बर्षाआदि ऋतुओंमें क्रमसे हड़ोंका सेवन करे दो तोले नवीन गदापूर्णाको पीसकर दूधकेसाथ १५ दिनतक अथवा इतनीहीं या इसकी तिगुनी मात्रा तीन महीनेतक पीनेसे जीर्णपुरुष भी नवीनसा होजाता है ॥ ३३ ॥

येमासमेकंस्वरसंपिवन्तिदिनेदिनेभृंगरजःसमुस्तम् । क्षीराशिनस्तेवलवीर्ययुक्ताःसमाःशतंजीवनमाप्नुवन्ति ॥ शतावरीमुण्डितिकागुडूचीसहस्तिकर्णासहतालमूली । एतानिकृत्वासमभागयुक्तान्याज्येनकिंवामधुनावलिह्यात् ॥ जरारुजामृत्युवियुक्तदेहोभवेन्नरोवीर्यबलादियुक्तः । विभातिदेवप्रतिमःसनित्यंप्रभामयोभूरिविवृद्धिबुद्धिः ॥ ३४ ॥

भंगरेकेरसको मोथेकेसाथ नित्यपीकर दूधपिये महीनेभरतक इसप्रकारकेकरनेसे मनुष्य बल वीर्य युक्तहोकर सौ बर्षजीताहै सतावर मुंडी गिलोय हस्तिकर्ण तथा मुसली इनसबको एकमें मिलाकर घी अथवा सहतके साथ चाटनेसे मनुष्यवृद्धावस्था रोग तथा मृत्युसे रहितहोकरबीर्य बलयुक्तहोताहै और अत्यन्त बुद्धिमानहोकर देवताओंके समान दीप्तिमान्होताहै ॥ ३४

पीत्वाश्वगन्धापयसार्द्धमासंघृतेनतैलेनसुखाम्बुनावा । वीर्य्यस्यपुष्टिंवपुषोविधत्तेबलस्यशस्यस्ययथाम्बुवृष्टिः ॥ ३५ ॥

असगन्धको दूध घी तेल अथवा कुछ गरमजलकेसाथ १५ दिनतकसेवनकरने से बलबीर्य तथा शरीर इसप्रकारबढ़ताहै जैसे जल बरसनेसे नाज ॥ ३५ ॥

अयःपलंगुग्गुलुमत्रयोज्यंपलत्रयंव्योषफलानिपञ्च । पलानिचाष्टौत्रिफलारजश्चकर्षेलिहन्यात्यमरत्वमेव ॥ इतिलोहगुग्गुलुः ॥ ३६ ॥

लोहभस्म ४ तोले गूगल १२ तोले त्रिकटु २० तोले और त्रिफला ३२ तोले इनसबकोमिलाकर १ तोले चाटनेसे मनुष्यअमरत्वको प्राप्तहोताहै ॥ इति लोह गुग्गुल ॥ ३६ ॥

नकेवलंदीर्घमिहायुरश्नुतेरसायनंयोविविधंनिषेवते । गतिःसदेवर्षिनिषेवितांशुभांप्रपद्यतेब्रह्मतथैवचाक्षयम् ॥ इतिरसायनाधिकारः ॥ ३७ ॥

जोमनुष्य विविधरसायनोंका सेवन करताहै वह केवल दीर्घायुहीनहींहोता किन्तु देवर्षियोंसेसेवन की गई शुभगति और अक्षयब्रह्मको भी प्राप्त होताहै ॥ इतिरसायनाधिकारसमाप्तः ॥ ३७ ॥

यावत्व्योमनिबिम्बमम्बरमणेरिन्दोश्चविद्योततेयावत्सप्तपयोधयः सगिरयस्तिष्ठन्तिपृष्ठेभुवः ॥ यावच्चावनिमण्डलंफणिपतेरास्तेफणामण्डले तावत्सद्भिषजःपठन्तुपरितोभावप्रकाशंशुभम् ॥ ग्रन्थस्यास्याध्यापकानाञ्जनानामध्येतॄणामादरंकुर्वतांच ।

श्रीशोमेशादित्यविप्रप्रसादादायुर्दीर्घसौख्यमास्तांसदैव ॥ इत्यष्टमम्प्रकरणम् ॥ ३८ ॥
इतिभावप्रकाशस्यउत्तरखण्डःसमाप्तः ॥

जबतक आकाशमें सूर्य्य तथा चन्द्रमा शोभितहोकर प्रकाशवान्हैं जबतक सातोंसमुद्र तथा पर्बत पृथ्वी पर स्थितहैं और जबतक पृथ्वीमंडल शेषनागके फणपरस्थितहै तबतकसंवैद्य लोग भावप्रकाशको पढ़ें इसग्रन्थके पढ़ानेवाले पढ़नेवाले तथा आदरकरनेवालेमनुष्योंको बिष्णु शिव सूर्य्य तथा ब्राह्मणों के प्रसादसे दीर्घायु तथा सौख्य सदैवप्राप्तहोवे ३८ ॥ इत्यष्टमंप्रकरणं ॥ इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादे उत्तर खंडस्समाप्तः ॥

समाप्तोयंग्रन्थः ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा ॥
नवम्बर सन् १८९४ ई० ॥

कापीराइट महफ़ूज़ है बहक़ इस छापेख़ाने के ॥

शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यधि विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि महावातव्याधि, बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ़ गर्भ, विद्रधि, विसर्प, नाड़ी, स्तनरोग, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, गलगंडरोग, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकरोग, मुखरोग, शोफरोग और नपुंसकता इनसब रोगोंकी उत्तमोत्तम चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाब किनरोगोंमें योग्यहै तिसका वर्णन, स्थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा, और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह पूतनाग्रह इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, राजरोग, बायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्च्छा औरसम्पूर्ण मदों की चिकित्सा, प्यास, वमन, हिचकी, दमा, खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि रोगोंकी चिकित्सा उत्तमोत्तम काढ़े चूर्ण गोली तेल और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिलारोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्तवैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था कियाहै और उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित रामविहारी सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि सूचीपत्र और साधारण सूचीपत्र रचना कर विभूषित कियाहै यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्यके देखने के योग्यहै इससे सम्पूर्ण चिकित्साका कामहोसका है ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा

जिसमें सम्पूर्ण ज्वर, सम्पूर्ण अतीसार, संग्रहणी बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस बिलम्बिका, कृमिरोग, पांडुकामला, हलीमक, रक्तपित्त, राजरोग, शोषरोग, खांसीरोग, हिचकीरोग, श्वासरोगस्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यास, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिक के उन्मादका, तंत्रमंत्र डाकिनी साकिनी निवारणोपायप्रत्यक्ष हाजरायतयंत्र, मिरगी रोग, सम्पूर्ण बातव्याधि, अल्पकेशीकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमबात पित्तव्याधि, कफव्यधि, वातरक्तरोग, शूल रोग, उदावर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, यकृत्प्लीहरोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटकेरोग, दुर्बलता, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नसूर, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग, स्थावर जंगम विषरोग, स्त्रियोंके प्रदर आदि सब रोग, बालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल और घी इत्यादि के द्वारा बर्णन कीगई है इसका भी ज़िला रोहतक मौज़े बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्च से अक्षर २ का भाषामें उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्सा का पूरा २ काम निकल सक्ताहै ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित ॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकीय सबग्रंथोंके मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, राजरोग खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास मूर्च्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, वदरोग, फीलपांव गलगंड व्रणरोग, अग्निदग्ध

नासूर, भग्नरोग, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठरोग, शीतला, क्षुद्ररोग, शिर, नेत्र, कान, नाक और मुंहरोग सम्पूर्ण विषरोग स्त्रियों और बालकोंके सब रोग और धातुपुष्ट और नपुंसकताकी अत्युत्तम चिकित्सा काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल, घी इत्यादि के द्वारा वर्णित है इसके मूल श्लोकों को शार्ङ्गधरजी महाराज और भाषा टीका को जयपालजीने अत्यन्त परिश्रम से रचना कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य दर्शनीयहै ॥

भैषज्यरत्नावलीभाषाटीका सहित ॥

जिसमें ज्वर चिकित्सा, ज्वरातीसार चिकित्सा, पिलही और यकृत् की चिकित्सा, पांडुरोग चिकित्सा, शोथरोग चिकित्सा, पेटके रोगों की चिकित्सा, क्रीम रोगकी चिकित्सा, मेद रोग की चिकित्सा, आमाशयरोग चिकित्सा, छर्दिरोग चिकित्सा, दाह चिकित्सा, तृषारोग चिकित्सा, रक्तपित्त चिकित्सा, अग्निमन्दकी चिकित्सा, अरुचि चिकित्सा, संग्रहणी चिकित्सा, अतीसार चिकित्सा, कृमिरोग चिकित्सा, अम्लपित्तरोग चिकित्सा, शूलरोग चिकित्सा, गुल्मरोग चिकित्सा, उदावर्तरोग चिकित्सा, आनाहरोग चिकित्सा, अंत्ररोग चिकित्सा, राजयक्ष्मा चिकित्सा, खांसीरोगकी चिकित्सा, हिचकी और श्वासरोग चिकित्सा, स्वरभेद चिकित्सा, हृद्रोग चिकित्सा, बातव्याधि चिकित्सा, आमवात चिकित्सा, मूत्रकृच्छ्ररोग चिकित्सा, मूत्राघातरोग चिकित्सा, पथरीरोग चिकित्सा, आतशक रोग चिकित्सा, शूकरोग चिकित्सा, प्रमेह चिकित्सा, बहुमूत्ररोग चिकित्सा, औपसर्गिक मेहरोग चिकित्सा, शुक्रमेह चिकित्सा, प्रमेह पिड़िका चिकित्सा, ध्वजभंग चिकित्सा, वृद्धिरोग चिकित्सा, फीलपांवकी चिकित्सा, गलगंड रोगादि चिकित्सा, शीतपित्त उदर्द और कोढ़रोगों की चिकित्सा, मसूरिकारोग चिकित्सा, बातरक्त चिकित्सा, कुष्ठरोग चिकित्सा, बवासीर की चिकित्सा, भगंदर चिकित्सा, विद्रधि चिकित्सा, ऊरुस्तंभ चिकित्सा, भग्नरोग चिकित्सा, व्रणशोथ शारीरव्रण चिकित्सा, सद्योव्रण चिकित्सा, नसूरकी चिकित्सा, शिररोग चिकित्सा, मूर्च्छा चिकित्सा, उन्मादरोग चिकित्सा, अपस्माररोग चिकित्सा, मदात्ययरोग चिकित्सा, नेत्ररोग, नासारोग और मुखरोग चिकित्सा, क्षुद्ररोग चिकित्सा, स्त्रीरोग चिकित्सा, बालरोग चिकित्सा, विषरोग चिकित्सा, वीर्यस्तम्भन विधि रसायन अधिकार, बाजीकरणाधिकार, और परिशिष्ट पर्य्यन्त विषयों के काढ़े, चूर्ण, रस, लेप, तेल घी, यन्त्र, मन्त्र और तंत्रादिकों से औषधें वर्णित हैं जिसमें कोई रोग ऐसा नहीं जिसकी परिपूर्ण औषध इसग्रन्थ से न होसके यहै ग्रन्थ बहुतही उत्तम है इसअकेलेही ग्रन्थ से परिपूर्ण वैद्य होसकाहै जिसे मुन्शीजीने रोहतक प्रदेशांतर्गत वेरीनिवासि पण्डित रविदत्तजीसे तर्जुमा कराके उसी तर्जुमेको संस्कृतसे श्लोक २ के टीकेको ज़िला उन्नाव मौज़े नारगांव निवासी पण्डित रामविहारी सुकुल से शुद्धकराया है यह पुस्तक अवश्य देखनेके लायक़ है ॥

अमृतसागर जलीक़लम ॥

जिसको श्रीमन्महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी वीरेश वैकुण्ठवासीने वैद्यकके चरक सुश्रुत वाग्भट्ट आदि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थोंसे सार २ बातें निकाल कर रचा जिसमें सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, लक्षण, यत्न, और यंत्र, मंत्र, तंत्र, धातुमारण, शोधन, गोली, अवलेह जो आज़माई हुई हैं और जिनका सामयिक रोगोंमें प्रचार है लिखीहैं परन्तु संसारके उपकारके निमित्त छापेखाने के मालिकने औरभी विशेष बातें जो उचित और उपयोगिकथीं संयुक्तकराईं कि सोनाऔर सुगन्ध दोनोंहों और (यथानाम तथागुणः) यह दृष्टान्तभी प्रत्यक्ष फल दिखावे यह पुस्तक इस छापेखाने में असंख्य ही छपकर बिकचूकी है और ग्राहकोंकी मांगें बराबर चलीआती हैं इसपर रजिस्टरी भी होगई है ॥